CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

9.2V2

व्ला० इ० लेनिन

संकलित रचनाएं

दस खण्डों में

खण्ड

५

RajGuru Math, Shivala-Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरेश राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

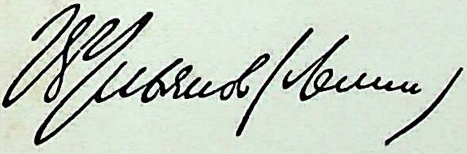

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दुनिया के मज़दूरो, एक हो!

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

В. И. ЛЕНИН

ИЗБРАННЫЕ ПРОИЗВЕДЕНИЯ
В 10 ТОМАХ

Том 5

август 1914—июнь 1916

Издательство «Прогресс»
Москва • 1982

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्ला० इ० लेनिन

संकलित रचनाएं

दस खण्डों में

खण्ड

५

अगस्त, १९१४–जून, १९१६

प्रगति प्रकाशन • मास्को • १९८२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस खंडों में प्रकाशित व्ला० इ० लेनिन की **संकलित रचनाओं** के इस खंड में शामिल लेखों, भाषणों, आदि का अनुवाद सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के मार्क्सवाद-लेनिनवाद संस्थान द्वारा रूसी में प्रकाशित **संपूर्ण लेनिन ग्रंथावली** (पांचवां संस्करण) के पाठ के अनुसार किया गया है। प्रत्येक रचना के अंत में **संपूर्ण लेनिन ग्रंथावली** के उक्त संस्करण की खंड तथा पृष्ठ संख्याओं का हवाला दिया गया है।

В. И. Ленин

ИЗБРАННЫЕ ПРОИЗВЕДЕНИЯ

В 10 томах

Том 5

на языке хинди

© हिन्दी अनुवाद • प्रगति प्रकाशन • १९८२

Л $\frac{10102-962}{014(01)-82}$ 743—82

0101020000

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

प्रकाशक की ओर से ६

यूरोपीय युद्ध में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद के कार्यभार . . . १५
यूरोपीय युद्ध की बाबत रूसी सामाजिक-जनवादियों के विचार . . १५
सामाजिक-जनवादियों के एक ग्रुप का प्रस्ताव १५

कार्ल मार्क्स (मार्क्सवाद की व्याख्या सहित एक संक्षिप्त जीवनी) . २०

भूमिका २०
मार्क्स की शिक्षा २६
दार्शनिक भौतिकवाद २६
द्वंद्ववाद २९
इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा ३२
वर्ग संघर्ष ३५
मार्क्स की आर्थिक शिक्षा ३७
मूल्य ३७
बेशी मूल्य ४०
समाजवाद ५०
सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की कार्यनीति ५४

रूसियों का राष्ट्रीय गौरव ६१
दूमा के रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर ग्रुप पर मुक़दमे से क्या सिद्ध हुआ है? ६७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे इंटरनेशनल का पतन ७५
१ . . . . ७६
२ . . . . ८२
३ . . . . ८७
४ . . . . ९६
५ . . . . १०१
६ . . . . १०९
७ . . . . ११९
८ . . . . १३१
९ . . . . १३८

आंग्ल शांतिवाद तथा सिद्धांत के प्रति आंग्ल अरुचि १४३

समाजवाद और युद्ध (युद्ध के प्रति रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का रुख़) १५१

पहले (विदेशी) संस्करण की भूमिका १५१
दूसरे संस्करण की भूमिका १५२
अध्याय १। समाजवाद के उसूल और १९१४–१९१५ का युद्ध . . १५३
युद्धों के प्रति समाजवादियों का रुख़ १५३
आधुनिक युग में युद्धों की ऐतिहासिक क़िस्में १५४
आक्रमणात्मक और प्रतिरक्षात्मक युद्ध में अंतर १५४
वर्तमान युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है १५५
ग़ुलामी बरक़रार रखने और उसे मज़बूत बनाने के लिए सबसे बड़े ग़ुलाम-मालिकों में युद्ध १५६
"युद्ध दूसरे" (याने हिंसात्मक) "साधनों द्वारा राजनीति की निरंतरता है" १६०
बेल्जियम की मिसाल १६१
रूस किस चीज़ के लिए लड़ रहा है? १६२
सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद क्या है? १६३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैसेल का घोषणापत्र १६४
मार्क्स और एंगेल्स के ग़लत हवाले १६५
दूसरे इंटरनेशनल का पतन १६६
सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद अवसरवाद का चरम बिंदु है . . . १६७
अवसरवादियों के साथ एकता का अर्थ है मज़दूरों और "उनके" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के बीच गंठजोड़ तथा अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी मज़दूर वर्ग में फूट १६८
"काउत्स्कीवाद" १६९
मार्क्सवादियों का नारा क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद का नारा है १७१
युद्ध-क्षेत्र की खाइयों में भाईचारे के उदाहरण १७२
गुप्त संगठन का महत्व १७२
साम्राज्यवादी युद्ध में "अपनी" सरकार की हार के बारे में १७३
शांतिवाद और शांति का नारा १७४
जातियों का आत्मनिर्णय का अधिकार १७५

अध्याय २। रूस में वर्ग और पार्टियां १७६
बुर्जुआ वर्ग और युद्ध १७६
मज़दूर वर्ग और युद्ध १७८
राज्य दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप और युद्ध . १८०

अध्याय ३। इंटरनेशनल की पुन:स्थापना १८४
सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों तथा "मध्यमार्गियों" का तरीक़ा . १८४
विरोध-पक्ष के भीतर स्थिति १८७
रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी और तीसरा इंटरनेशनल १९१

अध्याय ४। फूट का इतिहास और रूस में सामाजिक-जनवाद की वर्तमान स्थिति १९३
अर्थवादी और पुराना 'ईस्क्रा' (१८९४–१९०३) १९४
मेंशेविज़्म और बोल्शेविज़्म (१९०३–१९०८) १९५
मार्क्सवाद और विसर्जनवाद (१९०८–१९१४) १९६
मार्क्सवाद और सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद (१९१४–१९१५) . . १९८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूसी सामाजिक-जनवाद में वर्तमान आंतरिक अवस्था १६६

हमारी पार्टी के कार्यभार २०२

साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था (सुबोध रूपरेखा) २०३

भूमिका २०५

फ़्रांसीसी और जर्मन संस्करणों की भूमिका २०७

१ . . . . २०७

२ . . . . २०७

३ . . . . २०६

४ . . . . २१०

५ . . . . २११

१. उत्पादन का संकेंद्रण और इजारेदारियां २१५

२. बैंक और उनकी नयी भूमिका २३४

३. वित्त पूंजी तथा वित्तीय अल्पतंत्र २५५

४. पूंजी का निर्यात २७५

५. पूंजीपतियों के संघों के बीच दुनिया का बंटवारा २८२

६. महान शक्तियों के बीच दुनिया का बंटवारा २६३

७. साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की एक विशेष अवस्था. ३०६

८. पूंजीवाद की परजीविता तथा ह्रास ३२३

६. साम्राज्यवाद की आलोचना ३३६

१०. इतिहास में साम्राज्यवाद का स्थान ३५४

टिप्पणियां ३६१

नाम-निर्देशिका ४११

पारिभाषिक शब्द ४४६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक की ओर से

व्ला० इ० लेनिन की **संकलित रचनाओं** के पांचवें खंड में अगस्त, १९१४ से अगस्त, १९१५ तक की रचनाएं और जनवरी–जून, १९१६ में लिखित कालजयी कृति 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' शामिल की गयी हैं।

इन सभी रचनाओं में 'कार्ल मार्क्स (मार्क्सवाद की व्याख्या सहित एक संक्षिप्त जीवनी)' लेख का एक विशेष स्थान है। इस काल की प्रथम महत्वपूर्ण कृति होने के नाते वह रूसी और अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा के जीवन के एक विषमतम क्षण–पहले विश्वयुद्ध के आरंभ–के संबंध में लेनिन के विचारों, व्यावहारिक प्रस्थापनाओं एवं निष्कर्षों के विकास के सैद्धांतिक आधार का निर्माण करता है।

मार्क्सवाद को सामाजिक चिंतन के विकास में वास्तविक क्रांति बताते हुए लेनिन उसकी क्रांतिकारी अंतर्वस्तु, अदम्य शक्ति और जीवंतता को और रूस के मज़दूर वर्ग के संघर्ष के अनुभव तथा अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के साथ मार्क्सवादी सिद्धांत की बुनियादी प्रस्थापनाओं के संबंध को दर्शाते हैं। वह मार्क्सवाद को विश्व सभ्यता का सर्वोच्च बिंदु कहते हैं और उसे जर्मन दर्शन, आंग्ल राजनीतिक अर्थशास्त्र तथा फ़्रांसीसी समाजवाद के रूप में मानवजाति की १९ वीं सदी की सर्वोत्तम उपलब्धियों का असली उत्तराधिकारी क़रार देते हैं।

मार्क्स के विचारों के असामान्य तौर पर सुसंगत तथा अविभाज्य स्वरूप का उल्लेख करते हुए, जो "संसार के सभी सभ्य देशों के मज़दूर आंदोलन के सिद्धांत और कार्यक्रम के रूप में आधुनिक भौतिकवाद तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद" (प्रस्तुत खंड, पृ० २६) को उनकी समग्रता में प्रस्तुत करते हैं, लेनिन एक कार्य-संदर्शिका के नाते मार्क्सवाद की सृजनात्मकता पर और संशोधनवाद तथा जड़सूत्रवाद से उसके पूर्ण विरोध पर बल देते हैं और बताते हैं कि ऐतिहासिक घटनाक्रम मार्क्स की शिक्षा के सही होने की पूरी तरह से पुष्टि करता है। व्ला० इ० लेनिन का 'कार्ल मार्क्स' शीर्षक लेख मार्क्सवाद के इतिहास के निरूपण में एक अत्यंत मूल्यवान योगदान है।

प्रस्तुत खंड की रचनाएं चूंकि पहले विश्वयुद्ध के आरंभकाल में लिखी गयी थीं, इसलिए उनमें से अधिकांश युद्ध के विषय से ही संबंधित है।

पहला विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) साम्राज्यवादी राष्ट्रों के दो दलों का युद्ध था और वह उपनिवेशों तथा प्रभाव-क्षेत्रों के पुनर्विभाजन और अन्य राष्ट्रों को लूटने व ग़ुलाम बनाने के लिए छेड़ा गया था। डेढ़ अरब से अधिक आबादीवाले ३० से ज़्यादा देश उसकी गिरफ़्त में आये थे।

यह विश्वव्यापी साम्राज्यवादी युद्ध राष्ट्रों के जीवन में एकाएक आये मोड़ का परिचायक था। उसने विश्व के अनेक राज्यों का भाग्य दांव पर लगा दिया था। उसके कारण रूसी और विश्व सामाजिक-जनवादी आंदोलन के सामने अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन की दिशा, संभावनाओं और नयी ऐतिहासिक परिस्थितियों में सर्वहारा पार्टियों की रणनीति तथा कार्यनीति से संबंधित कई सारे नये प्रश्न पैदा हो गये थे। मार्क्सवाद का सृजनात्मक ढंग से विकास करते हुए लेनिन ने इन सभी प्रश्नों का सभी पहलुओं से उत्तर दिया, यह निर्दिष्ट किया कि **युद्ध, शांति और क्रांति** के प्रश्नों पर बोल्शेविक पार्टी और सारे अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी आंदोलन को क्या रवैया अपनाना चाहिए, और मज़दूर वर्ग तथा दूसरे सभी मेहनतकशों को युद्ध से छुटकारा पाने का एकमात्र संभव और क्रांतिकारी मार्ग सुझाया।

युद्धरत राष्ट्रों के शासक वर्गों, बुर्जुआ तथा टुटपुंजिया पार्टियों द्वारा इस युद्ध के, "पितृभूमि की रक्षा" के लिए युद्ध के प्रतिरक्षात्मक होने के बारे में फैलाये जा रहे झूठ के मुक़ाबले में युद्धों की मार्क्सवादी अवधारणा प्रस्तुत करके लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविक पार्टी ने सारे विश्व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की जनता के सामने पहले विश्वयुद्ध की वास्तविक साम्राज्यवादी असलियत का भंडाफोड़ किया और बताया कि वह दूसरे देशों को लूटने तथा गुलाम बनाने के लिए लड़ा जा रहा है। लेनिन ने कहा कि युद्ध दो प्रकार के होते हैं: अन्यायपूर्ण तथा न्यायसंगत युद्ध। अन्यायपूर्ण युद्धों का लक्ष्य अन्य देशों पर क़ब्ज़ा करना, उनकी जनता को गुलाम बनाना और समाजवादी, जनवादी तथा राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों को दबाना होता है। ऐसे युद्धों के संदर्भ में वह "पितृभूमि की रक्षा" के उस नारे की असलियत को उघाड़ते हैं, जिसे बुर्जुआ वर्ग आम जनता को धोखे में डालने और अपने क़ब्ज़ावर इरादों को छिपाने के लिए पेश करता है। अतः वह साम्राज्यवादी युद्ध में "अपनी" सरकार के समर्थन की बुर्जुआ और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी नीति के मुक़ाबले में "अपनी" सरकार की पराजय की मांग उठाते हैं।

दूसरी ओर, लेनिन सिखाते हैं, "पितृभूमि की रक्षा" का वही नारा उचित, न्यायसंगत युद्धों में, जिनका लक्ष्य बाह्य शत्रु से जनता की रक्षा करना और साम्राज्यवाद के जुए से उपनिवेशों तथा पराश्रित देशों को मुक्ति दिलाना होता है, ठीक, आवश्यक और मार्क्सवाद की भावना के पूर्णतः अनुकूल बन जाता है।

तो किसी युद्ध के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण कैसे किया जाये? लेनिन के अनुसार युद्ध संबद्ध राष्ट्रों और उनके अंदर विभिन्न सामाजिक वर्गों द्वारा युद्ध से पहले चलायी जा रही नीति की हिंसात्मक साधनों से निरंतरता ही है। कोई युद्ध न्यायसंगत है अथवा अन्यायपूर्ण, यह इस पर निर्भर करता है कि उसे कौन-सा वर्ग चला रहा है और वह किस नीति की निरंतरता है। कम्युनिस्ट और मज़दूर पार्टियां युद्धों के संबंध में समाजवादियों के दृष्टिकोण विषयक लेनिन के इन बुनियादी निर्देशों को सदा ध्यान में रखती हैं।

विश्व साम्राज्यवादी युद्ध ने, जिसके दौरान लोगों को अनिर्वचनीय कष्ट भोगने पड़े थे, लाखों निरीह लोग मारे गये थे और अपरिमित विनाश हुआ था, मानवजाति के समक्ष सदा-सदा के लिए युद्धों की समाप्ति का प्रश्न, चिरस्थायी शांति का प्रश्न विशेष उग्रता के साथ उठाया था। ऐसी स्थिति में लेनिन ने "अपने" राष्ट्र के हित में लूटपरक, साम्राज्यवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शांति की बुर्जुआ वर्ग की संकल्पना के मुक़ाबले में उस शांति की चर्चा की, जोकि न्यायसंगत और जनवादी हो और जिसमें सभी जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार दिये जाने की मांग भी सम्मिलित हो। इस परवर्ती ढंग की शांति की स्थापना के लिए और फिर उसके सुदृढ़ीकरण तथा स्थायित्व के लिए संघर्ष सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य की विदेश नीति की आम लाइन बन गयी।

लेनिन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अन्यायपूर्ण, साम्राज्यवादी युद्धों के विरुद्ध सभी संभव साधनों से, जिनमें क्रांति करना और अपने देशों की साम्राज्यवादी सरकारों का तख़्ता उलटना भी शामिल हैं, दृढ़ और निर्णायक संघर्ष करना अत्यावश्यक है।

पहले विश्वयुद्ध के सिलसिले में सभी देशों की समाजवादी पार्टियों के सामने यह कार्यभार पेश हो गया था कि वे इस युद्ध के वास्तविक सार तथा लक्ष्यों को प्रकाश में लायें, युद्ध की सफ़ाई में सत्तारूढ़ वर्गों द्वारा फैलाये जा रहे झूठ को बेनक़ाब करें, मज़दूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीयतावादी एकता पर डटे रहें, मेहनतकश जनता को युद्ध के विरोध के लिए मैदान में उतारें और युद्धजनित आर्थिक व राजनीतिक संकट को क्रांति के लिए, पूंजीवादी व्यवस्था को उलटने के लिए इस्तेमाल करें। लेनिन ने पहले अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन (ज़िम्मरवाल्ड, १९१५) की पूर्ववेला में 'समाजवाद और युद्ध (युद्ध के प्रति रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का रुख़)' शीर्षक एक पैंफ़लेट लिखकर युद्धकाल में बोल्शेविक पार्टी की नीति को विस्तार से समझाया और सही साबित किया। प्रस्तुत खंड में उनका यह पैंफ़लेट भी शामिल किया गया है।

पर जब युद्ध आरंभ हुआ था, समाजवादी पार्टियों और दूसरे इंटरनेशनल के अधिकांश नेता अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेसों में पारित अपने प्रस्तावों और निर्णयों को भूलकर और मज़दूर वर्ग के ध्येय से ग़द्दारी करके अपने देशों के बुर्जुआ वर्ग के खेमे में जा मिले थे और युद्ध का समर्थन करने लगे थे। फलस्वरूप दूसरे इंटरनेशनल का पतन हो गया तथा उसमें फूट पड़ गयी। अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी आंदोलन में गहरा संकट पैदा हो गया। एकमात्र पार्टी, जिसने युद्ध के प्रश्न पर सही क्रांतिकारी रुख़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनाया, वह बोल्शेविक पार्टी थी, जिसके नेता व्ला० इ० लेनिन थे। उसने निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाया, सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद का ध्वज ऊंचा उठाये रखा, समाजवाद के प्रति वफ़ादारी की मिसाल पेश की और युद्ध के विरुद्ध, साम्राज्यवाद के विरुद्ध रूस के मज़दूर वर्ग के संघर्ष का नेतृत्व किया।

विश्वयुद्ध में सरकार की पराजय की पैरवी करनेवाली लेनिनीय नीति पर हमला करते हुए बुर्जुआ वर्ग और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों ने बोल्शेविकों पर देशभक्ति तथा मातृभूमि से प्रेम के अभाव का आरोप लगाया। इन कुत्सित आक्षेपों के उत्तर में लेनिन ने 'रूसियों का राष्ट्रीय गौरव' शीर्षक लेख लिखा, जिसमें उन्होंने बताया कि देशभक्ति वास्तव में कहते किसे हैं। वह लिखते हैं: "क्या, हमारे लिए, रूसी वर्ग-चेतन सर्वहाराओं के लिए राष्ट्रीय गौरव की भावना विरानी है? नहीं, निश्चय ही नहीं! हम अपनी भाषा और अपनी मातृभूमि से प्यार करते हैं" (प्रस्तुत खंड, पृ० ६२)। साम्राज्यवादी युद्ध में ज़ारशाही रूस की हार के लिए काम करके बोल्शेविक सच्चे देशभक्तों की तरह काम कर रहे थे, क्योंकि ऐसी नीति से ज़ारशाही का क्रांतिकारी ढंग से तख़्ता पलटना और पूंजीपतियों और ज़मींदारों के उत्पीड़न से मेहनतकशों को मुक्ति दिलाना आसान हो जाता था। राष्ट्रीय हितों की वास्तविक और सही समझ, अपनी जनता के सुख-कल्याण के लिए संघर्ष, मेहनतकशों में अंतर्राष्ट्रीयतावाद की भावना का प्रचार और सभी जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार की लगातार हिमायत – इन मुद्दों पर ही व्ला० इ० लेनिन ने इस लेख में विशेष ज़ोर दिया है।

१९वीं सदी और २०वीं सदी के संधिकाल में जो युग आरंभ हुआ, उसकी मुख्य विशेषता थी पूंजीवाद का साम्राज्यवाद में रूपांतरण और पूंजीवाद के विध्वंस के लिए वस्तुगत परिस्थितियों का निर्माण। साम्राज्यवाद विषयक लेनिन की कृतियों में सर्वाधिक गौरवपूर्ण स्थान 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' शीर्षक रचना को प्राप्त है। इसमें लेनिन ने मार्क्स की 'पूंजी' के प्रकाशन के बाद बीती आधी सदी में पूंजीवाद के विकास का लेखा-जोखा पेश किया। पूंजीवाद के जन्म, विकास और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ह्रास के बारे में मार्क्स और एंगेल्स द्वारा आविष्कृत नियमों के सहारे लेनिन ने ही सबसे पहले पूंजीवाद की एक विशिष्ट, चरम अवस्था के रूप में साम्राज्यवाद के आर्थिक तथा राजनीतिक सार का गहन वैज्ञानिक विश्लेषण किया। विश्व पूंजीवाद के असम आर्थिक तथा राजनीतिक विकास के नियम के आधार पर उन्होंने दिखाया कि साम्राज्यवाद की अवस्था में पूंजीवादी समाज के सभी अंतर्विरोधों का प्रखर हो जाना अपरिहार्य है। उन्होंने सिद्ध किया कि इस काल में विश्व के पुनर्विभाजन के लिए साम्राज्यवादी राज्यों के बीच संघर्ष उग्रतर हो जाता है और साम्राज्यवादी युद्ध छिड़ते हैं, जिनसे विश्व साम्राज्यवाद का सारा मोर्चा कमज़ोर पड़ जाता है। साम्राज्यवादी देशों की शृंखला में कमज़ोर कड़ियां पैदा होती हैं। इस आधार पर लेनिन ने यह अत्यंत महत्वपूर्ण सैद्धांतिक निष्कर्ष निकाला – और यह निष्कर्ष मार्क्सवादी विचारधारा में एक बहुत ही महान योगदान था – कि समाजवाद आरंभ में कुछेक या किसी एक देश में भी विजयी हो सकता है। साम्राज्यवाद के गुणों का वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि वह परजीवी, अंदर से सड़ता हुआ और मरणोन्मुख पूंजीवाद है और समाजवादी क्रांति की पूर्ववेला है। लेनिन सिद्ध करते हैं कि यह अत्यावश्यक और अपरिहार्य ही है कि पूंजीवाद के स्थान पर एक नयी, प्रगतिशील व्यवस्था, याने समाजवाद आये।

* * *

सभी रचनाएं उस क्रम से प्रकाशित की गयी हैं, जिसमें उन्हें लिखा गया है। खंड के अंत में टिप्पणियां, नाम-निर्देशिका और पारिभाषिक शब्द दिये गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यूरोपीय युद्ध में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद के कार्यभार[1]

यूरोपीय युद्ध की बाबत रूसी सामाजिक-जनवादियों के विचार

हमें अधिक से अधिक विश्वसनीय सूत्रों से ख़बरें मिली हैं कि यूरोपीय युद्ध के सवाल को लेकर रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के नेताओं का एक सम्मेलन हाल ही में हुआ। सम्मेलन पूर्णतः आधिकारिक नहीं था, क्योंकि ज़ारशाही सरकार द्वारा की गयी बहुत बड़ी तादाद में गिरफ़्तारियों और अपूर्व उत्पीड़न के कारण रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की केंद्रीय समिति अभी तक एकत्रित नहीं हो सकी है। लेकिन हमें बिलकुल पक्की ख़बर मिली है कि चर्चित सम्मेलन में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के सर्वाधिक प्रभावशाली हल्क़ों के विचार प्रगट किये गये।

सम्मेलन ने निम्न प्रस्ताव पास किया, जिसे एक दस्तावेज़ के रूप में हम यहां पूरा का पूरा उद्धत कर रहे हैं:

सामाजिक-जनवादियों के एक ग्रुप का प्रस्ताव

१) यूरोपीय और विश्वव्यापी युद्ध का स्पष्टतः निर्धारित बुर्जुआ, साम्राज्यवादी और राजवंशीय स्वरूप है। मंडियों के लिए संघर्ष तथा दूसरे देशों की लूट-खसोट, अलग-अलग देशों में सर्वहारा तथा जनवाद के क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने की तमन्ना, बुर्जुआ वर्ग के लाभ के लिए एक जाति के उजरती ग़ुलामों को दूसरी जाति के उजरती ग़ुलामों के ख़िलाफ़ भिड़ाकर सभी देशों के सर्वहारा समुदायों को धोखा देने, उनमें फूट पैदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने और क़त्ल करने की ख़्वाहिश—युद्ध के ये ही वास्तविक सार और अर्थ हैं।

२) दूसरे इंटरनेशनल[2] (१८८९–१९१४) में सबसे अधिक मज़बूत और प्रभावशाली जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के, युद्ध बजट के पक्ष में वोट देनेवाली, और प्रशियाई जंकरों तथा बुर्जुआ वर्ग की बुर्जुआ-अंधराष्ट्रवादी लफ़्फ़ाज़ी को दुहरानेवाली पार्टी के नेताओं का आचरण समाजवाद के साथ प्रत्यक्ष ग़द्दारी है[3]। अगर हम यह भी मान लें कि पार्टी नितांत कमज़ोर थी और उसे राष्ट्र की बुर्जुआ बहुसंख्या की इच्छा के सामने अस्थायी रूप से सर झुकाना पड़ा, तब भी जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेताओं के आचरण की किसी भी हालत में सफ़ाई नहीं दी जा सकती। दरअसल इस पार्टी ने इस वक़्त राष्ट्रवादी-उदारतावादी नीति अपना ली है।

३) बेल्जियम और फ़्रांस की सामाजिक-जनवादी पार्टियों के उन नेताओं का आचरण भी ठीक उतना ही निंदनीय है, जिन्होंने बुर्जुआ सरकारों में शामिल होकर समाजवाद के साथ ग़द्दारी की है[4]।

४) दूसरे इंटरनेशनल (१८८९–१९१४) के अधिकतर नेताओं द्वारा समाजवाद के साथ ग़द्दारी इस इंटरनेशनल के विचारधारात्मक तथा राजनीतिक दिवालियेपन का परिचायक है। इस पतन का मुख्य कारण उसके अंदर उस टुटपुंजिया अवसरवाद का सचमुच दौर-दौरा रहा है, जिसके बुर्जुआ स्वरूप और ख़तरे की ओर सभी देशों के क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि बहुत दिन से इशारा करते आये हैं। समाजवादी क्रांति को अस्वीकार करते हुए और उसके स्थान पर बुर्जुआ सुधारवाद रखते हुए, वर्ग संघर्ष तथा ख़ास वक़्तों पर गृहयुद्ध में उसकी अनिवार्य परिणति से इनकार करते हुए और वर्ग सहयोग का प्रचार करते हुए, देशभक्ति तथा पितृभूमि की रक्षा के वेश में बुर्जुआ अंधराष्ट्रवाद का प्रचार करते हुए और 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' द्वारा बहुत पहले प्रस्थापित समाजवाद के इस बुनियादी सत्य की उपेक्षा अथवा अवज्ञा करते हुए कि श्रमजीवियों का कोई स्वदेश नहीं है, सैन्यवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष में सभी देशों के बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ सभी देशों के सर्वहाराओं के क्रांतिकारी युद्ध की आवश्यकता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को स्वीकार करने के बजाय अपने को भावुकतापूर्ण-कूपमंडूकीय दृष्टिकोण तक ही सीमित रखते हुए, बुर्जुआ संसदवाद तथा बुर्जुआ क़ानूनियत के आवश्यक उपयोग को, इस क़ानूनियत को जड़पूजा में परिवर्तित करते हुए, संकटों के युगों में संगठन तथा आंदोलन के ग़ैर क़ानूनी रूपों की अनिवार्यता को भुलाते हुए अवसरवादी बहुत दिनों से दूसरे इंटरनेशनल के पतन की तैयारी करते रहे हैं। अवसरवाद का एक अंतर्राष्ट्रीय मुखपत्र, जर्मन 'समाजवादी मासिक'[5], जो बहुत दिनों से राष्ट्रवादी-उदारतावादी स्थिति अपनाता रहा है, बहुत वाजिब ही यूरोपीय समाजवाद पर अपनी विजय का उत्सव मना रहा है। जिसे जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी तथा अन्य सामाजिक-जनवादी पार्टियों का "केंद्र" कहा जाता है, उसने दरअसल अवसरवादियों के सामने बुज़दिली के साथ घुटने टेक दिये हैं। समाजवाद में इस बुर्जुआ प्रवृत्ति से अपरिवर्तनीय और निर्णायक छुटकारा भावी इंटरनेशनल का कार्यभार होना चाहिए।

५) जनता को सबसे ज़्यादा कारगर ढंग से बेवक़ूफ़ बनाने के लिए महाद्वीप के दो मुख्य प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रों – जर्मनी और फ़्रांस – की बुर्जुआ पार्टियों और सरकारों द्वारा उपयोग में लाये जा रहे और बुर्जुआ वर्ग का दासवत अनुगमन करनेवाले प्रत्यक्ष तथा प्रच्छन्न दोनों ही प्रकार के समाजवादी अवसरवादियों द्वारा दुहराये जा रहे बुर्जुआ तथा अंधराष्ट्रवादी कुतर्कों में से निम्नलिखित का विशेष रूप से उल्लेख और भर्त्सना की जानी चाहिए :

जब जर्मन बुर्जुआ वर्ग पितृभूमि की रक्षा और ज़ारशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष की बात करता है और जब वह सांस्कृतिक तथा जातीय विकास की स्वतंत्रता का आग्रह करता है, तब वह झूठ बोलता है, क्योंकि ज़ारशाही राजतंत्र की रक्षा करना विल्हेल्म की अगुवाई में प्रशियाई जंकरों और जर्मनी के बड़े बुर्जुआ वर्ग की हमेशा नीति रही है, युद्ध का फल चाहे जो कुछ भी हो, वे ज़रूर उसे सहारा देने की कोशिश करेंगे; वह झूठ बोलता है, क्योंकि दरअसल आस्ट्रियाई बुर्जुआ वर्ग ने सर्बिया के ख़िलाफ़ डाकेज़नी की मुहिम चला रखी है और जर्मन बुर्जुआ वर्ग डेनों, पोलों और फ़्रांसीसियों (अल्सास-लोरेन में) का उत्पीड़न कर रहा है, अधिक धनी और अधिक आज़ाद देशों को लूटने की ग़रज़ से बेल्जियम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रौर फ़्रांस के ख़िलाफ़ श्राक्रमणात्मक युद्ध चला रहा है तथा उसने सामरिक सामग्री में नवीनतम सुधारों के उपयोग के लिए सर्वोत्तम प्रतीत होनेवाली घड़ी में श्रौर रूस में तथाकथित बड़ा सैनिक कार्यक्रम चालू किये जाने से ठीक पहले हमला संगठित किया है।

इसी प्रकार जब फ़्रांसीसी बुर्जुश्रा वर्ग पितृभूमि की रक्षा, श्रादि की बात करता है, तो वह भी झूठ बोलता है, क्योंकि वह दरश्रसल उन देशों का बचाव कर रहा है, जो पूंजीवादी तकनीक में पिछड़े हुए हैं श्रौर जो श्रधिक धीमी गति से विकसित हो रहे हैं, क्योंकि वह श्राक्रमणात्मक युद्ध के लिए, याने श्रास्ट्रियाई श्रौर जर्मन धरती की लूट के लिए रूसी ज़ारशाही के यमदूत सभाइयों[6] को भाड़े पर इस्तेमाल करने की ख़ातिर करोड़ों-करोड़ ख़र्च करता है।

राष्ट्रों के दोनों युद्धरत ग्रुपों में से कोई भी युद्ध में क्रूरता श्रौर बर्बरता में एक दूसरे से उन्नीस नहीं है।

६) रूसी श्रौर ज़ारशाही-राजतंत्रवादी श्रंधराष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ श्रौर इस श्रंधराष्ट्रवाद की पैरवी में रूसी उदारतावादियों, कैडेटों[7], नरोदवादियों[8] के एक हिस्से तथा दूसरी बुर्जुश्रा पार्टियों द्वारा इस्तेमाल किये जानेवाले कुतर्कों के ख़िलाफ़ निर्मम श्रौर जीतोड़ संघर्ष चलाना रूसी सामाजिक-जनवादियों का पहला श्रौर सबसे प्रमुख कार्यभार है। रूस की सभी जातियों के मज़दूर वर्ग श्रौर मेहनतकश जनता के दृष्टिकोण से ज़ारशाही राजतंत्र श्रौर उसकी सेना की, जो पोलिश, उक्रइनी तथा रूस की श्रनेक श्रन्य जातियों का उत्पीड़न करते हैं श्रौर दूसरी जातियों का रूसी उत्पीड़न बढ़ाने तथा ज़ार की प्रतिक्रियावादी श्रौर बर्बर राजतांत्रिक हुकूमत को मज़बूत बनाने की ग़रज़ से जातियों के बीच वैमनस्य भड़काते हैं, पराजय कहीं श्रधिक छोटी बुराई होगी।

७) श्रब सामाजिक-जनवाद के ये नारे होने चाहिए:

पहला, फ़ौज में श्रौर साथ ही रणक्षेत्र में समाजवादी क्रांति के पक्ष में, श्रपने भाइयों के ख़िलाफ़ नहीं, दूसरे देशों के उजरती ग़ुलामों के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि सभी देशों की प्रतिक्रियावादी तथा बुर्जुश्रा सरकारों श्रौर पार्टियों के ख़िलाफ़ हथियारों के इस्तेमाल की श्रावश्यकता के पक्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में सर्वव्यापी प्रचार। सभी भाषाओं में ऐसा प्रचार चलाने के लिए सभी राष्ट्रों की फ़ौजों में ग़ैर क़ानूनी केंद्रों और दलों के संगठन की फ़ौरी आवश्यकता। निरपवाद रूप से सभी देशों के कूपमंडूकों और बूर्जुआ लोगों के अंधराष्ट्रवाद तथा "देशभक्ति" के ख़िलाफ़ निर्मम संघर्ष। वर्तमान इंटरनेशनल के उन नेताओं के ख़िलाफ़ संघर्ष में, जिन्होंने समाजवाद के साथ ग़द्दारी की है, उन मेहनतकशों की क्रांतिकारी चेतना को स्पर्श करना ज़रूरी है, जो युद्ध का सारा बोझ वहन करते और अधिकतर मामलों में अवसरवाद तथा अंधराष्ट्रवाद के विरोधी होते हैं।

दूसरा, फ़ौरी नारे के रूप में जर्मन, पोलिश, रूसी, आदि जनतंत्रों के पक्ष में और यूरोप के सभी अलग-अलग राज्यों का एक प्रजातांत्रिक संयुक्त राज्य यूरोप में रूपांतरण करने के पक्ष में प्रचार।

तीसरा, ख़ास तौर पर ज़ारशाही राजतंत्र और रूसी सर्वस्लाववादी[9] अंधराष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ संघर्ष और रूस में क्रांति तथा रूस द्वारा उत्पीड़ित जातियों की मुक्ति और आत्मनिर्णय के प्रचार के साथ-साथ जनवादी जनतंत्र के फ़ौरी नारों, याने जागीरों की ज़ब्ती और आठ घंटे के कार्य-दिवस के नारों का प्रचार।

सामाजिक-जनवादियों का,
रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर
पार्टी के सदस्यों का एक ग्रुप

अगस्त, १९१४ को लिखित।	खंड २६, पृ० १–७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्ल मार्क्स

(मार्क्सवाद की व्याख्या सहित एक संक्षिप्त जीवनी)[10]

भूमिका

कार्ल मार्क्स संबंधी मेरा जो लेख इस समय अलग से प्रकाशित हो रहा है, मैंने उसे १९१३ में (जहां तक मुझे याद है), ग्रानात विश्वकोश के लिए लिखा था। मार्क्स से संबंध रखनेवाली पुस्तकों की एक लंबी सूची लेख के अंत में जोड़ दी गयी थी, जिसमें अधिकांश पुस्तकें विदेशी थीं। प्रस्तुत संस्करण में वह सूची छोड़ दी गयी है। विश्वकोश के संपादकों ने सेंसरशिप के कारण लेख के अंत का वह हिस्सा काट दिया था, जिसमें मार्क्स की क्रांतिकारी कार्यनीति की व्याख्या थी। दुर्भाग्यवश मैं वह हिस्सा यहां दुबारा नहीं दे सकता, क्योंकि लेख की पहली प्रति मेरे काग़ज़ों में कहीं क्रैको या स्विट्ज़रलैंड में रह गयी है। मुझे केवल इतना याद है कि लेख के इस अंतिम भाग में बाक़ी चीज़ों के साथ मैंने मार्क्स के एक पत्र में से—जो उन्होंने एंगेल्स को १६ अप्रैल, १८५६ को लिखा था—एक उद्धरण दिया था, जिसमें उन्होंने लिखा था: "जर्मनी में सारी बात सर्वहारा क्रांति का किसान युद्ध के किसी दूसरे संस्करण द्वारा समर्थन किये जाने की संभावना पर निर्भर करेगी। तब स्थिति शानदार होगी।" यह बात हमारे मेंशेविक[11], जो इस क़दर गिर गये हैं कि समाजवाद के साथ ग़द्दारी पर उतर आये हैं और भागकर बुर्जुआ वर्ग से जा मिले हैं, १९०५ में भी नहीं समझ पाये और न उसके बाद ही।

न० लेनिन

मास्को, १४ मई, १९१८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्ल मार्क्स ५ मई (नये कैलेंडर के अनुसार), १८१८ को त्रियेर नगर (प्रशा के राइन प्रदेश) में पैदा हुए थे। पिता वकील, यहूदी, थे, जिन्होंने १८२४ में प्रोटेस्टेंट धर्म स्वीकार कर लिया था। परिवार ख़ुशहाल और सुसंस्कृत था, लेकिन क्रांतिकारी नहीं। त्रियेर में जिम्नेज़ियम (विशिष्ट पाठशाला – अनु०) की पढ़ाई ख़त्म करके मार्क्स पहले बोन, फिर बर्लिन के विश्वविद्यालय में दाख़िल हुए, जहां उन्होंने क़ानून और सबसे बढ़कर इतिहास और दर्शन का अध्ययन किया। उन्होंने १८४१ में एपीक्यूरस के दर्शन पर शोधनिबंध पेश करके अपना कोर्स पूरा किया। अपने विचारों में मार्क्स उस समय तक हेगेलवादी-भाववादी थे। बर्लिन में वह वामपंथी हेगेलवादियों [12] (ब्रूनो बावेर, आदि) के हल्क़े से संबंधित थे, जो हेगेल के दर्शन से निरीश्वरवादी तथा क्रांतिकारी निष्कर्ष निकालने की चेष्टा करते थे।

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरा करके मार्क्स प्रोफ़ेसर बनने की आशा से बोन चले गये। लेकिन सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति ने, जिसने १८३२ में लुडविग फ़ायरबाख़ को विश्वविद्यालय-पीठ से वंचित किया था, फिर १८३६ में उनके विश्वविद्यालय में वापस आने की मनाही की थी और १८४१ में युवक प्रोफ़ेसर ब्रूनो बावेर से बोन विश्वविद्यालय में अध्यापन का अधिकार छीन लिया था, मार्क्स को शैक्षिक पेशा अपनाने का विचार छोड़ देने के लिए मजबूर कर दिया। उस समय जर्मनी में वामपंथी हेगेलवादी विचारों का बहुत तेज़ी से विकास हो रहा था। लुडविग फ़ायर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाख़ ने, विशेषतः १८३६ के बाद, धर्मशास्त्र की आलोचना शुरू कर दी थी और उस भौतिकवाद की ओर मुड़ने लगे थे, जिसने १८४१ में उनके दर्शन में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया था ('ईसाई धर्म का सार'); १८४३ में उनकी कृति 'भावी दर्शन की आधारभूत प्रस्थापनाएं' प्रकाशित हुई। फ़ायरबाख़ की इन कृतियों के बारे में एंगेल्स ने बाद में लिखा कि इन पुस्तकों का "उन्मुक्तकारी प्रभाव स्वयं अनुभव किया जाना चाहिए था। हम लोग" (याने वामपंथी हेगेलवादी, जिनमें मार्क्स भी शामिल थे) "सभी फ़ौरन फ़ायरबाख़ के चेले बन गये।"[13] उस समय राइन के कुछ आमूलवादी बुर्जुआ लोगों ने, जो वामपंथी हेगेलवादियों से मिलता-जुलता दृष्टिकोण रखते थे, कोलोन में एक विरोध पक्षीय अख़बार, 'राइन समाचारपत्र'[14] निकालना शुरू किया (पहला अंक १ जनवरी, १८४२ को निकला था)। मार्क्स और ब्रूनो बावेर को उसके मुख्य लेखक बनने के लिए निमंत्रित किया गया और अक्तूबर, १८४२ में मार्क्स उसके मुख्य संपादक बन गये और बोन से कोलोन चले आये। मार्क्स के संपादन में पत्र का क्रांतिकारी-जनवादी झुकाव अधिकाधिक स्पष्ट होता गया और सरकार ने पहले उसकी दुहरी और फिर तिहरी सेंसरशिप शुरू की और फिर १ जनवरी, १८४३ को उसे बिलकुल ही बंद कर देने का निश्चय किया। मार्क्स को उक्त तिथि से पहले संपादन से त्यागपत्र देना पड़ा, मगर उनका इस्तीफ़ा भी पत्र को बचा नहीं सका और मार्च, १८४३ में उसे बंद कर दिया गया। एंगेल्स बताते हैं कि 'राइन समाचारपत्र' में प्रकाशित मार्क्स के सबसे अधिक महत्वपूर्ण लेखों में, नीचे निर्देशित लेखों के अलावा (देखिये **ग्रंथसूची**[15]), मोज़ेल घाटी के अंगूर-बाग़ान के किसानों की स्थिति के बारे में भी एक लेख है[16]। अख़बारी काम से मार्क्स को पता चला कि वह राजनीतिक अर्थशास्त्र से काफ़ी परिचित नहीं हैं और वह उत्साहपूर्वक उसके अध्ययन में जुट गये।

१८४३ में मार्क्स ने क्रेयत्स्नाख़ में अपने बचपन की मित्र जेनी फ़ॉन वेस्टफ़ालेन से विवाह किया, जिनसे विद्यार्थी-जीवन में ही उनकी मंगनी हो चुकी थी। उनकी पत्नी प्रशा के एक प्रतिक्रियावादी अमीर घराने की थीं। उनके बड़े भाई प्रशा के एक अधिकतम प्रतिक्रियावादी दौर,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८५०–१८५८, में गृहमंत्री थे। १८४३ के पतझड़ में मार्क्स विदेश से आर्नोल्ड रूगे (१८०२–१८८०; वामपंथी हेगेलवादी, १८२५–१८३० जेल में, १८४८ के बाद उत्प्रवासी, १८६६–१८७० के बाद बिस्मार्कपंथी) के साथ मिलकर एक आमूलवादी पत्रिका प्रकाशित करने के लिए पेरिस चले आये। 'जर्मन-फ़्रांसीसी वार्षिकी'[17] नामक इस पत्रिका का केवल पहला ही अंक निकला। वह जर्मनी में गुप्त वितरण की कठिनाई और रूगे के साथ मतभेदों के कारण बंद हो गयी। इस पत्रिका में प्रकाशित अपने लेखों में मार्क्स क्रांतिकारी के रूप में सामने आ चुके थे, जिसने "मौजूदा सब कुछ की निर्मम आलोचना", विशेषतः "हथियारों द्वारा आलोचना"[18] की वकालत की थी, **जनसाधारण** और **सर्वहारा** से अपील की थी।

सितंबर, १८४४ में फ़्रेडरिक एंगेल्स कुछ दिन के लिए पेरिस आये और उस समय से वह मार्क्स के घनिष्ठतम मित्र रहे। उन दोनों ने पेरिस के क्रांतिकारी दलों के खौलते हुए तत्कालीन जीवन में अधिकतम गरमजोशी के साथ भाग लिया (प्रूदों की शिक्षा का उस समय विशेष महत्व था, जिसकी मार्क्स ने १८४७ में अपनी 'दर्शन की दरिद्रता' में निर्णयकारी ढंग से धज्जियां उड़ा दीं) और टुटपुंजियाई समाजवाद की विभिन्न शिक्षाओं के ख़िलाफ़ ज़ोरदार ढंग से लड़कर क्रांतिकारी **सर्वहारा समाजवाद** अथवा कम्युनिज़्म (मार्क्सवाद) के सिद्धांत और कार्यनीति का निष्पादन किया। **ग्रंथसूची** में मार्क्स की उस ज़माने, १८४४–१८४८, की कृतियां देखिये। १८४५ में प्रशियाई सरकार के आग्रह पर मार्क्स को ख़तरनाक क्रांतिकारी के रूप में पेरिस से निर्वासित कर दिया गया। वह ब्रसेल्स चले गये। १८४७ के वसंत में मार्क्स और एंगेल्स एक गुप्त प्रचारकारी संगठन, 'कम्युनिस्ट लीग'[19] में शामिल हो गये। उन्होंने इस लीग की दूसरी कांग्रेस (नवंबर, १८४७, लंदन) में प्रमुख भाग लिया और उसके आदेशानुसार फ़रवरी, १८४८ में प्रकाशित प्रख्यात 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' तैयार किया। इस कृति में नया विश्वदृष्टिकोण, सामाजिक जीवन के क्षेत्र को भी अपनी परिधि में ले लेनेवाला सुसंगत भौतिकवाद, विकास की अधिकतम सर्वांगीण तथा गंभीर शिक्षा के रूप में द्वंद्ववाद, वर्ग संघर्ष का तथा नये, कम्युनिस्ट समाज के स्रष्टा के नाते सर्वहारा वर्ग की विश्व-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐतिहासिक क्रांतिकारी भूमिका का सिद्धांत मेधावी स्पष्टता और तेजस्विता के साथ वर्णित हैं।

जब १८४८ में फ़रवरी क्रांति [20] भड़क उठी, तब मार्क्स को बेल्जियम से निर्वासित कर दिया गया। वह फिर पेरिस आ गये और वहां से मार्च क्रांति [21] के बाद जर्मनी, याने कोलोन, चले आये। वहां १ जून, १८४८ से १९ मई, १८४९ तक 'नया राइन समाचारपत्र' [22] निकलता रहा, जिसके प्रधान संपादक मार्क्स थे। १८४८–१८४९ की क्रांतिकारी घटनाओं के दौरान नये सिद्धांत की शानदार तरीक़े से पुष्टि हुई; उसी तरह संसार के सभी देशों में बाद के सभी सर्वहारा और जनवादी आंदोलनों द्वारा उसकी पुष्टि हुई है। विजयी प्रतिक्रांति ने पहले तो मार्क्स पर मुक़दमा चलाया (९ फ़रवरी, १८४९ को वह बरी कर दिये गये) और उसके बाद (१६ मई, १८४९ को) उन्हें जर्मनी से निर्वासित कर दिया। मार्क्स पहले पेरिस गये, लेकिन १३ जून, १८४९ के प्रदर्शन [23] के बाद वहां से भी निर्वासित कर दिये गये और लंदन चले गये, जहां वह अपनी मृत्यु तक रहे।

जैसा कि एंगेल्स के साथ मार्क्स के पत्र-व्यवहार (१९१३ में प्रकाशित) [24] से विशेष स्पष्टता के साथ प्रत्यक्ष हो जाता है, उत्प्रवासी जीवन की परिस्थितियां बेहद कठोर थीं। मार्क्स और उनका परिवार घोर अभाव का शिकार रहा। अगर एंगेल्स से निरंतर और आत्मत्यागमय आर्थिक सहायता न मिलती रहती, तो न केवल यह कि मार्क्स 'पूंजी' को पूरा न कर पाते, बल्कि यह भी कि अभाव की मार से वह अनिवार्यतः मर गये होते। इसके अलावा उस समय हावी टुटपुंजिया समाजवाद, सामान्यतः ग़ैर सर्वहारा समाजवाद की शिक्षाओं और प्रवृत्तियों ने मार्क्स को निरंतर संघर्ष करते रहने, कभी-कभी तो अधिकतम वहशियाना और भद्दे वैयक्तिक हमलों का प्रतिकार करने के लिए विवश किया (*Herr Vogt*)। उत्प्रवासियों के हल्क़ों से दरकिनार रहकर, मुख्य रूप से राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन में शक्ति लगाते हुए मार्क्स अनेक ऐतिहासिक कृतियों में (देखिये ग्रंथसूची) अपने भौतिकवादी सिद्धांत का निष्पादन करते रहे। मार्क्स ने 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' (१८५९) और 'पूंजी' (खंड १, १८६७) नामक अपनी कृतियों में राजनीतिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थशास्त्र को क्रांतिकारी रूप दे दिया (देखिये आगे मार्क्स की शिक्षा)।

छठी और सातवीं दशाब्दियों के अंत में जनवादी आंदोलनों के पुनरुज्जीवन के दौर ने मार्क्स को फिर व्यावहारिक सरगर्मी में खींच लिया। प्रसिद्ध पहले इंटरनेशनल, 'अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ'[26] की लंदन में १८६४ में (२८ सितंबर को) स्थापना हुई। मार्क्स इस संगठन के प्राण थे, उसकी पहली 'चिट्ठी'[27] और ढेरों प्रस्तावों, ऐलानों और घोषणापत्रों के लेखक थे। विभिन्न देशों के मज़दूर आंदोलन को एकताबद्ध करते हुए, ग़ैर सर्वहारा, प्राक्-मार्क्सी समाजवाद के विभिन्न रूपों (माज़्ज़िनी, प्रूदों, बकूनिन, ब्रिटिश उदारतावादी ट्रेड-यूनियन आंदोलन, जर्मनी का लासाली दक्षिणपंथी ढुलमुलपन, इत्यादि) को संयुक्त सरगर्मी की धारा में निदेशित करने की कोशिश करते हुए और इन सभी पंथों और मतों के सिद्धांतों से लड़ते हुए मार्क्स ने विभिन्न देशों के मज़दूर वर्ग के सर्वहारा संघर्ष की समरूप कार्य-नीति निरूपित की। पेरिस कम्यून[28] के, जिसका मार्क्स ने ऐसा गहन, सटीक, शानदार, कारगर और क्रांतिकारी मूल्यांकन ('फ़्रांस में गृहयुद्ध', १८७१) किया, पतन (१८७१) और बकूनिनवादियों[29] द्वारा इंटरनेशनल में डाली गयी दरार के बाद यूरोप में इंटरनेशनल का अस्तित्व असंभव हो गया। उसकी हेग कांग्रेस (१८७२) के बाद मार्क्स ने इंटरनेशनल की जनरल कौंसिल को न्यूयार्क स्थानांतरित करने की बात स्वीकार करा ली। संसार के सभी देशों में मज़दूर आंदोलन के पहले से कहीं अधिक विकास के युग के लिए, याने उसके कार्यक्षेत्र के बढ़ने के युग के लिए, अलग-अलग राष्ट्रीय राज्यों के आधार पर सर्वजनीन समाजवादी मज़दूर पार्टियों की स्थापना के युग के लिए स्थान बनाकर पहले इंटरनेशनल ने अपनी ऐतिहासिक भूमिका समाप्त कर दी।

इंटरनेशनल में श्रमसाध्य काम और उससे भी अधिक श्रमसाध्य सैद्धांतिक अध्यवसाय ने मार्क्स के स्वास्थ्य को पूर्णतः चौपट कर दिया। ढेरों नयी सामग्री जमा करते हुए और अनेक नयी भाषाएं (जैसे रूसी) सीखते हुए उन्होंने राजनीतिक अर्थशास्त्र के संशोधन और 'पूंजी' के समापन का अपना काम जारी रखा, लेकिन बीमारी ने उन्हें 'पूंजी' को पूरा नहीं करने दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२ दिसंबर, १८८१ को उनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। १४ मार्च, १८८३ को मार्क्स अपनी आराम-कुर्सी में शांतिपूर्वक सदा-सर्वदा के लिए सो गये। उन्हें लंदन के हाइगेट क़ब्रिस्तान में अपनी पत्नी की बग़ल में दफ़ना दिया गया। मार्क्स के बच्चों में से कुछ तो लंदन में बचपन में ही उस समय मर गये, जब परिवार घोर ग़रीबी में था। तीन बेटियों ने अंग्रेज़ और फ़्रांसीसी समाजवादियों से शादियां कर लीं: एल्योनोरा एवेलिंग, लाऊरा लफ़ार्ग और जेनी लॉन्गे। जेनी के पुत्र फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के सदस्य हैं।

मार्क्स की शिक्षा

मार्क्सवाद – मार्क्स के विचारों और उनकी शिक्षा की व्यवस्थित शृंखला है। उन्नीसवीं शताब्दी में संसार के तीन अधिकतम उन्नत देशों में पैदा हुई तीन मुख्य विचारधाराओं – क्लासिकीय जर्मन दर्शन, क्लासिकीय आंग्ल राजनीतिक अर्थशास्त्र और सामान्य फ़्रांसीसी क्रांतिकारी शिक्षाओं के साथ संलग्न फ़्रांसीसी समाजवाद – को मार्क्स ने आगे बढ़ाया और उन्हें अपनी प्रतिभा से परिपूर्ण बनाया। मार्क्स के विचारों की, जो संसार के सभी सभ्य देशों के मज़दूर आंदोलन के सिद्धांत और कार्यक्रम के रूप में आधुनिक भौतिकवाद तथा आधुनिक वैज्ञानिक समाजवाद की समग्रता प्रस्तुत करते हैं, विरोधियों तक द्वारा स्वीकार की गयी विलक्षण सुसंगति तथा क्रमबद्धता हमें इस बात के लिए विवश करती हैं कि हम मार्क्सवाद के मुख्य अंतर्य, याने मार्क्स की आर्थिक शिक्षा का विवेचन करने से पहले उनके सामान्य विश्वदृष्टिकोण की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करें।

दार्शनिक भौतिकवाद

१८४४–१८४५ से, जब मार्क्स के विचारों ने ठोस रूप धारण कर लिया था, वह भौतिकवादी, विशेषत: फ़ायरबाख़ के पक्षधर थे, जिनके कमज़ोर पहलुओं को बाद में भी वह मात्र इसी तथ्य में निहित मानते थे कि उनके भौतिकवाद में पर्याप्त सुसंगति तथा क्रमबद्धता नहीं थीं। मार्क्स फ़ायरबाख़ के विश्व-ऐतिहासिक, "युगांतरकारी" महत्व को हेगेल के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाववाद से ठीक निर्णायक संबंध-विच्छेद और भौतिकवाद की उद्घोषणा में देखते थे, जो अभी "अठारहवीं शताब्दी में, ख़ास तौर से फ़्रांस के अंदर, केवल तत्कालीन राजनीतिक संस्थाओं के ख़िलाफ़ और उनके साथ-साथ धर्म तथा धर्मशास्त्र के ख़िलाफ़ ही नहीं, बल्कि... हर प्रकार के अधिभूतवाद" ("संयत दर्शन" से भिन्न "उन्मत्त कल्पना-विहार" के अर्थ में) "के ख़िलाफ़ भी एक संघर्ष था" ('साहित्यिक धरोहर' में 'पवित्र परिवार')। मार्क्स ने लिखा था: "हेगेल के लिए मानव मस्तिष्क की जीवन-प्रक्रिया, अर्थात चिंतन की प्रक्रिया, जिसे 'विचार' के नाम से उन्होंने एक स्वतंत्र कर्त्ता तक बना डाला है, वास्तविक संसार की सृजनकर्त्री है... इसके विपरीत मेरे लिए विचार इसके सिवा और कुछ नहीं हैं कि भौतिक संसार मानव मस्तिष्क में प्रतिबिंबित होता है और चिंतन के रूपों में बदल जाता है" ('पूंजी', दूसरे संस्करण का परिशिष्ट)[30]। मार्क्स के इस भौतिकवादी दर्शन के पूर्ण अनुरूप और उसका विवेचन करते हुए फ़्रे० एंगेल्स ने 'ड्यूहरिंग मत-खंडन' में (देखिये) (जिसे मार्क्स ने पांडुलिपि में पढ़ा था) लिखा था: "संसार का अद्वैत उसकी सत्ता में निहित नहीं होता... उसकी भौतिकता में निहित होता है, और यह बात... दर्शनशास्त्र तथा प्राकृतिक विज्ञान के एक लंबे और कष्टदायक विकास के द्वारा ही प्रमाणित होती है... गति भूत के अस्तित्व की विधि है।" जिस तरह "बिना गति के भूत कहीं पर और कभी नहीं हुआ है और न हो सकता है", उसी तरह "भूत के बिना गति... यदि यह प्रश्न और किया जाये... कि चिंतन और चेतना सचमुच क्या हैं और वे कहां से आती हैं, तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे मानव मस्तिष्क की पैदावार होती हैं और मनुष्य स्वयं प्रकृति की एक ऐसी पैदावार है, जिसका उसके वातावरण के भीतर और उसके वातावरण के साथ-साथ विकास हुआ है। अतः यह बात स्वतःस्पष्ट है कि मानव मस्तिष्क की पैदावार चूंकि अंतिम विश्लेषण में प्रकृति की पैदावार भी होती है, इसलिए प्रकृति के शेष अंतर्संबंधों से उसका कोई विरोध नहीं होता, बल्कि वह उनके अनुरूप होती है।" "हेगेल भाववादी थे। उनकी दृष्टि में उनके मन के विचार वास्तविक वस्तुओं तथा प्रक्रियाओं के न्यूनाधिक अमूर्त प्रतिबिंब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चित्र" (मूल में Abbilder, बिंब, कभी-कभी एंगेल्स "छाप" की बात करते हैं) "नहीं थे, बल्कि इसके विपरीत ख़ुद वस्तुएं और उनका विकास-क्रम हेगेल के लिए केवल उस 'विचार' के मूर्त रूप थे, जो संसार का जन्म होने के भी पहले से कहीं पर अनंत काल से विद्यमान है।"[31] अपनी कृति 'लुडविग फ़ायरबाख़' में, जिसमें फ़्रेडरिक एंगेल्स फ़ायरबाख़ के दर्शन पर अपने और मार्क्स के दृष्टिकोण का विवेचन करते हैं और जिसे उन्होंने हेगेल, फ़ायरबाख़ और इतिहास की भौतिकवादी धारणा के संबंध में अपने और मार्क्स के द्वारा १८४४–१८४५ में लिखित पुरानी पांडुलिपि को दुबारा पढ़ने के बाद छपने को भेजा, एंगेल्स लिखते हैं: "समग्र दर्शन का और विशेषकर नूतन दर्शन का महान आधारभूत प्रश्न चिंतन और अस्तित्व के संबंध का... आत्मा और प्रकृति के संबंध का है... यह प्रश्न कि आत्मा और प्रकृति में कौन प्राथमिक है... दार्शनिकों ने इस प्रश्न के जो उत्तर दिये, उन्होंने उनको दो बड़े शिविरों में बांट दिया। जिन्होंने आत्मा को प्रकृति के मुक़ाबले में प्राथमिकता दी और इस कारण आख़िर में इस या उस रूप में विश्व का सृजन स्वीकार किया... उनका अपना अलग भाववादी शिविर बन गया। दूसरे, जिन्होंने प्रकृति की प्राथमिकता स्वीकार की, वे भौतिकवाद की विभिन्न शाखाओं में शामिल हुए।" (दार्शनिक) भाववाद और भौतिकवाद की धारणाओं का अन्य सभी प्रकार का उपयोग केवल उलझन पैदा करता है। मार्क्स ने धर्म से किसी न किसी प्रकार सदा संबंधित भाववाद को ही नहीं, बल्कि हमारे युग में विशेष रूप से बहुप्रचारित ह्यूम और कान्ट के विचारों, अज्ञेयवाद, समीक्षावाद तथा प्रत्यक्षवाद[32] के विभिन्न रूपों को भी अस्वीकार किया और यह माना कि इस प्रकार के दर्शन का अर्थ है भाववाद के लिए "प्रतिक्रियावादी" रिआयत या अधिक से अधिक "दुनिया के सामने उससे" (भौतिकवाद से–सं०) "इनकार करते हुए लुकछिपकर भौतिकवाद अंगीकार करना"[33]। इस प्रश्न के संबंध में मार्क्स और एंगेल्स की उपरोक्त कृतियों के अतिरिक्त एंगेल्स के नाम मार्क्स द्वारा लिखित १२ दिसंबर, १८६६ का पत्र भी देखिये, जिसमें वे प्रसिद्ध प्रकृतिज्ञ टामस हक्सली की एक सामान्य से "अधिक भौतिकवादी" उक्ति और उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस मान्यता का उल्लेख करते हैं कि जब तक "हम कार्यतः पर्यवलोकन और चिंतन करते हैं, तब तक हम भौतिकवाद के धरातल से कभी अलग नहीं हो सकते" और अज्ञेयवाद के लिए, ह्यूमी विचारधारा के लिए "गुंजाइश" छोड़ देने के लिए उनकी भर्त्सना करते हैं। स्वतंत्रता और अनिवार्यता के संबंध पर मार्क्स के दृष्टिकोण का उल्लेख करना ख़ास तौर से ज़रूरी है: "आवश्यकता केवल उसी हद तक अंधी होती है, जिस हद तक वह समझी नहीं जाती। स्वतंत्रता आवश्यकता की अनुभूति है" ('ड्यूहरिंग मत-खंडन' में एंगेल्स)। इसका अर्थ है प्रकृति की वस्तु-परक नियममूलकता की तथा स्वतंत्रता में अनिवार्यता के द्वंद्वात्मक रूपांतरण की स्वीकृति (उसी तरह, जैसे अज्ञात किंतु ज्ञेय "वस्तु-निजरूप" का "वस्तु-हमारे निमित्त" में, "वस्तुसार" का "व्यापार" में रूपांतरण)। मार्क्स और एंगेल्स "पुराने" भौतिकवाद की, जिसमें फ़ायरबाख़ी (और उससे भी बढ़कर "बाज़ारू", बुख़नरी-फ़ोग्टी-मोलेशौटी) भौतिकवाद भी शामिल है, कमियों में इन बातों की गणना करते हैं कि (१) वह भौतिकवाद "मुख्यतः यांत्रिक" था और रसायन तथा जीवविज्ञान (और हमारे युग के लिए इसमें भूतद्रव्य के वैद्युत सिद्धांत जोड़ना आवश्यक है) के नवीनतम विकास को ध्यान में नहीं रखता था; (२) पुराना भौतिकवाद अनैतिहासिक, अद्वंद्वात्मक (द्वंद्ववाद-विरोधी होने के अर्थ में अधिभूतवादी) था और सुसंगत तथा सर्वतोमुखी ढंग से विकास के दृष्टिकोण का अनुसरण नहीं करता था; (३) वह "मानव सार" को (ठोस रूप में, ऐतिहासिक रूप में निर्धारित) "सभी सामाजिक संबंधों की समष्टि के रूप में" नहीं, बल्कि अमूर्त ढंग से ग्रहण करता था और इसलिए संसार की केवल "व्याख्या करता था", जबकि काम उसे "बदलने" का है, याने वह "क्रांतिकारी व्यावहारिक कार्यकलाप" के महत्व को नहीं समझता था।

द्वंद्ववाद

विकास के अधिकतम सर्वांगीण, समृद्ध सार तथा गहन शिक्षा के रूप में हेगेल के द्वंद्ववाद को मार्क्स और एंगेल्स जर्मन क्लासिकीय दर्शन की महानतम उपलब्धि मानते थे। विकास के, क्रमोन्नति के सभी अन्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसूली गुरों को वे एकांगी, सारहीन, प्रकृति तथा समाज के विकास की वास्तविक गति (अक्सर छलांगों, महाविपत्तियों, क्रांतियों के साथ) को विकृत करनेवाला तथा पंगु बनानेवाला मानते थे। "मार्क्स और मैं दो ही ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सचेतन द्वंद्ववाद को" (भाववाद की तबाही से, जिसमें हेगेलवाद भी शामिल है) "जर्मन भाववादी दर्शनशास्त्र से मुक्त करके उसे प्रकृति तथा इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा पर लागू किया।" "प्रकृति द्वंद्ववाद की कसौटी है; और आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान के बारे में यह स्वीकार करना पड़ता है कि उसने द्वंद्ववाद के प्रमाण के रूप में अत्यंत मूल्यवान सामग्री दी है" (यह रेडियम, इलेक्ट्रॉन और तत्वांतरण के आविष्कार, आदि से पहले लिखा गया था), "जो दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है, और इस प्रकार उसने यह सिद्ध कर दिया है कि अंततोगत्वा प्रकृति में हर चीज़ अधिभूतवादी ढंग से नहीं, बल्कि द्वंद्वात्मक ढंग से घटती रहती है।"[34]

एंगेल्स लिखते हैं: "यह महान मौलिक विचार कि विश्व को पूर्व-निष्पन्न वस्तुओं के समुच्चय के रूप में नहीं, अपितु प्रक्रियाओं के समुच्चय के रूप में ग्रहण करना चाहिए, जिसमें स्थायी प्रतीत होनेवाली वस्तुएं ही नहीं, बल्कि उसी तरह मानव मस्तिष्क में उनके मानसिक बिंब भी, अर्थात धारणाएं भी सतत् आविर्भाव तथा अवसान के अविरत परिवर्तन क्रम से गुज़रती हैं—यह महान मौलिक विचार ख़ासकर हेगेल के काल से सामान्य चेतना में इतना व्याप्त हो गया है कि इस रूप में अब उसका प्रतिवाद शायद ही कोई करेगा। पर इस मौलिक विचार को शब्दों में स्वीकार करना एक चीज़ है और प्रत्येक अन्वेषण-क्षेत्र में वास्तव में उसका विशद प्रयोग करना कुछ और ही चीज़ है।" "द्वंद्वात्मक दर्शन के लिए कोई भी वस्तु अंतिम, निरपेक्ष तथा पुण्य नहीं है। वह हर चीज़ में और हर चीज़ का परिवर्तनशील गुण प्रदर्शित करता है, उसके समक्ष निम्नावस्था से ऊपर की ओर उठते हुए अंतहीन विकास-क्रम, उत्पत्ति तथा विनाश की अविरत प्रक्रिया के अलावा और कोई दूसरी चीज़ नहीं टिक सकती। वह स्वयं भी चिंतनशील मस्तिष्क में इस प्रक्रिया का प्रतिबिंब मात्र है।" इस प्रकार मार्क्स के अनुसार "द्वंद्ववाद बाह्यजगत्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रौर मानव चिंतन दोनों की गति के ग्राम नियमों का विज्ञान" [35] है।

हेगेल के दर्शन के इस क्रांतिकारी पक्ष को मार्क्स ने ग्रहण ग्रौर विकसित किया। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को "ग्रन्य विज्ञानों के ऊपर खड़े हुए किसी दर्शनशास्त्र की ग्रावश्यकता नहीं है"। "समस्त पूर्वकालीन दर्शनशास्त्र का जो भाग इसके बाद भी स्वतंत्र रूप से जीवित रहता है, वह है चिंतन तथा उसके नियमों का विज्ञान—ग्रर्थात ग्रौपचारिक तर्कशास्त्र तथा द्वंद्ववाद।" [36] ग्रौर द्वंद्ववाद के ग्रंदर, मार्क्स की समझ में ग्रौर साथ ही हेगेल के ग्रनुसार, वह चीज़ भी शामिल है, जिसे ग्राजकल बोध-सिद्धांत ग्रथवा ज्ञान-मीमांसा कहते हैं, ग्रौर उसे भी संज्ञान के उद्गम ग्रौर विकास का, ग्रज्ञान से ज्ञान में संक्रमण का ग्रध्ययन तथा सामान्यीकरण करते हुए ग्रपनी विषय-सामग्री को उसी प्रकार इतिहास की दृष्टि से देखना होगा।

ग्राजकल विकास ग्रौर क्रमोन्नति का विचार सामाजिक चेतना में प्रायः पूर्णतः व्याप्त हो गया है, लेकिन हेगेल के दर्शन के माध्यम से नहीं, बल्कि ग्रन्य माध्यमों से। फिर भी हेगेल के ग्राधार पर मार्क्स ग्रौर एंगेल्स द्वारा सूत्रबद्ध यह विचार क्रमोन्नति के चालू विचार की ग्रपेक्षा कहीं ग्रधिक सर्वांगीण, ग्रंतर्य में कहीं ग्रधिक समृद्ध है। गुज़र चुकी मंज़िलों से मानो फिर-फिर गुज़रनेवाला, लेकिन भिन्नतः, उच्चतर ग्राधार पर गुज़रनेवाला विकास ("निषेध का निषेध"), सीधी रेखा में नहीं, बल्कि कहें कि वर्त्तुलों में होनेवाला विकास;—छलांगों, महाविपत्तियों ग्रौर क्रांतियों के रूप में होनेवाला विकास;—"निरंतरता में व्यतिक्रम", परिमाण का गुण में रूपांतरण;— किसी पिंड पर या किसी परिघटना के ग्रंदर, ग्रथवा किसी समाज के ग्रंदर क्रियाशील विभिन्न शक्तियों तथा प्रवृत्तियों के पारस्परिक विरोध ग्रौर विग्रह से प्राप्त होनेवाली विकास की ग्रांतरिक प्रेरणाएं;—प्रत्येक परिघटना के **सभी** ग्रंगों की (ग्रौर इतिहास नित नूतन ग्रंग उद्घाटित करता रहता है) ग्रन्योन्याश्रयता तथा घनिष्ठतम, ग्रविलेय संबद्धता, गति की समरूप, नियमशासित, सार्वत्रिक प्रक्रिया प्रदान करनेवाली संबद्धता—ये हैं विकास की समृद्धतर (साधारण की ग्रपेक्षा) शिक्षा के रूप में द्वंद्ववाद की कुछ विशेषताएं। (देखिये ८ जनवरी, १८६८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को लिखित एंगेल्स के नाम मार्क्स का पत्र, जिसमें वह स्टाइन के "जड़ त्रिसूत्र" की खिल्ली उड़ाते हैं, जिसे भौतिकवादी द्वंद्ववाद समझना मूर्खता है।)

इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा

पुराने भौतिकवाद की सामंजस्यहीनता, अपूर्णता तथा एकांगिता को समझकर मार्क्स "समाज के विज्ञान का भौतिकवादी नींव के साथ तालमेल बिठाने की और उस नींव पर उसे पुनःनिर्मित करने"[37] की आवश्यकता के क़ायल हो गये। चूंकि भौतिकवाद सामान्य रूप से चेतना को अस्तित्व की देन बताता है, न कि इसके विपरीत, इसलिए भौतिकवाद को, जिस रूप में उसे मानवजाति के सामाजिक जीवन पर लागू किया जाता है, **सामाजिक** चेतना की **सामाजिक** अस्तित्व की देन के रूप में व्याख्या करनी पड़ेगी। मार्क्स कहते हैं ('पूंजी', खंड १): "प्रौद्योगिकी प्रकृति के साथ मनुष्य के व्यवहार पर और उत्पादन की उस क्रिया पर प्रकाश डालती है, जिससे वह अपना जीवन-निर्वाह करता है, और इस तरह वह उसके सामाजिक संबंधों तथा उनसे पैदा होनेवाली मानसिक अवधारणाओं के निर्माण की प्रणाली को भी खोलकर रख देती है"[38]। अपनी कृति 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' की भूमिका में मार्क्स ने मानव समाज और उसके इतिहास पर लागू की जानेवाली भौतिकवाद की आधारभूत प्रस्थापनाओं को इन शब्दों में अविकल रूप में सूत्रबद्ध किया है:

"अपने जीवन के सामाजिक उत्पादन में मनुष्य ऐसे निश्चित संबंधों में बंधते हैं, जो अपरिहार्य एवं उनकी इच्छा से स्वतंत्र होते हैं। उत्पादन के ये संबंध उत्पादन की भौतिक शक्तियों के विकास की एक निश्चित मंज़िल के अनुरूप होते हैं।

"इन उत्पादन संबंधों का पूर्ण समाहार ही समाज का आर्थिक ढांचा है—वह असली बुनियाद है, जिस पर क़ानून और राजनीति का ऊपरी ढांचा खड़ा हो जाता है और जिसके अनुकूल ही सामाजिक चेतना के निश्चित रूप होते हैं। भौतिक जीवन की उत्पादन प्रणाली जीवन की आम सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक प्रक्रिया को निर्धारित करती है। मनुष्यों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की चेतना उनके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती, बल्कि उलटे उनका सामाजिक अस्तित्व उनकी चेतना को निर्धारित करता है। अपने विकास की एक ख़ास मंज़िल पर पहुंचकर समाज की भौतिक उत्पादक शक्तियां तत्कालीन उत्पादन संबंधों से या उसी चीज़ को क़ानूनी शब्दावली में यों कहा जा सकता है–उन संपत्ति संबंधों से टकराती हैं, जिनके अंतर्गत वे उस समय तक काम करती होती हैं। ये संबंध उत्पादक शक्तियों के विकास के अनुरूप न रहकर उनके लिए बेड़ियां बन जाते हैं। तब सामाजिक क्रांति का युग शुरू होता है। आर्थिक बुनियाद के बदलने के साथ समस्त वृहदाकार ऊपरी ढांचा भी कमोबेश तेज़ी से बदल जाता है। ऐसे रूपांतरणों पर विचार करते हुए एक भेद हमेशा ध्यान में रखना चाहिए। एक ओर, तो उत्पादन की आर्थिक परिस्थितियों का भौतिक रूपांतरण है, जिसे प्रकृतिविज्ञान की अचूकता के साथ निर्धारित किया जा सकता है। दूसरी ओर, वे क़ानूनी, राजनीतिक, धार्मिक, सौंदर्यबोधी या दार्शनिक, संक्षेप में, विचारधारात्मक रूप है, जिनके दायरे में मनुष्य इस टक्कर के प्रति सचेत होते हैं और उसे निपटाते हैं।

"जैसे किसी व्यक्ति के बारे में हमारी राय इस बात पर नहीं निर्भर होती कि वह अपने बारे में क्या सोचता है, उसी तरह हम ऐसे रूपांतरण के युग के बारे में स्वयं उस युग की चेतना के आधार पर निर्णय नहीं कर सकते। इसके विपरीत भौतिक जीवन के अंतर्विरोधों के आधार पर ही, समाज की उत्पादक शक्तियों और उत्पादन संबंधों की मौजूदा टक्कर के आधार पर ही इस चेतना की व्याख्या की जानी चाहिए..." "मोटे तौर से एशियाई, प्राचीन, सामंती एवं आधुनिक, बुर्जुआ उत्पादन प्रणालियां समाज की आर्थिक विरचना के अनुक्रमिक युग कही जा सकती हैं।"[39] (एंगेल्स के नाम ७ जुलाई, १८६६ को लिखित पत्र में मार्क्स के संक्षिप्त सूत्र से तुलना कीजिये: "हमारा सिद्धांत है कि श्रम का संगठन उत्पादन के साधनों द्वारा निर्धारित होता है"।)

इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा के आविष्कार से अथवा सामाजिक घटनाचक्र के क्षेत्र में भौतिकवाद की सुसंगत निरंतरता तथा विस्तार से पहले के ऐतिहासिक सिद्धांतों की दो बड़ी कमियां दूर हो गयीं। एक तो पहले के ऐतिहासिक सिद्धांत अधिक से अधिक लोगों की ऐतिहासिक गति-

3—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विधियों के केवल वैचारिक प्रयोजनों की जांच करते थे, बिना इस बात की छानबीन किये कि उन प्रयोजनों का उद्भव किस चीज़ से होता है, बिना इस बात को ग्रहण किये कि सामाजिक संबंधों की श्रृंखला का विकास किन नियमबद्धताओं द्वारा शासित होता है और बिना यह अवलोकन किये कि इन संबंधों की जड़ें भौतिक उत्पादन के विकास की मात्रा में निहित होती हैं; दूसरे, पहले के सिद्धांत **सर्वसाधारण** की गतिविधियों को अपनी परिधि में लेते ही नहीं थे, जबकि ऐतिहासिक भौतिकवाद ने जनसाधारण के जीवन की सामाजिक अवस्थाओं और उनमें होनेवाले परिवर्तनों का पहले-पहल वैज्ञानिक सटीकता के साथ अध्ययन संभव बना दिया। प्राक्-मार्क्सी "समाज-शास्त्र" और इतिहास-लेखन **अधिक से अधिक** क्रमहीन ढंग से जमा किये गये अपरिपक्व तथ्यों का ढेर और ऐतिहासिक प्रक्रिया के निश्चित पक्षों का चित्रण ही प्रस्तुत करते थे। सभी परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियों की **संपूर्णता** की जांच करते हुए, इन प्रवृत्तियों को समाज के विभिन्न **वर्गों** के जीवन तथा उत्पादन की अचूक ढंग से परिभाष्य अवस्थाओं तक सीमित करते हुए, कुछ "प्रभावी" विचारों के चुनाव में अथवा उनकी व्याख्या में आत्मपरकता तथा मनमानेपन को दूर करते हुए और यह उद्घाटित करते हुए कि निरपवाद रूप से सभी विचारों तथा सभी विभिन्न प्रवृत्तियों की जड़ें उत्पादन की भौतिक शक्तियों की अवस्थाओं में होती हैं, मार्क्सवाद ने सामाजिक-आर्थिक विरचनाओं के उद्भव, विकास तथा ह्रास की प्रक्रिया के सर्वग्राही, सर्वांगपूर्ण अध्ययन का पथ प्रदर्शित किया। लोग अपना इतिहास ख़ुद बनाते हैं, लेकिन उनके, याने जनसाधारण के प्रयोजन किस चीज़ से निर्धारित होते हैं, परस्पर-विरोधी विचारों तथा चेष्टाओं के टकराव किस चीज़ से पैदा होते हैं, मानव समाजों के समूह में इन सारे टकरावों का कुल योग क्या है, लोगों के सारे ऐतिहासिक कार्यकलाप का आधार बनानेवाली भौतिक जीवन के उत्पादन की वस्तुपरक अवस्थाएं क्या हैं, इन अवस्थाओं के विकास का नियम क्या है—इन सारी बातों पर मार्क्स ने ध्यान दिया और एक ही प्रक्रिया के रूप में इतिहास के, जो अपनी अपार विविधता तथा अंतर्विरोधिता के साथ निश्चित नियमों द्वारा शासित होता है, वैज्ञानिक अध्ययन का पथ दिग्दर्शित किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ग संघर्ष

किसी समाज के कुछ सदस्यों की चेष्टाएं दूसरों की चेष्टाओं से टकराती हैं, सामाजिक जीवन अंतर्विरोधों से पूर्ण है, इतिहास राष्ट्रों और समाजों के पारस्परिक तथा आंतरिक संघर्ष के अलावा क्रांति और प्रतिक्रियावाद, शांति और युद्ध, गतिरोध और द्रुत प्रगति अथवा ह्रास की वारी-बारी से आनेवाली अवधियां प्रदर्शित करता है—ये तथ्य आम तौर से सुविदित हैं। मार्क्सवाद ने इस प्रतीयमान गोरखधंधे और अस्त-व्यस्तता में नियमबद्धता खोज निकालने में समर्थ बनानेवाला पथदर्शी सूत्र, याने वर्ग संघर्ष का सिद्धांत प्रदान किया। किसी समाज अथवा समाज-समूह के सभी सदस्यों की चेष्टाओं के पूरे योग के अध्ययन से ही उन चेष्टाओं के परिणाम की वैज्ञानिक परिभाषा तक पहुंचा जा सकता है। और परस्पर-विरोधी चेष्टाओं का स्रोत उन वर्गों के जीवन की परिस्थिति और दशा के भेद में निहित है, जिनमें प्रत्येक समाज विभाजित है। मार्क्स ने 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' में लिखा: "अभी तक आविर्भूत समस्त समाज का इतिहास" (सिवा आदिम समुदाय के इतिहास के—यह बाद में एंगेल्स ने जोड़ा) "वर्ग संघर्षों का इतिहास रहा है। स्वतंत्र मनुष्य और दास, पेट्रीशियन और प्लेबियन, सामंत और भूदास, शिल्प-संघ का उस्ताद-कारीगर और मज़दूर-कारीगर—संक्षेप में उत्पीड़क और उत्पीड़ित बराबर एक दूसरे का विरोध करते आये हैं। वे कभी छिपे, कभी प्रकट रूप से लगातार एक दूसरे से लड़ते रहे हैं, इस लड़ाई का अंत हर बार या तो पूरे समाज के क्रांतिकारी पुनर्गठन में, या संघर्षरत दोनों ही वर्गों की बर्बादी में हुआ है... आधुनिक बुर्जुआ समाज ने, जो सामंती समाज के ध्वंस से पैदा हुआ है, वर्ग विरोधों को ख़तम नहीं किया। उसने केवल पुराने वर्गों के स्थान पर नये वर्ग, उत्पीड़न की पुरानी अवस्थाओं के स्थान पर नयी अवस्थाएं और संघर्ष के पुराने रूपों की जगह नये रूप खड़े कर दिये हैं। किंतु दूसरे युगों की तुलना में हमारे युग की, बुर्जुआ युग की विशेषता यह है कि इसने वर्ग विरोधों को सरल बना दिया है: आज पूरा समाज दो विशाल शत्रु शिविरों में, एक दूसरे के ख़िलाफ़ खड़े दो विशाल वर्गों में—

३*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुर्जुआ और सर्वहारा वर्गों में–अधिकाधिक विभक्त होता जा रहा है।" महान फ़्रांसीसी क्रांति के समय से यूरोपीय इतिहास ने विशेष स्पष्टता के साथ अनेक देशों में घटनाओं की इस वास्तविक निचली परत को, वर्गों के संघर्ष को उजागर किया है। और फ़्रांस में पुन:स्थापन[40] के युग ने ऐसे अनेक इतिहासकार (त्येर्री, गिज़ो, मिन्ये, थियेर) पैदा किये थे, जो घटनाओं का सामान्यीकरण करते हुए यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सके थे कि वर्ग संघर्ष सारे फ़्रांसीसी इतिहास को समझने की कुंजी है। और नवीनतम युग, बुर्जुआ वर्ग की, प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं की (यदि सार्विक नहीं, तो), व्यापक मताधिकार की, जनसाधारण के बीच व्यापक रूप में बिकनेवाले सस्ते दैनिक अख़बारों, इत्यादि की पूर्ण विजय के युग, मज़दूरों और मालिकों, इत्यादि के शक्तिशाली तथा सतत विस्तारमान संगठनों के युग ने और भी स्पष्टतर (यद्यपि बहुत अकसर अत्यंत एकांगी, "शांतिमय", "सांविधानिक" रूप में) प्रदर्शित कर दिया है कि वर्ग संघर्ष घटनाओं की चालक शक्ति है। मार्क्स के 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के आगे दिये गये अंश हमें बताते हैं कि प्रत्येक वर्ग के विकास की परिस्थितियों के विश्लेषण के प्रसंग में आधुनिक समाज में प्रत्येक वर्ग की अवस्था के वस्तुपरक विश्लेषण के लिए समाजशास्त्र से मार्क्स ने क्या अपेक्षा की थी: "बुर्जुआ वर्ग के मुक़ाबले में आज जितने भी वर्ग खड़े हैं, उन सब में सर्वहारा ही वास्तव में क्रांतिकारी वर्ग है। दूसरे वर्ग आधुनिक उद्योग के समक्ष ह्रासोन्मुख होकर अंततः विलुप्त हो जाते हैं, सर्वहारा वर्ग ही उसकी मौलिक और विशिष्ट उपज है। निम्न मध्यम वर्ग के लोग–छोटे कारख़ानेदार, दस्तकार, छोटे व्यापारी, किसान–ये सब मध्यम वर्ग के अंश के रूप में अपने अस्तित्व को विनष्ट होने से बचाने के लिए बुर्जुआ वर्ग से लोहा लेते हैं। इसलिए वे क्रांतिकारी नहीं, रूढ़िवादी हैं। इतना ही नहीं, चूंकि वे इतिहास के चक्र को पीछे की ओर घुमाने की कोशिश करते हैं, इसलिए वे प्रतिगामी हैं। अगर कहीं वे क्रांतिकारी हैं, तो सिर्फ़ इसलिए हैं कि उन्हें बहुत जल्द सर्वहारा वर्ग में मिल जाना है, चुनांचे वे अपने वर्तमान नहीं, बल्कि भविष्य के हितों की रक्षा करते हैं, अपने दृष्टिबिंदु को त्यागकर वे सर्वहारा का दृष्टिबिंदु अपना लेते हैं।" अनेक ऐतिहा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिक कृतियों में (देखिये **ग्रंथसूची**) मार्क्स ने भौतिकवादी इतिहास-लेखन की, हर अलग वर्ग की और कभी-कभी वर्ग विशेष के अंतर्गत विभिन्न समूहों तथा तबक़ों की अवस्था के विश्लेषण की शानदार तथा सारगर्भित मिसालें दी हैं और साफ़-साफ़ प्रदर्शित किया है कि क्यों और कैसे "प्रत्येक वर्ग संघर्ष राजनीतिक संघर्ष होता है"[11]। ऊपर के उद्धरण से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि ऐतिहासिक विकास के सारे परिणाम का लेखा-जोखा लेने के लिए मार्क्स सामाजिक संबंधों और एक वर्ग से दूसरे वर्ग में, अतीत से भविष्य में **संक्रमण की** मंज़िलों के जटिल ताने-बाने का कैसे विश्लेषण करते हैं।

मार्क्स के सिद्धांत की गहनतम, अधिक से अधिक सर्वांगपूर्ण तथा ब्योरेवार पुष्टि और अमली रूप उनकी आर्थिक शिक्षा है।

मार्क्स की आर्थिक शिक्षा

'पूंजी' की भूमिका में मार्क्स कहते हैं: "इस रचना का अंतिम उद्देश्य आधुनिक समाज" (अर्थात पूंजीवादी, बुर्जुआ समाज) "की गति के आर्थिक नियम को खोलकर रख देना ही है"। इतिहास द्वारा निर्धारित समाज विशेष के उत्पादन संबंधों का, उनके उद्भव, विकास तथा ह्रास का अनुसंधान – यह है मार्क्स की आर्थिक शिक्षा का अंतर्य। पूंजीवादी समाज में **माल-उत्पादन** का बोलबाला होता है, इसलिए मार्क्स का विश्लेषण माल के विश्लेषण से शुरू होता है।

मूल्य

माल पहले तो मानव की किसी आवश्यकता की पूर्ति करनेवाली चीज़ होती है; दूसरे, किसी और चीज़ से विनिमय की चीज़ होती है। चीज़ की उपयोगिता उसे **उपयोग-मूल्य** बनाती है। विनिमय-मूल्य (अथवा केवल मूल्य) सबसे पहले अनुपात होता है, एक प्रकार के कई उपयोग-मूल्यों के साथ दूसरे प्रकार के कई उपयोग-मूल्यों के विनिमय का समानुपात होता है। प्रतिदिन का अनुभव हमें बताता है कि इस तरह के करोड़ों-करोड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनिमय सभी और हर प्रकार के, अधिकतम विभिन्न और परस्पर विषम उपयोग-मूल्यों को सतत समतुल्य करते रहते हैं। तो इन विभिन्न चीज़ों में, सामाजिक संबंधों की एक निश्चित श्रृंखला में निरंतर एक दूसरे के समतुल्य बनायी जानेवाली इन चीज़ों में सामान्यता क्या है? उनमें सामान्यता यह है कि वे **श्रम की उपज** हैं। उपजों का विनिमय करते हुए लोग श्रम के विभिन्नतम रूपों को समतुल्य बनाते हैं। माल-उत्पादन सामाजिक संबंधों की ऐसी व्यवस्था है, जिसमें अलग-अलग उत्पादक विविध उपजें पैदा करते हैं (श्रम का सामाजिक विभाजन) और ये सारी उपजें विनिमय के अंतर्गत एक दूसरे के समतुल्य बनायी जाती हैं। फलतः सभी मालों में सामान्यता उत्पादन की किसी निश्चित शाखा का मूर्त श्रम नहीं, किसी एक प्रकार का श्रम नहीं, बल्कि **अमूर्त** मानव श्रम, सामान्य मानव श्रम है। संवद्ध समाज की संपूर्ण श्रम-शक्ति, जो सारे मालों के मूल्यों का कुल योग होती है, वही मानवीय श्रम-शक्ति है: विनिमय के लाखों-लाख तथ्य इस बात को प्रदर्शित करते हैं। फलस्वरूप प्रत्येक अलग माल **सामाजिक रूप से आवश्यक** श्रम-काल का केवल निश्चित खंड होता है। मूल्य का परिमाण सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम द्वारा, अथवा अमुक माल के, किसी उपयोग-मूल्य के उत्पादन के लिए सामाजिक रूप से आवश्यक श्रम-काल द्वारा निर्धारित होता है। "जब कभी हम विनिमय द्वारा अपने श्रम से उत्पन्न भिन्न-भिन्न वस्तुओं का मूल्यों के रूप में समीकरण करते हैं, तब हम उसी कार्य द्वारा उन वस्तुओं पर ख़र्च किये गये श्रम के विभिन्न प्रकारों का भी मानव श्रम के रूप में समीकरण कर डालते हैं। हम अनजाने ही ऐसा करते हैं, किंतु फिर भी करते ज़रूर हैं।"[42] जैसा कि एक पुराने अर्थशास्त्री ने कहा है, मूल्य दो व्यक्तियों का आपसी संबंध है; उन्हें केवल इतना और कहना चाहिए था: चीज़ों के पर्दे से ढके हुए संबंध। मूल्य क्या है, यह हम केवल तभी समझ सकते हैं, जब हम उस पर समाज की किसी विशेष ऐतिहासिक विरचना के सामाजिक उत्पादन संबंधों की, साथ ही विनिमय की करोड़ों-करोड़ बार अपनी पुनरावृत्ति करनेवाली परिघटनाओं के अंबार में प्रकट होनेवाले संबंधों की श्रृंखला के दृष्टिकोण से विचार करें। "मूल्यों के रूप में तमाम माल घनीभूत श्रम-काल की निश्चित राशियां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मात्र हैं।"[43] मालों में मूर्तिमान श्रम के दोहरे चरित्र का ब्योरेवार विश्लेषण करके मार्क्स **मूल्य के रूप** तथा **मुद्रा** के विश्लेषण पर आते हैं। यहां मार्क्स का मुख्य कार्यभार है मूल्य के मुद्रा-रूप के **उद्गम** का अध्ययन करना, विनिमय के अलग-अलग और सांयोगिक कार्यों ("मूल्य का साधारण, अलग या आकस्मिक रूप", जिसमें किसी माल की निश्चित मात्रा के साथ दूसरे माल की निश्चित मात्रा का विनिमय किया जाता है) से शुरू करके ठीक मूल्य के सार्विक रूप तक, जिसमें अनेक विभिन्न मालों का एक ही विशेष माल से विनिमय होता है, और मूल्य के मुद्रा-रूप तक, जब स्वर्ण ही यह विशेष माल और सार्विक तुल्यमान बन जाता है, सभी क्रमों के विनिमय के विकास तक की **ऐतिहासिक प्रक्रिया** का अध्ययन करना। विनिमय तथा माल-उत्पादन के विकास की उच्चतम उपज होने के कारण मुद्रा निजी श्रम के सामाजिक स्वरूप और मंडी द्वारा एकताबद्ध निजी उत्पादकों के सामाजिक संबंध पर पर्दा डालती है, उसे छिपाती है। मार्क्स मुद्रा के विभिन्न कामों का बहुत ब्योरेवार विश्लेषण करते हैं और इसके अतिरिक्त यहां भी (जिस तरह आम तौर से 'पूंजी' के आरंभिक अध्यायों में) इस बात का उल्लेख करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि प्रतिपादन का अमूर्त और कभी-कभी शुद्धतः निगमनात्मक प्रतीत होनेवाला रूप वस्तुतः विनिमय और माल-उत्पादन के विकास के इतिहास के संबंध में तथ्यगत सामग्री के अंबार से निबटता है। "मुद्रा के अस्तित्व का अर्थ यह होता है कि मालों का विनिमय एक ख़ास अवस्था में पहुंच गया है। मुद्रा मालों के केवल सम-मूल्य के रूप में, या परिचलन के साधन के रूप में, या भुगतान के साधन के रूप में, या अपसंचित कोष की शकल में या सार्वत्रिक मुद्रा के रूप में तरह-तरह के अलग-अलग काम करती है, उनमें से जिस ख़ास काम का अधिक विस्तार हो जाता है और जो अपेक्षाकृत प्रधानता प्राप्त कर लेता है, उसके अनुसार यह पता चलता है कि सामाजिक उत्पादन की क्रिया किस ख़ास अवस्था में पहुंच गयी है" ('पूंजी', खंड १)[44]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेशी मूल्य

माल-उत्पादन के विकास की एक ख़ास मंज़िल पर मुद्रा पूंजी में रूपांतरित हो जाती है। माल के परिचलन का गुर था : मा – मु – मा (माल – मुद्रा – माल), अर्थात एक माल की ख़रीदारी के लिए दूसरे माल की बिक्री। इसके विपरीत पूंजी का सामान्य गुर है : मु – मा – मु, अर्थात बिक्री (मुनाफ़ा समेत) के लिए ख़रीदारी। परिचलन में डाली गयी मुद्रा के आरंभिक मूल्य में वृद्धि को मार्क्स बेशी मूल्य कहते हैं। पूंजीवादी परिचलन में मुद्रा की इस "वृद्धि" का तथ्य सर्वविदित है। यही "वृद्धि" मुद्रा को उत्पादन के विशेष, इतिहास द्वारा निर्धारित, सामाजिक संबंध के रूप में **पूंजी** में रूपांतरित करती है। बेशी मूल्य माल-परिचलन से नहीं पैदा हो सकता, क्योंकि माल-परिचलन में केवल समतुल्यों का ही विनिमय होता है; वह दाम में बढ़ौती से भी नहीं पैदा हो सकता, क्योंकि ख़रीदारों और विक्रेताओं के आपसी नुक़सान-नफ़ा बराबर हो जायेंगे और यहां बात किसी इक्की-दुक्की परिघटना की नहीं, बल्कि समष्टिगत, औसत, सामाजिक परिघटना की है। बेशी मूल्य प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि "धन्नासेठ इतने भाग्यवान हों कि उनको परिचलन के क्षेत्र के भीतर ही, याने मंडी में ही, एक ऐसा माल मिल जाये, जिसके उपयोग-मूल्य में मूल्य पैदा करने का विशेष गुण हो"[45], ऐसा माल, जिसके उपयोग की प्रक्रिया साथ ही मूल्य-सृजन की प्रक्रिया भी हो। और ऐसा माल मौजूद है। वह मानव की श्रम-शक्ति है। उसके उपयोग को श्रम कहते हैं और श्रम मूल्य की सर्जना करता है। मुद्रा का मालिक श्रम-शक्ति को उसके मूल्य पर ख़रीद लेता है। सभी दूसरे मालों के मूल्य की तरह श्रम-शक्ति का मूल्य भी उसके उत्पादन के लिए दरकार और सामाजिक रूप में आवश्यक श्रम-काल द्वारा (याने मज़दूर और उसके परिवार के भरण-पोषण के मूल्य द्वारा) निर्धारित होता है। श्रम-शक्ति की ख़रीद मुद्रा के मालिक को उसका उपयोग करने का, याने उसको दिन भर, कहें कि, १२ घंटे काम करने को मजबूर करने का अधिकार देती है। उनमें से ६ घंटों ("आवश्यक" श्रम-काल) में मज़दूर अपना भरण-पोषण का ख़र्चा पूरा करने लायक़ उपज पैदा कर लेता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है और अगले ६ घंटों ("बेशी" श्रम-काल) में पूंजीपति से बिना कुछ भुगतान पाये ही "बेशी" उपज अथवा बेशी मूल्य पैदा करता है। फलतः उत्पादन-प्रक्रिया के दृष्टिकोण से पूंजी के दो हिस्सों में भेद करना आवश्यक है: उत्पादन के साधनों (मशीनों, श्रम-उपकरणों, कच्चे माल, आदि) पर व्यय होनेवाली स्थायी पूंजी, जिसका मूल्य (तत्काल अथवा अंश-अंश करके) बिना परिवर्तन के तैयार माल में स्थानांतरित हो जाता है, तथा श्रम-शक्ति पर व्यय होनेवाली चल पूंजी। इस पूंजी का मूल्य अपरिवर्तित नहीं रहता, बल्कि श्रम की प्रक्रिया में बढ़ता है, बेशी मूल्य पैदा करता है। इसलिए पूंजी द्वारा श्रम-शक्ति के शोषण की मात्रा प्रकट करने के लिए बेशी मूल्य की तुलना पूरी पूंजी के साथ नहीं, बल्कि केवल चल पूंजी के साथ की जानी चाहिए। हमारे उदाहरण के अनुसार बेशी मूल्य की दर, जैसा कि मार्क्स इस अनुपात को नाम देते हैं, ६ : ६, याने १०० फ़ीसदी होगी।

पूंजी के उद्भव की ऐतिहासिक परिस्थितियां इस प्रकार थीं: पहले, अलग-अलग व्यक्तियों के हाथ में एक निश्चित मुद्रा-राशि का संचयन तथा सामान्यतः माल-उत्पादन के विकास का अपेक्षाकृत उच्च स्तर; और दूसरे, दोहरे अर्थों में "आज़ाद" मज़दूर का अस्तित्व: श्रम-शक्ति की बिक्री पर सभी प्रतिबंधों अथवा पाबंदियों से आज़ाद और ज़मीन से तथा सामान्यतः उत्पादन के सभी साधनों से आज़ाद, संपत्तिहीन मज़दूर, "सर्वहारा"-मज़दूर, जो अपनी श्रम-शक्ति की बिक्री के सिवा और किसी चीज़ के सहारे ज़िंदा नहीं रह सकता।

बेशी मूल्य में वृद्धि दो बुनियादी तरीक़ों से की जा सकती है: कार्य-दिवस को लंबा बनाकर ("निरपेक्ष बेशी मूल्य") और दरकार कार्य-दिवस को घटाकर ("सापेक्ष बेशी मूल्य")। पहले तरीक़े का विश्लेषण करते हुए मार्क्स कार्य-दिवस को घटाने के लिए मज़दूर वर्ग के संघर्ष का और कार्य-दिवस को बढ़ाने (१४वीं – १७वीं सदी) तथा उसे घटाने (१९वीं सदी के कारख़ाना क़ानून) के लिए राज्य-सत्ता के हस्तक्षेप का प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करते हैं। 'पूंजी' के प्रकाशन के समय से संसार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी सभ्य देशों के मज़दूर आंदोलन के इतिहास ने उस चित्र को रोशन करनेवाले हज़ारों-हज़ार तथ्य प्रदान किये हैं।

सापेक्ष बेशी मूल्य के उत्पादन का विश्लेषण करते हुए मार्क्स पूंजीवाद द्वारा श्रम की उत्पादिता के परिवर्द्धन के तीन बुनियादी ऐतिहासिक चरणों की जांच करते हैं: १) साधारण सहकारिता; २) श्रम-विभाजन तथा मैनुफ़ेक्चर; ३) मशीनें और भारी उद्योग। पूंजीवादी विकास की बुनियादी, लाक्षणिक रूपरेखा को यहां मार्क्स ने कितनी गहनता के साथ उद्घाटित किया है, यह प्रसंगवश इस बात से प्रत्यक्ष है कि रूस के "गृह"-उद्योग की जांच से उपरोक्त तीन चरणों में से पहले दो पर प्रकाश डालनेवाली भरपूर सामग्री प्राप्त होती है और १८६७ से मार्क्स द्वारा वर्णित भारी मशीनी उद्योग का क्रांतिकारी प्रभाव उसके बाद गुज़री आधी सदी के दौरान कई "नये" देशों (रूस, जापान, इत्यादि) में प्रगट हुआ है।

आगे चलें। **पूंजी-संचयन का**, अर्थात बेशी मूल्य के एक अंश के पूंजी में रूपांतरण का और पूंजीपति की निजी आवश्यकताओं अथवा मनमौजों की तुष्टि के लिए नहीं, बल्कि नये उत्पादन के लिए उसके उपयोग का मार्क्स द्वारा विश्लेषण अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा नया है। मार्क्स ने सभी पूर्ववर्ती (ऐडम स्मिथ से लेकर) क्लासिकीय राजनीतिक अर्थशास्त्रियों की ग़लती दिखायी, जो समझते थे कि पूंजी में रूपांतरित सारा बेशी मूल्य चल पूंजी में चला जाता है। दरअसल वह **उत्पादन के साधन** और चल पूंजी में विखंडित हो जाता है। पूंजीवाद के विकास की और समाजवाद में उसके रूपांतरण की प्रक्रिया में (कुल पूंजी में) चल पूंजी-भाग की तुलना में स्थायी पूंजी-भाग की शीघ्रतर वृद्धि का ज़बर्दस्त महत्व है।

मशीनों द्वारा मज़दूरों की विस्थापना की रफ़्तार तेज़ करते हुए और एक सिरे पर समृद्धि तथा दूसरे पर निर्धनता की सृष्टि करते हुए पूंजी-संचयन उसे जन्म देता है, जिसे "रिज़र्व मज़दूर सेना", मज़दूरों का "अपेक्षाकृत बाहुल्य", अथवा "पूंजीवादी जनाधिक्य" कहा जाता है। यह अत्यंत विविध रूप धारण कर लेता है और पूंजी को बेहद तेज़ी के साथ उत्पादन का विस्तार करने की क्षमता प्रदान करता है। उधार तथा उत्पादन के साधनों में पूंजी-संचयन के साथ मिलकर यह क्षमता पूंजीवादी देशों में पहले हर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस साल और बाद में अधिक लंबे और कम निश्चित कालांतर से आनेवाले अति उत्पादन के **संकटों** को समझने की प्रसंगतः कुंजी प्रदान करती है। पूंजीवाद के आधार पर पूंजी-संचयन और उसमें, जिसे आदिम संचयन कहा जाता है, भेद किया जाना चाहिए: उत्पादन के साधनों से मज़दूरों का बलात् पृथक किया जाना, ज़मीन से किसानों की बेदख़ली, सामुदायिक ज़मीनों की चोरी, उपनिवेशों की और राजकीय ऋणों, संरक्षणार्थ टैरिफ़ों की व्यवस्था, इत्यादि। एक सिरे पर "आदिम संचयन" "आज़ाद" सर्वहारा की सर्जना करता है और दूसरे सिरे पर मुद्रापति की, पूंजीपति की।

"पूंजीवादी संचय की ऐतिहासिक प्रवृत्ति" का चरित्र-निरूपण मार्क्स आगे के प्रख्यात शब्दों में करते हैं: "प्रत्यक्ष रूप में अपने हित में उत्पादन करनेवालों का संपत्ति-अपहरण निर्मम ध्वंस-लिप्सा से और अत्यंत जघन्य, अत्यंत कुत्सित, क्षुद्रतम, नीचतम तथा अत्यंत गर्हित भावनाओं से अनुप्रेरित होकर किया जाता है। अपने आप कमायी हुई संपत्ति का स्थान, जो मानो पृथक रूप से श्रम करनेवाले स्वतंत्र व्यक्ति के श्रम के लिए आवश्यक तत्वों के साथ मिलकर एक हो जाने पर आधारित हैं, पूंजीवादी निजी संपत्ति ले लेती है, जोकि दूसरे लोगों के नाम मात्र के लिए स्वतंत्र श्रम पर—अर्थात मज़दूरी पर—आधारित होती है... अब जिसका संपत्ति-अपहरण करना आवश्यक हो जाता है, वह ख़ुद अपने लिए काम करनेवाला मज़दूर नहीं है, बल्कि वह है बहुत-से मज़दूरों का शोषण करनेवाला पूंजीपति।

"यह संपत्ति-अपहरण स्वयं पूंजीवादी उत्पादन के अंतर्भूत नियमों के अमल में आने के फलस्वरूप पूंजी के केंद्रीयकरण के द्वारा संपन्न होता है। एक पूंजीपति हमेशा बहुत-से पूंजीपतियों की हत्या करता है। इस केंद्रीयकरण के साथ-साथ, या यूं कहिये कि कुछ पूंजीपतियों द्वारा बहुत-से पूंजीपतियों के इस संपत्ति-अपहरण के साथ-साथ, अधिकाधिक बढ़ते हुए पैमाने पर श्रम-क्रिया का सहकारी स्वरूप विकसित होता जाता है, प्राविधिक विकास के लिए सचेतन ढंग से विज्ञान का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है, भूमि को उत्तरोत्तर अधिक सुनियोजित ढंग से जोता-बोया जाता है, श्रम के औज़ार ऐसे औज़ारों में बदलते जाते हैं, जिनका केवल सामूहिक ढंग से ही उपयोग किया जा सकता है, उत्पादन के साधनों का संयुक्त, समाजी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृत श्रम के साधनों के रूप में उपयोग करके हर प्रकार के उत्पादन के साधनों का मितव्ययिता के साथ इस्तेमाल किया जाता है, सभी क़ौमें संसारव्यापी मंडी के जाल में फंस जाती हैं और इसलिए पूंजीवादी शासन का स्वरूप अधिकाधिक अंतर्राष्ट्रीय होता जाता है। पूंजी के बड़े-बड़े स्वामियों की, जो रूपांतरण की इस क्रिया से उत्पन्न होनेवाली समस्त सुविधाओं को हड़प लेते हैं और इन पर ज़बर्दस्ती अपना एकाधिकार क़ायम कर लेते हैं, निरंतर घटती संख्या के साथ-साथ ग़रीबी, अत्याचार, ग़ुलामी, पतन और शोषण में लगातार वृद्धि होती जाती है। लेकिन इसके साथ-साथ मज़दूर वर्ग का विद्रोह भी अधिकाधिक तीव्र होता जाता है। यह वर्ग संख्या में बराबर बढ़ता जाता है और स्वयं पूंजीवादी उत्पादन-क्रिया का यंत्र ही उसे अधिकाधिक अनुशासनबद्ध, एकजुट और संगठित करता जाता है। पूंजी का एकाधिकार उत्पादन की उस प्रणाली के लिए एक बंधन बन जाता है, जो इस एकाधिकार के साथ-साथ और उसके अंतर्गत जन्मी है और फूली-फली है। उत्पादन के साधनों का केंद्रीयकरण और श्रम का समाजीकरण अंत में एक ऐसे बिंदु पर पहुंच जाते हैं, जहां वे अपने पूंजीवादी खोल के भीतर नहीं रह सकते। खोल फाड़ दिया जाता है। पूंजीवादी निजी संपत्ति की मौत की घंटी बज उठती है। संपत्ति-अपहरण करनेवालों की संपत्ति का अपहरण हो जाता है" ('पूंजी', खंड १)[46]।

आगे चलें। सामाजिक पूंजी के कुल जोड़ के पुनरुत्पादन का 'पूंजी' के दूसरे खंड में मार्क्स द्वारा किया गया विश्लेषण अत्यधिक महत्वपूर्ण और नया है। यहां भी वह व्यष्टिगत परिघटना को नहीं, बल्कि समष्टिगत परिघटना को, समाज की अर्थव्यवस्था के एक अंश को नहीं, बल्कि पूरी की पूरी अर्थव्यवस्था को लेते हैं। उपरोक्त क्लासिकीय अर्थशास्त्रियों की ग़लती दुरुस्त करते हुए मार्क्स पूरे सामाजिक उत्पादन को दो बड़े भागों में विभाजित करते हैं: १) उत्पादन के साधनों का उत्पादन और २) उपभोग-वस्तुओं का उत्पादन; और गणितीय उदाहरण लेकर पूर्ववर्ती पैमाने पर पुनरुत्पादन के समय और संचयन के समय कुल की कुल सामाजिक पूंजी के परिचलन की ब्योरेवार समीक्षा करते हैं। 'पूंजी' के तीसरे खंड में मूल्य के नियम के आधार पर मुनाफ़े की औसत दर के गठन का प्रश्न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हल किया गया है। मार्क्स के रूप में अर्थशास्त्र की महान प्रगति यह है कि उसमें विश्लेषण समष्टिगत आर्थिक परिघटनाओं के, सामाजिक अर्थव्यवस्था के कुल योग के दृष्टिकोण से किया जाता है, न कि अलग-अलग घटनाओं अथवा प्रतिद्वंद्विता के वाहरी सतहीपन के दृष्टिकोण से, जिस तक बाज़ारू राजनीतिक अर्थशास्त्र या आधुनिक "चरम उपयोगिता का सिद्धांत"[47] प्रायः अपने को सीमित करते हैं। मार्क्स पहले बेशी मूल्य के उद्गम का विश्लेषण करते हैं और फिर मुनाफ़े, सूद और भूमि-लगान में उसके विभाजन पर विचार करना शुरू करते हैं। किसी उद्यम में निवेशित कुल पूंजी के साथ बेशी मूल्य का अनुपात मुनाफ़ा होता है। "उच्च आंगिक गठनवाली" पूंजी (याने जिसमें स्थायी पूंजी को सामाजिक औसत की मात्रा में चल पूंजी की अपेक्षा अधिक प्रधानता प्राप्त हो) औसत दर से कम मुनाफ़ा देती है। "निम्न आंगिक गठनवाली" पूंजी औसत दर से अधिक मुनाफ़ा देती है। पूंजियों की आपसी प्रतिद्वंद्विता, एक शाखा से दूसरी शाखा में उनका स्वतंत्रतापूर्वक संक्रमण दोनों हालतों में मुनाफ़े की दर को औसत के बराबर कर देता है। किसी समाज के सभी मालों का कुल मूल्य मालों के कुल दाम के अनुरूप होता है, लेकिन प्रतिद्वंद्विता के कारण अलग-अलग उद्यमों और उत्पादन-शाखाओं में उन्हें उनके मूल्य पर नहीं, वल्कि **उत्पादन के दाम** (अथवा उत्पादन-दाम) पर बेचा जाता है, जो व्यय की गयी पूंजी जमा औसत मुनाफ़े के बराबर होता है।

इस प्रकार मूल्य-नियम के आधार पर मार्क्स ने मूल्य से तथा मुनाफ़े के समतुलन से दाम के अंतर के सर्वविदित और निर्विवाद तथ्य की पूर्णतः व्याख्या की, क्योंकि सभी मालों के मूल्यों का कुल जोड़ उनके दामों के कुल जोड़ से मेल खाता है। लेकिन (सामाजिक) मूल्यों को (अलग-अलग) दाम बना देने की प्रक्रिया सीधे-सीधे और सरल रूप से नहीं, बल्कि अत्यंत जटिल रूप से होती है: बिलकुल स्वाभाविक है कि बिखरे हुए माल-उत्पादकों के, जो केवल मंडी द्वारा संबंधित होते हैं, समाज में नियम के प्रति अनुरूपता मात्र औसत, सामाजिक, समष्टिगत अभिव्यक्ति के अतिरिक्त अन्यथा हो ही नहीं सकती, इसमें इस या उस दिशा में पृथक-पृथक विचलन परस्पर परिपूर्ति किया करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रम की उत्पादिता में वृद्धि का अर्थ है चल पूंजी की तुलना में स्थायी पूंजी की शीघ्रतर वृद्धि। और चूंकि बेशी मूल्य केवल चल पूंजी की अभिक्रिया ही है, इसलिए स्पष्ट है कि मुनाफ़े की दर में (समूची पूंजी के, न कि उसके चल अंश मात्र के साथ बेशी मूल्य के अनुपात में) गिरावट की प्रवृत्ति होती है। मार्क्स इस प्रवृत्ति और उस पर पर्दा डालनेवाली अथवा उसे प्रभावहीन करनेवाली अवस्थाओं का ब्योरेवार विश्लेषण करते हैं। साहूकारी पूंजी, व्यापारिक पूंजी तथा मुद्रा-पूंजी के बारे में 'पूंजी' के तीसरे खंड के बेहद दिलचस्प अध्यायों के विवरण पर न रुककर हम अधिकतम महत्वपूर्ण बात पर, **भूमि-लगान** के सिद्धांत पर आते हैं। भूमि के, जो पूंजीवादी देशों के अंदर सारी की सारी अलग-अलग मालिकों के क़ब्ज़े में है, क्षेत्रफल के सीमित होने के कारण काश्तकारी उपजों के उत्पादन का दाम औसत क़िस्म की नहीं, बल्कि ख़राब से ख़राब ज़मीन पर उत्पादन की लागत द्वारा, मंडी में पहुंचाई की औसत सूरतों में नहीं, बल्कि बुरी से बुरी सूरतों में निर्धारित होता है। इस दाम और बेहतर ज़मीन पर (अथवा बेहतर सूरतों में) उत्पादन के दाम का अंतर भेदक अथवा **विभेदक** भूमि-लगान होता है। उसका ब्योरेवार विश्लेषण करते हुए और ज़मीन के अलग-अलग टुकड़ों की उर्वरता तथा ज़मीन में निवेशित पूंजी की मात्रा में भेद के अनुसार उसका उद्गम प्रदर्शित करते हुए मार्क्स ने रिकार्डो की इस ग़लती को पूर्णतः अनावृत कर दिया ('बेशी मूल्य के सिद्धांत' भी देखिये, जहां रोडबेर्टस की आलोचना विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है) कि विभेदक भूमि-लगान बेहतर ज़मीन से बदतर ज़मीन पर निरंतर संक्रमण मात्र से प्राप्त होता है। इसके विपरीत उलटी दिशा में भी संक्रमण होते हैं, एक क़िस्म की ज़मीन का दूसरी क़िस्म की ज़मीन में (कृषि-तकनीक में प्रगति, नगरों की वृद्धि, आदि की बदौलत) रूपांतरण भी होता है और "ज़मीन के ह्रासमान प्रतिफल" का बदनाम नियम, जो पूंजीवाद की ख़ामियों, मजबूरियों और असंगतियों को प्रकृति के सर मढ़ता है, गहन रूप से ग़लत है। इसके बाद उद्योग की सभी शाखाओं और आम तौर से पूरी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में मुनाफ़े का समतुलन प्रतिद्वंद्विता की पूर्ण स्वतंत्रता की, एक शाखा से दूसरी शाखाओं में पूंजी के प्रवाह की स्वतंत्रता की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वापेक्षा करता है, जबकि ज़मीन की निजी मिल्कियत इजारेदारी की सृष्टि करती है, जो इस स्वतंत्र प्रवाह में बाधक होती है। इस इजारेदारी के कारण पूंजी के निम्न आंगिक गठन और फलतः व्यष्टिगत रूप से मुनाफ़े की अधिक ऊंची दर द्वारा विभेदित कृषि-उपजें मुनाफ़े की दर के समतुलन की पूर्णतः स्वतंत्र प्रक्रिया में शामिल नहीं होतीं। इजारेदार के रूप में ज़मीन का मालिक दाम को औसत से ऊपर रख सकता है और यही इजारेदारी दाम **निरपेक्ष** भूमि-लगान को जन्म देता है। पूंजीवाद के क़ायम रहते विभेदक भूमि-लगान का अंत नहीं किया जा सकता, लेकिन निरपेक्ष भूमि-लगान का अंत तो, मिसाल के लिए, ज़मीन का राष्ट्रीयकरण करते समय, उसे राजकीय मिल्कियत बनाकर किया जा सकता है। इसका अर्थ होगा निजी मालिकों की इजारेदारी पर प्रहार, इसका अर्थ होगा काश्तकारी के अंदर अधिक सुसंगत ढंग से, अधिक पूर्णता के साथ स्वतंत्र प्रतिद्वंद्विता को व्यवहार में लाना। मार्क्स उल्लेख करते हैं कि इसीलिए आमूलवादी बुर्जुआ लोग इतिहास में बारंबार ज़मीन के राष्ट्रीयकरण की इस प्रगतिशील बुर्जुआ मांग को लेकर सामने आये, पर वह फिर भी बुर्जुआ वर्ग के अधिकांश को डरा देती है, क्योंकि वह एक दूसरी, हमारे युग में विशेष रूप से महत्वपूर्ण तथा "छुईमुई" इजारेदारी को—आम तौर पर उत्पादन के साधनों की इजारेदारी को—बहुत नज़दीक से "छूती है"। (एंगेल्स के नाम २ अगस्त, १८६२ के पत्र में मार्क्स ने पूंजी पर औसत मुनाफ़े और निरपेक्ष भूमि-लगान के अपने सिद्धांत की उल्लेखनीय रूप से सरल, संक्षिप्त और साफ़ ढंग से व्याख्या की है। देखिये 'पत्र-व्यवहार', खंड ३, पृ० ७७–८१। साथ ही ६ अगस्त, १८६२ के पत्र से तुलना कीजिये, वहीं, पृ० ८६–८७)। भूमि-लगान के इतिहास के लिए मार्क्स के उस विश्लेषण की ओर ध्यान दिलाना भी महत्वपूर्ण है, जो श्रम-लगान का (जब किसान ज़मींदार की ज़मीन पर अपने श्रम द्वारा बेशी उपज पैदा करता है) उपज-लगान अथवा जिंसी-लगान में (जब किसान अपनी ज़मीन से बेशी उपज पैदा करता है और उसे "आर्थिकेतर दबाव" के कारण ज़मींदार के हवाले कर देता है), फिर नक़दी लगान में (जो माल-उत्पादन के विकास के कारण मुद्रा में रूपांतरित जिंसी-लगान है, उदाहरणतः पुराने रूस का "ओब्रोक") और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंततः उस पूंजीवादी लगान में रूपांतरण प्रदर्शित करता है, जिसके तहत कृषि में किसान की जगह उद्यमपति ले लेता है, जो उजरती श्रम की सहायता से खेतीबारी चलाता है। "पूंजीवादी भूमि-लगान के उद्भव" के इस विश्लेषण के संबंध में **कृषि के अंदर पूंजीवाद की क्रमोन्नति** पर मार्क्स के अनेक गहन (और रूस जैसे पिछड़े देशों के लिए विशेष रूप से महत्व-पूर्ण) विचारों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। "मुद्रा के लिए उजरत करनेवाले संपत्तिहीन दिहाड़ीदारों के वर्ग का उद्भव न केवल जिंसी-लगान के नक़दी लगान में रूपांतरण का अनिवार्य हमराही, बल्कि पूर्ववर्ती भी होता है। इस वर्ग के उद्भव की अवधि में, जब वह अभी अव्यवस्थित ढंग से जहां-तहां अस्तित्व में आता होता है, अधिक ख़ुशहाल, लगान से बंधे किसानों के यहां स्वभावतः खेतिहर उजरती मज़दूरों का अपने लिए शोषण करने का रिवाज विकसित हो जाता है, बिलकुल सामंती काल की तरह, जब ख़ुशहाल भूदास किसान ख़ुद अपने लिए भूदास रखते थे। इस प्रकार इन किसानों के पास संपत्ति-संचय करने और ख़ुद भावी पूंजीपतियों में रूपांतरित हो जाने की क्षमता धीरे-धीरे विकसित होने लगती है। फलतः आत्मनिर्भर खेतीबारी चलानेवाले ज़मीन के पुराने मालिकों के बीच ऐसे पूंजीवादी पट्टेदारों की नर्सरी पैदा हो जाती है, जिनका विकास कृषि के बाहर पूंजीवादी उत्पादन के आम विकास द्वारा प्रभावित होता है" ('पूंजी', खंड ३, पृ० ३३२)[48] ... "खेतिहर आबादी के एक भाग की संपत्ति के अपहरण और ज़मीन से उसकी बेदख़ली ने न केवल मज़दूरों, उनके जीवन-निर्वाह के साधनों तथा श्रम की सामग्री को औद्योगिक पूंजी के वास्ते काम करने के लिए 'स्वतंत्र' कर दिया, बल्कि घरेलू मंडी भी निर्मित कर दी" ('पूंजी', खंड १, पृ० ७७८)। देहाती आबादी की ग़रीबी और तबाही अपनी बारी में पूंजी के लिए मज़दूरों की रिज़र्व सेना तैयार करने का काम करती हैं। इसलिए सभी पूंजीवादी देशों में "खेतिहर आबादी का एक भाग हमेशा शहरी सर्वहारा में अथवा उद्योगों में काम करनेवाले मज़दूरों में सम्मिलित हो जाने को विवश होता है... (यहां पर उद्योगों से हमारा मतलब खेती के अलावा तमाम उद्योगों से है।) सापेक्ष अतिरिक्त जनसंख्या का यह स्रोत लगातार बहता रहता है। खेतिहर मज़दूर को सदा कम से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कम मज़दूरी मिलती है और उसका एक पैर सदा कंगाली के दलदल में फंसा रहता है" ('पूंजी', खंड १, पृ० ६६८)[49]। किसान द्वारा जोती जानेवाली ज़मीन पर उसकी निजी मिल्कियत छोटे पमाने के उत्पादन का आधार, उसके विकास तथा क्लासिकीय रूप हासिल करने की शर्त है। लेकिन यह छोटे पैमाने का उत्पादन केवल उत्पादन तथा समाज के संकुचित आदिम ढांचे के साथ मेल खाता है। पूंजीवाद के तहत "किसानों का शोषण औद्योगिक सर्वहारा के शोषण से केवल रूप में ही भिन्न है। शोषक वही है, याने पूंजी। निजी तौर पर पूंजीपति बंधकों और सूदख़ोरी के ज़रिए किसानों का शोषण करते हैं; पूंजीपति वर्ग राजकीय करों के ज़रिए कृषक वर्ग का शोषण करता है" ('फ़्रांस में वर्ग संघर्ष,')[50]। "किसान की छोटी जोत अब एक हीला मात्र है, जिसकी आड़ में पूंजीपति धरती से अपना मुनाफ़ा, सूद और लगान निकालता है और जोतनेवाले को अपने भाग्य पर छोड़ देता है कि वह उस धरती से अपनी मजूरी निकाल सके, तो निकाल ले" ('अठारहवीं ब्रूमेर')[51]। आम तौर से किसान मज़दूरी का एक हिस्सा पूंजीवादी समाज, याने पूंजीपति वर्ग के भी हवाले कर देता है और इस प्रकार "वह आयरिश पट्टेदार किसान के स्तर पर जा पहुंचता है और यह सब निजी स्वामी होने का स्वांग रचते हुए" ('फ़्रांस में वर्ग संघर्ष')[52]। "उत्पादन के पूंजीवादी ढंगवाले देशों की अपेक्षा छोटे-छोटे काश्तकारों की बहुतायतवाले देशों में अनाज के दाम के कम होने का एक कारण" ('पूंजी', खंड ३, पृ० ३४०) क्या है? कारण यह है कि किसान बेशी उपज का एक हिस्सा बेदाम समाज (याने पूंजीपति वर्ग) के हवाले कर देता है। "फलतः (अनाज और दूसरे कृषि-उत्पादों का) ऐसा कम दाम भी किसी हालत में उत्पादकों के श्रम की उत्पादिता का नहीं, बल्कि उनकी ग़रीबी का फल है" ('पूंजी', खंड ३, पृ० ३४०)[53]। पूंजीवाद के तहत छोटी जमीनी मिल्कियत का, जो छोटे उत्पादन का सामान्य रूप है, ह्रास, नाश और अंत होता है। "छोटी जमीनी मिल्कियत अपने स्वरूप से ही श्रम की सामाजिक उत्पादक शक्तियों के विकास, श्रम के सामाजिक रूपों, पूंजी के सामाजिक संकेंद्रण, बड़े पैमाने पर पशुपालन और विज्ञान के सतत वृद्धिमान उपयोग की संभावना को दूर रखती है।

4—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूदखोरी और कर-व्यवस्था उसे अनिवार्यतः कंगाली की ओर ले जाती हैं। ज़मीन की ख़रीद में पूंजी का व्यय कृषि पर इस पूंजी के व्यय की काट करता है। उत्पादन के साधनों का निरंतर विखंडन और स्वयं उत्पादकों का संबंध-विच्छेदन होता है।" (सहकारी समितियां, याने छोटे किसानों के संघ, बेहद प्रगतिशील बुर्जुआ भूमिका अदा करते हुए भी केवल इस प्रवृत्ति को कमज़ोर करती हैं, लेकिन उसका अंत नहीं करतीं; यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ये सहकारी समितियां ख़ुशहाल किसानों को बहुत कुछ देती हैं और बहुत ग़रीब किसानों को बहुत कम, प्रायः कुछ भी नहीं देतीं और फिर सहकार स्वयं उजरती श्रम के शोषक बन जाते हैं।) "मानव-शक्ति की बेहद लूट होती है। उत्पादन की हालतों में अधिकाधिक बदतरी और उत्पादन के साधनों की महंगाई parcella (छोटी) मिल्कियत का नियम है"[54]। जैसे उद्योग में, वैसे ही कृषि में पूंजीवाद उत्पादन-प्रक्रिया को केवल "उत्पादकों की यंत्रणा" के दाम पर ही रूपांतरित करता है। "देहाती मज़दूर पहले से बड़े रक़बे में बिखर जाते हैं, जिससे उनकी प्रतिरोध की शक्ति टूट जाती है, जबकि उधर शहरी मज़दूरों की शक्ति केंद्रीयकरण के कारण बढ़ जाती है। शहरी उद्योगों की भांति आधुनिक खेती में भी काम में लगाये हुए श्रम की उत्पादिता और मात्रा में वृद्धि तो होती है, पर इस क़ीमत पर कि श्रम-शक्ति ख़ुद तबाह और बीमारियों से नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त पूंजीवदी खेती में जो भी प्रगति होती है, वह न केवल मज़दूर को, बल्कि धरती को भी लूटने की कला की प्रगति होती है... इसलिए पूंजीवादी उत्पादन प्रौद्योगिकी का और उत्पादन की विभिन्न क्रियाओं को जोड़कर एक सामाजिक इकाई का रूप देने की कला का विकास तो करता है, पर यह काम केवल समस्त धन-संपदा के मूल स्रोतों को—धरती को और मज़दूर को—सोखकर करता है" ('पूंजी', खंड १, अध्याय १३ का अंतिम अंश)[55]।

समाजवाद

ऊपर की बातों से स्पष्ट हो जाता है कि पूंजीवादी समाज के समाजवादी समाज में रूपांतरण की अनिवार्यता का निष्कर्ष मार्क्स ने पूर्णतः और एकमात्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक समाज की गत्यात्मकता के आर्थिक नियम से ही निकाला है। मार्क्स के देहावसान के बाद की आधी सदी के दौरान श्रम का समाजीकरण, जो हज़ारों रूप में अधिकाधिक शीघ्रतापूर्वक आगे बढ़ रहा है तथा जो विशाल उद्योग, पूंजीपतियों के कार्टेलों, सिंडिकेटों, ट्रस्टों के विकास और साथ ही वित्त पूंजी की मात्रा तथा क्षमता की वृहद वृद्धि में विशेष रूप से प्रत्यक्ष हुआ – यह है समाजवाद के अनिवार्य आगमन का मुख्य भौतिक आधार। इस रूपांतरण की बौद्धिक तथा नैतिक चालक शक्ति और भौतिक निष्पादक ख़ुद पूंजीवाद द्वारा पोषित सर्वहारा वर्ग है। बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध सर्वहारा वर्ग का संघर्ष, जो विभिन्न, सतत अधिक सार-संपन्न होते रूपों में प्रगट होता है, अनिवार्यतः सर्वहारा वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता पर विजय ("सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व") की ओर प्रवृत्त राजनीतिक संघर्ष बन जाता है। यह हो ही नहीं सकता कि उत्पादन का समाजीकरण उत्पादन के साधनों के सामाजिक संपत्ति में परिवर्तन की ओर, "संपत्ति-अपहरण करनेवालों की संपत्ति के अपहरण" की ओर न ले जाये। श्रम की उत्पादिता में वृहद वृद्धि, कार्य-दिवस का घटना, उन्नत सामूहिक श्रम द्वारा छोटे, आदिम, बिखरे उत्पादन के ध्वंसावशेषों का स्थान ग्रहण किया जाना – यह होगा उक्त परिवर्तन का सीधा परिणाम। पूंजीवाद अंततोगत्वा उद्योग से कृषि के संबंध को तोड़ देता है, लेकिन साथ ही अपने उच्चतर विकास द्वारा इस संबंध के नये तत्व, विज्ञान के सचेतन उपयोग और सामूहिक श्रम के संयोजन के (देहातों के पिछड़ेपन, दुनिया से अलहदगी और वहशीपन के साथ-साथ बड़े-बड़े शहरों में जनसाधारण के भारी जमाव, अस्वाभाविक संकेंद्रण का उन्मूलन करके), आबादी के नये बंदोबस्त के आधार पर उद्योग के साथ कृषि की एकताबद्धता के नये तत्व तैयार करता है। आधुनिक पूंजीवाद के उच्चतम रूप परिवार का नया रूप, औरतों की स्थिति और उदीयमान पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा की नयी सूरतें पैदा कर रहे हैं: औरतों और बच्चों का श्रम, पूंजीवाद द्वारा पितृक परिवार का विध्वंस किया जाना आधुनिक समाज में अनिवार्यतः अधिकतम भयावह, विनाशकारी तथा घिनौने रूप ग्रहण कर लेते हैं। फिर भी "आधुनिक उद्योग स्त्रियों, लड़के-लड़कियों और बच्चे-बच्चियों को घरेलू क्षेत्र के बाहर उत्पादन की क्रिया में एक

4*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महत्वपूर्ण भूमिका देकर परिवार के और नारी तथा पुरुष के संबंधों के एक अधिक ऊंचे रूप के लिए एक नया आर्थिक आधार तैयार कर देता है। ज़ाहिर है, परिवार के ट्यूटौनिक-ईसाई रूप को उसका अंतिम और शाश्वत रूप समझना उतनी ही बेतुकी बात है, जितना यह समझना कि परिवार के प्राचीन रोम, प्राचीन यूनान अथवा पूर्व के रूप उसके अंतिम और शाश्वत रूप थे, क्योंकि ये तमाम रूप तो असल में परिवार के ऐतिहासिक विकास-क्रम की कड़ियां हैं। इसके अलावा यह बात भी साफ़ है कि यदि काम करनेवालों के सामूहिक दल में स्त्री और पुरुष दोनों और हर उम्र के व्यक्ति शामिल हों, तो उपयुक्त परिस्थितियां होने पर यह तथ्य लाज़िमी तौर पर मानवीय विकास का कारण बन जायेगा, हालांकि अपने स्वयंस्फूर्त ढंग से विकसित, पाशविक, पूंजीवादी रूप में, जहां उत्पादन की क्रिया मज़दूर के लिए नहीं होती, बल्कि मज़दूर का अस्तित्व उत्पादन की क्रिया के लिए होता है, यह तथ्य समाज में दुराचार और दासता का विष फैलाने का कारण बन जाता है" ('पूंजी', खंड १, अध्याय १३ का अंतिम अंश)। फ़ैक्टरियों की प्रथा में हमारे सामने "भावी शिक्षा की कली फूटती है, उस शिक्षा की, जो एक निश्चित आयु से ऊपर के प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा और व्यायाम के साथ-साथ उससे कोई उत्पादक श्रम कराने का भी प्रबंध करेगी और यह केवल इसलिए नहीं किया जायेगा कि यह उत्पादन की कार्य-क्षमता को बढ़ाने का एक तरीक़ा है, बल्कि इसलिए भी कि पूरी तरह विकसित मानव के उत्पादन का यह एकमात्र तरीक़ा है" (वहीं)[56]। मार्क्स का समाजवाद राष्ट्र संबंधी तथा राज्य संबंधी दोनों ही प्रश्नों को इसी ऐतिहासिक आधार पर स्थापित करता है, एकमात्र अतीत की व्याख्या के अर्थ में ही नहीं, बल्कि भविष्य के निर्भीकतापूर्ण पूर्वावलोकन तथा उसकी उपलब्धि के लिए साहसपूर्ण व्यावहारिक कार्रवाई के अर्थ में भी। राष्ट्र सामाजिक विकास के बुर्जुआ युग की अनिवार्य उपज हैं, अनिवार्य रूप हैं। मज़दूर वर्ग "राष्ट्र का भाग बने" विना, "राष्ट्रीय" हुए विना ("यद्यपि उस अर्थ में विलकुल नहीं, जिस अर्थ में बुर्जुआ वर्ग समझता है") मज़बूत, वयस्क, गठित नहीं हो सकता था। लेकिन पूंजीवाद का विकास राष्ट्रीय दीवारों को अधिकाधिक तोड़ता जाता है, राष्ट्रीय अलहदगी का अंत करता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता है, राष्ट्रीय विरोधों की जगह वर्गीय विरोधों का प्रतिस्थापन करता जाता है। इसलिए विकसित पूंजीवादी देशों के लिए यह पूर्णतः सच है कि "श्रमजीवियों का कोई स्वदेश नहीं है", कि "सर्वहारा वर्ग के निस्तार की पहली शर्त यह है कि कम से कम प्रमुख सभ्य देशों" के मज़दूर "मिलकर एकसाथ क़दम उठायें" ('कम्युनिस्ट घोषणापत्र')[57]। राज्य, जोकि संगठित ज़ोर-ज़बर्दस्ती है, समाज के विकास की एक निश्चित मंज़िल में अनिवार्यतः पैदा हुआ, जब समाज ऐसे वर्गों में, जिनमें मेल-मिलाप नहीं हो सकता था, विभक्त हो गया था, जब प्रतीयमान समाजोपरि और किसी हद तक समाजेतर "सत्ता" के बिना उसका अस्तित्व नहीं रह सकता था। वर्गीय विरोधों के अंदर से पैदा होकर राज्य "सबसे अधिक शक्तिशाली, आर्थिक क्षेत्र में प्रभुत्वशील वर्ग का राज्य" बन जाता है। "यह वर्ग राज्य के जरिए राजनीतिक क्षेत्र में भी प्रभुत्वशील हो जाता है और इस प्रकार उसे उत्पीड़ित वर्ग को दबाकर रखने तथा उसका शोषण करने के लिए नया साधन मिल जाता है। इस प्रकार प्राचीन काल का राज्य सर्वोपरि दास-स्वामियों का राज्य था, जिसका उद्देश्य दासों को दबाकर रखना था; इसी प्रकार सामंती राज्य अभिजात वर्ग का निकाय था, जिसका उद्देश्य भूदास किसानों तथा बंधुआ मज़दूरों को दबाकर रखना था और आधुनिक प्रातिनिधिक राज्य पूंजी द्वारा उजरती श्रम के शोषण का साधन है" (एंगेल्स, 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति', जिसमें वह अपने और मार्क्स के विचारों की व्याख्या करते हैं)[58]। बुर्जुआ राज्य का सर्वाधिक स्वतंत्र तथा प्रगतिशील रूप, जनवादी जनतंत्र भी इस स्थिति का कुछ निराकरण नहीं करता, बल्कि महज़ उसके रूप (स्टाक एक्सचेंज के साथ सरकार का संबंध, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नौकरशाहों और अख़बारों की मुंह-भराई, इत्यादि) को बदल देता है। समाजवाद वर्गों के उन्मूलन की ओर ले जाते हुए उसके द्वारा राज्य के उन्मूलन की ओर भी ले जायेगा। एंगेल्स 'ड्यूहरिंग मत-खंडन' में लिखते हैं: "वह पहला कार्य, जिसके द्वारा राज्य अपने आपको सचमुच पूरे समाज का प्रतिनिधि बना देता है—अर्थात समाज के नाम पर उत्पादन के साधनों को अपने अधिकार में ले लेना—यह साथ ही राज्य के रूप में उसका आख़िरी स्वतंत्र कार्य होता है। एक क्षेत्र के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाद दूसरे क्षेत्र में सामाजिक संबंधों में राज्य का हस्तक्षेप अनावश्यक बनता जाता है और फिर अपने आप समाप्त हो जाता है। व्यक्तियों के शासन का स्थान वस्तुओं का प्रबंध तथा उत्पादन की प्रक्रियाओं का संचालन ग्रहण कर लेता है। राज्य को 'रद्द नहीं किया जाता', वह अपने आप समाप्त हो जाता है।"[59] "जो समाज उत्पादकों के स्वतंत्र तथा समान सहयोग की बुनियाद पर उत्पादन का संगठन करेगा, वह समाज राज्य की पूरी मशीनरी को उठाकर उस स्थान में रख देगा, जो उस समय उसके लिए सबसे उपयुक्त होगा: याने वह राज्य को हाथ के चर्खे और कांसे की कुल्हाड़ी के साथ-साथ प्राचीन वस्तुओं के अजायबघर में रख देगा" (एंगेल्स, 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति')[60]।

अंत में छोटे किसानों के प्रति, जो संपत्ति-अपहरण करनेवालों की संपत्ति के अपहरण के युग में क़ायम रहेंगे, मार्क्स के समाजवाद के रुख़ के प्रश्न पर एंगेल्स के एक वक्तव्य की ओर, जो मार्क्स के विचारों को अभिव्यक्त करता है, ध्यान दिलाना आवश्यक है: "जब हमारे हाथों में राज्य-सत्ता आयेगी, तब हम बलपूर्वक छोटे किसानों की संपत्ति (बामुआवज़ा या बिला मुआवज़ा) छीनने की—जो काम हमें बड़े ज़मींदारों के मामले में करना पड़ेगा—बात भी नहीं सोचेंगे। छोटे किसानों के संबंध में हमारा कार्य प्रथमतः उनके निजी उद्यम और निजी स्वामित्व को सहकारी उद्यम और स्वामित्व में अंतरित करना होगा, और यह बलपूर्वक नहीं, बल्कि उदाहरण पेश करके तथा सामाजिक सहायता देकर किया जायेगा। कहने की ज़रूरत नहीं कि उस समय छोटे किसानों को ऐसे भावी लाभ, जो उन्हें आज भी स्पष्ट होंगे, दिखाने के लिए हमारे पास प्रचुर साधन होंगे" (एंगेल्स, 'पश्चिम में किसानों की समस्या', पृ० १७, अलेक्सेयेवा द्वारा प्रकाशित; रूसी अनुवाद में ग़लतियां हैं, मूल *Neue Zeit*[61] में)।

सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की कार्यनीति

१८४४–१८४५ में ही पुराने भौतिकवाद की एक बुनियादी ख़ामी का, याने व्यावहारिक क्रांतिकारी सरगर्मी की सूरतों को समझने अथवा उसके महत्व को आंकने की असमर्थता का पता लगाकर मार्क्स जीवनपर्यंत सैद्धांतिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य के साथ-साथ सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की कार्यनीतिक समस्याओं की ओर अविचलित रूप से ध्यान देते रहे। मार्क्स की सभी कृतियां और विशेषतः एंगेल्स के साथ उनके पत्र-व्यवहार की १६१३ में प्रकाशित चार जिल्दें इस संबंध में वृहद सामग्री प्रस्तुत करती हैं। यह सामग्री अभी संग्रहीत, एकत्रित, अध्ययन किये जाने तथा संपादित होने से कोसों दूर है। इसलिए यहां हमें इस बात पर जोर देते हुए मात्र अधिकतम सामान्य तथा संक्षिप्त टीकाओं पर ही बस करना चाहिए कि **इस** पक्ष से रहित भौतिकवाद को मार्क्स उचित ही अपूर्ण, एकांगी, निर्जीव समझते थे। मार्क्स ने अपने भौतिकवादी-द्वंद्ववादी विश्वदृष्टिकोण की सभी मान्यताओं के नितांत अनुकूल सर्वहारा की कार्यनीति का बुनियादी लक्ष्य निर्धारित किया था। किसी समाज में बिना किसी अपवाद के सभी वर्गों के अन्योन्य संबंधों के कुल योग की केवल वस्तुपरक गणना और फलतः उस समाज के विकास की वस्तुपरक मंज़िल की गणना तथा उस और दूसरे समाजों के अन्योन्य संबंधों की गणना ही अग्रगामी वर्ग की सही कार्यनीति के आधार का काम कर सकती हैं। इसके साथ ही सभी वर्ग और सभी देश गतिहीन रूप में नहीं, बल्कि गतिशील रूप में, याने जड़ता की अवस्था में नहीं, बल्कि गत्यात्मकता की अवस्था में (जिसके नियम हर वर्ग के अस्तित्व की आर्थिक स्थितियों से उत्पन्न होते हैं) देखे जाते हैं। फिर गत्यात्मकता केवल अतीत के दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि भविष्य के दृष्टिकोण से भी और साथ ही केवल मंद परिवर्तन देखनेवाले "विकासवादियों" की भोंडी अवधारणाओं के अनुसार नहीं, बल्कि द्वंद्वात्मक रूप से देखी जाती है—मार्क्स ने एंगेल्स को लिखा था: "महान ऐतिहासिक घटना-प्रवाह में २० साल एक दिन के बराबर होते हैं, यद्यपि बाद में ऐसे दिन आ सकते हैं, जिनमें बीस-बीस साल मूर्त हों" ('पत्र-व्यवहार', खंड ३, पृ० १२७)[62]। विकास की हर मंज़िल में, हर क्षण में सर्वहारा वर्ग की कार्यनीति को मानव इतिहास की इस वस्तुपरक अनिवार्य द्वंद्वात्मकता को ध्यान में रखना होगा, एक ओर, अग्रगामी वर्ग की चेतना, शक्ति तथा संघर्ष-क्षमता के विकास के लिए राजनीतिक गतिरोध के अथवा "कछुवा चालवाले", "शांतिमय" कहलाये जानेवाले विकास के दौरों का उपयोग करते हुए और दूसरी ओर, इस उपयोग के सारे कामों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को इस वर्ग की गत्यात्मकता के "अंतिम लक्ष्य" की दिशा में तथा उस वर्ग में "अपने अंदर बीस-बीस साल मूर्त करनेवाले" महान दिनों की महान समस्याओं के व्यावहारिक हल की क्षमता की सर्जना की दिशा में निदेशित करते हुए। इस संबंध में मार्क्स के दो तर्क विशेष महत्वपूर्ण हैं: एक 'दर्शन की दरिद्रता' में सर्वहारा वर्ग के आर्थिक संघर्ष तथा आर्थिक संगठन के संबंध में है और दूसरा उसके राजनीतिक कार्यभार के संबंध में 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' में है। पहला कहता है: "बड़ा उद्योग एक स्थान पर एक दूसरे से अपरिचित लोगों की भीड़ जमा कर देता है। प्रतिद्वंद्विता उनके हितों को अलग-अलग कर देती है। लेकिन मज़दूरी की रक्षा, अपने मालिकों के विरुद्ध उनका यह सामान्य हित उन्हें प्रतिरोध, सहयोग के साझे विचार से एकताबद्ध करता है... पहले उनके अलग-अलग समूह अपने को सहयोगी दलों में एकताबद्ध कर लेते हैं और सतत एकताबद्ध पूंजी के मुक़ाबले मज़दूरी की रक्षा की अपेक्षा मज़दूरों द्वारा अपने संगठन की रक्षा अधिक आवश्यक बन जाती है... इस संघर्ष में, जो वस्तुतः गृहयुद्ध होता है, आनेवाले संग्राम के निमित्त सभी तत्व एकीभूत और विकसित होते हैं। इस हद पर पहुंचकर सहयोग राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लेता है।"[63] यहां हमारे सामने कई दशाब्दियों के लिए, "आनेवाले संग्राम के निमित्त" सर्वहारा की शक्ति-सिद्धि की तमाम लंबी मुद्दत के लिए आर्थिक संघर्ष तथा ट्रेड-यूनियन आंदोलन का कार्यक्रम और कार्यनीति प्रस्तुत है। इससे ब्रिटेन के मज़दूर आंदोलन की मिसाल देकर इस बात के बारे में मार्क्स तथा एंगेल्स द्वारा दिये गये बहुसंख्य हवालों की तुलना करनी चाहिए कि औद्योगिक "ख़ुशहाली" किस प्रकार "मज़दूरों को ख़रीद लेने" ('एंगेल्स से पत्र-व्यवहार', खंड १, पृ० १३६)[64], उन्हें संघर्ष से विरत करने के प्रयत्नों को जन्म देती है; किस प्रकार यह ख़ुशहाली आम तौर से "मज़दूरों को आचार-भ्रष्ट कर देती है" (खंड २, पृ० २१८)[65]; किस प्रकार ब्रिटिश सर्वहारा का "बुर्जुआकरण" हो रहा है – "ज़ाहिर है कि अधिकतम बुर्जुआ राष्ट्र" (अंग्रेज़) "चाहता है कि अंततोगत्वा बुर्जुआ वर्ग के साथ उसके यहां बुर्जुआ अभिजात वर्ग और बुर्जुआ सर्वहारा वर्ग भी हों" (खंड २, पृ० २९०)[66]; किस प्रकार उसकी "क्रांतिकारी शक्ति" छीजती जाती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है (खंड ३, पृ० १२४)[67]; किस प्रकार "ब्रिटिश मज़दूरों की प्रतीयमान बुर्जुआ भ्रष्टता से उनकी नजात" की कमोवेश लंवी मुद्दत तक प्रतीक्षा करना ज़रूरी है (खंड ३, पृ० १२७)[68]; किस प्रकार ब्रिटिश मज़दूर आंदोलन में "चार्टिस्टों के ओज" का अभाव है (१८६६, खंड ३, पृ० ३०५)[69]; किस प्रकार मज़दूरों के ब्रिटिश नेता "आमूलवादी बुर्जुआ और मज़दूर के बीच" के दर्मियानी नमूने पर बनाये जा रहे हैं (होलियोक के संबंध में, खंड ४, पृ० २०६)[70]; किस प्रकार ब्रिटिश इजारेदारी की बदौलत और उस समय तक, जब तक वह इजारेदारी क़ायम रहती है, "ब्रिटिश मज़दूर से कुछ भी न बन पायेगा" (खंड ४, पृ० ४३३)[71]। यहां मज़दूर आंदोलन की सामान्य प्रगति (**तथा उसके परिणाम**) के संबंध में आर्थिक संघर्ष की कार्यनीति पर उल्लेखनीय रूप से व्यापक, सर्वांगीण, द्वंद्वात्मक तथा सच्चे क्रांतिकारी दृष्टिकोण से विचार किया गया है।

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' ने राजनीतिक संघर्ष की कार्यनीति के बारे में मार्क्सवाद की आधारभूत प्रस्थापना प्रस्तुत की: "कम्युनिस्ट मज़दूरों के तात्कालिक लक्ष्यों के लिए लड़ते हैं, उनके सामयिक हितों की रक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं; किंतु वर्तमान के आंदोलन में वे इस आंदोलन के भविष्य का भी प्रतिनिधित्व करते हैं और उसका ध्यान रखते हैं"[72]। भविष्य के नाम पर भी मार्क्स ने १८४८ में पोलैंड में "कृषक क्रांति" की पार्टी का, "उस पार्टी का" समर्थन किया, "जिसने १८४६ में क्रैको का विद्रोह पैदा किया था"[73]। जर्मनी के अंदर १८४८–१८४६ में मार्क्स ने चरम क्रांतिकारी जनवाद का समर्थन किया और उस समय कार्यनीति की बाबत कही गयी अपनी बात को बाद में कभी वापस नहीं लिया। जर्मन बुर्जुआ वर्ग को वह ऐसा तत्व समझते थे, जो "बिलकुल शुरू से ही जनता के साथ ग़द्दारी" (केवल किसानों के साथ मेल ही बुर्जुआ वर्ग को उसके कार्यभार की पूर्ण निष्पत्ति प्रदान कर सकता था) "और पुराने समाज के ताजधारी प्रतिनिधियों के साथ समझौते की प्रवृत्ति रखता था"। यह है बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के दौर में जर्मन बुर्जुआ वर्ग की वर्गीय स्थिति का मार्क्स द्वारा किया गया निर्णयात्मक विश्लेषण, वह विश्लेषण, जो प्रसंगतः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऐसे भौतिकवाद का नमूना है, जो समाज को उसकी गत्यात्मकता में देखता है, फिर भी गत्यात्मकता के केवल उसी पहलू से नहीं, जो पीछे की ओर अभिमुख है: "...अपने पर भरोसे से रहित, जनता पर भरोसे से रहित; ऊपरवालों के सामने भुनभुनाते, नीचेवालों के सामने कांपते; ...आलमी तूफ़ान से भयभीत; कहीं भी ओज नहीं, हर कहीं चोरी; ... पहलक़दमी से रहित; ...अपने जरा-जीर्ण हितों के लिए तरुण तथा स्वस्थ जनता की तरुणाई की प्रथम उमंगों को निदेशित करने के निमित्त नियतिबद्ध शापग्रस्त वयोवृद्ध..." ('नया राइन समाचारपत्र', १८४८, देखिये 'साहित्यिक धरोहर', खंड ३, पृ० २१२)[74]। लगभग २० साल बाद एंगेल्स के नाम एक पत्र ('पत्र-व्यवहार', खंड ३, पृ० २२४) में मार्क्स ने १८४८ की क्रांति की विफलता का कारण यह बताया था कि बुर्जुआ वर्ग ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की प्रत्याशा मात्र पर ग़ुलामी के साथ शांति को तरजीह दी थी। जब १८४८–१८४९ का क्रांतिकारी दौर ख़त्म हो गया, तब मानो "शांतिमय ढंग से" नयी क्रांतियों की तैयारी करनेवाले नये दौर में काम करने की क्षमता की मांग करते हुए मार्क्स क्रांति के साथ हर प्रकार के खिलवाड़ के विरोध में उठ खड़े हुए (शापर–विलिख़ और उनके ख़िलाफ़ संघर्ष)। मार्क्स ऐसे काम को किस भावना के साथ चलाने की मांग करते थे, यह बात १८५६ के अधिकतम प्रतिगामी काल में जर्मनी की परिस्थिति के उनके इस मूल्यांकन में देखी जा सकती है: "जर्मनी में सारा मामला किसान युद्ध के किसी द्वितीय संस्करण द्वारा सर्वहारा क्रांति के समर्थन की संभावना पर निर्भर होगा" ('एंगेल्स से पत्र-व्यवहार', खंड २, पृ० १०८)[75]। जब तक जर्मनी में जनवादी (बुर्जुआ) क्रांति संपन्न नहीं की गयी थी, तब तक मार्क्स ने समाजवादी सर्वहारा वर्ग की कार्यनीति में किसानों की जनवादी शक्ति के विकास पर ही सारा ध्यान केंद्रित किया। वह लासाल के रवैये को "प्रशा के लाभ के लिए पूरे मज़दूर आंदोलन के साथ वस्तुपरक दृष्टि से ग़द्दारी" समझते थे (खंड ३, पृ० २१०)[76], इसके अलावा ठीक इसी कारण भी कि लासाल ने ज़मींदारों और प्रशियाई राष्ट्रवाद के साथ सुलहपसंदी बरती। मार्क्स के साथ मिलकर अख़बारों को दिये जानेवाले अपने एक संयुक्त वक्तव्य के विषय में विचार-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विनिमय करते हुए एंगेल्स ने १८६५ में लिखा : "कृषिप्रधान देश में सामंत-अभिजातों द्वारा देहाती मज़दूरों के पितृक 'डंडाशाही शोषण' को भुलाते हुए औद्योगिक मज़दूरों की तरफ़ से केवल बुर्जुआ वर्ग पर हमला करना नीचतापूर्ण है" (खंड ३, पृ० २१७)[77]। १८६४–१८७० के दौरान, जब जर्मनी में बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के निष्पादन का युग, किसी न किसी प्रकार **ऊपर से** उस क्रांति के निष्पादन के निमित्त प्रशा और आस्ट्रिया के शोषक वर्गों के संघर्ष का युग ख़त्म होने को आया, मार्क्स ने बिस्मार्क के साथ आंख मिचौनी खेलने के लिए न केवल लासाल की भर्त्सना की, बल्कि "आस्ट्रियाप्रेम" और विशिष्टतावाद की हिमायत के गर्त्त में जा गिरे लीब्कनेख़्त की भी ग़लती सुधारी। मार्क्स ने बिस्मार्क तथा आस्ट्रियाप्रेमियों, दोनों के विरुद्ध समान रूप से निर्ममतापूर्वक लड़नेवाली क्रांतिकारी कार्यनीति की मांग की। उन्होंने ऐसी कार्यनीति की मांग की, जो "विजेताओं" के, प्रशियाई जंकर के अनुकूल न ढले, बल्कि प्रशियाई सैनिक विजयों द्वारा निर्मित **आधार पर भी** उनके विरुद्ध अविलंब क्रांतिकारी युद्ध पुनरारंभ करे ('एंगेल्स से पत्र-व्यवहार', खंड ३, पृ० १३४, १३६, १४७, १७९, २०४, २१०, २१५, ४१८, ४३७, ४४०–४४१)[78]। इंटरनेशनल की ९ सितंबर, १८७० की मशहूर अपील में मार्क्स ने असामयिक विद्रोह के ख़िलाफ़ फ़्रांसीसी सर्वहारा वर्ग को चेतावनी दी थी, लेकिन जब सब कुछ के बावजूद वह हो गया (१८७१), तब मार्क्स ने "स्वर्ग पर धावा बोलने-वाले" जनसाधारण की क्रांतिकारी पहलक़दमी का उमंग के साथ अभिनंदन किया (कुगेलमन के नाम मार्क्स का पत्र)[79]। अनेक दूसरी परिस्थितियों की तरह इस परिस्थिति में क्रांतिकारी कार्रवाई की पराजय, मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के दृष्टिकोण से, अपनायी गयी स्थिति के परित्याग की अपेक्षा, संग्राम के बिना ही आत्मसमर्पण की अपेक्षा सर्वहारा संघर्ष की सामान्य गति **तथा उसके परिणाम में** कम बुराई थी। वैसा आत्मसमर्पण सर्वहारा वर्ग को पस्त-हौसला कर देता और उसकी संघर्ष-क्षमता को नष्ट कर देता। राजनीतिक गतिरोध और बुर्जुआ वैधानिकता के बोलबाले के दौर में संघर्ष के क़ानूनी साधनों के उपयोग की पूरी तरह क़द्र करते हुए मार्क्स ने १८७७–१८७८ में समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून[80]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पास होने के बाद मोस्ट की "क्रांतिकारी लफ़्फ़ाज़ी" की तीक्ष्ण निंदा की। लेकिन उन्होंने उस आधिकारिक सामाजिक-जनवादी पार्टी पर अस्थायी रूप से हावी तत्कालीन अवसरवाद पर भी उतना ही तीव्र हमला किया, जिसने समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून के जवाब में ग़ैर क़ानूनी संघर्ष की ओर क़दम बढ़ाने का संकल्प, दृढ़ता, क्रांतिकारिता, तत्परता तुरंत प्रदर्शित नहीं की ('एंगेल्स के नाम मार्क्स के पत्र', खंड ४, पृ० ३९७, ४०४, ४१८, ४२२, ४२४[81]; ज़ोर्गे के नाम लिखे गये पत्रों से भी तुलना कीजिये)।

जुलाई-नवंबर, १९१४ को लिखित। खंड २६, पृ० ४५–८१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूसियों का राष्ट्रीय गौरव

आजकल राष्ट्रीयता के बारे में, पितृभूमि के बारे में कितनी चर्चा, कितना तर्क-वितर्क, कितनी चीख़-पुकार मची हुई है! इंगलैंड के उदारतावादी और आमूलवादी मंत्री, फ़्रांस के ढेरों "प्रगतिशील" पत्रकार (जो प्रतिक्रियावादी पत्रकारों से पूरी तरह सहमत हो गये हैं), रूस के ढेरों सरकारी, कैडेटीय और प्रगतिशील क़लम-घिस्सू (जिनमें कतिपय नरोदवादी और "मार्क्सवादी" तक भी शामिल हैं)—सभी तरह-तरह के सुरों में "मातृभूमि" की आज़ादी और स्वतंत्रता के, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के सिद्धांत की महिमा के राग अलाप रहे हैं। और कोई नहीं जान पाता कि जल्लाद निकोलाई रोमानोव के ख़रीदे हुए भाट अथवा नीग्रो या हिन्दुस्तानियों के अत्याचारियों के ख़ुशामदी टट्टू कहां समाप्त होते हैं और कहां से वह मामूली कूपमंडूक शुरू होता है, जो मूर्ख अथवा ढुलमुलयक़ीनी होने के कारण "धारा के साथ" बहता जा रहा है। और यह जानना महत्वपूर्ण भी नहीं। हमें एक ऐसी व्यापक और गहरी विचारधारात्मक प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है, जिसकी जड़ें महान शक्तिवाले राष्ट्रों के भूपति और पूंजीपति सज्जनों के हितों के साथ गुंथी हुई हैं। इन वर्गों के लिए लाभकारी विचारों के प्रचार में प्रति वर्ष लाखों-करोड़ों का ख़र्च आता है: यह एक काफ़ी बड़ी पनचक्की है, जो पक्के अंधराष्ट्रवादी मेनशिकोव से लेकर प्लेख़ानोव और मास्लोव, रुबानोविच और स्मिनोर्व, क्रोपोत्किन और बूर्सेव जैसे व्यक्तियों तक, जो अवसरवादी या ढुलमुल होने के कारण अंधराष्ट्रवादी बने हैं—सभी स्रोतों का पानी इस्तेमाल कर रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइये, हम, रूसी सामाजिक-जनवादी भी इस विचारधारात्मक प्रवृत्ति के प्रति अपना रुख़ स्पष्ट करने का प्रयत्न करें। हमारे लिए, यूरोप के सुदूर पूर्व और एशिया के एक बड़े भाग के महान शक्तिवाले राष्ट्र के प्रतिनिधियों के लिए जातियों के प्रश्न के महत्व को भुला देना अनुचित होगा – विशेष रूप से एक ऐसे देश में, जिसे ठीक ही "जातियों का जेलख़ाना" कहा जाता है; ख़ासकर ऐसे समय में, जब यूरोप के सुदूर पूर्व और एशिया में पूंजीवाद कई "नयी-नयी", छोटी-बड़ी जातियों में जीवन और चेतना का संचार कर रहा है; ऐसी घड़ी में, जब जातियों के अनेक प्रश्नों को संयुक्त अभिजात परिषद[82] और गुचकोव, क्रेस्तोवनिकोव, दोल्गोरूकोव, कुटलर और रोदिचेव जैसे लोगों के हित में "हल" करने के लिए ज़ार के राजतंत्र ने लाखों रूसियों और ग़ैर रूसियों को हथियारबंद किया है।

क्या हमारे लिए, रूसी वर्ग-चेतन सर्वहाराओं के लिए राष्ट्रीय गौरव की भावना बिरानी है? नहीं, निश्चय ही नहीं! हम अपनी भाषा और अपनी मातृभूमि से प्यार करते हैं और उसकी मेहनतकश जनता को (अर्थात उसकी आबादी के ६० प्रतिशत को) ऊपर उठाकर जनवादियों और समाजवादियों के सचेतन जीवन के स्तर तक पहुंचाने का सबसे अधिक प्रयत्न करते हैं। हमें यह देखकर और अनुभव कर सबसे अधिक दुख होता है कि ज़ार के जल्लाद, कुलीन और पूंजीपति हमारी शानदार मातृभूमि पर कितना अत्याचार कर रहे हैं, उसे कितने दमन की चक्की में पीस रहे हैं, उसका कितना अपमान कर रहे हैं। हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे बीच, रूसियों के बीच इन ज़्यादतियों ने प्रतिरोध पैदा किया है, कि इन्हीं लोगों में से रदीश्चेव, दिसंबरवादी[83] और आठवीं दशाब्दी के राज़्नोचीन्त्सी-क्रांतिकारी[84] निकले हैं, कि १६०५ में रूसी मज़दूर वर्ग ने जनता की एक शक्तिशाली क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना की, कि इसी काल में रूसी किसान जनवादी होने लगा और पादरियों तथा ज़मींदारों का तख़्ता उलटने में लग गया।

हमें याद है कि ५० साल पहले रूसी जनवादी चेर्निशेव्स्की ने अपना जीवन क्रांति के ध्येय को समर्पित करते हुए कहा: "एक दयनीय राष्ट्र, ग़ुलामों का राष्ट्र – ऊपर से नीचे तक सभी ग़ुलाम"[85]। प्रत्यक्ष और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अप्रत्यक्ष रूसी ग़ुलाम (ज़ार के राजतंत्र के ग़ुलाम) इन शब्दों को याद करना पसंद नहीं करते। फिर भी हमारी राय में ये मातृभूमि के प्रति वास्तविक प्रेम के शब्द थे, ऐसे प्रेम के, जो रूसी जनसाधारण के बीच क्रांतिकारी भावना के अभाव के कारण विषादमय हो गया था। उस समय यह भावना नदारद थी। अब भी यह नगण्य-सी ही है, लेकिन किसी रूप में है तो। हम राष्ट्रीय गौरव की भावना से परिपूर्ण हैं, क्योंकि रूसी राष्ट्र ने भी एक क्रांतिकारी वर्ग का सृजन किया है, क्योंकि इसने भी यह साबित कर दिया है कि वह मानवजाति के सामने केवल बड़े-बड़े हत्याकांड, फांसी के तख़्ते, काल-कोठरियां, घोर दुर्भिक्ष तथा पादरियों, ज़ारों, ज़मींदारों और पूंजीपतियों के सामने घोर चापलूसी ही नहीं, वरन स्वतंत्रता तथा समाजवाद के लिए संघर्ष के महान उदाहरण भी पेश कर सकता है।

हममें राष्ट्रीय गौरव की पूर्ण अनुभूति है और इसीलिए हमें अपनी ग़ुलामी के विगत कालों से (जब कुलीन ज़मींदारों ने हंगरी, पोलैंड, फ़ारस और चीन की आज़ादी का गला घोंटने के लिए किसानों को लड़ाई के मैदान में घसीटा था) और अपने दासत्वमय वर्तमान से भी **विशेष रूप से** घृणा है, जब ये ही ज़मींदार पूंजीपतियों की सहायता से पोलैंड और उक्रइना का गला दबाने के लिए, फ़ारस और चीन के जनवादी आंदोलनों का दमन करने के लिए और रोमानोवों, बोब्रिन्स्कियों और पुरिश्केविचों को, हमारी रूसी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को कलंक का टीका लगानेवाले लुटेरों को शक्तिशाली बनाने के लिए हमें युद्ध के रास्ते ले चल रहे हैं। अगर मनुष्य ग़ुलाम पैदा हुआ है, तो उसका कोई दोष नहीं; परंतु जो ग़ुलाम अपनी आज़ादी के लिए कोशिश नहीं करना चाहता, इतना ही नहीं, जो अपनी ग़ुलामी को उचित भी ठहराता है और उसे चटकीले रंगों में पेश करता है (उदाहरणार्थ, पोलैंड, उक्रइना, आदि के दमन को रूसियों के "पितृभूमि की रक्षा" कहता है)—ऐसा ग़ुलाम ख़ुशामदी टट्टू और गंवार है और दूसरों में ठीक ही ग़ुस्सा, हिक़ारत और नफ़रत पैदा करता है।

"दूसरी जातियों का उत्पीड़न करनेवाली कोई भी जाति आज़ाद नहीं हो सकती"[86]—ये शब्द उन्नीसवीं शताब्दी के सुसंगत जनवाद के महानतम प्रतिनिधियों, मार्क्स और एंगेल्स के हैं, जो क्रांतिकारी सर्वहारा के गुरु बने।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और हम, रूसी मज़दूर, जिनके हृदय में राष्ट्रीय गौरव की भावना हिलोरें ले रही है, रूस को बहरसूरत स्वतंत्र और स्वाधीन, जनवादी, जनतंत्रवादी और गौरवशाली देखना चाहते हैं, ऐसे देश के रूप में देखना चाहते हैं, जो अपने पड़ोसियों के साथ अपने संबंध समानता के मानवीय सिद्धांत के आधार पर स्थापित करे, न कि विशेषाधिकारों के ऐसे सामंतवादी सिद्धांत के आधार पर, जो एक महान राष्ट्र के लिए अपमानजनक है। चूंकि हम ऐसा चाहते हैं, इसलिए हम कहते भी हैं: बीसवीं शताब्दी में, यूरोप में (यूरोप के सुदूर पूर्व तक में) "पितृभूमि की रक्षा" केवल एक ही तरीक़े से हो सकती है और वह यह कि **अपने** पितृदेश के राजतंत्र, ज़मींदारों और पूंजीपतियों, अर्थात हमारी मातृभूमि के सबसे **भयंकर** दुश्मनों से मोर्चा लेने के लिए हर क्रांतिकारी साधन का इस्तेमाल किया जाये। हम कहते हैं कि रूसी तब तक अपनी "पितृभूमि की रक्षा" नहीं कर सकते, जब तक वे हर प्रकार के युद्ध में ज़ारशाही की पराजय की कामना न करें, जो रूस की ६० प्रतिशत आबादी के लिए अधिक छोटी विपत्ति होगी, क्योंकि ज़ारशाही इस ६० प्रतिशत जनता का न केवल आर्थिक और राजनीतिक दमन करती है, अपितु उसे अन्य जातियों को उत्पीड़ित करने और इस शर्मनाक काम को पाखंडपूर्ण और झूठी देशभक्तिपूर्ण शब्दावली के प्रयोग द्वारा छिपाने की शिक्षा देकर उसका हौसला तोड़ती है, उसे अपमानित करती है, उसका मुंह काला करती है, उसके साथ अनाचार करती है।

शायद हमारे समक्ष यह आपत्ति की जायेगी कि ज़ारशाही के अलावा और उसी की छत्रछाया में एक दूसरी ऐतिहासिक शक्ति, रूसी पूंजीवाद उदित हुआ और सुदृढ़ बना है और यह शक्ति बड़े-बड़े क्षेत्रों का आर्थिक दृष्टि से केंद्रीयकरण और उन्हें ऐक्यबद्ध करके प्रगतिशील कार्य कर रही है। पर यह आपत्ति हमारे समाजवादी-अंधराष्ट्रवादियों को, जिन्हें ज़ारशाही-पुरिश्केविची समाजवादी कहा जाना चाहिए (जिस प्रकार मार्क्स लासालवादियों[87] को शाही-प्रशियाई समाजवादी कहा करते थे), दोषमुक्त नहीं करती, बल्कि उन्हें और भी अधिक दोषी बनाती है। मान लें कि इस प्रश्न पर इतिहास का निर्णय महान शक्तिवाले रूसी पूंजीवाद के पक्ष और सैकड़ों छोटी-छोटी जातियों के विपक्ष में हो। यह असंभव नहीं है, क्योंकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजी का सारा इतिहास हिंसा, लूट-मार, रक्तपात और भ्रष्टाचार का इतिहास है। और हम हर सूरत में छोटे-छोटे राष्ट्रों को बनाये रखने के पक्ष में बिलकुल नहीं हैं; **अन्य परिस्थितियां अनुकूल हों**, तो हम निश्चय ही केंद्रीयकरण के पक्ष और संघात्मक संबंध के कूपमंडूकोंवाले आदर्श के विपक्ष में हैं। लेकिन ऐसी सूरत में भी पहले, न तो यह हमारा, याने जनवादियों का (समाजवादियों का तो सवाल ही नहीं उठता) काम है कि हम उक्रइना, आदि का गला घोंटने जैसे कार्यों में रोमानोव-बोब्रिन्स्की-पुरिश्केविच की मदद करें। बिस्मार्क ने अपने, जंकरी ढंग से एक प्रगतिशील ऐतिहासिक कार्य संपन्न किया था, पर उस "मार्क्सवादी" के क्या कहने, जो यह सोचे कि इन आधारों पर बिस्मार्क को समाजवादियों की ओर से सहायता देना उचित है! इसके अलावा बिस्मार्क ने उन बिखरे हुए जर्मनों को ऐक्यबद्ध करते हुए आर्थिक विकास में सहायता दी, जिनका उत्पीड़न दूसरे जनगण कर रहे थे। किंतु रूस की आर्थिक समृद्धि और द्रुत विकास दूसरी जातियों पर रूसियों के अत्याचार से देश को मुक्त करने का तक़ाज़ा करते हैं—इस अंतर को हमारे लगभग सोलहों आने रूसी बिस्मार्कों के पुजारी भुला देते हैं।

दूसरे, अगर इतिहास इस प्रश्न को महान शक्तिवाले रूसी पूंजीवाद के पक्ष में तय करता है, तो इसका मतलब यह है कि पूंजीवाद से उत्पन्न होनेवाली कम्युनिस्ट क्रांति की प्रमुख उत्प्रेरक शक्ति के रूप में रूसी सर्वहारा की **समाजवादी** भूमिका का महत्व और भी अधिक होगा। सर्वहारा क्रांति के लिए ज़रूरी है कि जातियों की **पूर्णतम** समानता और भाईचारे की भावना में मज़दूरों को दीर्घकालीन शिक्षा-दीक्षा दी जाये। फलतः रूसी सर्वहारा ही के हित के दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि जनता को ऐसी दीर्घकालीन शिक्षा-दीक्षा मिले कि वह रूसियों द्वारा उत्पीड़ित सभी जातियों की पूर्ण समानता और आत्मनिर्णय के अधिकार का सर्वाधिक दृढ़ता और साहस के साथ, सुसंगत तथा क्रांतिकारी तरीक़े से समर्थन करे। रूसियों के राष्ट्रीय गौरव के (दासत्व के अर्थ में नहीं) हित रूसी (तथा अन्य सभी) सर्वहारा के **समाजवादी** हितों के साथ मिल जाते हैं। मार्क्स हमेशा ही हमारे आदर्श बने रहेंगे, क्योंकि दशाब्दियों तक इंगलैंड में रह चुकने के बाद वह आधा अंग्रेज़ हो चुके थे और उन्होंने अंग्रेज़ मज़दूरों के समाजवादी आंदोलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के हित में आयरलैंड की आज़ादी और राष्ट्रीय स्वाधीनता की मांग की थी।

दूसरी अनुमानित स्थिति में हमारे देश के अधकचरे समाजवादी अंधराष्ट्र-वादी, प्लेख़ानोव, आदि, आदि न केवल अपनी मातृभूमि, आज़ाद और जनवादी रूस के प्रति ही ग़द्दार साबित होंगे, अपितु रूस की सभी जातियों के सर्वहारा भ्रातृत्व, अर्थात समाजवाद के ध्येय के प्रति भी ग़द्दार सिद्ध होंगे।

१२ दिसंबर, १९१४ को प्रकाशित। खंड २६, पृ० १०६–११०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूमा के रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप पर मुक़दमे से क्या सिद्ध हुआ है?

पीटर्सबर्ग के पास हुए एक सम्मेलन में ४ नवंबर, १९१४ को गिरफ़्तार किये गये दूमा[88] के रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के ५ सदस्यों तथा दूसरे ६ सामाजिक-जनवादियों पर ज़ारशाही अदालत में चलाया गया मुक़दमा ख़त्म हो चुका है[89]। उन सभी को साइबेरिया में निर्वासन की सज़ा दी गयी है। क़ानूनी अख़बारों में प्रकाशित मुक़दमे के विवरण में से सेंसर ने वे हिस्से काट दिये हैं, जो ज़ारशाही और देशभक्तों के लिए अप्रीतिकर थे। "अंदरूनी दुश्मनों" से तेज़ी के साथ निबट लिया गया है और फिर सार्वजनिक जीवन की सतह पर कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं पड़ता, सिवाय मुट्ठी भर सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों द्वारा प्रतिध्वनित बुर्जुआ अंधराष्ट्र-वादियों की भीड़ की ख़ौफ़नाक चीख़-पुकार के।

तब रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप पर चलाये गये मुक़दमे ने क्या सिद्ध किया है?

पहले, उसने यह दिखलाया है कि रूस के क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद का यह हरावल दस्ता मुक़दमे के दौरान काफ़ी दृढ़ता प्रदर्शित करने में असमर्थ रहा। अभियुक्तों का उद्देश्य यह था कि सरकारी अभियोक्ता केंद्रीय समिति के रूस स्थित सदस्यों और मज़दूर संगठनों से पार्टी का संपर्क रखने-वाले पार्टी प्रतिनिधियों के नाम न जान पायें। इस उद्देश्य की सिद्धि हुई है। भविष्य में भी इस उद्देश्य की सिद्धि होती रहे, इसके लिए मुक़दमे के दौरान वह तरीक़ा अख़्तियार करना चाहिए, जिसकी पार्टी ने बहुत पहले आधिकारिक ढंग से सिफ़ारिश की थी, याने यह कि बयान देने से इनकार करना। लेकिन सामाजिक-देशभक्तिवादी श्री इस्रोदान्स्की के साथ अपनी एकजुटता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्ध करने की कोशिश करना, जैसा कि साथी रोज़ेनफ़ेल्द ने किया, अथवा केंद्रीय समिति के साथ असहमति सिद्ध करने की कोशिश करना एक ग़लत तरीक़ा है, जो एक क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी की दृष्टि से अक्षम्य है।

'देन'[90] (अंक ४०) की रिपोर्ट के अनुसार—मुक़दमे की कोई आधिकारिक और पूरी रिपोर्ट नहीं है—साथी पेत्रोव्स्की ने कहा: "उसी मुद्दत (नवंबर) में मुझे केंद्रीय समिति का प्रस्ताव मिला... इसके अलावा मुझे युद्ध के प्रति मजदूरों के रुख़ के संबंध में सात विभिन्न स्थानों में मज़दूरों द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव दिये गये, **जो केंद्रीय समिति के रुख़ से मेल खाते थे**"।

यह घोषणा पेत्रोव्स्की के लिए श्रेयस्कर है। अंधराष्ट्रवादी ज्वार चौतरफ़ा उमड़ रहा था। पेत्रोव्स्की की डायरी में यह फ़िक़रा अकारण नहीं लिखा गया है कि आमूलवादी प्रवृत्ति के छेईद्ज़े तक "आज़ादी के लिए" युद्ध की उत्साहपूर्वक बात करते रहते हैं। दूमा के रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्यों ने इस अंधराष्ट्रवाद का उस समय प्रतिरोध किया, जब वे आज़ाद थे, लेकिन मुक़दमे के दौरान अपने और अंधराष्ट्रवाद के बीच भेद करनेवाली लकीर खींचना भी उनका कर्त्तव्य था।

कैडेटी 'रेच'[91] ने ज़ारशाही अदालत को इस "जनश्रुति के निराकरण" के लिए चाटुकारितापूर्वक "धन्यवाद दिया है" कि सामाजिक-जनवादी दूमा सदस्य ज़ार की फ़ौजों की पराजय चाहते थे। इस बात का लाभ उठाकर कि रूस में सामाजिक-जनवादियों के हाथ-पैर बंधे हुए हैं, कैडेट लोग पार्टी और दूमा ग्रुप के बीच की कल्पित "खटपट" को सच मानने का ढोंग करते हैं और यह एलान करते हैं कि अभियुक्तों ने अपने बयान तनिक भी दबाव के बग़ैर दिये। कैसे भोले बच्चे हैं! वे मुक़दमे की शुरूआती मंज़िल में उक्त दूमा सदस्यों के सर पर मंडराते हुए फ़ौजी अदालत और मृत्युदंड के ख़तरे की ग़ैर जानकारी का ढोंग रचते हैं।

साथियों को ग़ैर क़ानूनी संगठन के संबंध में बयान देने से इनकार कर देना चाहिए था और वर्तमान घड़ी के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए उन्हें खुली अदालत में मुक़दमे का फ़ायदा उठाकर खुलेआम सामाजिक-जनवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार पेश करने चाहिए थे, जो केवल ग्राम तौर से ज़ारशाही के ही नहीं, बल्कि हर रंग के सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवाद के भी खिलाफ़ हैं।

सरकारी ग्रौर बुर्जुग्रा ग्रख़वारों को रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप पर क्रोधपूर्वक हमला करने दीजिये; समाजवादी-क्रांतिकारियों, विसर्ज-नवादियों[92] ग्रौर सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादियों को (जो हमारे खिलाफ़ ग्रगर उसूली तौर पर नहीं लड़ सकते, तो उन्हें किसी न किसी तरह तो लड़ना ही होगा!) बदनीयतीभरी ख़ुशी के साथ कमज़ोरी ग्रथवा "केंद्रीय समिति के साथ ग्रसहमति" के झूठे लक्षण "पकड़ने" दीजिये। क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग की पार्टी इतनी काफ़ी मज़बूत है कि वह ख़ुद ग्रपनी खुली ग्रालोचना कर सकती है ग्रौर ग़लती तथा कमज़ोरी को दो टूक ग़लती ग्रौर कमज़ोरी कहकर स्वीकार कर सकती है। रूस के वर्ग-चेतन मज़दूरों ने एक ऐसी पार्टी की सर्जना की है ग्रौर एक ऐसा हरावल दस्ता ग्रागे खड़ा कर दिया है, जिन्होंने विश्वयुद्ध ग्रौर ग्रंतर्राष्ट्रीय ग्रवसरवाद के विश्वव्यापी पतन के दौरान ग्रंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादियों की हैसियत से ग्रपने कर्त्तव्य की पूर्त्ति करने की दूसरे किसी की भी ग्रपेक्षा ग्रधिक योग्यता प्रदर्शित की है। जिस रास्ते से हम चलते रहे हैं, उसकी जांच महानतम संकट में हो चुकी है ग्रौर वह—एक वार फिर—एकमात्र सही रास्ता साबित हो चुका है। हम ग्रौर ग्रधिक दृढ़ता ग्रौर निश्चयात्मकता के साथ उस पर चलेंगे, हम नये हरावल दस्ते मैदान में उतारेंगे, ग्रौर उनसे यह काम पूरा कराके ही नहीं, ग्रपितु उसे ग्रधिक सही ढंग से ग्रंजाम तक पहुंचाकर रहेंगे।

दूसरे, मुक़दमे ने विश्व समाजवाद में एक ग्रभूतपूर्व तस्वीर को, **क्रांति-कारी** सामाजिक-जनवाद द्वारा संसदीय पद्धति के उपयोग की तस्वीर को प्रस्तुत किया है। ऐसे उपयोग की यह मिसाल सर्वहारा जनसाधारण के दिल ग्रौर दिमाग़ पर किसी भी भाषण से ग्रधिक ग्रसर डालेगी, वही ग्रवसर-वादियों-वैधानिकतावादियों तथा ग्रराजकतावाद के लफ़्फ़ाज़ों का किसी भी दलील से वढ़कर खंडन करेगी। मुरानोव की ग़ैर क़ानूनी काम की रिपोर्ट ग्रौर पेत्रोव्स्की की टिप्पणियां दूमा सदस्यों द्वारा किये गये **उस** काम का बहुत दिनों तक नमूना बनी रहेंगी, जिसे हमें सावधानीपूर्वक छिपाना पड़ता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था और जिसका अर्थ रूस के सभी वर्ग-चेतन मज़दूरों के लिए अधिकाधिक चिंतन का विषय बनेगा। ऐसे समय में, जबकि यूरोप में लगभग सभी "समाजवादी" (इस शब्द की बेक़दरी के लिए क्षमा करें) संसत्सदस्य अंधराष्ट्रवादी और अंधराष्ट्रवादियों के चाकर साबित हो चुके हैं, जबकि कुख्यात "यूरोपवादिता", जिसने हमारे उदारतावादियों और विसर्जनवादियों पर जादू फेर रखा था, दासत्वपूर्ण क़ानूनियत की जड़ीभूत आदत साबित हो चुकी है, रूस में मज़दूरों की एक ऐसी पार्टी देखने को मिली, जिसके संसत्सदस्यों को लंबी-चौड़ी बातें बघारने या बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के दीवानख़ानों में "स्वागत पाने" अथवा "यूरोपीय" वकील और सांसद की व्यावहारिक चतुरता में नहीं, बल्कि मेहनतकशों के साथ संबंध-स्थापन में, उनके बीच निष्ठापूर्वक काम करने में, ग़ैर क़ानूनी प्रचारक और संगठनकर्त्ता के विनम्रतापूर्ण, दिखावारहित, श्रमसाध्य, आभारहीन और बेहद ख़तरनाक कर्त्तव्यों का पालन करने में कमाल हासिल है। "समाज" में प्रभावशाली संसत्सदस्य अथवा मंत्री के पद की ओर उन्नति करना—यह रहा "यूरोपीय" (याने जीहुज़ूर) "समाजवादी" संसदीयता का **असली** अर्थ। जनता के बीच में जाना—शोषितों तथा उत्पीड़ितों को प्रबुद्ध और एकताबद्ध बनाने में सहायता देना—यह है मुरानोव और पेत्रोव्स्की की मिसालों द्वारा प्रस्तुत नारा।

यह नारा विश्व-ऐतिहासिक महत्व प्राप्त करेगा। दुनिया के किसी भी देश में कोई भी समझदार मज़दूर बुर्जुआ संसदीयता की वैधानिकता से पुराने ढंग से संतुष्ट होने के लिए उसके बाद राज़ी नहीं होगा, जब सभी उन्नत देशों में वह वैधानिकता क़लम की एक घसीट में ख़त्म कर दी गयी है और अवसरवादियों तथा बुर्जुआ वर्ग के बीच महज़ घनिष्ठतर वास्तविक गंठजोड़ का कारण बनी है। जो कोई भी क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी मज़दूरों और कल—**तथा आज**—के "यूरोपीय" सामाजिक-जनवादी वैधानिकतावादियों के बीच "एकता" के सपने देखता है, उसने सीखा कुछ भी नहीं और भुला सब कुछ दिया है और वह दरअसल बुर्जुआ वर्ग का संगी-साथी तथा सर्वहारा का दुश्मन है। जो कोई भी आज के दिन तक यह समझने में असमर्थ रहा है कि रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप सामाजिक-जनवादी ग्रुप से क्यों अलग हो गया, जो वैधानिकता और अवसरवाद के साथ मेल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैठा रहा था, वह मुरानोव और पेत्रोव्स्की की मुक़दमे की रिपोर्ट में वर्णित सरगरमियों से अब सबक़ सीख सकता है। ऐसा नहीं था कि केवल इन्हीं दो दूमा सदस्यों द्वारा यह काम चलाया जा रहा था और महज़ नितांत भोले लोग ही ऐसे काम तथा 'नाशा ज़ार्या'[93] अथवा 'सेवेरनाया रावोचाया गाज़ेता'[94] के प्रति, 'सोव्रेमेन्निक'[95], संगठन समिति[96] अथवा बुंद[97] के प्रति "मैत्री तथा सहिष्णुता के रुख़" के बीच संगति का सपना देख सकते हैं।

क्या रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्यों को साइबेरिया भेजकर सरकार मज़दूरों को भयभीत करने की आशा करती है? वह ग़लती पर है। मज़दूर भयभीत नहीं होंगे, बल्कि वे अपने कार्यभारों को, मज़दूरों की पार्टी के कार्यभारों को विसर्जनवादियों और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के मुक़ाबले में और बेहतर ढंग से समझ जायेंगे। मज़दूर रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्यों जैसे लोगों को ही जनता के बीच वैसे ही तथा अधिकाधिक व्यापक और साथ ही साथ अधिक **"गोपनीय"** काम के लिए दूमा सदस्य चुनना सीख लेंगे। क्या सरकार रूस में "ग़ैर क़ानूनी संसदीयता" का अंत कर देने का इरादा रखती है? वह **अनन्य रूप से** वैसी ही संसदीयता के साथ सर्वहारा वर्ग की कड़ियां मज़बूत ही करेगी।

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के ख़िलाफ़ अदालती कार्रवाइयों ने पहले-पहल युद्ध के प्रति रूसी समाज के **विभिन्न वर्गों** के रवैये जैसे सर्वाधिक महत्वपूर्ण, बुनियादी और जीवंत प्रश्न के संबंध में सारे रूस में लाखों-लाख प्रतियों में प्रचारित, खुली हुई और वस्तुपरक सामग्री प्रस्तुत की। क्या हम "पितृभूमि की रक्षा" और "उसूली" (याने शाब्दिक या पाखंडपूर्ण) अंतर्राष्ट्रीयतावाद के मेल की उबा देनेवाली बुद्धिजीवी बकवास ज़रूरत से ज़्यादा नहीं सुन चुके हैं? क्या उन **तथ्यों** की जांच करने का समय नहीं आ गया है, जिनका संबंध **वर्गों** से है, याने चंद दर्जन लफ़्फ़ाज़ी झाड़नेवाले सूरमाओं से नहीं, बल्कि लाखों-लाख जीवित इनसानों से है?

युद्ध को छिड़े छः महीने से ज़्यादा हो चुके हैं। सभी प्रवृत्तियों के क़ानूनी और ग़ैर क़ानूनी अख़बार अपनी बात कह चुके हैं, दूमा के सभी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्टी ग्रुप – हमारी वर्गीय ग्रुपवद्धता का ग्रत्यंत नाकाफ़ी, किंतु एकमात्र वस्तुपरक सूचक – ग्रपनी स्थिति की व्याख्या कर चुके हैं। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप पर चलाये गये मुक़दमे ग्रौर उस पर हुई ग्रख़वारी टीका-टिप्पणी ने इस सारी सामग्री को एकत्र कर दिया है। मुक़दमे ने यह सिद्ध कर दिया है कि रूस में सर्वहारा वर्ग के ग्रग्रगामी प्रतिनिधि न केवल ग्राम तौर से ग्रंधराष्ट्रवाद के विरुद्ध हैं, वल्कि वे ख़ास तौर से हमारे मुखपत्र की दृष्टि से सहमत हैं। दूमा सदस्य ४ नवंबर, १६१४ को गिर-फ़्तार किये गये थे। फलतः वे दो महीने से ग्रधिक समय से ग्रपना काम चलाते रहे। कैसे ग्रौर किसके साथ उन्होंने उसे चलाया? मज़दूर वर्ग की किन धाराग्रों को उन्होंने प्रतिबिंबित ग्रौर ग्रभिव्यक्त किया? इसका जवाब इस तथ्य में मिलता है कि "थीसिस" तथा 'सोत्सिग्राल-देमोक्रात'[98] ने सम्मेलन के लिए सामग्री प्रस्तुत की, कि हमारी पार्टी की पीटर्सबर्ग समिति ने बार-बार उसी ग्रंतर्य के पर्चे निकाले। सम्मेलन में ग्रौर कोई सामग्री नहीं थी। दूमा सदस्यों का सम्मेलन में मज़दूर वर्ग की दूसरी धाराग्रों पर रिपोर्ट पेश करने का कोई इरादा नहीं था, क्योंकि कोई दूसरी धाराएं थीं ही नहीं।

शायद रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्य मज़दूरों की महज़ ग्रल्पसंख्या की राय तो ग्रभिव्यक्त कर रहे थे? ऐसा मानने का हमें कोई ग्रधिकार नहीं है, क्योंकि १६१२ के वसंत ग्रौर १६१४ की पतझड़ के बीच के ढाई बरसों के दौरान रूस के वर्ग-चेतन मज़दूरों का ४/५ हिस्सा 'प्राव्दा'[99] के गिर्द जमा हो गया, जिसके साथ ये दूमा सदस्य पूर्ण विचारधारात्मक एकजुटता से काम कर रहे थे। यह एक तथ्य है। ग्रगर केंद्रीय समिति की स्थिति के ख़िलाफ़ मज़दूरों के वीच कमोवेश उल्लेखनीय विरोध होता, तो वह प्रस्ताव के मसविदे या मसविदों में निश्चय ही ग्रभिव्यक्त हुग्रा होता। मुक़दमे में ऐसी कोई भी चीज़ सामने नहीं ग्रायी, हालांकि यह कहा जा सकता है कि उसमें रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप द्वारा किया गया वहुतेरा काम "ग्रनावृत्त" हुग्रा। पेत्रोव्स्की की लिखावट में किये गये संशोधनों से किसी मतभेद का हलका भी संकेत नहीं प्रगट होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथ्यों से प्रगट है कि युद्ध छिड़ने के बाद के पहले ही महीनों में रूस के मज़दूरों का वर्ग-चेतन हरावल केंद्रीय समिति और मुखपत्र के गिर्द कार्यतः जमा हो गया। यह तथ्य चंद "ग्रुपों" के लिए चाहे जितना भी अप्रीतिकर क्यों न हो, उसका खंडन नहीं किया जा सकता। अभियोगपत्र में दिये गये शब्द कि "बंदूक़ों का निशाना हमारे भाइयों को, अन्य देशों के उजरती ग़ुलामों को नहीं, बल्कि सभी देशों की प्रतिक्रियावादी और बुर्जुआ सरकारों और पार्टियों को बनाया जाना चाहिए"—ये शब्द मुक़दमे की बदौलत सारे रूस में फैलेंगे—और वे पहले ही फैल चुके हैं—सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतवाद के लिए, सर्वहारा क्रांति के लिए आह्वान के रूप में। मुक़दमे की बदौलत रूस के मज़दूरों के हरावल का वर्गीय नारा जनसाधारण तक पहुंच गया है।

बुर्जुआ वर्ग में और टुटपुंजिया वर्ग के एक हिस्से में व्याप्त अंधराष्ट्रवाद की छूत, टुटपुंजिया वर्ग के दूसरे हिस्से में व्याप्त ढुलमुलपन और उसी ढंग का मज़दूर वर्ग का आह्वान—ऐसा है हमारे राजनीतिक विभेदों का तथ्यगत, वस्तुपरक चित्र। इसी तथ्यगत चित्र के साथ, न कि बुद्धिजीवियों तथा छोटे-मोटे ग्रुपों की स्थापना करनेवालों की शुभकामनाओं के साथ हमें अपनी "अपेक्षाओं", आशाओं और नारों को आबद्ध करना चाहिए।

'प्राव्दा'-पंथी अख़बारों और "मुरानोवी ढंग" के काम ने रूस के वर्ग-चेतन मज़दूरों के ४/५ भाग में एकता पैदा कर दी है। लगभग चालीस हज़ार मज़दूर 'प्राव्दा' ख़रीदते रहे हैं और कहीं ज़्यादा मज़दूर उसे पढ़ते हैं। इनके पांच गुने, यहां तक कि दस गुने अधिक को भी युद्ध, जेल, साइबेरिया और कठोर श्रम द्वारा नष्ट होने दें। इस हिस्से को नेस्त-नाबूद नहीं किया जा सकता। वह ज़िंदा है। वह क्रांतिकारी भावना तथा अंधराष्ट्र-वाद विरोधी भावना से ओत-प्रोत है। वही अकेले मेहनतकशों के, शोषितों और उत्पीड़ितों के अंतर्राष्ट्रीयतावाद के प्रचारक के रूप में जनसाधारण के बीच खड़ा है और उनके बीच उसकी जड़ें अधिकतम गहराई तक पहुंची हुई हैं। वही अकेले सार्वत्रिक विशृंखलता में अपने को संभाल पाया है। वही अकेले अर्द्धसर्वहारा तत्वों को कैडेटों के, त्रुदोवीकों के, प्लेख़ानोव के और 'नाशा ज़ार्या' के सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद से हटाकर समाजवाद की ओर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले जा रहा है। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप पर मुक़दमे ने सारे रूस के सामने उसके अस्तित्व, उसके विचारों, उसके काम और "दूसरे देशों के उजरती ग़ुलामों के भाईचारे" के लिए उसके आह्वान को उजागर कर दिया है।

यही हिस्सा है, जिसके साथ हमें काम करना चाहिए और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के विरुद्ध उसकी एकता की रक्षा की जानी चाहिए। यही एकमात्र मार्ग है, जिससे होकर रूस का मज़दूर आंदोलन सामाजिक क्रांति की ओर विकसित हो सकता है, न कि "यूरोपीय" ढंग के राष्ट्रीय-उदारतावाद की ओर।

२९ मार्च, १९१५ को प्रकाशित। खंड २६, पृ० १६८–१७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे इंटरनेशनल का पतन[100]

इंटरनेशनल के पतन को कभी-कभी महज़ मसले का औपचारिक पहलू, युद्धरत देशों की समाजवादी पार्टियों के बीच अंतर्राष्ट्रीय संपर्क में व्यवधान, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन या अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो[101] की बैठक बुलाने की असंभवता, आदि माना जाता है। यह छोटे-छोटे तटस्थ देशों के कतिपय समाजवादियों का, शायद उन देशों की अधिकृत पार्टियों की बहुसंख्या तक का और साथ ही अवसरवादियों और उनकी पैरवी करनेवालों का भी दृष्टिकोण है। गहन कृतज्ञता पानेयोग्य स्पष्टता के साथ इस स्थिति की पैरवी श्री व्ला० कोसोव्स्की ने रूसी प्रेस में, बुंद की 'सूचना बुलेटिन'[102] के अंक ८ में की, जिसके संपादकों ने एक भी ऐसा शब्द नहीं कहा, जिससे यह संकेत मिलता कि वे लेखक से असहमत हैं। आशा की जा सकती है कि राष्ट्रवाद की श्री कोसोव्स्की द्वारा की गयी पैरवी से, जिसमें युद्ध ऋणों के पक्ष में मतदान करने के जर्मन सामाजिक-जनवादियों के कार्य का औचित्य तक सिद्ध किया गया, बहुत-से मज़दूरों को अंततः बुंद के बुर्जुआ-राष्ट्रवादी स्वरूप को समझने में मदद मिलेगी।

वर्ग-सचेत मज़दूरों के लिए समाजवाद एक गंभीर आस्था है, टुटपुंजिया-समझौतापरस्त तथा राष्ट्रवादी-विपक्षीय आकांक्षाओं की सुविधाजनक ओट नहीं। इंटरनेशनल के पतन को वे अधिकांश अधिकृत सामाजिक-जनवादी पार्टियों द्वारा अपनी आस्थाओं के प्रति, स्टुटगार्ट तथा बैसेल की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेसों में[103] अपने भाषणों में तथा इन कांग्रेसों के प्रस्तावों, आदि में की गयी सर्वाधिक गंभीर घोषणाओं के प्रति शर्मनाक ग़द्दारी मानते हैं। इस ग़द्दारी को देखने में केवल वे चूक कर सकते हैं, जो यह नहीं देखना चाहते या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो इसे देखना अपने लिए अलाभकर पाते हैं। यदि हम प्रश्न को वैज्ञानिक ढंग से, अर्थात आधुनिक समाज में वर्ग संबंधों के दृष्टिकोण से निरूपित करें, तो हमें कहना पड़ेगा कि अधिकांश सामाजिक-जनवादी पार्टियों ने और उनका नेतृत्व करते हुए, सर्वप्रथम दूसरे इंटरनेशनल की सबसे बड़ी तथा सबसे प्रभावशाली पार्टी – जर्मन पार्टी – ने सर्वहारा वर्ग के विरुद्ध अपने जनरल स्टाफ़ों, अपनी सरकारों तथा अपने बुर्जुआ वर्ग का साथ दिया है। यह एक विश्व-ऐतिहासिक महत्व की घटना है, जो अत्यधिक व्यापक विश्लेषण का तक़ाज़ा करती है। यह बात बहुत पहले स्वीकार की जा चुकी है कि युद्ध सारी विभीषिकाओं तथा तबाही के बावजूद, जो वे अपने साथ लाते हैं, एक न्यूनाधिक महत्वपूर्ण लाभ भी लाते हैं – वे उसे निर्ममता-पूर्वक प्रकाश में लाते, बेनक़ाब करते तथा नष्ट करते हैं, जो मानव-संस्थानों में भ्रष्ट, जीर्ण-शीर्ण तथा मृत है। १९१४–१९१५ का यूरोपीय युद्ध भी सभ्य देशों के अग्रणी वर्ग को यह दिखाकर कि उसकी पार्टियों के अंदर कितना घिनौना, मवादभरा फोड़ा बढ़ रहा है और उस स्रोत से कितनी असह्य सड़ी बदबू आ रही है, निस्संदेह कुछ लाभ पहुंचाना आरंभ कर रहा है।

१

क्या यूरोप की प्रधान समाजवादी पार्टियों ने अपने सारे विश्वासों तथा कार्यभारों के साथ ग़द्दारी की है? इसकी बाबत बात करना स्वभावतः न तो ख़ुद ग़द्दार पसंद करते हैं और न ही वे लोग, जो अच्छी तरह जानते हैं – अथवा अस्पष्ट रूप से गुमान करते हैं – कि उन्हें ग़द्दारों के साथ मैत्री तथा सुलह करनी पड़ेगी। लेकिन यह दूसरे इंटरनेशनल के विभिन्न "अधिकारियों" के लिए अथवा रूसी सामाजिक-जनवादियों के एक धड़े में उनके मित्रों के लिए चाहे कितना भी अप्रिय क्यों न हो, हमें तथ्यों का सामना करना होगा, चीज़ों को सही नाम देना होगा और मज़दूरों को सच्ची बात बतानी होगी।

क्या कोई ऐसे तथ्य हैं, जो प्रगट करते हों कि वर्तमान युद्ध से पहले और उसकी पूर्वकल्पना करते हुए समाजवादी पार्टियां अपने कार्यभार तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी कार्यनीति को किस तरह देखती थीं? निस्संदेह, ऐसे तथ्य हैं। यह है बैसेल की अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में १९१२ में स्वीकृत प्रस्ताव, जिसे हम उसी साल की चेमनिट्ज़ में हुई जर्मन सामाजिक-जनवादी कांग्रेस[104] में स्वीकृत प्रस्ताव के साथ समाजवाद के "विस्मृत शब्दों" का स्मरण करानेवाले के रूप में दुबारा छाप रहे हैं। यह प्रस्ताव, जो सभी देशों के व्यापक युद्ध विरोधी प्रचारात्मक तथा आंदोलनात्मक साहित्य का निचोड़ पेश करता है, युद्ध और युद्ध की बाबत कार्यनीति के संबंध में समाजवादी दृष्टिकोणों की सर्वाधिक पूर्ण और सटीक, अधिक से अधिक गंभीर और औपचारिक व्याख्या है। कल के इंटरनेशनल और आज के सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का कोई भी नेता – न तो हाइन्डमैन और गेद और न ही काउत्स्की और प्लेख़ानोव – अपने पाठकों को उस प्रस्ताव की याद दिलाने का साहस नहीं कर सकता, वे उसके बारे में या तो मौन हैं अथवा (काउत्स्की की तरह) गौण महत्व के अंश उद्धृत करते हैं और उस हर चीज़ को टाल जाते हैं, जो सचमुच महत्वपूर्ण है। यह एक ऐसा तथ्य है, जिसे ग़द्दारी के सिवा और कोई नाम नहीं दिया जा सकता। एक तरफ़ तो अधिक से अधिक "वामपंथी" और घोर क्रांतिकारी प्रस्ताव और दूसरी तरफ़, उन प्रस्तावों का अधिक से अधिक निर्लज्जतापूर्ण विस्मरण अथवा परित्याग – यह इंटरनेशनल के पतन की एक सबसे ज्वलंत अभिव्यक्ति है और साथ ही इस बात का सबसे ज्वलंत प्रमाण है कि वर्तमान समय में केवल वे ही लोग इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि समाजवाद को "सुधारा" जा सकता है और महज़ प्रस्तावों द्वारा उसकी "लाइन को ठीक किया" जा सकता है, जिनकी विरल सादगी पहलेवाले पाखंड को स्थायी बनाने की चालाकीभरी चाह से जुड़ी हुई है।

कहा जा सकता है कि हाइन्डमैन को अभी कल ही तो, जब युद्ध से पहले वह साम्राज्यवाद की वकालत की ओर मुड़े थे, सभी "ईमानदार" समाजवादियों ने असंतुलित ख़ब्ती मान लिया था और उनके बारे में हिक़ारत के लहजे के अतिरिक्त और किसी तरह बात नहीं की थी। और आज सभी देशों के अधिक से अधिक प्रमुख सामाजिक-जनवादी नेता लुढ़ककर पूर्णतः हाइन्डमैन की स्थिति में पहुंच गये हैं। वे एक दूसरे से केवल मत के हल्के-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गहरे रंग और मिज़ाज में ही भिन्न हैं। हम ऐसे लोगों के, जैसे कि, मिसाल के लिए, 'नाशे स्लोवो'[105] के लेखक, जो "मिस्टर" हाइन्डमैन के बारे में हिक़ारत के साथ लिखते हैं, परंतु "कामरेड" काउत्स्की के बारे में सम्मान (अथवा चाटुकारी?) के साथ बात करते अथवा मौन रहते हैं, नागरिक साहस के मूल्यांकन अथवा चरित्र-निरूपण के लिए कोई कमोबेश उपयुक्त संसदीय अभिव्यक्ति ढूंढ़ पाने में बिलकुल असमर्थ हैं। क्या यह रवैया समाजवाद के प्रति अथवा आम तौर पर अपने विश्वासों के प्रति श्रद्धा के साथ मेल खाता है? अगर आप इस बात के क़ायल हैं कि हाइन्डमैन का अंधराष्ट्रवाद मिथ्या और ध्वंसकारी है, तो उससे क्या यह नतीजा नहीं निकलता कि आपको काउत्स्की को अपनी आलोचना और हमलों का निशाना बनाना चाहिए, जो ऐसे विचारों के **अधिक प्रभावशाली** तथा अधिक ख़तरनाक वकील हैं?

'जो शांति हम चाहते हैं' शीर्षक अपने पैंफ़लेट में गेदपंथी शार्ल दुमा ने अभी हाल में ही गेद के विचारों को अभिव्यक्त किया है, जो शायद इससे अधिक ब्योरेवार ढंग से और कहीं अभिव्यक्त नहीं किये गये हैं। "जूल गेद के मंत्रिमंडल का यह प्रधान", जैसे कि उन्होंने पैंफ़लेट के मुखपृष्ठ पर अपने को बताया है, स्वभावतः समाजवादियों के पहले के देशभक्तिपूर्ण ऐलानों को "उद्धृत करते हैं" (जैसे कि जर्मन सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी डेविड भी पितृभूमि की रक्षा की बाबत अपने नवीनतम पैंफ़लेट[106] में ऐसे ही ऐलानों को उद्धृत करते हैं), लेकिन बैसेल के घोषणा-पत्र को वह उद्धृत नहीं करते! इस घोषणापत्र के बारे में प्लेख़ानोव भी मौन रह जाते हैं तथा असाधारण रूप से आत्मसंतोष के अंदाज़ में अंधराष्ट्र-वादी घिसी-पिटी बात पेश करते हैं। काउत्स्की ठीक प्लेख़ानोव की तरह आचरण करते हैं: बैसेल के घोषणापत्र से उद्धरण प्रस्तुत करते हुए वह उसके सभी क्रांतिकारी अंशों को (याने उसके समस्त सारभूत अंतर्य को!) **गोल कर जाते हैं**, शायद सेंसर की पाबंदी का बहाना लेकर... पुलिस और सैनिक अधिकारियों ने, जिनके सेंसर क़ानूनों द्वारा वर्ग संघर्ष अथवा क्रांति का कोई भी ज़िक्र वर्जित है, समाजवाद के साथ ग़द्दारी करनेवालों को ऐन ज़रूरत के वक़्त सहायता पहुंचायी है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन शायद बैसेल का घोषणापत्र महज़ कोरी अपील है, जो किसी भी ऐसे निश्चित ऐतिहासिक अथवा कार्यनीतिक अंतर्य से ख़ाली है, जिसका आज के ठोस युद्ध से कोई सीधा संबंध हो?

बात एकदम उलटी है। अन्य प्रस्तावों की अपेक्षा बैसेल के प्रस्ताव में कोरी बातफ़रोशी कम और निश्चित अंतर्य अधिक है। बैसेल के प्रस्ताव में **ठीक** उसी युद्ध की बात कही गयी है, जो फूट पड़ा है; ठीक उन्हीं **साम्राज्यवादी** टकरावों की बात कही गयी है, जो १९१४–१९१५ में भड़क उठे हैं। बाल्कन क्षेत्र को लेकर आस्ट्रिया और सर्बिया के बीच टकराव, अल्बानिया, आदि को लेकर आस्ट्रिया और इटली के बीच टकराव, आम तौर से बाज़ारों तथा उपनिवेशों को लेकर ब्रिटेन और जर्मनी के बीच टकराव, आर्मीनिया और कुस्तुन्तुनिया को लेकर रूस और तुर्की, आदि के बीच टकराव–इन सब की बाबत वर्तमान युद्ध की पूर्वकल्पना करते हुए बैसेल का प्रस्ताव बात करता है। "यूरोप की महान शक्तियों" के बीच होनेवाले वर्तमान युद्ध के ही बारे में बैसेल का प्रस्ताव कहता है कि **इस युद्ध "की सफ़ाई के लिए जनता के लेशमात्र हित का अल्पतम बहाना पेश करना असंभव है"**!!!

लेकिन अगर प्लेख़ानोव और काउत्स्की–हमारे लिए दो सबसे ठेठ और सबसे नज़दीकी समाजवादियों को ही लें, जिन्हें हम अच्छी तरह जानते हैं और जिनमें से एक रूसी में लिखते हैं और दूसरे का विसर्जनवादी रूसी में अनुवाद करते हैं–अब (अक्सेलरोद की सहायता से) युद्ध के लिए "जनता द्वारा पेश की गयी" (अथवा वस्तुतः बुर्जुआ चीथड़े अख़बारों से ली गयी) "सफ़ाइयों" की तलाश कर रहे हैं, अगर वे पंडिताऊ अंदाज़ से और मार्क्स से झूठे ढंग से लिये गये उद्धरणों का ढेर लगाकर "नज़ीरों" का हवाला देते हैं, १८१३ और १८७० के युद्धों का (प्लेख़ानोव) अथवा १८५४–१८७१, १८७६–१८७७ और १८९७ के युद्धों का (काउत्स्की) हवाला देते हैं, तो सचाई यह है कि केवल वे ही लोग ऐसी दलीलों को "संजीदगी से" ले सकते हैं, उन्हें बेजोड़ मक्कारी, पाखंड और समाजवाद के साथ अनाचार के अतिरिक्त और कोई नाम दे सकते हैं, जिनमें समाजवादी आस्थाओं की धुंधली छाया तक नहीं है, समाजवादी ईमानदारी लेश-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मात्र नहीं है। जर्मन पार्टी के बोर्ड (Vorstand) को मेहरिंग और रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग की नयी पत्रिका (*Die Internationale*[107]) द्वारा काउत्स्की के ईमानदारीपूर्ण मूल्यांकन के लिए उसकी लानत-मलामत करने दीजिये, वानडर-वेल्डे, प्लेखानोव, हाइन्डमैन और मंडली को "त्रिराष्ट्र समहित संधि"[108] की पुलिस के सहारे अपने विरोधियों के साथ वैसा ही व्यवहार करने दीजिये। हम महज़ बैसेल के उस घोषणापत्र को फिर से छापकर उनका जवाब देंगे, जो ज़ाहिर कर देगा कि नेताओं ने जो रास्ता चुना है, उसे सिर्फ़ ग़द्दारी ही कहा जा सकता है।

बैसेल का प्रस्ताव न तो राष्ट्रीय युद्ध अथवा जन-युद्ध की, जिनकी मिसालें यूरोप में पेश आ चुकी हैं और जिस तरह के युद्ध १७८९–१८७१ की मुद्दत के लिए लाक्षणिक तक थे, बात करता है और न क्रांतिकारी युद्ध की, जिसका सामाजिक-जनवादियों ने कभी परित्याग नहीं किया। वह प्रस्ताव बात करता है **वर्तमान** युद्ध की, जो "पूंजीवादी साम्राज्यवाद" और "राजवंशीय हितों" पर आधारित है, जो युद्धरत शक्तियों के **दोनों** ग्रुपों – आस्ट्रियाई-जर्मन और आंग्ल-फ़ांसीसी-रूसी – की "दिग्विजय की नीति" पर आधारित है। प्लेख़ानोव, काउत्स्की और उनकी मंडली सभी देशों के बुर्जुआ वर्ग के, जो अपनी पूरी शक्ति लगाकर इस साम्राज्यवादी, औपनिवेशिक, दस्युतापूर्ण युद्ध को जन-युद्ध अथवा रक्षात्मक युद्ध (किसी भी पक्ष के लिए) के रूप में चित्रित करने की कोशिश कर रहा है, स्वार्थपरक झूठ को दुहराकर और ग़ैर साम्राज्यवादी युद्धों की ऐतिहासिक मिसालों द्वारा इस युद्ध को उचित ठहराने की चेष्टा करके मज़दूरों को सरासर धोखा दे रहे हैं।

वर्तमान युद्ध के साम्राज्यवादी, दस्युतापूर्ण और सर्वहारा विरोधी स्वरूप का प्रश्न शुद्ध सैद्धांतिक मंज़िल को बहुत पहले ही पार कर चुका है। दुनिया के बंटवारे और "छोटे" राष्ट्रों को ग़ुलाम बनाने के लिए सड़े हुए, सठियाये हुए और मरणासन्न बुर्जुआ वर्ग द्वारा किये जानेवाले संघर्ष के रूप में साम्राज्यवाद की सभी मुख्य विशेषताओं का न केवल सैद्धांतिक मूल्यांकन किया जा चुका है; न केवल **सभी** देशों के व्यापक समाजवादी अख़बारों में इन निष्कर्षों को हज़ारों बार दुहराया जा चुका है; न केवल, मिसाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए, हमारे "मित्र" राष्ट्र के प्रतिनिधि, फ़्रांसीसी देलैज़ी ने अपने पैंफ़-लेट 'आनेवाला युद्ध' (१९११!) में वर्तमान युद्ध के दस्युतापूर्ण स्वरूप को फ़्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग के संदर्भ में भी सीधे-सादे ढंग से समझाया है। इतना ही बस नहीं है। बैसेल में सभी देशों की सर्वहारा पार्टियों के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से और औपचारिक ढंग से अपने इस अटल विश्वास को अभिव्यक्त किया कि ठीक साम्राज्यवादी स्वरूप का ही युद्ध पास आ रहा है और उससे **कार्यनीतिक** निष्कर्ष निकाले। अतः अन्य बातों के अलावा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय कार्यनीति के भद (तुलना कीजिये 'नाशे स्लोवो', अंक ८७ और ९० में अक्सेलरोद का सबसे ताज़ा इंटरव्यू) की बाबत नाकाफ़ी बहस, इत्यादि, इत्यादि के सभी ज़िक्रों को हमें कुतर्कों के रूप में एकदम नामंज़ूर कर देना चाहिए। यह कुतर्क है क्योंकि साम्राज्य-वाद का सर्वतोमुखी वैज्ञानिक विश्लेषण एक चीज़ है—वह विश्लेषण अभी शुरू ही हो रहा है और वह सारतः उतना ही असीम है, जितना आम तौर पर स्वयं विज्ञान। लेकिन पूंजीवादी साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ समाजवादी कार्यनीति के उसूल, जिन्हें सामाजिक-जनवादी अख़बारों की लाखों प्रतियों और इंटरनेशनल के फ़ैसले में प्रतिपादित किया जा चुका है, बिलकुल दूसरी चीज़ हैं। समाजवादी पार्टियां वाद-विवाद के क्लब नहीं, बल्कि जुझारू सर्वहारा के संगठन हैं और जब कई बटालियन दुश्मन की ओर जाकर मिल गये हैं, तब उन्हें ग़द्दार नाम देकर कलंकित किया जाना चाहिए, न कि इन पाखंडभरे दावों के "चकमे में आना" चाहिए कि साम्राज्यवाद को "हर कोई एक ही तरीक़े से" नहीं समझता, कि अंधराष्ट्रवादी काउत्स्की और अंधराष्ट्रवादी कूनोव उसकी बाबत ढेरों लिख सकते हैं, कि प्रश्न पर "काफ़ी विचार" नहीं हुआ है, इत्यादि, इत्यादि। पूंजीवाद का अध्ययन उसकी दस्युतापूर्ण प्रकृति की **सभी** अभिव्यक्तियों में और उसके ऐतिहासिक विकास तथा राष्ट्रीय विशेषताओं की सभी सूक्ष्मतम शाखा-प्रशाखाओं में **कभी भी पूर्णतः नहीं** किया जायेगा। विद्वान (और विशेष रूप से पंडित) ब्योरों पर बहस करना कभी बंद नहीं करेंगे। "ऐसी वजहों से" पूंजीवाद के ख़िलाफ़ समाजवादी संघर्ष को छोड़ देना और अपने को उन लोगों के मुक़ाबले में खड़ा करने से बाज़ रहना हास्यास्पद होगा, जिन्होंने उस संघर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के साथ ग़द्दारी की है। लेकिन काउत्स्की, कूनोव, अक्सेलरोद, आदि हमें और क्या करने के लिए दावत दे रहे हैं?

अब, जबकि युद्ध शुरू हो चुका है, किसी ने बैसेल के प्रस्ताव को जांचने और उसे ग़लत साबित करने की कोशिश तक नहीं की है!

२

लेकिन शायद सच्चे समाजवादियों ने बैसेल के प्रस्ताव का समर्थन इस आशा के साथ किया था कि युद्ध क्रांतिकारी परिस्थिति पैदा कर देगा, परंतु घटनाओं ने उन्हें ग़लत साबित कर दिया और क्रांति असंभव साबित हुई?

इसी तरह के कुतर्क द्वारा कूनोव ने ('पार्टी का पतन?' शीर्षक पैंफ़लेट और कुछ लेखों में) बुर्जुआ ख़ेमे में अपने पलायन को उचित ठहराने की कोशिश की है और काउत्स्की के नेतृत्व में लगभग सभी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी लोग संकेत के रूप में ऐसी ही "दलीलें" प्रस्तुत करते हैं। कूनोव वितर्क करते हैं कि क्रांति की आशाएं भ्रांत साबित हुई हैं और भ्रांतियों के लिए लड़ना किसी मार्क्सवादी का काम नहीं है, यह स्त्रूवेवादी[109] बैसेल के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करनेवाले सभी लोगों की "भ्रांतियों" की बाबत एक शब्द भी नहीं कहते, लेकिन अत्यधिक खरे आदमी की तरह वह पान्नेकोएक और रादेक जैसे चरम वामपंथियों को दोष देने की कोशिश करते हैं!

आइये, इस दलील के सार पर विचार करें कि बैसेल के घोषणापत्र के लेखक ईमानदारी से क्रांति के आगमन की आशा करते थे, लेकिन घटनाओं ने उन्हें ग़लत साबित कर दिया। बैसेल के घोषणापत्र में कहा गया है: (१) कि युद्ध एक आर्थिक और राजनीतिक संकट पैदा कर देगा; (२) कि मज़दूर युद्ध में अपनी शिरकत को और "पूंजीपतियों के मुनाफ़ों की ख़ातिर, राजवंशों की महत्वाकांक्षाओं तथा गुप्त राजनयिक संधियों की पूर्ति की ख़ातिर एक दूसरे को गोली मारने को" अपराध समझेंगे, कि युद्ध मज़दूरों में "रोष और विद्रोह" पैदा करेगा; (३) कि "जनता को उत्तेजित करने और पूंजीवाद के पतन को समीपतर लाने" के लिए उक्त संकट तथा मज़दूरों की उक्त मनोदशा से फ़ायदा उठाना समाजवादियों का कर्त्तव्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है; (४) कि निरपवाद रूप से सभी "सरकारें" महज़ "अपने को ख़तरे में डालकर ही" युद्ध शुरू कर सकती हैं; (५) कि सरकारें "सर्वहारा क्रांति से भयभीत हैं"; (६) कि सरकारों को पेरिस कम्यून (अर्थात गृहयुद्ध), १६०५ की रूसी क्रांति, इत्यादि को "याद करना चाहिए"। ये सभी पूर्णतः स्पष्ट विचार हैं; वे इस बात की **जमानत** नहीं करते कि क्रांति होगी ही, बल्कि **तथ्यों** तथा **प्रवृत्तियों** के सटीक चरित्र-निर्धारण पर ज़ोर देते हैं। इन विचारों और दलीलों की बावत जो कोई भी यह कहता है कि क्रांति का प्रत्याशित आगमन भ्रांति सिद्ध हुआ है, वह क्रांति के प्रति मार्क्सवादी नहीं, बल्कि स्त्रूवेवादी रवैया, पुलिस व ग़द्दार का रवैया प्रदर्शित करता है।

मार्क्सवादी के लिए यह निर्विवाद है कि क्रांतिकारी परिस्थिति के बिना क्रांति असंभव है, इसके अलावा, हर क्रांतिकारी परिस्थिति भी क्रांति का कारण नहीं बनती। मोटे तौर से क्रांतिकारी परिस्थिति के लक्षण क्या हैं? अगर हम नीचे के तीन मुख्य लक्षण गिनायें, तो निश्चय ही कोई ग़लती नहीं करेंगे: (१) जब शासक वर्गों के लिए बिना किसी तबदीली के अपना शासन क़ायम रखना असंभव हो जाये; जब एक न एक रूप में "उच्च वर्गों" के भीतर संकट हो, शासक वर्गों की नीति में संकट हो, जिससे एक ऐसी दरार पैदा हो जाये, जिसमें से उत्पीड़ित वर्गों का असंतोष और रोष फूट पड़े। क्रांति के होने के लिए आम तौर से "निचले वर्गों का" पुराने ढंग से रहना "न चाहना" नाकाफ़ी होता है, उसके लिए यह भी ज़रूरी होता है कि "उच्च वर्ग" पुराने ढंग से रहने में "असमर्थ हो जायें"; (२) जब उत्पीड़ित वर्गों का दुःख और ग़रीबी सामान्य से अधिक तीक्ष्ण हो जायें; (३) जब उपरोक्त कारणों के फलस्वरूप उन जनसमुदायों की सरगर्मी में काफ़ी वृद्धि हो जाये, जो "शांतिमय" काल में बिना शिकवा-शिकायत के अपने को लुटने देते हैं लेकिन तूफ़ानी वक़्त में संकट की तमाम परिस्थितियों द्वारा तथा ख़ुद "**उच्च वर्गों**" द्वारा भी स्वाधीन ऐतिहासिक कार्रवाई में खींचे जाते हैं।

इन वस्तुपरक परिवर्तनों के बग़ैर, जो न केवल अलग-अलग दलों और पार्टियों की, बल्कि अलग-अलग वर्गों की भी इच्छा पर निर्भर नहीं होते,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रांति सामान्यतः असंभव होती है। इन सारे वस्तुपरक परिवर्तनों की समग्रता को क्रांतिकारी परिस्थिति कहते हैं। ऐसी परिस्थिति १६०५ में रूस में और सभी क्रांतिकारी दौरों में पश्चिम में मौजूद थी। वह पिछली सदी के सातवें दशक में जर्मनी में भी मौजूद थी और १८५६–१८६१ तथा १८७६–१८८० में रूस में, हालांकि उन सूरतों में कोई क्रांति नहीं हुई। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा इसलिए हुआ कि हर क्रांतिकारी परिस्थिति भी क्रांति को जन्म नहीं देती। क्रांति केवल ऐसी परिस्थिति से पैदा होती है, जिसमें उपरोक्त वस्तुपरक परिवर्तनों के साथ एक आत्मपरक परिवर्तन भी, याने क्रांतिकारी अवामी कार्रवाई करने की क्रांतिकारी वर्ग की क्षमता भी जुड़ी हो, जो उस पुरानी सरकार को, जिसे अगर ढहा न दिया जाये, तो उसका "पतन" कभी भी, संकट के दौर में भी, नहीं होगा, तोड़ देने (अथवा उसकी चूलें ढीली करने) के लिए पर्याप्त रूप से ज़ोरदार हो।

क्रांति के बारे में ये हैं मार्क्सवादी विचार, जिनका अनेकानेक बार विकास किया जा चुका है, जिन्हें सभी मार्क्सवादी अकाट्य स्वीकृत कर चुके हैं और जिनकी हम रूसियों के लिए १६०५ के अनुभव द्वारा ख़ास तौर से पुष्टि हो चुकी है। तब प्रश्न उठता है कि इस संबंध में बैसेल के घोषणापत्र ने १६१२ में किस बात का पूर्वानुमान कर लिया था और १६१४–१६१५ में क्या घटित हुआ?

उसने इस बात का पूर्वानुमान कर लिया था कि एक क्रांतिकारी परिस्थिति पैदा होगी, जिसे उसने "एक आर्थिक और राजनीतिक संकट" के रूप में संक्षेप में वर्णित किया था। क्या ऐसी परिस्थिति पैदा हुई है? निस्संदेह, पैदा हुई है। सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी लेंश ने तो (जो अंधराष्ट्रवाद की वकालत पाखंडी कूनोव, काउत्स्की, प्लेख़ानोव और मंडली की अपेक्षा अधिक स्पष्टवादिता के साथ, एलानिया तौर से और ईमानदारी के साथ करते हैं) इस हद तक कह दिया है कि "हम एक क़िस्म की क्रांति से गुज़र रहे हैं" (उनका पैंफ़लेट 'जर्मन सामाजिक-जनवाद और युद्ध', बर्लिन, १६१५, पृ० ६)। राजनीतिक संकट मौजूद है: एक भी सरकार को कल के बारे में भरोसा नहीं है, एक भी वित्तीय दिवालियेपन, क्षेत्र-अपहरण, देश-निष्कासन (जिस तरह बेल्जियम की सरकार निष्कासित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर दी गयी) के ख़तरे से ही मुक्त नहीं है। सभी सरकारें एक ज्वालामुखी पर बैठी हुई हैं, सभी पहलक़दमी और वीरता प्रदर्शित करने के लिए जनता का स्वतः आह्वान कर रही हैं। यूरोप की संपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था हिल गयी है और इस बात से शायद ही कोई इनकार करेगा कि हम एक ज़बर्दस्त राजनीतिक उथल-पुथल के दौर में प्रवेश कर चुके हैं (और अधिकाधिक गहरे प्रवेश करते जा रहे हैं —मैं इटली द्वारा युद्ध-घोषणा के दिन यह लिख रहा हूं)। जब युद्ध-घोषणा के दो महीने बाद काउत्स्की ने लिखा (*Neue Zeit* में, २ अक्तूबर, १९१४ को) कि "सरकार कभी उतनी मज़बूत नहीं होती, पार्टियां कभी उतनी कमज़ोर नहीं होतीं, जितनी कि युद्ध छिड़ने के समय", तो यह ज्यूदेकुम तथा अन्य अवसरवादियों को ख़ुश करने के लिए इतिहासविज्ञान का काउत्स्की द्वारा मिथ्याकरण का एक नमूना था। सरकारों को शासक वर्गों की सभी पार्टियों के साथ समझौते की और उस शासन के सामने उत्पीड़ित वर्गों के "शांतिमय" आत्मसमर्पण की जितनी ज़रूरत युद्ध-काल में होती है, उतनी और कभी नहीं होती। यह है पहली चीज़ ; और दूसरी चीज़, यदि "युद्ध के प्रारंभ में", ख़ासकर एक ऐसे देश में, जो शीघ्र विजय की आशा करता हो, सरकार सर्वशक्तिशाली प्रतीत होती है, तब भी दुनिया में किसी ने क्रांतिकारी परिस्थिति की प्रत्याशा को कभी भी एकमात्र युद्ध के "प्रारंभ" से नहीं जोड़ा है और "प्रतीयमान" को यथार्थ के समरूप और भी कम माना है।

यह बात आम तौर से जानी, देखी और मानी हुई थी कि यूरोपीय युद्ध अतीत के किसी भी अन्य युद्ध की अपेक्षा अधिक कठोर होगा। युद्ध के अनुभव से यह बात अधिकाधिक सही साबित होती जा रही है। आग फैलती जा रही है। यूरोप की राजनीतिक बुनियादें अधिकाधिक हिलती जा रही हैं। जनता की तकलीफ़ें भयानक हैं और उन तकलीफ़ों के बारे में मौन धारण करने की सरकार, बुर्जुआ वर्ग और अवसरवादियों की कोशिशें अधिकाधिक व्यर्थ साबित होती जा रही हैं। पूंजीपतियों के चंद ग्रुपों के युद्ध से प्राप्त होनेवाले मुनाफ़े शैतान की आंत की तरह बढ़ गये हैं। अंतर्विरोध बेहद तीखे होते जा रहे हैं। जनता का अंदर-अंदर सुलगता रोष, समाज के दलित तथा जाहिल तबक़ों की सौजन्यपूर्ण ("जनवादी") शांति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की अस्पष्ट चाह, "निचले वर्गों" में असंतोष की शुरूआत—ये सारी बातें हक़ीक़त हैं। युद्ध जितना ही अधिक लंबा और तीव्र होता जाता है, उतना ही अधिक ख़ुद सरकारें जनसमुदायों की सरगर्मी को प्रोत्साहन देती हैं और प्रोत्साहन देना पड़ता है: वे सामान्य से ऊपर शक्ति लगाने तथा आत्म-बलिदान करने के लिए उनका आह्वान करती हैं। इतिहास के किसी संकट, किसी बड़ी विपत्ति और मानव-जीवन के किसी आकस्मिक मोड़ के अनुभव की तरह ही युद्ध का अनुभव कुछ लोगों को जड़ीभूत कर देता है, तोड़ देता है, **जबकि कुछ दूसरों को प्रबुद्ध और इस्पाती बना देता है।** कुल मिलाकर देखा जाये, तो दुनिया के इतिहास में उक्त दूसरी क़िस्म के लोगों की संख्या और शक्ति एक या दूसरे राज्य के पराभव और पतन की अलग-अलग मिसालों को छोड़कर पहली क़िस्म के लोगों की अपेक्षा अधिक साबित हुई है।

शांति संपन्न किये जाने से इन सारी तकलीफ़ों और अंतर्विरोधों के अधिकाधिक तीव्र होने का "फ़ौरन" अंत होना तो दूर, आबादी के सबसे अधिक पिछड़े जनसमुदायों को वे तकलीफ़ें कई लिहाज़ से अधिक तीखेपन के साथ और अधिक फ़ौरी तरीक़े से महसूस होंगी।

संक्षेप में, यूरोप के अधिकतर अग्रगामी देशों और महान शक्तियों के यहां क्रांतिकारी परिस्थिति मौजूद है। इस लिहाज़ से बैसेल के घोषणापत्र की भविष्यवाणी की **पूर्णतः** पुष्टि हुई है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इस सचाई से इनकार करने या उसका कोई ज़िक्र न करने का, जैसा कि कूनोव, प्लेख़ानोव, काउत्स्की और उनकी मंडली ने किया है, अर्थ है ज़बर्दस्त झूठ बोलना, मज़दूर वर्ग को धोखा देना और बुर्जुआ वर्ग का हितसाधन करना। 'सोत्सिआल-देमोक्रात' (अंक ३४, ४० और ४१) में हमने ऐसे तथ्यों का हवाला दिया था, जो यह साबित करते हैं कि क्रांति से **डरनेवाले** लोग, कूपमंडूक ईसाई पादरी, सदर मुक़ामों के फ़ौजी अफ़सर और करोड़पतियों के अख़बार—वे इस बात को मानने के लिए विवश हैं कि यूरोप में क्रांतिकारी परिस्थिति के लक्षण मौजूद हैं।

क्या यह परिस्थिति बहुत दिन बनी रहेगी? वह और कितनी अधिक तीखी होगी? क्या वह क्रांति का कारण बनेगी? ये ऐसी बातें हैं, जिन्हें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम नहीं जानते और जिन्हें कोई नहीं जान सकता। इनका उत्तर क्रांतिकारी मनोदशा के विकास का और हरावल वर्ग, सर्वहारा वर्ग द्वारा क्रांतिकारी कार्रवाई में संक्रमण का **अनुभव** ही प्रस्तुत करेगा। इस संबंध में "भ्रांतियों" अथवा उनके खंडन की क़तई कोई बात नहीं हो सकती, क्योंकि कभी भी किसी समाजवादी ने किसी जगह इस बात की ज़मानत नहीं की है कि यही युद्ध (अगला नहीं), कि आज की ही क्रांतिकारी परिस्थिति (कल की नहीं) क्रांति पैदा करेगी। यहां हम जो बात कह रहे हैं, वह है सभी समाजवादियों के सबसे निर्विवाद और सबसे आधारभूत कर्त्तव्य की बात: जनता के सामने क्रांतिकारी परिस्थिति के अस्तित्व को उजागर करने, उसके आयाम और गहराई को समझाने, सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी चेतना और क्रांतिकारी संकल्प को जागृत करने, उसें क्रांतिकारी कार्रवाई की तरफ़ जाने में मदद पहुंचाने और इस प्रयोजन से काम करने के लिए क्रांतिकारी परिस्थिति के अनुकूल संगठन क़ायम करने के कर्त्तव्य की बात।

किसी प्रभावशाली और ज़िम्मेदार समाजवादी ने कभी इस बात में संदेह करने का साहस नहीं किया है कि समाजवादी पार्टियों का यही कर्त्तव्य है और बैसेल का घोषणापत्र रत्ती भर भी "भ्रांतियां" फैलाये अथवा पाले बिना समाजवादियों के इसी कर्त्तव्य की बात कहता है – जनता को जागृत और "आंदोलित करना" (न कि प्लेख़ानोव, अक्सेलरोद और काउत्स्की की तरह उसे अंधराष्ट्रवाद की थपकी देकर सुला देना), पूंजीवाद के पतन को "**नज़दीक लाने**" के लिए संकट से "फ़ायदा उठाना" और कम्यून तथा अक्तूबर – दिसंबर, १९०५ की **मिसालों** से पथप्रदर्शन प्राप्त करना। वर्तमान पार्टियों द्वारा अपने इस कर्त्तव्य का पालन न किये जाने का अर्थ है उनकी ग़द्दारी, उनकी राजनीतिक मौत, अपनी भूमिका का उन द्वारा परित्याग और उन द्वारा बुर्जुआ वर्ग से जा मिलना।

३

तो फिर यह कैसे हो **सका** कि दूसरे इंटरनेशनल के सबसे प्रमुख प्रतिनिधियों तथा नेताओं ने समाजवाद के साथ ग़द्दारी कर दी? हम इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रश्न पर आगे चलकर इस ग़द्दारी का "सैद्धांतिक" औचित्य पेश करने के लिए की जा रही कोशिशों का विवेचन कर चुकने के बाद विचार करेंगे। हम सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के, जिसके प्रतिनिधि प्लेख़ानोव (वह मुख्यतया आंग्ल-फ़ांसीसी अंधराष्ट्रवादियों, हाइन्डमैन तथा उनके नये पक्षधरों के तर्कों को दुहराते हैं) तथा काउत्स्की (वह बेजोड़ सैद्धांतिक गहनता का आभास देनेवाले कहीं अधिक "सूक्ष्म" तर्क प्रस्तुत करते हैं) माने जा सकते हैं, प्रमुख सिद्धांतों का चरित्र-चित्रण करने की चेष्टा करेंगे।

संभवतः इनमें सबसे ज़्यादा आदिम है "यह किसने शुरू किया?" सिद्धांत, जिसे इस रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है—हम पर हमला किया गया, हम अपनी रक्षा कर रहे हैं; सर्वहारा के हित यह तक़ाज़ा करते हैं कि यूरोप में शांति का अतिक्रमण करनेवालों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाये। यह सारी सरकारों की घोषणाओं और विश्व भर के बुर्जुआ और ज़रख़रीद अख़बारों के कोलाहल का केवल नवीन रूप में प्रस्तुतीकरण है। प्लेख़ानोव तो ऐसी घिसी-पिटी तुच्छ बात को भी "द्वंद्ववाद" का कपटपूर्ण ढंग से इस लेखक के लिए अपरिहार्य हवाला देकर अलंकृत करते हैं। वह कहते हैं कि ठोस स्थिति का मूल्यांकन कर सकने के लिए हमें सबसे पहले यह पता लगाना होगा कि इसे किसने शुरू किया था तथा उसे सज़ा देनी होगी; दूसरी स्थिति के पैदा होने तक बाक़ी सब प्रश्न स्थगित किये जा सकते हैं (देखिये प्लेख़ानोव का पैंफ़लेट 'युद्ध के बारे में', पेरिस, १९१४ तथा उसके तर्कों की अक्सेलरोद द्वारा 'गोलोस'[110] के अंक ८६ तथा ८७ में पुनरावृत्ति)। प्लेख़ानोव ने द्वंद्ववाद के स्थान पर कुतर्क के प्रतिस्थापन के उदात्त कार्य में एक नया रेकार्ड क़ायम किया है। कुतर्की कई "तर्कों" में से एक पर झपट पड़ता है; यह हेगेल ही थे, जिन्होंने बहुत पहले ठीक ही कहा था कि दुनिया में किसी भी चीज़ के लिए "तर्क" ढूंढ़े जा सकते हैं। द्वंद्ववाद तक़ाज़ा करता है कि किसी सामाजिक परिघटना की उसके विकास में सर्वतोमुखी जांच की जाये और बाह्य तथा प्रतीयमान को आधारभूत अभिप्रेरक शक्तियों तक, उत्पादक शक्तियों के विकास तक, वर्ग संघर्ष तक पहुंचा दिया जाये। प्लेख़ानोव ने जर्मन सामाजिक-जनवादी अख़बारों से एक उद्धरण चुन लिया है: युद्ध से पहले स्वयं जर्मनों ने स्वीकार किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि आस्ट्रिया तथा जर्मनी ने यह शुरू किया – बस, यही काफ़ी है। वह इस तथ्य की चर्चा तक नहीं करते कि रूसी समाजवादियों ने गैलीशिया, आर्मीनिया, आदि को फ़तह करने की ज़ारशाही योजनाओं का बार-बार पर्दाफ़ाश किया था। वह कम से कम गत तीन दशकों के आर्थिक तथा राजनयिक इतिहास को छूने तक का लेशमात्र प्रयत्न नहीं करते, जबकि यह इतिहास अकाट्य रूप से सिद्ध करता है कि उपनिवेशों को फ़तह करना, विदेशों की लूटपाट करना, अधिक सफल प्रतिद्वंद्वियों को बाहर धकेलना तथा उन्हें बर्बाद करना इस समय युद्धरत शक्तियों के दोनों समूहों की राजनीति का आधारस्तंभ रहे हैं*।

---

*ब्रिटिश शांतिवादी ब्रैल्सफ़ोर्ड की, जिन्हें समाजवादी की मुद्रा ग्रहण करने में कोई आपत्ति नहीं है, पुस्तक 'इस्पात और स्वर्ण का युद्ध' (लंदन, १९१४, पुस्तक पर मार्च, १९१४ लिखा हुआ है!) बहुत शिक्षाप्रद है। लेखक स्पष्ट रूप से अनुभव करते हैं कि राष्ट्रीय समस्याएं अब पृष्ठभूमि में हैं तथा हल हो चुकी हैं (पृ० ३५), कि यह अब मसला नहीं है, कि "आधुनिक कूटनीति का लाक्षणिक प्रश्न" (पृ० ३६) है बग़दाद रेलमार्ग, उसके वास्ते रेलपटरियों के ठेके, मोरक्को की खानें, आदि। लेखक इस तथ्य को कि उपनिवेशीय प्रभाव-क्षेत्रों के विभाजन पर तथा पेरिस के स्टाक एक्सचेंज में जर्मन प्रतिभूतियों के प्रवेश पर समझौते के आधार पर जर्मनी के साथ सुलह करने की काइयो की कोशिशों के विरुद्ध (१९११ और १९१३ में) फ़्रांसीसी देशभक्तों तथा ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने संघर्ष किया, "यूरोपीय कूटनीति के नवीनतम इतिहास में सबसे शिक्षाप्रद घटनाओं" में से एक ठीक ही मानते हैं। अंग्रेज तथा फ़्रांसीसी बुर्जुआ लोगों ने इस तरह का समझौता नहीं होने दिया (पृ० ३८–४०)। साम्राज्यवाद का लक्ष्य है अधिक कमज़ोर देशों को पूंजी का निर्यात करना (पृ० ७४)। ब्रिटेन में इस तरह की पूंजी से हासिल मुनाफ़ों की कुल राशि १८९९ में ९–१० करोड़ पौंड (जिफ़ेन) तथा १९०९ में १४ करोड़ पौंड (पैश) थी; हम इतना और कहेंगे कि लायड जार्ज ने अपने हाल के एक भाषण में इसे २० करोड़ पौंड माना, जो लगभग २ अरब रूबल के बराबर है। कुत्सित तिकड़में, उच्च पदाधिकारी तुर्कों को घूस तथा ब्रिटिश अभिजातों के तरुण बेटों के लिए हिन्दुस्तान तथा मिस्र में आरामदेह नौकरियां, ऐसे हैं मुख्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्धों के प्रसंग में द्वंद्ववाद की मुख्य प्रस्थापना, जिसे प्लेख़ानोव ने बुर्जुआ वर्ग को प्रसन्न करने के लिए निर्लज्जतापूर्वक इतना तोड़ा-मरोड़ा है, यह है कि "**युद्ध दूसरे**" (अर्थात हिंसात्मक) "**साधनों द्वारा राजनीति की महज़ निरंतरता है**"। ऐसा है क्लाज़ेवित्स का, युद्ध के इतिहास के एक सबसे बड़े लेखक का फ़ार्मूला*, जिनके विचारों का स्रोत हेगेल बने। ठीक यही

लक्षण (पृ० ८५–८७)। वह कहते हैं कि एक नगण्य अल्पसंख्या हथियारों तथा युद्धों से लाभान्वित होती है, परंतु इस अल्पसंख्या के पीछे समाज तथा वित्तकार हैं, जबकि शांति के पक्षधरों के पीछे अऐक्यवद्ध आबादी है (पृ० ९३)। जो शांतिवादी आज शांति तथा निरस्त्रीकरण की बात करता है, कल वह ऐसी पार्टी का सदस्य बन जाता है, जो पूरी तरह युद्ध से संबंधित ठेकेदारों पर निर्भर करती है (पृ० १६१)। यदि एंटेंट जीत जाता है, तो वह मोरक्को को हथिया लेगा तथा ईरान को विभाजित कर देगा; यदि त्रिराष्ट्र संघ [111] जीत जाता है, तो वह त्रिपोली को हस्तगत कर लेगा, बोसनिया पर अपना नियंत्रण मज़बूत करेगा तथा तुर्की को अपने मातहत करेगा (पृ० १६७)। मार्च, १९०६ में लंदन व पेरिस ने रूस को अरबों की राशि मुहैया करके ज़ारशाही को आज़ादी की मुहिम कुचलने में मदद दी (पृ० २२५–२२८); आज ब्रिटेन रूस को ईरान का गला घोंटने में मदद दे रहा है (पृ० २२९)। रूस ने बाल्कन युद्ध भड़काया (पृ० २३०)।—इसमें कुछ भी नया नहीं है, क्या है? यह सर्वविदित है तथा दुनिया भर के सामाजिक-जनवादी अख़बारों में इसे हज़ारों बार दुहराया गया है। युद्ध के ठीक पहले एक ब्रिटिश बुर्जुआ इसे यथासंभव स्पष्टता के साथ देखता है। इन सीधे-सादे तथा सर्वविदित तथ्यों की पृष्ठभूमि में जर्मनी के अपराध के बारे में प्लेख़ानोव और पोत्रेसोव द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत या पूंजीवाद के अंतर्गत निरस्त्रीकरण और स्थायी शांति की "संभावनाओं" के बारे में काउत्स्की का सिद्धांत कैसी बेहूदा बकवास, कैसा असहनीय पाखंड, कैसा चिकना-चुपड़ा झूठ सिद्ध होते हैं!

* Karl von Clausewitz: *Vom Kriege*, Werke, I Bd., S. 28 (कार्ल क्लाज़ेवित्स, 'युद्ध के बारे में', ग्रंथावली, खंड १, पृ० २८—सं०) तुलना के लिए देखें खंड ३, पृ० १३९–१४०: "सब जानते हैं कि युद्ध सरकारों के बीच तथा राष्ट्रों के बीच राजनीतिक संबंधों के कारण होते हैं; परंतु साधारणतया स्थिति को इस तरह देखा जाता है, मानो युद्ध

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्टिकोण सदैव मार्क्स तथा एंगेल्स का रहा, जो **किसी भी युद्ध** को एक निश्चित अवधि के अंदर संबद्ध शक्तियों – तथा इन शक्तियों के अंदर **विभिन्न वर्गों** – की राजनीति की **निरंतरता** मानते थे।

प्लेखानोव के भोंडे अंधराष्ट्रवाद का आधार ठीक वही सैद्धांतिक स्थिति है, जो काउत्स्की के अधिक सूक्ष्म, मेल-मिलापकारी, मिठासभरे ऐसे अंधराष्ट्रवाद का है, जब वह सारे देशों के समाजवादियों द्वारा "अपने" पूंजीपतियों की ओर किये गये पलायन को आशीर्वाद देने के लिए निम्नलिखित तर्क देते हैं:

अपनी पितृभूमि की रक्षा करना हरेक का अधिकार तथा कर्त्तव्य है; सच्चा अंतर्राष्ट्रीयतावाद समस्त राष्ट्रों के, जिनमें वे भी शामिल हैं, जो मेरे राष्ट्र के विरुद्ध युद्धरत हैं, समाजवादियों के लिए इस अधिकार को स्वीकृत किये जाने में निहित है... (देखें *Neue Zeit*, २ अक्तूबर, १९१४ तथा इसी लेखक की अन्य कृतियां)।

यह बेजोड़ तार्किकता समाजवाद का ऐसा अत्यधिक तुच्छताभरा मखौल है कि उसका सर्वोत्तम उत्तर होगा एक ऐसा तमग़ा बनवाना, जिसकी एक ओर विल्हेल्म द्वितीय तथा निकोलाई द्वितीय तथा दूसरी ओर प्लेख़ानोव और काउत्स्की की आकृतियां अंकित हों। हमसे कहा जाता है कि सच्चे अंतर्राष्ट्रीयतावाद का अर्थ यह है कि "पितृभूमि की रक्षा" के नाम पर जर्मन मज़दूरों द्वारा फ़्रांसीसी मज़दूरों पर तथा फ़्रांसीसी मज़दूरों द्वारा जर्मन मज़दूरों पर गोलियां बरसाने को न्यायोचित ठहराया जाये!

परंतु काउत्स्की की तार्किकता के सैद्धांतिक पूर्वाधारों की सूक्ष्म जांच करने पर हमें वही दृष्टिकोण मिलेगा, जिसकी क्लाज़ेवित्स ने लगभग ८०

के आरंभ होने के साथ ये संबंध ख़त्म हो जाते हैं, और सर्वथा नयी स्थिति पैदा हो जाती है, जो स्वयं अपने विशिष्ट नियमों का अनुसरण करती है। इसके विपरीत हम दृढ़तापूर्वक कहते हैं: युद्ध दूसरे साधनों के हस्तक्षेप से राजनीतिक संबंधों की निरंतरता के अलावा और कुछ नहीं है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष पूर्व हंसी उड़ायी थी : जब युद्ध छिड़ते हैं, तो राष्ट्रों और वर्गों के बीच ऐतिहासिक रूप से निर्मित राजनीतिक संबंध ख़त्म हो जाते हैं तथा सर्वथा नयी स्थिति पैदा हो जाती है! सामने होते हैं "महज़" वे, जो प्रहार करते हैं और जो अपनी रक्षा करते हैं, "महज़" "पितृभूमि के शत्रुओं" को पीछे धकेलनेवाले! अनेकानेक राष्ट्रों का, जिनमें भूमंडल की आधी से ज़्यादा आबादी है, महान शक्तियों के साम्राज्यवादी राष्ट्रों द्वारा उत्पीड़न, लूट-खसोट में हिस्से के लिए इन देशों के बुर्जुआ वर्गों के बीच प्रतिद्वंद्विता, मज़दूर आंदोलन को विभाजित करने तथा कुचलने की पूंजीपतियों की अभिलाषा, ये सब चीज़ें प्लेख़ानोव तथा काउत्स्की की दृष्टि-परिधि से सहसा लुप्त हो जाती हैं, हालांकि वे स्वयं युद्ध से पहले दशकों तक ठीक इसी "राजनीति" का वर्णन करते रहे हैं।

इस सिलसिले में मार्क्स तथा एंगेल्स का ग़लत उल्लेख सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के इन दो सरग़नों का "तुरुप का पत्ता जैसा" तर्क है: प्लेख़ानोव १८१३ के प्रशा के राष्ट्रीय युद्ध तथा १८७० के जर्मनी के राष्ट्रीय युद्ध को स्मरण करते हैं, जबकि काउत्स्की पांडित्यपूर्ण मुद्रा में यह सिद्ध करते हैं कि मार्क्स ने इस प्रश्न का विवेचन किया था कि किसकी सफलता (याने किस बुर्जुआ वर्ग की सफलता) १८५४–१८५५, १८५९ तथा १८७०–१८७१ के युद्धों में अधिक वांछनीय थी और मार्क्सवादियों ने १८७६–१८७७ तथा १८९७ के युद्धों में यही किया। हर ज़माने में कुतर्कियों की यह चाल रही है: ऐसे उदाहरण लेना, जो सिद्धांततः असमान स्थितियों से संबंधित होते हैं। अतीत के युद्ध, जिनका वे हवाला देते हैं, बुर्जुआ वर्ग के नाना वर्षों तक चलनेवाले राष्ट्रीय आंदोलन, विदेशी, विजातीय जुए के विरुद्ध, निरंकुशतावाद (तुर्क या रूसी) के विरुद्ध आंदोलन की "राजनीति की निरंतरता" थे। उस समय एकमात्र प्रश्न हो सकता था – किस बुर्जुआ वर्ग की सफलता को तरजीह दी जाये; इस तरह के युद्धों के लिए मार्क्सवादी जनगण का पहले से ही आह्वान कर सकते थे, राष्ट्रीय घृणा उग्र बना सकते थे, जैसा कि मार्क्स ने १८४८ में और बाद में रूस के विरुद्ध युद्ध के लिए आह्वान किया था तथा जैसा कि एंगेल्स ने १८५९ में जर्मनों में उनके उत्पी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ड़कों, नेपोलियन तृतीय तथा रूसी ज़ारशाही के विरुद्ध राष्ट्रीय घृणा उग्र बनायी थी*।

सामंतवाद तथा निरंकुशतावाद के विरुद्ध संघर्ष की "राजनीति"– स्वतंत्रता पानेवाले बुर्जुआ वर्ग की राजनीति–"की निरंतरता" की तुलना जर्जर, अर्थात साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग की, अर्थात ऐसे बुर्जुआ वर्ग की, जिसने पूरे संसार को लूटा-खसोटा है, ऐसे प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ वर्ग की, जो सामंती जागीरदारों से संघबद्ध होकर सर्वहारा को कुचलने का प्रयत्न करता है, "राजनीति की निरंतरता" से करने का अर्थ है मूलतः भिन्न वस्तुओं की तुलना करना। यह तो रोबेसपियेर, गरीबाल्दी तथा जेल्याबोव जैसे "बुर्जुआ वर्ग के प्रतिनिधियों" की मिलेरां, सालांद्रा तथा गुचकोव जैसे "बुर्जुआ वर्ग के प्रतिनिधियों" से तुलना करने जैसी चीज़ है। कोई उन महान बुर्जुआ क्रांतिकारियों के प्रति गहनतम आदर भावना अनुभव किये बिना मार्क्सवादी नहीं हो सकता, जिन्हें अपनी-अपनी बुर्जुआ "पितृभूमि" के नाम से बोलने का विश्व-ऐतिहासिक अधिकार था तथा जिन्होंने सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष में नये राष्ट्रों के लाखों-लाख लोगों को सभ्य जीवन जीने के लिए ऊपर उठाया। और कोई प्लेख़ानोव तथा काउत्स्की के, उन लोगों

---

*प्रसंगतः श्री गर्देनिन 'जीज़न' अख़बार[112] में इस बात को कि मार्क्स ने १८४८ में यूरोप के प्रतिक्रांतिकारी सिद्ध होनेवाले जनगण, अर्थात "स्लावों और विशेष रूप से रूसियों" के ख़िलाफ़ क्रांतिकारी युद्ध का समर्थन किया था, "क्रांतिकारी अंधराष्ट्रवाद", पर कुछ भी हो, मार्क्स का अंधराष्ट्रवाद बताते हैं। मार्क्स की यह भर्त्सना फिर से इस "वामपंथी" सामाजिक-क्रांतिकारी का अवसरवाद (या–बल्कि **और** कहना ज़्यादा सही होगा–सरासर ग़ैर संजीदगी) प्रकट करती है। हम मार्क्सवादी **प्रतिक्रांतिकारी** जनगण के ख़िलाफ़ **क्रांतिकारी** युद्ध के सदैव पक्ष में रहे और हैं। उदाहरण के लिए, यदि समाजवाद अमरीका या यूरोप में १९२० में **विजयी हो जाता** है और मान लीजिये कि जापान तथा चीन **तब** अपने बिस्मार्कों को हमारे ख़िलाफ़–भले ही आरंभ में कूटनीतिक ढंग से–बढ़ाते हैं, तो हम उनके विरुद्ध प्रहारात्मक क्रांतिकारी युद्ध **के पक्ष में** होंगे। यह आपको विचित्र लगता है, श्री गर्देनिन? आप तो सचमुच रोपशिन मार्का क्रांतिकारी हैं!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कुतर्क के प्रति घृणा अनुभव किये बिना भी मार्क्सवादी नहीं हो सकता, जो जर्मन साम्राज्यवादियों द्वारा बेल्जियम का गला घोंटे जाने के सिलसिले में या आस्ट्रिया और तुर्की की लूट-खसोट करने के बारे में ब्रिटेन, फ़्रांस, रूस और इटली के साम्राज्यवादियों के सौदे के सिलसिले में "पितृभूमि की रक्षा" की बात करते हैं।

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का एक और "मार्क्सवादी" सिद्धांत यह है— समाजवाद पूंजीवाद के द्रुत विकास पर आधारित है; मेरे देश की विजय वहां पूंजीवाद के विकास और फलस्वरूप समाजवाद के प्रादुर्भाव की गति को तेज़ करेगी; मेरे देश की पराजय उसके आर्थिक विकास में और फलस्वरूप समाजवाद के प्रादुर्भाव की राह में रुकावट डालेगी। रूस में इस स्त्रूवेवादी सिद्धांत का प्लेख़ानोव ने तथा जर्मनों के बीच लेंश, आदि ने विकास किया है। काउत्स्की इस भोंडे सिद्धांत के विरुद्ध, इस सिद्धांत की प्रत्यक्षतः पैरवी करनेवाले लेंश के विरुद्ध तथा इसकी परोक्षतः पैरवी करनेवाले कूनोव के विरुद्ध तर्क करते हैं; परंतु उनका एकमात्र उद्देश्य है अधिक सूक्ष्म तथा अधिक कपटपूर्ण अंधराष्ट्रवादी सिद्धांत के आधार पर तमाम देशों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों में मेल-मिलाप कराना।

हमारे लिए इस भोंडे सिद्धांत की देर तक चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। स्त्रूवे की 'समीक्षात्मक टीकाएं' १८९४ में प्रकाशित हुई थीं और गत २० वर्षों के दौरान रूसी सामाजिक-जनवादी क्रांतिकारी अंतर्वस्तु से पृथक्कृत "मार्क्सवाद" की ओट में अपने विचार पेश करने तथा "अपनी" इच्छाओं की वकालत करने की शिष्ट रूसी बुर्जुआ लोगों की इस "आदत" से पूरी तरह परिचित हो गये हैं। स्त्रूवेवाद मार्क्सवाद की "मृदुता के ज़रिए" हत्या करने, उसे आलिंगनबद्ध कर उसका गला घोंट देने, मार्क्सवाद के "आंदोलनात्मक", "शब्दाडंबरपूर्ण", "ब्लांकीवादी[113] - काल्पनिक" पहलुओं को छोड़कर उसके बाक़ी "सारे" "सही मानों में वैज्ञानिक" पहलुओं तथा तत्वों को कपटपूर्ण ढंग से स्वीकार कर उसकी हत्या करने की मात्र रूसी नहीं, वरन जैसा कि हाल की घटनाएं स्पष्ट रूप से सिद्ध कर चुकी हैं, बुर्जुआ सिद्धांतकारों की अंतर्राष्ट्रीय आकांक्षा है। दूसरे शब्दों में, वे मार्क्सवाद से वह सब ले लेते हैं, जो उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वीकार्य है, जिसमें सुधारों के लिए संघर्ष, वर्ग संघर्ष (सर्वहारा अधिनायकत्व के बिना), "समाजवादी आदर्शों" का "सामान्य" स्वीकरण, पूंजीवाद के स्थान पर "नयी व्यवस्था" का प्रतिस्थापन तक भी शामिल हैं; और वे मार्क्सवाद की "केवल" जीवंत आत्मा, उसकी "केवल" क्रांतिकारी अंतर्वस्तु को एक किनारे धकेल देते हैं।

मार्क्सवाद सर्वहारा के मुक्ति आंदोलन का सिद्धांत है। अतएव यह स्पष्ट है कि वर्ग-सचेत मज़दूरों को मार्क्सवाद के स्थान पर स्त्रूवेवाद के प्रतिस्थापन की प्रक्रिया पर कड़ी नज़र रखनी चाहिए। इस प्रक्रिया की प्रेरक शक्तियां विविधतापूर्ण तथा बहुविध हैं। हम केवल तीन मुख्य शक्तियों की ओर संकेत करेंगे: (१) विज्ञान का विकास अधिकाधिक ऐसी सामग्री मुहैया कर रहा है, जो मार्क्स को सही सिद्ध करती है। यह उनके ख़िलाफ़ पाखंडपूर्ण ढंग से संघर्ष करना आवश्यक बना देता है—मार्क्सवाद के सिद्धांतों का खुले रूप से विरोध न किया जाये, अपितु मार्क्सवाद को स्वीकार करने का स्वांग रचा जाये तथा उसकी अंतर्वस्तु को कुतर्कों से शक्तिहीन बनाते हुए उसे बुर्जुआ वर्ग के लिए हानिरहित, पवित्र "देवप्रतिमा" में परिणत कर दिया जाये। (२) सामाजिक-जनवादी पार्टियों में अवसरवाद का विकास मार्क्सवाद में इस तरह की "काट-छांट" करने का आधार प्रदान करता है, उसे अवसरवाद को सब तरह की रिआयतें देने के औचित्य के अनुकूल ढालता है। (३) साम्राज्यवाद का युग ऐसा युग है, जिसमें संसार दूसरे राष्ट्रों का उत्पीड़न करनेवाले "महान" विशेषाधिकारप्राप्त राष्ट्रों के बीच विभक्त है। इन विशेषाधिकारों तथा इस उत्पीड़न से हासिल लूट के माल से कुछ जूठन निस्संदेह टुटपुंजिया तथा अभिजात वर्ग के कुछ तबक़ों तथा मज़दूर नौकरशाही के हिस्से तक को पहुंच जाती है। ये तबक़े, जो सर्वहारा तथा मेहनतकश जनसाधारण की एक नगण्य अल्पसंख्या होते हैं, "स्त्रूवेवाद" की ओर खिंचते चले जाते हैं, क्योंकि वह **समस्त** राष्ट्रों के उत्पीड़ित जनसाधारण के विरुद्ध "अपने" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के साथ उनकी संघ-बद्धता का औचित्य सिद्ध करने के काम आता है। इसकी हम आगे चलकर इंटरनेशनल के पतन के कारणों के सिलसिले में चर्चा करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का एक सबसे कूट सिद्धांत, वैज्ञानिक तथा अंतर्राष्ट्रीय दिखाई देने के लिए अत्यंत दक्षतापूर्ण सजाया-संवारा गया सिद्धांत है "अति साम्राज्यवाद" का सिद्धांत, जिसे काउत्स्की ने प्रस्तुत किया है। इस सिद्धांत का सबसे स्पष्ट, सबसे यथातथ्य तथा सबसे नया प्रतिपादन स्वयं लेखक के शब्दों में यह रहा:

"ब्रिटेन में संरक्षणवादी आंदोलन की शिथिलता; अमरीका में टैरिफ़ों में कमी; निरस्त्रीकरण की दिशा में रुझान; युद्ध के ठीक पूर्ववर्ती वर्षों में फ़्रांस तथा जर्मनी से पूंजी के निर्यात का तेज़ी से घटना; अंततः वित्त पूंजी के विविध गुटों का बढ़ता हुआ अंतर्राष्ट्रीय अंतर्गुंथन—इन सबने मुझे इस पर ग़ौर करने के लिए विवश किया है कि क्या वर्तमान साम्राज्यवादी नीति एक ऐसी नयी, अति साम्राज्यवादी नीति द्वारा नहीं हटायी जा सकती, जो राष्ट्रीय वित्त पूंजी की पारस्परिक प्रतियोगिताओं के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय रूप से ऐक्यबद्ध वित्त पूंजी द्वारा विश्व के संयुक्त दोहन को प्रस्थापित करे? पूंजीवाद का ऐसा नया दौर, कुछ भी हो, कल्पनीय है। क्या उसे हासिल किया जा सकता है? हमारे पास इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए पर्याप्त पूर्वाधारों का अभी अभाव है..." *Neue Zeit*, अंक ५, ३० अप्रैल, १९१५, पृ० १४४)।

"...वर्तमान युद्ध का घटनाक्रम तथा परिणाम इस सिलसिले में निर्णायक सिद्ध हो सकते हैं। युद्ध वित्त पूंजीपतियों के बीच भी उच्चतम मात्रा में राष्ट्रीय घृणा तीक्ष्ण बनाकर, हथियारों की होड़ को प्रचंड बनाकर और दूसरा विश्व युद्ध अवश्यंभावी बनाकर अति साम्राज्यवाद के कमज़ोर अंकुरों को पूरी तरह कुचल सकता है। ऐसी परिस्थितियों में जो पूर्वानुमान मैंने पहले ही अपने पैंफ़लेट 'सत्ता के मार्ग पर' में निरूपित किया था, वह भयावह पैमाने पर सत्य सिद्ध होगा—वर्ग वैमनस्य तीक्ष्णतर होते जायेंगे और उसके साथ पूंजीवाद का नैतिक लोप (शाब्दिक अर्थ में: "कारोबार ख़त्म होना, Abwirtschaftung", पतन) हो जायेगा... (ध्यान रहे, इस आडंबरपूर्ण शब्द से काउत्स्की का तात्पर्य केवल उस "घृणा" से है, जो "सर्वहारा तथा वित्त पूंजी के बीच के तबक़े", अर्थात "बुद्धिजीवी समुदाय, टुटपुंजिया समुदाय यही नहीं, छोटे पूंजीपति भी" पूंजीवाद के प्रति अनुभव करते हैं)... "परंतु युद्ध का अंत और तरह भी हो सकता है। उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फलस्वरूप अति साम्राज्यवाद के कमज़ोर अंकुर मज़बूत हो सकते हैं। उसके सबक़ों से" (इस पर ज़रा ग़ौर करें!) "उन घटनाओं की रफ़्तार तेज़ हो सकती है, जिनके लिए हमें शांतिपूर्ण अवस्थाओं में दीर्घ काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ती। यदि इसके फलस्वरूप ऐसा होता है, राष्ट्रों के बीच समझौता, निरस्त्रीकरण होता है, स्थायी शांति स्थापित होती है, तो युद्ध से पहले पूंजीवाद के बढ़ते नैतिक लोप के सबसे बुरे कारण मिट सकते हैं।" नया दौर, निस्संदेह, सर्वहारा के लिए साथ में "नये दुर्भाग्य", "शायद और भी बुरे", लायेगा, परंतु "कुछ समय के लिए" "अति साम्राज्यवाद" "पूंजीवाद के ढांचे के अंदर नयी आशाओं तथा प्रत्याशाओं के युग को जन्म दे सकता है" (पृ० १४५)।

किस ढंग से इस "सिद्धांत" से सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का औचित्य हासिल किया जाता है?

एक तरह विचित्र—"सिद्धांतकार" के लिए—अर्थात निम्नलिखित ढंग से:

जर्मनी में वामपंथी सामाजिक-जनवादी कहते हैं कि साम्राज्यवाद तथा युद्ध जिन्हें साम्राज्यवाद जन्म देता है, सांयोगिक नहीं होते, अपितु पूंजीवाद की अवश्यंभावी उपज हैं, जिसने वित्त पूंजी के प्रभुत्व को जन्म दिया है। अतः क्रांतिकारी जन-संघर्ष में पदार्पण करना आवश्यक है, क्योंकि अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण विकास की अवधि समाप्त हो चुकी है। "दक्षिणपंथी" सामाजिक-जनवादी खुलेआम घोषित करते हैं: चूंकि साम्राज्यवाद "आवश्यक" है, इसलिए हमें भी साम्राज्यवादी होना चाहिए। "मध्यमार्गी" की भूमिका में काउत्स्की इन दो दृष्टिकोणों में तालमेल बिठाते हैं:

"उग्र वामपंथी", वह अपने पैंफ़लेट 'राष्ट्रीय राज्य, साम्राज्यवादी राज्य और राज्यों का संघ' (न्यूरेनबर्ग, १९१५) में लिखते हैं, चाहते हैं कि समाजवाद को, अर्थात "केवल समाजवाद के लिए प्रचार को ही नहीं, जिसे हम पूंजीवादी प्रभुत्व के तमाम रूपों के विरुद्ध आधी शताब्दी से खड़ा करते आ रहे हैं, बल्कि समाजवाद की तत्काल उपलब्धि" को भी अवश्यंभावी साम्राज्यवाद "के ख़िलाफ़ खड़ा किया जाये"। "यह बहुत आमूलवादी प्रतीत होता है, परंतु यह केवल हर किसी को, जो समाजवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की तत्काल व्यावहारिक उपलब्धि में **विश्वास नहीं करता**, साम्राज्यवाद के ख़ेमे में ही **धकेलने** का काम करेगा" (पृ० १७, मोटे अक्षर हमारे हैं)।

काउत्स्की जब समाजवाद की तत्काल उपलब्धि की बात करते हैं, तो वह एक चाल का सहारा लेते हैं, क्योंकि वह इस तथ्य से लाभ उठाते हैं कि जर्मनी में, ख़ास तौर पर फ़ौजी सेंसरशिप के होते, क्रांतिकारी कार्रवाई की बात नहीं की जा सकती। काउत्स्की अच्छी तरह जानते हैं कि वामपंथ पार्टी से "समाजवाद की तत्काल व्यावहारिक उपलब्धि की नहीं", वरन क्रांतिकारी कार्रवाई के **तत्काल** प्रचार और उसकी तैयारी की मांग कर रहा है।

साम्राज्यवाद की आवश्यकता से वामपंथ क्रांतिकारी कार्रवाई की आवश्यकता का निष्कर्ष निकालता है। "अति साम्राज्यवाद का सिद्धांत" काउत्स्की के लिए **अवसरवादियों को न्यायसंगत ठहराने**, स्थिति को ऐसी रोशनी में पेश करने का काम देता है, जिससे यह आभास हो कि अवसरवादी बुर्जुआ वर्ग की तरफ़ नहीं चले गये हैं, अपितु वे केवल इस बात में "विश्वास नहीं करते" कि समाजवाद तत्काल आ सकता है, वे आशा करते हैं कि निरस्त्रीकरण तथा स्थायी शांति के नये "युग" का "समारंभ किया जा सकता है"। इस "सिद्धांत" का निचोड़ यह है और **केवल** यही है कि पूंजीवाद के एक **नये** शांतिपूर्ण युग की **आशा** की मदद से काउत्स्की अवसरवादियों और आधिकारिक सामाजिक-जनवादी पार्टियों की बुर्जुआ वर्ग से संलग्नता को तथा बैसेल के प्रस्ताव की गंभीर घोषणाओं के बावजूद **मौजूदा तूफ़ानी युग में** क्रांतिकारी (अर्थात सर्वहारा) कार्यनीति की उन द्वारा अस्वीकृति को न्यायसंगत ठहराते हैं!

साथ ही काउत्स्की यह नहीं कहते कि नया दौर कतिपय निश्चित परिस्थितियों तथा अवस्थाओं से उद्भूत होता है और अवश्य होना चाहिए। इसके विपरीत वह बिलकुल साफ़-साफ़ कहते हैं कि वह यह प्रश्न भी तय नहीं कर सकते कि यह नया दौर "**हासिल होनेवाला**" है या नहीं। सचमुच, नये युग की ओर उन "रुझानों" पर नज़र डालें, जिनकी ओर काउत्स्की ने संकेत किया है। हैरानी की बात है कि लेखक ने आर्थिक तथ्यों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"निरस्त्रीकरण की ओर रुझान" को शामिल किया है! इसका मतलब है भोली-भाली कूपमंडूकताभरी बातों और दिवा-स्वप्नों की ओट में उन अकाट्य तथ्यों से मुंह चुराना, जिनका विरोधों के हल्के होने के सिद्धांत से ज़रा भी मेल नहीं बैठता। काउत्स्की के "अति साम्राज्यवाद" – प्रसंगत: यह परिभाषा उसे क़तई व्यक्त नहीं करती, जो लेखक कहना चाहता है – का अर्थ है पूंजीवाद के विरोधों का अत्यधिक **शिथिल होना**। हमसे कहा जाता है कि "संरक्षणवाद ब्रिटेन तथा अमरीका में शिथिल होता जा रहा है"। परंतु नये युग की ओर वह अल्पतम रुझान कहां है? चरम संरक्षण-वाद इस समय अमरीका में शिथिल हो चका है, परंतु संरक्षणवाद बरक़रार है, जिस तरह विशेषाधिकार, तरजीही टैरिफ़ ब्रिटेन के हित में ब्रिटेन के उपनिवेशों में बरक़रार हैं। आइये, ज़रा स्मरण करें कि पूंजीवाद के पूर्ववर्ती तथा "शांतिपूर्ण" अवधि से आधुनिक साम्राज्यवादी अवधि में पदार्पण का आधार क्या रहा है: वह यह है कि मुक्त प्रतियोगिता ने पूंजीपतियों के इजारेदार संघों के लिए जगह ख़ाली कर दी है, सारी दुनिया का विभाजन किया गया है। ये दोनों तथ्य (तथा कारक) स्पष्टत: विश्वव्यापी महत्व के हैं: मुक्त व्यापार तथा शांतिपूर्ण प्रतियोगिता तब तक संभव तथा आवश्यक थी, जब तक पूंजी निर्बाध रूप से उपनिवेशों का विस्तार करने और अफ़्रीका, आदि में अनधिकृत भूमि हथियाने की स्थिति में थी; जब तक पूंजी का संकेंद्रण अभी निर्बल बना हुआ था तथा इजारेदार उद्यम, अर्थात इतने बड़े आकार के उद्यम अस्तित्व में नहीं आये थे कि वे उद्योग की एक **पूरी** शाखा पर प्रभुत्व स्थापित कर सकते। ऐसे इजारेदार उद्यमों के उद्भव तथा वृद्धि ने (क्या यह प्रक्रिया ब्रिटेन या अमरीका में रुक गयी है? काउत्स्की तक इस बात से इनकार करने का साहस नहीं कर सकते कि युद्ध ने इस प्रक्रिया को तेज़ तथा गहन बनाया है) गुज़रे ज़माने की मुक्त प्रतियोगिता को **असंभव** बना दिया है, उसका आधार खिसका दिया है, जबकि विश्व का विभाजन पूंजीपतियों को शांतिपूर्ण विस्तार से उपनिवेशों तथा प्रभाव-क्षेत्रों के **पुनर्विभाजन** के लिए सशस्त्र संघर्ष की ओर बढ़ने के लिए **विवश करता है**। यह सोचना उपहासास्पद है कि दो देशों में संरक्षण-वाद के **शिथिल होने** से इस मामले में कोई परिवर्तन होगा।

7*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगे चलें। पिछले चंद वर्षों के दौरान दो देशों से पूंजी के निर्यात में गिरावट आ गयी। १९१२ में इन दो देशों, फ़्रांस तथा जर्मनी में से प्रत्येक में वैदेशिक निवेश की राशि, उदाहरण के लिए, हार्म्स के आंकड़ों के अनुसार ३५ अरब मार्क (लगभग १७ अरब रूबल) की थी, जबकि अकेले ब्रिटेन की राशि उनसे दुगुनी थी*। पूंजी के निर्यात में वृद्धि पूंजीवाद के अंतर्गत कभी समतल नहीं रही और न ऐसी हो सकती थी। काउत्स्की यह कहने की हिम्मत भी नहीं कर सकते कि पूंजी का संचय घटा है या घरेलू मंडी की क्षमता में, उदाहरण के लिए, जनसाधारण की हालत में किसी बड़े सुधार के ज़रिए कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। इन परिस्थितियों में कई वर्षों के दौरान पूंजी के निर्यात में गिरावट का अर्थ नये युग का सूत्रपात कभी नहीं लगाया जा सकता।

गत चंद वर्षों के दौरान नहीं, दो देशों के अंदर ही नहीं, वरन पूरे संसार में, पूरे पूंजीवाद के अंदर "वित्त पूंजी के गुटों का बढ़ता हुआ अंतर्राष्ट्रीय अंतर्गुंथन" एकमात्र वास्तविक आम और असंदिग्ध प्रवृत्ति है। परंतु यह प्रवृत्ति अब तक की तरह शस्त्रीकरण के बजाय निरस्त्रीकरण की ओर रुझान क्यों पैदा करे? किसी एक विश्व-विख्यात तोप (और हथियार) उत्पादक फ़र्म को, उदाहरण के लिए, आर्मस्ट्रांग की फ़र्म को ले लें। हाल ही में ब्रिटिश पत्रिका *The Economist*[114] (१ मई, १९१५) ने लिखा कि इस फ़र्म के मुनाफ़े, जो १९०५–१९०६ में ६,०६,००० पौंड (लगभग ६० लाख रूबल) थे, १९१३ में बढ़कर ८,५६,००० पौंड और १९१४ में

---

*देखें, Bernhard Harms, *Probleme der Weltwirtschaft*, Jena, 1912 (बेर्नहार्ड हार्म्स 'विश्व अर्थव्यवस्था की समस्याएं', येना, १९१२ – सं०); George Paish, *Great Britain's Capital Investments in the Colonies etc.* in *The Journal of the Royal Statistical Society*, vol. LXXIV, 1910/11, p. 167 (जार्ज पैश 'उपनिवेशों, आदि में ग्रेट ब्रिटेन के पूंजी निवेश', 'शाही सांख्यिकी सोसायटी की पत्रिका', खंड ७४, १९१०/११, पृ० १६७ – सं०); लायड जार्ज ने १९१५ के शुरू में अपने भाषण में विदेशों में निवेशित आंग्ल पूंजी ४ अरब पौंड, याने लगभग ८० अरब मार्क बतायी थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़कर ६,४०,००० पौंड (६० लाख रूबल) तक पहुंच गये। वित्त पूंजी का अंतर्गुंथन यहां सबसे अधिक उभरा हुआ है और वह बढ़ता जा रहा है; जर्मन पूंजीपतियों के ब्रिटिश फ़र्म में "हिस्से" हैं; ब्रिटिश फ़र्में आस्ट्रिया के लिए पनडुब्बियां बनाती हैं, आदि। विश्वव्यापी पैमाने पर अंतःसंबंधित पूंजी हथियारों और युद्धों के ज़रिए फल-फूल रही है। विभिन्न राष्ट्रों की पूंजी का अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एकीकरण और अंतर्गुंथन होने से निरस्त्रीकरण की ओर आर्थिक रुझान पैदा होगा, यह सोचने का अर्थ है: वर्ग विरोधों के शिथिल होने की सदाशयतापूर्ण कूपमंडूक प्रत्याशाओं की उन विरोधों के वास्तविक गहनीकरण के स्थान पर प्रतिस्थापना करना।

५

काउत्स्की युद्ध के "सबक़ों" की सर्वथा कूपमंडूकतापूर्ण भावना में बात करते हैं, इन सबक़ों को युद्ध द्वारा पैदा किये जानेवाले कष्टों के प्रति नैतिक विभीषिका के रूप में पेश करते हैं। उदाहरण के लिए, अपने पैंफ़लेट 'राष्ट्रीय राज्य...' में वह इस तरह तर्क करते हैं:

"इसमें लेशमात्र संदेह नहीं है तथा इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है कि आबादी के ऐसे तबक़े हैं, जिनकी सार्विक शांति तथा निरस्त्रीकरण में गहरी दिलचस्पी है। टुटपुंजिया वर्ग तथा छोटे किसान, यहां तक कि बहुत-से पूंजीपति और बुद्धिजीवी साम्राज्यवाद से ऐसे हितों से नहीं जुड़े हुए हैं, जो युद्ध और शस्त्रीकरण के फलस्वरूप इन तबक़ों द्वारा उठायी गयी हानि से ज़्यादा वज़नदार हों" (पृ० २१)।

यह फ़रवरी, १९१५ में लिखा गया था! तथ्य बताते हैं कि सभी संपत्तिधारी वर्ग, टुटपुंजिया वर्ग तथा "बुद्धिजीवी समुदाय" तक सामूहिक रूप से साम्राज्यवादियों से जा मिले हैं। परंतु काउत्स्की मफ़लरधारी आदमी*

*रूसी लेखक अ० पा० चेख़ोव की इसी नाम की कहानी का नायक। उसके माध्यम से चेख़ोव ने संकीर्णमना, कूपमंडूक आदमी का चित्रण किया। –सं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की तरह असाधारण आत्मसंतोष के साथ और मिठासभरे वाक्यों की मदद से तथ्यों की ओर से मुंह फेर लेते हैं। वह टुटपुंजिया वर्ग के हितों को उसके **आचरण** द्वारा नहीं, वरन कतिपय टुटपुंजिया लोगों की **कथनी से** परखते हैं, हालांकि पग-पग पर इस तरह की कथनी का करनी द्वारा खंडन होता है। यह तो बिलकुल ऐसा ही है कि बुर्जुआ वर्ग के "हितों" को सामान्यतया हम उनकी करनी से नहीं, वरन उन बुर्जुआ पादरियों के स्नेहपूर्ण प्रवचनों से परखें, जो शपथपूर्वक कहते हैं कि समकालीन प्रणाली ईसाइयत से ओत-प्रोत है। काउत्स्की मार्क्सवाद को इस तरह इस्तेमाल करते हैं कि वह अपनी सारी अंतर्वस्तु से वंचित हो जाता है और जो बचा रहता है, वह एक तरह के अलौकिक तथा पारलौकिक अर्थ में "हित" शब्द मात्र रह जाता है, इसलिए कि इसका अर्थ वास्तविक अर्थव्यवस्था नहीं, वरन लोक कल्याण की मासूमियतभरी कामना है।

मार्क्सवाद "हितों" का मूल्यांकन वर्ग विरोधों तथा वर्ग संघर्ष के अनुसार करता है, जो नित्यप्रति के जीवन के लाखों-लाख तथ्यों में अभिव्यक्त होते हैं। टुटपुंजिया वर्ग विरोधों के घटने की रट लगाता और उसका स्वप्न देखता है, उसका "तर्क" यह है कि इन विरोधों की उग्रता के "हानिप्रद परिणाम" निकलते हैं। साम्राज्यवाद का अर्थ है संपत्तिधारी वर्गों के तमाम तबक़ों का वित्त पूंजी के अधीन होना तथा विश्व का पांच या छः "महान" शक्तियों के बीच बंटवारा, जिनमें से अधिकांश इस समय युद्ध में शामिल हैं। दुनिया के महान शक्तियों के बीच बंटवारे का अर्थ यह है कि उनके सारे संपत्तिधारी वर्गों की **दिलचस्पी** उपनिवेशों का स्वामी बनने और प्रभाव-क्षेत्र रखने में, दूसरे राष्ट्रों का उत्पीड़न करने और ऐसे न्यूनाधिक लाभजनक पद तथा विशेषाधिकार प्राप्त करने में होती है, जो "महान" शक्ति तथा उत्पीड़क राष्ट्र के होने से जुड़े होते हैं*।

---

*एर्नेस्ट शुल्ज़े बताते हैं कि १६१५ तक पूरी दुनिया में सिक्यूरिटियों का मूल्य ७ खरब ३२ अरब फ़्रांक आंका गया था, जिसमें राजकीय तथा म्युनिसिपल ऋण, बंधक, वाणिज्यिक-औद्योगिक निगमों के शेयर, आदि शामिल थे। इस राशि में से ब्रिटेन का हिस्सा १ खरब ३० अरब फ़्रांक,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुगमतापूर्वक विकसित हो रहे तथा धीरे-धीरे नये देशों में फैलते जा रहे पूंजीवाद की अपेक्षाकृत निश्चल, सुसंस्कृत तथा शांतिपूर्ण अवस्थाओं में जीवन पुराने ढंग से अग्रसर **नहीं हो सकता**, इसलिए कि एक नये युग का आगमन हो गया है। वित्त पूंजी ऐसे देश को महान शक्तियों की क़तारों से **बाहर धकेल रही** है और पूरी तरह बाहर धकेल देगी, उसे अपने उपनिवेशों तथा प्रभाव-क्षेत्रों से वंचित करेगी (जैसा कि जर्मनी, जिसने ब्रिटेन के साथ युद्ध छेड़ दिया है, धमकी दे रहा है) और वह टुटपुंजिया वर्ग को "महान शक्तिवाले" विशेषाधिकारों तथा अतिरिक्त आय से वंचित कर देगी। यह युद्ध साबित कर चुका है। यह विरोधों की उस उग्रता का **परिणाम** है, जिसे सब लोगों ने बहुत पहले ही तथा स्वयं काउत्स्की ने अपने पैंफ़लेट 'सत्ता के मार्ग पर' में स्वीकार कर लिया था।

अब चूंकि महान शक्तियों के विशेषाधिकारों के लिए सशस्त्र संघर्ष एक तथ्य बन चुका है, काउत्स्की पूंजीपतियों तथा टुटपुंजिया लोगों को **समझाने-मनाने** लग जाते हैं कि युद्ध भयंकर तथा निरस्त्रीकरण अच्छा होता है, ठीक वैसे ही और वैसे ही परिणामों के साथ, जैसे एक ईसाई पादरी मंच से पूंजीपतियों को समझाता-मनाता है कि इन्सान के प्रति स्नेह-भावना दैवी धर्मादेश है, आत्मिक इच्छा है, सभ्यता का नैतिक नियम है। काउत्स्की

अमरीका का हिस्सा १ खरब १५ अरब फ़्रांक, फ़्रांस का हिस्सा १ खरब फ़्रांक तथा जर्मनी का हिस्सा ७५ अरब फ़्रांक था, अर्थात चारों महान शक्तियों का हिस्सा ४ खरब २० अरब फ़्रांक, कुल राशि का आधे से ज़्यादा था। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अग्रणी महान शक्तियों को, जो दूसरे राष्ट्रों से आगे निकल गयी हैं तथा उन्हें उत्पीड़ित कर और लूट-खसोट रही हैं, मिलनेवाले लाभ तथा विशेष सुविधाएं कितनी बड़ी हैं (Dr. Ernst Schultze, *Das französische Kapital in Russland* in *Finanz-Archiv*, Berlin, 1915, Jahrg. 32, S. 127) (डा० एर्नेस्ट शुल्ज़े, 'रूस में फ़्रांसीसी पूंजी', 'वित्त-अभिलेख' में, बर्लिन, १९१५, प्रकाशन का ३२वां वर्ष, पृ० १२७–सं०)। महान शक्तियों के लिए "पितृभूमि की रक्षा" का अर्थ है दूसरे देशों को लूटने में हिस्सा पाने के अधिकार की रक्षा। जैसा कि सर्वविदित है, रूस में पूंजीवादी साम्राज्यवाद फ़ौजी-सामंती साम्राज्यवाद से कमज़ोर है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसे "अति साम्राज्यवाद" की ओर आर्थिक रुझान कहते हैं, वह वास्तव में वित्तपतियों को टुटपुंजिया ढंग से महज़ यह **समझाना-मनाना** है कि उन्हें बुराई से बचना चाहिए।

पूंजी का निर्यात? **परंतु** उपनिवेशों की तुलना में तो संयुक्त राज्य अमरीका जैसे स्वतंत्र देशों को अधिक पूंजी का निर्यात किया जाता है। उपनिवेशों को हथियाना? **परंतु** वे तो सब हथियाये जा चुके हैं और उनमें से लगभग सभी मुक्ति पाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। "हो सकता है कि हिंदुस्तान अंग्रेज़ों के आधिपत्य में न रहे, परंतु एक अविभाज्य साम्राज्य के रूप में उस पर कभी किसी दूसरी विदेशी शक्ति का प्रभुत्व नहीं होगा" (उद्धृत पैंफ़लेट का पृष्ठ ४६)। "किसी भी औद्योगिक पूंजीवादी राज्य द्वारा अपने लिए इतना औपनिवेशिक साम्राज्य हासिल करने की, जो उसे कच्चे माल के मामले में दूसरे देशों से स्वतंत्र कर सके, किसी भी कोशिश का नतीजा यह होगा कि दूसरे सारे पूंजीवादी राज्य उसके विरुद्ध ऐक्यवद्ध हो जायेंगे, उसे अनंत तथा थका देनेवाले युद्धों में लपेट देंगे, उसे अपने लक्ष्य के समीप नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह की नीति उस राज्य के पूरे आर्थिक जीवन को निश्चित रूप में दिवालियेपन की राह पर ले जायेगी" (पृ० ७२–७३)।

वित्तपतियों को साम्राज्यवाद का त्याग करने के लिए राज़ी करने का क्या यह कूपमंडूकतापूर्ण प्रयत्न नहीं है? पूंजीपतियों को दिवाला पिटने की संभावना से डराने की कोई भी कोशिश करना सटोरियों को स्टाक एक्सचेंज में इसलिए सट्टेबाज़ी न करने की सलाह देना जैसा है कि "इस तरह बहुत-से अपनी सारी धन-दौलत गंवा बैठे हैं"। पूंजी प्रतिद्वंद्वी पूंजीपति और प्रतिद्वंद्वी राष्ट्र के दिवालियेपन से **लाभान्वित होती है**, क्योंकि इस तरह पूंजी अधिक संकेंद्रित हो जाती है; इसलिए आर्थिक प्रतियोगिता जितनी तीक्ष्ण तथा जितनी "भयंकर" होती है, अर्थात प्रतियोगी को जितना ज़्यादा आर्थिक दृष्टि से दिवालियेपन की ओर धकेला जाता है, उतनी ही ज़बर्दस्त पूंजीपतियों की यह आकांक्षा होती है कि इसमें प्रतियोगी को दिवालियेपन की ओर धकेलने के लिए **फ़ौजी** दबाव जोड़ा जाये। उन देशों की संख्या जितनी ही कम होगी, जहां पूंजी का निर्यात उतने ही लाभ के साथ किया जा सकता है, जितना कि उपनिवेशों को, अथवा तुर्की जैसे अधीन देशों को–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसलिए कि **ऐसे** मामलों में वित्तपति संयुक्त राज्य अमरीका जैसे स्वतंत्र, स्वाधीन तथा सभ्य देशों की तुलना में पूंजी निर्यात से तिगुना मुनाफ़ा बटोरता है—तुर्की, चीन, आदि को ग़ुलाम बनाने तथा विभाजित करने के लिए संघर्ष उतना ही **प्रचंड** होगा। आर्थिक सिद्धांत वित्त पूंजी तथा साम्राज्यवाद की अवधि के बारे में यही बताता है। तथ्य भी यही बताते हैं। परंतु काउत्स्की सब कुछ को घिसी-पिटी कूपमंडूकताभरी "नैतिकता" में बदल देते हैं: उत्तेजित होने से और इससे भी बढ़कर तुर्की के विभाजन के लिए या हिंदुस्तान को हथियाने के लिए युद्ध करने से कोई लाभ नहीं है, क्योंकि उन पर "बहुत देर तक प्रभुत्व क़ायम नहीं रखा जा सकता", इसके अलावा पूंजीवाद का शांतिपूर्वक विकास करना बेहतर होगा... निस्संदेह, मजूरी बढ़ाकर पूंजीवाद का विकास करना तथा घरेलू मंडी का विस्तार करना और भी बेहतर होगा: यह सर्वथा "कल्पनीय" है और इस भावना में वित्तपतियों को उपदेश देना किसी पादरी के प्रवचन के वास्ते बहुत ही उपयुक्त विषय है... नेकदिल काउत्स्की जर्मन वित्तपतियों को यह मनाने में लगभग सफल हो गये हैं कि उपनिवेशों के लिए ब्रिटेन के साथ युद्ध करना लाभजनक नहीं है, क्योंकि ये उपनिवेश तो किसी भी सूरत में जल्द मुक्ति हासिल करनेवाले ही हैं! ..

१८७२ और १९१२ के बीच ब्रिटेन द्वारा मिस्र को निर्यात तथा वहां से आयात ब्रिटिश निर्यात तथा आयात की समग्र संवृद्धि से धीमे रहे, जिससे "मार्क्सवादी" काउत्स्की यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "हमारे लिए यह मानने का कोई कारण नहीं है कि फ़ौजी आधिपत्य के बिना मिस्र के साथ व्यापार महज़ आर्थिक कारकों के प्रभाव के अंतर्गत कम विकसित होता" (पृ० ७२)। "विस्तार करने की पूंजी की इच्छा को... साम्राज्य-वाद की हिंसात्मक विधियों द्वारा नहीं, वरन **शांतिपूर्ण जनवाद द्वारा सर्वोत्तम ढंग से** पूरा किया जा सकता है" (पृ० ७०)।

कैसा उल्लेखनीय गंभीर, वैज्ञानिक तथा "मार्क्सवादी" विश्लेषण है! काउत्स्की ने इस अयुक्तिसंगत इतिहास को शानदार ढंग से "शुद्ध" किया है; उन्होंने "सिद्ध किया है" कि ब्रिटेन के लिए फ़्रांस से मिस्र छीनने की कोई आवश्यकता नहीं थी, कि जर्मन वित्तपतियों के लिए अंग्रेज़ों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिस्र से बाहर खदेड़ने के लिए युद्ध शुरू करना, तुर्क-अभियान संगठित करना तथा अन्य कार्रवाइयां करना सर्वथा अनुपयुक्त था! यह सब महज़ ग़लतफ़हमी है–अंग्रेज़ों को अभी इस बात का ज्ञान नहीं हुआ है कि उनके लिए मिस्र में ज़ोर-ज़बर्दस्ती का परित्याग करना तथा "शांतिपूर्ण जनवाद" अपनाना (ताकि **काउत्स्की के ढंग** से पूंजी का निर्यात बढ़ाया जा सके!) "सबसे बढ़िया" होगा...

"ज़ाहिर है, ऐसा सोचना बुर्जुआ मुक्त व्यापारवादियों[115] का भ्रम था कि मुक्त व्यापार पूंजीवाद द्वारा पैदा किये गये आर्थिक विरोधों का पूरी तरह अंत कर देगा। इनका अंत न तो मुक्त व्यापार कर सकता है और न जनवाद। परंतु हमारी दिलचस्पी हर सूरत में इसमें है कि इन विरोधों का उन्मूलन संघर्ष को ऐसे रूपों में चलाकर किया जाये, जिनसे जनसाधारण को कम से कम मुसीबतें उठानी पड़ें तथा कम से कम क़ुर्बानियां देनी पड़ें" (पृ० ७३)...

भगवान हमें मदद दे! भगवान हम पर दया करे! "कूपमंडूक क्या होता है?" लासाल पूछा करते थे तथा एक सुविदित कवि के शब्दों का उद्धृत करके उत्तर देते थे: "कूपमंडूक खोखली आंत है, हर चीज़ से वंचित होता है, सिवाय भय तथा इस आशा के कि भगवान उस पर दया करेगा"[116]।

काउत्स्की ने मार्क्सवाद को अपूर्व वेश्यावृत्ति की स्थिति में पहुंचा दिया है तथा वह एक असल पादरी में परिणत हो गये हैं। पादरी पूंजीपतियों को शांतिपूर्ण जनवाद अपनाने के लिए **मनाता है**–और इसे द्वंद्ववाद का नाम देता है। वह दलील देता है कि यदि पहले मुक्त व्यापार था और उसके बाद इजारेदारियां तथा साम्राज्यवाद आया, तो "अति साम्राज्यवाद" और फिर से मुक्त व्यापार क्यों न आयें? पादरी इस "अति साम्राज्यवाद" के वरदान का चित्रण करते हुए उत्पीड़ित जनसाधारण को **सांत्वना देता है**, हालांकि इस पादरी में यह कहने की हिम्मत भी नहीं है कि अति साम्राज्यवाद "हासिल" हो सकता है या नहीं! जो लोग धर्म की इस आधार पर पैरवी करते थे कि वह मनुष्य को सांत्वना देता है, उन्हें सही उत्तर देते हुए फ़ायरबाख़ ने सांत्वना के प्रतिक्रियावादी महत्व की ओर संकेत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया था: जो कोई दास को दासता के विरुद्ध उठ खड़े होने के लिए उत्तेजित करने के बजाय उसे सांत्वना देता है, वह दास-स्वामी की मदद करता है।

सारे और हर प्रकार के उत्पीड़क वर्गों को अपने शासन की रक्षा करने के लिए दो सामाजिक प्रकार्यों की आवश्यकता होती है—जल्लाद के प्रकार्य तथा पादरी के प्रकार्य की। जल्लाद से उत्पीड़ितों के प्रतिरोध तथा आक्रोश को दबाने की अपेक्षा की जाती है; पादरी से उत्पीड़ितों को सांत्वना देने, उनके सामने वर्ग शासन के बरक़रार रहते उनके दुख-कष्टों तथा क़ुर्बानियों के हल्के होने की संभावनाएं पेश करने (यह ख़ास तौर से आसान है, क्योंकि यह गारंटी नहीं दी जाती कि ये संभावनाएं "साकार" होकर रहेंगी...), और इस तरह उनसे वर्ग शासन स्वीकार कराते हुए उन्हें क्रांतिकारी कार्यकलाप से अलग करने, उनकी क्रांतिकारी भावना को ध्वस्त करने और उनके क्रांतिकारी संकल्प को नष्ट करने की अपेक्षा की जाती है। काउत्स्की ने मार्क्सवाद को सबसे घिनौने तथा मूर्खतापूर्ण प्रतिक्रांतिकारी सिद्धांत में, सबसे निम्न क़िस्म के पुरोहितवाद में परिणत कर डाला है।

१९०९ में काउत्स्की ने अपने पैंफ़लेट 'सत्ता के मार्ग पर' में यह अप्रतिवादित तथा प्रतिवादित न हो सकनेवाला तथ्य स्वीकार किया था कि पूंजीवाद के अंदर विरोधों का गहनीकरण हो रहा है, युद्धों तथा क्रांतियों का युग, नयी "क्रांतिकारी अवधि" समीप आती जा रही है। उन्होंने कहा था कि "समयपूर्व" क्रांति नहीं हो सकती और किसी विद्रोह में विजय की संभावना मानने से इनकार करने को "हमारे ध्येय के प्रति सीधी ग़द्दारी" बताया था, हालांकि लड़ाई शुरू होने से पहले पराजय की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

युद्ध शुरू हो गया। विरोध **और कटु** हो गये। जनसाधारण के दुख-कष्टों ने विराट आकार ग्रहण कर लिया है। युद्ध का अंत नज़र नहीं आता तथा उसका क्षेत्र फैलता जा रहा है। काउत्स्की एक के बाद दूसरा पैंफ़लेट लिखते जा रहे हैं और सेंसरशिप के आगे चुपचाप सिर झुकाते हुए ज़मीन हड़पे जाने, युद्ध की विभीषिकाओं, युद्ध में ठेके लेनेवालों के घोटालेभरे मुनाफ़ों, भारी महंगाई, लामबंद मज़दूरों की "फ़ौजी ग़ुलामी" के बारे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में आंकड़े देने से कतराते हैं, इसके बजाय वह सर्वहारा को बराबर सांत्वना देते जाते हैं। ऐसा वह उन युद्धों की मिसाल का हवाला देकर करते हैं, जब बुर्जुआ वर्ग क्रांतिकारी तथा प्रगतिशील था, जब "स्वयं मार्क्स" ने इस या उस बुर्जुआ वर्ग के लिए विजय की कामना की थी; वह यह सिद्ध करने के लिए कि पूंजीवाद उपनिवेशों के बिना, दूसरों की लूट-खसोट किये बिना, युद्धों तथा हथियारबंदी के बिना "संभव" है, यह सिद्ध करने के लिए कि "शांतिपूर्ण जनवाद" तरजीह देने योग्य है, आंकड़ों की क़तारें और कालम पेश करते हुए सर्वहारा को सांत्वना देते हैं। इस बात से इनकार करने की हिम्मत किये बिना कि जनसाधारण के दुख-कष्ट अधिकाधिक तीक्ष्ण होते जा रहे हैं तथा क्रांतिकारी स्थिति, वास्तव में, ठीक हमारी आंखों के सामने पैदा होती जा रही है (इस बारे में बात नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि सेंसर इसकी इजाज़त नहीं देता...), काउत्स्की बुर्जुआ वर्ग तथा अवसरवादियों के सामने चापलूसी से पेश आते हुए नये दौर में संघर्ष के ऐसे रूपों की "संभावना" (वह इसकी **गारंटी नहीं देते** कि यह "हासिल हो सकती है") का चित्रण करते हैं, जब "कम दुख-कष्ट भोगने होंगे तथा कम क़ुर्बानियां देनी होंगी"... फ़्रांज़ मेहरिंग तथा रोज़ा लुक्ज़ेम-बुर्ग ने ठीक इस कारण यदि काउत्स्की को वेश्या (Mädchen für alle) बताया था, तो वे बिलकुल सही थे।

* * *

अगस्त, १९०५ में रूस में क्रांतिकारी स्थिति विद्यमान थी। ज़ार ने बुलीगिन दूमा [117] बुलाने का वचन दिया था, ताकि बेचैन जनसाधारण को "सांत्वना" दी जा सके। यदि वित्तपतियों द्वारा हथियारबंदी के त्याग को और "स्थायी शांति" के लिए उनकी सहमति को "अति साम्राज्यवाद" कहा जा सकता है, तो बुलीगिन की क़ानून परामर्शदात्री व्यवस्था को "अति एकतंत्र" कहा जा सकता है। एक क्षण के लिए मान लें कि कल सैकड़ों विराट उद्यमों में अंतर्गुंथित दुनिया के सबसे बड़े एक सौ वित्तपति जनगण को **वचन** दें कि वे युद्ध के बाद निरस्त्रीकरण के पक्ष में होंगे (हम यह केवल क्षण भर के लिए मानेंगे, ताकि काउत्स्की के मूर्खतापूर्ण सिद्धांत से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्त राजनीतिक निष्कर्ष साफ़ हो जायें)। अगर ऐसा हो भी जाये, तब भी सर्वहारा को परामर्श द्वारा क्रांतिकारी कार्रवाई से, जिसके बिना सारे वचन तथा सारी सुंदर संभावनाएं मृगतृष्णा मात्र हैं, रोकना सीधी ग़द्दारी होगी।

युद्ध ने पूंजीपति वर्ग को विपुल मुनाफ़े ही नहीं दिलाये हैं और नयी लूट-खसोट की (उदाहरण के लिए, तुर्की, चीन, आदि), करोड़ों-करोड़ के नये ठेकों की और ब्याज की बढ़ी दर पर नये ऋणों की शानदार संभावनाएं ही प्रदान नहीं की हैं, अपितु उसने पूंजीपति वर्ग को इस अर्थ में और भी बड़े राजनीतिक लाभ प्रदान किये हैं कि उसने सर्वहारा में फूट डाल दी है तथा उसे भ्रष्ट किया है। काउत्स्की इस भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं, वह संघर्षशील सर्वहाराओं के बीच इस अंतर्राष्ट्रीय **फूट** को उनके अपने "राष्ट्र" के अवसरवादियों के साथ, ज्यूदेकुमों के साथ **एकता के नाम पर** पवित्रता प्रदान कर रहे हैं! फिर भी ऐसे लोग पाये जाते हैं, जो यह नहीं समझते कि पुरानी पार्टियों की एकता के नारे का अर्थ संबद्ध राष्ट्र के सर्वहारा की उस राष्ट्र के बुर्जुआ वर्ग के साथ "एकता" तथा विभिन्न राष्ट्रों के सर्वहाराओं के बीच **फूट** है...

६

पिछली पंक्तियां लिखी जा चुकी थीं कि २८ मई का *Neue Zeit* अख़बार (अंक ९) "सामाजिक-जनवाद के अधःपतन" पर काउत्स्की के समापन तर्कों के साथ प्रकट हुआ (कूनोव को उनके उत्तर का सातवां अनुभाग)। काउत्स्की सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के पक्ष में सारे पुराने कुतर्कों और एक नये कुतर्क का निम्नलिखित रूप में खुलासा करते हैं:

"यह कहना सरासर असत्य है कि युद्ध विशुद्ध रूप से साम्राज्यवादी है, कि युद्ध के छिड़ने पर विकल्प या तो साम्राज्यवाद अथवा समाजवाद था, कि जर्मनी, फ़्रांस और कई मामलों में ब्रिटेन की समाजवादी पार्टियां तथा सर्वहारा जनसाधारण बिना सोचे-समझे और महज़ मुट्ठी भर संसदवादियों के आह्वान पर साम्राज्यवाद की गोद में जा पहुंचे, समाजवाद के साथ ग़द्दारी की और इस तरह इतिहास में अपूर्व अधःपतन को मूर्त्त रूप दिया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक नया कुतर्क, मज़दूरों के साथ एक नया धोखा – युद्ध, देखा आपने, "विशुद्ध रूप से" साम्राज्यवादी नहीं है!

काउत्स्की वर्तमान युद्ध के स्वरूप तथा महत्व के प्रश्न पर आश्चर्यजनक ढंग से ढुलमुल हैं; यह पार्टी नेता बैसेल तथा चेमनिट्ज़ कांग्रेसों की सटीक तथा बाज़ाब्ता घोषणाओं से उसी तरह सावधानी के साथ कतराते हैं, जिस तरह चोर उस जगह से दूर रहता है, जहां उसने पिछली बार चोरी की। अपने पैंफ़लेट 'राष्ट्रीय राज्य...' में, जिसे काउत्स्की ने फ़रवरी, १९१५ में लिखा था, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि युद्ध "फिर भी, अंततः, साम्राज्यवादी है" (पृ० ६४)। अब एक नया अपवाद पेश किया जाता है: यह **विशुद्ध रूप से** साम्राज्यवादी युद्ध नहीं है–तो यह और क्या हो सकता है?

यह सिद्ध हुआ है कि यह राष्ट्रीय युद्ध भी है! काउत्स्की यह वीभत्स निष्कर्ष निम्नलिखित "प्लेख़ानोवपंथी" मिथ्या-द्वंद्ववाद के ज़रिए निकालते हैं:

"वर्तमान युद्ध साम्राज्यवाद की ही नहीं, वरन रूसी क्रांति की भी संतान है।" उन्होंने, काउत्स्की ने, १९०४ में पहले ही यह देख लिया था कि रूसी क्रांति एक नये रूप में सर्वस्लाववाद को पुनरुज्जीवित करेगी, कि "जनवादी रूस राष्ट्रीय स्वतंत्रता की आस्ट्रियाई और तुर्क स्लावों की आकांक्षा को अनिवार्यतः बहुत उग्र बनायेगा... तब पोलिश प्रश्न भी बहुत तीक्ष्ण बन जायेगा... तब आस्ट्रिया विखंडित हो जायेगा, क्योंकि ज़ारशाही का पतन होने पर वह लोहे की पट्टी भी फट जायेगी, जो इस समय अपकेंद्रीय शक्तियों को सूत्रबद्ध किये हुए है" (काउत्स्की इस अंतिम वाक्य को अपने १९०४ के लेख से स्वयं उद्धृत करते हैं)... "रूसी क्रांति ने... एशिया की समस्याओं को यूरोप की समस्याओं से जोड़ते हुए पूरब की राष्ट्रीय आकांक्षाओं को नया तथा सशक्त आवेग प्रदान किया। **वर्तमान युद्ध में ये सारी समस्याएं** अपने को उग्रतापूर्वक प्रस्तुत कर रही हैं तथा **सर्वहारा** समेत **जनसाधारण** की मनःस्थिति के लिए अति निर्णायक महत्व ग्रहण कर रही हैं, जबकि सत्ताधारी वर्गों में साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों का बोलबाला है" (पृ० २७३, मोटे अक्षर हमारे)।

यह मार्क्सवाद के साथ अनाचार का एक और नमूना है! चूंकि "जनवादी रूस" पूरबी यूरोप के राष्ट्रों में स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रबल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनायेगा (यह अकाट्य है), **इसलिए** वर्तमान युद्ध, जो एक भी राष्ट्र को मुक्त नहीं करेगा, बल्कि जो, परिणाम चाहे कुछ भी रहे, कई राष्ट्रों को गुलाम बनायेगा, "विशुद्ध रूप से" साम्राज्यवादी युद्ध नहीं है। **चूंकि** "ज़ारशाही के पतन" का अर्थ ग़ैर जनवादी राष्ट्रीय ढांचे के कारण आस्ट्रिया का विखंडन होगा, **इसलिए** अस्थायी रूप से मजबूत बनी प्रतिक्रांतिकारी ज़ारशाही ने, जो आस्ट्रिया को लूट-खसोट रही है तथा आस्ट्रिया में बसनेवाली जातियों के लिए **और भी ज्यादा** उत्पीड़न ला रही है, "वर्तमान युद्ध" को विशुद्ध रूप से साम्राज्यवादी स्वरूप नहीं, वरन कुछ हद तक राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया है। **चूंकि** "सत्ताधारी वर्ग" मूर्ख टुटपुंजिया लोगों तथा पददलित किसानों को साम्राज्यवादी युद्ध के राष्ट्रीय लक्ष्यों के बारे में क़िस्से गढ़कर छल रहे हैं, **इसलिए** ज्ञान-विज्ञान के पंडित, "मार्क्सवाद" के प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा दूसरे इंटरनेशनल के प्रतिनिधि को इस बात का अधिकार है कि वह जनसाधारण से यह धोखाधड़ी इस "फ़ार्मूले" के ज़रिए स्वीकार करा ले कि सत्ताधारी वर्गों में साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां प्रकट होती हैं, जबकि "जनता" तथा सर्वहारा जनसाधारण में "राष्ट्रीय" आकांक्षाएं प्रकट हो रही हैं।

द्वंद्ववाद को सबसे नीचतापूर्ण तथा घिनौने कुतर्क में परिणत कर दिया गया है!

वर्तमान युद्ध में राष्ट्रीय तत्व का प्रतिनिधित्व **केवल** आस्ट्रिया के विरुद्ध सर्बिया का युद्ध करता है (जिसका प्रसंगतः हमारी पार्टी के बर्न सम्मेलन[118] के प्रस्ताव में उल्लेख किया गया था)। केवल सर्बिया तथा सर्बों में ही हम लाखों-लाख लोगों को, "जनसाधारण" को अपनी परिधि में लानेवाला दीर्घकालिक राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलन पाते हैं, जिसकी "निरंतरता" आस्ट्रिया के विरुद्ध सर्बिया का वर्तमान युद्ध है। यदि यह युद्ध अलग-थलग होता, याने यदि यह आम यूरोपीय युद्ध से, ब्रिटेन, रूस, आदि के दस्युतापूर्ण उद्देश्यों से जुड़ा न होता, तो सर्बियाई **बुर्जुआ वर्ग** की सफलता की कामना करना समस्त समाजवादियों का **कर्त्तव्य** होता—यह वर्तमान युद्ध में राष्ट्रीय तत्व से निकलनेवाला एकमात्र सही, सर्वथा अवश्यंभावी निष्कर्ष है। परंतु ठीक यही निष्कर्ष निकालने में कुतर्कवादी काउत्स्की विफल रहे हैं, जो इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय आस्ट्रियाई बुर्जुआ वर्ग, पुरोहितवादियों तथा जनरलों की चाकरी कर रहे हैं!

आगे चलें। वैज्ञानिक-विकासवादी विधि में सर्वोच्च विंदु होने के नाते मार्क्सवादी द्वंद्ववाद किसी विषय की अलग-थलग, अर्थात इकतरफ़ा तथा बुरी तरह विकृत जांच-पड़ताल से इनकार करता है। सर्बो-आस्ट्रियाई युद्ध के राष्ट्रीय पहलू का आम यूरोपीय युद्ध में कोई गंभीर महत्व नहीं है और न हो सकता है। यदि जर्मनी जीत जाता है, तो वह बेल्जियम, पोलैंड का एक और हिस्सा, शायद फ़्रांस का हिस्सा, आदि दबोच लेगा। यदि रूस जीतता है, तो वह गैलीशिया, पोलैंड का एक और हिस्सा, आर्मीनिया, आदि को दबोच लेगा। यदि युद्ध हार-जीत का फ़ैसला हुए बिना ख़त्म हो जाता है, तो पहले का राष्ट्रीय उत्पीड़न बरक़रार रहेगा। सर्बिया के लिए, अर्थात वर्तमान युद्ध में शिरकत करनेवालों के एक सौवें भाग के लिए युद्ध बुर्जुआ-मुक्ति आंदोलन की "राजनीति की निरंतरता" है। बाक़ी ९९ प्रतिशत के लिए युद्ध साम्राज्यवाद की, अर्थात जर्जर बुर्जुआ वर्ग की, जो राष्ट्रों को स्वतंत्र करने में नहीं, वरन केवल उन्हें नष्ट-भ्रष्ट करने में सक्षम है, राजनीति की निरंतरता है। त्रिराष्ट्र समहित संधि, जो सर्बिया को "मुक्त कर रही" है, सर्बियाई मुक्ति के हित आस्ट्रिया को लूटने में इटली की मदद पाने के बदले इतालवी साम्राज्यवाद को बेच रही है।

इस सबको, जो सर्वविदित है, काउत्स्की ने अवसरवादियों को न्यायसंगत ठहराने के लिए निर्लज्जतापूर्वक तोड़ा-मरोड़ा है। न तो प्रकृति में और न समाज में कोई "विशुद्ध" परिघटनाएं होती हैं और न हो सकती हैं—हमें मार्क्सवादी द्वंद्ववाद ठीक यही सिखाता है, क्योंकि द्वंद्ववाद बताता है कि विशुद्धता की अवधारणा ही मानव-संज्ञान की, जो किसी वस्तु को उसकी समग्रता तथा संजटिलता के साथ ग्रहण नहीं कर सकता, एक निश्चित संकीर्णता, इकतरफ़ापन प्रदर्शित करती है। संसार में कोई "विशुद्ध" पूंजीवाद नहीं है और न हो सकता है, बल्कि उसमें सदा या तो सामंतवाद, या कूपमंडूकता, या और किसी की मिलावट होती है। इसलिए यदि कोई उस समय यह याद दिलाता है कि युद्ध "विशुद्ध रूप से" साम्राज्यवादी नहीं है, जब खुली डकैती के लक्ष्यों को "राष्ट्रीय" लफ़्फ़ाज़ी से जान-बूझकर छुपानेवाले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साम्राज्यवादियों द्वारा "जनसाधारण" को खुल्लमखुल्ला धोखा दिये जाने की बात हो रही होती है, तो वह या तो असंदिग्ध रूप से मूर्ख पांडित्यदर्शी है अथवा फ़रेबी और धोखेबाज़ है। सारी बात यह है कि काउत्स्की जब यह दावा करते हैं कि "सर्वहारा समेत जनसाधारण के लिए" राष्ट्रीय समस्याएं "निर्णायक महत्व की थीं", जबकि सत्ताधारी वर्गों के लिए निर्णायक कारक "साम्राज्यवादी प्रवृत्तियां" थीं (पृ० २७३) और जब वह इसे "यथार्थता की अनंत विविधता" (पृ० २७४) का कथित द्वंद्वात्मक हवाला देकर "पुख़्ता" बनाते हैं, तो वह जनता को साम्राज्यवादियों द्वारा धोखा दिये जाने का **समर्थन करते** हैं। निस्संदेह यथार्थता अनंत रूप से विविधतापूर्ण है। यह पवित्र सत्य है! परंतु यह बात भी उतनी ही असंदिग्ध है कि इस अनंत विविधता में दो मूल और मुख्य पहलू हैं: युद्ध का वस्तुपरक अंतर्य है साम्राज्यवाद की "नीति की निरंतरता", अर्थात "महान शक्तियों" के जर्जर बुर्जुआ वर्ग (और उनकी सरकारों) द्वारा दूसरे राष्ट्रों की लूट-खसोट और प्राधान्यपूर्ण "आत्मपरक" विचारधारा है "राष्ट्रीय" लफ़्फ़ाज़ी, जो जनसाधारण को मूर्ख बनाने के लिए फैलायी जाती है।

काउत्स्की द्वारा बार-बार दुहराये जानेवाले उनके पुराने कुतर्क का, जो दावा करता है कि "वामपंथी लोग" "युद्ध के छिड़ने के समय" स्थिति को साम्राज्यवाद या समाजवाद में से विकल्प प्रस्तुत करनेवाला मानते थे, हम पहले ही विश्लेषण कर चुके हैं। यह निर्लज्जतापूर्ण चालबाज़ी है, क्योंकि काउत्स्की अच्छी तरह जानते हैं कि वामपंथियों ने एक **भिन्न** विकल्प प्रस्तुत किया था, याने यह कि या तो पार्टी साम्राज्यवादी लूट-खसोट तथा धोखाधड़ी में शामिल हो जाये या फिर क्रांतिकारी कार्रवाई के लिए प्रचार तथा तैयारी करे। काउत्स्की यह भी जानते हैं कि **केवल** सेंसरशिप ही जर्मनी में वामपंथियों को उस मूर्खतापूर्ण क़िस्से का पर्दाफ़ाश करने से रोकता है, जिसके फैलने का कारण ज्यूदेकुमों के सामने उन द्वारा दुम हिलाना है।

जहां तक "सर्वहारा जनसाधारण" और "मुट्ठी भर संसदवादियों" के बीच संबंध का सवाल है, काउत्स्की एक बहुत ही घिसी-पिटी आपत्ति पेश करते हैं:

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जर्मनों को एक ओर छोड़ दें, ताकि हमें ख़ुद अपनी पैरवी न करनी पड़े, परंतु कौन गंभीरतापूर्वक यह दावा करना चाहेगा कि वाइयां, गेद, हाइन्डमैन तथा प्लेख़ानोव जैसे लोग रातों रात साम्राज्यवादी हो गये और समाजवाद के साथ ग़द्दारी कर बैठे? संसदवादियों और 'प्रमुख निकायों' को छोड़ दें..." (काउत्स्की स्पष्टत: रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग तथा फ़्रांज़ मेहरिंग द्वारा प्रकाशित 'इंटरनेशनल' पत्रिका की ओर इशारा कर रहे हैं, जिसमें प्रमुख निकायों की, अर्थात जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के आधिकारिक निकायों, उसकी केंद्रीय समिति – Vorstand, उसके संसदीय ग्रुप, आदि की नीति के साथ उचित ही तिरस्कारपूर्वक व्यवहार किया जाता है) "पर कौन यह दावा करने का साहस कर सकता है कि मुट्ठी भर संसदवादियों द्वारा दिया जानेवाला आदेश २४ घंटे के अंदर चालीस लाख वर्ग-सचेत जर्मन सर्वहाराओं को बिलकुल उलटी ओर घुमाने, उन्हें अपने पूर्ववर्ती लक्ष्यों के सीधे विरुद्ध करने के लिए पर्याप्त है? यदि यह सच होता, तो यह निस्संदेह हमारी पार्टी के ही नहीं, वरन **जनसाधारण** के भी भयावह पतन का प्रमाण होता (मोटे अक्षर काउत्स्की के हैं)। यदि जनसाधारण ऐसे चरित्रबलहीन भेड़ों का झुंड होते, तो हम अपना जनाज़ा निकलने देते" (पृ० २७४)।

सबसे बड़े राजनीतिक तथा वैज्ञानिक अधिकारी के रूप में कार्ल काउत्स्की अपने आचरण तथा ढेर-सारे दयनीय हीले-हवालों के कारण अपना जनाज़ा बहुत पहले निकाल चुके थे। जो इसे समझने में चूकते हैं या कम से कम इसे अनुभव नहीं करते, उनके लिए, जहां तक समाजवाद का संबंध है, कोई उम्मीद नहीं है। ठीक इसी कारण मेहरिंग, रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग तथा उनके समर्थकों ने 'इंटरनेशनल' में काउत्स्की तथा उनकी मंडली के साथ सबसे निकृष्ट प्राणियों जैसा व्यवहार करने में जो स्वर अपनाया, वह एकमात्र सही स्वर था।

ज़रा सिर्फ़ इस पर ग़ौर करें – युद्ध के बारे में कमोवेश स्वतंत्र रूप से (अर्थात तत्काल पकड़े और बैरकों में घसीटे गये बिना या गोली से उड़ा दिये जाने के तात्कालिक ख़तरे के बिना) अपना रुख़ व्यक्त कर सकने की स्थिति में **एकमात्र** "मुट्ठी भर संसदवादी" (वे मतदान करने के लिए स्वतंत्र थे, इसका उन्हें अधिकार था; वे विरोध में भी मत दे सकते थे – रूस तक में इसके लिए न तो किसी को पीटा गया, न किसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की हड्डी-पसली तोड़ी गयी और न कोई गिरफ़्तार ही किया गया), मुट्ठी भर अधिकारी, पत्रकार, आदि थे। और अब काउत्स्की उस सामाजिक **तबक़े** की, जिसके अवसरवाद की कार्यनीति तथा विचारधारा के साथ **संबंध-सूत्रों** के बारे में स्वयं काउत्स्की वर्षों से बीसियों बार लिखते रहे हैं, ग़द्दारी तथा चरित्रबलहीनता का दोष उदात्ततापूर्वक **जनसाधारण** के मत्थे मढ़ रहे हैं! सामान्यतया वैज्ञानिक अनुसंधान तथा विशेष रूप से मार्क्सवादी द्वंद्ववाद का सबसे पहला और सबसे आधारभूत नियम यह मांग करता है कि लेखक समाजवादी आंदोलन में **प्रवृत्तियों** के वर्तमान संघर्ष के, याने उस प्रवृत्ति के, जो ग़द्दारी की बात करती है, उसके बारे में चीख़ती है, उसे लेकर ख़तरे की घंटी बजाती है, तथा उस प्रवृत्ति के, जिसे कोई ग़द्दारी नज़र नहीं आती—**पूरे दशकों तक** चलनेवाले पूर्ववर्ती संघर्ष से **संबंध-सूत्र** की जांच करे। परंतु काउत्स्की इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहते; वह तो प्रवृत्तियों और **धाराओं** की बात तक नहीं करना चाहते। अब तक धाराएं रही हैं, पर अब नहीं हैं! अब तो केवल "प्रतिष्ठित व्यक्तियों" के ऊंचे नाम मात्र रह गये हैं, जिनकी दासवत् आत्माएं सदैव अपने तुरुप के रूप में आश्रय लेती हैं। इस सिलसिले में एक दूसरे का हवाला देना तथा अपने "पाप" को मित्रों के ढंग से, "चोर-चोर मौसेरे भाई" के नियम के अनुसार छुपाना सुविधाजनक है। ल० मार्तोव ने बर्न में अपने एक व्याख्यान में (देखें 'सोत्सिआल-देमोक्रात' का अंक ३६) विस्मयभरे शब्दों में कहा था—"इसे अवसरसाद कैसे कहा जा सकता है जब... गेद, प्लेख़ानोव और काउत्स्की!.." "हमें गेद जैसे लोगों पर अवसरवाद का आरोप लगाते समय अधिक सावधानी बरतनी चाहिए," अक्सेलरोद ने लिखा ('गोलोस', अंक ८६ और ८७)। "मैं अपनी पैरवी नहीं करूंगा," काउत्स्की ने बर्लिन में प्रतिध्वनि की, "परंतु... वाइयां, गेद, हाइन्डमैन और प्लेख़ानोव!" कैसी पारस्परिक प्रशंसामंडली है यह!

अपनी कृतियों में काउत्स्की ने अपने दासवत् उत्साह में हाइन्डमैन तक की चापलूसी की है और ऐसा जताया है, मानो हाइन्डमैन कल ही तो भागकर साम्राज्यवाद की तरफ़ पहुंचे थे। परंतु यही *Neue Zeit* और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया भर के बीसियों सामाजिक-जनवादी अख़बार **कई वर्षों से** हाइन्डमैन के साम्राज्यवाद के बारे में लिख रहे हैं! काउत्स्की जिन **व्यक्तियों** की चर्चा करते हैं, उनकी राजनीतिक जीवनियों का यदि उन्होंने विस्तारपूर्वक अध्ययन करने का कष्ट किया होता, तो उन्हें यह याद आ गया होता कि इन जीवनियों में वे गुण तथा घटनाएं हैं या नहीं, जिन्होंने "एक दिन" में नहीं, वरन दशकों के दौरान उनके साम्राज्यवाद की ओर भागने का पथ प्रशस्त किया था; कि वाइयां जोरेसवादियों[119] के तथा प्लेख़ानोव मेंशेविकों तथा विसर्जनवादियों के शिकंजे में थे या नहीं; कि गेदवादी **प्रवृत्ति**[120] उस आदर्श रूप से निर्जीव, फीकी गेदवादी पत्रिका *Le Socialisme*[121] में, जो एक भी महत्वपूर्ण प्रश्न पर स्वतंत्र रूप से कोई रुख़ अपनाने में अक्षम थी, सबकी आंखों के सामने दम तोड़ रही थी या नहीं; कि क्या स्वयं काउत्स्की ने (इतना हम उन लोगों के लाभार्थ जोड़ दें, जो उन्हें उचित ही हाइन्डमैन तथा प्लेख़ानोव की क़तार में बिठाते हैं) मिलेरांवाद[122] के प्रश्न पर, बर्नस्टीनवाद[123] के विरुद्ध संघर्ष की आरंभिक मंज़िल में चरित्रबलहीनता नहीं दिखायी थी, आदि?

परंतु काउत्स्की इन नेताओं की जीवनियों की वैज्ञानिक जांच-परख में लेशमात्र दिलचस्पी नहीं दिखाते। वह यह देखने का प्रयत्न तक नहीं करते कि ये नेता अपनी पैरवी **अपने** ही तर्कों द्वारा कर रहे हैं अथवा अवसरवादियों तथा बुर्जुआ वर्ग के तर्कों की पुनरावृत्ति द्वारा? कि इन नेताओं की कार्रवाइयों ने गंभीर राजनीतिक महत्व उनके असाधारण प्रभाव के कारण हासिल किया है अथवा इसलिए कि वे किसी दूसरी, वस्तुतः "प्रभावशाली", फ़ौजी संगठन द्वारा समर्थित धारा से, अर्थात बुर्जुआ धारा से जुड़े रहे हैं? काउत्स्की ने तो इस प्रश्न की जांच करने का काम शुरू तक नहीं किया; उन्हें तो केवल इस बात की चिंता रहती है कि जनसाधारण की आंखों में धूल झोंकी जाये, प्रतिष्ठित नामों की गूंज से उन्हें स्तब्ध किया जाये, उन्हें स्पष्ट रूप से कोई विवादास्पद मसला उठाने तथा सारे पहलुओं से उसकी जांच करने से रोका जाये*।

---

*वाइयां, गेद, हाइन्डमैन तथा प्लेख़ानोव की काउत्स्की द्वारा की जानेवाली चर्चा एक और सिलसिले में अभिलाक्षणिक है। लेंश और हैनिश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"...मुट्ठी भर संसदवादियों द्वारा दिया जानेवाला आदेश चालीस लाख वर्ग-सचेत सर्वहाराओं को बिलकुल उलटी ओर घुमाने के लिए पर्याप्त है..."

यहां एक-एक शब्द झूठ है। जर्मन पार्टी संगठन की सदस्य-संख्या चालीस लाख नहीं, दस लाख थी। इस जन-संगठन की (किसी भी अन्य संगठन की भांति) संयुक्त इच्छा **केवल** उसके संयुक्त राजनीतिक केंद्र ने, "मुट्ठी भर लोगों" ने, जिन्होंने समाजवाद के साथ ग़द्दारी की थी, अभिव्यक्त की थी। ये ही मुट्ठी भर लोग थे, जिनसे सलाह-मशविरा किया गया था तथा मतदान करने के लिए कहा गया था; वे मतदान करने और लेख लिखने, आदि की स्थिति में थे। जनसाधारण से सलाह-मशविरा नहीं किया गया था। उन्हें मतदान करने की इजाज़त नहीं दी गयी, यही नहीं, उनमें फूट डाली गयी, उन पर मुट्ठी भर संसदवादियों के नहीं, वरन फ़ौजी अधिकारियों के "**आदेशों द्वारा**" दवाव डाला गया था। फ़ौजी संगठन मौजूद था; **इस संगठन में** नेताओं ने ग़द्दारी नहीं की थी। उसने "जनसाधारण" को **एक-एक करके** भर्ती किया, हर व्यक्ति को अल्टीमेटम दिया: या तो (अपने नेताओं की राय के अनुसार) फ़ौज में भर्ती हो जाओ अथवा गोली से उड़ा दिये जाओगे। जनसाधारण संगठित ढंग से काम नहीं कर सके, क्योंकि पहले स्थापित उनके संगठन ने, "मुट्ठी

मार्का खुले साम्राज्यवादी (अवसरवादियों की तो बात ही क्या) स्वयं **अपनी** नीति को न्यायसंगत ठहराने के लिए हाइन्डमैन और प्लेख़ानोव का हवाला देते हैं और उन्हें ऐसा करने का **अधिकार** है। वे जब यह कहते हैं कि यह वस्तुतः एक ही नीति है, तो वे **सच** कहते हैं। परंतु काउत्स्की लेंश और हैनिश की, इन आमूलवादियों की, जो साम्राज्यवाद की ओर मुड़ गये हैं, तिरस्कारपूर्वक चर्चा करते हैं। काउत्स्की भगवान को धन्यवाद देते हैं कि वह इन पापियों जैसे नहीं हैं, कि वह उनसे असहमत हैं तथा क्रांतिकारी बने रहे हैं—मज़ाक़ न करें! **वस्तुतः** काउत्स्की की स्थिति उनकी जैसी ही है। मिठासभरे वाक्य लिये पाखंडी अंधराष्ट्रवादी काउत्स्की डेविड और हाइने, लेंश और हैनिश जैसे सीधे-सादे अंधराष्ट्रवादियों से कहीं ज़्यादा घिनौने हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भर" लेजियनों, काउत्स्कियों तथा शीडेमानों के रूप में मूर्त संगठन ने उनके साथ ग़द्दारी की थी। नया संगठन स्थापित करने के लिए समय की ज़रूरत है, पुराने, सड़े-गले तथा जीर्ण पड़ चुके संगठन को मलबे के ढेर में फेंकने के लिए दृढ़-संकल्प की ज़रूरत है।

काउत्स्की यह मूर्खतापूर्ण विचार कि "जनसाधारण" को युद्ध के "प्रतिकार के रूप में" "२४ घंटों के अंदर" क्रांति करनी चाहिए थी, साम्राज्यवाद के मुक़ाबले में "समाजवाद" प्रतिष्ठापित करना चाहिए था, वरना "जनसाधारण" अपनी "चरित्रबलहीनता और ग़द्दारी" प्रकट कर देते, अपने विरोधियों, वामपंथियों का बताकर उन्हें परास्त करने का प्रयत्न करते हैं। परंतु यह सरासर बकवास है, जिसे ज्ञानहीन बुर्जुआ तथा पुलिस पुस्तिकाओं के संकलनकर्त्ता अब तक क्रांतिकारियों को "हराने" के लिए इस्तेमाल करते थे और जिसे अब काउत्स्की गुस्ताख़ी से प्रदर्शित कर रहे हैं। काउत्स्की के वामपंथी विपक्षी अच्छी तरह जानते हैं कि क्रांति "निर्मित" नहीं की जा सकती, कि क्रांतियां वस्तुगत रूप से (अर्थात पार्टियों तथा वर्गों की इच्छाओं पर निर्भर न होकर) परिपक्व संकटों तथा इतिहास में उलट-फेरों से **विकसित होती हैं**, कि संगठन के बिना जनसाधारण में इच्छा-शक्ति की एकता का अभाव होता है, कि केंद्रीकृत राज्यों के सशक्त, आतंकवादी, फ़ौजी संगठन के विरुद्ध संघर्ष कठिन तथा लंबा काम होता है। अपने नेताओं की ग़द्दारी के कारण जनसाधारण निर्णायक घड़ी में कुछ **नहीं** कर **पाये**, जबकि ये "मुट्ठी भर" नेता ये काम **पूरी तरह कर सकते थे** तथा उन्हें करना चाहिए था — युद्ध ऋणों के विरुद्ध मतदान करना, "वर्ग सहमति" तथा युद्ध को न्यायसंगत ठहराने के विरुद्ध खड़ा होना, अपनी सरकारों की पराजय के पक्ष में आवाज़ बुलंद करना, खंदकों में भाईचारे के पक्ष में प्रचार करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय कार्ययंत्र स्थापित करना, क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू करने की आवश्यकता के बारे में अवैध साहित्य* का प्रकाशन संगठित करना, आदि।

---

*प्रसंगतः वर्ग घृणा तथा वर्ग संघर्ष के बारे में लिखने पर सरकारी पाबंदी के उत्तर में सारे सामाजिक-जनवादी अख़बार बंद करना क़तई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काउत्स्की भली भांति जानते हैं कि ठीक ऐसी या, सच कहें, **इस जैसी** कार्रवाइयां ही जर्मन "वामपंथियों" के दिमाग़ में हैं, कि फ़ौजी सेंसरशिप के अंतर्गत वे इन चीज़ों के बारे में **सीधे**, खुले रूप से बात नहीं कर सकते। अवसरवादियों की हर क़ीमत पर वकालत करने की काउत्स्की की इच्छा ने उन्हें अतुल्य नीचता की स्थिति में पहुंचा दिया है—उन्होंने फ़ौजी सेंसरशिप की आड़ में सरासर अनर्गलताओं को वामपंथियों के मत्थे इस उम्मीद से मढ़ा कि सेंसर उन्हें बेनक़ाब होने से बचायेगा।

७

गंभीर वैज्ञानिक तथा राजनीतिक प्रश्न, जिससे काउत्स्की सब तरह की चालों के ज़रिए जान-बूझकर कतराये हैं और इस तरह अवसरवादियों को अत्यधिक आनंदमग्न किया है, यह है—यह **कैसे संभव हुआ** कि दूसरे इंटरनेशनल के सबसे प्रमुख प्रतिनिधियों ने समाजवाद के साथ ग़द्दारी की?

इस सवाल पर हमें निस्संदेह पृथक-पृथक नेताओं के जीवन-वृत्तांतों के दृष्टिकोण से विचार नहीं करना चाहिए। उनके भावी जीवनी-लेखकों को इस दृष्टिकोण से भी समस्या का विश्लेषण करना पड़ेगा। परंतु आज समाजवादी आंदोलन की दिलचस्पी का विषय यह नहीं है, अपितु सामा-

---

आवश्यक न होता। *Vorwärts*[124] की तरह इस बारे में न लिखने के लिए सहमति नीचता तथा कायरता थी। *Vorwärts* की **राजनीतिक रूप से** उस समय मृत्यु हो गयी, जब वह इसके लिए सहमत हो गया था। और जब ल० मार्तोव ने ऐसी बात कही, तो वह सही थे। परंतु वैध अख़बारों को यह घोषणा कर चालू रखना संभव था कि वे ग़ैर पार्टी तथा **ग़ैर सामाजिक-जनवादी** अख़बार हैं, जो मज़दूरों के एक हिस्से की तकनीकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, अर्थात वे **ग़ैर राजनीतिक अख़बार** हैं। गुप्त सामाजिक-जनवादी साहित्य, जिसमें युद्ध का **मूल्यांकन किया जाता**, और **उस मूल्यांकन के बिना** क़ानूनी तौर पर प्रकाशित मज़दूर वर्ग का साहित्य, जो झूठ न बोले, परंतु जो सच पर मौन साधे रहे—ऐसा क्यों संभव नहीं था?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिक-अंधराष्ट्रवादी **धारा** के ऐतिहासिक मूल, अवस्थाएं, महत्व तथा शक्ति का अध्ययन है। (१) सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद कहां से उत्पन्न हुआ? (२) उसे शक्ति किससे मिली? (३) उसका कैसे मुक़ाबला किया जाये? प्रश्न के प्रति केवल इसी तरह के रुख़ को गंभीर माना जा सकता है, लेकिन "व्यक्तिगत" रुख़ पर ध्यान देने का तरीक़ा सिर्फ़ एक युक्ति है, कुतर्की की युक्ति है।

पहले प्रश्न के उत्तर के लिए हमें सबसे पहले यह देखना होगा कि सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद की विचारधारात्मक तथा राजनीतिक अंतर्वस्तु क्या समाजवाद की किसी पूर्ववर्ती प्रवृत्ति से **जुड़ी तो नहीं है?** दूसरे, वास्तविक राजनीतिक विभाजनों के दृष्टिकोण से समाजवादियों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के विरोधियों तथा समर्थकों में वर्तमान विभाजन का ऐतिहासिक रूप से पूर्ववर्ती विभाजनों से क्या संबंध है?

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद से हमारा तात्पर्य वर्तमान साम्राज्यवादी युद्ध में पितृभूमि की रक्षा के विचार के स्वीकरण से, इस युद्ध में "अपने" देशों के समाजवादियों, बुर्जुआ लोगों तथा सरकारों के बीच संघबद्धता को न्यायसंगत ठहराये जाने से, "अपने" बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध सर्वहारा क्रांतिकारी कार्रवाई के प्रचार तथा समर्थन से इनकार करने, आदि से है। यह सर्वथा स्पष्ट है कि सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद की मूल विचारधारात्मक तथा राजनीतिक अंतर्वस्तु अवसरवाद की आधारशिलाओं से पूरी तरह मेल खाती है। यह **एक ही** धारा है। १९१४–१९१५ के युद्ध की अवस्थाओं में अवसरवाद सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद की ओर ले जाता है। वर्ग सहयोग का विचार अवसरवाद का मुख्य लक्ष्य है। युद्ध इस विचार को उसके अंतिम छोर तक पहुंचाता है और उसके आम कारकों तथा उत्प्रेरकों को असाधारण कारकों तथा उत्प्रेरकों से संवर्द्धित करता है; वह ख़ास धमकियों और ज़ोर-जबरन के ज़रिए कूपमंडूक तथा फूटग्रस्त जनसाधारण को बुर्जुआ वर्ग के साथ सहयोग करने के लिए विवश करता है: यह परिस्थिति स्वभावतया अवसरवाद के पक्षधरों की तादाद बहुत बढ़ाती है तथा वह बताती है कि कल तक के आमूलवादी क्यों भागकर उस खेमे में जा पहुंचे।

अवसरवाद का अर्थ है मज़दूरों की एक नगण्य अल्पसंख्या के अस्थायी हितों की ख़ातिर जनसाधारण के बुनियादी हितों की बलि देना, दूसरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दों में सर्वहारा जनसाधारण के विरुद्ध लक्षित मज़दूरों के एक भाग तथा बुर्जुआ वर्ग के बीच संघबद्धता। युद्ध इस तरह की संघबद्धता को विशेष रूप से स्पष्ट और अनिवार्य बना देता है। अवसरवाद को कई दशकों के दौरान पूंजीवाद के विकास के ऐसे युग की विशिष्टताएं जन्म देती रहीं, जब विशेषाधिकारप्राप्त मजदूरों का अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण तथा सुसंस्कृत जीवन उनका "बुर्जुआकरण" करता रहा, उनके आगे राष्ट्रीय पूंजीपतियों की मेज़ों से रोटी के टुकड़े फेंकता रहा, दरिद्रताग्रस्त तथा बर्बाद जनसाधारण के दुखों, तंगहाली तथा क्रांतिकारी तेवरों से उन्हें अलग-थलग करता रहा। साम्राज्यवादी युद्ध इन परिस्थितियों की प्रत्यक्ष निरंतरता तथा चरम बिंदु है, क्योंकि यह युद्ध महान शक्तिवाले राष्ट्रों के **विशेषाधिकारों** के लिए, उनके बीच उपनिवेशों के पुनर्विभाजन तथा अन्य राष्ट्रों पर प्रभुत्व पाने के लिए है। टुटपुंजिया लोगों के "ऊपरी तबक़ों" अथवा मजदूर वर्ग के अभिजातों (और नौकरशाहों) के रूप में अपनी विशेषाधिकारप्राप्त स्थिति की रक्षा करना तथा उसे दृढ़ बनाना—ऐसी है युद्ध के समय टुट-पुंजिया-अवसरवादी आशाओं तथा तदनुरूपी कार्यनीति की स्वाभाविक निरंतरता, ऐसी है हमारे ज़माने के सामाजिक-साम्राज्यवाद की आर्थिक आधार-शिला*। और निस्संदेह आदत की मजबूरी, अपेक्षाकृत "शांतिपूर्ण" विकास का नित्यक्रम, राष्ट्रीय पूर्वाग्रह, तीक्ष्ण उलट-फेरों का डर तथा उनमें

---

*ये रहीं कई मिसालें, जो बताती हैं कि साम्राज्यवादी तथा बुर्जुआ वर्ग मज़दूरों में फूट डालने तथा उन्हें समाजवाद से दूर हटाने के लिए "महान शक्तिवाले" तथा राष्ट्रीय विशेषाधिकारों के महत्व को कितना मूल्यवान मानते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवादी लूकस अपनी पुस्तक 'वृहत्तर रोम तथा वृहत्तर ब्रिटेन' (आक्सफ़ोर्ड, १९१२) में मौजूदा ब्रिटिश साम्राज्य में अश्वेत जनों के असमानाधिकारों को स्वीकार करते हैं (पृ० ९६–९७) और लिखते हैं कि "हमारे अपने साम्राज्य में जब श्वेत मजदूर अश्वेत मज़दूरों के साथ-साथ काम करते हैं, तो वे बराबरी के स्तर पर काम नहीं करते और श्वेत जन, कहना चाहिए, अश्वेत का ओवरसियर होता है" (पृ० ९८)। 'युद्ध के उपरांत सामाजिक-जनवाद' नामक पुस्तिका (१९१५) में सामाजिक-जनवाद विरोधी शाही संघ के भूतपूर्व सचिव एर्विन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविश्वास – ये सब चीज़ें वे अतिरिक्त परिस्थितियां थीं, जिन्होंने अवसरवाद को तथा अवसरवाद के साथ पाखंडपूर्ण और कायरतापूर्ण मेल-मिलाप को बढ़ावा दिया, प्रतीयमानतः कुछ ही समय के लिए, प्रतीयमानतः असाधारण कारणों तथा आधारों के वशीभूत। युद्ध ने अवसरवाद को, जिसका दशकों तक पोषण होता रहा, बदल डाला है, उसे ऊंची मंज़िल पर पहुंचा दिया है, उसके रंगों की संख्या तथा विविधता बढ़ायी है, उसके समर्थकों की

बेलगेर सामाजिक-जनवादियों के आचरण की प्रशंसा करते हैं तथा घोषणा करते हैं कि उन्हें बिना "अंतर्राष्ट्रीयतावादी, काल्पनिक" और "क्रांतिकारी" विचार के (पृ० ४४) "विशुद्ध मज़दूर पार्टी" (पृ० ४३), "राष्ट्रीय", "जर्मन मज़दूर पार्टी (पृ० ४५) बन जाना चाहिए। विदेशों में पूंजी-निवेशों से संबंधित एक पुस्तक [125] (१६०७) में जर्मन साम्राज्यवादी सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्सहाउज़ेन जर्मन सामाजिक-जनवादियों पर "राष्ट्रीय मंगल-कल्याण" की, जो उपनिवेशों को हथियाने में निहित है, उपेक्षा करने का आरोप लगाते हैं (पृ० ४३८) तथा ब्रिटिश मज़दूरों की "व्यावहारिकता" की, उदाहरण के लिए, आप्रवासन के विरुद्ध उनके संघर्ष की प्रशंसा करते हैं। विश्व राजनीति की आधारशिलाएं संबंधी एक पुस्तक [126] में जर्मन राजनयज्ञ रूडार्फ़ेर इस सर्वविदित तथ्य पर ज़ोर देते हैं कि पूंजी का अंतर्राष्ट्रीयकरण सत्ता की, प्रभाव की प्राप्ति के लिए, "अधिकांश शेयरों का स्वामी" बनने के लिए राष्ट्रीय पूंजीपतियों के उग्र संघर्ष का कदापि अंत नहीं करता (पृ० १६१)। लेखक कहते हैं कि यह उग्र संघर्ष मज़दूरों को अपनी ओर खींचता है (पृ० १७५)। पुस्तक अक्तूबर, १६१३ की है तथा लेखक पूर्ण स्पष्टता के साथ कहते हैं कि "पूंजी के हित" (पृ० १५७) आधुनिक युद्धों का कारण हैं। वह कहते हैं कि "राष्ट्रीय प्रवृत्ति" का प्रश्न समाजवाद का "मूल" बन जाता है (पृ० १७६), कि सरकारों को सामाजिक-जनवादियों के, जो वस्तुतः अधिकाधिक राष्ट्रीय बनते जा रहे हैं (पृ० १०३,११०,१७६), अंतर्राष्ट्रीयतावादी प्रदर्शनों से कोई डर नहीं होना चाहिए (पृ० १७७)। वह कहते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद तभी विजयी होगा, जब वह मज़दूरों को राष्ट्रीय प्रभाव से बाहर ले आयेगा, क्योंकि मात्र हिंसा से कुछ हासिल नहीं होगा; परंतु राष्ट्रीय भावनाओं का पलड़ा यदि भारी हो जाता है, तो वह हार जायेगा (पृ० १७३–१७४)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संख्या में वृद्धि की है, उनके तर्कों को बहुत नये-नये कुतर्कों से समृद्ध बनाया है, और कहना चाहिए, अनेक नयी धाराओं तथा सरिताओं को अवसरवाद की मुख्य धारा में मिला दिया है। परंतु मुख्य धारा लुप्त नहीं हुई है। इसके बिलकुल उलट हुआ है।

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद अवसरवाद है, जो इस हद तक परिपक्व हो चुका है कि समाजवादी पार्टियों के अंदर इस बुर्जुआ फोड़े का **पहले जैसा** अस्तित्व असंभव हो गया है।

जो लोग सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद तथा अवसरवाद के बीच घनिष्ठतम तथा अटूट संबंध को नहीं देखना चाहते, वे अलग-अलग मामलों तथा "घटनाओं" को दबोच लेते हैं, वे कहते हैं कि यह या वह अवसरवादी अंतर्राष्ट्रीयतावादी हो गया है; यह या वह आमूलवादी अंधराष्ट्रवादी हो गया है। परंतु जहां तक **धाराओं** के विकास का संबंध है, इस तर्क में कोई वज़न नहीं है। पहली चीज़, मज़दूर आंदोलन में अंधराष्ट्रवाद तथा अवसरवाद का एक ही आर्थिक आधार है–सर्वहारा जनसाधारण, मेहनतकश, सामान्यतया उत्पीड़ित जनसाधारण के विरुद्ध सर्वहारा के एक अल्पसंख्यक ऊपरी तबक़े और टुटपुंजिया वर्ग के बीच संघबद्धता, जिसे "अपनी" राष्ट्रीय पूंजी के विशेषाधिकारों के चंद टुकड़े भर मिलते हैं। दूसरी चीज़, दोनों धाराओं की विचारधारात्मक तथा राजनीतिक अंतर्वस्तु एक ही है। तीसरी चीज़, समाजवादियों का अवसरवादी तथा क्रांतिकारी धाराओं में पुराना विभाजन, जो दूसरे इंटरनेशनल के युग (१८८९–१९१४) का अभिलक्षण था, कुल मिलाकर अंधराष्ट्रवादियों तथा अंतर्राष्ट्रीयतावादियों में नये विभाजन से **मेल खाता है**।

बाद के बयान की सच्चाई के बारे में आश्वस्त होने के लिए यह नियम याद रखना ज़रूरी है कि सामाजिक विज्ञान (दूसरे विज्ञानों की तरह) का अलग-अलग मामलों से नहीं, वरन **आम** परिघटनाओं से ताल्लुक़ रहता है। आइये, यूरोप के दस देशों को ले लें–जर्मनी, ब्रिटेन, रूस, इटली, हालैंड, स्वीडन, बुल्गारिया, स्विट्ज़रलैंड, फ़्रांस तथा बेल्जियम। पहले आठ देशों में समाजवादियों का नया विभाजन (अंतर्राष्ट्रीयतावाद के अनुसार) पुराने विभाजन से (अवसरवाद के अनुसार) मेल खाता है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

– जर्मनी में 'समाजवादी मासिक' (*Sozialistische Monatshefte*) पत्रिका, जो अवसरवाद का दुर्ग थी, अब अंधराष्ट्रवाद का दुर्ग बन गयी है। अंतर्राष्ट्रीयतावाद के विचार को उग्र वामपंथियों का समर्थन प्राप्त है। ब्रिटेन में ब्रिटिश समाजवादी पार्टी[127] का लगभग ३/७ भाग अंतर्राष्ट्रीयतावादी है (नवीनतम मतगणना के अनुसार ६६ मत अंतर्राष्ट्रीयतावादी प्रस्ताव के पक्ष में तथा ८४ उसके विरुद्ध), जबकि अवसरवादी **गुट** में (लेबर पार्टी[128] + फ़ेबियन[129] + स्वतंत्र लेबर पार्टी[130]) १/७ **से कम** अंतर्राष्ट्रीयतावादी हैं*। रूस में अवसरवादियों का केंद्र, विसर्जनवादी 'नाशा ज़ार्या' अंधराष्ट्रवाद का केंद्र बन गया है। प्लेख़ानोव तथा अलेक्सिन्स्की ज़्यादा शोर मचाते हैं, परंतु हम पांच वर्ष (१६१०–१६१४) के अनुभव से जानते हैं कि वे रूस में जनसाधारण के बीच क्रमबद्ध प्रचार करने में असक्षम हैं। रूस में अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का केंद्र 'प्राव्दा'-पंथ तथा दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का ग्रुप है, जो जनवरी, १६१२ में पार्टी को पुनःस्थापित करनेवाले अग्रणी मज़दूरों का प्रतिनिधित्व करता है।

इटली में बिसोलाती और उनकी मंडली की पार्टी, जो विशुद्धतया अवसरवादी थी, अंधराष्ट्रवादी हो गयी है। अंतर्राष्ट्रीयतावाद का प्रतिनिधित्व **मज़दूर** पार्टी कर रही है। मज़दूर **जनसाधारण** इस पार्टी की तरफ़ हैं; अवसरवादी, संसदवादी तथा टुटपुंजिया वर्ग अंधराष्ट्रवाद की तरफ़ हैं। इटली में कई महीनों के दौरान स्वतंत्र चयन किया जा सकता था तथा वस्तुतः किया गया, संयोगवश नहीं, अपितु साधारण सर्वहाराओं तथा टुटपुंजिया तबक़ों की वर्ग स्थिति की विभिन्नता के अनुसार।

हालैंड में ट्रोएलस्ट्रा की अवसरवादी पार्टी ने सामान्यतया अंधराष्ट्रवाद से सुलह कर ली है (अपने को इससे धोखा नहीं देना चाहिए कि हालैंड

---

*आम तौर पर **अकेली** स्वतंत्र लेबर पार्टी की ही ब्रिटिश समाजवादी पार्टी से तुलना की जाती है। यह ग़लत है। संगठन के रूप पर नहीं, वरन मूल बातों पर विचार किया जाना चाहिए। दैनिक समाचारपत्रों को ही ले लें। वे **दो** थे – एक ब्रिटिश समाजवादी पार्टी का मुखपत्र *Daily Herald* है तथा दूसरा अवसरवादी गुट का मुखपत्र *Daily Citizen*[131] है। प्रचार, आंदोलन तथा संगठन का वास्तविक काम दैनिक समाचारपत्र ही करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में बड़े बुर्जुआ की तरह टुटपुंजिया लोगों के मन में भी जर्मनी के प्रति विशेष प्रकार की घृणा है, क्योंकि जर्मनी उन्हें बड़ी आसानी से "निगल" सकता है)। गोर्टर तथा पान्नेकोएक के नेतृत्व में मार्क्सवादी पार्टी ने ही सुसंगत, ईमानदार, उत्कट तथा पक्के अंतर्राष्ट्रीयतावादी मुहैया किये हैं। स्वीडन में अवसरवादी नेता ब्रांटिंग इस बात पर क्रोध प्रकट करते हैं कि जर्मन समाजवादियों ने उन पर ग़द्दार होने का आरोप लगाया है, जबकि वामपंथियों के नेता हेगलुंड ने ऐलान किया है कि उनके कुछ समर्थकों की ठीक यही राय है (देखें 'सोत्सिआल-देमोक्रात', अंक ३६)। बुल्गारिया में अवसरवाद के विरोधी, "तेसन्याकी"[132] ने अपने अख़बार ('नोवो व्रेमे')[133] में जर्मन सामाजिक-जनवादियों पर "कुत्सित कार्रवाई करने" का आरोप लगाया है। स्विट्ज़रलैंड में अवसरवादी ग्रेयलिख़ के पक्षधरों में जर्मन सामाजिक-जनवादियों को न्यायसंगत ठहराने की प्रवृत्ति पायी जाती है (उनका मुखपत्र ज़ूरिच *Volksrecht*[134] देखें), जबकि कहीं अधिक आमूलवादी राबर्ट ग्रिम का समर्थन करनेवाले लोगों ने बर्न के अख़बार *Berner Tagwacht*[135] को जर्मन वामपंथियों का मुखपत्र बना दिया है। दस देशों में से केवल दो—फ़्रांस तथा बेल्जियम—अपवाद हैं। परंतु वहां भी हमें अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का अभाव नहीं, वरन उनकी घोर निर्बलता तथा दब्बूपन नज़र आता है (उनके कारणों को अंशतः आसानी से समझा जा सकता है); यह नहीं भुलाया जाना चाहिए कि स्वयं वाइयां ने *L' Humanité*[136] में स्वीकार किया है कि उन्हें अपने पाठकों से अंतर्राष्ट्रीयतावादी स्वरूप की चिट्ठियां मिली हैं, परंतु उन्होंने उनमें से एक को भी पूरी तरह प्रकाशित नहीं किया है।

कुल मिलाकर यदि हम धाराओं तथा प्रवृत्तियों को लें, तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यूरोपीय समाजवाद के ठीक अवसरवादी पक्ष ने ही समाजवाद के साथ ग़द्दारी की और वह अंधराष्ट्रवाद से जा मिला। उसकी शक्ति तथा अधिकृत पार्टियों के अंदर उसकी प्रतीयमानतः सर्वशक्तिमत्ता का स्रोत क्या है? काउत्स्की वैसे तो इतिहास के प्रश्न, जब ख़ासकर प्रसंग प्राचीन रोम का या आज की समस्याओं से कोई सीधा सरोकार न रखनेवाले मामलों का हो, उठाने में ख़ूब दक्ष हैं, परंतु मामला जब स्वयं उनसे सरोकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखता हो, तो वह पाखंडपूर्ण ढंग से यह जताते हैं कि यह उनकी समझ में नहीं ग्रा रहा है। परंतु सब कुछ दिन के उजाले की तरह साफ़ है। ग्रवसरवादियों ग्रौर ग्रंधराष्ट्रवादियों की ग्रपार शक्ति का स्रोत बुर्जुग्रा वर्ग, सरकारों तथा जनरल स्टाफ़ों के साथ **उनकी संघबद्धता** है। यह बात रूस में ग्रकसर नज़रग्रंदाज़ कर दी जाती है, जहां यह माना जाता है कि ग्रवसरवादी लोग समाजवादी पार्टियों का **एक भाग** हैं, कि इन पार्टियों के ग्रंदर सदैव दो चरमपंथी पक्ष रहे हैं तथा रहेंगे, कि इन "चरमपंथों" से दूर रहना चाहिए। वहां ऐसी ही ढेर-सारी बातें मानी जाती हैं, जो कूपमंडूकतावादी नैतिक ग्रालेखों में लिखी होती हैं।

यथार्थ में मज़दूरों की पार्टियों की ग्रवसरवादियों की ग्रौपचारिक सदस्यता इसे कदापि ग़लत सिद्ध नहीं करती कि वे वस्तुगत रूप से बुर्जुग्रा वर्ग के राजनीतिक दस्ते, उसके प्रभाव के वाहक तथा मज़दूर ग्रांदोलन में उसके दलाल हैं। हेरोस्ट्रेटस[137] जैसे विख्यात ग्रवसरवादी ज़्यूदेकुम ने जब यह सामाजिक तथा वर्गीय सत्य स्पष्ट ढंग से प्रदर्शित किया, तो बहुत-से नेक लोग विस्मित रह गये। फ़्रांसीसी समाजवादियों तथा प्लेख़ानोव ने ज़्यूदेकुम की ग्रोर उंगली उठायी, हालांकि वानडरवेल्डे, सेम्बा या प्लेख़ानोव ने यदि दर्पण में ग्रपना चेहरा देखा होता, तो उन्हें ज़रा भिन्न राष्ट्रीय रूपरंगवाले **ज़्यूदेकुम के ग्रलावा** ग्रौर कुछ नज़र न ग्राता। जर्मन केंद्रीय समिति (Vorstand) के सदस्यों ने, जो ग्रब काउत्स्की की प्रशंसा कर रहे हैं ग्रौर जिनकी काउत्स्की द्वारा प्रशंसा की जा रही है, सावधानी, नम्रता ग्रौर शिष्टता के साथ (ज़्यूदेकुम का नाम लिये बिना) फ़ौरन घोषणा की कि वे ज़्यूदेकुम की लाइन से "सहमत नहीं हैं"।

यह उपहासास्पद है, इसलिए कि वास्तव में ग्रकेले ज़्यूदेकुम ही निर्णायक घड़ी में जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी की व्यावहारिक नीतियों में सौ हाग्रज़ेग्रों तथा काउत्स्कियों से ग्रधिक मज़बूत सिद्ध हुए (उसी तरह, जैसे ग्रकेले 'नाशा ज़ार्या' ब्रसेल्स गुट[138] की उन सारी धाराग्रों से ज़्यादा मज़बूत है, जो इस पत्र से नाता तोड़ने से डरती हैं)।

ऐसा क्यों? ठीक इसलिए कि ज़्यूदेकुम के पीछे एक महान शक्ति का बुर्जुग्रा वर्ग, सरकार तथा जनरल स्टाफ़ हैं। ये ज़्यूदेकुम की नीति का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हज़ारों तरीक़ों से समर्थन करते हैं, जबकि उनके विरोधियों की नीति को सारे साधनों से – जेल में ठूंसने और गोली से उड़ाने तक – विफल बना देते हैं। ज़्यूदेकुम की आवाज़ (वानडरवेल्डे, सेम्बा तथा प्लेख़ानोव की आवाज़ की तरह) बुर्जुआ अख़बारों की लाखों-लाख प्रतियों के ज़रिए फैलायी जाती है, जबकि उनके विरोधियों की आवाज़ फ़ौजी सेंसर के कारण वैध समाचारपत्रों में सुनी ही **नहीं जा सकती**!

सब इस पर सहमत हैं कि अवसरवाद कोई सांयोगिक घटना, अलग-अलग व्यक्तियों का पाप, भूल या ग़द्दारी नहीं है, अपितु इतिहास के एक युग की सामाजिक उपज है। पर इस तथ्य के महत्व की ओर सदैव पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। अवसरवाद को वैधतावाद ने पोषित किया है। १८८९ तथा १९१४ के बीच की मज़दूर पार्टियों को बुर्जुआ वैधता से लाभ उठाना पड़ा था। जब संकट आया, तो उन्हें काम के अवैध तरीक़े अपनाने चाहिए थे (परंतु यह संक्रमण अधिकतम स्फूर्ति, संकल्प और नाना फ़ौजी दांव-पेंचों को मिलाये बिना नहीं हो सकता था)। **अकेले** ज़्यूदेकुम इस संक्रमण को रोकने के लिए काफ़ी थे, क्योंकि ऐतिहासिक-दार्शनिक अर्थ में उनके पीछे पूरी "पुरानी दुनिया" थी, क्योंकि वह, ज़्यूदेकुम, यदि व्यावहारिक-राजनीतिक अर्थ में कहें, हमेशा बुर्जुआ वर्ग को उसके वर्ग शत्रु की सारी फ़ौजी योजनाएं बताते रहे हैं तथा हमेशा बताते रहेंगे।

यह एक तथ्य है कि पूरी जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी (और यही बात फ़्रांसीसी तथा **अन्य** पार्टियों पर भी लागू होती है) **केवल** वही करती है, जो ज़्यूदेकुम को प्रसन्न करता है या उन द्वारा सहन किया जाता है। वैध ढंग से और कुछ **नहीं किया जा सकता**। जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी में जो कोई **ईमानदारीभरा** और सचमुच समाजवादी काम होता है, वह उसके केंद्रों का **विरोध करके** होता है, उसकी केंद्रीय समिति तथा केंद्रीय मुखपत्र से **बच निकलकर** किया जाता है, संगठनात्मक अनुशासन का **उल्लंघन करके** किया जाता है, एक नयी पार्टी के गुमनाम नये केंद्रों की ओर से **धड़ेबंदी के ढंग से** किया जाता है, जैसे कि, उदाहरण के लिए, इस वर्ष ३१ मई को जर्मन "वामपंथियों" की *Berner Tagwacht* में प्रकाशित गुमनाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपील[139]। वस्तुत: एक **नयी** पार्टी संवर्द्धित हो रही है, शक्ति प्राप्त करती जा रही है, संगठित हो रही है, यह वास्तविक मज़दूर पार्टी है, सच्चे अर्थ में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी पार्टी है, लेजियन-ज्यूदेकुम-काउत्स्की-हाअज़े-शीडेमान और उनकी मंडली की पुरानी और भ्रष्ट राष्ट्रवादी उदारतावादी पार्टी जैसी नहीं*।

इसलिए अवसरवादी मॉनीटर ने अनुदारपंथी पत्रिका *Preußische Jahrbücher*[140] में उस समय गहन ऐतिहासिक सत्य अनजाने प्रकट कर दिया, जब उन्होंने कहा कि यदि वर्तमान सामाजिक-जनवाद **दायीं ओर झुकेगा**, तो वह अवसरवादियों (**अर्थात बुर्जुआ वर्ग**) के लिए हानिकारक होगा, इसलिए कि तब मज़दूर उसे छोड़ देंगे। अवसरवादियों (और बुर्जुआ लोगों) को ठीक आज जैसी पार्टी की, ऐसी पार्टी की ज़रूरत है, जो दक्षिण तथा वाम पक्षों को **ऐक्यबद्ध करती हो**, जिसका अधिकृत रूप में काउत्स्की प्रतिनिधित्व करते हों, जो संसार में सब चीज़ों का सुगम और "सर्वथा मार्क्सवादी" शब्दावली से समन्वय स्थापित कर सकेंगे।

---

*४ अगस्त के ऐतिहासिक मतदान (युद्ध ऋणों के लिए – सं०) से पहले क्या हुआ, वह अत्यधिक लाक्षणिक है। अधिकृत पार्टी ने इस घटना को नौकरशाही पाखंड का नक़ाब पहिना दिया है, वह कहती है कि फ़ैसला बहुमत ने किया तथा सबने सर्वसम्मति से **पक्ष में** मत दिया। परंतु इस पाखंड का श्त्रोबेल ने *Die Internationale* पत्रिका में पर्दाफ़ाश कर दिया तथा सच्ची बात कह दी। सामाजिक-जनवादी धड़े में **दो** गुट थे, उनमें से हरेक तैयार **अल्टीमेटम** के साथ, याने गुटपरस्त और फूटपरस्त निर्णय के साथ आया। एक गुट, अवसरवादियों के गुट ने, जिसमें लगभग तीस व्यक्ति थे, **हर सूरत में पक्ष में** मतदान करने का निर्णय किया, दूसरे गुट, वामपंथियों के गुट ने, जिसमें लगभग पंद्रह व्यक्ति थे, विरोध में मतदान करने का – कम दृढ़ता के साथ – फ़ैसला किया। जब "मध्यमार्ग", याने "दलदल" ने, जो कोई दृढ़ स्थिति नहीं अपनाता, अवसरवादियों के साथ मतदान किया, तो वामपंथियों को करारी हार का मुंह देखना पड़ा और वे झुक गये! जर्मन सामाजिक-जनवादियों की एकता सरासर पाखंड है, जो दरअसल वामपंथियों द्वारा अवसरवादियों के अल्टीमेटमों के आगे अनिवार्यत: झुक जाने पर पर्दा डालता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथनी में—समाजवाद और क्रांतिकारिता—जनता के लिए, जनसाधारण के लिए, मज़दूरों के लिए; करनी में—ज़्यूदेकुमपंथ, अर्थात किसी भी गंभीर संकट में बुर्जुआ वर्ग से चिपके रहना। हम कहते हैं—**किसी भी** संकट में, इसलिए कि केवल युद्ध की सूरत में ही नहीं, वरन किसी भी गंभीर राजनीतिक हड़ताल की सूरत में भी "सामंतवादी" जर्मनी "स्वतंत्र-संसदवादी" ब्रिटेन या फ़्रांस की तरह इस या उस नाम से **तत्काल** मार्शल लॉ लागू कर देगा। इसमें किसी भी समझदार और होश-हवास रखनेवाले व्यक्ति को कोई संदेह नहीं हो सकता।

इससे ऊपर उठाये गये इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त होता है—सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का कैसे मुक़ाबला किया जाये? सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद अवसरवाद है, जो अपेक्षाकृत "शांतिपूर्ण" पूंजीवाद की लंबी अवधि के दौरान इस हद तक परिपक्व हो चुका है, इतना सुदृढ़ तथा धृष्ट हो चुका है, अपनी राजनीतिक विचारधारा में इतना निश्चित हो चुका है, बुर्जुआ वर्ग तथा सरकारों के साथ इतने घनिष्ठ रूप से जुड़ चुका है कि सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टियों **के अंदर इस तरह की धारा** की मौजूदगी को सहन **नहीं किया जा सकता।** किसी छोटे-से प्रांतीय नगर की बढ़िया सड़क पर चलने के लिए पतले, नाज़ुक तलेवाले जूतों से भले ही काम चल जाये, पर पहाड़ों पर चलने के लिए तो भारी और घुंडीदार कील जड़े जूते ही आवश्यक होते हैं। यूरोप में समाजवाद अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण मंज़िल से, संकुचित राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकल चुका है। १९१४–१९१५ के युद्ध के छिड़ने के साथ उसने क्रांतिकारी कार्रवाई की मंज़िल में प्रवेश किया है; इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता कि अवसरवाद से पूरी तरह नाता तोड़ने, उसे मज़दूर पार्टियों से बाहर निकालने का समय आ चुका है।

कार्यभारों की, जिन्हें समाजवाद के दुनिया भर में विकास का नया युग उसके समक्ष प्रस्तुत करता है, यह प्रस्थापना, निस्संदेह, तुरंत यह नहीं बताती कि अलग-अलग देशों में टुटपुंजिया अवसरवादी पार्टियों से मज़दूरों की क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी पार्टियों को पृथक करने की प्रक्रिया कितनी तेज़ी से और किन निश्चित रूपों में अग्रसर होगी। परंतु इससे यह बात स्पष्ट रूप से अनुभव करने की आवश्यकता प्रकट होती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है कि इस प्रकार की पृथकता अनिवार्य है और मज़दूर पार्टियों की पूरी नीति इसी दृष्टिकोण से निर्देशित करनी चाहिए। १९१४–१९१५ का युद्ध इतिहास में इतना बड़ा मोड़ है कि अवसरवाद के प्रति रुख़ पहले की तरह नहीं रह सकता। जो हो चुका है, उसे मिटाया नहीं जा सकता। मज़दूरों के दिमाग़ से, या बुर्जुआ वर्ग के अनुभव से, या सामान्यतया हमारे युग के राजनीतिक सबक़ों से यह तथ्य मिटाना असंभव है कि अवसरवादी संकट की घड़ी में मज़दूर पार्टियों के अंदर उन तत्वों का मुख्य अंश सिद्ध हुए, जो भागकर बुर्जुआ वर्ग के पक्ष में चले गये। अवसरवाद–यदि यूरोपव्यापी पैमाने की बात की जाये–युद्ध से पहले, कहना चाहिए, किशोरावस्था में था। युद्ध छिड़ने के साथ वह प्रौढ़ता की अवस्था में पहुंच गया, उसकी "मासूमियत" और तरुणाई लौटायी नहीं जा सकती। संसद-वादियों, पत्रकारों, मज़दूर आंदोलन के नौकरशाहों, विशेषाधिकारप्राप्त दफ़्तर कर्मचारियों का एक पूरा तबक़ा, सर्वहारा का एक ख़ास हिस्सा उभरा है, जो अपने राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के साथ **घुल-मिल गया है** तथा जिसका मूल्यांकन करने तथा जिसे "अनुकूलित" बनाने में यह बुर्जुआ वर्ग पूरी तरह सक्षम सिद्ध हुआ है। इतिहास की धारा न तो कभी पीछे मोड़ी जा सकती है और न रोकी जा सकती है–हम आरंभिक, क़ानूनी मज़दूर वर्ग संगठनों से, जो अवसरवाद के शिकंजे में हैं, क्रांतिकारी संगठनों की ओर, जो जानते हैं कि अपने को कैसे क़ानूनियत तक सीमित नहीं रखा जाता और जो अवसरवादी ग़द्दारी से अपनी रक्षा करना जानते हैं, ऐसे सर्वहारा के संगठनों की ओर निर्भीकतापूर्वक बढ़ सकते हैं और हमें बढ़ना चाहिए, जो "सत्ता के लिए संघर्ष", बुर्जुआ वर्ग का तख़्ता उलटने के वास्ते संघर्ष शुरू कर रहा है।

प्रसंगतः हम देख सकते हैं कि उनके विचार कितने ग़लत हैं, जो अपने तथा मज़दूरों के दिमाग़ों को इस प्रश्न से धुंधला बनाते हैं कि दूसरे इंटरनेशनल के गेद, प्लेख़ानोव तथा काउत्स्की जैसे प्रमुख नेताओं के साथ क्या किया जाना चाहिए। वस्तुतः ऐसा कोई प्रश्न उठता ही नहीं: यदि ये लोग नये कार्यभारों को समझने में विफल रहते हैं, तो उन्हें एक किनारे खड़े रहना होगा अथवा उन्हें इस समय की तरह अवसरवादियों के हाथों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में "बंदी" रहना पड़ेगा। यदि ये लोग अपने को "बंदी स्थिति" से मुक्त कर देते हैं, तो उन्हें क्रांतिकारियों के खेमे में लौटने की राह में किसी तरह की राजनीतिक बाधाओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। कुछ भी हो, धाराओं के बीच संघर्ष के प्रश्न, मज़दूर आंदोलन के नये युग के प्रश्न की जगह अलग-अलग व्यक्तियों की भूमिका के प्रश्न को प्रतिस्थापित करना उपहासास्पद है।

८

मज़दूर वर्ग के क़ानूनी जन-संगठन दूसरे इंटरनेशनल के युग में समाजवादी पार्टियों के शायद सबसे महत्वपूर्ण लक्षण हैं। वे जर्मन पार्टी में सबसे सशक्त थे और यहीं १९१४–१९१५ के युद्ध ने सबसे तीक्ष्ण संकट पैदा किया तथा प्रश्न को सीधे-सीधे पेश कर दिया। स्पष्ट है कि क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरूआत के फलस्वरूप इन क़ानूनी संगठनों को पुलिस विघटित कर देती, जबकि पुरानी पार्टी ने—लेजियन से लेकर काउत्स्की समेत—वर्तमान क़ानूनी संगठनों को बरक़रार रखने की ख़ातिर सर्वहारा के क्रांतिकारी लक्ष्यों की बलि दे दी थी। इस बात से चाहे कितना ही इनकार किया जाये, यह एक तथ्य है। क्रांति करने के सर्वहारा के अधिकार को वर्तमान पुलिस क़ानून द्वारा अनुमत संगठनों के बदले, चंद टुकड़ों के बदले बेच दिया गया।

जर्मन सामाजिक-जनवादी ट्रेड-यूनियनों के नेता कार्ल लेजियन की 'ट्रेड-यूनियन अधिकारियों को पार्टी के आंतरिक जीवन में क्यों अधिक सक्रिय भाग लेना चाहिए?' शीर्षक पुस्तिका (बर्लिन, १९१५) को ले लें। यह २७ जनवरी, १९१५ को ट्रेड-यूनियन अधिकारियों की सभा में लेखक द्वारा पढ़ी गयी रिपोर्ट है। अपनी रिपोर्ट में लेजियन ने एक ऐसी बहुत दिलचस्प दस्तावेज़ को पढ़ा और उसे अपनी पुस्तिका में दुहराया, जिसे फ़ौजी सेंसर अन्यथा पास न करता। यह दस्तावेज़—'निडेरबार्निम ज़िले के' (बर्लिन का एक उपनगर) 'वक्ताओं के लिए सामग्री' नाम से ज्ञात—वामपंथी जर्मन सामाजिक-जनवादियों के विचारों, पार्टी के ख़िलाफ़ उनके विरोध का प्रतिपादन है। दस्तावेज़ में कहा गया है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी एक बात पहले से नहीं देख सके और नहीं देख सकते थे, याने यह—

"कि जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी तथा ट्रेड-यूनियनों की पूरी संगठित शक्ति ने जंगी सरकार का पक्ष लिया और यह पूरी शक्ति जनसाधारण की क्रांतिकारी ऊर्जस्विता कुचलने के लिए प्रयोग में लायी गयी" (लेजियन की पुस्तिका का पृष्ठ ३४)।

यह असंदिग्ध सत्य है। उसी दस्तावेज़ में निम्नलिखित वक्तव्य भी सत्य है—

"४ अगस्त को राइख़स्टाग में सामाजिक-जनवादी ग्रुप के मतदान ने यह सिद्ध कर दिया कि कोई दूसरा रुख़, भले ही उसकी जनसाधारण में बहुत गहरी जड़ें होतीं, जांची-परखी पार्टी के नेतृत्व में अपना रास्ता नहीं बना सकता था। वह केवल पार्टी निकायों की इच्छा के विरुद्ध ही, पार्टी तथा ट्रेड-यूनियनों के प्रतिरोध पर क़ाबू पाकर ही अपना रास्ता बना सकता था" (वही)।

यह असंदिग्ध सत्य है।

"यदि राइख़स्ताग में सामाजिक-जनवादी ग्रुप ने ४ अगस्त को अपने कर्त्तव्य का पालन किया होता, तो संगठन का बाहरी रूप शायद नष्ट हो गया होता, परंतु आत्मा अक्षुण्ण रह जाती, वह आत्मा, जिसने पार्टी में समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून के वर्षों में प्राण फूंके थे तथा उसे सारी कठिनाइयों पर क़ाबू पाने में मदद दी थी" (वही)।

लेजियन की पुस्तिका में यह लक्षित किया गया है कि उनकी रिपोर्ट को सुनने के लिए जमा किया गया और अपने को अग्रणी ट्रेड-यूनियन अधिकारी तथा कर्मचारी बतानेवाला "नेता" समूह यह बात सुनकर हंस रहा था। उन्हें यह विचार **उपहासास्पद** लगा कि संकट की घड़ी में ग़ैर क़ानूनी क्रांतिकारी संगठनों को क़ायम करना (जैसा कि असाधारण क़ानून के समय किया गया था) संभव तथा आवश्यक है। लेजियन, जो बुर्जुआ वर्ग के सबसे वफ़ादार प्रहरी थे, छाती पीटते हुए चीख़े—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"यह स्पष्टतः अराजकतावादी विचार है—संगठन को ध्वस्त करना, ताकि जनसाधारण द्वारा समस्या का समाधान कराया जा सके। मेरे लिए इसमें लेशमात्र संदेह नहीं है कि यह अराजकतावादी विचार है।"

"बिलकुल सही, बिलकुल सही!" बुर्जुआ वर्ग के तलुवे चाटनेवालों का, जो मज़दूर वर्ग के सामाजिक-जनवादी संगठनों के नेता के रूप में पेश आते हैं, सामूहिक स्वर गूंज उठा (वही, पृ० ३७)।

शिक्षाप्रद चित्र। बुर्जुआ वैधता लोगों को इस तरह भ्रष्ट कर देती तथा विमूढ़ बना देती है कि वे क्रांतिकारी संघर्ष के नेतृत्व के लिए एक **और प्रकार के** संगठनों, **ग़ैर क़ानूनी** संगठनों की आवश्यकता की **कल्पना** तक नहीं कर सकते। लोग इस हद तक सोचने लगे हैं कि पुलिस की अनुमति से विद्यमान क़ानूनी यूनियनें एक तरह की लक्ष्मण-रेखा हैं, कि ऐसी यूनियनों को संकट के समय **नेतृत्वकारी** यूनियनों के रूप में **बरक़रार रखना** सर्वथा कल्पनीय है! यह रहा अवसरवाद का जीता-जागता द्वंद्ववाद—क़ानूनी यूनियनों की निरी वृद्धि, अपने को मुनीमगिरी तक सीमित रखने की मूर्ख, परंतु ईमानदार कूपमंडूकों की निरी आदत ने ऐसी स्थिति पैदा की है, जिसमें संकट की घड़ी में ये ईमानदार कूपमंडूक ग़द्दार और धोखेबाज़ सिद्ध हुए हैं, जो जनसाधारण की ऊर्जस्विता को **दबा देते हैं**। यह संयोग की बात नहीं है। क्रांतिकारी संगठन में संक्रमण करना चाहिए, यह बदली हुई ऐतिहासिक स्थिति का, सर्वहारा क्रांतिकारी कार्रवाई के युग का तक़ाज़ा है—परंतु यह संक्रमण पुराने नेताओं, क्रांतिकारी ऊर्जस्विता का गला घोंटनेवालों को **नज़रअंदाज़ करके**, पुरानी पार्टी को **नज़रअंदाज़ करके**, उसे **नष्ट करके** ही किया जा सकता है।

निस्संदेह प्रतिक्रांतिकारी कूपमंडूक चीख़ उठते हैं: "अराजकतावाद!"—ठीक वैसे ही, जैसे एडुअर्ड डेविड कार्ल लीब्कनेख़्त की भर्त्सना करते हुए "अराजक़तावाद" के बारे में चीख़े थे। ऐसे लगता है कि जर्मनी में केवल वे ही नेता ईमानदार रह गये हैं, जिन्हें अवसरवादी लोग अराजकतावादी बताकर गालियां देते हैं...

समकालीन सेना को ही ले लें। यह संगठन की एक अच्छी मिसाल है। यह संगठन केवल इसलिए अच्छा है कि वह **नमनीय** है और साथ ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाखों-लाख लोगों को **एक संकल्प-शक्ति** देने में सक्षम है। आज ये लाखों लोग देश के विभिन्न भागों में, अपने घरों में रहते हैं; कल लामबंदी का हुक्म दे दिया जाता है और वे नियत स्थान पर जमा हो जाते हैं। आज वे ख़ंदक़ों में लेटे हुए हैं और महीनों तक लेटे रहते हैं; कल वे दूसरी व्यूह-रचना बनाकर धावा बोलते हैं। आज वे गोलियों और श्रैपनेल के गोलों से बचते हुए चमत्कार कर दिखाते हैं; कल वे सीधी मुठभेड़ में चमत्कार कर दिखाते हैं। आज उनके अगले दस्ते ज़मीन के नीचे सुरंगें बिछाते हैं, कल वे ऊपर उड़ते हवाबाज़ों से संकेत पाते हुए बीसियों मील आगे बढ़ते हैं। इसे संगठन कहते हैं, जब एक लक्ष्य की सिद्धि में तथा एक संकल्प से अनुप्राणित होकर लाखों-लाख लोग बदलती परिस्थितियों तथा संघर्ष की आवश्यकताओं के अनुसार अपने संपर्क तथा अपने आचरण के रूप बदलते हैं, अपना स्थान तथा गतिविधियों के तरीक़े बदलते हैं, अपने औज़ार तथा अपने हथियार बदलते हैं।

यही बात बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध मज़दूर वर्ग के संघर्ष पर लागू होती है। आज कोई क्रांतिकारी स्थिति विद्यमान नहीं है, ऐसी अवस्थाएं नहीं हैं, जो जनसाधारण में बेचैनी पैदा करती हैं या उनकी गतिविधियों में तेज़ी लाती हैं, आज आपको मतपत्र दिया जाता है—उसे पकड़िये, उसे अपने दुश्मनों के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए संगठनबद्ध होना सीखिये, संसद में उन लोगों को आरामदेह जगह दिलाने के लिए नहीं, जो जेल जाने के डर से कुर्सियों से चिपके रहते हैं। कल मतपत्र आपसे छीन लिया जाता है और आपको एक राइफ़ल या तेज़ी से गोले दाग़नेवाली शानदार और आधुनिकतम तोप सौंप दी जाती है—मौत और तबाही ढानेवाले इन हथियारों को ले लें, भावुकतापूर्ण ढंग से रिरियानेवालों को न सुनें, जो युद्ध से डरते हैं; संसार में बहुत कुछ अभी ऐसा बचा हुआ है, जिसे मज़दूर वर्ग की मुक्ति की ख़ातिर गोला-बारूद और तलवार से नष्ट करना **होगा**; यदि जनसाधारण में रोष और निराशा बढ़ती है, यदि क्रांतिकारी स्थिति पैदा होती है, तो नये संगठनों का निर्माण करने के लिए, मौत और तबाही के इन उपयोगी हथियारों को **अपनी** सरकार तथा **अपने** बुर्जुआ वर्ग **के विरुद्ध इस्तेमाल करने** के लिए तैयार हो जाइये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़ाहिर है, यह आसान नहीं है। यह तैयारी की अध्यवसायपूर्ण गतिविधियों का तक़ाज़ा करेगा। यह बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियों का तक़ाज़ा करेगा। यह संगठन तथा संघर्ष का **नया** रूप है, उसे भी **सीखना पड़ेगा** और ज्ञान ग़लतियों और पराजयों के बिना हासिल नहीं होता। वर्ग संघर्ष के इस रूप का चुनावों में भाग लेने से वही संबंध है, जो किसी दुर्ग पर धावा बोलने से, सैन्यव्यूहन से, कूच करने से या ख़ंदक़ों में लेटे रहने से है। संघर्ष की ऐसी विधि इतिहास में तात्कालिक विषय-सूची के रूप में **बहुत अकसर** उपस्थित **नहीं** होती। परंतु उसका महत्व और उसका परिणाम दशकों तक अनुभव किया जाता है। ऐसे **दिन**, जब संघर्ष की **ऐसी** विधि का उपयोग किया जा सकता है तथा किया जाना चाहिए, अन्य ऐतिहासिक युगों के **बीसियों वर्षों** के बराबर होते हैं।

...अब ज़रा कार्ल लेजियन से कार्ल काउत्स्की की तुलना कीजिये। काउत्स्की लिखते हैं:

"जब तक पार्टी छोटी थी, युद्ध के ख़िलाफ़ प्रत्येक विरोध ने साहसिक कारनामे के रूप में प्रचारात्मक कार्य किया... हाल के रूसी तथा सर्बियाई साथियों के आचरण को सार्विक मान्यता मिली थी। पार्टी जितनी मज़बूत बनती जाती है, उसके निर्णयों के प्रयोजनों में प्रचार संबंधी कारण व्यावहारिक परिणामों के आकलन से अधिकाधिक जुड़ते जाते हैं, दोनों क़िस्म के प्रयोजनों की ओर समुचित ध्यान देना अधिक कठिन होता जाता है, फिर भी दोनों में से एक को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इसलिए हम जितने शक्तिशाली बनते जाते हैं, हर नयी तथा जटिल स्थिति में हमारे बीच मतभेद उतनी ही आसानी से पैदा होते हैं" ('अंतर्राष्ट्रीयतावाद तथा युद्ध', पृ० ३०)।

काउत्स्की के ये तर्क लेजियन के तर्कों से केवल इस अर्थ में भिन्न हैं कि वे पाखंडभरे तथा कायरतापूर्ण हैं। काउत्स्की वस्तुतः क्रांतिकारी गतिविधियों का लेजियनों द्वारा नीचतापूर्ण ढंग से परित्याग किये जाने का समर्थन करते हैं तथा उसे न्यायसंगत ठहराते हैं। परंतु ऐसा वह छुपकर करते हैं, अपनी स्थिति निश्चित रूप से व्यक्त किये बिना करते हैं; वह संकेत देकर बच निकलते हैं, एक ओर लेजियन और दूसरी ओर रूसियों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के क्रांतिकारी आचरण की प्रशंसा करने तक सीमित रहते हैं। क्रांतिकारियों के प्रति इस तरह का आचरण हम, रूसी, केवल उदारतावादियों में ही देखने के आदी हैं: उदारतावादी क्रांतिकारियों के "साहस" को मानने के लिए सदैव तैयार रहते हैं, परंतु साथ ही वे अपनी घोर अवसरवादी कार्यनीति को किसी भी सूरत में नहीं छोड़ेंगे। काउत्स्की की ओर से इस प्रकार के "आभार-प्रदर्शन" को स्वाभिमानी क्रांतिकारी स्वीकार नहीं करेंगे और प्रश्न के इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण को रोषपूर्वक ठुकरा देंगे। यदि कोई क्रांतिकारी स्थिति विद्यमान न होती, यदि क्रांतिकारी कार्रवाइयों का प्रचार करना अनिवार्य न होता, तो रूसियों तथा सर्बियाइयों का आचरण **सही नहीं** होता और उनकी कार्यनीति ग़लत होती। लेजियन और काउत्स्की जैसे सूरमाओं में अपनी आस्थाओं पर टिके रहने का साहस होना चाहिए, उन्हें यह बात खुले तौर पर कहनी चाहिए।

परंतु रूसी तथा सर्बियाई समाजवादियों की कार्यनीति यदि "मान्यता" का पात्र है, तो "मज़बूत" पार्टियों, जर्मन, फ़्रांसीसी, आदि पार्टियों की **विपरीत** कार्यनीति को न्यायसंगत ठहराना ग़लत और अपराधपूर्ण है। अस्पष्ट परिभाषा – "व्यावहारिक परिणामों" – को जान-बूझकर इस्तेमाल करके काउत्स्की ने यह सीधा-सादा सत्य **छुपाया** है कि बड़ी और सशक्त पार्टियां अपने संगठन सरकार द्वारा भंग कर दिये जाने, अपने नेता गिरफ़्तार किये जाने तथा अपना धन सरकार द्वारा ज़ब्त कर दिये जाने की संभावना से **भयभीत हो गयीं**। इसका अर्थ यह है कि काउत्स्की क्रांतिकारी कार्यनीति से निकलनेवाले असुखद "व्यावहारिक परिणामों" की दुहाई देकर समाजवाद से ग़द्दारी को न्यायसंगत ठहराते हैं। क्या यह मार्क्सवाद के साथ अनाचार नहीं है?

"हम लोग गिरफ़्तार हो गये होते," – कहा जाता है कि ये शब्द एक सामाजिक-जनवादी संसद-सदस्य ने, जिसने ४ अगस्त को युद्ध ऋणों के पक्ष में मत दिया था, बर्लिन में मज़दूरों की एक सभा में कहे थे। मज़दूर जवाब में चिल्लाये: "तो इसमें बुराई ही क्या थी?"

यदि जर्मन **तथा फ़्रांसीसी** मज़दूर जनसाधारण में क्रांतिकारी भावनाओं का और क्रांतिकारी कार्रवाई के लिए तैयार करने की आवश्यकता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार का समावेश करने के लिए और कोई संकेत नहीं था, तो साहसपूर्ण भाषण करने के लिए एक संसद-सदस्य की गिरफ़्तारी अपने क्रांतिकारी कार्य में विभिन्न देशों के सर्वहाराओं की एकता का आह्वान करने के लिए उपयोगी होती। इस तरह की एकता स्थापित करना आसान नहीं होता: ठीक इस कारण संसद के सदस्यों का, जो अपने ऊंचे पदों से पूरी राजनीति को देख सकते थे, यह कर्त्तव्य था कि वे पहल करते।

केवल युद्धकाल में ही नहीं, वरन किसी भी तीक्ष्ण राजनीतिक स्थिति में—किसी भी प्रकार की क्रांतिकारी जन-कार्रवाइयों की अवधियों की तो बात ही क्या—सबसे स्वतंत्र बुर्जुआ देश की सरकार तक वैध संगठन भंग करने, उनका धन जब्त करने, उनके नेताओं को गिरफ़्तार करने और इसी तरह के अन्य "व्यावहारिक परिणामों" की धमकी देगी। तब हमें क्या करना चाहिए? काउत्स्की की तरह इन आधारों पर अवसरवादियों को न्यायसंगत ठहरायें? परंतु इसका मतलब होगा सामाजिक-जनवादी पार्टियों के राष्ट्रवादी-उदारतावादी पार्टियों में रूपांतरण को पुनीतता प्रदान करना।

समाजवादी के लिए केवल एक ही निष्कर्ष निकालना संभव है—"यूरोपीय" पार्टियों की शुद्ध वैधता और मात्र-वैधता अपनी भूमिका व्यवहारत: संपन्न कर चुकी है तथा पूर्व साम्राज्यवादी मंज़िल में पूंजीवाद के विकास के फलस्वरूप बुर्जुआ मज़दूर नीति की आधारशिला बन गयी है। यह आवश्यक हो गया है कि उसे एक ग़ैर क़ानूनी आधार, एक ग़ैर क़ानूनी संगठन के निर्माण द्वारा, ग़ैर क़ानूनी सामाजिक-जनवादी कार्य द्वारा—परंतु एक भी क़ानूनी स्थिति का परित्याग किये बिना—संवर्द्धित किया जाये। यह काम कैसे किया जाये, यह अनुभव बतायेगा, बशर्ते इस राह पर चलने की इच्छा और साथ ही यह अनुभूति मौजूद हो कि यह आवश्यक है। रूस के क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादियों ने १९१२–१९१४ में यह साबित किया था कि यह कार्यभार पूरा किया जा सकता है। दूमा में मज़दूरों के प्रतिनिधि मुरानोव ने, जिन्होंने मुक़दमे में बाक़ी दूसरों से बेहतर आचरण का परिचय दिया था तथा जिन्हें साइबेरिया निर्वासित कर दिया गया था, स्पष्ट रूप से सिद्ध किया कि मंत्रालयवादी[141] संसदवाद के अलावा (हेंडेर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन, सेम्बा तथा वानडरवेल्डे से लेकर ज्यूदेकुम और शीडेमान तक; ज्यूदेकुम तथा शीडेमान पूरी तरह "मंत्रालयवादी" हैं, हालांकि उन्हें उपकक्ष से आगे बढ़ने की इजाज़त नहीं है!) **ग़ैर क़ानूनी तथा क्रांतिकारी** संसदवाद भी हो सकता है। कोसोव्स्कियों तथा पोत्रेसोवों को चाटुकारों के "यूरोपीय" संसदवाद की प्रशंसा करने या उसे स्वीकृत करने दीजिये—हम मज़दूरों को यह बताते हुए नहीं थकेंगे कि लेजियन, काउत्स्की, शीडेमान का **इस तरह का** वैधतावाद, **इस तरह का** सामाजिक-जनवाद मात्र तिरस्कार का पात्र है।

९

अब लेखा-जोखा लें।

दूसरे इंटरनेशनल का पतन यूरोप में अधिकृत सामाजिक-जनवादी पार्टियों की बहुसंख्या द्वारा अपनी आस्थाओं के साथ, स्टुटगार्ट तथा बैसेल कांग्रेसों में पास अपने महत्वपूर्ण प्रस्तावों के साथ लज्जाजनक ग़द्दारी में सबसे स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त हुआ है। परंतु यह पतन, जो अवसरवाद की पूर्ण विजय, सामाजिक-जनवादी पार्टियों के राष्ट्रवादी-उदारतावादी मजदूर पार्टियों में रूपांतरण का द्योतक है, दूसरे इंटरनेशनल के पूरे ऐतिहासिक युग का—१९वीं शताब्दी के अंत तथा २०वीं शताब्दी के आरंभ के बीच के युग का—परिणाम मात्र है। इस युग की, जो पश्चिम यूरोपीय बुर्जुआ तथा राष्ट्रीय क्रांतियों की निष्पत्ति से समाजवादी क्रांतियों के समारंभ में संक्रमणात्मक युग है, वस्तुगत अवस्थाएं अवसरवाद को जन्म देती रहीं तथा पोषित करती रहीं। इस अवधि में हम कुछ यूरोपीय देशों में मज़दूर तथा समाजवादी आंदोलन में फूट पड़ते देखते हैं, यह दरार मुख्यतया अवसरवादी ढंग की है (ब्रिटेन, इटली, हालैंड, बुल्गारिया तथा रूस); दूसरे देशों में हम उसी ढंग की प्रवृत्तियों का लंबा और कठोर संघर्ष देखते हैं (जर्मनी, फ़्रांस, बेल्जियम, स्वीडन तथा स्विट्ज़रलैंड)। महायुद्ध द्वारा पैदा किये गये संकट ने सारी आड़ों को नष्ट कर दिया है, सारी परिपाटियों का सफ़ाया कर दिया है, बहुत पहले ही पक चुके फोड़े को चीर दिया है तथा बुर्जुआ वर्ग के साथी की उसकी सही भूमिका में अवसर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाद को बेनक़ाब कर दिया है। इस तत्व का मज़दूरों की पार्टियों से पूर्ण संगठनात्मक संबंध-विच्छेद अनिवार्य हो गया है। साम्राज्यवाद का युग क्रांतिकारी सर्वहाराओं के हरावल का और मज़दूर वर्ग के अर्द्धटुटपुंजिया अभिजात तबक़े का, जो "अपने" राष्ट्र के "महाशक्तीय" दर्जे के विशेषाधिकारों के टुकड़ों पर पलता है, एक ही पार्टी के अंदर सह-अस्तित्व की इजाज़त नहीं दे सकता। यह पुराना सिद्धांत कि एक ही पार्टी, "अति-वादिता" से मुक्त पार्टी के अंदर अवसरवाद एक "वैध लक्षण" है, अब मज़दूरों के साथ ज़बर्दस्त धोखा, मज़दूर आंदोलन की राह में एक बाधा सिद्ध हो गया है। बेनक़ाब अवसरवाद, जिसके प्रति मज़दूर जनसाधारण के मन में तुरंत घृणा पैदा होती है, इतना भयावह तथा नुक़सानदेह नहीं है, जितना मध्यमार्ग का वह सिद्धांत, जो अवसरवादी व्यवहार को न्याय-संगत ठहराने के लिए मार्क्सवादी सूत्रों का उपयोग करता है तथा नाना कुतर्कों की मदद से यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता है कि क्रांतिकारी कार्रवाई असामयिक है, आदि। इस सिद्धांत के सबसे विख्यात प्रवक्ता और साथ ही दूसरे इंटरनेशनल के विख्यात अधिकारी काउत्स्की ने अपने को परम पाखंडी तथा मार्क्सवाद के साथ अनाचार की कला में मंजा हुआ व्यक्ति सिद्ध किया है। लाखों सदस्योंवाली जर्मन पार्टी में ज़रा भी ईमान-दार, वर्ग-सचेत तथा क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादियों ने इस प्रकार के "नेता" की ओर से रोषपूर्वक मुंह फेर लिया है, जिसकी ज्यूदेकुमों तथा शीडेमानों द्वारा इतनी ज़ोरदार ढंग से पैरवी की जाती है।

सर्वहारा जनसाधारण, जिनके शायद ९० प्रतिशत भूतपूर्व नेता बुर्जुआ वर्ग के पक्ष में चले गये हैं, अंधराष्ट्रवाद की बाढ़ के सामने और मार्शल लॉ और फ़ौजी सेंसर के दबाव के सामने अपने को फूटग्रस्त और असहाय पा रहे हैं। परंतु युद्ध द्वारा उत्पन्न वस्तुगत क्रांतिकारी स्थिति, जो फैल रही और विकसित हो रही है, अनिवार्यतः क्रांतिकारी भावनाएं पैदा कर रही है तथा सर्वोत्तम तथा सबसे वर्ग-सचेत सर्वहाराओं को अग्नि-दीक्षित कर रही है तथा प्रबुद्ध बना रही है। जनसाधारण की मनःस्थिति में इस तरह का सहसा परिवर्तन संभव ही नहीं, वरन अधिकाधिक संभाव्य होता जा रहा है, जो रूस में १९०५ के आरंभ में "गपोनवाले आंदोलन"[142]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के सिलसिले में देखने को मिला था, जब कई माहों और कभी-कभी कुछ सप्ताहों के दौरान पिछड़े हुए सर्वहारा जनसाधारण के बीच से लाखों लोगों की ऐसी सेना उभरी, जिसने सर्वहारा के क्रांतिकारी हरावल का अनुसरण किया। हम यह तो नहीं जान सकते कि इस युद्ध के तुरंत बाद, इसके दौरान, आदि कोई सशक्त क्रांतिकारी आंदोलन विकसित होगा या नहीं, बहरहाल इस दिशा में कार्य ही समाजवादी कार्य कहलाने योग्य है। गृह-युद्ध का नारा इस कार्य का सार प्रस्तुत करता तथा उसे निर्देशित करता है और उन्हें ऐक्यबद्ध करने तथा सुदृढ़ बनाने में सहायता देता है, जो सर्वहारा वर्ग को अपनी सरकार और अपने बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध क्रांतिकारी संघर्ष करने में मदद देना चाहते हैं।

रूस में टुटपुंजिया अवसरवादी तत्वों से क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी सर्वहारा तत्वों के पूर्ण संबंध-विच्छेद का मार्ग मज़दूर आंदोलन के पूरे इतिहास द्वारा प्रशस्त किया गया। उस आंदोलन का वे सब घोर अहित कर रहे हैं, जो इस इतिहास को नज़रअंदाज़ करते हैं तथा "धड़ेबंदी" की निंदा करते हुए रूस में सर्वहारा पार्टी के गठन की उस वास्तविक प्रक्रिया को समझने में अपने को असमर्थ बनाते हैं, जो नाना प्रकार के अवसरवाद के विरुद्ध अनेक वर्षों के संघर्ष के दौरान विकसित होती रही है। वर्तमान युद्ध में भाग ले रही तमाम "महान" ताक़तों में अकेला रूस ऐसा है, जो हाल में क्रांति के बीच से गुज़रा है। उस क्रांति का बुर्जुआ अंतर्य, पर साथ ही सर्वहारा की निर्णायक भूमिका मज़दूर आंदोलन में बुर्जुआ तथा सर्वहारा धाराओं को विभक्त किये बिना नहीं रह सकते थे। लगभग २० वर्षों (१८९४–१९१४) की पूरी अवधि में, जिसके दौरान रूसी सामाजिक-जनवाद आम मज़दूर वर्ग आंदोलन के साथ सूत्रबद्ध संगठन के रूप में (१८८३–१८९४ की विचारधारात्मक धारा मात्र के रूप में नहीं) अस्तित्व-मान रहा है, सर्वहारा-क्रांतिकारी धाराओं तथा टुटपुंजिया-अवसरवादी धाराओं के बीच संघर्ष चलता रहा। १८९४–१९०२ का अर्थवाद[143] निस्संदेह टुट-पुंजिया-अवसरवादी क़िस्म की धारा था। उसकी विचारधारा के नाना तर्कों तथा लक्षणों में—मार्क्सवाद की "स्त्रूवेवादी" विकृति, अवसरवाद को न्यायसंगत ठहराने के लिए जनसाधारण का हवाला दिया जाना, आदि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और काउत्स्की, कूनोव, प्लेख़ानोव, आदि के मौजूदा बाज़ारू ढंग के मार्क्सवाद में उल्लेखनीय सादृश्यता है। सामाजिक-जनवादियों की समकालीन पीढ़ी को आज के काउत्स्की से तुलना करने के लिए पुराने 'राबोचाया मीस्ल' तथा 'राबोचेये देलो'[144] की याद दिलाना अत्यंत आभार पाने योग्य कार्य होगा।

अगली अवधि (१९०३–१९०८) का "मेंशेविज़्म" विचारधारा तथा संगठन, दोनों दृष्टि से अर्थवाद का सीधा उत्तराधिकारी था। रूसी क्रांति के दौरान उसने ऐसी कार्यनीति अपनायी, जिसका वस्तुगत अर्थ उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग पर सर्वहारा की आश्रितता था और जिसने टुटपुंजिया, अवसरवादी प्रवृत्तियां अभिव्यक्त कीं। आगे की अवधि (१९०८–१९१४) में जब मेंशेविक धारा के मुख्य प्रवाह ने विसर्जनवाद को जन्म दिया, तो उस धारा का यह वर्ग अंतर्य इतना स्पष्ट हो गया कि मेंशेविज़्म के सर्वोत्तम प्रतिनिधि 'नाशा ज़ार्या' ग्रुप की नीति का निरंतर विरोध करते रहे। ठीक यही ग्रुप – एकमात्र ग्रुप, जो विगत पांच या छः वर्षों के दौरान मज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी मार्क्सवादी पार्टी के विरुद्ध जनसाधारण में क्रमवद्ध ढंग से कार्य करता रहा है – १९१४–१९१५ के युद्ध में **सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी** सिद्ध हुआ है! और वह भी एक ऐसे देश में, जहां एकतंत्र अब भी विद्यमान है, जहां बुर्जुआ क्रांति संपन्न होने से अभी कोसों दूर है और जहां आबादी का ४३ प्रतिशत बहुसंख्यक ग़ैर रूसी जातियों का उत्पीड़न करता है। "यूरोपीय" क़िस्म के विकास का, जिसमें टुटपुंजिया वर्ग के कतिपय तबक़े, ख़ास तौर पर बुद्धिजीवी समुदाय तथा मजदूर अभिजात वर्ग का एक नगण्य हिस्सा "अपने" राष्ट्र के "महान शक्तिवाले" विशेषाधिकारों में हाथ बंटा सकते हैं, रूस पर प्रभाव पड़े विना नहीं रह सकता था।

रूस के मज़दूर वर्ग तथा मज़दूरों की सामाजिक-जनवादी पार्टी के पूरे इतिहास ने उन्हें "अंतर्राष्ट्रीयतावादी" कार्यनीति के लिए, अर्थात वस्तुतः क्रांतिकारी, सुसंगत रूप से क्रांतिकारी कार्यनीति के लिए तैयार किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुनश्च। यह लेख कंपोज़ हुआ ही था कि अख़बारों में काउत्स्की, हाअज़े तथा बर्नस्टीन द्वारा संयुक्त रूप से जारी किया गया "घोषणापत्र" प्रकाशित हो गया[145]। ये लोग यह देखकर कि जनसाधारण वामपक्ष की ओर झुक रहे हैं, अब वामपक्ष के साथ "मेल-मिलाप" करने के लिए तैयार हैं–निस्संदेह ज़्यूदेकुमों के साथ "मेल-मिलाप" क़ायम रखने की क़ीमत पर। सच ही कहा गया है–Mädchen für alle!

मई–जून, १९१५ को लिखित। खंड २६, पृ० २०९–२६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंग्ल शांतिवाद तथा सिद्धांत के प्रति आंग्ल अरुचि

इंगलैंड में राजनीतिक स्वतंत्रता अब तक यूरोप में दूसरे देशों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक रही है। बुर्जुआ वर्ग यहां शासन करने का सबसे ज़्यादा अभ्यस्त है तथा शासन करना जानता है। दूसरे देशों की अपेक्षा यहां वर्गों के बीच संबंध अधिक विकसित हैं तथा कई मामलों में अधिक स्पष्ट हैं। लामबंदी का अभाव जनता को युद्ध के प्रति रुख़ के प्रश्न में इस अर्थ में अधिक स्वतंत्रता देता है कि कोई भी सेना में भर्ती होने से इनकार कर सकता है और इसलिए सरकार (ब्रिटेन में सरकार बुर्जुआ वर्ग के कार्यों का संचालन करनेवाली समिति का एक सबसे शुद्ध रूप है) युद्ध के प्रति "जन" उत्साह जगा सकने के वास्ते एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाने के लिए विवश होती है। यह लक्ष्य क़ानूनों में आमूल परिवर्तन किये बिना कभी पूरा न हो पाता, अगर सबसे अच्छे स्थानों पर आसीन, हुनरमंद तथा यूनियनों में संघबद्ध मज़दूरों की अल्पसंख्या के उदारतावादी, याने बुर्जुआ नीति के पक्ष में चले जाने से सर्वहारा जनसाधारण पूरी तरह विसंगठित तथा हौसलापस्त न होता। आंग्ल ट्रेड-यूनियनों में समस्त उजरती मज़दूरों का लगभग पांचवां भाग शामिल है। इन ट्रेड-यूनियनों के अधिकांश नेता उदारतावादी हैं, और मार्क्स ने इन्हें बहुत पहले बुर्जुआ वर्ग का एजेंट कहा था।

ब्रिटेन की ये सारी विशेषताएं हमें, एक ओर, आधुनिक सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का सारतत्व समझने में मदद देती हैं, इसलिए कि यह सार-तत्व एकतंत्रीय तथा जनवादी, सैन्यवादी तथा लामबंदी से मुक्त देशों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक जैसा है, दूसरी ओर, वे हमें सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के साथ उस मेल-मिलाप के, जो, उदाहरण के लिए, शांति के नारे, आदि के गुणगान में व्यक्त होता है, महत्व का तथ्यों के आधार पर मूल्यांकन करने में मदद देती हैं।

'फ़ेबियन सोसायटी' निस्संदेह अवसरवाद तथा उदारतावादी मज़दूर नीति की सबसे पूर्ण अभिव्यक्ति है। पाठक ज़ोर्गे के साथ मार्क्स तथा एंगेल्स के पत्र-व्यवहार को देखें (दो संस्करणों में रूसी अनुवाद उपलब्ध है)। उसे वहां इस सोसायटी का एंगेल्स द्वारा किया गया ज्वलंत चरित्र-निरूपण मिलेगा, जो सर्वश्री सिडनी वेब और उनकी मंडली को बुर्जुआ बदमाशों के एक ऐसे गिरोह के रूप में तिरस्कृत करते हैं, जो मज़दूरों को भ्रष्ट करना चाहता है, उन पर प्रतिक्रांतिकारी भावना में प्रभाव डालना चाहता है। यह बात शपथपूर्वक कही जा सकती है कि दूसरे इंटरनेशनल के ज़रा भी उत्तरदायी और प्रभावशाली एक भी नेता ने एंगेल्स द्वारा किये गये इस मूल्यांकन का खंडन करने का न केवल कभी प्रयास ही नहीं किया है, अपितु उसके सही होने पर संदेह तक नहीं किया है।

अब पल भर के लिए **सिद्धांत** को एक किनारे छोड़कर ज़रा **तथ्यों** की तुलना कर लें। आप देखेंगे कि युद्ध के समय फ़ेबियनों का (देखें, उदाहरण के लिए, उनका साप्ताहिक *The New Statesman*[146]) तथा काउत्स्की समेत जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी का **आचरण बिलकुल एक जैसा** है। सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का वही प्रत्यक्ष तथा परोक्ष बचाव; उस बचाव का शांति, निरस्त्रीकरण, आदि, आदि के बारे में सब तरह के सहृदयतापूर्ण, मानवीय तथा लगभग वामपंथी फ़िक़रे कहने की तत्परता के साथ वही संयोजन।

तथ्य प्रत्यक्ष है तथा इससे निकलनेवाला नतीजा – वह भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए चाहे कितना ही अप्रिय क्यों न हो – अपरिहार्य तथा असंदिग्ध रूप से यह है: वस्तुतः मौजूदा जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेता, जिनमें काउत्स्की शामिल हैं, बुर्जुआ वर्ग के हू-बहू वैसे ही एजेंट हैं, जैसे एंगेल्स ने फ़ेबियनों को बहुत पहले बताया था। मार्क्सवाद की फ़ेबियनों द्वारा अमान्यता तथा काउत्स्की और उनकी मंडली द्वारा "मान्यता"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से वास्तविकता में, राजनीति के तथ्यों में कोई अंतर नहीं आता; साबित केवल यह हुआ है कि कुछ लेखकों, राजनीतिज्ञों, आदि ने मार्क्सवाद को स्त्रूवेवाद में बदल डाला है। उनका पाखंड उनकी व्यक्तिगत बुराई नहीं है, पृथक-पृथक मामलों में वे परिवारों के बहुत नेक मुखिया हो सकते हैं—उनका पाखंड तो उनकी सामाजिक स्थिति के वस्तुगत मिथ्यापन का परिणाम है, जब उन्हें क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि माना जाता है, परंतु वे वस्तुतः सर्वहारा वर्ग में बुर्जुआ, अंधराष्ट्रवादी विचारों का समावेश करनेवाले एजेंट ही हैं।

फ़ेबियन काउत्स्की और उनकी मंडली से ज़्यादा सच्चे तथा ईमानदार हैं, इसलिए कि उन्होंने क्रांति के पक्ष में खड़े होने का वचन नहीं दिया, परंतु राजनीतिक दृष्टि से वे एक ही सांचे में ढले हुए हैं।

ब्रिटेन में "आदिकाल से चली आयी" राजनीतिक स्वतंत्रता, सामान्य रूप से उसके राजनीतिक जीवन तथा विशेष रूप से उसके बुर्जुआ वर्ग की विकसित अवस्था का फल यह निकला कि बुर्जुआ वर्ग के विचारों के विभिन्न रंगरूपों ने इस देश में नये राजनीतिक संगठनों में अपने लिए तेज़ी से, आसानी से और मुक्त रूप में नयी अभिव्यक्ति पायी। ऐसे संगठनों में से एक है 'जनवादी नियंत्रण संघ' (Union of Democratic Control)। इस संगठन के सचिव तथा कोषाध्यक्ष एडमंड डीन मोरेल (E. D. Morel) हैं, जो इस समय स्वतंत्र लेबर पार्टी के मुखपत्र *The Labour Leader*[147] के नियमित लेखक भी हैं। यह सज्जन बर्केनहेड (Birkenhead) निर्वाचन-क्षेत्र में कई वर्षों तक लिबरल पार्टी के उम्मीदवार हुआ करते थे। जब मोरेल ने युद्ध के छिड़ने के कुछ ही समय बाद उसका विरोध किया, तो बर्केनहेड लिबरल असोसियेशन की समिति ने २ अक्तूबर, १९१४ के एक पत्र में उन्हें सूचित किया कि उनकी उम्मीदवारी लिबरलों को आगे से अस्वीकार्य होगी, याने उन्हें सीधे-सीधे पार्टी से निकाल दिया गया। मोरेल ने १४ अक्तूबर के पत्र में इसका उत्तर दिया, जिसे उन्होंने बाद में *The Outbreak of the War* ('युद्ध का आरंभ') शीर्षक एक पृथक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया। अपने अन्य लेखों की भांति मोरेल ने इस पुस्तिका में भी अपनी सरकार का पर्दाफ़ाश किया है, इन दावों का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथ्यापन सिद्ध किया है कि मानों युद्ध का कारण बेल्जियम की तटस्थता का उल्लंघन था, मानों युद्ध का उद्देश्य **प्रशियाई** साम्राज्यवाद को नष्ट करना था, आदि, आदि। मोरेल शांति, निरस्त्रीकरण, सब इलाक़ों को जनमतसंग्रह के ज़रिए स्वभाग्यनिर्णय के अधिकार तथा विदेश नीति पर जनवादी नियंत्रण के 'जनवादी नियंत्रण संघ' के कार्यक्रम की पैरवी करते हैं।

इस सबसे पता चलता है कि व्यक्ति के रूप में मोरेल जनवाद के प्रति अपनी हार्दिक सहानुभूति के लिए, अंधराष्ट्रवादी बुर्जुआ वर्ग से शांतिवादी बुर्जुआ वर्ग की ओर मुड़ने के लिए निस्संदेह आभार के पात्र हैं। जब मोरेल तथ्यों से यह सिद्ध करते हैं कि **उनकी** सरकार ने गुप्त संधियों के अस्तित्व से इनकार कर—हालांकि वे वस्तुतः विद्यमान थीं—जनता की आंखों में धूल झोंका; कि आंग्ल बुर्जुआ वर्ग ने जर्मन-फ़्रांस युद्ध की सूरत में बेल्जियम की तटस्थता का उल्लंघन किये जाने की अपरिहार्यता १८८७ में ही पूरी स्पष्टता के साथ अनुभव कर ली थी तथा हस्तक्षेप के विचार को निश्चित ढंग से ठुकरा दिया था (उस वक़्त जर्मनी अभी ख़तरनाक प्रतियोगी नहीं बना था!); कि कर्नल बुशे (Boucher) जैसे फ़्रांसीसी सैन्यवादियों ने युद्ध से पूर्व प्रकाशित बहुत-सी पुस्तकों में जर्मनी के विरुद्ध फ़्रांस तथा रूस के **आक्रामक** युद्ध की अपनी योजनाओं की विद्यमानता सर्वथा खुले ढंग से स्वीकार की थी; कि सुविदित आंग्ल सैनिक विशेषज्ञ कर्नल रेपिंगटन ने १९११ में अख़बारों में स्वीकार किया कि १९०५ के उपरांत रूस के शस्त्रीकरण में वृद्धि जर्मनी के लिए ख़तरा थी—जब मोरेल यह सब उजागर करते हैं, तो हम यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते कि हमारे समक्ष निरपवाद रूप से एक ईमानदार तथा साहसी बुर्जुआ है, जो अपनी पार्टी से नाता तोड़ने से नहीं डरता।

परंतु हरेक तुरंत इससे सहमत हो जायेगा कि मोरेल आख़िरकार बुर्जुआ ही हैं, जिनके शांति तथा निरस्त्रीकरण के बारे में फ़िक़रे खोखले फ़िक़रे मात्र हैं, इसलिए कि सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी कार्रवाई के बिना न तो जनवादी शांति और न निरस्त्रीकरण का ही कोई सवाल उठता है। मोरेल ने भले ही मौजूदा युद्ध के सवाल पर लिबरलों से नाता तोड़ लिया हो,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह दूसरे सारे आर्थिक तथा राजनीतिक प्रश्नों के मामले में लिबरल ही बने रहते हैं। तो फिर क्या वजह है कि जब जर्मनी में काउत्स्की शांति तथा निरस्त्रीकरण के बारे में उन्हीं बुर्जुआ फ़िक़रों को मार्क्सवादी बेलबूटों से छुपाते हैं, तो इसमें उनका पाखंड नहीं, अपितु उनकी ख़ूबी नज़र आती है? जर्मनी में केवल अविकसित राजनीतिक संबंध तथा राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव ही काउत्स्की के कार्यक्रम के साथ शांति तथा निरस्त्रीकरण की बुर्जुआ लीग को उतनी द्रुत गति तथा सुगमता से नहीं बनने देते, जितनी कि ब्रिटेन में।

तो फिर यह सत्य स्वीकार कर लें कि काउत्स्की क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी की नहीं, अपितु शांतिवादी बुर्जुआ की स्थिति अपनाये हुए हैं।

हम इतनी काफ़ी महती घटनाओं के बीच से गुज़र रहे हैं कि "किसी की परवाह किये बिना" सत्य को स्वीकार कर सकते हैं।

अमूर्त सिद्धांत को पसंद न करनेवाले तथा अपनी व्यावहारिकता पर गर्व करनेवाले अंग्रेज़ राजनीतिक प्रश्नों को अकसर अधिक सीधे ढंग से पेश करते हैं और इस तरह अन्य देशों के समाजवादियों को सब तरह की ("मार्क्सवादी" समेत) शब्दावलियों के खोल के अंदर असल अंतर्वस्तु को खोजने में मदद देते हैं। इस सिलसिले में अंधराष्ट्रवादी अख़बार *The Clarion* द्वारा युद्ध से पहले प्रकाशित 'समाजवाद तथा युद्ध'* पैंफ़लेट शिक्षाप्रद है। पैंफ़लेट में अमरीकी समाजवादी एप्टन सिंकलेयर (Upton Sinclair) का युद्ध विरोधी "घोषणापत्र" तथा बहुत पहले से हाइन्डमैन का साम्राज्यवादी दृष्टिकोण अपनानेवाले अंधराष्ट्रवादी राबर्ट ब्लैचफ़ोर्ड (Blatchford) द्वारा उन्हें दिया गया उत्तर है।

सिंकलेयर भावुकतावादी समाजवादी हैं, बिना किसी सैद्धांतिक शिक्षा के। वह प्रश्न को "सीधे ढंग" से पेश करते हैं, समीप आते जाते युद्ध से वह क्रुद्ध हो उठते हैं तथा समाजवाद में उससे नजात की तलाश करते हैं।

**Socialism and War. The Clarion Press*, 44. Worship Street, London E. C.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"हमसे कहा जाता है," सिंकलेयर लिखते हैं, "कि समाजवादी आंदोलन अभी बहुत कमज़ोर है, कि हमें उसके विकास की प्रतीक्षा करनी होगी। परंतु विकास तो लोगों के दिलों में हो रहा है; हम उसके साधन हैं और हम अगर नहीं लड़ेंगे, तो विकास होगा ही नहीं। हमसे कहा जाता है कि हमारे आंदोलन" (युद्ध के विरुद्ध) "का दमन कर दिया जायेगा; परंतु मैं अपना यह गहन विश्वास घोषित करता हूं कि किसी भी ऐसे विद्रोह का, जो उदात्त मानवता के हेतु युद्ध रोकने के लिए लक्षित हो, दमन समाजवाद की पहले किसी भी समय की अपेक्षा सबसे बड़ी विजय होगी, कि वह सभ्यता के अंतःकरण को झकझोर देगा तथा सारे संसार के मज़दूरों को इतना झकझोर देगा, जितना कि पूरे इतिहास में उन्हें और किसी चीज़ ने आज तक नहीं झकझोरा है। हम अपने आंदोलन के बारे में अत्यधिक भयभीत न हों, न तादाद को और न सत्ता के बाह्य रूपाभासों को बहुत ज्यादा महत्व दें। आस्था तथा संकल्प की लौ से दीप्त एक हज़ार लोग सावधान और सम्मानित बननेवाले दस लाख लोगों से अधिक शक्तिशाली होते हैं। और समाजवादी आंदोलन के लिए प्रतिष्ठापित संस्थान बनने से बड़ा और कोई ख़तरा नहीं है।"

जैसा कि आप देखते हैं, यह समाजवाद के विकृतिकरण के बारे में कितनी भोलेपनभरी, सैद्धातिक रूप से अविवेचित, परंतु गहन रूप से सही चेतावनी और क्रांतिकारी संघर्ष का आह्वान है।

सिंकलेयर को ब्लैचफ़ोर्ड क्या उत्तर देते हैं?

पूंजीवादी तथा सैन्यवादी हित युद्ध को जन्म देते हैं, यह सही है– वह कहते हैं। और शांति के प्रति तथा समाजवाद द्वारा पूंजीवाद का स्थान ग्रहण किये जाने के प्रति मेरा लगाव किसी भी दूसरे समाजवादी से कम नहीं है। परंतु सिंकलेयर के "शब्दाडंबरपूर्ण तथा सुंदर फ़िक़रे" मुझे क़ायल नहीं करते और न तथ्यों को मिटाते हैं। "तथ्य, दोस्त सिंकलेयर, हठीली चीज़ हैं और जर्मन ख़तरा एक तथ्य है।" न हममें और न जर्मन समाज-वादियों में युद्ध को रोकने की शक्ति है। सिंकलेयर हमारी शक्ति को अप-रिमित रूप में बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं। हम ऐक्यबद्ध नहीं हैं, हमारे पास धन नहीं है, हथियार नहीं है, "अनुशासन नहीं" है। हमारे पास ब्रिटिश सरकार को अपनी नौसेना को बड़ा बनाने में **मदद देने** का काम रह जाता है, इसलिए कि शांति की न तो कोई और गारंटी है और न हो सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाद्वीपीय यूरोप में अंधराष्ट्रवादी न तो युद्ध छिड़ने से पहले और न उसके छिड़ने के बाद इतनी स्पष्टवादिता से पेश आये हैं। जर्मनी में स्पष्टवादिता के बोलवाले की जगह काउत्स्की के पाखंड तथा कुतर्कों के खेल का राज है। यही बात प्लेख़ानोव पर लागू होती है। ठीक इसीलिए एक अधिक विकसित देश की स्थिति पर नज़र दौड़ाना शिक्षाप्रद है। यहां कुतर्कों तथा मार्क्सवाद के विकृतिकरण से कोई नहीं छला जाता। यहां प्रश्न अधिक सीधे-सीधे ढंग से तथा सच्चाई के साथ पेश किये जाते हैं। हम "आगे बढ़े हुए" अंग्रेज़ों से सीखेंगे।

सिंकलेयर अपने आह्वान के मामले में भोले हैं, हालांकि यह आह्वान मूल रूप से बहुत ज़्यादा सही है—वह भोले हैं, इसलिए कि वह गत पचास वर्षों में जनव्यापी समाजवाद के विकास तथा समाजवाद के अंतर्गत नाना धाराओं के संघर्ष की उपेक्षा करते हैं, वस्तुगत रूप से क्रांतिकारी स्थिति तथा क्रांतिकारी संगठन के विद्यमान होने पर क्रांतिकारी कार्रवाई की वृद्धि की अवस्थाओं की उपेक्षा करते हैं। "भावुकता" इसकी जगह नहीं ले सकती। समाजवाद में नाना सशक्त धाराओं के, अवसरवादी तथा क्रांतिकारी धाराओं के कठोर तथा निर्मम संघर्ष को लफ़्फ़ाज़ी से नहीं टाला जा सकता।

ब्लैचफ़ोर्ड बिना लाग-लपेट के बोलते हैं और काउत्स्की तथा उनकी मंडली के, जिन्हें सच बोलने से डर लगता है, सबसे प्रच्छन्न तर्क को प्रकट कर देते हैं। हम कमज़ोर हैं, बस यही सारी बात है—ब्लैचफ़ोर्ड फ़रमाते हैं। परंतु स्पष्टवादिता से वह तुरंत ही अपनी अवसरवादिता तथा अंधराष्ट्रवादिता बेनक़ाब कर देते हैं। वह बुर्जुआ लोगों तथा अवसरवादियों की सेवा करते हैं—यह तुरंत नज़र आ जाता है। समाजवाद को "**कमज़ोर**" मानकर वह समाजवाद विरोधी, बुर्जुआ नीति की पैरवी के ज़रिए उसे **स्वयं कमज़ोर बना देते हैं।**

सिंकलेयर की भांति वह भी क्रांतिकारी स्थिति निर्मित करनेवाली अवस्थाओं की उपेक्षा करते हैं, परंतु उल्टे पहलू से, कायर की भांति, योद्धा की तरह नहीं, ग़द्दार की भांति, "जोखोंबाज़ दिलेर" की तरह नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने व्यावहारिक निष्कर्षों के मामले में, अपनी नीति के मामले में (क्रांतिकारी कार्रवाई के, ऐसी कार्रवाई के प्रचार के तथा उसकी तैयारी के परित्याग) बाज़ारू अंधराष्ट्रवादी ब्लैचफ़ोर्ड का प्लेख़ानोव और काउत्स्की से पूरी तरह मेल है।

मार्क्सवादी शब्द हमारे ज़माने में मार्क्सवाद के पूर्ण परित्याग पर पर्दा डालते हैं; मार्क्सवादी होने के लिए दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं के "मार्क्सवादी पाखंड" का पर्दाफ़ाश करना आवश्यक है, समाजवाद के अंतर्गत दो धाराओं के संघर्ष को निर्भीक होकर स्वीकार करना, इस संघर्ष के प्रश्नों की तह तक पहुंचना आवश्यक है। ऐसा है आंग्ल संबंधों से निकाला जानेवाला निष्कर्ष, जो हमें मार्क्सवादी शब्दों के बिना मसले का मार्क्सवादी सार दिखाते हैं।

जून, १९१५ को लिखित। खंड २६, पृ० २६६–२७२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समाजवाद और युद्ध

(युद्ध के प्रति रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी का रुख)[148]

पहले (विदेशी) संस्करण की भूमिका

युद्ध को चलते एक साल हो चुका है। हमारी पार्टी ने युद्ध के शुरू होते ही उसके प्रति केंद्रीय समिति के उस घोषणापत्र में अपना रुख़ स्पष्ट कर दिया था, जो सितंबर, १९१४ में तैयार किया गया था और जिसे (केंद्रीय समिति के सदस्यों तथा रूस में हमारी पार्टी के ज़िम्मेदार प्रतिनिधियों के पास भेजने और उनकी मंज़ूरी हासिल करने के बाद) १ नवंबर, १९१४ को हमारी पार्टी के मुखपत्र 'सोत्सिआल-देमोक्रात' के ३३वें अंक में छाप दिया गया था। बाद को ४०वें अंक (२९ मार्च, १९१५) में बर्न सम्मेलन के प्रस्ताव छापे गये थे, जिनमें हमारे उसूल और हमारी कार्यनीति अधिक सटीकतापूर्वक प्रस्तुत की गयी थी।

इस समय रूस की जनता में प्रत्यक्ष रूप से क्रांतिकारी भावना बढ़ रही है। दूसरे देशों में भी अपनी सरकारों तथा अपने बुर्जुआ वर्ग का पक्ष लेनेवाली अधिकतर आधिकारिक सामाजिक-जनवादी पार्टियों द्वारा सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी प्रयासों के दमन के बावजूद सर्वत्र इसी परिघटना के लक्षण दिखाई देते हैं। इस परिस्थिति के कारण एक ऐसे पैंफ़लेट का प्रकाशन ख़ास तौर से ज़रूरी हो जाता है, जो युद्ध के संबंध में सामाजिक-जनवादी कार्यनीति का निचोड़ पेश करे। उपरोक्त पार्टी दस्तावेज़ों को पूर्णः रूप में दुबारा छापते समय हमने उनके साथ संक्षिप्त टिप्पणियां दी हैं, इस बात का प्रयास करते हुए कि उपयुक्त साहित्य तथा पार्टी बैठकों में बुर्जुआ तथा सर्वहारा कार्यनीतियों के पक्ष में व्यक्त की गयी सभी मुख्य दलीलों को ध्यान में रखा जाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे संस्करण की भूमिका

यह पैंफ़लेट १९१५ की गर्मियों में ज़िम्मरवाल्ड सम्मेलन[149] के ठीक पहले लिखा गया था। यह जर्मन और फ़्रांसीसी भाषाओं में भी प्रकाशित हुआ था और नार्वेजियन सामाजिक-जनवादी युवकों के मुखपत्र में पूर्ण रूप में नार्वेजियन भाषा में पुनर्मुद्रित हुआ था। पैंफ़लेट का जर्मन संस्करण जर्मनी – बर्लिन, लाइपज़िग, ब्रेमेन और दूसरे शहरों – में गुप्त रूप से पहुंचाया गया था, जहां उसे ज़िम्मरवाल्ड वामपंथी दल के समर्थकों और कार्ल लीब्कनेख़्त के दल ने छिपे तौर से बांटा था। फ़्रांसीसी संस्करण गुप्त रूप से पेरिस में छापा गया और फ़्रांसीसी ज़िम्मरवाल्डवादियों द्वारा वहां बांटा गया था। रूसी संस्करण बहुत कम संख्या में रूस पहुंचा और मास्को में मज़दूरों ने हाथ से उसकी नक़लें तैयार कीं।

अब हम इस पैंफ़लेट को एक दस्तावेज़ के रूप में पूर्ण रूप में दुबारा छाप रहे हैं। पाठकों को बराबर याद रखना चाहिए कि यह पैंफ़लेट अगस्त, १९१५ में लिखा गया था। यह बात ख़ास तौर से उन अंशों के संबंध में याद रखी जानी चाहिए, जिनमें रूस का हवाला दिया गया है: रूस उस समय ज़ारशाही का रूस, रोमानोव का रूस ही था...

पैंफ़लेट के १९१८ के संस्करण में
प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्याय १

समाजवाद के उसूल और १९१४–१९१५ का युद्ध

युद्धों के प्रति समाजवादियों का रुख़

समाजवादियों ने राष्ट्रों के आपसी युद्धों को बर्बर और पाशविक कृत्य क़रार देकर हमेशा उसकी निंदा की है। लेकिन युद्ध के प्रति हमारा रुख़ बुर्जुआ शांतिवादियों (शांति के पक्षपातियों और प्रचारकों) तथा अराजकतावादियों के रुख़ से मूलतः भिन्न है। बुर्जुआ शांतिवादियों से हम इस मानी में भिन्न हैं कि हम युद्धों तथा देश के आंतरिक वर्ग संघर्ष का अनिवार्य संबंध समझते हैं, हम समझते हैं कि जब तक वर्गों का अंत नहीं कर दिया जाता और जब तक समाजवाद की सृष्टि नहीं होती, तब तक युद्ध का उन्मूलन नहीं किया जा सकता। हम इस मानी में भी भिन्न हैं कि हम गृहयुद्धों को, याने उत्पीड़ित वर्ग द्वारा उत्पीड़क वर्ग के ख़िलाफ़, ग़ुलामों द्वारा ग़ुलाम-मालिकों के ख़िलाफ़, भूदासों द्वारा भूस्वामियों के ख़िलाफ़ और उजरती मज़दूरों द्वारा बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ चलाये जानेवाले युद्धों को पूर्णतः वैध, प्रगतिशील और आवश्यक मानते हैं। हम, मार्क्सवादी लोग शांतिवादियों तथा अराजकतावादियों दोनों से इस मानी में भिन्न हैं कि हम हर युद्ध का ऐतिहासिक (मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की दृष्टि से) अध्ययन करना ज़रूरी मानते हैं। इतिहास में ऐसे बहुतेरे युद्ध हुए हैं, जो सभी युद्धों के साथ अनिवार्यतः संलग्न विभीषिकाओं, पाशविकताओं, विपत्तियों तथा पीड़ाओं के बावजूद प्रगतिशील थे, याने जिन्होंने असाधारण रूप से हानिकर और प्रतिक्रियावादी प्रथाओं (मिसाल के लिए, स्वेच्छाचारी शासन अथवा भूदास-प्रथा), यूरोप की बेहद बर्बर तानाशाहियों (तुर्की और रूसी) के विनाश में सहायता पहुंचाकर मानवजाति के विकास को लाभ पहुंचाया। इसलिए वर्तमान युद्ध की ऐतिहासिक विशेषताओं पर ग़ौर करना ज़रूरी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधुनिक युग में युद्धों की ऐतिहासिक क़िस्में

महान फ़्रांसीसी क्रांति ने मानवजाति के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया। उस समय से लेकर पेरिस कम्यून तक, १७८९ से १८७१ तक एक क़िस्म के युद्ध वे रहे, जिनका स्वरूप बुर्जुआ-प्रगतिशील और राष्ट्रीय-मुक्तिकारी था। दूसरे शब्दों में, उन युद्धों का मुख्य अंतर्य तथा ऐतिहासिक महत्व था निरंकुशतावाद और सामंतवाद का तख़्ता उलटना, उन्हें तहस-नहस करना, विदेशी उत्पीड़न का तख़्ता उलटना। इसलिए वे प्रगतिशील युद्ध थे और ऐसे युद्धों के दौरान सभी ईमानदार, क्रांतिकारी जनवादी और साथ ही सभी समाजवादी भी हमेशा उस देश की (याने उस बुर्जुआ वर्ग की) सफलता के साथ हमदर्दी रखते थे, जिसने सामंतवाद, निरंकुशतावाद और दूसरे राष्ट्रों के उत्पीड़न को नष्ट करने या उनकी सबसे अधिक ख़तरनाक बुनियादों को तहस-नहस करने में सहायता पहुंचायी। मिसाल के लिए, फ़्रांस द्वारा चलाये गये क्रांतिकारी युद्धों में फ़्रांसीसियों द्वारा पराये इलाक़ों की लूट और हड़प का भी पुट था, लेकिन इस बात से उन युद्धों के बुनियादी ऐतिहासिक महत्व में तनिक भी अंतर नहीं आता, जो पुराने, भूदासताग्रस्त समूचे यूरोप में सामंतवाद और निरंकुशतावाद को नष्ट और चकनाचूर करते रहे। फ़्रांस और प्रशा के युद्ध में जर्मनी ने फ़्रांस को लूटा, लेकिन इस बात से उस युद्ध के बुनियादी ऐतिहासिक महत्व में कोई अंतर नहीं आता, जिसने लाखों-लाख जर्मनों को सामंती बंटवारे तथा दो स्वेच्छाचारी शासकों—रूसी ज़ार और नेपोलियन तृतीय—के उत्पीड़न से मुक्त किया।

आक्रमणात्मक और प्रतिरक्षात्मक युद्ध में अंतर

१७८९–१८७१ का युग गहरी छापें और क्रांतिकारी यादें छोड़ गया। सामंतवाद, निरंकुशतावाद तथा विदेशी उत्पीड़न का तख़्ता उलटे जाने से पहले समाजवाद के लिए सर्वहारा वर्ग के संघर्ष के विकास का सवाल ही नहीं उठ सकता था। ऐसे युग के युद्धों की बात करते समय जब समाजवादी "प्रतिरक्षात्मक" युद्ध के औचित्य पर ज़ोर देते थे, तो वे इन लक्ष्यों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदा ध्यान में रखते थे, अर्थात मध्ययुगीनता और भूदासता के ख़िलाफ़ क्रांति। "प्रतिरक्षात्मक" युद्ध से समाजवादियों का मतलब हमेशा इसी अर्थ में "न्याय्य" (विल्हेल्म लीब्कनेख़्त ने ठीक इसी ढंग से एक बार अपनी बात कही थी[150]) युद्ध होता है। समाजवादियों ने केवल इसी अर्थ में "पितृभूमि की रक्षा" को अथवा "प्रतिरक्षात्मक" युद्धों को उचित, प्रगतिशील और न्याय्य माना है और अब भी मानते हैं। मिसाल के लिए, अगर कल मोरक्को फ़्रांस के ख़िलाफ़, या हिंदुस्तान ब्रिटेन के ख़िलाफ़, या ईरान अथवा चीन रूस के ख़िलाफ़, इत्यादि, इत्यादि, युद्ध की घोषणा कर दे, तो पहले हमला **चाहे जो भी करे**, वे युद्ध "न्याय्य", "प्रतिरक्षात्मक" युद्ध होंगे और हर समाजवादी की हमदर्दी उत्पीड़क, ग़ुलाम-मालिक, दस्यु "महान" शक्तियों के ख़िलाफ़ उत्पीड़ित, पराधीन, नाबराबर राज्यों की जीत के साथ होगी।

लेकिन १०० ग़ुलाम रखनेवाले एक ऐसे ग़ुलाम-मालिक की कल्पना कीजिये, जो २०० ग़ुलाम रखनेवाले दूसरे ग़ुलाम-मालिक से ग़ुलामों के अधिक "न्याय्य" बंटवारे के लिए युद्ध कर रहा हो। ज़ाहिर है कि किसी ऐसे मामले में "प्रतिरक्षात्मक" युद्ध अथवा "पितृभूमि की रक्षा" की बात करना ऐतिहासिक दृष्टि से झूठ होगा और चालाक ग़ुलाम-मालिकों द्वारा सीधी-सादी जनता के साथ, कूपमंडूक ज्ञानरहित लोगों के साथ सरासर धोखेबाज़ी होगी। ग़ुलाम-मालिकों द्वारा ग़ुलामी को पुख़्ता और मज़बूत बनाने के लक्ष्य से लड़े जानेवाले वर्तमान युद्ध में ठीक इसी प्रकार मौजूदा साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग "राष्ट्रीय" विचारधारा तथा पितृभूमि की रक्षा की बात द्वारा जनसाधारण को धोखा दे रहा है।

वर्तमान युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है

प्रायः हर कोई मानता है कि वर्तमान युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है, लेकिन अधिकतर इस धारणा को तोड़ा-मरोड़ा जाता है, या सिर्फ़ एक पक्ष पर लागू किया जाता है, अथवा उसमें इस संभावना के लिए गुंजाइश रखी जाती है कि सब कुछ के बावजूद इस युद्ध का बुर्जुआ-प्रगतिशील, राष्ट्रीय-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्तिकारी महत्व हो। साम्राज्यवाद पूंजीवाद के विकास की सबसे ऊंची मंज़िल है, जो केवल बीसवीं सदी में उपलब्ध हुई है। आज पूंजीवाद उन पुराने जातीय राज्यों को अपने लिए बहुत संकुचित अनुभव करता है, जिनके निर्माण के बिना उसके लिए सामंतवाद को उखाड़ना संभव न होता। पूंजीवाद में संकेंद्रण इस हद तक बढ़ गया है कि उद्योग की पूरी की पूरी शाखाओं पर सिंडिकेटों, ट्रस्टों और पूंजीपतियों-अरबपतियों के संघों का क़ब्ज़ा हो गया है तथा "पूंजी के इन स्वामियों" ने प्रायः समूचे भूमंडल को या तो उपनिवेशों के रूप में अथवा अन्य देशों को वित्तीय शोषण के सहस्रों सूत्रों में उलझाकर आपस में बांट लिया है। इजारेदारी हासिल करने की चेष्टा ने, पूंजी-विनियोग के लिए, कच्चा माल आयात करने, आदि के लिए पराये इलाक़ों को हड़पने की चेष्टा ने मुक्त व्यापार तथा प्रतियोगिता की जगह ले ली है। जहां सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष में पूंजीवाद राष्ट्रों का मुक्तिदाता था, वहां साम्राज्यवादी पूंजीवाद राष्ट्रों का सबसे बड़ा उत्पीड़क बन गया है। पूंजीवाद प्रगतिशील से प्रतिक्रियावादी बन गया है, उसने उत्पादक शक्तियों को इस हद तक बढ़ा दिया है कि आज मानवजाति के सामने यह समस्या पेश है कि या तो वह समाजवाद की ओर जाये अथवा उपनिवेशों, इजारेदारियों, विशेषाधिकारों और हर प्रकार के राष्ट्रीय उत्पीड़न द्वारा पूंजीवाद की कृत्रिम बरक़रारी के लिए "महान" शक्तियों के बीच होनेवाले हथियारबंद संघर्ष को बरसों, यहां तक कि दशकों तक झेले।

ग़ुलामी बरक़रार रखने और उसे मज़बूत बनाने के लिए सबसे बड़े ग़ुलाम-मालिकों में युद्ध

साम्राज्यवाद का महत्व स्पष्ट करने के लिए हम तथाकथित "महान" (यानी महान लूट में सफल) शक्तियों के बीच दुनिया के बंटवारे के बारे में सटीक आंकड़े पेश करेंगे (देखें तालिका पृ० १५८ पर)।

इससे प्रत्यक्ष है कि १७८९–१८७१ में दूसरों के अगुआ बनकर आज़ादी के लिए लड़नेवाले अधिकांश जनगण अब, १८७६ के बाद कैसे उच्च विक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सित और "अतिपरिपक्व" पूंजीवाद के आधार पर भूमंडल की अधिकतर आबादियों और राष्ट्रों के उत्पीड़क और ग़ुलाम बनानेवाले बन गये हैं। छः "महान" शक्तियों ने १८७६ से १९१४ तक २.५ करोड़ वर्ग किलोमीटर, याने यूरोप का ढाई गुना से अधिक क्षेत्र हड़प लिया! छः शक्तियां उपनिवेशों के **आधे अरब से भी ज्यादा** (५२.३ करोड़) लोगों को ग़ुलाम बनायी हुई हैं। "महान" शक्तियों के हर चार निवासियों के पीछे "उनके" उपनिवेशों के पांच निवासी हैं। और हर कोई जानता है कि उपनिवेश तोप और तलवार से जीते गये हैं, कि उपनिवेशों की आबादियों के साथ पाशविक बर्ताव किया जाता है, कि उनका हज़ार तरीक़ों से (पूंजी-निर्यात, कन्सेशनों, इत्यादि के ज़रिए, उन्हें माल बेचने में धोखा देकर, उन्हें "शासक" राष्ट्र के अधिकारियों के अधीन बनाकर, इत्यादि, इत्यादि) शोषण किया जाता है। अंग्रेज़-फ़्रांसीसी बुर्जुआ वर्ग यह कहकर जनगण को धोखा दे रहा है कि वह जनगण और बेल्जियम की आज़ादी के लिए युद्ध कर रहा है: दरअसल वह अपने हड़पे बेहद बड़े उपनिवेशों को बरक़रार रखने के लिए युद्ध कर रहा है। जर्मन साम्राज्यवादी बेल्जियम, आदि को फ़ौरन आज़ाद कर देंगे, बशर्ते कि अंग्रेज़ और फ़्रांसीसी उनके साथ अपने उपनिवेशों का "उचित ढंग से" बंटवारा करने को राज़ी हो जायें। परिस्थिति की विशेषता यह है कि उपनिवेशों के भाग्य का फ़ैसला यूरोप में युद्ध करके किया जा रहा है। बुर्जुआ न्याय और राष्ट्रीय आज़ादी (या राष्ट्रों के अस्तित्व के अधिकार) की दृष्टि से ब्रिटेन और फ़्रांस के मुक़ाबले जर्मनी बिलकुल वाजिब कहलायेगा, क्योंकि उसे उपनिवेशों से वंचित कर दिया गया है, उसके शत्रु उसकी अपेक्षा बेहद अधिक राष्ट्रों का उत्पीड़न कर रहे और उसके संघाती आस्ट्रिया द्वारा उत्पीड़ित स्लाव जाति के लोग निस्संदेह ज़ारशाही रूस के, सच्चे अर्थों में "राष्ट्रों के बंदीगृह" के स्लाव जाति के लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक आज़ादी का उपभोग कर रहे हैं। लेकिन जर्मनी राष्ट्रों की आज़ादी के लिए नहीं, बल्कि उनके उत्पीड़न के लिए लड़ रहा है। समाजवादियों का काम यह नहीं है कि वे अधिक वृद्ध और ठसाठस पेटभरे डाकुओं को लूटने में अधिक युवा और बलशाली डाकू (जर्मनी) की सहायता करें। समाजवादियों को लाज़िमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग़ुलाम-मालिक "महान" शक्तियों के बीच दुनिया का बंटवारा

"महान" शक्तियां	उपनिवेश				स्वामी देश		योग	
	१८७६		१९१४		१९१४			
	वर्ग किलोमीटर	जनसंख्या	वर्ग किलोमीटर	जनसंख्या	वर्ग किलोमीटर	जनसंख्या	वर्ग किलोमीटर	जनसंख्या
	करोड़ों में		करोड़ों में		करोड़ों में		करोड़ों में	
ब्रिटेन	२.२५	२५.१९	३.३५	३९.३५	०.०३	४.६५	३.३८	४४.००
रूस	१.७	१.५९	१.७४	३.३२	०.५४	१३.६२	२.२८	१६.९४
फ़्रांस	०.०९	०.६	१.०६	५.५५	०.०५	३.९६	१.११	९.५१
जर्मनी	—	—	०.२९	१.२३	०.०५	६.४९	०.३४	७.७२
जापान	—	—	०.०३	१.९२	०.०४	५.३	०.०७	७.२२
संयुक्त राज्य अमरीका . . .	—	—	०.०३	०.९७	०.९४	९.७	०.९७	१०.६७
छः "महान" शक्तियां . . .	४.०४	२७.३८	६.५	५२.३४	१.६५	४३.७२	८.१५	९६.०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

उपनिवेश, जो "महान" शक्तियों के नहीं हैं (बेल्जियम, हालैंड और दूसरे राष्ट्रों के उपनिवेश)			०.९९	४.५३		०.९९	४.५३
तीन "अर्द्ध-उपनिवेश" (तुर्की, चीन और फ़ारस)						१.४५	३६.१२
					कुल	१०.५९	१३६.७१
अन्य राज्य तथा देश . . .						२.८	२८.९९
समस्त संसार (ध्रुव क्षेत्रों को छोड़कर)						१३.३९	१६५.७०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तौर से डाकुओं के आपसी संघर्ष का फ़ायदा उठाकर उन सब का तख़्ता उलट देना होगा। यह कर सकने के लिए समाजवादियों को सबसे पहले जनता के सामने सच्ची बात कहनी होगी, याने यह कि यह युद्ध तेहरे अर्थ में ग़ुलामी को मज़बूत करने के लिए ग़ुलाम-मालिकों की आपसी लड़ाई है। पहले तो, यह युद्ध उपनिवेशों के अधिक "मुनासिब" बंटवारे और फिर अधिक "सहमतिपूर्ण" शोषण के द्वारा उपनिवेशों की ग़ुलामी को मज़बूत करने के लिए है; दूसरे, यह युद्ध स्वयं "महान" शक्तियों के अंतर्गत जो दूसरी जातियां हैं, उनके उत्पीड़न को दृढ़ करने के लिए है, क्योंकि आस्ट्रिया और रूस दोनों (रूस आस्ट्रिया से भी बढ़कर और अधिक बुरी तरह) केवल ऐसे ही उत्पीड़न द्वारा, युद्ध के ज़रिए उस उत्पीड़न को तीखा बनाते हुए अपने शासन को बरक़रार रख रहे हैं; और तीसरे, यह युद्ध उजरती ग़ुलामी को मज़बूत बनाने और देर तक जारी रखने के लिए है, इसलिए कि सर्वहारा वर्ग में फूट है और वह दबा दिया गया है, जबकि पूंजीपति फ़ायदे में हैं, वे युद्ध से दौलत बटोर रहे हैं, राष्ट्रीय पूर्वाग्रहों को गहरा बना रहे हैं और उस प्रतिक्रियावाद को और सुदृढ़ बना रहे हैं, जो सभी देशों में, यहां तक कि अधिक से अधिक आज़ाद और जनतांत्रिक देशों में भी सिर उठा चुका है।

"युद्ध दूसरे" (याने हिंसात्मक) "साधनों द्वारा राजनीति की निरंतरता है"

यह युद्ध-समस्याओं पर लिखनेवाले एक गंभीरतम लेखक, क्लाज़ेवित्स की प्रसिद्ध उक्ति है[151]। मार्क्सवादियों ने हमेशा इस प्रस्थापना को किसी भी संबंधित युद्ध के महत्व संबंधी विचारों का सैद्धांतिक आधार ठीक ही माना है। मार्क्स और एंगेल्स ने विभिन्न युद्धों को हमेशा ठीक इसी दृष्टि से देखा था।

इस दृष्टि को वर्तमान युद्ध पर लागू कीजिये। आप देखेंगे कि दशकों तक, प्रायः आधी सदी तक ब्रिटेन, फ़्रांस, जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया और रूस की सरकारों तथा उनके शासक वर्गों ने उपनिवेशों को लूटने, दूसरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रों का उत्पीड़न करने, मज़दूर वर्ग के आंदोलन को दबाने की नीति का अनुसरण किया है। यह वही नीति है, महज़ वही नीति, जिसे वर्तमान युद्ध में जारी रखा जा रहा है। मिसाल के तौर पर, आस्ट्रिया और रूस दोनों की नीति शांति-काल में और साथ ही युद्ध-काल में राष्ट्रों को आज़ाद करने की नहीं, बल्कि उन्हें गुलाम बनाने की नीति है। इसके उलट चीन, फ़ारस, हिन्दुस्तान और दूसरे पराधीन देशों में हमने पिछले कुछ दशकों के दौरान लाखों-लाख लोगों को राष्ट्रीय जीवन के लिए जागृत करने, उन्हें प्रतिक्रियावादी "महान" शक्तियों के उत्पीड़न से मुक्त करने की नीति देखी है। ऐसे ऐतिहासिक आधार पर आज भी बुर्जुआ-प्रगतिशील और राष्ट्रीय-मुक्तिकारी युद्ध हो सकता है।

वर्तमान युद्ध में "पितृभूमि की रक्षा" के विचार को उचित ठहराने के दृष्टिकोण की घोर इतिहास-प्रतिकूलता, असत्यता और पाखंड को तत्काल समझ लेने के लिए मौजूदा युद्ध पर इस दृष्टि से नज़र डालना ही काफ़ी है कि वह "महान" शक्तियों और उनके भीतर के प्रमुख वर्गों की राजनीति की ही निरंतरता है।

बेल्जियम की मिसाल

त्रिराष्ट्र (अब चतुर्राष्ट्र[152]) संधि के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों (रूस में प्लेख़ानोव और उनकी मंडली) को बेल्जियम की मिसाल का हवाला देना सबसे अधिक प्रिय है। लेकिन वह मिसाल उनके ख़िलाफ़ पड़ती है। जर्मन साम्राज्यवादियों ने बेल्जियम की तटस्थता का बेशर्मी के साथ उल्लंघन किया, जैसा कि युद्धरत राज्यों ने आवश्यक होने पर हमेशा और हर कहीं **तमाम** संधियों और इक़रारनामों को पैरों तले कुचला है। मान लें कि अंतर्राष्ट्रीय संधियों के पालन में दिलचस्पी रखनेवाले सभी राज्य बेल्जियम की आज़ादी और क्षतिपूर्त्ति की मांग करते हुए जर्मनी के ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा करते, तो समाजवादियों की हमदर्दी बेशक जर्मनी के शत्रुओं के साथ होती। लेकिन सारी बात तो यह है कि "त्रिराष्ट्र (तथा चतुर्राष्ट्र) संधि" बेल्जियम के कारण युद्ध **नहीं** कर रही है: यह सुविदित है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस पर महज़ पाखंडी ही पर्दा डालते हैं। ब्रिटेन जर्मनी के उपनिवेशों और तुर्की को लूट रहा है; रूस गैलीशिया और तुर्की को लूट रहा है; फ़्रांस अल्सास-लोरेन और राइन नदी के बायें तट पर स्थित प्रदेश तक को चाहता है; इटली के साथ लूट (अल्बानिया और एशिया माइनर) के बंटवारे के लिए संधि संपन्न की जा चुकी है; बुल्गारिया और रूमानिया से भी लूट के बंटवारे के लिए सौदेबाज़ी चल रही है। मौजूदा युद्ध की आधार-भूमि पर मौजूदा सरकारें आस्ट्रिया या तुर्की, इत्यादि का गला घोंटने में मदद करने **के अलावा और किसी तरह** बेल्जियम की मदद नहीं कर सकतीं! इसमें "पितृभूमि की रक्षा" का सवाल कहां उठता है? इसी में तो साम्राज्यवादी युद्ध की विशेषता निहित है, प्रतिक्रियावादी-बुर्जुआ तथा ऐतिहासिक दृष्टि से कालातीत हो चुकी सरकारों के बीच अन्य राष्ट्रों के उत्पीड़न के प्रयोजन से चलाये जानेवाले युद्ध की विशेषता निहित है। वर्तमान युद्ध में शरीक होने को जो कोई भी उचित ठहराता है, वह राष्ट्रों के साम्राज्यवादी उत्पीड़न को अमर बना रहा है। जो कोई भी सामाजिक क्रांति के लिए लड़ने के निमित्त सरकारों की वर्तमान कठिनाइयों का फ़ायदा उठाने की हिमायत करता है, वह दरअसल सभी राष्ट्रों की सच्ची आज़ादी की रक्षा कर रहा है, जो केवल समाजवाद के अंतर्गत ही संभव है।

रूस किस चीज़ के लिए लड़ रहा है?

रूस में नवीनतम प्रकार का पूंजीवादी साम्राज्यवाद फ़ारस, मंचूरिया और मंगोलिया के प्रति ज़ारशाही नीति में पूरी तरह उजागर हो चुका है, लेकिन आम तौर से रूस में सैनिक और सामंती साम्राज्यवाद का बोलबाला है। रूस के बहुसंख्यक निवासी जितने उत्पीड़ित हैं, उतने दुनिया के किसी और देश के निवासी उत्पीड़ित नहीं हैं। रूसी जाति के लोग पूरी आबादी में केवल ४३ फ़ीसदी, याने आधे से भी कम हैं; बाक़ी सभी लोग विजातीयों की तरह अधिकारवंचित हैं। रूस के १७ करोड़ निवासियों में से लगभग १० करोड़ उत्पीड़ित और अधिकारवंचित हैं। ज़ारशाही गैलीशिया पर क़ब्ज़ा करने और उक्रइनियों की आज़ादी को पूरी तरह कुचल देने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए, आर्मीनिया, कुस्तुन्तुनिया, आदि पर अधिकार जमाने के लिए युद्ध कर रही है। ज़ारशाही युद्ध को देश में बढ़ते हुए असंतोष की ओर से लोगों का ध्यान हटाने और फैलते हुए क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलने का एक साधन मानती है। इस समय रूस में हर दो रूसी व्यक्तियों के पीछे दो से तीन तक अधिकारविहीन "विजातीय" हैं: ज़ारशाही युद्ध के ज़रिए रूस द्वारा उत्पीड़ित जातियों की संख्या बढ़ाने, उस उत्पीड़न को मज़बूत बनाने और उसके द्वारा आज़ादी के उस संघर्ष की जड़ काटने की कोशिश कर रही है, जिसे ख़ुद रूसी लोग चला रहे हैं। दूसरी जातियों को उत्पीड़ित करने और लूटने की संभावना आर्थिक गतिहीनता को सुदृढ़ बनाती है, क्योंकि आमदनी का ज़रिया उत्पादक शक्तियों का विकास नहीं, बल्कि "विजातीयों" का अर्द्धसामंती शोषण होता है। इस तरह जहां तक रूस का संबंध है, इस युद्ध की विशेषता उसका गहन प्रतिक्रियावादी तथा मुक्ति विरोधी स्वरूप है।

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद क्या है?

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद वर्तमान युद्ध में "पितृभूमि की रक्षा" के विचार की वकालत है। इस विचार से आगे जन्मता है युद्ध के दौरान वर्ग संघर्ष का त्याग, युद्ध ऋणों के पक्ष में मतदान, इत्यादि। दरअसल, सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी सर्वहारा विरोधी, बुर्जुआ नीति पर चल रहे हैं, क्योंकि वे वस्तुतः विदेशी जातियों के उत्पीड़न विरोधी संघर्ष के अर्थ में "पितृभूमि की रक्षा" की हिमायत नहीं कर रहे हैं, बल्कि उपनिवेशों को लूटने और दूसरी जातियों को उत्पीड़ित करने के लिए एक या दूसरी "महान" शक्ति के "अधिकार" की हिमायत कर रहे हैं। सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी जनता के साथ इस बुर्जुआ धोखेबाज़ी को दुहराते हैं कि यह युद्ध जातियों की आज़ादी और अस्तित्व की रक्षा के लिए लड़ा जा रहा है। इस प्रकार वे सर्वहारा वर्ग के ख़िलाफ़ बुर्जुआ वर्ग के तरफ़दार बन रहे हैं। सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों की श्रेणी में जिस तरह वे लोग हैं, जो युद्धरत शक्तियों के किसी एक ग्रुप की सरकारों तथा बुर्जुआ वर्गों को न्याय्य ठहराते और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संवारकर पेश करते हैं, इसी तरह वे लोग भी हैं; जो कांउत्स्की की तरह स्वीकार करते हैं कि सभी युद्धरत शक्तियों के समाजवादियों को "पितृभूमि की रक्षा" का समान अधिकार है। सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद, जो दरअसल "अपने" (या किसी भी) साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग के विशेषाधिकारों, लाभों, लूटों और ज़ोर-ज़बर्दस्तियों की पैरवी है, सभी समाजवादी आस्थाओं तथा बैसेल की अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस के निर्णय के साथ खुली ग़द्दारी है।

बैसेल का घोषणापत्र

बैसेल में १९१२ में जो युद्ध संबंधी घोषणापत्र सर्वसम्मति से मंजूर किया गया था, उसमें ब्रिटेन तथा जर्मनी और उनके वर्तमान मित्र-राष्ट्रों के बीच उसी युद्ध को ध्यान में रखा गया था, जो १९१४ में छिड़ा। घोषणापत्र खुले तौर से ऐलान करता है कि महान शक्तियों की साम्राज्य-वादी और लुटेरी नीति के आधार पर "पूंजीपतियों के मुनाफ़ों और राजवंशों की महत्वाकांक्षाओं की ख़ातिर" लड़े जानेवाले इस युद्ध को जनता के हितों की कोई भी दुहाई उचित नहीं ठहरा सकती। घोषणापत्र खुले तौर से ऐलान करता है कि युद्ध (निरपवाद रूप से सभी) "सरकारों के लिए" ख़तरनाक है, "सर्वहारा क्रांति" से उनके भय का उल्लेख करता है और बहुत निश्चित ढंग से १८७१ के कम्यून की तथा १९०५ के अक्तूबर—दिसंबर की मिसाल की ओर, याने **क्रांति तथा गृहयुद्ध की मिसाल की ओर** संकेत करता है। इस तरह, बैसेल का घोषणापत्र अपनी सरकारों के ख़िलाफ़ अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर मज़दूरों के क्रांतिकारी संघर्ष की कार्यनीति, सर्वहारा क्रांति की कार्यनीति ठीक वर्तमान युद्ध के लिए ही निर्धारित करता है। बैसेल का घोषणापत्र स्टुटगार्ट के प्रस्ताव के ये शब्द दुहराता है कि युद्ध छिड़ने की हालत में "पूंजीवाद के पतन में शीघ्रता लाने" के लिए समाज-वादियों को युद्ध से पैदा होनेवाले "आर्थिक और राजनीतिक संकट" का फ़ायदा उठाना चाहिए, याने उन्हें समाजवादी क्रांति के हितों में सरकारों की युद्धजनित कठिनाइयों तथा जनसमुदायों के क्रोध का फ़ायदा उठाना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों की नीति, उन द्वारा युद्ध को बुर्जुआ आज़ादी की दृष्टि से उचित ठहराया जाना, उन द्वारा "पितृभूमि की रक्षा" को मान्यता प्रदान किया जाना, ऋणों के पक्ष में मत दिया जाना, मंत्रिमंडलों में शामिल होना, इत्यादि, इत्यादि, समाजवाद के साथ खुली ग़द्दारी है, जिसका एकमात्र कारण, जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे, यूरोप की अधिकतर पार्टियों में अवसरवाद तथा राष्ट्रवादी-उदारतावादी मज़दूर नीति की विजय है।

मार्क्स और एंगेल्स के ग़लत हवाले

रूसी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी (जिनके प्रमुख प्लेखानोव हैं) १८७० के युद्ध में मार्क्स की कार्यनीति का हवाला देते हैं; जर्मन सामाजिक-अंध-राष्ट्रवादी (लेंश, डेविड और उनकी मंडली) एंगेल्स के १८९१ के इस वक्तव्य का हवाला देते हैं कि रूस और फ़्रांस के विरुद्ध संयुक्त रूप से युद्ध होने की हालत में पितृभूमि की रक्षा करना जर्मन समाजवादियों का कर्त्तव्य होगा तथा अंत में, काउत्स्की की क़िस्म के सामाजिक-अंधराष्ट्र-वादी, जो अंतर्राष्ट्रीय अंधराष्ट्रवाद की सफ़ाई देने और उसे वैधता प्रदान करने के इच्छुक हैं, इस तथ्य का हवाला देते हैं कि मार्क्स और एंगेल्स ने युद्ध की निंदा करते हुए भी १८५४–१८५५ से १८७०–१८७१ और १८७६–१८७७ तक एक बार युद्ध छिड़ जाने पर निरंतर एक न एक युद्धरत राज्य का पक्ष लिया था।

ये सारे हवाले मार्क्स और एंगेल्स के विचारों को बुर्जुआ वर्ग और अवसरवादियों के हित में ठीक उसी तरह निर्लज्ज रूप से विकृत करते हैं, जिस तरह अराजकतावाद का औचित्य सिद्ध करने के लिए गिलौम और उनकी मंडली के अराजकतावादियों की कृतियों में मार्क्स और एंगेल्स के विचारों को विकृत किया गया है। जर्मनी की ओर से १८७०–१८७१ का युद्ध उस समय तक ऐतिहासिक दृष्टि से प्रगतिशील युद्ध था, जब तक नेपोलियन तृतीय पराजित नहीं हो गये, क्योंकि उन्होंने ज़ार के साथ मिलकर जर्मनी को सामंती छिन्न-भिन्नता की स्थिति में रखते हुए उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरसों उत्पीड़ित किया था। लेकिन ज्यों ही वह युद्ध विकसित होकर फ़्रांस की लूट (अल्सास और लोरेन के समामेलन) में परिणत हुआ कि मार्क्स और एंगेल्स ने जर्मनों की ज़ोरदार निंदा की। उस युद्ध की शुरूआत में भी मार्क्स और एंगेल्स ने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत देने से बेबेल और लीब्कनेख़्त के इनकार का अनुमोदन किया था तथा सामाजिक-जनवादियों को सलाह दी थी कि वे बुर्जुआ वर्ग से न मिलें, बल्कि सर्वहारा वर्ग के स्वतंत्र वर्ग हितों की रक्षा करें। वर्तमान साम्राज्यवादी युद्ध पर उक्त बुर्जुआ-प्रगतिशील तथा राष्ट्रीय-मुक्तिकारी युद्ध के मूल्यांकन को लागू करना सचाई की हंसी उड़ाना है। यही बात १८५४–१८५५ के युद्ध तथा १९वीं सदी के सभी युद्धों पर और भी अधिक लागू होती है, जबकि आधुनिक साम्राज्यवाद नहीं था, समाजवाद के लिए परिपक्व वस्तुपरक परिस्थितियां नहीं थीं और किसी भी युद्धरत देश में कोई जनव्यापी समाजवादी पार्टी नहीं थी; याने जिन परिस्थितियों के आधार पर महान शक्तियों के बीच युद्ध के संबंध में बैसेल के घोषणापत्र ने "सर्वहारा क्रांति" की कार्यनीति तैयार की थी, उनमें से कोई भी परिस्थिति तब नहीं थी।

जो कोई भी प्रगतिशील बुर्जुआ वर्ग के युग के युद्धों के प्रति मार्क्स के रुख़ का हवाला देता है और ठीक प्रतिक्रियावादी, कालातीत बुर्जुआ वर्ग के युग ही पर, समाजवादी क्रांति के युग पर लागू होनेवाली मार्क्स की यह उक्ति भूल जाता है कि "श्रमजीवियों का कोई स्वदेश नहीं होता", वह बेशर्मी के साथ मार्क्स को विकृत करता है और समाजवादी दृष्टिकोण के बजाय बुर्जुआ दृष्टिकोण की स्थापना करता है।

दूसरे इंटरनेशनल का पतन

१९१२ में बैसेल में सारी दुनिया के समाजवादियों ने संजीदगी के साथ ऐलान किया था कि वे यूरोप के आसन्न युद्ध को **सभी** सरकारों का "मुजरिमाना" और बेहद प्रतिक्रियावादी काम समझते हैं, जो पूंजीवाद के ख़िलाफ़ अनिवार्यतः क्रांति को जन्म देकर उसके पतन को त्वरित करेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्ध आया, संकट आया। बहुसंख्यक सामाजिक-जनवादी पार्टियों ने क्रांतिकारी कार्यनीति के बजाय प्रतिक्रियावादी कार्यनीति अपनायी और वे अपनी-अपनी सरकारों तथा बुर्जुआ वर्ग के पक्ष में हो गयीं। समाजवाद के साथ इस ग़द्दारी का अर्थ है दूसरे इंटरनेशनल (१८८९–१९१४) का पतन और हमें यह ज़रूर समझ लेना चाहिए कि इस पतन का कारण क्या है, किस चीज़ ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद को जन्म किया, किस चीज़ ने उसे बल दिया।

सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद अवसरवाद का चरम बिंदु है

दूसरे इंटरनेशनल के पूरे दौर में हर जगह सामाजिक-जनवादी पार्टियों के भीतर क्रांतिकारी तथा अवसरवादी पक्षों के बीच संघर्ष चलता रहा। अनेक देशों (ब्रिटेन, इटली, हालैंड, बुल्गारिया) में इसी ढर्रे पर फूट पैदा हुई। किसी भी मार्क्सवादी को इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि अवसरवाद मज़दूर आंदोलन के भीतर बुर्जुआ नीति को अभिव्यक्त करता है, कि वह टुटपुंजिया वर्ग के हितों को और सर्वहारा जनसमुदायों, उत्पीड़ित जनसमुदायों के हितों के ख़िलाफ़ "अपने" बुर्जुआ वर्ग के साथ बुर्जुआकृत मज़दूरों के एक बेहद छोटे हिस्से के संघ के हितों को अभिव्यक्त करता है।

उन्नीसवीं सदी के अंत की वास्तविक परिस्थितियों ने बुर्जुआ वैधता के उपयोग को उसकी ताबेदारी में परिणत करते हुए, मज़दूर वर्ग के भीतर नौकरशाहों और रईसों की एक छोटी-सी श्रेणी पैदा करते हुए और सामाजिक-जनवादी पार्टियों की क़तारों में अनेक टुटपुंजिया "सहयात्रियों" को खींचते हुए अवसरवाद को बेतरह बढ़ा दिया।

युद्ध ने इस घटना-प्रवाह को तेज़ कर दिया है और अवसरवाद को सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद में रूपांतरित कर दिया है, अवसरवादियों तथा बुर्जुआ वर्ग के गुप्त गंठजोड़ को खुले गंठजोड़ में रूपांतरित कर दिया है। उसके साथ ही सैनिक अधिकारियों ने हर जगह मार्शल लॉ लागू कर दिया है और मज़दूर जनता का मुंह बंद कर दिया है, जिसके लगभग सभी पुराने नेता बुर्जुआ वर्ग की तरफ़ जा मिले हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अवसरवाद तथा सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का आर्थिक आधार एक ही है: विशेषाधिकारप्राप्त उन मज़दूरों तथा टुटपुंजियों की एक नगण्य श्रेणी के हित, जो अपनी विशेषाधिकारपूर्ण स्थिति की, उन मुनाफ़ों के, जो उनके "अपने" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग दूसरे राष्ट्रों की लूट से, अपनी महान शक्ति की हैसियत के लाभों से प्राप्त करते हैं, तुच्छांशों पर अपने "अधिकार" की रक्षा कर रहे हैं।

अवसरवाद और सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का वैचारिक-राजनीतिक अंतर्य एक ही है: वर्ग संघर्ष के बजाय वर्ग सहयोग, संघर्ष के क्रांतिकारी तरीक़ों का त्याग, क्रांति के लिए "अपनी" सरकार की कठिनाइयों से फ़ायदा उठाने के बजाय कठिनाई की स्थिति में उसकी सहायता। अगर हम सभी यूरोपीय देशों को मिलाकर देखें, अगर हम व्यक्तियों (चाहे वे अधिक से अधिक आधिकारिक ही क्यों न हों) पर ध्यान न दें, तो हम देखते हैं कि अवसरवादी **प्रवृत्ति** ही सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का मुख्य गढ़ बन गयी है और क्रांतिकारियों के खेमे से सब कहीं उसके ख़िलाफ़ कमोबेश निरंतर विरोध की आवाज़ें सुनने में आ रही हैं। अगर हम, मिसाल के लिए, १९०७ की स्टुटगार्ट की अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस में प्रवृत्तियों की ग्रुपबंदी को लें, तो हम पाते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद साम्राज्यवाद का विरोधी था और अंतर्राष्ट्रीय अवसरवाद उस समय भी साम्राज्यवाद के पक्ष में था।

अवसरवादियों के साथ एकता का अर्थ है मज़दूरों और "उनके" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के बीच गंठजोड़ तथा अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी मज़दूर वर्ग में फूट

पिछले ज़माने में, युद्ध से पहले तक अवसरवाद को यद्यपि अकसर "भटकावपंथी", "चरमपंथी", फिर भी सामाजिक-जनवादी पार्टी का वैध भाग माना जाता था। युद्ध ने प्रकट कर दिया है कि भविष्य में ऐसा नहीं हो सकता। अब अवसरवाद "परिपक्व हो गया है", वह मज़दूर वर्ग के आंदोलन में बुर्जुआ वर्ग के भेदिये की अपनी भूमिका पूरी तरह अदा कर रहा है। अवसरवादियों के साथ एकता सरासर मक्कारी बन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गयी है, जिसकी मिसाल हम जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी में देखते हैं। सभी महत्वपूर्ण अवसरों पर (मिसाल के लिए, ४ अगस्त के मतदान के दौरान) अवसरवादी अपने अल्टीमेटम लेकर सामने आते हैं, जिसे वे बुर्जुआ वर्ग के साथ अपने अनगिनत संबंधों, ट्रेड-यूनियनों की कार्यकारिणियों में अपनी बहुसंख्या, आदि की सहायता से कार्यान्वित करते हैं। आज अवसरवादियों के साथ एकता का वास्तविक अर्थ है मज़दूर वर्ग को "अपने" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के मातहत बना देना, दूसरी जातियों के उत्पीड़न तथा महान शक्ति के विशेषाधिकारों के लिए लड़ने के प्रयोजन से उसके साथ गंठजोड़ करना। उसका अर्थ है सभी देशों के क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग में फूट पदा करना।

अलग-अलग मामलों में अनेक संगठनों में आधिपत्य जमाये हुए अवसरवादियों के ख़िलाफ़ संघर्ष करना चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो, अलग-अलग देशों में अवसरवादियों को मज़दूर पार्टियों से निकालने की प्रक्रिया चाहे कितनी भी असाधारण क्यों न हो, यह प्रक्रिया अनिवार्य और फलप्रद है। सुधारवादी समाजवाद दम तोड़ रहा है। पुनरुज्जीवित समाजवाद फ़्रांसीसी समाजवादी पाल गोलेय के सटीक शब्दों में "क्रांतिकारी, मेल-मिलाप न करनेवाला और विद्रोही होगा"।

"काउत्स्कीवाद"

दूसरे इंटरनेशनल के सबसे बड़े अधिकारी काउत्स्की इस बात के सबसे ठेठ तथा ज्वलंत उदाहरण हैं कि मार्क्सवाद मौखिक स्वीकृति के परिणामस्वरूप किस तरह व्यवहार में "स्त्रूवेवाद" में अथवा "ब्रेंतानोवाद"[153] में परिवर्तित हो गया है। हम इस बात को प्लेख़ानोव के उदाहरण में भी देखते हैं। प्रत्यक्ष कुतर्क द्वारा मार्क्सवाद को उसकी क्रांतिकारी सजीव आत्मा से वंचित किया जाता है, मार्क्सवाद में सब कुछ स्वीकार किया जाता है, सिवाय संघर्ष के क्रांतिकारी साधनों के, सिवाय उन साधनों के प्रचार और उनकी तैयारी के, सिवाय ठीक इस दिशा में जनसमुदायों की प्रशिक्षा के। काउत्स्की युद्ध ऋणों के पक्ष में मत देने से परहेज़, अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको विरोध में होने की ज़बानी स्वीकृति, आदि के रूप में वामपंथियों को दी गयी अपनी कूटनयिक, दिखावटी रिआयत का वर्तमान युद्ध में पितृभूमि की रक्षा को मान्यता देनेवाले सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के आधारभूत विचार के साथ ग़ैर उसूली तरीक़े से "मेल बैठाते" हैं। वही काउत्स्की, जिन्होंने १६०६ में क्रांतियों के आसन्न युग तथा युद्ध और क्रांति के संबंध पर एक पूरी किताब लिखी थी; वही काउत्स्की, जिन्होंने १६१२ में आगामी युद्ध से क्रांतिकारी लाभ उठाने के संबंध में बैसेल के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किये थे, अब हर ढंग से सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद को उचित ठहरा रहे हैं, उस पर बेल-बूटे काढ़ रहे हैं और क्रांति के हर विचार की, सीधे क्रांतिकारी संघर्ष की दिशा में उठाये जानेवाले हर क़दम की खिल्ली उड़ाने में प्लेख़ानोव की तरह बुर्जुआ वर्ग का साथ दे रहे हैं।

मज़दूर वर्ग जब तक इस ग़द्दारी, ढुलमुलयक़ीनी, अवसरवाद की ग़ुलामी और मार्क्सवाद के बेमिसाल सैद्धांतिक विकृतीकरण के ख़िलाफ़ निर्मम संघर्ष नहीं चलायेगा, तब तक वह अपनी विश्व-क्रांतिकारी भूमिका नहीं अदा कर सकता। काउत्स्कीवाद कोई संयोग की चीज़ नहीं है, बल्कि दूसरे इंटरनेशनल के अंतर्विरोधों की सामाजिक उपज है, मार्क्सवाद की ज़बानी वफ़ादारी और अवसरवाद की अमली मातहती के जोड़ की सामाजिक उपज है।

"काउत्स्कीवाद" की यह बुनियादी बगला-भगती अलग-अलग देशों में अलग-अलग रूपों से प्रकट हो रही है। हालैंड में रोलैंड-होल्स्ट पितृभूमि की रक्षा के विचार को अस्वीकार करते हुए भी अवसरवादियों की पार्टी के साथ एकता की हिमायत करते हैं। रूस में त्रोत्स्की भी उक्त विचार को अस्वीकार करते हुए उसी तरह अवसरवादी तथा अंधराष्ट्रवादी 'नाशा ज़ार्या' गुट के साथ एकता की हिमायत करते हैं। रूमानिया में राकोव्स्की अवसरवाद को इंटरनेशनल के पतन के लिए ज़िम्मेदार मानकर उसके ख़िलाफ़ युद्ध की घोषणा करने के साथ ही पितृभूमि की रक्षा के विचार का औचित्य स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। यह सब कुछ उस बुराई की अभिव्यक्ति है, जिसे डच मार्क्सवादियों (गोर्टर और पान्नेकोएक) ने "निष्क्रिय आमूलवाद" कहा है और जो सिद्धांत में क्रांतिकारी मार्क्सवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को सारसंग्रहवाद में बदल देती है तथा कार्यत: उसे अवसरवाद के अधीन अथवा उसके सामने शक्तिहीन बना देती है।

मार्क्सवादियों का नारा क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद का नारा है

युद्ध ने, निस्संदेह, अत्यधिक तीक्ष्ण संकट पैदा कर दिया है और जनसाधारण की मुसीबतों को अविश्वसनीय सीमा तक बढ़ा दिया है। इस युद्ध का प्रतिक्रियावादी स्वरूप और अपने दस्युतापूर्ण लक्ष्यों पर "राष्ट्रीय" विचारधारा का पर्दा डालने के लिए सभी देशों के बुर्जुआ वर्ग के बेशर्मीभरे झूठ—ये सब जनसाधारण में वस्तुपरक क्रांतिकारी परिस्थिति के आधार पर अनिवार्यत: क्रांतिकारी तेवर बना रहे हैं। हमारा कर्त्तव्य है कि हम जनसाधारण को इन तेवरों की चेतना प्राप्त करने में तथा उनके इन तेवरों को गहन और मूर्त बनाने में सहायता करें। इस कार्यभार की सही अभिव्यक्ति केवल इसी नारे द्वारा होती है: साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में परिवर्तित करो, और युद्ध के दौरान सुसंगत रूप से चलाये गये हर तरह के वर्ग संघर्ष, संजीदगी के साथ चलायी गयी "अवामी कार्रवाई" की हरेक कार्यनीति अनिवार्यत: इसी ओर ले जाते हैं। यह भविष्यवाणी करना असंभव है कि ज़बर्दस्त क्रांतिकारी आंदोलन महान शक्तियों के पहले या दूसरे साम्राज्यवादी युद्ध के सिलसिले में, उसके दौरान अथवा बाद में भड़क उठेगा। बहरहाल हमारा यह असंदिग्ध कर्त्तव्य है कि हम ठीक इसी दिशा में लगातार और बिना किसी भटकाव के काम करते जायें।

बैसेल के घोषणापत्र में पेरिस कम्यून द्वारा प्रस्तुत मिसाल का, याने सरकारों के आपसी युद्ध को गृहयुद्ध में बदलने का सीधा हवाला दिया गया है। आधी सदी पहले सर्वहारा वर्ग बहुत कमज़ोर था, समाजवाद के लिए वस्तुपरक परिस्थितियां अभी परिपक्व नहीं हुई थीं, सभी युद्धरत देशों के क्रांतिकारी आंदोलनों के बीच ताल-मेल और सहयोग नहीं हो सकता था और "राष्ट्रीय विचारधारा" (१७९२ की परंपरा) के प्रति पेरिस के मज़दूरों के एक हिस्से की अनुरक्ति उनकी टुटपुंजियाई कमज़ोरी थी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसका मार्क्स ने उस समय उल्लेख किया था, और कम्यून के पतन का एक कारण थी। उसके ५० साल बाद वे परिस्थितियां गुज़र चुकी हैं, जिन्होंने उस समय क्रांति को कमज़ोर किया था, और वर्तमान समय में ठीक पेरिस कम्यूनवालों की भावना में सरगर्मियों को नामंज़ूर करना किसी भी समाजवादी के लिए अक्षम्य है।

युद्ध-क्षेत्र की खाइयों में भाईचारे के उदाहरण

सभी युद्धरत देशों के बुर्जुआ अख़बारों ने युद्ध-क्षेत्र की खाइयों तक में युद्धरत राष्ट्रों के सैनिकों के बीच भाईचारे के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं और ऐसे भाईचारे के ख़िलाफ़ सैनिक अधिकारियों (जर्मनों और अंग्रेज़ों) द्वारा सख़्त आदेश जारी किये जाने से ज़ाहिर हो गया है कि सरकारें और बुर्जुआ वर्ग उसे गंभीर महत्व प्रदान कर रहे हैं। अगर पश्चिमी यूरोप की सामाजिक-जनवादी पार्टियों के ऊपरी हलक़ों में अवसरवाद का पूरा बोलबाला होते हुए और सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद को सभी सामाजिक-जनवादी अख़बारों तथा दूसरे इंटरनेशनल के सभी अधिकारियों का समर्थन प्राप्त होते हुए भी भाईचारे की ऐसी घटनाएं संभव हुईं, तो इससे हमारे लिए ज़ाहिर हो जाता है कि ग़ुलाम-मालिकों के वर्तमान मुजरिमाना, प्रतिक्रियावादी युद्ध की मुद्दत को कम करना और एक अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन संगठित करना कितना संभव होता, यदि सभी युद्धरत देशों में कम से कम वामपंथी समाजवादी भी उस दिशा में लगातार काम करते।

गुप्त संगठन का महत्व

सारी दुनिया के प्रमुख अराजकतावादियों ने इस युद्ध में सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद (प्लेख़ानोव और काउत्स्की की भावना में) के ज़रिए अपने को अवसरवादियों से कुछ कम ज़लील नहीं किया है। इस युद्ध का एक अच्छा नतीजा निस्संदेह यह होगा कि वह अराजकतावाद और अवसरवाद दोनों का अंत कर देगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनसमुदायों को संगठित करने तथा समाजवाद का प्रचार करने के लिए सभी वैध संभावनाओं—चाहे वे कितनी भी कम क्यों न हों—के इस्तेमाल से किसी भी हालत और किसी भी सूरत में परहेज़ न करते हुए सामाजिक-जनवादी पार्टियों को वैधता की ग़ुलामी ज़रूर तोड़ देनी चाहिए। गृहयुद्ध की ओर और बुर्जुआ वर्ग द्वारा वैधता भंग किये जाने के बाद हमारे द्वारा भी उसे भंग किये जाने की आवश्यकता की ओर इशारा करते हुए एंगेल्स ने लिखा था कि "बुर्जुआ महोदयो, पहले आप गोली चलाइये"। वर्तमान संकट ने ज़ाहिर कर दिया है कि बुर्जुआ वर्ग सभी देशों में, आज़ाद से आज़ाद देशों में भी वैधता भंग कर रहा है और संघर्ष के क्रांतिकारी तरीक़ों पर विचार करने, उनका प्रचार और मूल्यांकन करने, उनकी तैयारी करने के प्रयोजन से जब तक एक गुप्त संगठन नहीं क़ायम किया जाता, तब तक जनसाधारण को क्रांति की दिशा में ले चलना असंभव है। मिसाल के लिए, जर्मनी में समाजवादियों के सारे ईमानदारी के काम घृणास्पद अवसरवाद तथा मक्कारीभरे "काउत्स्कीवाद" के बावजूद हो रहे हैं और गुप्त रूप से हो रहे हैं। ब्रिटेन में फ़ौजी भरती के ख़िलाफ़ अपीलें छापने के लिए लोगों को सख़्त सज़ाएं देकर क़ैदख़ाने भेजा जा रहा है।

प्रचार के ग़ैर क़ानूनी तरीक़ों की अस्वीकृति को तथा वैध अख़बारों में उनकी खिल्ली उड़ाने को सामाजिक-जनवादी पार्टी की सदस्यता के अनुकूल समझना समाजवाद के साथ ग़द्दारी है।

साम्राज्यवादी युद्ध में "अपनी" सरकार की हार के बारे में

वर्तमान युद्ध में अपनी सरकारों की जीत के हामी तथा "न जीत, न हार" के नारे के हिमायती दोनों ही सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी दृष्टिकोण अपनाते हैं। क्रांतिकारी वर्ग प्रतिक्रियावादी युद्ध में अपनी सरकार की हार चाहे बिना और यह देखे बिना रह ही नहीं सकता कि उसकी सरकार की सैनिक असफलताओं के साथ उसका तख़्ता उलटने की सहूलियत जुड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुई है। सभी युद्धरत देशों के समाजवादियों को "अपनी" सभी सरकारों की हार की कामना करनी चाहिए और यह कामना अभिव्यक्त करनी चाहिए – इस विचार को केवल कोई बुर्जुआ ही "हास्यास्पद" या "वाहियात" समझ सकता है, जो यह विश्वास करता है कि सरकारों द्वारा शुरू किये गये युद्ध का अंत लाज़िमी तौर से सरकारों के आपसी युद्ध के रूप में ही होता है और जो चाहता है कि उसका अंत उसी प्रकार हो। इसके विपरीत ठीक ऐसा वक्तव्य ही सभी चेतन मज़दूरों के आंतरिक विचारों से मेल खा सकता है और साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में बदलने की दिशा में हमारी सरगर्मियों के अनुकूल है।

इसमें संदेह नहीं है कि ब्रिटिश, जर्मन तथा रूसी समाजवादियों के एक हिस्से द्वारा चलाये जानेवाले गंभीर युद्ध विरोधी आंदोलन ने संबंधित सरकारों की "सैनिक शक्ति को कमज़ोर कर दिया है", लेकिन ऐसे आंदोलन का श्रेय समाजवादियों को ही प्राप्त है। समाजवादियों को जन-समुदाय को समझाना होगा कि "अपनी" सरकारों का तख़्ता क्रांतिकारी तरीक़े से उलट देने के सिवा उनकी मुक्ति का कोई दूसरा मार्ग नहीं है और ठीक इसी प्रयोजन के लिए वर्तमान युद्ध में इन सरकारों की कठिनाइयों से फ़ायदा उठाया जाना चाहिए।

शांतिवाद और शांति का नारा

शांति के पक्ष में जनसाधारण की मनोदशा अकसर विरोध, क्रोध और युद्ध के प्रतिक्रियावादी स्वरूप की चेतना के प्रारंभ को अभिव्यक्त करती है। उस मनोदशा को इस्तेमाल करना सभी सामाजिक-जनवादियों का कर्त्तव्य है। वे इस मनोदशा से जनित सभी आंदोलनों और सभी प्रदर्शनों में गरम-जोशी के साथ भाग लेंगे, लेकिन इस विचार को मानकर वे जनता को धोखा नहीं देंगे कि क्रांतिकारी आंदोलन के अभाव में शांति समामेलनों के बिना, जातियों के उत्पीड़न के बिना, लूट के बिना, वर्तमान सरकारों तथा शासक वर्गों के बीच नये युद्धों के बीजाणुओं के बिना संभव हो सकती है। जनता को इस तरह धोखा देना महज़ युद्धरत सरकारों की गुप्त कूट-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीति के हाथों में खेलना और उनके प्रतिक्रांतिकारी मनसूबों को सुगम बनाना होगा। जो कोई भी स्थायी और जनवादी शांति चाहता है, उसे सरकारों तथा बुर्जुआ वर्ग के ख़िलाफ़ गृहयुद्ध का लाज़िमी तौर से पक्षधर होना चाहिए।

जातियों का आत्मनिर्णय का अधिकार

वर्तमान युद्ध में बुर्जुआ वर्ग द्वारा जनता के साथ की गयी सबसे अधिक व्यापक धोखेबाज़ी यह है कि उसने अपने दस्युतापूर्ण लक्ष्यों पर "राष्ट्रीय-मुक्तिकारी" विचारधारा का पर्दा डाल रखा है। अंग्रेज़ बेल्जियम की मुक्ति का वादा करते हैं, जर्मन, पोलैंड की मुक्ति का, इत्यादि। दरअसल, जैसा कि हम देख चुके हैं, यह युद्ध संसार की अधिकतर जातियों के उत्पीड़कों द्वारा ऐसे उत्पीड़न को मज़बूत करने तथा बढ़ाने के प्रयोजन से चलाया जानेवाला युद्ध है।

जातियों के प्रत्येक उत्पीड़न के ख़िलाफ़ लड़े बिना समाजवादी अपने महान लक्ष्य की पूर्ति नहीं कर सकते। इसलिए उन्हें बिना चूके हुए यह मांग करनी होगी कि **उत्पीड़क** देशों (विशेष रूप से तथाकथित "महान' शक्तियों) की सामाजिक-जनवादी पार्टियां **उत्पीड़ित** जातियों के आत्म-निर्णय के अधिकार को ठीक उसके राजनीतिक अर्थ में, याने राजनीतिक पृथक्करण के अधिकार को मानें और उसकी हिमायत करें। किसी महान शक्ति अथवा उपनिवेश-मालिक राष्ट्र का जो समाजवादी इस अधिकार की हिमायत करने में चूकता है, वह अंधराष्ट्रवादी है।

इस अधिकार की हिमायत से छोटे राज्यों के निर्माण को प्रोत्साहन नहीं मिलता, यही नहीं, उलटे उसके फलस्वरूप बहुत बड़े राज्यों तथा राज्य-संघों का अधिक स्वतंत्र, निर्भीकतापूर्ण और इस कारण अधिक विस्तृत तथा सार्वत्रिक निर्माण होता है, जो जनसमुदायों के लिए अधिक लाभदायक तथा आर्थिक विकास के लिए ज़्यादा अनुकूल होते हैं।

उत्पीड़ित जातियों के समाजवादियों को अपनी बारी में उत्पीड़ित तथा उत्पीड़क जातियों के **मजदूरों** की पूर्ण एकता (संगठनात्मक एकता समेत) के लिए बिना चूके लड़ना होगा। एक जाति से दूसरी जाति की क़ानूनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पृथकता का विचार (बावेर और रेनर द्वारा प्रतिपादित तथाकथित "सांस्कृतिक-राष्ट्रीय स्वायत्तता") प्रतिक्रियावादी है।

साम्राज्यवाद का युग मुट्ठी भर "महान" शक्तियों द्वारा सारे संसार की जातियों के निरंतर बढ़ते उत्पीड़न का युग है और इसलिए जब तक जातियों का आत्मनिर्णय का अधिकार स्वीकार नहीं किया जाता, तब तक साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी क्रांति के लिए लड़ना असंभव है। "दूसरी जातियों का उत्पीड़न करनेवाली कोई भी जाति आज़ाद नहीं हो सकती" (मार्क्स और एंगेल्स)। जो सर्वहारा वर्ग "अपनी" जाति द्वारा दूसरी जातियों के ख़िलाफ़ ज़रा भी ज़ोर-ज़बर्दस्ती बर्दाश्त करता है, वह सर्वहारा वर्ग समाजवादी नहीं हो सकता।

अध्याय २

रूस में वर्ग और पार्टियां

बुर्जुआ वर्ग और युद्ध

एक मामले में रूसी सरकार अपने यूरोपीय सह-बंधुओं से पिछड़ी नहीं है: उन्हीं की तरह उसे भी "अपनी" जनता को शानदार पैमाने पर धोखा देने में कामयाबी हासिल हुई है। रूस में भी झूठ और छल-कपट की एक विराट दैत्याकार मशीन चालू कर दी गयी है, ताकि जन-समुदाय को अंधराष्ट्रवाद की छूत लगायी जाये और यह धारणा पैदा की जाये कि ज़ारशाही सरकार "न्यायसंगत" युद्ध चला रही है, वह बेग़रज़ी से अपने "स्लाव भाइयों" की रक्षा कर रही है, इत्यादि।

ज़मींदार वर्ग और वाणिज्यिक तथा औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग के ऊपरी स्तर ने ज़ारशाही सरकार की युद्धशील नीति का गरम-जोशी के साथ समर्थन किया। वे तुर्की और आस्ट्रियाई मीरास के बंटवारे से अपने लिए ज़बर्दस्त माली लाभों और विशेषाधिकारों की उचित ही प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनकी कई कांग्रेसों में उन मुनाफ़ों पर पेशगी ख़ुशी मनायी जा चुकी है, जो ज़ारशाही फ़ौज की विजय से उनकी जेबों में पहुचेंगे। इसके अलावा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिक्रियावादी अच्छी तरह समझते हैं कि अगर रोमानोव राजतंत्र के पतन को कोई चीज़ स्थगित कर सकती है और रूस की नयी क्रांति को विलंबित कर सकती है, तो वह केवल एक ऐसा विदेशी युद्ध ही हो सकता है, जिसका अंत ज़ारशाही की विजय में हो।

"मंझोले" शहरी बुर्जुआ वर्ग, बुर्जुआ बुद्धिजीवी, आज़ाद-पेशा लोगों, इत्यादि का बड़ा हिस्सा भी अंधराष्ट्रवाद के संक्रामक रोग से ग्रस्त था—कम से कम युद्ध की शुरूआत में। कैडेटों ने—रूसी उदारतावादी बुर्ज़ुआ वर्ग की पार्टी ने—पूरी तरह और बिना शर्त ज़ारशाही सरकार का समर्थन किया। विदेश नीति के क्षेत्र में कैडेटों की पार्टी बहुत दिनों से एक सरकारी पार्टी रही हैं। जिस सर्वस्लाववाद की सहायता से ज़ारशाही कूटनीति ने एकाधिक वार अपनी शानदार राजनीतिक धोखा-धड़ी अंजाम दी है, वह कैडेटों की आधिकारिक विचारधारा बन गया है। रूसी उदारतावाद भ्रष्ट होकर राष्ट्रवादी-उदारतावाद बन गया है। वह "देशभक्ति" में यमदूत सभाइयों के साथ होड़ कर रहा है, वह हमेशा राज़ी-ख़ुशी से सेनाशाही के लिए, नौसेनाशाही, आदि के लिए वोट देता है। रूसी उदारतावाद के ख़ेमे में लगभग वही चीज़ दिखलाई दे रही है, जो १८७०–१८७९ के बीच के वरसों में जर्मनी में दिखाई देती थी, जब "स्वतंत्र चिंतनशील" उदारतावाद विकृत हो गया और उससे राष्ट्रवादी-उदारतावादी पार्टी का जन्म हुआ था। रूसी उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग ने निश्चित रूप से प्रति-क्रांति का रास्ता अपना लिया है। इस प्रश्न के संबंध में रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी के दृष्टिकोण की पूर्णतः पुष्टि हुई है। हमारे अवसर-वादियों के इस विचार की जीवन ने धज्जियां उड़ा दी हैं कि रूसी उदार-तावाद रूस की क्रांति में अब भी एक प्रेरक शक्ति है।

शासक गुट बुर्जुआ अख़बारों, पादरियों, इत्यादि की सहायता से किसानों में भी अंधराष्ट्रवादी भावनाएं जगाने में कामयाब रहा है। लेकिन जैसे-जैसे सैनिक युद्ध के मैदानों से वापस आयेंगे, वैसे-वैसे गांवों में भी मनोदशा ज़रूर ज़ारशाही राजतंत्र के ख़िलाफ़ होती जायेगी। किसानों के संपर्क में आनेवाली बुर्जुआ-जनवादी पार्टियां अंधराष्ट्रवादी धारा का मुक़ाबला नहीं कर सकीं। त्रुदोवीक पार्टी ने राज्य दूमा में युद्ध ऋणों के लिए मत

12—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देने से इनकार कर दिया। लेकिन अपने नेता केरेन्स्की के ज़रिए उसने एक "देशभक्तिपूर्ण" घोषणा की, जो राजतंत्र के लिए बहुत उपयोगी रही। "नरोदवादियों" के सभी क़ानूनी अख़बार आम तौर से उदारतावादियों के पिछलग्गू बन गये। यहां तक कि बुर्जुआ जनवाद का वामपक्ष भी, जिसका नाम समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी है और जो अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के साथ संबंधित है, उसी धारा में वह गया। अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो में उक्त पार्टी के प्रतिनिधि श्री रुबानोविच वेनक़ाब सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी के रूप में सामने आते हैं। "समहित संधि" के देशों के समाजवादियों के लंदन सम्मेलन में[154] उक्त पार्टी के आधे प्रतिनिधियों ने अंधराष्ट्रवादी प्रस्ताव के पक्ष में मत दिये (और शेष मतदान से अलग रहे)। समाजवादी-क्रांतिकारियों के ग़ैर क़ानूनी अख़बारों ('नोवोस्ती'[155] तथा अन्य) में अंधराष्ट्रवादियों का बोलबाला है। "बुर्जुआ हलक़ों के" क्रांतिकारियों का, याने मज़दूर वर्ग से असंबंधित बुर्जुआ क्रांतिकारियों का इस युद्ध में दिवाला पिट गया है। क्रोपोत्किन, बूर्त्सेव तथा रुबानोविच की दुखद नियति अत्यंत अर्थपूर्ण है।

मज़दूर वर्ग और युद्ध

रूस में केवल सर्वहारा ही एक वर्ग है, जिसे अंधराष्ट्रवाद की छूत नहीं लगायी जा सकी है। युद्ध के शुरूआती दिनों में हुई चंद ज़्यादतियों में मज़दूरों की केवल बेहद जाहिल श्रेणियां ही शामिल थीं। मास्को के जर्मन विरोधी दंगों में मज़दूरों की भूमिका को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया। आम तौर पर कुल मिलाकर रूस का मज़दूर वर्ग अंधराष्ट्रवाद की छूत से मुक्त सिद्ध हुआ।

इसकी वजह है देश में क्रांतिकारी परिस्थिति और रूसी सर्वहारा वर्ग के जीवन की आम अवस्थाएं।

१९१२–१९१४ के साल रूस में एक नये और ज़बर्दस्त क्रांतिकारी उभार की शुरूआत के द्योतक थे। हमने फिर एक ऐसा प्रबल हड़ताल आंदोलन देखा, जैसा दुनिया ने अब तक नहीं देखा था। १९१३ की आम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रांतिकारी हड़ताल में शामिल मज़दूरों की संख्या कम से कम तख़मीने के मुताबिक़ १५ लाख थी, जो १९१४ में बढ़कर २० लाख से भी अधिक हो गयी और १९०५ के स्तर के क़रीब पहुंच गयी। युद्ध की पूर्ववेला में पीटर्सबर्ग में बैरीकेडों पर पहली मुठभेड़ें हुई थीं।

ग़ैर क़ानूनी रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी ने इंटरनेशनल के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया। उसके हाथों में अंतर्राष्ट्रीयतावाद का झंडा अडिग रहा। हमारी पार्टी बहुत पहले अवसरवादी ग्रुपों और तत्वों से संगठनात्मक रूप से अलग हो चुकी थी। उसके पांवों पर अवसरवाद तथा "किसी भी क़ीमत पर वैधता" का कोई बोझ नहीं था और इस स्थिति ने उसे अपने क्रांतिकारी कर्त्तव्य के पालन में सहायता पहुंचायी, जैसे कि बिसोलाती की अवसरवादी पार्टी से संबंध-विच्छेद ने इटली के साथियों को सहायता दी है।

हमारे देश में आम परिस्थिति मज़दूर समुदायों में "समाजवादी" अवसरवाद के पनपने के लिए प्रतिकूल है। रूस के बुद्धिजीवियों, टुट-पुंजिया लोगों, इत्यादि में हम अवसरवादी तथा सुधारवादी रंगों का एक पूरा सिलसिला देखते हैं। लेकिन राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय मज़दूर समूह में वे तुच्छ संख्या में हैं। हमारे देश में मज़दूरों तथा दफ़्तरी कर्मचारियों की विशेषाधिकारप्राप्त श्रेणी बहुत छोटी है। हमारे यहां वैधता के प्रति अंधश्रद्धा नहीं पैदा की जा सकती थी। युद्ध से पहले विसर्जनवादियों को (अक्सेलरोद, पोत्रेसोव, चेरेवानिन, मास्लोव, इत्यादि के नेतृत्व में चलनेवाली अवसरवादियों की पार्टी को) मज़दूर समुदायों के बीच कोई भी गंभीर समर्थन नहीं प्राप्त हुआ। चौथी राज्य दूमा के चुनाव का नतीजा यह हुआ कि छः के छः विसर्जनवाद विरोधी मज़दूर प्रतिनिधि ही चुने गये। पेत्रोग्राद और मास्को में मज़दूरों के क़ानूनी तौर से प्रकाशित होने-वाले अख़बारों की विक्रय संख्या और उनके लिए किये गये धन-संग्रह से यह बात निर्विवाद रूप से विदित हो चुकी है कि वर्ग-चेतन मज़दूरों का ८० फ़ीसदी अवसरवाद तथा विसर्जनवाद के विरुद्ध है।

युद्ध के शुरू होने के बाद से ज़ारशाही सरकार ने हज़ारों-हज़ार आगे बढ़े हुए मज़दूरों को, हमारी ग़ैर क़ानूनी रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्टी के सदस्यों को गिरफ़्तार और जलावतन किया है। इस परिस्थिति के कारण और देश में मार्शल लॉ लागू किये जाने, हमारे अख़बारों के बंद किये जाने, आदि से हमारे आंदोलन में रुकावट पड़ी है। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद हमारी पार्टी की ग़ैर क़ानूनी क्रांतिकारी सरगर्मियां जारी हैं। हमारी पार्टी की समिति पेत्रोग्राद में 'प्रोलेतार्स्की गोलोस'[156] नाम का ग़ैर क़ानूनी अख़बार निकाल रही है।

विदेश में प्रकाशित मुखपत्र 'सोत्सिआल-देमोक्रात' के लेख पेत्रोग्राद में फिर से छापकर सूबों में भेजे जाते हैं। पर्चे गुप्त रूप से छापकर फ़ौजी बारकों तक में बांटे जाते हैं। शहर के बाहर, विभिन्न एकांत स्थानों पर मज़दूरों की गुप्त बैठकें की जाती हैं। हाल में धातुकर्मी मज़दूरों की बड़ी हड़तालें पेत्रोग्राद में शुरू हुई हैं। इन हड़तालों के संबंध में हमारी पेत्रोग्राद समिति ने मज़दूरों के नाम कई अपीलें निकाली हैं।

राज्य दूमा में
रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप और युद्ध

राज्य दूमा के सामाजिक-जनवादी सदस्यों के बीच १९१३ में फूट पड़ी। एक ओर छेईद्ज़े के नेतृत्व में अवसरवाद के सात समर्थक थे, जो उन सात ग़ैर सर्वहारा गुबेर्नियाओं से चुने गये थे, जहां मज़दूरों की संख्या कुल २,१४,००० थी। दूसरी ओर, वे छः सदस्य थे, जिनमें से सभी मज़दूर क्यूरिया के थे और रूस के सबसे ज़्यादा उद्योगीकृत केंद्रों से चुने गये थे, जहां मज़दूरों की संख्या १०,०८,००० थी।

फूट में मुख्य प्रश्न था: क्रांतिकारी मार्क्सवाद की कार्यनीति अथवा अवसरवादी सुधारवाद की कार्यनीति? व्यावहारिक रूप में मतभेद मुख्यतः संसद के बाहर जनसमुदायों के बीच कार्य के क्षेत्र में सामने आया। अगर उक्त कार्य करनेवाले क्रांतिकारी बुनियाद पर क़ायम रहना चाहते, तो उन्हें रूस में अपना काम ग़ैर क़ानूनी तरीक़े से चलाना पड़ता। छेईद्ज़े का ग्रुप ग़ैर क़ानूनी काम को नामंज़ूर करनेवाले विसर्जनवादियों का वफ़ादार साथी बना रहा और मज़दूरों के साथ हर बातचीत में, हर सभा में उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वकालत करता रहा। इससे फूट पड़ी। छः सदस्यों ने दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप बनाया। एक साल के काम ने निर्विवाद रूप से प्रकट कर दिया कि रूसी मजदूरों की ज़बर्दस्त बहुसंख्या इसी ग्रुप का समर्थन करती है।

युद्ध शुरू होने पर मतभेद बहुत ही स्पष्ट रूप से सामने आया। छेईद्ज़े का ग्रुप संसदीय कार्रवाई तक ही सीमित रहा। उसने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत नहीं दिये, क्योंकि अगर वह वैसा करता, तो मज़दूरों में अपने ख़िलाफ़ ग़ुस्से का एक तूफ़ान खड़ा कर लेता। (हमने देखा है कि रूस में टुटपुंजिया त्रुदोवीकों तक ने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत नहीं दिये।) लेकिन छेईद्ज़े के ग्रुप ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के ख़िलाफ़ कोई विरोध प्रकट नहीं किया।

हमारी पार्टी की राजनीतिक लाइन को अभिव्यक्त करते हुए रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप दूसरे ढंग से पेश आया। वह युद्ध के प्रति विरोध को मज़दूर वर्ग में अधिक से अधिक गहरे ले गया, उसने रूसी सर्वहारा वर्ग के व्यापक समुदायों में साम्राज्यवाद विरोधी प्रचार चलाया।

इसका मज़दूरों में हार्दिक स्वागत हुआ, जिससे सरकार डर गयी और उसे ख़ुद अपने ही क़ानूनों को खुलेआम तोड़कर हमारे संसदीय साथियों को गिरफ़्तार करने तथा साइबेरिया में आजीवन निर्वासित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। हमारे साथियों की गिरफ़्तारी के पहले ही सरकारी ऐलान में ज़ारशाही सरकार ने लिखा:

"सामाजिक-जनवादी संगठनों के चंद सदस्यों ने इस संबंध में एक बिलकुल ही असाधारण स्थिति अपनायी, जिनकी सरगर्मियों का उद्देश्य ग़ैर क़ानूनी अपीलों और ज़बानी प्रचार के ज़रिए युद्ध के ख़िलाफ़ आंदोलन करके रूस की फ़ौजी ताक़त को हिला देना था।"

ज़ारशाही के ख़िलाफ़ संघर्ष को "अस्थायी तौर से" बंद करने की वानडरवेल्डे की प्रसिद्ध अपील का नकारात्मक जवाब अपनी केंद्रीय समिति की मार्फ़त केवल हमारी पार्टी ने दिया। बेल्जियम में ज़ार के राजदूत राज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुमार कुदाशेव की गवाही से अब यह बात मालूम हो चुकी है कि वानडरवेल्डे ने उक्त अपील अकेले नहीं, बल्कि ज़ार के उपरोक्त राजदूत के सहयोग से तैयार की थी। विसर्जनवादियों का नेतृत्वकारी केंद्र वानडरवेल्डे से सहमत था और उसने आधिकारिक रूप से अख़बारों में बयान दिया कि वह "अपनी सरगर्मियों में **युद्ध का विरोध नहीं करेगा**"।

हमारे संसदीय साथियों पर ज़ारशाही सरकार का बुनियादी आरोप यह था कि उन्होंने वानडरवेल्डे को दिये गये अपने नकारात्मक जवाब को मज़दूरों में प्रचारित किया।

ज़ारशाही अभियोक्ता श्री नेनारोकोमोव ने मुक़दमे के समय जर्मन और फ़्रांसीसी समाजवादियों को हमारे साथियों के लिए आदर्श के रूप में पेश किया। उन्होंने कहा: "जर्मन सामाजिक-जनवादियों ने युद्ध ऋणों के पक्ष में मत दिये और अपने को सरकार का मित्र सिद्ध किया। इसी तरह जर्मन सामाजिक-जनवादी पेश आये, लेकिन रूसी सामाजिक-जनवाद के बदक़िस्मत सूरमा इस तरह पेश नहीं आये... बेल्जियम और फ़्रांस के समाजवादी एकमत होकर अन्य वर्गों के साथ अपने झगड़ों को भूल गये, वे पार्टी के मतभेदों को भूल गये और बेहिचक झंडे के नीचे खड़े हो गये।" लेकिन, उन्होंने कहा, रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्य अपनी पार्टी की केंद्रीय समिति की हिदायत पर उस तरह पेश नहीं आये...

मुक़दमे की कार्रवाई ने उस व्यापक ग़ैर क़ानूनी युद्ध विरोधी आंदोलन की एक शानदार तस्वीर उजागर कर दी, जो सर्वहारा जनता के बीच हमारी पार्टी चला रही थी। ज़ारशाही अदालत, निस्संदेह, दूर-दराज़ तक उन सारी सरगर्मियों को "उजागर" नहीं कर पायी, जिन्हें हमारे साथी इस क्षेत्र में चला रहे थे। फिर भी जितना कुछ उजागर हुआ, उससे यह प्रकट हो गया था कि चंद महीनों की कम मुद्दत में भी कितना कुछ किया गया था।

अदालत में हमारे दलों और हमारी समितियों द्वारा युद्ध के ख़िलाफ़ और अंतर्राष्ट्रीय कार्यनीति के पक्ष में जारी किये गये ग़ैर क़ानूनी घोषणा-पत्र पढ़े गये। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्य रूस भर में वर्ग-चेतन मज़दूरों के संपर्क में थे और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से युद्ध का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूल्यांकन करने में मज़दूरों की सहायता करने के लिए ग्रुप भरसक सब कुछ कर रहा था।

ख़ार्कोव गुबेर्निया के मज़दूरों के प्रतिनिधि कामरेड मुरानोव ने अदालत में कहा :

"यह समझते हुए कि जनता ने मुझे राज्य दूमा में आरामकुर्सी पर बैठे रहने के लिए नहीं भेजा है, मैं मज़दूर वर्ग की मनःस्थिति जानने के लिए जगह-जगह घूमा।" उन्होंने अदालत में यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने हमारी पार्टी के ग़ैर क़ानूनी आंदोलनकर्त्ता के काम की ज़िम्मेदारी ली थी और उराल में उन्होंने वेर्ख़्नेइसेत्स्क कारख़ाने तथा दूसरी जगहों में मज़दूर समितियां संगठित की थीं। अदालती कार्रवाई ने दिखा दिया कि युद्ध छिड़ने के बाद रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के सदस्य प्रचार-कार्य के लिए प्रायः सारे रूस में घूमे, कि मुरानोव, पेत्रोव्स्की, बदायेव तथा दूसरों ने मज़दूरों की अनगिनत बैठकों का इंतज़ाम किया, जिनमें युद्ध विरोधी प्रस्ताव पास किये गये, इत्यादि।

ज़ारशाही सरकार ने अभियुक्तों को मृत्युदंड की धमकी दी। यही वजह थी कि ख़ुद मुक़दमे के दौरान वे सब इतनी बहादुरी से पेश नहीं आये, जितनी बहादुरी से कामरेड मुरानोव पेश आये थे। उन्होंने यह कोशिश की कि ज़ारशाही अभियोक्ताओं के लिए उन्हें मुजरिम ठहराना मुश्किल हो जाये। इस बात को रूसी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी अब कमीनेपन के साथ इस्तेमाल कर रहे हैं, ताकि प्रश्न का यह सार धुंधला बना दिया जाये : मज़दूर वर्ग को किस प्रकार की संसदीय पद्धति की आवश्यकता है ?

संसदीय पद्धति को मान्यता मिलती है ज़्यूदेकुम और हाइने से, सेम्बा और वाइयां से, बिसोलाती और मुसोलिनी से, छेईद्ज़े और प्लेख़ानोव से तथा संसदीय पद्धति को मान्यता मिलती है दूमा में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप के हमारे साथियों से, उसको मान्यता मिलती है बुल्गारिया और इटली के साथियों से, जिन्होंने अंधराष्ट्रवाद से संबंध-विच्छेद कर लिया है। संसदीय पद्धति की विभिन्न क़िस्में होती हैं। कुछ लोग संसदीय अखाड़े का इस्तेमाल अपनी सरकारों की अनुकंपा प्राप्त करने अथवा अधिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से अधिक छेईद्ज़े के ग्रुप की तरह हर चीज़ से हाथ धो लेने के लिए करते हैं। दूसरे लोग संसदीय पद्धति का इस्तेमाल करते हैं अंत तक क्रांतिकारी बने रहने के लिए, ज़्यादा से ज़्यादा मुश्किल परिस्थितियों में भी समाजवादी और अंतर्राष्ट्रीयतावादी की हैसियत से अपना कर्त्तव्य पालन करने के लिए। कुछ लोगों की संसदीय सरगर्मियां उन्हें मंत्रिमंडल की गद्दियों पर पहुंचा देती हैं; दूसरे लोगों की संसदीय सरगर्मियां उन्हें जेलों में, जलावतनी में, सख़्त क़ैदों में पहुंचा देती हैं। कुछ लोग बुर्जुआ वर्ग की सेवा करते हैं और दूसरे सर्वहारा वर्ग की। कुछ लोग सामाजिक-साम्राज्यवादी हैं और दूसरे क्रांतिकारी मार्क्सवादी।

अध्याय ३

इंटरनेशनल की पुनःस्थापना

इंटरनेशनल की दुवारा स्थापना किस प्रकार की जानी चाहिए? लेकिन सबसे पहले चंद शब्द इस वारे में कि इंटरनेशनल की दुबारा स्थापना किस प्रकार **नहीं की जानी चाहिए।**

सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों तथा "मध्यमार्गियों" का तरीक़ा

जी, सभी देशों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी बड़े "इंटरनेशनलपंथी" हैं! लड़ाई शुरू होने के वक़्त से ही इंटरनेशनल की चिंता से उनकी नींद हराम होती आयी है। एक ओर, तो वे हमें आश्वासन देते हैं कि इंटरनेशनल के पतन की बात अतिशयोक्तिपूर्ण है। दरअसल कुछ भी ग़ैर मामूली नहीं हुआ है। काउत्स्की का कथन सुनिये: इंटरनेशनल महज़ एक "शांतिकालीन औज़ार" है, स्वभावतः युद्धकाल के लिए यह औज़ार किसी क़दर उपयुक्त सिद्ध नहीं हुआ। दूसरी ओर, सभी देशों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों ने पैदा हुई परिस्थितियों से बाहर निकलने का एक बहुत ही सीधा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सादा—और इससे भी बड़ी चीज़—अंतर्राष्ट्रीय—साधन पा लिया है। यह साधन जटिल नहीं है: ज़रूरत महज़ युद्ध के ख़त्म होने तक इंतज़ार करने की है, जब तक युद्ध ख़त्म नहीं होता, तब तक हर देश के समाजवादियों को अपनी "पितृभूमि" की रक्षा और "अपनी" सरकार का समर्थन करना चाहिए, युद्ध के ख़त्म होने पर पारस्परिक "क्षमादान" हो जायेगा और इस बात को स्वीकार कर लिया जायेगा कि हर कोई सही था, कि शांति-काल में हम भाइयों की तरह रहते हैं, लेकिन युद्ध-काल में हम अमुक-अमुक प्रस्तावों के ठीक आधार पर जर्मन मज़दूरों का आह्वान करते हैं कि वे अपने फ़्रांसीसी भाइयों का संहार करें और इसी तरह इसके उलटे क्रम में भी।

इस बात से काउत्स्की और प्लेख़ानोव, विक्टर एडलर और हाइने समान रूप से सहमत हैं। विक्टर एडलर लिखते हैं कि "इस कठिन समय को काट लेने के बाद हमारा पहला कर्त्तव्य यह होगा कि हम एक दूसरे के दोष दिखाने से बाज़ आयें"[157]। काउत्स्की का दावा है कि "अब तक, किसी भी तरफ़ से" इंटरनेशनल के भविष्य के बारे में "चिंता पैदा करनेवाली किसी भी गंभीर समाजवादी की कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी है"। प्लेख़ानोव कहते हैं कि "उन हाथों" (जर्मन सामाजिक-जनवादियों के हाथों) "से हाथ मिलाना अप्रीतिकर है, जिनसे बेगुनाह मारे गये लोगों के ख़ून की बू आती हो"। लेकिन वह फ़ौरन ही "क्षमादान" का प्रस्ताव करते हैं। वह लिखते हैं: "यहां **दिल को दिमाग़** का मातहत बना देना बिलकुल मुनासिब होगा। अपने महान हेतु की ख़ातिर इंटरनेशनल को देर से ज़ाहिर किये गये अफ़सोस पर भी ध्यान देना होगा।" हाइने ने *Sozialistische Monatshefte* में वानडरवेल्डे के आचरण को "साहसिक तथा गरिमापूर्ण" कहा है और उन्हें जर्मन वामपंथियों के लिए उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत किया है।

संक्षेप में, लड़ाई ख़त्म होने पर काउत्स्की और प्लेख़ानोव, वानडरवेल्डे और एडलर का एक आयोग नियुक्त कर दीजिये और पारस्परिक क्षमादान की भावना से पूर्ण एक "सर्वसम्मत" प्रस्ताव आनन-फ़ानन में तैयार हो जायेगा। झगड़े सुखांत ढंग से ढक दिये जायेंगे। मज़दूरों की यह समझने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में मदद करने के बजाय कि क्या कुछ घटित हुआ है, वे उन्हें नक़ली काग़ज़ी "एकता" द्वारा धोखा देंगे। सभी देशों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों तथा मक्कारों के एकीकरण को इंटरनेशनल की बहाली कहा जायेगा।

हमें अपने आप से इस बात को नहीं छिपाना चाहिए कि इस तरह की "बहाली" का ख़तरा बहुत ज़्यादा है। इसमें सभी देशों के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों की समान दिलचस्पी है। इस बात पर वे सभी समान रूप से रज़ामंद नहीं हैं कि उनके अपने-अपने देशों के मज़दूर ख़ुद ग़ौर करके इस सवाल को समझें: समाजवाद **अथवा** राष्ट्रवाद? एक दूसरे के पापों पर पर्दा डालने में उन सब की समान दिलचस्पी है। "अंतर्राष्ट्रीय" मक्कारी के उस्ताद काउत्स्की ने जो कुछ प्रस्तावित किया है, उसके सिवा कुछ और प्रस्तावित करने में उनमें से कोई भी समर्थ नहीं है।

फिर भी इस ख़तरे पर कम ध्यान दिया जाता है। लड़ाई के साल भर में हमने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की बहाली के अनेक प्रयत्न देखे हैं। हम लंदन और वियेना सम्मेलनों[158] की बात नहीं करेंगे, जिनमें अपनी-अपनी "पितृभूमि" के फ़ौजी सदर-मुक़ाम और बुर्जुआ वर्ग की सहायता करने के लिए पक्के अंधराष्ट्रवादी जमा हुए थे। हम लुगानो और कोपेनहैगन में हुए सम्मेलन[159], अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय युवक सम्मेलन[160] की बात कर रहे हैं। ये सम्मेलन शुभकामनाओं द्वारा प्रेरित थे। लेकिन उपरोक्त ख़तरे को देखने में वे बिलकुल ही असमर्थ रहे। उन्होंने इंटरनेशनलपंथियों के लिए किसी जुझारू लाइन की रूपरेखा पेश नहीं की। इंटरनेशनल की "बहाली" के लिए सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के तरीक़े से सर्वहारा वर्ग को जो ख़तरा है, उन्होंने उस ख़तरे से उसे आगाह नहीं किया। उन्होंने अधिक से अधिक पुराने प्रस्तावों को दुहराकर इतमीनान कर लिया और मज़दूरों को यह नहीं बताया कि सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के ख़िलाफ़ संघर्ष चलाये बिना समाजवाद का ध्येय आशाहीन है। वे अधिक से अधिक एक ही स्थान पर खड़े हो मार्च कर रहे थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विरोध-पक्ष के भीतर स्थिति

इस बात में कोई संदेह नहीं कि जर्मन सामाजिक-जनवादी विरोध-पक्ष के भीतर जो स्थिति है, उसमें सभी इंटरनेशनलपंथियों की अधिक से अधिक दिलचस्पी है। आधिकारिक जर्मन सामाजिक-जनवाद ने, जो दूसरे इंटरनेशनल में सबसे मज़बूत और अग्रणी पार्टी थी, अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संगठन को सबसे गहरी चोट पहुंचायी है। लेकिन इसके साथ ही जर्मन सामाजिक-जनवाद में ही विरोध-पक्ष प्रबलतम सिद्ध हुआ। यूरोप की सभी बड़ी पार्टियों में से जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी में ही उन साथियों के विरोध की ज़ोरदार आवाज़ पहले-पहल बुलंद हुई, जो समाजवाद के झंडे के प्रति वफ़ादार बने रहे हैं। *Lichtstrahlen*[161] और *Die Internationale* नाम की पत्रिकाएं पढ़कर हमें ख़ुशी हुई। हमें यह जानकर और ज़्यादा ख़ुशी हुई कि जर्मनी में ग़ैर क़ानूनी क्रांतिकारी घोषणापत्र बांटे गये, मिसाल के लिए, 'अपने ही देश में मुख्य दुश्मन' नाम का घोषणापत्र। इससे पता चला कि जर्मन मज़दूरों में समाजवाद की भावना जीवित है, कि जर्मनी में अब भी ऐसे लोग हैं, जो क्रांतिकारी मार्क्सवाद की रक्षा कर सकते हैं।

आधुनिक समाजवादी आंदोलन में फूट सबसे ज़्यादा स्पष्ट रूप से जर्मन सामाजिक-जनवाद के भीतर ही प्रकट हुई है। यहां हम साफ़-साफ़ तीन प्रवृत्तियां देखते हैं: अवसरवादी-अंधराष्ट्रवादी, जो पतन और ग़द्दारी में उस हद तक और कहीं नहीं डूबी है, जितना कि जर्मनी में; काउत्स्कीवादी "मध्यमार्गी", जो यहां अवसरवादियों के चाकर की भूमिका के अतिरिक्त और कोई भी भूमिका अदा करने में बिलकुल असमर्थ साबित हुए हैं; और वामपंथी, जो जर्मनी में एकमात्र सामाजिक-जनवादी हैं।

स्वभावतः, जर्मन वामपंथियों की आंतरिक स्थिति में हमारी सबसे ज़्यादा दिलचस्पी है। उनमें हम देखते हैं अपने साथी, सभी इंटरनेशनलवादी अंशकों की आशा।

उनकी आंतरिक स्थिति क्या है?

Die Internationale पत्रिका ने बिलकुल ठीक ही लिखा था कि जर्मन वामपंथ अभी तक उफान की प्रक्रिया में है, कि उसमें अभी फिर से बहुत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समूहबंदियां होंगी, कि उसमें अधिक संकल्पवान और कम संकल्पवान तत्व हैं।

हम, रूसी इंटरनेशनलवादी, स्वभावतः, अपने जर्मन वामपंथी साथियों के अंदरूनी मामलों में दख़लंदाज़ी के अधिकार का दावा बिलकुल नहीं करते। हम जानते हैं कि अवसरवादियों से लड़ने के लिए देश-कालानुसार अपने तरीक़े निर्धारित करने की पूरी योग्यता महज़ उन्हीं में है। हम तो केवल वस्तुस्थिति के संबंध में अपनी बेलाग राय ज़ाहिर कर देना अपना अधिकार और कर्त्तव्य समझते हैं।

हम इस बात के क़ायल हैं कि *Die Internationale* पत्रिका के अग्रलेख के लेखक का यह दावा ठीक है कि काउत्स्कीवादी "मध्यमार्गी" मार्क्सवाद को खुले सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों की अपेक्षा अधिक नुक़सान पहुंचा रहे हैं। जो कोई भी आज मतभेदों पर पर्दा डालता है, जो कोई भी आज मार्क्सवाद के बहाने मज़दूरों में काउत्स्कीवाद की बातों का प्रचार करता है, वह मज़दूरों को लोरियां सुनाकर सुलाने का काम करता है, वह ज़्यूदेकुम और हाइने जैसे लोगों से भी अधिक नुक़सान पहुंचाता है, जो सवाल को दो टूक ढंग से पेश करते हैं और मज़दूरों को उस पर ग़ौर करने और समझने के लिए मजबूर करते हैं।

"आधिकारिक निकायों" के विरुद्ध फ़्रोंदे* से, जो बनने की छूट इधर काउत्स्की और हाअज़े ले रहे हैं, किसी को गुमराह नहीं होना चाहिए। उनके तथा शीडेमान जैसे लोगों के बीच मतभेद सैद्धांतिक मतभेद नहीं हैं। उनका विश्वास है कि हिंडेनबुर्ग और माकेन्सेन अभी ही विजयी हो चुके हैं और अब वे समामेलनों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की ऐयाशी की छूट ले सकते हैं। दूसरे यह सोचते हैं कि हिंडेनबुर्ग और माकेन्सेन अभी विजयी नहीं हुए हैं और इसलिए "अंत तक डटे रहना" ज़रूरी है।

काउत्स्कीवाद "आधिकारिक निकायों" के ख़िलाफ़ महज़ दिखावटी

---

*फ़्रोंदे – फ़्रांस में १६४८ से १६५३ तक निरंकुश सत्ता के विरुद्ध चलनेवाला आंदोलन। लेनिन ने फ़्रोंदे का राजनीतिक विरोध-पक्ष के अर्थ में उपयोग किया। – सं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़ाई चला रहा है, ठीक इसलिए कि वह युद्ध के बाद मज़दूरों के सामने सैद्धांतिक विवाद पर पर्दा डाल सके और मामले पर उस अस्पष्ट "वाम-पंथी" भावना से भरे १००१ वें मोटे प्रस्ताव द्वारा मुलम्मासाज़ी कर सके, जिसमें दूसरे इंटरनेशनल के कूटनीतिज्ञ सिद्धहस्त हैं।

यह बात बिलकुल समझ में आने लायक़ है कि "आधिकारिक निकायों" के ख़िलाफ़ अपने कठिन संघर्ष में जर्मनी के विरोध-पक्ष को काउत्स्कीवाद के इस बेउसूल फ़ंदे का भी इस्तेमाल करना पड़ता है। लेकिन हर इंटरनेशनल-वादी के लिए कसौटी होनी चाहिए नव काउत्स्कीवाद के प्रति नकारात्मक रुख़। केवल वही सच्चा इंटरनेशनलवादी है, जो काउत्स्कीवाद के ख़िलाफ़ लड़ता है, जो यह समझता है कि "मध्यमार्गी" अपने नेताओं के दिखावटी स्थिति-परिवर्तन के बाद भी उसूली तौर से **अंधराष्ट्रवादियों और अवसरवादियों के संगी-साथी** बने रहते हैं।

इंटरनेशनल के ढुलमुल तत्वों के प्रति हमारे रुख़ का आम तौर पर ज़बर्दस्त महत्व है। वे तत्व – मुख्यतः **शांतिवादी** रुख़वाले समाजवादी – तटस्थ देशों में और चंद युद्धरत देशों में भी (मिसाल के लिए, ब्रिटेन में स्वतंत्र लेबर पार्टी) पाये जाते हैं। ये तत्व हमारे सहयात्री हो सकते हैं। सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के ख़िलाफ़ उनके साथ मैत्री संबंधों की ज़रूरत है। लेकिन यह बात ध्यान में रखना ज़रूरी है कि वे **महज़** सहयात्री हैं, कि इंटरनेशनल की बहाली हो जाने पर मुख्य, बुनियादी सवालों के बारे में वे हमारे साथ नहीं, बल्कि हमारे ख़िलाफ़ जायेंगे, वे काउत्स्की, शीडेमान, वानडरवेल्डे और सेम्बा के साथ जायेंगे। अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में अपने कार्यक्रम को उतने तक सीमित न रखा जाये, जितना इन तत्वों को स्वीकार्य हो। अन्यथा हम ख़ुद ढुलमुल शांतिवादियों के क़ैदी बन जायेंगे। मिसाल के लिए, यही बर्न में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में हुआ। जर्मन प्रतिनिधिमंडल ने, जो कामरेड क्लारा ज़ेत्किन के दृष्टिकोण पर क़ायम रहा, उस सम्मेलन में दरअसल "मध्यमार्गियों" की भूमिका अदा की। महिला सम्मेलन ने केवल वह बात कही, जो ट्रोएलस्ट्रा के नेतृत्व में चलनेवाली अवसरवादी डच पार्टी की महिला प्रतिनिधियों को और स्वतंत्र लेबर पार्टी की महिला प्रतिनिधियों को स्वीकार्य थी। हमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह नहीं भूलना चाहिए कि स्वतंत्र लेबर पार्टी ने "समहित संधि" के अंधराष्ट्रवादियों के लंदन सम्मेलन में वानडरवेल्डे के प्रस्ताव के पक्ष में मत दिया था। स्वतंत्र लेबर पार्टी युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार के खिलाफ़ जो वीरतापूर्ण संघर्ष चलाती रही, उसके लिए हम उसके प्रति महानतम आदर भावना प्रकट करते हैं। लेकिन हम जानते हैं कि इस पार्टी ने मार्क्सवादी स्थिति नहीं अपनायी है और अब भी नहीं अपनाती। और हमारा यह ख़याल है कि इस समय सामाजिक-जनवादी विरोध-पक्ष का मुख्य कार्यभार है क्रांतिकारी मार्क्सवाद का झंडा बुलंद करना, मज़दूरों को दृढ़तापूर्वक और निश्चित रूप से यह बतलाना कि हम साम्राज्यवादी युद्धों को किस तरह देखते हैं और क्रांतिकारी जन-कार्रवाई का यह नारा बुलंद करना कि साम्राज्यवादी युद्धों के युग को गृहयुद्धों के युग के समारंभ में बदल दो।

सब कुछ के बावजूद अनेक देशों में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी तत्व मौजूद हैं। वे मौजूद हैं जर्मनी में, रूस में, स्कैंडिनेवियन देशों में (वह प्रभावशाली प्रवृत्ति, जिसके प्रतिनिधि कामरेड हेगलुंड हैं), बाल्कन प्रायद्वीप में (बुल्गारियाई "तेस्न्याकी" की पार्टी), इटली में, इंगलैंड में (ब्रिटिश समाजवादी पार्टी का एक हिस्सा), फ़्रांस में (ख़ुद वाइयां ने *L' Humanité* में स्वीकार किया है कि उन्हें इंटरनेशनलवादियों के विरोध-पत्र मिले हैं, लेकिन उन्होंने एक को भी पूरा नहीं प्रकाशित किया है), हालैंड में ('ट्रि-ब्यून'-पंथी [162]), इत्यादि, इत्यादि। चाहे इन मार्क्सवादी तत्वों की संख्या शुरू में कितनी ही कम क्यों न हो, उन्हें एकजुट करना, उनकी ओर से सच्चे समाजवाद के विस्मृत शब्दों की याद दिलाना, अंधराष्ट्रवादियों के साथ संबंध-विच्छेद करने और मार्क्सवाद के पुराने झंडे तले आने के लिए सभी देशों के मज़दूरों का आह्वान करना – यह है आज का कार्यभार।

"सरगर्मी" के कार्यक्रम नामवाले सम्मेलनों का नतीजा अब तक सिर्फ़ यह हुआ है कि उनमें कम-ज़्यादा पूरी तरह सीधे-सादे शांतिवाद के कार्यक्रम की घोषणा की गयी। मार्क्सवाद शांतिवाद नहीं है। युद्ध को जल्दी से जल्दी बंद कराने के लिए संघर्ष करना ज़रूरी है। लेकिन केवल **क्रांतिकारी** संघर्ष के आह्वान की स्थिति में ही "शांति" की मांग सर्वहारा अर्थ प्राप्त करती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है। क्रांतियों के एक सिलसिले के बग़ैर तथाकथित जनवादी शांति टुटपुंजिया यूटोपिया है। सरगर्मी का सच्चा कार्यक्रम केवल **मार्क्सवादी** कार्यक्रम हो सकता है, जो जनता के सामने घटनाओं की पूर्ण और स्पष्ट व्याख्या करे, जो बताये कि साम्राज्यवाद क्या है और कैसे उसका मुक़ाबला किया जाये, जो खुलेआम कहे कि दूसरे इंटरनेशनल के पतन का कारण अवसरवाद था, जो अवसरवादियों के बग़ैर और उनके **खिलाफ़** एक मार्क्सवादी इंटरनेशनल के निर्माण के लिए खुली आवाज़ उठाये। केवल ऐसा ही कार्यक्रम हमारे लिए देर-सवेर सच्चे सर्वहारा जनसाधारण की हमदर्दी सुनिश्चित कर सकता है, जो यह प्रकट करे कि हमें अपने ऊपर विश्वास है, हमारा मार्क्सवाद में विश्वास है, हम अवसरवाद के ख़िलाफ़ जीवनमरण के संघर्ष की घोषणा करते हैं।

रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी और तीसरा इंटरनेशनल [163]

रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी ने बहुत पहले अपने अवसरवादियों से नाता तोड़ लिया था। रूसी अवसरवादी अब तो अंधराष्ट्रवादी भी बन चुके हैं। इससे हमारी इस राय की पुष्टि ही होती है कि समाजवाद के हित में उनसे संबंध-विच्छेद ज़रूरी है। हम इस बात के क़ायल हैं कि सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के साथ सामाजिक-जनवादियों के वर्तमान मतभेद अराजकतावादियों के साथ समाजवादियों के उस समय के मतभेदों से लेशमात्र कम नहीं हैं, जब सामाजिक-जनवादियों ने अराजकतावादियों से संबंध-विच्छेद किया था। अवसरवादी Monitor ने *Preußische Jahrbücher* में ठीक ही कहा था कि वर्तमान एकता में अवसरवादियों तथा बुर्जुआ वर्ग का लाभ है, क्योंकि उससे वामपंथियों को अंधराष्ट्रवादियों के सामने झुकना पड़ता है और वह मज़दूरों को विवाद को समझने तथा अपनी सच्ची मज़दूर पार्टी, सच्ची समाजवादी पार्टी बनाने से रोकती है। हम पक्के तौर से क़ायल हैं कि वर्तमान परिस्थितियों में अवसरवादियों और अंधराष्ट्रवादियों के साथ संबंध-विच्छेद क्रांतिकारी का पहला कर्त्तव्य है,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक उसी तरह जिस तरह पिछड़े हुए मज़दूरों को जल्दी से जल्दी शिक्षित करने और उन्हें सामाजिक-जनवादी पार्टी की क़तारों में खींचने के लिए ही पीलों*, यहूदी-विरोधियों, उदारतावादी मज़दूर यूनियनों, आदि के साथ संबंध-विच्छेद करना ज़रूरी था।

हमारी राय में तीसरे इंटरनेशनल का निर्माण ठीक ऐसे ही क्रांतिकारी आधार पर किया जाना चाहिए। हमारी पार्टी के लिए यह सवाल मौजूद ही नहीं है कि सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के साथ संबंध-विच्छेद करना मुनासिब है अथवा नहीं। उसके लिए यह सवाल अटल ढंग से हल हो चुका है। हमारी पार्टी के लिए सवाल सिर्फ़ यह है कि क्या अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर यह निकटतम भविष्य में हो सकता है।

यह बिलकुल समझ में आनेवाली बात है कि **अंतर्राष्ट्रीय** मार्क्सवादी संगठन बनाने के लिए यह ज़रूरी है कि **विभिन्न** देशों में स्वतंत्र मार्क्सवादी पार्टियों के निर्माण की तत्परता हो। सबसे पुराने और सबसे मज़बूत मज़दूर आंदोलन का देश होने के नाते जर्मनी का निर्णायक महत्व है। निकटतम भविष्य में यह प्रकट हो जायेगा कि एक नये, मार्क्सवादी इंटरनेशनल के निर्माण के लिए परिस्थितियां परिपक्व हो चुकी हैं अथवा नहीं। अगर हो चुकी हैं, तो हमारी पार्टी ख़ुशी से ऐसे तीसरे इंटरनेशनल में शरीक होगी, जो अवसरवाद तथा अंधराष्ट्रवाद से मुक्त होगा। अगर नहीं, तो उससे यह पता चलेगा कि इस मुक्ति के लिए कमोबेश दीर्घकालीन विकास-क्रम की ज़रूरत है। वैसी हालत में हमारी पार्टी उस समय तक पुराने इंटरनेशनल के भीतर चरम विरोध-पक्ष रहेगी, जब तक विभिन्न देशों में क्रांतिकारी मार्क्सवाद पर आधारित एक अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ के लिए बुनियाद निर्मित नहीं हो जाती।

यह बात न तो हम जानते हैं और न जान सकते हैं कि अगले चंद साल में अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में घटना-प्रवाह क्या होगा। लेकिन एक बात हम निश्चित रूप से जानते हैं और उस पर हमारा अडिग विश्वास है। वह यह कि **हमारे** देश में, **हमारे** सर्वहारा वर्ग के बीच **हमारी** पार्टी अथक

*दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादियों को दिया गया नाम। —**सं०**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप से उपरोक्त दिशा में काम करेगी और अपनी रोज़मर्रा की सारी सरगर्मियों द्वारा **मार्क्सवादी** इंटरनेशनल की रूसी शाखा का निर्माण करेगी।

हमारे यहां रूस में भी खुले सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों तथा "मध्य-मार्गी" ग्रुपों का अभाव नहीं है। ये लोग मार्क्सवादी इंटरनेशनल के निर्माण के ख़िलाफ़ संघर्ष करेंगे। हम जानते हैं कि उसूली तौर से प्लेख़ानोव भी उसी ज़मीन पर खड़े हैं, जिस पर ज़्यूदेकुम खड़े हैं, और वह अभी से ज़्यूदेकुम की तरफ़ हाथ बढ़ाने लगे हैं। हम जानते हैं कि जिसे "संगठन समिति" कहा जाता है, वह अक्सेलरोद के नेतृत्व में रूस की सरज़मीन पर काउत्स्कीवाद का प्रचार कर रही है। मज़दूर वर्ग की एकता के बहाने ये लोग अवसरवादियों के साथ और उनकी मार्फ़त बुर्जुआ वर्ग के साथ एकता का प्रचार कर रहे हैं। लेकिन रूस के मज़दूर आंदोलन की वर्तमान स्थिति के बारे में हमारी हर जानकारी हमें पूरी तरह यक़ीन दिलाती है कि वर्ग-चेतन रूसी सर्वहारा वर्ग पहले की तरह ही **हमारी पार्टी** के साथ रहेगा।

अध्याय ४

फूट का इतिहास और रूस में सामाजिक-जनवाद की वर्तमान स्थिति

युद्ध के संबंध में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की ऊपर वर्णित कार्यनीति रूस में सामाजिक-जनवाद के तीस साल के विकास का अनिवार्य परिणाम है। इस कार्यनीति तथा हमारे देश में सामाजिक-जनवाद की वर्तमान स्थिति को हमारी पार्टी के इतिहास पर ग़ौर किये बग़ैर ठीक तौर से नहीं समझा जा सकता। यही वजह है कि हमारे लिए यहां भी पाठकों को इस इतिहास के मुख्य तथ्यों की याद दिलाना ज़रूरी है।

एक विचारधारात्मक प्रवृत्ति के रूप में सामाजिक-जनवाद १८८३ में पैदा हुआ, जब रूस पर लागू सामाजिक-जनवादी विचारों को पहले-पहल विदेश में 'श्रम-मुक्ति' दल[164] द्वारा क्रमबद्ध ढंग से प्रतिपादित किया गया। अंतिम दशाब्दी की शुरुआत तक सामाजिक-जनवाद रूस के आम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मज़दूर आंदोलन से बिलकुल असंबंधित केवल एक विचारधारात्मक प्रवृत्ति बना रहा। अंतिम दशाब्दी की शुरूआत में सामाजिक आंदोलन के उभार, मज़दूरों की हलचल और हड़ताल आंदोलन ने सामाजिक-जनवादियों को मज़दूर वर्ग के संघर्ष (आर्थिक तथा राजनीतिक दोनों ही) के साथ अविभाज्य रूप से संबंधित एक सक्रिय राजनीतिक शक्ति बना दिया। ठीक उसी क्षण से सामाजिक-जनवादी अर्थवादियों और 'ईस्क्रा'-पंथियों [165] में विभाजित होने लगे।

अर्थवादी और पुराना 'ईस्क्रा' (१८६४–१६०३)

रूसी सामाजिक-जनवाद के भीतर अर्थवाद एक अवसरवादी रुझान था। उसका राजनीतिक सार यह कार्यक्रम बनकर रह गया था: "मज़दूरों के लिए आर्थिक संघर्ष, उदारतावादियों के लिए राजनीतिक संघर्ष"। उसके मुख्य सैद्धांतिक आधार का नाम "क़ानूनी मार्क्सवाद" अथवा "स्त्रूवेवाद" था, जो हर प्रकार की क्रांतिकारिता से पूर्णतः रहित तथा उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग की आवश्यकताओं के अनुकूल रूपांतरित "मार्क्सवाद" को "मान्यता देता था"। रूस में मज़दूर समुदाय के पिछड़ेपन का हवाला देते हुए और "जनता के साथ चलने" की चाह के कारण अर्थवादी लोग मज़दूर वर्ग के आंदोलन के कार्यभार तथा कार्य-क्षेत्र को आर्थिक संघर्ष तथा उदारतावाद के राजनीतिक समर्थन तक ही सीमित करते थे और अपने सामने स्वतंत्र राजनीतिक अथवा कोई क्रांतिकारी कार्य नहीं रखते थे।

पुराने 'ईस्क्रा' ने (१६००–१६०३) क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद के उसूलों के नाम पर अर्थवाद के ख़िलाफ़ कामयाब संघर्ष चलाया। वर्ग-चेतन सर्वहारा के समस्त शिरोमणियों ने 'ईस्क्रा' का पक्ष लिया। क्रांति से पहले बरसों तक सामाजिक-जनवाद ने अधिक से अधिक सुसंगत तथा समझौताहीन कार्यक्रम पेश किया। और वर्ग संघर्ष ने, १६०५ की क्रांति में जनता की कार्रवाइयों ने उस कार्यक्रम की पुष्टि कर दी। अर्थवादियों ने अपने को जनता के पिछड़ेपन के अनुकूल तबदील कर दिया। 'ईस्क्रा' मज़दूरों के हरावल को शिक्षित-दीक्षित करता रहा, जो जनता को आगे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ले चलने में समर्थ था। सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों द्वारा इस समय पेश की जानेवाली सारी दलीलें (कि जनता का ख़याल रखना ज़रूरी है, कि साम्राज्यवाद प्रगतिशील है, कि क्रांतिकारियों ने "भ्रम" पाल रखे हैं, इत्यादि) अर्थवादियों द्वारा पेश की गयी थीं। मार्क्सवाद में "स्त्रूवेवादी" ढंग की अवसरवादी तबदीली से रूस का सामाजिक-जनवाद बीस साल पहले परिचित हो चुका था।

मेंशेविज़्म और बोल्शेविज़्म (१९०३–१९०८)

बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के युग ने सामाजिक-जनवादी धाराओं के बीच एक नये संघर्ष को जन्म दिया, जो पहले के संघर्ष का सीधा सिलसिला था। अर्थवाद "मेंशेविज़्म" में परिवर्तित हो गया। पुराने 'ईस्क्रा' की क्रांतिकारी कार्यनीति की हिमायत ने "बोल्शेविज़्म" को जन्म दिया।

मेंशेविज़्म १९०५–१९०७ के तूफ़ानी बरसों में उदारतावादी बुर्जुआ लोगों द्वारा समर्थित एक अवसरवादी रुझान और मज़दूर आंदोलन में उदारतावादी बुर्जुआ प्रवृत्तियों का वाहक था। मज़दूर वर्ग के संघर्ष को उदारतावाद के अनुकूल बनाना – यह था उसका सारतत्व। इसके विपरीत बोल्शेविज़्म ने उदारतावादियों की ढुलमुलयक़ीनी और ग़द्दारी के बावजूद सामाजिक-जनवादी मज़दूरों के सामने क्रांतिकारी संघर्ष के निमित्त जनवादी किसान समुदाय को उठाने का कार्यभार पेश किया। और जैसा कि ख़ुद मेंशेविकों ने एकाधिक बार स्वीकार किया, मज़दूर जनता क्रांति के दौरान सभी बड़ी से बड़ी कार्रवाइयों में बोल्शेविकों के साथ चलती रही।

१९०५ की क्रांति ने रूस में अडिग क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी कार्यनीति की आज़माइश की, उसे मज़बूत किया, गहन और फ़ौलादी बनाया। वर्गों और पार्टियों की खुली कार्रवाइयों ने सामाजिक-जनवादी अवसरवाद ("मेंशेविज़्म") और उदारतावाद के संबंध को बार-बार बेनक़ाब किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्क्सवाद और विसर्जनवाद
(१९०८-१९१४)

प्रतिक्रांति के दौर ने सामाजिक-जनवाद की अवसरवादी और क्रांतिकारी कार्यनीति के सवाल को फिर एक बिलकुल नये रूप में फ़ौरी सवाल बना दिया। मेंशेविज़्म की मुख्य धारा ने उसके अनेक श्रेष्ठतम प्रतिनिधियों के विरोध के बावजूद विसर्जनवाद की धारा को, रूस में नई क्रांति के लिए संघर्ष के परित्याग, ग़ैर क़ानूनी संगठन और सरगर्मी के परित्याग, "गुप्त कारंवाई" और जनतंत्र के नारे के तिरस्कारपूर्ण उपहास, इत्यादि को जन्म दिया। 'नाशा ज़ार्या' पत्रिका के क़ानूनी लेखकों (सर्वश्री पोत्रेसोव, चेरेवानिन, इत्यादि) के दल के रूप में पुरानी सामाजिक-जनवादी पार्टी से बिलकुल स्वतंत्र एक ऐसा केंद्र एकजुट हुआ, जिसका वह रूसी उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग हज़ार तरीक़े से समर्थन, प्रचार तथा पोषण करता था, जो क्रांतिकारी संघर्ष से मज़दूरों को विरत करना चाहता था।

अवसरवादियों के इस दल को रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के जनवरी, १९१२ के उस सम्मेलन ने पार्टी से निकाल दिया, जिसने विदेश-स्थित अनेक दलों और ग्रुपों के घोर प्रतिरोध के बावजूद पार्टी को बहाल किया। दो साल से भी अधिक मुद्दत तक (१९१२ के शुरू से १९१४ के बीच तक) दो सामाजिक-जनवादी पार्टियों के बीच डटकर संघर्ष चलता रहा: जनवरी, १९१२ में चुनी गयी केंद्रीय समिति और उस "संगठन समिति" के बीच, जिसने जनवरी सम्मेलन को मानने से इनकार कर दिया था और जो भिन्न ढंग से, 'नाशा ज़ार्या' दल के साथ एकता बरक़रार रखते हुए पार्टी को बहाल करना चाहती थी। मज़दूरों के दो दैनिक अख़बारों ('प्राव्दा' और 'लूच'[166] तथा उनके उत्तरवर्त्तियों) के बीच और चौथी राज्य दूमा के भीतर दो सामाजिक-जनवादी ग्रुपों ('प्राव्दा'-पंथियों अथवा मार्क्सवादियों के रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर ग्रुप और छेईद्ज़े के नेतृत्व में चलनेवाले विसर्जनवादियों के "सामाजिक-जनवादी ग्रुप") के बीच प्रचंड संघर्ष चलता रहा।

पार्टी के क्रांतिकारी उसूलों के प्रति वफ़ादारी की रक्षा रखते हुए, मज़दूर आंदोलन के नये उभार (विशेषतः १९१२ के वसंत के बाद) को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहारा देते हुए, क़ानूनी और ग़ैर क़ानूनी संगठन, अख़बार और प्रचार में ताल-मेल बैठाते हुए 'प्राव्दा'-पंथियों ने वर्ग-चेतन मज़दूरों की प्रबल बहुसंख्या को अपने गिर्द संगठित कर लिया, जबकि विसर्जनवादी, जो राजनीतिक शक्ति के रूप में एकमात्र 'नाशा ज़ार्या' ग्रुप की मार्फ़त काम करते थे, उदारतावादी बुर्जुआ तत्वों के सर्वतोमुखी समर्थन पर अवलंबित रहे।

दोनों पार्टियों के अख़बारों को मज़दूर ग्रुपों द्वारा खुलेआम दिये गये चंदों से, जो सामाजिक-जनवादियों से **सदस्यता-चंदा** वसूल करने का उस दौर में रूसी परिस्थितियों के अनुकूल ढाला गया एक तरीक़ा (और क़ानूनी तौर से एकमात्र संभव तथा सभी द्वारा बेरोक जांचा जा सकनेवाला एकमात्र तरीक़ा) था, 'प्राव्दा'-पंथियों (मार्क्सवादियों) की शक्ति और प्रभाव के सर्वहारा स्रोत तथा विसर्जनवादियों (और उनकी "संगठन समिति") की शक्ति और प्रभाव के बुर्जुआ-उदारतावादी स्रोत की उल्लेखनीय पुष्टि हुई। ये रहे उक्त चंदों के कुछ आंकड़े, जो पूरे के पूरे 'मार्क्सवाद तथा विसर्जनवाद'[167] नाम की पुस्तक में और संक्षेप में २१ जुलाई, १९१४ के जर्मन सामाजिक-जनवादी अख़बार 'लाइपज़िग जन-समाचारपत्र'[168] में दिये गये हैं।

१ जनवरी, १९१४ से १३ मई, १९१४ तक पीटर्सबर्ग के मार्क्सवादी ('प्राव्दा'-वादी) और विसर्जनवादी दैनिक अख़बारों को प्राप्त चंदों की संख्या और रक़म :

	'प्राव्दा'-पंथी		विसर्जनवादी	
	चंदों की संख्या	रूबलों में रक़म	चंदों की संख्या	रूबलों में रक़म
मज़दूर दलों से	२,८७३	१८,९३४	६७१	५,२९६
ग़ैर मज़दूर दलों से . . .	७१३	२,६५०	४५३	६,७६०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार १९१४ तक हमारी पार्टी ने रूस के वर्ग-चेतन मज़दूरों के ४/५ हिस्से को क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी कार्यनीति के तहत एकताबद्ध कर लिया था। १९१३ के पूरे साल के लिए मज़दूर दलों से 'प्राव्दा'-पंथियों को २,१८१ और विसर्जनवादियों को ६६१ चंदे प्राप्त हुए। १ जनवरी, १९१३ से १३ मई, १९१४ तक के आंकड़े थे: 'प्राव्दा'-पंथियों के लिए (याने हमारी पार्टी के लिए) मज़दूर दलों से ५,०५४ चंदे और विसर्जनवादियों के लिए १,३३२ चंदे, याने २०.८ फ़ीसदी।

मार्क्सवाद और सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद (१९१४–१९१५)

१९१४–१९१५ के महान यूरोपीय युद्ध ने सभी यूरोपीय सामाजिक-जनवादियों के साथ ही रूसी सामाजिक-जनवादियों को भी एक विश्वव्यापी पैमाने के संकट पर अपनी कार्यनीति की आज़माइश करने का अवसर दिया। अन्य सरकारों की अपेक्षा ज़ारशाही के मामले में युद्ध का प्रतिक्रियावादी, दस्युतापूर्ण और गुलाम-मालिक स्वरूप कहीं अधिक ज्वलंत रूप में बेनक़ाब होता है। इसके बावजूद विसर्जनवादियों का मुख्य ग्रुप (हमारे ग्रुप के अतिरिक्त एकमात्र दूसरा ग्रुप, जिसका रूस में अपने उदारतावादी संबंधों की बदौलत गंभीर प्रभाव है) सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद की ओर चला गया! काफ़ी लंबे अर्से से वैधता के एकाधिकार का उपभोग करते हुए इस 'नाशा ज़ार्या' दल ने "युद्ध का विरोध न करने", त्रिराष्ट्र (अब चतुर्राष्ट्र) संधि की विजय-कामना करने, जर्मन साम्राज्यवाद पर "अति पैशाचिक पापों" का अभियोग लगाने, आदि के पक्ष में प्रचार चलाया है। प्लेख़ानोव ने, जिन्होंने १९०३ से बराबर अपनी घोर राजनीतिक ढुलमुलयक़ीनी तथा अवसरवाद की ओर स्थानांतरण के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, यही स्थिति और भी ज्यादा ज़ोर के साथ अपनायी और उसके लिए वह रूस के सारे बुर्जुआ अख़बारों द्वारा प्रशंसित हुए। प्लेख़ानोव यह ऐलान करने की हद तक गिर गये हैं कि ज़ारशाही न्यायसंगत युद्ध चला रही है। वह इस हद तक गिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये हैं कि उन्होंने इटली के सरकारी अख़बारों में इंटरव्यू छपवाये हैं और उसे युद्ध में खींचने की कोशिश की है!!

यों इस बात की पूर्णतः पुष्टि हो गयी कि विसर्जनवाद का हमारा मूल्यांकन और अपनी पार्टी से विसर्जनवादियों के मुख्य ग्रुप का निष्कासन सही था। अब विसर्जनवादियों का असली कार्यक्रम और उनकी प्रवृत्ति का असली महत्व केवल आम अवसरवाद में ही नहीं, बल्कि महान राष्ट्र के प्रतिनिधियों के नाते रूसी ज़मींदारों तथा बुर्जुआ वर्ग के विशेषाधिकारों और लाभों की रक्षा में भी निहित है। यह **राष्ट्रवादी-उदारतावादी** मज़दूर नीति की प्रवृत्ति है। यह सर्वहारा समुदायों के ख़िलाफ़ "अपने" राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग के साथ आमूलवादी टुटपुंजिया वर्ग के एक हिस्से और मुट्ठी भर विशेषाधिकारप्राप्त मज़दूरों का गंठजोड़ है।

रूसी सामाजिक-जनवाद में वर्तमान आंतरिक अवस्था

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, जनवरी, १९१२ के हमारे सम्मेलन को न तो विसर्जनवादियों ने मान्यता प्रदान की, न विदेशों में स्थित कई दलों (प्लेख़ानोव, अलेक्सिन्स्की, त्रोत्स्की तथा दूसरों) ने और न तथाकथित "जातीय" (याने ग़ैर रूसी) सामाजिक-जनवादियों ने। हम पर बेशुमार गालियों की बौछार में सबसे ज़्यादा दुहरायी जानेवाली गालियां थीं "ज़बर्दस्ती हड़पनेवाले" और "फूटबाज़"। हम ऐसे अचूक और वस्तुपरक ढंग से जांचे जा सकनेवाले आंकड़ों का हवाला देकर जवाब देते थे, जो यह सिद्ध करते थे कि हमारी पार्टी ने रूस के वर्ग-चेतन मज़दूरों के ४/५ हिस्से को एकताबद्ध कर लिया है। प्रतिक्रांति के दौर में ग़ैर क़ानूनी सरगर्मियों की कठिनाइयों को देखते हुए यह संख्या कम नहीं है।

अगर 'नाशा ज़ार्या' ग्रुप को निकाले बग़ैर सामाजिक-जनवादी कार्यनीति के आधार पर रूस में "एकता" संभव होती, तो हमारे अनेकानेक विरोधियों ने **अपने आपस तक में** एकता क्यों नहीं स्थापित कर ली? जनवरी, १९१२ से कम से कम साढ़े तीन साल बीत चुके हैं और इस पूरी मुद्दत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हमारे विरोधी बहुत चाहते हुए भी हमारे मुक़ाबले में सामाजिक-जनवादी पार्टी नहीं बना सके हैं। यह तथ्य हमारी पार्टी की बेहतरीन वकालत है।

हमारी पार्टी के ख़िलाफ़ लड़नेवाले सामाजिक-जनवादी ग्रुपों का समूचा इतिहास पतन ग्रौर विघटन का इतिहास है। मार्च, १९१२ में बिना किसी ग्रपवाद के उनमें से सभी हमें गाली देने में "एकताबद्ध" हो गये। लेकिन उनके बीच ग्रगस्त, १९१२ में ही, जब हमारे ख़िलाफ़ तथाकथित "ग्रगस्त गुट"[169] बनाया गया था, विघटन शुरू हो गया था। उनमें से कुछ ग्रुप ग्रलग हो गये। वे पार्टी ग्रौर केंद्रीय समिति नहीं बना सके। उन्होंने "एकता बहाल करने के प्रयोजन से" केवल एक संगठन समिति नियुक्त की। दर-ग्रसल यह संगठन समिति रूस के विसर्जनवादी ग्रुप के लिए बेजान ग्राड़ साबित हुई। रूस में मज़दूर ग्रांदोलन के ज़बर्दस्त उभार तथा १९१२–१९१४ की ग्राम हड़तालों की पूरी मुद्दत के दौरान समूचे "ग्रगस्त गुट" में केवल 'नाशा ज़ार्या' ग्रुप ही एक ऐसा था, जिसने जनता में काम किया, जिसकी शक्ति उसके उदारतावादी संबंधों में निहित है। फिर १९१४ के प्रारंभ में लाटवियाई सामाजिक-जनवादियों ने "ग्रगस्त गुट" से रस्मी तौर से नाता तोड़ लिया (पोलिश सामाजिक-जनवादी उसमें शामिल ही नहीं हुए थे) ग्रौर गुट के एक नेता त्रोत्स्की ने फिर ग्रपना विशेष ग्रुप बनाकर गुट को ग़ैर रस्मी तौर से छोड़ दिया। जुलाई, १९१४ में ब्रसेल्स सम्मेलन में, जिसमें ग्रंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो की कार्यकारिणी समिति, काउत्स्की ग्रौर वानडरवेल्डे शरीक थे, हमारे ख़िलाफ़ तथाकथित "ब्रसेल्स गुट" बनाथा गया, जिसमें लाटवियाई शरीक नहीं हुए ग्रौर जिससे पोलिश विरोध-पक्ष के सामाजिक-जनवादी फ़ौरन ग्रलग हो गये। युद्ध छिड़ने पर यह गुट विघटित हो गया। 'नाशा ज़ार्या', प्लेख़ानोव, ग्रलेक्सिन्स्की ग्रौर काकेशियाई सामाजिक-जनवादियों के नेता ग्रान जर्मनी की हार की वांछनीयता का प्रचार करनेवाले खुल्लमखुल्ला सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी बन गये। संगठन समिति ग्रौर बुंद ने सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादियों की तथा सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवाद के उसूलों की रक्षा की। छेईद्ज़े का दूमा ग्रुप युद्ध ऋणों के विरुद्ध मत देने के बावजूद (रूस में बुर्जुग्रा जनवादियों, त्रुदोवीकों तक ने उनके ख़िलाफ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत दिये थे) 'नाशा ज़ार्या' का वफ़ादार संगी-साथी बना रहा। हमारे चरम सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी – प्लेख़ानोव, अलेक्सिन्स्की और उनकी मंडली – छेईद्ज़े के ग्रुप से बहुत ख़ुश थे। पेरिस में 'नाशे स्लोवो' (पहले का 'गोलोस') नाम के अख़बार का प्रकाशन शुरू किया गया, जिसमें मुख्य शिरकत मार्तोव और त्रोत्स्की की थी, जो अंतर्राष्ट्रीयतावाद की अमूर्त पैरवी को 'नाशा ज़ार्या', संगठन समिति या छेईद्ज़े के ग्रुप से एकता की बेशर्त मांग के साथ जोड़ना चाहते थे। २५० अंक निकलने के बाद उस अख़बार को ख़ुद अपने विघटन की बात क़बूल करने के लिए मजबूर होना पड़ा: संपादकमंडल का एक हिस्सा हमारी पार्टी की तरफ़ खिंच आया, मार्तोव संगठन समिति के प्रति वफ़ादार बने रहे, जिसने 'नाशे स्लोवो' की उसके "अराजकतावाद" के लिए सार्वजनिक रूप से निंदा की (ठीक जैसे जर्मनी के अवसरवादी, डेविड और उनकी मंडली, *Internationale Korrespondenz*[170], लेजियन और उनकी मंडली कामरेड लीब्कनेख़्त पर अराजकतावाद का अभियोग लगाती है); त्रोत्स्की ने संगठन समिति के साथ अपने संबंध-विच्छेद की घोषणा की, लेकिन छेईद्ज़े के ग्रुप के साथ जाना चाहा। छेईद्ज़े के ग्रुप के एक नेता की व्याख्या के अनुसार ग्रुप का कार्यक्रम और कार्यनीति ये हैं। प्लेख़ानोव तथा अलेक्सिन्स्की प्रवृत्ति की पत्रिका 'सोव्रेमेन्नी मीर'[171] के १९१५ के पांचवें अंक में छेन्केली ने लिखा है:

"यह कहने का कि जर्मन सामाजिक-जनवाद अपने देश को युद्ध करने से रोकने की स्थिति में था, लेकिन उसने वैसा नहीं किया, अर्थ है या तो मन ही मन यह चाहना कि बैरीकेडों पर न सिर्फ़ वह ख़ुद ही दम दे दे, बल्कि उसकी पितृभूमि का भी दम निकल जाये, या पास की चीज़ों को अराजकतावाद की दूरबीन से देखना।"*

---

* 'सोव्रेमेन्नी मीर', १९१५, अंक ५, पृ० १४८। त्रोत्स्की ने हाल में ही घोषणा की थी कि इंटरनेशनल में छेईद्ज़े के ग्रुप की प्रतिष्ठा बढ़ाना वह अपना कार्यभार समझते हैं। इसमें शक नहीं कि छेन्केली भी अपनी ओर से उतने ही ज़ोर से इंटरनेशनल में त्रोत्स्की की प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन चंद पंक्तियों में सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद का संपूर्ण सार अभिव्यक्त है: वर्तमान युद्ध में "पितृभूमि की रक्षा" के विचार का उसूली औचित्य भी और क्रांति के प्रचार तथा उसकी तैयारी का – फ़ौजी सेंसर की अनुमति से – मखौल भी। सवाल यह क़तई नहीं है कि जर्मन सामाजिक-जनवाद युद्ध रोकने की स्थिति में था अथवा नहीं, न यही सवाल है कि क्रांतिकारी आम तौर से क्रांति की सफलता की ज़मानत कर सकते हैं कि नहीं। सवाल यह है कि क्या हमें समाजवादियों की तरह आचरण करना चाहिए, या साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग के आलिंगन में सचमुच "दम दे देना" चाहिए?

हमारी पार्टी के कार्यभार

रूस में सामाजिक-जनवाद का उदय हमारे देश की बुर्जुआ-जनवादी क्रांति (१९०५) से पहले हुआ और उसने क्रांति तथा प्रतिक्रांति के दौरान शक्ति प्राप्त की। हमारे देश में टुटपुंजिया अवसरवादी प्रवृत्तियों और रंगों की असाधारण बहुतायत की वजह रूस का पिछड़ापन है और यूरोप में मार्क्सवाद के प्रभाव तथा युद्ध से पहले क़ानूनी तौर से क़ायम सामाजिक-जनवादी पार्टियों के स्थायित्व ने हमारे आदर्श उदारतावादियों को "मुनासिब", "यूरोपीय" (ग़ैर क्रांतिकारी), "क़ानूनी" "मार्क्सवादी" सिद्धांत एवं सामाजिक-जनवाद का लगभग पुजारी बना दिया है। रूस का मज़दूर वर्ग हर क़िस्म के अवसरवाद के ख़िलाफ़ तीस साल तक डटकर संघर्ष चलाये बिना अपनी पार्टी का निर्माण अन्यथा नहीं कर सकता था। विश्वयुद्ध का अनुभव, जिसने यूरोपीय अवसरवाद को शर्मनाक पतन के मुंह में पहुंचाया और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी विसर्जनवाद के साथ हमारे राष्ट्रवादी-उदारतावादियों के गंठजोड़ को मज़बूत किया, हमारे इस विश्वास को और भी अधिक मज़बूत बना देता है कि हमारी पार्टी को उसी सुसंगत क्रांतिकारी रास्ते पर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

जुलाई – अगस्त, १९१५ को लिखित। खंड २६, पृ० ३०७–३५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साम्राज्यवाद,
पूंजीवाद की चरम अवस्था[172]

(सुबोध रूपरेखा)

जनवरी–जून, १९१६ को लिखित। खंड २७, पृ० २९९–४२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

पाठकों के सामने प्रस्तुत पुस्तिका १९१६ के वसंत में ज़ूरिच में लिखी गयी थी। वहां मैं जिन परिस्थितियों में काम करने के लिए लाचार था, उनमें स्वभावतः फ़्रांसीसी और अंग्रेज़ी साहित्य की किसी क़दर कमी थी और रूसी साहित्य का तो बहुत ही अभाव था। फिर भी साम्राज्यवाद के संबंध में अंग्रेज़ी की प्रमुख कृति, जान एटकिन्सन हावसन की किताब का मैंने पूरे ध्यान से उपयोग किया, जिसकी वह कृति मेरी राय में हक़दार है।

पुस्तिका ज़ारशाही सेंसर को ध्यान में रखकर लिखी गयी थी। इसलिए मुझे अपने आपको सख़्ती से न केवल तथ्यों के बिलकुल सैद्धांतिक, और मुख्यतया आर्थिक, विश्लेषण तक ही सीमित रखना पड़ा, बल्कि राजनीति के संबंध में जो कुछ आवश्यक बातें कहनी थीं, उन्हें भी बहुत ही सावधानी के साथ, इशारों से, ईसप की – ईसप की उस मनहूस – भाषा में लिखना पड़ा है, जिसका सहारा लेने के लिए तमाम क्रांतिकारियों को अपनी "क़ानूनी" कृतियां लिखते समय ज़ारशाही सदा मजबूर करती थी।

आज़ादी के इन दिनों में ज़ारशाही सेंसर को ध्यान में रखकर पुस्तिका के विकृत किये गये, भींच दिये गये, लोहे के शिकंजे में जकड़ दिये गये अंशों को दुबारा पढ़ना कष्टदायी है। साम्राज्यवाद समाजवादी क्रांति की पूर्ववेला है, सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद (समाजवादी कथनी और अंधराष्ट्रवादी करनी) समाजवाद के साथ सरासर विश्वासघात है, बुर्जुआ वर्ग के पक्ष में पूरी तरह जा मिलना है, मजदूर आंदोलन की यह फूट साम्राज्यवाद की वस्तुपरक परिस्थितियों के साथ जुड़ी हुई है, आदि प्रश्नों पर मुझे बहुत ही "दबी हुई" भाषा में बात कहनी पड़ी थी और जो पाठक इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय में दिलचस्पी रखते हैं, उनसे मैं अनुरोध करूंगा कि वे १९१४–१९१७ में विदेशों में लिखे गये मेरे लेखों का शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला नया संस्करण पढ़ें। पृष्ठ ११९–१२० *के एक स्थान की ओर विशेष रूप से ध्यान दिलाना ज़रूरी है: सेंसर के लिए उपयुक्त रूप में पाठकों को यह बताने के लिए कि समामेलनों के प्रश्न पर पूंजीपति और उनके पक्ष में जा मिलनेवाले सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी (जिनका विरोध काउत्स्की इतनी असंगति के साथ करते हैं) कितनी बेशर्मी से झूठ बोलते हैं, यह दिखलाने के लिए कि अपने पूंजीपतियों के समामेलनों पर ये लोग कितनी निर्लज्जता से पर्दा डालते हैं, मुझे... जापान का उदाहरण लेना पड़ा था! सावधान पाठक आसानी से जापान के स्थान पर रूस रख लेगा और कोरिया के स्थान पर वह फ़िनलैंड, पोलैंड, कूरलैंड, उक्रइना, ख़िवा, बुख़ारा, ईस्टलैंड और ऐसे ही दूसरे प्रदेशों को रख लेगा, जहां ग़ैर रूसी आबादी है।

मैं उम्मीद करना चाहता हूं कि यह पुस्तिका बुनियादी आर्थिक प्रश्न को, अर्थात साम्राज्यवाद के आर्थिक सार के प्रश्न को समझने में पाठकों की मदद करेगी, क्योंकि जब तक इस प्रश्न का अध्ययन नहीं किया जाता, तब तक वर्तमान युद्ध और वर्तमान राजनीति को समझना और उसका ठीक-ठीक मूल्यांकन करना असंभव होगा।

लेखक

पेत्रोग्राद, २६ अप्रैल, १९१७

---

*देखें प्रस्तुत खंड, पृ० ३५३।–सं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फ़्रांसीसी और जर्मन संस्करणों की भूमिका[173]

१

जैसा कि रूसी संस्करण की भूमिका में बताया गया था, यह पुस्तिका १६१६ में ज़ारशाही सेंसर को ध्यान में रखकर लिखी गयी थी। इस समय मैं पूरी पुस्तिका का संशोधन नहीं कर सकता और शायद यह अनुचित ही हो, क्योंकि पुस्तिका का मुख्य प्रयोजन यही था और है कि अकाट्य बुर्जुआ सांख्यिकी के संक्षेपीकृत आंकड़ों और तमाम देशों के बुर्जुआ विद्वानों द्वारा मानी हुई बातों के आधार पर बीसवीं शताब्दी के शुरू में – पहले साम्राज्यवादी विश्वयुद्ध की पूर्ववेला में – पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था की पूरी तस्वीर उसके अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के साथ पेश की जाये।

उन्नत पूंजीवादी देशों के अनेक कम्युनिस्टों के लिए ज़ारशाही सेंसर की दृष्टि से क़ानूनी इस पुस्तिका के उदाहरण से अपने को इस बात का क़ायल करना कुछ हद तक उपयोगी होगा कि, मिसाल के लिए, आधुनिक अमरीका या फ़्रांस में कम्युनिस्टों को अब भी उपलब्ध लेशमात्र बची-खुची वैधता का उपयोग हाल में हुई कम्युनिस्टों की लगभग आम गिरफ़्तारी के बाद भी सामाजिक-शांतिवादी विचारों और "विश्व जनवाद" की आशाओं के निपट झूठेपन को समझाने के लिए संभव और आवश्यक है। इस सेंसर की हुई पुस्तिका में सबसे आवश्यक रूप से जो कुछ जोड़ा जाना चाहिए, उसे मैं इस भूमिका में प्रस्तुत करने का यत्न करूंगा।

२

पुस्तिका में सिद्ध किया गया है कि १६१४–१६१८ का युद्ध दोनों पक्षों की ओर से साम्राज्यवादी (याने क़ब्ज़ाकारी, दस्युतापूर्ण, लूट-खसोट का)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युद्ध था, यह युद्ध दुनिया के बंटवारे के लिए, उपनिवेशों, वित्त पूंजी के "प्रभाव-क्षेत्रों", आदि के विभाजन और पुनर्विभाजन के लिए लड़ा गया था।

युद्ध के असली सामाजिक चरित्र का, याने असली वर्ग चरित्र का प्रमाण स्वभावतः युद्ध के कूटनीतिक इतिहास में नहीं, बल्कि **तमाम** युद्धरत देशों के शासक **वर्गों की वस्तुपरक** स्थिति के विश्लेषण में शामिल है। इस वस्तुपरक स्थिति का चित्रण करने के लिए हमें उदाहरण या अलग-थलग तथ्य-सामग्री नहीं (सामाजिक जीवन की परिघटनाओं की अत्यधिक जटिलता को देखते हुए उसमें से बहुत-सारे उदाहरण या अलग-थलग तथ्य चुनकर किसी भी प्रमेय को सदा सिद्ध किया जा सकता है), बल्कि **तमाम** युद्धरत देशों के और **पूरी** दुनिया के आर्थिक जीवन के **आधारों** से संबंधित **संपूर्ण** तथ्य-सामग्री लेनी चाहिए।

१८७६ और १९१४ में **दुनिया के बंटवारे** का (छठे अध्याय में), १८९० और १९१३ में सारी दुनिया में **रेलों** के वितरण का (सातवें अध्याय में) वर्णन करने के लिए मैंने ठीक ऐसी ही अकाट्य संक्षेपीकृत तथ्य-सामग्री उद्धृत की है। रेलें बुनियादी पूंजीवादी उद्योगों – कोयला, लोहा और इस्पात उद्योगों – का योगफल हैं, विश्व व्यापार और बुर्जुआ-जनवादी सभ्यता के विकास का योगफल और सबसे स्पष्ट सूचक हैं। पुस्तिका के पहले के अध्यायों में मैंने यह दिखाया है कि रेलें किस प्रकार बड़े पैमाने के उद्योगों से, इजारेदारियों, सिंडिकेटों, कार्टेलों, ट्रस्टों, बैंकों और वित्तीय अल्पतंत्र से संबंधित हैं। रेलों का असमान वितरण, उनका असमान विकास – यह विश्वव्यापी पैमाने पर आधुनिक, इजारेदार पूंजीवाद का नतीजा है। और इस नतीजे से साबित होता है कि **ऐसी** आर्थिक व्यवस्था के अंदर, **जब तक** उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व का अस्तित्व है, साम्राज्यवादी युद्धों का होना एकदम अनिवार्य है।

रेलवे लाइनों का निर्माण एक सीधा-सादा, स्वाभाविक, जनवादी, सांस्कृतिक तथा सभ्यकारी उद्यम जान पड़ता है: पूंजीवादी ग़ुलामी का शोख़ रंगों में चित्रण करने के लिए पैसा पानेवाले बुर्जुआ प्रोफ़ेसरों और टुटपुंजिया दक़ियानूसों की नजरों में वह है भी ऐसा ही। लेकिन असलियत यह है कि पूंजीवादी सूत्रों ने, जो इन उद्यमों को संबंध-सूत्रों के हज़ारों जालों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सामान्यतया उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व से बांधे हुए हैं, रेलों के बनाने के इस काम को **एक अरब** लोगों (उपनिवेशों और अर्द्ध-उपनिवेशों में) के उत्पीड़न का, अर्थात पराधीन देशों में बसनेवाली पृथ्वी की आधी से ज़्यादा आबादी और "सभ्य" देशों में रहनेवाले पूंजी के उजरती ग़ुलामों के उत्पीड़न का हथियार बना दिया है।

छोटे मिल्की की मेहनत पर आधारित निजी स्वामित्व, मुक्त होड़, जनवाद – ये सारे नारे, जिनके ज़रिए पूंजीपति और उनके अख़बार मज़दूरों और किसानों को धोखा देते हैं, सुदूर अतीत की बातें हैं। पूंजीवाद आज विकसित होकर मुट्ठी भर "उन्नत" देशों द्वारा दुनिया की आबादी की विशाल बहुसंख्या के औपनिवेशिक उत्पीड़न और वित्तीय नागपाश की विश्वव्यापी व्यवस्था का रूप धारण कर चुका है। और इस "लूट के माल का" बंटवारा सिर से पैर तक हथियारों से लैस दो-तीन शक्तिशाली लुटेरों (अमरीका, ब्रिटेन, जापान) में हो रहा है, जो **अपने** लूट के माल के बंटवारे के लिए अपनी लड़ाई में सारी दुनिया को घसीट रहे हैं।

३

राजतंत्रवादी जर्मनों द्वारा लादी गयी ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि[174] और बाद में अमरीका तथा फ़्रांस के "जनवादी" जनतंत्रों और "स्वतंत्र" ब्रिटेन द्वारा लादी गयी और भी ज़्यादा पाशविक और घृणित वेर्साई शांति-संधि[175] ने मानवजाति का बहुत भारी उपकार किया है। इन संधियों ने साम्राज्यवाद के उजरती क़लम-घिस्सू कुलियों और प्रतिक्रियावादी कूपमंडूकों दोनों का पर्दाफ़ाश कर दिया है, जो अपने आपको भले ही शांतिवादी और समाजवादी कहते हैं, पर जिन्होंने "विलसनवाद"[176] की प्रशंसा के गीत गाये थे और ज़ोर देकर कहा था कि साम्राज्यवाद के अंतर्गत शांति और सुधार संभव हैं।

सिर्फ़ यह तय करने के लिए कि लूट के माल का बड़ा हिस्सा अंग्रेज़ वित्तीय लुटेरों के गिरोह को मिले या जर्मन गिरोह को, लड़े गये इस युद्ध में करोड़ों लोगों के मारे जाने और अपंग बनाये जाने से और फिर इन

14—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों "शांति-संधियों" से उन लाखों और करोड़ों लोगों की आंखें बहुत तेज़ी से खुल रही हैं, जो बुर्जुआ वर्ग द्वारा पददलित, पीड़ित, छले और ठगे हुए हैं। इस तरह युद्ध के परिणामस्वरूप सब तरफ़ फैली बर्बादी से एक विश्वव्यापी क्रांतिकारी संकट उत्पन्न हो रहा है। इस संकट को चाहे कितनी ही लंबी और कठिन मंज़िलों से गुज़रना पड़े, उसका अंत सर्वहारा क्रांति और उसकी विजय के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।

दूसरे इंटरनेशनल का बैसेल घोषणापत्र[177], जिसने १९१२ में आम तौर से सभी युद्धों का नहीं (युद्ध तरह-तरह के होते हैं, क्रांतिकारी युद्ध भी होते हैं), बल्कि ठीक उसी युद्ध का मूल्यांकन पेश किया था, जो १९१४ में छिड़ा, दूसरे इंटरनेशनल के सूरमाओं के सारे शर्मनाक दिवालियेपन का, उनकी सारी ग़द्दारी का भंडाफोड़ करनेवाला स्मारक बन गया है।

इसीलिए इस घोषणापत्र को मैं इस संस्करण में परिशिष्ट के रूप में दे रहा हूं[178] और पाठकों का ध्यान बार-बार इस बात की ओर आकर्षित करता हूं कि दूसरे इंटरनेशनल के सूरमा इस घोषणापत्र के उन अंशों से, जिनमें इस आनेवाले युद्ध और सर्वहारा क्रांति के संबंध के बारे में बात सटीक, स्पष्ट और निश्चित ढंग से कही गयी है, ठीक उसी तरह कतराने की कोशिश कर रहे हैं, जिस तरह चोर उस जगह से कतराता है, जहां उसने चोरी की थी।

४

इस पुस्तिका में "काउत्स्कीवाद" की, एक अंतर्राष्ट्रीय विचारधारात्मक प्रवृत्ति की आलोचना की ओर विशेष ध्यान दिया गया है, जिसका प्रतिनिधित्व "प्रमुखतम सिद्धांतकार", दूसरे इंटरनेशनल के नेता (आस्ट्रिया में ओटो बावेर और उनकी मंडली, इंगलैंड में रैमज़े मैकडानल्ड, आदि, फ़्रांस में आल्बेर तोमा, इत्यादि) तथा अनेकों समाजवादी, सुधारवादी, शांतिवादी, बुर्जुआ जनवादी और पादरी दुनिया के तमाम देशों में करते हैं।

यह विचारधारात्मक प्रवृत्ति एक ओर तो दूसरे इंटरनेशनल के विघटन और क्षय की उपज है और दूसरी ओर, उस टुटपुंजिया वर्ग की विचारधारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का अनिवार्य फल है, जो अपने जीवन की तमाम परिस्थितियों के कारण बुर्जुआ और जनवादी पूर्वाग्रहों का शिकार बना रहता है।

काउत्स्की और उनके जैसे लोगों के ऐसे विचारों का अर्थ मार्क्सवाद के उन क्रांतिकारी आधारों को तिलांजलि देना है, जिनका ख़ुद काउत्स्की ने दसियों वर्ष तक समर्थन किया, ख़ास तौर से समाजवादी अवसरवाद (बर्नस्टीन, मिलेरां, हाइन्डमैन, गोम्पर्स, आदि) के ख़िलाफ़ अपने संघर्ष में। इसलिए यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है कि अब दुनिया भर के "काउत्स्कीवादी" व्यावहारिक राजनीति में घोरतम अवसरवादियों के साथ (दूसरे या पीले इंटरनेशनल[179] के द्वारा) और बुर्जुआ सरकारों के साथ (उन संयुक्त बुर्जुआ सरकारों के द्वारा, जिनमें समाजवादी शामिल होते हैं) मिल गये हैं।

पूरी दुनिया में बढ़ते हुए क्रांतिकारी सर्वहारा आंदोलन के लिए आम तौर से और कम्युनिस्ट आंदोलन के लिए ख़ास तौर से "काउत्स्कीवाद" की सैद्धांतिक ग़लतियों का विश्लेषण और भंडाफोड़ करना ज़रूरी है। यह इसलिए और भी ज़रूरी है कि सामान्यतया शांतिवाद और "जनवाद" की प्रवृत्तियां, जो मार्क्सवाद से ज़रा भी संबंध रखने का दावा नहीं करतीं, लेकिन जो काउत्स्की और उनकी मंडली की तरह साम्राज्यवाद के अंतर्विरोधों की गहराई और उनसे अनिवार्य रूप से उत्पन्न होनेवाले क्रांतिकारी संकट पर पर्दा डालती हैं, आज भी सारी दुनिया में व्यापक रूप से प्रचलित हैं। इन प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना सर्वहारा वर्ग की पार्टी के लिए लाज़िमी है, जिसे छोटे मिल्कियों को उन्हें ठगनेवाले बुर्जुआ वर्ग से छुड़ाकर अपनी ओर लाना होगा, उन लाखों मेहनतकशों को अपनी ओर लाना होगा, जो कमोबेश टुटपुंजिया जीवनावस्था में डाल दिये गये हैं।

५

'पूंजीवाद की परजीविता तथा ह्रास' शीर्षक आठवें अध्याय के बारे में कुछ शब्द कहना ज़रूरी है। जैसा कि पुस्तिका में बताया गया है, भूतपूर्व "मार्क्सवादी" और अब काउत्स्की के साथी हिल्फ़र्डिंग, जो 'जर्मनी की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी'[180] के अंदर बुर्जुआ, सुधारवादी नीति के एक मुख्य प्रतिनिधि हैं, इस प्रश्न पर खुल्लमखुल्ला शांतिवादी और सुधारवादी अंग्रेज़ हाबसन से भी एक क़दम पीछे चले गये हैं। यह बात अब बिलकुल साफ़ है कि पूरे मज़दूर आंदोलन में अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर फूट पड़ चुकी है (दूसरा और तीसरा इंटरनेशनल)। यह भी स्पष्ट है कि इस समय दोनों धाराओं के बीच सशस्त्र संघर्ष और गृहयुद्ध छिड़ा हुआ है: रूस में बोल्शेविकों के विरुद्ध कोल्चाक और देनीकिन को मेन्शेविकों और "समाजवादी-क्रांतिकारियों" की सहायता, जर्मनी में बुर्जुआ वर्ग के साथ मिल कर शीडेमानवादियों और नोस्के तथा उनकी मंडली की स्पार्टकसवादियों[181] के ख़िलाफ़ लड़ाई, फ़िनलैंड, पोलैंड, हंगरी, आदि में इसी तरह की चीज़ें। इस विश्वव्यापी ऐतिहासिक परिघटना का आर्थिक आधार क्या है?

इसका आधार पूंजीवाद की परजीविता और ह्रास ही है, जो उसकी चरम ऐतिहासिक अवस्था, अर्थात साम्राज्यवाद की विशेषता है। जैसा कि इस पुस्तिका में सिद्ध किया गया है, पूंजीवाद ने अब मुट्ठी भर (दुनिया की आबादी के दसवें हिस्से से भी कम, अधिक से अधिक "दरियादिली" और उदारता से हिसाब लगाया जाये, तब भी आबादी के पांचवें हिस्से से कम) असाधारण रूप से धनी और शक्तिशाली राज्यों को चुन लिया है, जो मात्र "कूपन काटकर" सारी दुनिया को लूट रहे हैं। युद्ध से पहले की क़ीमतों और युद्ध से पहले के बुर्जुआ आंकड़ों के अनुसार पूंजी के निर्यात से हर साल आठ–दस अरब फ़्रांक की आमदनी होती है। अब तो यह आमदनी बेशक बहुत बढ़ गयी है।

स्पष्ट है कि ऐसे विराट **अतिलाभ** में से (अतिलाभ इसलिए कि वह उस सारे लाभ के अतिरिक्त प्राप्त किया जाता है, जो पूंजीपति "अपने" देश के मज़दूरों के शोषण से वसूल करते हैं) मज़दूर नेताओं और अभिजात मज़दूरों के ऊपरी स्तर को **घूस देकर अपनी ओर कर लेना संभव** है और "उन्नत" देशों के पूंजीपति यही कर रहे हैं, वे उन्हें हज़ारों तरह के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष, खुले और छिपे तरीक़ों से घूस दे रहे हैं।

बुर्जुआ रंग में रंगे मज़दूरों या "अभिजात मज़दूरों" का यह स्तर, जो रहन-सहन की दृष्टि से, कमाई की मात्रा की दृष्टि से और अपनी समूची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वदृष्टि के लिहाज़ से बिलकुल कूपमंडूक होता है, दूसरे इंटरनेशनल का मुख्य आधार है और हमारे समय में **बुर्जुआ वर्ग का मुख्य सामाजिक** (सैनिक नहीं) **आधार** बना हुआ है। कारण कि **मज़दूर** आंदोलन के भीतर ये लोग ही **बुर्जुआ वर्ग के असली दलाल**, पूंजीपति वर्ग के मज़दूर गुर्गे (labor lieu-tenants of the capitalist class), सुधारवाद और अंधराष्ट्रवाद के असली वाहक हैं। सर्वहारा वर्ग और बुर्जुआ वर्ग के बीच गृहयुद्ध होने पर ये लोग अनिवार्य रूप से और बड़ी तादाद में बुर्जुआ वर्ग का साथ देते हैं, "कम्यूनार्डों" के विरुद्ध वे "वेर्साईवालों"[182] का साथ देते हैं।

जब तक इस परिघटना की आर्थिक जड़ें नहीं समझ ली जातीं और जब तक उसके राजनीतिक और सामाजिक महत्व का मूल्यांकन नहीं कर लिया जाता, तब तक कम्युनिस्ट आंदोलन और आसन्न सामाजिक क्रांति की असली समस्याओं को हल करने के काम में ज़रा भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।

साम्राज्यवाद सर्वहारा वर्ग की सामाजिक क्रांति की पूर्ववेला है। इस बात की पुष्टि १९१७ के बाद से विश्वव्यापी पैमाने पर हो चुकी है।

६ जुलाई, १९२० न० लेनिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिछले पंद्रह या बीस बरसों में, ख़ास तौर से स्पेनी-अमरीकी (१८९८) और आंग्ल-बोएर (१८९९–१९०२) युद्धों[183] के बाद से वर्तमान युग का वर्णन करने के लिए दोनों गोलार्द्धों के आर्थिक और राजनीतिक साहित्य में "साम्राज्यवाद" शब्द को अधिकाधिक अपनाया जा रहा है। १९०२ में अंग्रेज़ अर्थशास्त्री जान एटकिन्सन हावसन की पुस्तक 'साम्राज्यवाद' लंदन और न्यूयार्क से प्रकाशित हुई थी। इस लेखक ने, जिनका दृष्टिकोण बुर्जुआ सामाजिक-सुधारवाद और शांतिवाद का है, जो बुनियादी तौर से भूतपूर्व मार्क्सवादी कार्ल काउत्स्की के मौजूदा विचारों से मिलता-जुलता है, साम्राज्यवाद की मुख्य आर्थिक और राजनीतिक विशेषताओं का बहुत अच्छा और विस्तृत वर्णन किया है। १९१० में वियेना में आस्ट्रियाई मार्क्सवादी रुडोल्फ़ हिल्फ़र्डिंग की 'वित्त पूंजी' नामक पुस्तक (रूसी संस्करण: मास्को, १९१२) प्रकाशित हुई थी। बावजूद इसके कि उसमें लेखक ने मुद्रा के सिद्धांत के बारे में ग़लती की है और किसी हद तक मार्क्सवाद का अवसरवाद से मेल बिठाने की प्रवृत्ति दिखलायी है, इस पुस्तक में "पूंजीवादी विकास की नवीनतम अवस्था" का–यह हिल्फ़र्डिंग की पुस्तक का उपशीर्षक है–बहुत ही मूल्यवान सैद्धांतिक विश्लेषण किया गया है। वास्तव में पिछले कुछ वर्षों में साम्राज्यवाद के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, ख़ास तौर से अनेकों पत्रिकाओं तथा अख़बारों के लेखों में और प्रस्तावों में भी–उदाहरण के लिए, १९१२ की शरद ऋतु में होनेवाली चेमनिट्ज़[184] और बैसेल कांग्रेसों के प्रस्तावों में–वह उपरोक्त दोनों लेखकों द्वारा प्रस्तुत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि साररूप में प्रतिपादित विचारों से बहुत आगे नहीं जाता...

बाद में हम संक्षेप में और यथासंभव सरल रूप में साम्राज्यवाद की बुनियादी आर्थिक विशेषताओं के आपसी संबंध और अन्योन्यक्रिया को दिखलाने की कोशिश करेंगे। इस प्रश्न के ग़ैर आर्थिक पहलुओं पर हम विचार नहीं कर सकेंगे, चाहे वे जितने भी विचारणीय क्यों न हों। हमने साहित्य विषयक निर्देशों और दूसरी टिप्पणियों को, जिनमें शायद सभी पाठकों को दिलचस्पी नहीं होगी, पुस्तिका के अंत में दे दिया है*।

१. उत्पादन का संकेंद्रण और इजारेदारियां

उद्योग की ज़बर्दस्त बढ़ती और उत्पादन के अधिकाधिक बड़े उद्यमों में संकेंद्रण की विलक्षण रूप से तेज़ प्रक्रिया पूंजीवाद की एक बहुत ही लाक्षणिक विशेषता है। उत्पादन की आधुनिक तालिकाओं से हमें इस प्रक्रिया के बारे में अधिकतम पूर्ण और अधिकतम सटीक आंकड़े मिल जाते हैं।

उदाहरण के लिए, जर्मनी में हर १,००० औद्योगिक उद्यमों में बड़े उद्यमों की संख्या, अर्थात जिनमें ५० से अधिक उजरती मज़दूर काम करते थे, १८८२ में तीन, १८९५ में छः और १९०७ में नौ थी। काम में लगे हर सौ मज़दूर के पीछे क्रमशः २२, ३० और ३७ मज़दूर इस कोटि के उद्यमों में काम करते थे। किंतु उत्पादन का संकेंद्रण मज़दूरों के संकेंद्रण से कहीं ज्यादा ज़ोरदार होता है, क्योंकि बड़े उद्यमों में श्रम कहीं ज्यादा उत्पादनशील होता है। यह बात भाप के इंजनों और बिजली के मोटरों के बारे में आंकड़ों से व्यक्त होती है। यदि हम उस चीज़ को लें, जिसे जर्मनी में मोटे तौर से उद्योग कहते हैं, अर्थात जिसमें व्यापार, परिवहन, आदि शामिल हैं, तो हमें यह तस्वीर मिलती है: कुल ३२,६५,६२३ उद्यमों में से बड़े पैमाने के उद्यमों की संख्या ३०,५८८, याने ०.९ फ़ीसदी है। इन उद्यमों में कुल १,४४,००,००० मज़दूरों में से ५७,००,०००, याने

*प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की टीका-टिप्पणियां फ़ुटनोट के रूप में दी गयी हैं।—सं०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३९.४ फ़ीसदी मज़दूर काम करते हैं; ये कुल ८८,००,००० भाप अश्वशक्ति में से ६६,००,००० भाप अश्वशक्ति, याने ७५.३ फ़ीसदी और कुल १५,००,००० किलोवाट बिजली में से १२,००,००० किलोवाट, याने ७७.२ फ़ीसदी बिजली इस्तेमाल करते हैं।

कुल उद्यमों का एक फ़ीसदी से भी कम हिस्सा भाप और बिजली की ताक़त का **तीन-चौथाई से भी अधिक भाग** इस्तेमाल करता है! २९,७०,००० छोटे उद्यम (जिनमें पांच उजरती मज़दूर तक काम करते हैं), जो उद्यमों की कुल संख्या का ९१ फ़ीसदी हैं, भाप और बिजली की कुल शक्ति का केवल ७ फ़ीसदी इस्तेमाल करते हैं! दसियों हज़ार बड़े पैमाने के उद्यम ही सब कुछ हैं, लाखों छोटे-छोटे उद्यम कुछ भी नहीं।

१९०७ में जर्मनी में ५८६ ऐसे प्रतिष्ठान थे, जिनमें से प्रत्येक में एक हज़ार या उससे अधिक मज़दूर काम करते थे, अर्थात उनमें उद्योगों में काम करनेवाले मज़दूरों की कुल संख्या का लगभग दसवां हिस्सा (१३,८०,०००) काम करता था और भाप तथा बिजली की कुल ताक़त का **क़रीब-क़रीब एक-तिहाई** (३२ फ़ीसदी) हिस्सा इस्तेमाल होता था*। जैसा कि हम आगे देखेंगे, नक़द पूंजी और बैंक इन मुट्ठी भर सबसे बड़े उद्यमों की इस श्रेष्ठता को शब्दशः और भी दुर्दमनीय बना देते हैं। मतलब यह कि लाखों छोटे, मंझोले और यहां तक कुछ बड़े "मिल्की" भी वास्तव में कुछ सौ करोड़पति-वित्तदाताओं के पूरी तरह से अधीन रहते हैं।

आधुनिक पूंजीवाद के एक अन्य उन्नत देश, संयुक्त राज्य अमरीका में उत्पादन के संकेंद्रण की वृद्धि और भी ज़्यादा है। यहां के आंकड़ों में उद्योग शब्द को संकुचित अर्थ में लिया गया है और उद्यमों का वर्गीकरण उनकी सालाना पैदावार के मूल्य के हिसाब से किया गया है। १९०४ में दस लाख डालर और उससे ज़्यादा सालाना पैदावारवाले बड़े-बड़े उद्यमों की संख्या (कुल २,१६,१८० में से) १,९०० (याने ०.९ फ़ीसदी) थी। उनमें (कुल ५५,००,००० में से) १४,००,००० (याने २५.६ फ़ीसदी) मज़दूर

---

* आंकड़े *Annalen des deutschen Reichs*, 1911, Zahn (जर्मन राज्य का इतिवृत्त, १९११, त्सान – सं०) से लिये गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम करते थे और उनकी पैदावार का मूल्य (कुल १४,८०,००,००,००० डालर में से) ५,६०,००,००,००० डालर (याने ३८ फ़ीसदी) था। पांच साल बाद १९०९ में यही आंकड़े इस प्रकार थे: (कुल २,६८,४९१ में से) ३,०६० (याने १.१ फ़ीसदी) उद्यमों में (कुल ६६,००,००० मज़दूरों में से) २०,००,००० (याने ३०.५ फ़ीसदी) मज़दूर काम पर लगे हुए थे और पैदावार का मूल्य (कुल २०,७०,००,००,००० डालर में से) ९,००,००,००,००० डालर (याने ४३.८ फ़ीसदी) था*।

देश के तमाम उद्यमों की कुल पैदावार का क़रीब-क़रीब आधा भाग उन उद्यमों के सौवें हिस्से में होता था! इन ३,००० विराट उद्यमों में उद्योगों की २५८ शाखाएं समाविष्ट हैं। इससे यह बात देखी जा सकती है कि संकेंद्रण स्वयं, अपने विकास की एक ख़ास मंज़िल में पहुंचकर, सीधे इजारेदारी तक ले जाता है, क्योंकि बीस-पच्चीस विराट उद्यम आसानी से आपस में समझौता कर सकते हैं, जबकि दूसरी ओर, होड़ में बाधा और इजारेदारी की तरफ़ झुकाव उद्यमों के विराट आकार से ही उत्पन्न होते हैं। होड़ का इस प्रकार इजारेदारी में बदल जाना आधुनिकतम पूंजीवाद की आर्थिक व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण नहीं, तो कम से कम एक अत्यंत महत्वपूर्ण परिघटना अवश्य है और हमें इस पर विस्तार से विचार करना चाहिए। किंतु उसके पहले हमें एक संभव ग़लतफ़हमी को दूर कर लेना चाहिए।

अमरीकी आंकड़े बतलाते हैं कि २५० औद्योगिक शाखाओं में ३,००० विराट उद्यम हैं, इससे ऐसा लगता है कि उद्योग की हर शाखा में विराटतम पैमाने के सिर्फ़ बारह उद्यम ही हैं।

पर बात ऐसी नहीं है। उद्योग की हर शाखा में बड़े पैमाने के उद्यम नहीं हैं और इसके अलावा अपने विकास की सबसे ऊंची मंज़िल में पूंजीवाद की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता है उत्पादन का तथाकथित **सम्मिलन**, अर्थात उद्योग की उन विभिन्न शाखाओं का एक ही उद्यम में एकीकरण,

---

**Statistical Abstract of the United States*, 1912, p.202 (संयुक्त राज्य का सांख्यिकी संग्रह, १९१२, पृ० २०२–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनका संबंध या तो कच्चे माल के परिष्कार की क्रमिक अवस्थाओं से होता है (जैसे खनिज लोहे को गलाकर कच्चा लोहा तैयार करना, कच्चे लोहे से इस्पात बनाना और फिर शायद इस्पात के माल तैयार करना), या फिर जो एक दूसरे की सहायक होती हैं (जैसे रद्दी चीज़ों का या उपोत्पादों का उपयोग, पैकिंग का सामान तैयार करना, आदि)।

हिल्फ़र्डिंग लिखते हैं: "सम्मिलन से हालात की विषमता हमवार हो जाती है और इसलिए सम्मिलित उद्यमों के लिए अधिक स्थायी मुनाफ़े की दर सुनिश्चित हो जाती है। दूसरे, सम्मिलन की वजह से व्यापार की ज़रूरत ख़त्म हो जाती है। तीसरे, उसके कारण तकनीकी उन्नति की गुंजाइश बढ़ जाती है, जिसके फलस्वरूप 'विशुद्ध' (अर्थात असम्मिलित) उद्यमों की तुलना में अतिरिक्त मुनाफ़ा प्राप्त होता है। चौथे, गहरी मंदी (कारोबार में किसी अड़चन या संकट) के ज़माने में, जब कच्चे माल के दामों की गिरावट का स्तर तैयार माल के दामों की गिरावट के स्तर से नीचे होता है, तब 'विशुद्ध' उद्यमों की तुलना में सम्मिलित उद्यमों की हालत ज़्यादा मज़बूत होती है, वे होड़ के संघर्ष में मज़बूत होते हैं।"*

बुर्जुआ जर्मन अर्थशास्त्री हेमैन ने जर्मनी के लोहे के उद्योग में "मिश्रित", अर्थात सम्मिलित उद्यमों के संबंध में एक विशेष पुस्तक लिखी है। वह कहते हैं: "कच्चे माल की महंगी दर और तैयार माल की सस्ती दर के चाकों के बीच विशुद्ध उद्यम नष्ट हो जाते हैं"। इस तरह हमें निम्नलिखित तस्वीर मिलती है:

"एक तरफ़ तो कोयले की बड़ी-बड़ी कंपनियां रह जाती हैं, जो लाखों टन कोयला हर साल पैदा करती हैं और जो अपने कोयला सिंडिकेट में मज़बूती से संगठित हैं, और दूसरी ओर, कोयले की खानों से घनिष्ठ रूप से संबद्ध इस्पात के बड़े-बड़े कारख़ाने रहते हैं, जिनका अपना इस्पात सिंडिकेट है। ४,००,००० टन सालाना इस्पात का उत्पादन करनेवाले ये विशाल उद्यम, जो विपुल परिमाण में खनिज धातु तथा कोयले का उत्पादन करते हैं और जो इस्पात का तैयार माल पैदा करते हैं, जिनमें कंपनी के

* हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', रूसी संस्करण, पृ० २८६–२८७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही क्वार्टरों में रहनेवाले १०,००० मज़दूर काम करते हैं, जिनके कभी-कभी अपने बंदरगाह और रेलें भी होती हैं, जर्मनी के लोहे के उद्योग के ठेठ प्रतिनिधि हैं। संकेंद्रण अधिकाधिक बढ़ता जाता है। अलग-अलग उद्यम दिनोंदिन बड़े होते जा रहे हैं। अधिकाधिक संख्या में उद्यम, वे चाहे किसी एक ही उद्योग से संबंधित हों या कई अलग-अलग उद्योगों के हों, मिलकर विशाल उद्यमों के रूप में संगठित हो रहे हैं, जिनके पीछे बर्लिन के आधे दर्जन बैंक हैं, जो उनका निर्देशन करते हैं। जर्मनी के खदान उद्योग में तो कार्ल मार्क्स की संकेंद्रण संबंधी शिक्षा निश्चित रूप से चरितार्थ हुई है; अलबत्ता यह एक ऐसे देश की बात है, जहां चुंगियों और माल-वहन के महसूलों द्वारा उद्योग संरक्षित है। जर्मनी का खदान उद्योग स्वामित्वहरण के लिए परिपक्व हो चुका है।"*

एक ईमानदार बुर्जुआ अर्थशास्त्री को भी – यद्यपि ऐसे लोग अपवाद ही हैं – इसी नतीजे पर पहुंचना पड़ा है। यह बात ध्यान देने की है कि वह जर्मनी को एक विशेष श्रेणी में रखते हैं, क्योंकि वहां के उद्योग ऊंची चुंगियों द्वारा संरक्षित हैं। किंतु यह परिस्थिति केवल संकेंद्रण और कारख़ानेदारों के इजारेदार संघों, कार्टेलों, सिंडिकेटों, इत्यादि के निर्माण की रफ़्तार को तेज़ ही कर सकती है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि खुले व्यापार के देश, इंगलैंड में संकेंद्रण इजारेदारी को भी जन्म देता है, यद्यपि कुछ बाद में और शायद दूसरे रूप में। प्रोफ़ेसर हेर्मन लेवी ने 'इजारेदारियां, कार्टेल और ट्रस्ट' नामक अपनी विशेष शोध-कृति में, जो ग्रेट ब्रिटेन के आर्थिक विकास संबंधी आंकड़ों पर आधारित है, लिखा है:

"ग्रेट ब्रिटेन में इजारेदारी की प्रवृत्ति को उद्यमों के बड़े आकार और उनके उच्च तकनीकी स्तर प्रश्रय देते हैं। इसका एक कारण तो यह है कि हर उद्यम में लगी पूंजी की मात्रा बहुत बड़ी है, जिससे नये उद्यमों के लिए

---

* Hans Gideon Heymann, *Die gemischten Werke in deutschen Großeisengewerbe*, Stuttgart, 1904, SS. 256, 278–279 (हान्स गिदेओन हेमैन, 'जर्मनी में लोहे के बड़े उद्योग में सम्मिलित उद्यम', स्टुटगार्ट, १९०४, पृ० २५६, २७८–२७९ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नयी पूंजी की मांग सतत बढ़ती जाती है और इसलिए उनकी स्थापना ज़्यादा कठिन हो जाती है। दूसरी ओर (और यह बात हमें और ज़्यादा महत्वपूर्ण लगती है), संकेंद्रण की बुनियाद पर खड़े विराट उद्यमों के मुक़ाबले में टिकने के लिए हर नये उद्यम को इतना ज़्यादा फ़ालतू माल पैदा करना चाहिए कि उसे वह मुनाफ़े के साथ केवल तभी निकाल सकेगा, जबकि उस माल की मांग बहुत ज़्यादा बढ़ जाये, अन्यथा उस फ़ालतू माल की वजह से क़ीमतें इतनी कम हो जायेंगी कि नये उद्यम और इजारेदार संघों, दोनों को ही घाटा पहुंचेगा।" दूसरे देशों से भिन्न, जहां संरक्षणात्मक चुंगियों के कारण कार्टेल बनाने में आसानी होती है, इंगलैंड में उद्यम चलानेवालों के इजारेदार संघ, कार्टेल और ट्रस्ट अधिकतर तभी पैदा होते हैं, जब मुख्य प्रतियोगी उद्यमों की संख्या केवल "एक-आध दर्जन के लगभग" रह जाती है। "यहां यह चीज़ आईने की तरह साफ़ नज़र आती है कि बड़े उद्योग में इजारेदारियों के बनने पर संकेंद्रण का क्या असर पड़ता है।"*

पचास वर्ष पहले, जब मार्क्स अपनी 'पूंजी' लिख रहे थे, तब खुली होड़ अधिकांश अर्थशास्त्रियों को एक "प्राकृतिक नियम" जान पड़ती थी। अधिकृत विज्ञान ने चुप्पी के षड्यंत्र द्वारा मार्क्स की कृति की हत्या करने की कोशिश की, जिन्होंने पूंजीवाद का ऐतिहासिक और सैद्धांतिक विश्लेषण करके सिद्ध किया था कि खुली होड़ से उत्पादन का संकेंद्रण पैदा होता है, जिससे आगे चलकर विकास की एक ख़ास मंजिल में इजारेदारियों का जन्म होता है। आज इजारेदारी एक वास्तविकता बन गयी है। अर्थशास्त्री अब पोथियां लिखकर उनके अंबार लगा रहे हैं, जिनमें वे इजारेदारी के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं और साथ ही वे समवेत स्वर में घोषणा करते जाते हैं कि "मार्क्सवाद का खंडन हो गया"। पर अंग्रेजी कहावत है कि तथ्य हठीली चीज़ होती है और चाहे-अनचाहे हमें उस पर ध्यान देना ही पड़ता है। वास्तविकता से प्रकट है कि संरक्षणवाद या

---

* Hermann Levy, *Monopole, Kartelle und Trusts*, Jena, 1909, SS. 286, 290, 298 (हेर्मन लेवी, 'इजारेदारियां, कार्टेल और ट्रस्ट', येना, १९०९, पृ० २८६, २९०, २९८—सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुले व्यापार जैसी चीज़ों की दृष्टि से विभिन्न पूंजीवादी देशों के आपसी भेदों के कारण इजारेदारियों के रूपों में या उनके प्रकट होने के समय में महज़ नगण्य अंतर पड़ता है और यह कि उत्पादन के संकेंद्रण के परिणाम-स्वरूप इजारेदारियों का उदय पूंजीवाद के विकास की मौजूदा अवस्था का एक आम और बुनियादी नियम है।

यूरोप के मामले में काफ़ी सटीकता के साथ कहा जा सकता है कि नये पूंजीवाद ने पुराने का स्थान **अंतिम रूप से** कब लिया: वह ठीक बीसवीं शताब्दी की शुरूआत थी। "इजारेदारियों की उत्पत्ति" के इतिहास से संबंधित एक नवीनतम संकलन में हम पढ़ते हैं:

"पूंजीवादी इजारेदारियों के छिट-फुट उदाहरण १८६० से पहले के ज़माने से दिये जा सकते हैं; उनमें इजारेदारियों के आज के प्रचलित रूपों के अंकुर देखे जा सकते हैं; पर यह सब निस्संदेह कार्टेलों का प्राक्-इतिहास है। आधुनिक इजारेदारियों का असली आरंभ हद से हद उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में हुआ था। इजारेदारियों के विकास का पहला महत्वपूर्ण युग पिछली सदी के आठवें दशक की अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक मंदी के साथ शुरू हुआ था और अंतिम दशक के आरंभ तक चलता रहा था।" "अगर हम इस सवाल को यूरोपीय पैमाने पर देखें, तो हमें पता चलेगा कि खुली होड़ सातवें और आठवें दशक में चोटी पर पहुंच गयी थी। उसी समय इंगलैंड ने अपने पुराने ढंग के पूंजीवादी संगठन का निर्माण पूरा किया था। जर्मनी में इस संगठन का दस्तकारी और घरेलू उद्योगों के साथ तीव्र संघर्ष छिड़ गया था और वह अपने अस्तित्व के लिए स्वयं अपने रूपों की रचना करने लगा था।"

"महान क्रांति १८७३ की तबाही के, या यों कहें कि उसके बाद आनेवाली मंदी के साथ शुरू हुई थी और नवें दशक के आरंभ के शायद ही दृष्टिगोचर व्यवधानों को छोड़कर और १८८९ के आस-पास की असाधारणतः प्रबल, परंतु अल्पकालिक तेज़ी को छोड़कर यह मंदी यूरोप के आर्थिक इतिहास में बाईस वर्ष तक छायी रही।" "१८८९–१८९० की अल्पकालिक तेज़ी के ज़माने में व्यापार की अनुकूल परिस्थितियों से फ़ायदा उठाने के लिए कार्टेल-व्यवस्था का बहुत बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अविवेकपूर्ण नीति के कारण चीज़ों के दाम उससे भी अधिक तेज़ी के साथ और उससे भी अधिक ऊंचे चढ़ गये, जितना कार्टेलों के न होने पर चढ़ते और इस तवाही में क़रीब-क़रीब ये सभी कार्टेल बुरी मौत मारे गये। इसके बाद पांच साल तक व्यापार की हालत बुरी रही और क़ीमतें गिरी रहीं, पर अब उद्योग में एक नयी भावना व्याप्त थी। मंदी को अब एक अनिवार्य बात नहीं माना जाता था; अब लोग मंदी को केवल आगे आनेवाली तेज़ी के पहले का ठहराव मानने लगे थे।

"कार्टेल आंदोलन ने अपने दूसरे युग में पैर रखा। अब कार्टेल एक अनित्य परिघटना होने की जगह सारे आर्थिक जीवन का एक आधार बन गये। उद्योग के एक के बाद दूसरे क्षेत्र में, ख़ास तौर से कच्चे माल के संसाधन में, उनका राज फैलने लगा। अंतिम दशक के आरंभ में ही कार्टेल पद्धति ने कोक सिंडिकेट के संगठन में, जिसको आदर्श मानकर बाद में कोयला सिंडिकेट बना, अपने लिए ऐसी कार्टेल तकनीक पैदा कर ली थी, जिससे आगे उन्नति वस्तुतः नहीं हुई है। १९वीं शताब्दी के अंत की महान तेज़ी और १९००-१९०३ का संकट दोनों-कम से कम खदान और लोहे के उद्योगों में-पूर्णतः कार्टेलों की छत्रछाया में पहली बार आये। और यद्यपि उस समय यह बात अनोखी मालूम पड़ती थी, पर अब तो जनसाधारण भी इसे मानी हुई बात समझते हैं कि आर्थिक जीवन के बड़े-बड़े क्षेत्र आम नियम के रूप में खुली होड़ के क्षेत्र से बाहर कर दिये गये हैं।"*

---

* Th. Vogelstein, *Die finanzielle Organisation der kapitalistischen Industrie und die Monopolbildungen*, *Grundriß der Sozialökonomik*, VI Abt., Tübingen, 1914 ('सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', भाग ६, त्यूबिनगेन, १९१४ में थिओडोर फ़ोगेलस्टीन, 'पूंजीवादी उद्योग का वित्तीय संगठन और इजारेदारियों की उत्पत्ति' -सं०)। उसी लेखक की इस रचना से तुलना करें: *Organisationsformen der Eisenindustrie und Textilindustrie in England und Amerika*, Bd. I, Leipzig, 1910 ('इंगलैंड तथा अमरीका के लोहा और कपड़ा उद्योग के संगठनात्मक रूप', खंड १, लाइपज़िग, १९१० -सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस भांति इजारेदारियों के इतिहास की मुख्य मंज़िलें निम्नलिखित हैं: (१) १८६०–१८७० – खुली होड़ के विकास की सबसे ऊंची मंज़िल, उसका शिखर। इजारेदारी अभी मुश्किल से दृष्टिगोचर अंकुर के रूप में है। (२) १८७३ के संकट के बाद कार्टेलों के विकास की एक लंबी अवधि, पर वे अभी अपवाद ही हैं। वे अभी टिकाऊ नहीं बन पाये हैं। वे अभी अस्थायी परिघटना ही हैं। (३) उन्नीसवीं शताब्दी के अंत की तेज़ी और १९००–१९०३ का संकट: कार्टेल समूचे आर्थिक जीवन का एक आधार बन जाते हैं। पूंजीवाद साम्राज्यवाद में बदल चुका है।

कार्टेल बिक्री की शर्तों, अदायगी की तिथियों, आदि के बारे में समझौता कर लेते हैं। वे मंडियों को आपस में बांट लेते हैं। वे यह तय कर लेते हैं कि कितना माल पैदा किया जायेगा। वे क़ीमतें तय कर लेते हैं। वे मुनाफ़ों को विभिन्न उद्यमों में बांट लेते हैं, आदि।

जर्मनी में १८९६ में कार्टेलों की संख्या लगभग २५० और १९०५ में ३८५ थी और इनमें क़रीब-क़रीब १२,००० उद्यम हिस्सा ले रहे थे*। पर यह आम तौर पर माना जाता है कि ये आंकड़े वास्तविकता से कम कूते गये हैं। १९०७ के जर्मन उद्योग के जिन आंकड़ों को हमने ऊपर उद्धृत किया है, उनसे यह साफ़ है कि ये १२,००० बहुत बड़े उद्यम भी शायद पूरे देश में ख़र्च होनेवाली भाप और बिजली की ताक़त का आधे से भी ज्यादा हिस्सा इस्तेमाल करते हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में ट्रस्टों की संख्या १९०० में १८५ और १९०७ में २५० थी। अमरीकी आंकड़ों

---

*Dr. Riesser, *Die deutschen Großbanken und ihre Konzentration im Zusammenhange mit der Entwicklung der Gesamtwirtschaft in Deutschland*, 4. Aufl., 1912, S. 149 (डा० रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका सकेंद्रण', चौथा संस्करण, १९१२, पृ० १४९ – सं०)। R. Liefmann, *Kartelle und Trusts und die Weiterbildung der volkswirtschaftlichen Organisation*, 2. Aufl., 1910, S. 25 (राबर्ट लिएफ़मैन, 'कार्टेल तथा ट्रस्ट और राष्ट्रीय आर्थिक संगठन का आगे विकास', दूसरा संस्करण, १९१०, पृ० २५ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में तमाम औद्योगिक उद्यमों को व्यक्तियों, फ़र्मों और कार्पोरेशनों की मिल्कियत में बांटा गया है। १९०४ में कार्पोरेशनों के उद्यमों की संख्या कुल उद्यमों का २३.६ फ़ीसदी और १९०९ में २५.९ फ़ीसदी, अर्थात देश के समस्त औद्योगिक उद्यमों की कुल संख्या के चौथाई से भी अधिक थी। १९०४ में उनमें काम करनेवाले मज़दूरों की संख्या कुल मज़दूरों का ७०.६ फ़ीसदी और १९०९ में ७५.६ फ़ीसदी, अर्थात देश में मज़दूरों की कुल संख्या का तीन-चौथाई थी। उनकी पैदावार १९०४ और १९०९ में क्रमशः १०,९०,००,००,००० डालर, अर्थात कुल पैदावार का ७३.७ फ़ीसदी और १६,३०,००,००,००० डालर, अर्थात कुल पैदावार का ७९.० फ़ीसदी थी।

कार्टेल और ट्रस्ट अकसर उद्योग की किसी शाखा की कुल पैदावार का दस में से सात या आठ हिस्सा अपने हाथ में संकेंद्रित कर लेते हैं। १८९३ में राइन-वेस्टफ़ालियाई कोयला सिंडिकेट ने अपनी स्थापना के समय उस क्षेत्र की कोयले की कुल पैदावार का ८६.७ फ़ीसदी संकेंद्रित कर लिया था और १९१० में ९५.४ फ़ीसदी*। इस तरह उत्पन्न इजारेदारी से मुनाफ़ा बेहद बढ़ जाता है और उत्पादन की विराटकाय तकनीकी इकाइयां बन जाती हैं। अमरीका का मशहूर तेल ट्रस्ट (Standard Oil Company) १९०० में स्थापित हुआ था। "उसकी अधिकृत पूंजी १५,००,००,००० डालर थी। उसने १०,००,००,००० डालर के साधारण और १०,६०,००,००० डालर के तरजीही शेयर जारी किये थे। १९०० से १९०७ तक तरजीही शेयरों पर हर वर्ष क्रमशः ४८, ४८, ४५, ४४, ३६, ४०, ४०, ४० फ़ीसदी, अर्थात कुल ३६,७०,००,००० डालर लाभांशों के रूप में दिये गये। १८८२ से १९०७ तक कुल ८८,९०,००,००० डालर मुनाफ़े में से ६०,६०,००,००० डालर लाभांशों के रूप में दिये गये और बाक़ी को संरक्षित

* Dr. Fritz Kestner, *Der Organisationszwang. Eine Untersuchung über die Kämpfe zwischen Kartellen und Außenseitern*, Berlin, 1912, S. 11 (डा० फ़्रीट्ज़ केस्टनर, 'बलात् संगठन। कार्टेलों तथा बाहरवालों के बीच संघर्ष का एक अनुसंधान', बर्लिन, १९१२, पृ० ११ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजी के रूप में रख दिया गया।"* "१९०७ में इस्पात ट्रस्ट (United States Steel Corporation) के सभी उद्यमों में २,१०,१८० मज़दूर और कर्मचारी काम करते थे। जर्मन खदान उद्योग के सबसे बड़े उद्यम गेलसेन-किर्चेन खदान कंपनी (Gelsenkirchener Bergwerksgesellschaft) में १९०८ में ४६,०४८ मज़दूर और कर्मचारी काम करते थे।"** १९०२ में ही इस्पात ट्रस्ट का इस्पात-उत्पादन ९०,००,००० टन तक पहुंच चुका था***। १९०१ में उसकी पैदावार अमरीका में इस्पात की कुल पैदावार की ६६.३ फ़ीसदी और १९०८ में ५६.१ फ़ीसदी थी****। खनिज धातु का उत्पादन इन्हीं वर्षों में क्रमशः ४३.९ फ़ीसदी और ४६.३ फ़ीसदी था।

ट्रस्टों के बारे में अमरीकी सरकारी आयोग की रिपोर्ट में कहा गया है: "अपने प्रतियोगियों की तुलना में ट्रस्टों की श्रेष्ठता उनके उद्यमों की विशालता और उत्तम तकनीकी साधनों के कारण है। अपने जन्म से ही तंबाकू ट्रस्ट ने सभी उद्यमों में शारीरिक श्रम के स्थान पर मशीनी श्रम का बड़े पैमाने पर उपयोग करने की पूरी-पूरी कोशिश की है। इसी लक्ष्य से उसने उन तमाम पेटेंटों को ख़रीद लिया, जिनका तंबाकू बनाने से तनिक भी संबंध था और इस पर बहुत धन ख़र्च किया। बहुत-से पेटेंट शुरू में किसी काम के नहीं साबित हुए और ट्रस्ट में काम करनेवाले इंजीनियरों

---

* R. Liefmann, *Beteiligungs- und Finanzierungsgesellschaften. Eine Studie über den modernen Kapitalismus und das Effektenwesen*, 1. Aufl., Jena, 1909, S. 212 (राबर्ट लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पहला संस्करण, येना, १९०९, पृ० २१२ —सं०)।

** वही, पृ० २१८।

*** Dr. S. Tschierschky, *Kartell und Trust*, Göttingen, 1903, S. 13 (डा० ज़ीगफ़ीड चिएर्शकी, 'कार्टेल और ट्रस्ट', गोटिंगन, १९०३, पृ० १३—सं०)।

**** थिओडोर फ़ोगेलस्टीन, 'इंगलैंड तथा अमरीका के लोहा और कपड़ा उद्योग के संगठनात्मक रूप', पृ० २७५।

15—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को उन्हें सुधारना पड़ा। १६०६ के अंत में केवल पेटेंटों की ख़रीदारी के लिए दो सहायक कंपनियां खड़ी की गयीं। इसी उद्देश्य से ट्रस्ट ने अपने ढलाईख़ाने, मशीन फ़ैक्टरियां और मरम्मती मिस्त्रीख़ाने बनाये। ब्रुकलिन में ऐसे ही एक प्रतिष्ठान में औसतन ३०० मज़दूर काम करते हैं; इस प्रतिष्ठान में सिगरेटें, चुरुट, सुंघनी, पैकिंग के लिए पन्नी तथा डिब्बे, आदि बनाने से संबंधित आविष्कारों पर बराबर प्रयोग किये जाते हैं। यहां आविष्कार सुधारे भी जाते हैं।"* "दूसरे ट्रस्ट भी कहलाये जानेवाले developing engineers (तकनीकी प्रगति के लिए इंजीनियरों) को रखते हैं, जिनका काम ही यह होता है कि वे उत्पादन के नये-नये उपाय निकालें और तकनीकी सुधारों की आज़माइश करें। इस्पात ट्रस्ट उन मज़दूरों और इंजीनियरों को, जो तकनीकी कार्य-क्षमता बढ़ानेवाले या उत्पादन की लागत को कम करनेवाले आविष्कार करते हैं, बड़े-बड़े बोनस देता है।"**

जर्मनी के बड़े पैमाने के उद्योगों में, उदाहरण के लिए, रसायन उद्योग में, जो पिछली कुछ दशाब्दियों में बहुत अधिक विकसित हो गया है, तकनीकी सुधारों को बढ़ावा देने का काम इसी तरह से संगठित किया गया है। उत्पादन के संकेंद्रण की प्रक्रिया के कारण १६०८ तक इस उद्योग में दो मुख्य "गुट" बन गये थे, जो एक तरह से इजारेदारियां ही थे। पहले वे दो जोड़ी बड़ी फ़ैक्टरियों के बीच "दोहरे गंठजोड़" के रूप में थे; उनमें से हरेक के पास दो करोड़ से दो करोड़ दस लाख

---

* *Report of the Commissioner of Corporations on the Tobacco-Industry*, Washington, 1909, p. 266 (तंबाकू उद्योग में कार्पोरेशनों के कमिश्नर की रिपोर्ट, वाशिंगटन, १६०६, पृ० २६६ – सं०), जिसका हवाला Dr. Paul Tafel, *Die nordamerikanischen Trusts und ihre Wirkungen auf den Fortschritt der Technik*, Stuttgart, 1913, S. 48 (डा० पाल टाफ़ेल, 'उत्तरी अमरीका के ट्रस्ट और तकनीकी प्रगति पर उनका प्रभाव', स्टुटगार्ट, १६१३, पृ० ४८ – सं०) शीर्षक पुस्तक में दिया गया है।

** वही, पृ० ४८–४६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्क तक की पूंजी थी। उनमें एक तरफ़, होख़स्ट स्थित पुरानी माइस्टर फ़ैक्टरी और फ़ैंकफ़ुर्ट-ऑन-मेन स्थित कैसेला फ़ैक्टरी थी और दूसरी तरफ़, लुडविगशैफ़ेन स्थित सोडा और ऐनीलीन फ़ैक्टरी तथा एल्वरफ़ेल्ड स्थित पुरानी बायर फ़ैक्टरी थी। १९०५ में इनमें से एक गुट ने और फिर १९०८ में दूसरे ने अलग-अलग एक और बड़ी फ़ैक्टरी से समझौता कर लिया। परिणाम यह हुआ कि दो "तिहरे गंठजोड़" हो गये, इनमें से हरेक की पूंजी चार से पांच करोड़ मार्क तक हो गयी और ये "गंठजोड़" एक दूसरे के "निकट" आते जा रहे हैं, कीमतों के बारे में उनमें "समझौते" होने लगे हैं, आदि*।

होड़ बदलकर इजारेदारी बन जाती है। परिणामस्वरूप उत्पादन के समाजीकरण की दिशा में बड़ी प्रगति होती है। विशेष रूप से तकनीकी आविष्कारों और सुधारों की प्रक्रिया का समाजीकरण हो जाता है।

यह चीज़ बिखरे हुए और एक दूसरे से अनजान उन मालिकों के बीच पुरानी खुली होड़ से बिलकुल भिन्न है, जो एक अनजानी मंडी के लिए माल तैयार करते थे। संकेंद्रण अब इस हद तक पहुंच गया है कि किसी देश के या, जैसा कि हम आगे देखेंगे, बहुत-से देशों के, यहां तक कि सारी दुनिया के कच्चे मालों के सभी स्रोतों का (जैसे लोहे के खनिज भंडारों का) मोटा-मोटा तख़मीना बनाया जा सकता है। न केवल ऐसे तख़मीने बनाये जाते हैं, बल्कि इन स्रोतों पर बड़े-बड़े इजारेदार गंठजोड़ अपना क़ब्ज़ा भी जमा लेते हैं। मंडी के पैमाने का भी एक मोटा तख़मीना बनाया जाता है और गंठजोड़ उन्हें आपस में समझौता करके "बांट" लेते हैं। हुनरमंद मज़दूरों पर एकाधिकार कर लिया जाता है, अच्छे से अच्छे इंजीनियर रख लिये जाते हैं; परिवहन के साधनों पर क़ब्ज़ा कर लिया जाता है: अमरीका में रेलों पर और यूरोप तथा अमरीका में जहाज़ी

---

*रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण', तीसरा संस्करण, पृ० ५४७ तथा उसके आगे के पृष्ठ। अख़बारों में (जून, १९१६) जर्मनी के रसायन उद्योग को संयुक्त करनेवाले एक नये विराट ट्रस्ट की स्थापना की ख़बर छपी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कंपनियों पर। अपनी साम्राज्यवादी अवस्था में पूंजीवाद उत्पादन के पूर्णतम समाजीकरण के द्वार पर आ पहुंचता है, वह पूंजीपतियों को मानो उनकी मर्ज़ी के विरुद्ध और अनजाने ही किसी नयी समाज-व्यवस्था में खींच लाता है, जो पूर्ण खुली होड़ से पूरे समाजीकरण के बीच की संक्रमणकालीन समाज-व्यवस्था होती है।

उत्पादन सामाजिक हो जाता है, पर उपभोग निजी ही रहता है। उत्पादन के सामाजिक साधन कुछ लोगों की ही निजी संपत्ति बने रहते हैं। रस्मी तौर से स्वीकृत खुली होड़ का मान्य ढांचा बना रहता है, और बाक़ी जनता पर कुछ थोड़े-से इजारेदारों का जूआ सौ गुना भारी, अधिक तकलीफ़देह और असह्य हो उठता है।

जर्मन अर्थशास्त्री केस्टनर ने एक किताब ख़ास तौर से "कार्टेलों और बाहरवालों के बीच संघर्ष" पर ही लिखी है। बाहरवालों से उनका मतलब कार्टेलों से बाहर के पूंजीपतियों से है। उन्होंने अपनी पुस्तक का नाम रखा है 'बलात् संगठन', हालांकि उन्हें पूंजीवाद को सजाने-संवारने के बजाय उसके, ज़ाहिर है, इजारेदार गंठजोड़ों के बलात् अधीन होने के बारे में कहना चाहिए था। उन सब तरीक़ों की सूची पर कम से कम एक सरसरी दृष्टि डाल लेना शिक्षाप्रद है, जिनका इजारेदार गंठजोड़ "संगठन" के वर्तमान, नवीनतम, सभ्य संघर्ष में सहारा लेते हैं: (१) कच्चे माल की सप्लाई बंद कर देना ("...कार्टेल से जुड़े रहने के लिए बाध्य करने का यह एक सबसे महत्वपूर्ण तरीक़ा है"); (२) "समझौतों" द्वारा मज़दूर मिलना बंद कर देना (अर्थात पूंजीपतियों और ट्रेड-यूनियनों के बीच समझौते, जिनके द्वारा ट्रेड-यूनियनें अपने सदस्यों को केवल कार्टेल के उद्यमों में ही काम करने की इजाज़त देती हैं); (३) माल की डिलिवरी बंद कर देना; (४) बिक्री के रास्ते बंद कर देना; (५) ख़रीदारों के साथ समझौते, जिनके द्वारा वे केवल कार्टेलों से ही व्यापार करने का वचन दे देते हैं; (६) योजनाबद्ध रूप से क़ीमतें गिराना ("बाहरवाली" फ़र्मों को, याने इजारेदारों की बात न माननेवालों को तबाह कर देने के लिए कुछ दिनों तक माल को उसकी लागत से भी नीची दर पर बेचने में लाखों रुपये ख़र्च कर दिये जाते हैं। ऐसा कई बार हुआ है कि इसी तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पेट्रोल की दर ४० मार्क से घटाकर २२ मार्क, याने लगभग आधी कर दी गयी थी!); (७) उधार देना बंद कर देना; (८) बहिष्कार।

अब यह छोटे और बड़े पैमाने के, तकनीकी लिहाज़ से बढ़े हुए और पिछड़े हुए उद्यमों की होड़ नहीं रह गयी है। यहां हमारे सामने उन उद्यमों का इजारेदारों द्वारा गला घोंटा जा रहा है, जो उनकी बात नहीं मानते, उनके जूए में अपना कंधा नहीं फंसाते, उनके इशारों पर नहीं नाचते। एक बुर्जुआ अर्थशास्त्री के दिमाग़ में यह प्रक्रिया इस भांति प्रतिबिंबित होती है:

"विशुद्ध आर्थिक क्षेत्र में भी," केस्टनर लिखते हैं, "पुराने ढंग की वाणिज्यिक सरगर्मी बदलकर संगठनात्मक सट्टेबाज़ी की सरगर्मी की तरफ़ बढ़ रही है। सबसे ज़्यादा सफलता अब उस सौदागर को नहीं मिलती, जो अपने तकनीकी और वाणिज्यिक अनुभव के कारण ख़रीदार की आवश्यकता को सबसे अच्छी तरह समझ सकता हो और एक छिपी हुई मांग का पता लगा सकता हो, कहना चाहिए, 'उद्घाटित' कर सकता हो। अब सफलता सट्टेबाज़ी के उस्ताद (?!) को मिलती है, जो अलग-अलग उद्यमों और बैंकों के बीच कुछ ख़ास संबंधों के संगठनात्मक विकास का और उनकी संभावनाओं का पहले से ही अनुमान लगा सकता हो, या कम से कम उन्हें भांप सकता हो..."

साधारण मानवीय भाषा में इसका अर्थ यह है कि पूंजीवाद का विकास अब ऐसी मंजिल में आ पहुंचा है, जब, यद्यपि "बोलबाला" माल-उत्पादन का ही रहता है और वही आर्थिक जीवन का आधार माना जाता है, किंतु वास्तव में उसकी जड़ें खोखली हो चुकी हैं और अधिकांश मुनाफ़ा वित्तीय जोड़-तोड़ के "उस्तादों" की जेब में पहुंचता है। इन धोखेबाज़ियों और जोड़-तोड़ की बुनियाद में उत्पादन का समाजीकरण है, किंतु मानवजाति की उस असीम प्रगति से, जिससे यह समाजीकरण संभव हुआ है, फ़ायदा होता है... सट्टेबाज़ों को। आगे चलकर हम देख लेंगे कि किस प्रकार "इन्हीं कारणों से" पूंजीवादी साम्राज्यवाद के प्रतिक्रियावादी और टुटपुंजिया आलोचक "खुली", "शांतिपूर्ण" और "ईमानदारीभरी" होड़ में वापस लौट जाने के सपने देखते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केस्टनर कहते हैं: "कार्टेलों के बनने से क़ीमतों का दीर्घ काल के लिए बढ़ाया जाना अभी तक सिर्फ़ उत्पादन के सबसे महत्वपूर्ण साधनों, विशेष करके कोयला, लोहा और पोटाश के मामले में ही देखा गया है, लेकिन तैयार माल के संबंध में कभी नहीं देखा गया। इसी तरह क़ीमतों की इस बढ़ती से मुनाफ़े में होनेवाली बढ़ती भी केवल उन्हीं उद्योगों तक सीमित रही है, जो उत्पादन के साधनों को पैदा करते हैं। इस पर्यवलोकन के साथ यह जोड़ना ज़रूरी है कि वे उद्योग, जो कच्चे माल का (अर्द्ध-तैयार माल का नहीं) परिष्कार करते हैं, अर्द्धतैयार माल का परिष्कार करनेवाले उद्योगों का अहित करते हुए कार्टेलों की बदौलत अधिक मुनाफ़ों की शक्ल में लाभ ही प्राप्त नहीं करते, अपितु उन्होंने अर्द्धतैयार माल का परिष्कार करनेवाले उद्योगों के मुक़ावले में **प्रभुत्वपूर्ण स्थान** भी प्राप्त कर लिया है, जो बात खुली होड़ के ज़माने में नहीं थी।"*

जिन शब्दों पर हमने ज़ोर दिया है, वे मामले के उस सार को प्रकट कर देते हैं, जिसको बुर्जुआ अर्थशास्त्री बहुत बिरले ही और बहुत अनिच्छा-पूर्वक मानते हैं और जिससे बचने की और पल्ला छुड़ाने की इतनी ज़ोरदार कोशिश कार्ल काउत्स्की की अगुवाई में अवसरवाद के वर्तमान समर्थक करते हैं। प्रभुत्व और उसके साथ-साथ चलनेवाली हिंसा—ये हैं "पूंजीवादी विकास की नवीनतम मंज़िल" के लाक्षणिक संबंध; सर्वशक्तिमान आर्थिक इजारेदारियों के बनने का यही अवश्यंभावी परिणाम होना था और यही हुआ है।

कार्टेलों द्वारा काम में लाये जानेवाले उपायों का एक उदाहरण हम और देंगे। कार्टेलों का उदय और इजारेदारियों का बनना वहां बेहद आसान होता है, जहां कच्चे माल के सभी या मुख्य स्रोतों पर क़ब्ज़ा करना संभव हो। किंतु यह मान लेना ग़लत होगा कि जिन उद्योगों में कच्चे माल के स्रोतों को हथिया लेना असंभव होता है, उनके अंदर इजारेदारियां पैदा ही नहीं होतीं। उदाहरण के लिए, सीमेंट उद्योग के लिए कच्चा माल सब

---

*केस्टनर, 'बलात् संगठन। कार्टेलों तथा बाहरवालों के बीच संघर्ष का एक अनुसंधान', पृ० २५४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगह मिल सकता है। फिर भी जर्मनी में यह उद्योग भी सशक्त ढंग से कार्टेलों में संगठित है। सीमेंट के कारख़ानेदारों ने क्षेत्रीय सिंडिकेट–जैसे दक्षिणी जर्मन सिंडिकेट, राइन-वेस्टफ़ालियाई सिंडिकेट, आदि–क़ायम कर लिये हैं। तय की गयी क़ीमतें इजारेदारी क़ीमतें होती हैं: रेल के एक डिब्बे सीमेंट के लिए २३० से लेकर २८० मार्क तक, जबकि उसकी लागत सिर्फ़ १८० मार्क होती है! उद्यम १२ से १६ फ़ीसदी तक लाभांश देते हैं, और हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि आधुनिक सट्टेबाज़ी के "उस्ताद" अच्छी तरह जानते हैं कि लाभांश के रूप में उन्हें जो कुछ मिलता है, उसके अलावा और भी मोटा मुनाफ़ा किस तरह हथियाया जाता है। ऐसे मुनाफ़ेवाले उद्योग में होड़ बंद करने के लिए इजारेदार तिकड़में भी करते हैं: वे अपने उद्योग की बुरी हालत के बारे में झूठी अफ़वाहें फैलाते हैं, अख़बारों में बेनामी चेतावनियां निकाली जाती हैं, जैसे: "पूंजीपतियो, सीमेंट उद्योग में अपनी पूंजी मत लगाओ!" अंत में, वे लोग "बाहरवालों" के (सिंडिकेट से बाहरवालों के) उद्यमों को ख़रीद लेते हैं और उन्हें ६०,००० से ८०,००० तक और १,५०,००० मार्क तक भी "मुआवज़ा" दे देते हैं। "छोटी-सी" रक़म देकर प्रतियोगियों को ख़रीद लेने से लेकर उनके* ख़िलाफ़ बारूद का "इस्तेमाल" करने के अमरीकी तरीक़े तक, किसी भी उपाय के बारे में कोई संकोच किये बिना इजारेदारी हर जगह अपने लिए रास्ता साफ़ कर लेती है।

यह कथन कि कार्टेल संकटों को ख़त्म कर देते हैं, उन बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों द्वारा फैलायी गयी मनगढ़ंत बात है, जो हर क़ीमत पर पूंजीवाद को अच्छे रूप में दिखाने के लिए उत्सुक रहते हैं। इसके विपरीत जब उद्योगों की कुछ ख़ास शाखाओं में इजारेदारी पैदा हो जाती है, तो वह समूचे पूंजीवादी उत्पादन में निहित अराजकता को और भी सशक्त तथा तेज़ बना देती है। कृषि और उद्योगों के विकास की विषमता, जो पूरे

---

* L. Eschwege, *Zement*, *Die Bank*[185], 1909, 1, S. 115 (लुडविग एश्वेगे, 'सीमेंट', 'बैंक', १९०९, १, पृ० ११५ तथा उसके आगे के पृष्ठ–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजीवाद की एक विशेषता है, बढ़ जाती है। कार्टेलों में सबसे अधिक संगठित तथाकथित **भारी** उद्योगों की, विशेषकर लोहे और कोयले के उद्योग की विशेषाधिकारप्राप्त स्थिति उद्योग की अन्य शाखाओं में "योजनाबद्धता को और भी कम कर देती है" – जैसा कि "उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध" पर एक श्रेष्ठतम ग्रंथ के लेखक जीडेल्स ने स्वीकार किया है*।

पूंजीवाद के एक अत्यंत निर्लज्ज पैरोकार लिएफ़मैन ने लिखा है: "कोई आर्थिक व्यवस्था जितनी ही अधिक विकसित होती है, उतनी ही अधिक वह जोखिमभरे उद्यमों में या विदेशों में स्थित उद्यमों में हाथ डालती है, जिनके विकसित होने में बहुत ज्यादा समय जरूरी होता है, या फिर अंत में वह ऐसे उद्यमों में हाथ डालती है, जिनका महत्व केवल स्थानीय होता है।"** ज़्यादा जोखिम का संबंध अंत में पूंजी की अपार वृद्धि के साथ होता है, जो मानो छलककर विदेशों, आदि की ओर प्रवाहित होने लगती है। साथ ही साथ असाधारण तेज़ी के साथ होनेवाली तकनीकी प्रगति के कारण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में विषमता के बढ़ते हुए तत्व, अराजकता तथा संकट पैदा हो जाते हैं। लिएफ़मैन को यह मानने के लिए लाचार होना पड़ा है कि "इस बात की पूरी संभावना है कि निकट भविष्य में ही मानवजाति को और भी महत्वपूर्ण तकनीकी क्रांतियां देखनी पड़ें, जिनका राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के संगठन पर भी प्रभाव पड़ेगा"... बिजली और हवाई यातायात पर... "आम नियम के रूप में बुनियादी आर्थिक

---

*Jeidels, *Das Verhältnis der deutschen Großbanken zur Industrie mit besonderer Berücksichtigung der Eisenindustrie*, Leipzig, 1905, S. 271 (जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', लाइपज़िग, १९०५, पृ० २७१ – सं०)।

** लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पृ० ४३४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवर्तनों के ऐसे युगों में सट्टेबाज़ी का विकास बड़े पैमाने पर होने लगता है..."*

हर प्रकार के संकट – ज़्यादातर आर्थिक संकट ही, लेकिन केवल वे ही नहीं – उत्पादन के संकेंद्रण और इजारेदारी की प्रवृत्ति को बहुत काफ़ी बढ़ा देते हैं। १९०० के उस संकट के महत्व के बारे में, जिससे, जैसा कि हम जानते हैं, आधुनिक इजारेदारियों के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू हुआ था, जीडेल्स के निम्नलिखित विचार अत्यंत शिक्षाप्रद हैं:

"बुनियादी उद्योगों में विराट उद्यमों के साथ-साथ १९०० के संकट के समय बहुत-से उद्यम इस ढंग से भी संगठित थे, जिसे आज कालातीत माना जायेगा, वे 'विशुद्ध'" (असम्मिलित) "उद्यम थे, जो औद्योगिक तेज़ी की लहर के साथ उठे थे। क़ीमतों के गिरने और मांग के कम होने से इन 'विशुद्ध' उद्यमों की हालत बड़ी ख़स्ता हो उठी, जबकि विराट सम्मिलित उद्यमों पर या तो इस संकट का बिलकुल ही असर नहीं पड़ा, या पड़ा तो बहुत ही थोड़े समय के लिए। इसका परिणाम यह हुआ कि १८७३ के संकट की तुलना में १९०० के संकट की वजह से उद्योगों का कहीं ज़्यादा संकेंद्रण हो गया: १८७३ के संकट के कारण श्रेष्ठ उद्यमों का एक प्रकार का चयन भी हो गया था, उस समय तकनीकी विकास का स्तर नीचा होने के कारण वह चयन उन उद्यमों को इजारेदारी की हालत में न पहुंचा सका, जो संकट को सफलतापूर्वक पार कर आये थे। लोहे तथा इस्पात और बिजली के आधुनिक उद्योगों के विराट उद्यमों की अत्यंत जटिल तकनीक, व्यापक संगठन तथा पूंजी की विपुलता के कारण उन उद्यमों में ऐसी स्थायी इजारेदारी बहुत बड़े पैमाने पर और इंजीनियरिंग उद्योग, धातु उद्योग की कुछ शाखाओं और परिवहन, आदि में उससे कम पैमाने पर पायी जाती है।"**

इजारेदारी – "पूंजीवादी विकास की नवीनतम मंज़िल" का यह हर्फ़े-

---

*वही, पृ० ४६५–४६६।

**जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', पृ० १०८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आख़िर है। किंतु यदि हम बैंकों की भूमिका पर ध्यान न दें, तो आधुनिक इजारेदारियों की असली ताक़त और उनके महत्व का हमें बहुत अपर्याप्त, अधूरा और हलका अंदाज़ा ही हो सकेगा।

२. बैंक और उनकी नयी भूमिका

बैंकों का मुख्य और मूल काम धन के भुगतान में बिचवानी करना है। ऐसा करते हुए वे निष्क्रिय मुद्रा-पूंजी को सक्रिय पूंजी में बदल देते हैं, अर्थात ऐसी पूंजी में, जिससे मुनाफ़ा मिल सके; वे सभी और हर प्रकार की मुद्रा-आयें जमा करते हैं और उन्हें पूंजीपति वर्ग के हाथों में सौंप देते हैं।

जैसे-जैसे बैंकों का कारोबार विकसित होता है और बहुत थोड़े-से प्रतिष्ठानों में संकेंद्रित होता जाता है, वैसे-वैसे बैंक छोटे-मोटे बिचवानों से बढ़कर शक्तिशाली इजारेदारियों का रूप धारण कर लेते हैं, जिनके हाथ में अमुक देश तथा कई दूसरे देशों के सभी पूंजीपतियों तथा छोटे मिल्कियों की लगभग समस्त मुद्रा-पूंजी और उत्पादन के साधनों तथा कच्चे माल के स्रोतों का अधिकांश भाग होता है। अनेक छोटे-मोटे बिचवानों का मुट्ठी भर इजारेदारों में परिवर्तित हो जाना पूंजीवाद द्वारा विकसित होकर पूंजीवादी साम्राज्यवाद का रूप धारण कर लेने की एक मूलभूत प्रक्रिया है; इसलिए हमें सबसे पहले बैंकों के कारोबार के संकेंद्रण पर विचार करना चाहिए।

१९०७–१९०८ में जर्मनी के उन मिश्रित पूंजी बैंकों में, जिनमें से प्रत्येक के पास दस लाख मार्क से अधिक की पूंजी थी, जमा की गयी रक़म कुल मिलाकर ७,००,००,००,००० मार्क थी; १९१२–१९१३ में जमा की गयी यह रक़म बढ़कर ९,८०,००,००,००० मार्क हो गयी थी। पांच वर्ष में ४० प्रतिशत की वृद्धि। इस २,८०,००,००,००० की वृद्धि में से २,७५,००,००,००० की वृद्धि ५७ ऐसे बैंकों को मिली, जिनमें से प्रत्येक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की पूंजी १,००,००,००० मार्क से अधिक थी। बड़े और छोटे बैंकों के बीच जमा की गयी रक़म का वितरण इस प्रकार था*:

कुल जमा का प्रतिशत अनुपात

	बर्लिन के ९ बड़े बैंकों में	एक करोड़ मार्क से ज्यादा की पूंजीवाले दूसरे ४८ बैंकों में	दस लाख से लेकर एक करोड़ मार्क तक की पूंजीवाले ११५ बैंकों में	दस लाख मार्क से कम की पूंजीवाले छोटे बैंकों में
१९०७–१९०८	४७	३२.५	१६.५	४
१९१२–१९१३	४९	३६	१२	३

बड़े बैंक छोटे बैंकों को कारोबार से बाहर धकेल रहे हैं। इन बड़े बैंकों में से अकेले नौ के हाथ में कुल जमा रक़म का लगभग आधा भाग संकेंद्रित है। परंतु हमने तफ़सील की बहुत-सी महत्वपूर्ण बातों को छोड़ दिया है, उदाहरण के लिए, यह बात कि कई छोटे-छोटे बैंक एक तरह से बड़े बैंकों की शाखाएं बनकर रह गये हैं, आदि। इसका उल्लेख हम आगे चलकर करेंगे।

शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ के अनुसार १९१३ के अंत में कुल मिलाकर लगभग १०,००,००,००,००० मार्क में से ५,१०,००,००,००० मार्क बर्लिन के नौ बड़े बैंकों में जमा थे। केवल बैंकों में जमा रक़म को नहीं, बल्कि बैंकों की कुल पूंजी को ध्यान में रखते हुए इस लेखक ने लिखा था: "१९०९ के अंत में बर्लिन के नौ बड़े बैंकों का, उनसे संबद्ध बैंकों सहित, ११,३०,००,००,००० मार्क पर, अर्थात जर्मनी के बैंकों की कुल

---

* Alfred Lansburgh, *Fünf Jahre deutsches Bankwesen*, *Die Bank*, 1913, № 8, S. 728 (अल्फ़्रेड लैंसबर्ग, 'जर्मनी में बैंकों के कारोबार के पांच वर्ष', 'बैंक', १९१३, अंक ८, पृ० ७२८–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजी के ८३ प्रतिशत पर क़ब्ज़ा था। **अपने संबद्ध बैंकों के साथ** लगभग ३,००,००,००,००० मार्क पूंजी पर नियंत्रण रखनेवाला 'जर्मन बैंक' (Deutsche Bank) प्रशा के राजकीय रेलवे प्रशासन के साथ पुरानी दुनिया* में सबसे बड़े और साथ ही सर्वाधिक विकेंद्रित पूंजी संचयन का प्रतिनिधित्व करता है।"**

हमने "संबद्ध" बैंकों के हवाले पर ज़ोर इसलिए दिया है कि यह आधुनिक पूंजीवादी संकेंद्रण की एक सबसे महत्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषता है। बड़े उद्यम और विशेष रूप से बैंक छोटे उद्यमों को न केवल सीधे तौर पर निगल लेते हैं, वल्कि उनकी पूंजी में "होल्डिंग" हासिल करके, शेयरों की ख़रीद या विनिमय करके, ऋण-संबंधों की एक शृंखला, आदि, आदि द्वारा उन्हें अपने में "मिला लेते हैं", अपने अधीन कर लेते हैं और "अपने" ग्रुप या (इस व्यवसाय की ठेठ शब्दावली में) अपने "कंसर्न" में पचा लेते हैं। प्रोफ़ेसर लिएफ़मैन ने लगभग ५०० पृष्ठ का एक बहुत मोटा "ग्रंथ" लिखा है, जिसमें उन्होंने आधुनिक "होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियों" का वर्णन किया है***, पर इसमें दुर्भाग्यवश उस कच्ची सामग्री के साथ, जिसे वह बहुधा पचा नहीं पाये हैं, उन्होंने बहुत ही घटिया क़िस्म के अपने "सैद्धांतिक" विचार भी जोड़ दिये हैं। संकेंद्रण के सिलसिले में "होल्डिंग" की इस पद्धति का क्या परिणाम होता है, इसका सबसे अच्छा विवरण जर्मनी के बड़े बैंकों के बारे में रीसेर की पुस्तक में मिलता है, जो स्वयं एक बैंक "कर्मी" हैं। परंतु उनके आंकड़ों को जांचने से पहले हम "होल्डिंग" की पद्धति का एक ठोस उदाहरण देंगे।

---

*यूरोप।—सं०

** Schulze-Gaevernitz, *Die deutsche Kreditbank*, *Grundriß der Sozialökonomik*, Tübingen, 1915, SS. 12, 137 (शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'जर्मनी के उधार बैंक', 'सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', त्यूबिनगेन, १९१५, पृ० १२, १३७—सं०)।

*** रावर्ट लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पृ० २१२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'जर्मन बैंक' "ग्रुप" सबसे बड़े बैंक ग्रुपों में से एक है और हो सकता है कि वह सबसे बड़ा है। इस ग्रुप के सभी बैंक जिन मुख्य सूत्रों द्वारा आपस में बंधे हुए हैं, उनका पता लगाने के लिए पहली, दूसरी तथा तीसरी कोटि की "होल्डिंग" के बीच भेद करना, या उसी बात को इस प्रकार भी कह सकते हैं कि पहली, दूसरी तथा तीसरी कोटि की निर्भरता ('जर्मन बैंक' पर छोटे बैंकों की) में भेद करना आवश्यक है। इससे हमें निम्नलिखित चित्र मिलता है*:

		पहली कोटि की निर्भरता	दूसरी कोटि की निर्भरता	तीसरी कोटि की निर्भरता
'जर्मन बैंक' की होल्डिंग	स्थायी रूप से	१७ बैंकों में	जिनमें से ९ हैं ३४ में	जिनमें से ४ हैं ७ में
	अनिश्चित काल के लिए	५ बैंकों में	—	—
	कभी-कभी . . .	८ बैंकों में	जिनमें से ५ हैं १४ में	जिनमें से २ हैं २ में
कुल योग		३० बैंकों में	जिनमें से १४ हैं ४८ में	जिनमें से ६ हैं ९ में

"कभी-कभी" वाले उन आठ बैंकों में, जिनकी 'जर्मन बैंक' पर निर्भरता "पहली कोटि" की है, तीन विदेशी बैंक हैं: एक आस्ट्रियाई (वियेना का 'बैंक गंठजोड़'—Bankverein) और दो रूसी ('साइबेरियाई कमर्शियल बैंक' और 'रूसी विदेश व्यापार बैंक')। कुल मिलाकर 'जर्मन

*Alfred Lansburgh, *Das Beteiligungssystem im deutschen Bank wesen, Die Bank*, 1910, 1, S. 500 (अल्फ्रेड लैंसबर्ग, 'जर्मनी के बैंकों के कारोबार में होल्डिंग की पद्धति', 'बैंक', १९१०, अंक १, पृ० ५००—सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैंक' ग्रुप में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से, आंशिक रूप से या पूर्णतः ८७ बैंक हैं और कुल पूंजी – उसकी अपनी और उन दूसरे बैंकों की, जिन पर उसका नियंत्रण है – २–३ अरब मार्क आंकी जाती है।

यह बात स्पष्ट है कि जो बैंक ऐसे ग्रुप का मुखिया हो और जो राज्य के लिए ऋण जुटाने जैसे असाधारण रूप से बड़े तथा लाभदायक कारोबार को चलाने के लिए अपने से कुछ ही छोटे लगभग आधे दर्जन दूसरे बैंकों के साथ समझौते करता हो, वह "विचवान" की हैसियत से वहुत बड़ा हो गया है और वह मुट्ठी भर इजारेदारों का गंठजोड़ वन गया है।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में जर्मनी में बैंक के कारोबार का संकेंद्रण किस तेज़ी के साथ वढ़ा, इसका पता निम्नलिखित आंकड़ों से चलता है, जिन्हें हम संक्षिप्त रूप में रीसेर की पुस्तक से उद्धृत कर रहे हैं:

बर्लिन के ६ बड़े बैंक

वर्ष	जर्मनी में शाखाएं	जमा करने के बैंक और विनिमय के दफ़्तर	जर्मनी के मिश्रित पूंजी बैंकों में स्थायी होल्डिंग	कुल प्रतिष्ठान
१८९५	१६	१४	१	४२
१९००	२१	४०	८	८०
१९११	१०४	२७६	६३	४५०

हम ऐसे स्रोतों के एक घने जाल को तीव्र गति से बढ़ते देखते हैं, जो सारे देश में फैला हुआ है, जो सारी पूंजी तथा सारी आय को संकेंद्रित कर रहा है, हज़ारों-हज़ार बिखरे हुए आर्थिक उद्यमों को एक ही राष्ट्रीय पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में, फिर विश्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बदल रहा है। पूर्वोक्त उद्धरण में शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ ने वर्तमान बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र के व्याख्याकार की हैसियत से जिस "विकेंद्रीकरण" का उल्लेख किया है, उसका अर्थ वास्तव में यह है कि पहले जो आर्थिक इकाइयां अपेक्षाकृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"स्वतंत्र" थीं, या कहना चाहिए, बिलकुल स्थानीय थीं, वे अधिकाधिक संख्या में एक ही केंद्र के अधीन आती जा रही हैं। वास्तव में यह **केंद्रीकरण** है, प्रकांड इजारेदारों की भूमिका, महत्व तथा शक्ति की वृद्धि।

अधिक पुराने पूंजीवादी देशों में "बैंकों का यह जाल" और भी घना है। १९१० में इंगलैंड तथा आयरलैंड में सभी बैंकों की शाखाओं की कुल संख्या ७,१५१ थी। चार बड़े बैंक ऐसे थे, जिनमें से हर एक की ४०० से अधिक (४४७ से ६८९ तक) शाखाएं थीं, चार बैंक ऐसे थे, जिनमें से हर एक की २०० से अधिक शाखाएं थीं और ग्यारह ऐसे थे, जिनमें से हर एक की १०० से अधिक शाखाएं थीं।

फ़्रांस के तीन बहुत बड़े बैंकों – Crédit Lyonnais, Comptoir National और Société Générale* – ने अपने कारोबार और अपनी शाखाओं का जाल इस प्रकार फैला रखा था**:

वर्ष	शाखाओं और दफ़्तरों की संख्या			पूंजी (लाख फ़्रांकों में)	
	प्रांतों में	पेरिस में	कुल	अपनी पूंजी	पूंजी के रूप में प्रयुक्त जमा
१८७०	४७	१७	६४	२,०००	४,२७०
१८९०	१९२	६६	२५८	२,६५०	१२,४५०
१९०९	१,०३३	१९६	१,२२९	८,८७०	४३,६३०

*'लियां का उधार बैंक', 'हिसाब का राष्ट्रीय दफ़्तर', 'जनरल सोसायटी'। – सं०

** Eugen Kaufmann, *Das französische Bankwesen*, Tübingen, 1911, SS. 356, 362 (यूजेन काउफ़मैन, 'फ़्रांस में बैंकों का कारोबार', त्यूबिनगेन, १९११, पृ० ३५६, ३६२ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक बड़े आधुनिक बैंक के "संबंधों" को दर्शाने के लिए रीसेर ने Disconto-Gesellschaft नामक बैंक से भेजे जानेवाले और वहां आनेवाले पत्रों की संख्या के बारे में निम्नलिखित आंकड़े दिये हैं; यह बैंक जर्मनी के और दुनिया के सबसे बड़े बैंकों में से एक है (१९१४ में इसकी पूंजी ३०,००,००,००० मार्क थी):

वर्ष	पत्र आये	पत्र भेजे गये
१८५२.	६,१३५	६,२९२
१८७०.	८५,८००	८७,५१३
१९००.	५,३३,१०२	६,२६,०४३

पेरिस के बड़े बैंक Crédit Lyonnais में १८७५ में २८,५३५ लोगों के खाते खुले हुए थे, १९१२ में यह संख्या बढ़कर ६,३३,५३९ हो गयी*।

ये सीधे-सादे आंकड़े शायद लंबी-चौड़ी व्याख्याओं की अपेक्षा ज़्यादा अच्छे ढंग से यह प्रकट कर देते हैं कि पूंजी के संकेंद्रण तथा बैंकों के लेन-देन में वृद्धि के कारण किस प्रकार बैंकों का महत्व बुनियादी तौर से बदलता जा रहा है। बिखरे हुए अलग-अलग पूंजीपति एक ही सामूहिक पूंजीपति का रूप धारण कर लेते हैं। कुछ पूंजीपतियों के चालू खातों का हिसाब रखते हुए बैंक मानो एक शुद्धतः तकनीकी तथा पूर्णतः सहायक कार्य करता है। परंतु जब यह कारोबार बेहद बढ़ जाता है, तब हम देखते हैं कि मुट्ठी भर इजारेदार पूरे पूंजीवादी समाज के सारे कारोबार को, वाणिज्यिक भी और औद्योगिक भी, अपनी इच्छा के अधीन कर लेते हैं, क्योंकि — अपने

* Jean Lescure, *L'épargne en France*, Paris, 1914, p. 52 (जान लेस्कूर, 'फ़्रांस में बचत', पेरिस, १९१४, पृ० ५२ — सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैंक के कारोबार के संबंधों, अपने चालू खातों और अन्य वित्तीय कार्रवाइयों के ज़रिए – उन्हें इस बात का मौक़ा मिल जाता है कि पहले तो वे विभिन्न पूंजीपतियों के बारे में **ठीक-ठीक पता लगा सकें** कि उनकी वित्तीय स्थिति क्या है, फिर उन्हें ऋण देना कम करके या बढ़ाकर, ऋण की सुविधा प्रदान करके या उसमें बाधा डालकर, उन पर **नियंत्रण रख सकें** और अंत में उनके भाग्य को **पूरी तरह अपने वश में कर लें**, उनकी आय निर्धारित करें, उन्हें पूंजी से वंचित कर दें, या उन्हें अपनी पूंजी बड़ी तेज़ी से तथा बेहद बढ़ा लेने दें, आदि।

हम बर्लिन के Disconto-Gesellschaft बैंक की ३० करोड़ मार्क की पूंजी का उल्लेख अभी कर चुके हैं। इस बैंक की पूंजी में यह वृद्धि बर्लिन के दो सबसे बड़े बैंकों – Deutsche Bank तथा Disconto Gesellschaft– के बीच प्राधान्य के लिए होनेवाले संघर्ष की घटनाओं में से एक थी। १८७० में पहला बैंक अभी नया-नया ही मैदान में आया था और उसकी पूंजी सिर्फ़ १,५०,००,००० मार्क थी, जबकि दूसरे की पूंजी ३,००,००,००० मार्क थी। १६०८ में पहले की पूंजी २०,००,००,००० मार्क थी और दूसरे की १७,००,००,००० मार्क। १६१४ में पहले ने अपनी पूंजी बढ़ाकर २५,००,००,००० कर ली और दूसरे ने एक और प्रथम कोटि के बैंक Schaffhausenscher Bankverein के साथ मिलकर अपनी पूंजी बढ़ाकर ३०,००,००,००० मार्क कर ली। प्राधान्य के लिए इस संघर्ष के साथ ही दोनों बैंकों के बीच बेशक अधिकाधिक टिकाऊ क़िस्म के "समझौते" भी बढ़ती हुई बारंबारता से होते रहे। बैंकों के कारोबार के इस विकास से बैंकों के कारोबार के विशेषज्ञ, जो आर्थिक प्रश्नों को अत्यंत नरम तथा सतर्क बुर्जुआ सुधारवाद की सीमाओं से रत्ती भर भी आगे न जानेवाले दृष्टिकोण से देखते हैं, निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुंचने पर मजबूर हुए हैं:

Disconto-Gesellschaft की पूंजी के बढ़कर ३० करोड़ मार्क हो जाने पर टीका करते हुए *Die Bank* नामक जर्मन पत्रिका ने लिखा: "दूसरे बैंक भी यही रास्ता अपनायेंगे और आज आर्थिक दृष्टि से जर्मनी पर जिन तीन सौ आदमियों का शासन है, उनकी संख्या धीरे-धीरे घटते-घटते पचास,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पचीस या इससे भी कम रह जायेगी। यह आशा नहीं की जा सकती कि संकेंद्रण की दिशा में यह नवीनतम प्रगति बैंकों के कारोबार तक ही सीमित रहेगी। अलग-अलग बैंकों के बीच जो घनिष्ठ संबंध है, उसका परिणाम स्वाभाविक रूप से यह होता है कि वे औद्योगिक सिंडिकेट, जो इन बैंकों के संरक्षण में होते हैं, एक दूसरे के नज़दीक आ जाते हैं... एक दिन अचानक हमें यह देखकर आश्चर्य होगा कि हमारी आंखों के सामने ट्रस्टों के अलावा और कुछ नहीं है और हमारे सामने इस बात की आवश्यकता आ खड़ी होगी कि हम इन निजी इजारेदारियों के स्थान पर राजकीय इजारेदारियों की स्थापना करें। परंतु हम अपने आपको इसके अलावा और किसी बात के लिए दोष नहीं दे सकते कि हमने घटनाओं को अपने रास्ते पर स्वच्छंद रूप से बढ़ने दिया, जिनकी रफ़्तार शेयरों में हेर-फेर के कारण कुछ तेज़ ज़रूर हो गयी।"*

यह बुर्जुआ पत्रकारिता की बेबसी का एक उदाहरण है, जो बुर्जुआ विज्ञान से केवल इस बात में भिन्न है कि बुर्जुआ विज्ञान कम ईमानदार है और वह समस्या के सार पर पर्दा डालने की, जंगल को पेड़ों द्वारा छिपाने की कोशिश करता है। संकेंद्रण के परिणामों पर "आश्चर्य" प्रकट करना, पूंजीवादी जर्मनी की सरकार को, या पूंजीवादी "समाज" को ("अपने आपको") "दोष देना" और शेयरों के प्रचलन से संकेंद्रण की "रफ़्तार तेज़" हो जाने की संभावना से उसी प्रकार डरना, जैसे जर्मन "कार्टेल" विशेषज्ञ चिएर्शकी अमरीकी ट्रस्टों से डरते हैं और जर्मन कार्टेलों को इसलिए "ज़्यादा पसंद करते हैं" कि उनसे "संभव है कि तकनीकी तथा आर्थिक प्रगति की रफ़्तार इतनी ज़्यादा तेज़ न हो, जैसी कि ट्रस्टों से**"—यह बेबसी नहीं, तो और क्या है?

लेकिन हक़ीक़त तो हक़ीक़त है। जर्मनी में ट्रस्ट नहीं हैं, वहां "बस"

---

* A. Lansburgh, *Die Bank mit den 300 Millionen*, *Die Bank*, 1914, 1, S. 426 (अल्फ़्रेड लैंसबर्ग, 'तीस करोड़ पूंजीवाला बैंक', 'बैंक', १९१४, अंक १, पृ० ४२६—सं०)।

** ज़ीगफ़्रीड चिएर्शकी, 'कार्टेल और ट्रस्ट', पृ० १२८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्टेल हैं, परंतु जर्मनी पर ज़्यादा से ज़्यादा तीन सौ बड़े-बड़े पूंजीवालों का शासन है और उनकी संख्या भी लगातार घटती जा रही है। कुछ भी हो, सभी पूंजीवादी देशों में, उनके बैंकों के कारोबार के क़ानूनों में अंतर होने के बावजूद, पूंजी के संकेंद्रण तथा इजारेदारियों के निर्माण की प्रक्रिया को बैंक कई गुना ज़ोरदार और तेज़ बना देते हैं।

मार्क्स ने 'पूंजी' में अब से पचास वर्ष पहले लिखा था कि "बैंक सामान्य बही-खाते और उत्पादन के साधनों के सामान्य वितरण के रूप को सामाजिक पैमाने पर प्रस्तुत करते हैं, परंतु केवल रूप को ही" (रूसी अनुवाद, खंड ३, भाग २, पृ० १४४)। हमने बैंकों की पूंजी में वृद्धि, सबसे बड़े बैंकों की शाखाओं तथा कार्यालयों की संख्या में वृद्धि और उनमें खातों की संख्या में वृद्धि, आदि के बारे में जो आंकड़े उद्धृत किये हैं, उनसे पूरे पूंजीपति वर्ग के "सामान्य बही-खाते" का एक ठोस चित्र हमारी आंखों के सामने आ जाता है और केवल पूंजीपति वर्ग के ही नहीं, क्योंकि बैंक, अस्थायी रूप से ही सही, तरह-तरह की मुद्रा-आय जमा करते हैं— छोटे व्यापारियों की, दफ़्तरों के क्लर्कों की और मज़दूर वर्ग के एक नन्हे-से उच्च स्तर की। "उत्पादन के साधनों का सामान्य वितरण"—यही है वह, जो औपचारिक रूप से आधुनिक बैंकों से पैदा होता है, जिनमें फ़्रांस के तीन से छः तक और जर्मनी के छः से आठ तक सबसे बड़े बैंक आते हैं और जिनके क़ब्ज़े में अरबों की पूंजी है। परंतु तत्वतः उत्पादन के साधनों का यह वितरण किसी भी प्रकार "सामान्य" नहीं, बल्कि निजी है, अर्थात वह बड़ी पूंजी के, और मुख्यतः विशाल इजारेदार पूंजी के हितों के अनुकूल होता है, जो अपना कारोबार ऐसी परिस्थितियों में चलाती है, जिनमें जनसाधारण अभाव का शिकार रहते हैं, जिनमें कृषि का पूरा विकास उद्योगों के विकास से बेहद पीछे रहता है और स्वयं उद्योगों में भी "भारी उद्योग" उद्योग की अन्य सभी शाखाओं से ख़िराज वसूल करता है।

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के समाजीकरण के मामले में बचत-बैंक और डाकख़ाने बैंकों से टक्कर लेने लगे हैं; वे ज़्यादा "विकेंद्रित" हैं, अर्थात उनका प्रभाव ज़्यादा जगहों में, ज़्यादा सुदूर स्थित स्थानों में और आबादी के व्यापकतर क्षेत्रों में फैला हुआ है। बैंकों तथा बचत-बैंकों में जमा रक़म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में तुलनात्मक वृद्धि की छानबीन करने के लिए नियुक्त किये गये एक अमरीकी आयोग द्वारा एकत्रित आंकड़े इस प्रकार हैं*:

जमा रक़म (अरब मार्कों में)

वर्ष	इंगलैंड		फ़्रांस		जर्मनी		
	बैंक	बचत-बैंक	बैंक	बचत-बैंक	बैंक	उधार सोसायटियां	बचत-बैंक
१८८०	८.४	१.६	?	०.९	०.५	०.४	२.६
१८८८	१२.४	२.०	१.५	२.१	१.१	०.४	४.५
१९०८	२३.२	४.२	३.७	४.२	७.१	२.२	१३.९

चूंकि बचत-बैंक जमा रक़म पर ४ प्रतिशत और ४.२५ प्रतिशत व्याज देते हैं, इसलिए उन्हें अपनी पूंजी के लिए "लाभदायक" निवेशों की खोज करनी पड़ती है, उन्हें हुंडियों और बंधकों, आदि का काम करना पड़ता है। बैंकों तथा बचत-बैंकों का अंतर "धीरे-धीरे मिटता जाता है"। उदाहरण के लिए, बोख़ुम तथा एर्फ़र्ट के व्यापारमंडल यह मांग करते हैं कि बचत-बैंकों द्वारा हुंडियां भुगताने जैसे "शुद्धतः" बैंक व्यवसाय के काम किये जाने पर "रोक लगा दी जाये", वे मांग करते हैं कि डाकख़ानों के "बैंक व्यवसाय" के कामों को सीमित कर दिया जाये**। बड़े-बड़े बैंकपतियों को शायद इस बात का डर है कि राजकीय इजारेदारी एक अप्रत्याशित दिशा से उनके निकट आ जायेगी। परंतु यह बताने की जरूरत नहीं कि यह भय,

*अमरीकी *National Monetary Commission* के आंकड़े, *Die Bank*, 1910, 2, S. 1200 ('बैंक', १९१०, अंक २, पृ० १२०० –सं०)।

**वही, *Die Bank*, १९१३, पृ० ८११, १०२२; १९१४, पृ० ७१३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक प्रकार से, एक ही दफ़्तर के दो विभागों के मैनेजरों की प्रतिद्वंद्विता की अभिव्यक्ति से अधिक और कुछ नहीं है; क्योंकि एक तरफ़ तो बचत-बैंकों के हाथों में जो अरबों की रक़म सौंपी जाती है, उस पर अंततः इन्हीं बड़े-बड़े बैंकपतियों का वास्तविक क़ब्ज़ा रहता है और दूसरी तरफ़, वह पूंजीवादी समाज में राजकीय इजारेदारी उद्योगों की किसी एक या दूसरी शाखा में उन करोड़पतियों की आय को बढ़ाने तथा सुनिश्चित बनाने का एक साधन मात्र होती है, जिनका दिवाला निकलनेवाला होता है।

खुली होड़ के प्रभुत्ववाले पुराने ढंग के पूंजीवाद का इजारेदारी के प्रभुत्ववाले नये पूंजीवाद में परिवर्तन अन्य बातों के अतिरिक्त इस बात में व्यक्त होता है कि स्टाक एक्सचेंज का महत्व घट गया है। *Die Bank* नामक पत्रिका लिखती है: "स्टाक एक्सचेंज अब परिचलन का वैसा अनिवार्य माध्यम नहीं रह गया है, जैसा कि वह पहले था, जबकि बैंकों में अधिकांश नये शेयरों को अपने ग्राहकों के हाथ बेचने की सामर्थ्य पैदा नहीं हो पायी थी"*।

"'हर बैंक एक स्टाक एक्सचेंज होता है', और जो बैंक जितना ही बड़ा होता है, बैंक व्यवसाय जितना ही सफलतापूर्वक संकेंद्रित होता है, उतनी ही अधिक हद तक यह आधुनिक कहावत चरितार्थ होती है।"** "जबकि पहले, उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में, स्टाक एक्सचेंज ने अपनी जवानी के जोश में" (यह "सूक्ष्म" संकेत १८७३ में स्टाक एक्स-चेंज के बैठ जाने[186], ग्रून्दर हुल्लड़[187], आदि की ओर है) "जर्मनी के औद्योगीकरण के युग का श्रीगणेश किया था, आज बैंक और उद्योग 'अकेले ही' इस काम को कर लेते हैं। स्टाक एक्सचेंज पर हमारे बड़े बैंकों का प्रभुत्व... पूर्णतः संगठित जर्मन औद्योगिक राज्य की अभिव्यक्ति के अतिरिक्त

---

* *Die Bank* १९१४, अंक १, पृ० ३१६।

** Dr. Oscar Stillich, *Geld-und Bankwesen*, Berlin, 1907, S. 169 (डा० ओस्कर स्टील्लिख़, 'मुद्रा तथा बैंक व्यवसाय', बर्लिन, १९०७, पृ० १६९–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और कुछ नहीं है। अपने आप काम करनेवाले आर्थिक नियमों का क्षेत्र यदि इस प्रकार संकुचित हो जाता है और यदि बैंकों द्वारा सचेत रूप से नियमन का क्षेत्र काफ़ी बढ़ जाता है, तो संचालन करनेवाले कुछ इने-गिने लोगों का राष्ट्रीय आर्थिक उत्तरदायित्व बहुत बढ़ जाता है।" यह बात जर्मन प्रोफ़ेसर शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़* ने लिखी है, जो जर्मन साम्राज्यवाद के वकील हैं, जिन्हें सभी देशों के साम्राज्यवादी इस विषय का पंडित मानते हैं और जो इस "छोटी-सी बात" को छिपाने की कोशिश करते हैं कि बैंकों द्वारा "सचेत रूप से नियमन" इस बात में निहित है कि मुट्ठी भर "पूर्णतः संगठित" इजारेदार जनता को लूट लेते हैं। बुर्जुआ प्रोफ़ेसर का काम यह नहीं होता कि वह सारी व्यवस्था के तमाम कलपुर्ज़ों को खोलकर सब के सामने रख दे या बैंक के इजारेदारों के सारे हथकंडों को सब के सामने ज़ाहिर कर दे, बल्कि उसका काम तो उन्हें आकर्षक रूप में पेश करना होता है।

इसी प्रकार रीसेर, जो और भी प्रामाणिक अर्थशास्त्री हैं और स्वयं बैंक "कर्मी" हैं, अकाट्य तथ्यों को उल्टा-सीधा समझाने के लिए निरर्थक शब्दों से खेलते हैं: "स्टाक एक्सचेंज की वह विशेषता ग़ायब होती जा रही है, जो सामान्यरूपेण पूरी अर्थव्यवस्था के लिए और विशेष रूप से सिक्यूरिटियों के परिचलन के लिए नितांत आवश्यक है, अर्थात उसकी यह विशेषता कि वह उन आर्थिक हलचलों का, जो आकर उसमें केंद्रित होती हैं, एक अत्यंत नपा-तुला मापदंड ही नहीं, बल्कि लगभग स्वचलित नियामक भी होता है।"**

दूसरे शब्दों में पुराना पूंजीवाद, खुली होड़ का पूंजीवाद, जिसके साथ उसके अनिवार्य नियामक के रूप में स्टाक एक्सचेंज होता था, लुप्त होता जा रहा है। उसका स्थान लेने के लिए एक नये पूंजीवाद का जन्म हो

---

*शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'जर्मनी के उधार बैंक', 'सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', त्यूबिनगेन, १९१५, पृ० १०१।

**रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण', चौथा संस्करण, पृ० ६२९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया है, जिसमें किसी संक्रमणकालीन वस्तु के प्रकट लक्षण हैं, खुली होड़ और इजारेदारी का मेल। स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है: यह नवीनतम पूंजीवाद **किस चीज की ओर** "विकसित" हो रहा है? परंतु बुर्जुआ विद्वान इस प्रश्न को उठाने से डरते हैं।

"तीस बरस पहले एक दूसरे से खुली होड़ करनेवाले व्यापारी लोग 'मज़दूरों' के शारीरिक श्रम के क्षेत्र में पड़नेवाले कामों को छोड़कर अपने कारोवार से संबंधित नव्वे प्रतिशत आर्थिक काम स्वयं कर लेते थे। इस समय नव्वे प्रतिशत आर्थिक दिमागी काम **पदाधिकारी** करते हैं। बैंक व्यवसाय इस विकास में सबसे आगे है।"* शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ की यह स्वीकारोक्ति हमारे सामने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर देती है: यह नवीनतम पूंजीवाद, साम्राज्यवाद की अवस्था में पूंजीवाद किस चीज़ की ओर विकसित हो रहा है?

संकेंद्रण की प्रक्रिया के फलस्वरूप पूरी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जिन थोड़े-से इने-गिने बैंकों के हाथ में आ जाती है, उनमें स्वाभाविक रूप से इजारेदार समझौतों की दिशा में, **बैंकों का एक ट्रस्ट** बनाने की दिशा में बढ़ने की प्रवृत्ति अधिकाधिक स्पष्ट दिखाई देती है। अमरीका में नौ नहीं, बल्कि **दो** बहुत बड़े बैंकों के हाथ में, राकफ़ेलर तथा मार्गन नामक अरबपतियों के बैंकों के हाथ में ग्यारह अरब मार्क की पूंजी है**। जर्मनी में Disconto-Gesellschaft नाम के बैंक में Schaffhausenscher Bankverein नाम के बैंक के विलय के बारे में, जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं, स्टाक एक्सचेंज के हितों के पक्षधर *Frankfurter Zeitung*[188] ने निम्नलिखित शब्दों में टीका की थी:

"बैंकों के संकेंद्रण में वृद्धि के कारण ऐसे प्रतिष्ठानों का दायरा संकुचित होता जा रहा है, जिनसे उधार मिल सकता है, और फलस्वरूप चंद बैंक व्यवसायी समूहों पर बड़े उद्योगों की निर्भरता बढ़ती जा रही है। उद्योगों

---

*शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'जर्मनी के उधार बैंक', 'सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', त्यूबिनगेन, १९१५, पृ० १५१।

** *Die Bank*, १९१२, अंक १, पृ० ४३५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा वित्तीय जगत के घनिष्ठ संबंधों को देखते हुए ऐसी औद्योगिक कंपनियों की कामकाज की स्वतंत्रता, जिन्हें बैंक पूंजी की आवश्यकता पड़ती है, सीमित हो गयी है। इस कारण बड़े उद्योग बैंकों के अधिकाधिक ट्रस्टीकरण (ट्रस्टों में एकीभूत अथवा रूपांतरित होते जाने) को मिश्रित भावनाओं के साथ देखते हैं। वस्तुतः हम कई बार अलग-अलग बड़ी-बड़ी बैंकिंग कंपनियों के बीच ऐसे समझौतों की शुरूआत देख चुके हैं, जिनका उद्देश्य होड़ को सीमित करना होता है।"*

बार-बार यही कहना पड़ता है कि बैंक व्यवसाय के विकास का अंतिम रूप इजारेदारी है।

जहां तक बैंकों और उद्योगों के घनिष्ठ संबंध का सवाल है, ठीक इसी क्षेत्र में बैंकों की नयी भूमिका शायद सबसे ज़्यादा स्पष्ट रूप में अनुभव की जाती है। जब कोई बैंक किसी कारोबारी की हुंडी का भुगतान करता है, या उसका चालू खाता खोलता है, आदि, तो अलग-अलग लेने पर ये सारे काम किसी प्रकार भी उसकी स्वतंत्रता को कम नहीं करते और इसमें बैंक की भूमिका एक सीधे-सादे बिचवान के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती। परंतु जब इस प्रकार के लेन-देन संख्या में बहुत बढ़ जाते हैं और एक स्थायी व्यवहार का रूप धारण कर लेते हैं, जब बैंक अपने हाथ में विपुल पूंजी "एकत्रित" कर लेता है, जब किसी फ़र्म के चालू खाते का हिसाब-किताब रखने से बैंक अपने ग्राहक की आर्थिक दशा के बारे में ज़्यादा पूर्ण और ज़्यादा विस्तृत जानकारी प्राप्त करने की स्थिति में हो जाता है—और होता भी यही है—तो परिणाम यह निकलता है कि औद्योगिक पूंजीपति और भी पूरी तरह बैंक पर आश्रित हो जाता है।

इसके साथ ही बैंकों और सबसे बड़े औद्योगिक तथा वाणिज्यिक उद्यमों के बीच एक प्रकार का वैयक्तिक संबंध स्थापित हो जाता है, दोनों एक दूसरे के निरीक्षण मंडलों (या संचालक मंडलों) में अपने-अपने संचालक नियुक्त करके या एक दूसरे के शेयर ख़रीदकर एक दूसरे में विलीन हो

---

*शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ द्वारा उद्धृत, 'सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', पृ० १५५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाते हैं। जर्मन अर्थशास्त्री जीडेल्स ने पूंजी तथा उद्यमों के संकेंद्रण के इस रूप के बारे में अत्यंत विस्तृत आंकड़े संकलित किये हैं। बर्लिन के छः सबसे बड़े बैंकों का प्रतिनिधित्व अपने संचालकों के ज़रिए ३४४ औद्योगिक कंपनियों में और बोर्ड के अपने सदस्यों के ज़रिए ४०७ दूसरी कंपनियों में था, याने कुल मिलाकर ७५१ कंपनियों में उनका प्रतिनिधित्व था। २८९ कंपनियां ऐसी थीं, जिनमें से हर एक के निरीक्षण मंडल में बैंकों के दो-दो प्रतिनिधि थे, या उनके प्रतिनिधि इन मंडलों के अध्यक्ष थे। हमें इस प्रकार की औद्योगिक तथा वाणिज्यिक कंपनियां उद्योगों की विविधतम शाखाओं में मिलती हैं: बीमा, परिवहन, रेस्तरां, थिएटर, कला-उद्योग, आदि। दूसरी ओर, इन छः बैंकों के निरीक्षण मंडलों में (१९१० में) ५१ सबसे बड़े उद्योगपति थे, जिनमें क्रुप्प फ़र्म के, शक्तिशाली जहाज़रानी कंपनी Hapag (Hamburg-Amerika), इत्यादि के संचालक शामिल थे। १८९५ से १९१० तक इन छः बैंकों में से हर एक ने सैकड़ों औद्योगिक कंपनियों के (जिनकी संख्या २८१ से लेकर ४१९ तक थी) शेयरों और बांडों के प्रचलन में हिस्सा लिया*।

बैंकों तथा उद्योगों का यह "वैयक्तिक गठबंधन" सरकार के साथ इन दोनों के "वैयक्तिक गठबंधन" द्वारा परिपूरित होता है। जीडेल्स ने लिखा है कि "निरीक्षण मंडलों में धड़ल्ले के साथ पदवीधारी लोगों को और उन भूतपूर्व सरकारी अफ़सरों को भी स्थान दिये जाते हैं, जो अधिकारियों के साथ संबंध स्थापित कराने में बहुत काफ़ी सुविधा (!!) प्रदान कर सकते हैं"... "आम तौर से हर बड़े बैंक के निरीक्षण मंडल में संसद का कोई सदस्य या बर्लिन नगरपालिका का कोई सदस्य होता है।"

फलतः बड़ी-बड़ी पूंजीवादी इजारेदारियों का निर्माण, कहना चाहिए, "लौकिक" तथा "अलौकिक", सभी प्रकार के उपायों से पूरी तेज़ी के साथ चल रहा है। आधुनिक पूंजीवादी समाज के कुछ सौ वित्तीय सम्राटों

---

*जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में'; रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के वीच एक प्रकार का श्रम-विभाजन सुव्यवस्थित ढंग से विकसित हो रहा है:

"कुछ बड़े उद्योगपतियों के" (जो बैंकों के बोर्डों, ग्रादि में शामिल होते हैं) "कार्य-क्षेत्र के इस प्रकार विस्तृत होते जाने ग्रौर बैंकों के प्रांतीय संचालकों के कार्य-क्षेत्र में कोई निश्चित ग्रौद्योगिक प्रदेश मिला देने के साथ-साथ बड़े बैंकों के संचालकों में विशेषज्ञता की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। मोटे तौर से इस प्रकार की विशेषज्ञता तभी संभव है, जव बैंक व्यवसाय बहुत बड़े पैमाने पर चलाया जाये ग्रौर विशेष रूप से तव, जव उद्योगों के साथ बैंकों के व्यापक संवंध हों। श्रम का यह विभाजन दो दिशाग्रों में होता है: एक तरफ़ तो उद्योग के साथ संवंध का पूरा क्षेत्र किसी एक संचालक के विशेष काम के रूप में उसके सुपुर्द कर दिया जाता है; दूसरी ग्रोर, हर संचालक कई ग्रलग-ग्रलग उद्यमों के, या उद्योग की किसी एक ही शाखा के किसी एक उद्यम-समूह के या समान हित रखनेवाले उद्यमों के निरीक्षण का काम ग्रपने ज़िम्मे ले लेता है"... (पूंजीवाद ग्रलग-ग्रलग उद्यमों के संगठित **निरीक्षण** की मंज़िल में पहुंच चुका है)... "कुछ संचालक जर्मनी के उद्योगों के, या केवल पश्चिमी जर्मनी के उद्योगों के विशेषज्ञ वन जाते हैं" (जर्मनी का पश्चिमी भाग ही सवसे ग्रधिक उद्योगीकृत है), "दूसरे संचालक विदेशी राज्यों तथा उद्योगों के साथ संवंधों ग्रौर उद्योगपतियों के व्यक्तित्व, ग्रादि की जानकारी के विशेषज्ञ वन जाते हैं, तो कुछ ग्रन्य संचालक स्टाक एक्सचेंज, ग्रादि के विशेषज्ञ वन जाते हैं। इसके ग्रलावा बैंकों के हर संचालक के सुपुर्द बहुधा कोई ख़ास इलाक़ा या उद्योग की कोई विशेष शाखा कर दी जाती है; कोई संचालक मुख्यत: बिजली कंपनियों के निरीक्षण मंडलों में काम करता है, तो दूसरा रसायन, वियर या चुक़ंदर की चीनी के कारख़ानों के निरीक्षण मंडलों में ग्रौर तीसरा कुछ फुटकर ग्रौद्योगिक उद्यमों के निरीक्षण मंडलों में ग्रौर इसके साथ ही बीमा कंपनियों के निरीक्षण मंडलों में भी काम करता है... सारांश यह कि बड़े बैंकों के कामकाज के पैमाने तथा विविधता में वृद्धि के साथ ही उनके संचालकों के वीच श्रम का विभाजन भी निस्संदेह वढ़ जाता है, जिसका उद्देश्य (ग्रौर परिणाम), कहना चाहिए, यह होता है कि वे वैंक के व्यवसाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के स्तर से कुछ ऊंचा उठाकर उद्योगों की आम समस्याओं और उद्योगों की हर शाखा की विशेष समस्याओं के ज़्यादा अच्छे विशेषज्ञ, ज़्यादा अच्छे जानकार बना दिये जायें और इस प्रकार उन्हें यह क्षमता प्रदान की जाये कि वे अपने-अपने बैंकों के औद्योगिक प्रभाव-क्षेत्र के भीतर ज़्यादा अच्छी तरह काम कर सकें। बैंकों की इस पद्धति को अनुपूरित करने के लिए बैंक अपने निरीक्षण मंडलों में ऐसे लोगों को चुनने की कोशिश करते हैं, जो औद्योगिक समस्याओं के अच्छे विशेषज्ञ हों, जैसे उद्योगपति, भूतपूर्व अफ़सर, विशेषतः ऐसे, जो पहले रेलवे में या खदान उद्योग में काम कर चुके हों", आदि *।

फ़्रांस के बैंक व्यवसाय में भी हम ज़रा भिन्न रूप में यही पद्धति देखते हैं। उदाहरण के लिए, Crédit Lyonnais बैंक ने, जो फ़्रांस के तीन सबसे बड़े बैंकों में एक है, "वित्तीय शोध-सेवा" (service des études financières) की स्थापना की है। इसमें पचास से अधिक इंजीनियर, सांख्यिकीविद, अर्थशास्त्री, वकील, आदि स्थायी रूप से काम करते हैं। इस पर प्रति वर्ष छः–सात लाख फ़्रांक ख़र्च पड़ता है। स्वयं यह सेवा आठ विभागों में बंटी हुई है: एक विभाग विशेष रूप से औद्योगिक उद्यमों से संबंधित जानकारी एकत्रित करने का काम करता है, दूसरा आम आंकड़ों का अध्ययन करता है, तीसरा रेल और जहाज़ कंपनियों का विशेषज्ञ है, चौथा फंडों का, पांचवां वित्तीय रिपोर्टों का, आदि **।

इसका परिणाम एक तरफ़ तो यह होता है कि बैंक पूंजी तथा औद्योगिक पूंजी का निरंतर बढ़ती हुई मात्रा में संविलय या जैसा नि० इ० बुख़ारिन ने बहुत उचित कहा है, संलयन होता जाता है, और दूसरी तरफ़, बैंक बढ़कर सचमुच "सर्वव्यापी स्वरूप" की संस्थाओं का रूप धारण कर लेते हैं। इस प्रश्न के बारे में हम जीडेल्स द्वारा प्रयुक्त शब्दों को उद्धृत करना

---

* जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', पृ० १५६–१५७।

** *Die Bank* में फ़्रांसीसी बैंकों के विषय में यूजेन काउफ़मैन का लेख, १६०६, अंक २, पृ० ८५१ तथा आगे के पृष्ठ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रावश्यक समझते हैं, जिन्होंने इस विषय का ग्रध्ययन सबसे ग्रच्छी तरह किया है :

"ग्रौद्योगिक संबंधों के कुल योग की छानबीन करने से उद्योगों के लिए काम करनेवाले वित्तीय प्रतिष्ठानों का **सर्वव्यापी स्वरूप** प्रकट हो जाता है। दूसरी तरह के बैंकों से भिन्न इस विषय के साहित्य में कभी-कभी उठायी जानेवाली इस मांग के प्रतिकूल कि बैंकों को एक ही प्रकार के कारोबार की या उद्योगों की किसी एक ही शाखा की विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए, ताकि उनके पैर जमे रहें – बड़े बैंक इस बात की कोशिश कर रहे हैं कि वे उद्योगों की शाखाग्रों ग्रौर स्थानों की दृष्टि से ग्रौद्योगिक उद्यम के साथ ग्रपने संबंधों को यथासंभव ग्रधिकतम वैविध्यपूर्ण बनायें ग्रौर ग्रलग-ग्रलग उद्यमों के ऐतिहासिक विकास से पैदा कारणों से विभिन्न स्थानों तथा उद्योगों की विभिन्न शाखाग्रों के बीच पूंजी के वितरण में जो ग्रसमानता उत्पन्न हो गयी है, उसे दूर कर दें।" "एक प्रवृत्ति तो है उद्योगों के साथ संबंधों को ग्राम बना देने की; दूसरी प्रवृत्ति है उन्हें टिकाऊ तथा घनिष्ठ बनाने की। इन छः बड़े-बड़े बैंकों में दोनों ही प्रवृत्तियों को पूरी तरह तो नहीं, पर काफ़ी हद तक ग्रौर समान मात्रा में मूर्त रूप दिया जाता है।"

ग्रकसर ग्रौद्योगिक तथा वाणिज्यिक क्षेत्र बैंकों की "ग्रातंकवादी हरकतों" की शिकायत करते हैं। ग्रौर यह कोई ग्राश्चर्य की बात नहीं है कि इस प्रकार की शिकायतें सुनने में ग्राती हैं, क्योंकि बड़े बैंक "हुक्म चलाते" हैं, जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगा। १९ नवंबर, १९०१ को बर्लिन के "डी" कहलाये जानेवाले बैंकों में से एक बैंक ने (चार सबसे बड़े बैंकों के नाम "डी" ग्रक्षर से शुरू होते हैं) जर्मनी के केंद्रीय उत्तर-पश्चिमी सीमेंट सिंडिकेट के संचालक मंडल को इन शब्दों में एक पत्र लिखा: "ग्रापके द्वारा इस माह की १८ तारीख़ के एक ग्रख़बार में प्रकाशित सूचना को देखते हुए हमें इस संभावना को ध्यान में रखना होगा कि ग्रापके सिंडिकेट की ग्रगली ग्राम सभा में, जो इस माह की ३० तारीख़ को होनेवाली है, शायद कुछ ऐसे क़दम उठाने का फ़ैसला किया जाये, जिनके कारण संभवतः ग्रापके कारोबार में ऐसे परिवर्तन हो जायें, जो हमें स्वीकार्य नहीं हैं। हमें ग्रत्यंत खेद है कि इन कारणों से हम ग्रागे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से आपको वह उधार देना बंद कर देने के लिए बाध्य हैं, जो आपको अब तक दिया जाता रहा है... परंतु यदि इस आम सभा में ऐसे क़दम उठाने का फ़ैसला न किया जाये, जो हमें अस्वीकार्य हैं, और हमें भविष्य के लिए इस विषय में उचित आश्वासन मिल जायें, तो हम आपके साथ नये उधार की मंज़ूरी की बातचीत आरंभ करने के लिए बिलकुल तैयार हैं।"*

वास्तव में यह छोटी पूंजी की वही पुरानी शिकायत है कि बड़ी पूंजी उसे दबाती है, पर इस मामले में तो एक पूरा सिंडिकेट "छोटी" पूंजी की श्रेणी में आ गया! छोटी और बड़ी पूंजी का पुराना संघर्ष विकास की एक नयी तथा अत्यधिक ऊंची मंज़िल पर दुबारा शुरू किया जा रहा है। समझ में आनेवाली बात है कि बड़े बैंकों के अरबों-अरब की धनराशिवाले उद्यम ऐसे साधनों से तकनीकी उन्नति की रफ़्तार को तेज़ कर सकते हैं, जिनकी तुलना पिछले ज़माने के साधनों से करना असंभव है। उदाहरण के लिए, बैंक तकनीकी शोध-कार्य की विशेष सोसायटियां स्थापित करते हैं और ज़ाहिर है कि केवल "मित्र" औद्योगिक उद्यम ही उनके काम से लाभ उठा सकते हैं। 'विद्युत रेलवे शोध-सोसायटी', 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शोध का केंद्रीय ब्यूरो', आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

बड़े बैंकों के संचालक स्वयं इस बात को देखने से नहीं चूक सकते कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नयी परिस्थितियों की रचना हो रही है, पर इन घटनाओं के आगे वे लाचार हैं।

जीडेल्स लिखते हैं: "जिस किसी ने भी पिछले कुछ वर्षों में बड़े बैंकों के संचालकों तथा निरीक्षण मंडलों के सदस्यों के पदों पर आसीन व्यक्तियों में परिवर्तनों पर ग़ौर किया है, उसने इस बात को अवश्य देखा होगा कि ताक़त धीरे-धीरे ऐसे लोगों के हाथों में जा रही है, जो उद्योगों के आम विकास में बड़े बैंकों के सक्रिय हस्तक्षेप को उनका आवश्यक और अधिकाधिक महत्वपूर्ण कार्यभार समझते हैं। इन नये लोगों तथा बैंकों के पुराने संचालकों के बीच इस विषय पर कारोबारी और बहुधा वैयक्तिक ढंग के मतभेद बढ़ते

---

*डा० ओस्कर स्टील्लिख़, 'मुद्रा तथा बैंक व्यवसाय', बर्लिन, १९०७, पृ० १४७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा रहे हैं। सवाल यह है कि उत्पादन की औद्योगिक प्रक्रिया में इस हस्तक्षेप से उधार देनेवाली संस्थाओं के रूप में बैंकों को हानि पहुंचेगी या नहीं; एक ऐसे कार्य-क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए वे परखे हुए उसूलों और निश्चित मुनाफ़े की बलि तो नहीं दे रहे हैं, जिसका उधार दिलाने में बिचवान की उनकी भूमिका के साथ कोई संबंध नहीं है और जो बैंकों को एक ऐसे क्षेत्र में लिये जा रहा है, जहां उनके लिए पहले कभी की अपेक्षा औद्योगिक उतार-चढ़ावों की अंधी शक्तियों की लपेट में आ जाने का ख़तरा बहुत बढ़ जाता है। पुराने बैंक संचालकों में से बहुतों की यही राय है, जबकि अधिकांश नौजवान संचालक उद्योगों में सक्रिय हस्तक्षेप को उतनी ही बड़ी आवश्यकता समझते हैं, जितनी आधुनिक बड़े उद्योगों के साथ-साथ बड़े-बड़े बैंकों और आधुनिक औद्योगिक बैंक व्यवसाय को जन्म देनेवाली आवश्यकता थी। ये दोनों पक्ष केवल एक बात पर सहमत हैं, वह यह कि बड़े बैंकों की इन नयी सरगर्मियों में न तो कोई दृढ़ उसूल हैं, और न कोई ठोस लक्ष्य।"*

पुराने पूंजीवाद के दिन पूरे हुए। नया पूंजीवाद किसी चीज की ओर संक्रमण का द्योतक है। इजारेदारी और खुली होड़ का "मेल बिठाने" के उद्देश्य से "दृढ़ उसूलों और किसी ठोस लक्ष्य" को ढूंढ़ना बिलकुल बेकार है। "संगठित" पूंजीवाद के वकील, शुल्त्ज़े-गैवर्निट्ज़, लिएफ़मैन तथा ऐसे ही अन्य "सिद्धांतकार" उसकी ख़ूबियों का जो आधिकारिक गुणगान करते हैं, उसके मुक़ावले में व्यावहारिक लोगों की स्वीकारोक्ति में एक दूसरे ही स्वर की गूंज है[189]।

बड़े बैंकों की "नयी सरगर्मियां" ठीक किस काल में अंतिम रूप से स्थापित हुई थीं? जीडेल्स ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न का काफ़ी सटीक उत्तर दिया है:

"अपने नये अंतर्य, नये रूपों, नये निकायों, याने एकसाथ केंद्रीयकृत और विकेंद्रीयकृत ढंग से संगठित बड़े बैंकों समेत औद्योगिक उद्यमों के

---

*जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', पृ० १८३–१८४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारस्परिक संबंध पिछली शताब्दी के अंतिम दशक से पहले शायद ही लाक्षणिक आर्थिक परिघटना बन पाये थे। एक मानी में तो उनका प्रारंभ-बिंदु सन १८९७ निर्धारित किया जा सकता है, उस समय उद्यमों के विशाल पैमाने पर 'संविलयन' हुए थे, जो बैंकों की औद्योगिक नीति के हितों में विकेंद्रित संगठन का नया रूप पहली बार चालू कर रहे थे। उस प्रारंभबिंदु को संभवतः इसके भी बाद रखा जा सकता है, क्योंकि १९०० के आर्थिक संकट ने ही उद्योगों तथा बैंक व्यवसाय के संकेंद्रण की प्रक्रिया को अत्यधिक तेज़ कर दिया था, उसे दृढ़ बना दिया था, उद्योगों के साथ उनके संबंधों को पहले-पहल बड़े बैंकों की वास्तविक इजारेदारी में परिवर्तित कर दिया था और इन संबंधों को अधिक घनिष्ठ तथा अधिक सक्रिय बना दिया था।"*

इस प्रकार बीसवीं शताब्दी का आरंभ उस मोड़ का द्योतक है, जहां से पुराना पूंजीवाद नये पूंजीवाद की दिशा में, सामान्य पूंजी के प्रभुत्व से वित्त पूंजी के प्रभुत्व की दिशा में मुड़ गया था।

३. वित्त पूंजी तथा वित्तीय अल्पतंत्र

हिल्फ़र्डिंग लिखते हैं: "औद्योगिक पूंजी में उस भाग का अनुपात निरंतर बढ़ता जा रहा है, जिस पर उसका उपयोग करनेवाले उद्योगपतियों का स्वामित्व नहीं होता। वे केवल बैंकों के माध्यम से ही उसका उपयोग हासिल कर पाते हैं, जो उनके लिए पूंजी के मालिकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरी ओर, बैंक को अपनी निधि का अधिकाधिक भाग उद्योगों में लगाना पड़ता है। इस प्रकार बैंकपति निरंतर बढ़ती हुई मात्रा में औद्योगिक पूंजीपति में परिवर्तित होता जाता है। इस बैंक पूंजी को, अर्थात उस पूंजी को, जो मुद्रा के रूप में होती है और जो इस प्रकार वास्तव में औद्योगिक पूंजी में परिवर्तित हो चुकी है, मैं वित्त पूंजी कहता हूं।" "वित्त पूंजी वह पूंजी है,

*वही, पृ० १८१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिस पर नियंत्रण बैंकों का होता है और जिसका उपयोग उद्योगपति करते हैं।"*

यह परिभाषा इस लिहाज़ से अधूरी है कि इसमें एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है: उत्पादन तथा पूंजी के संकेंद्रण के इस हद तक बढ़ने के बारे में, जहां पहुंचकर इस संकेंद्रण की परिणति इजारेदारी में होती है और हुई है। परंतु अपनी पूरी पुस्तक में, विशेष रूप से जिस अध्याय से यह परिभाषा ली गयी है, उससे पहलेवाले दो अध्यायों में हिल्फ़र्डिंग ने **पूंजीवादी इजारेदारियों** की भूमिका पर ज़ोर दिया है।

उत्पादन का संकेंद्रण; उससे उत्पन्न होनेवाली इजारेदारियां; उद्योगों के साथ बैंकों का विलयन या संलयन – यह है वित्त पूंजी के उत्थान का इतिहास और यही इस शब्द का अंतर्य है।

अब हमें यह बताना है कि माल-उत्पादन तथा निजी स्वामित्व की आम परिस्थितियों के अंतर्गत किस प्रकार पूंजीवादी इजारेदारियों की "कारोबारी गतिविधियां" अनिवार्य रूप से वित्तीय अल्पतंत्र के प्रभुत्व का रूप धारण कर लेती हैं। यह वात ध्यान में रखनी चाहिए कि बुर्जुआ जर्मन – और केवल जर्मन ही नहीं – विज्ञान के रीसेर, शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, लिएफ़मैन, आदि जैसे सारे के सारे प्रतिनिधि साम्राज्यवाद तथा वित्त पूंजी के वकील हैं। अल्पतंत्र के निर्माण में कौन-से "कलपुर्ज़े" किस तरह काम करते हैं, उसके तरीक़े क्या हैं, उसकी "निष्कलंक तथा पापपूर्ण" आय कितनी है, संसदों के साथ उसके संबंध क्या हैं, आदि, आदि वातों का रहस्योद्घाटन करने के बजाय वे उन पर पर्दा डालते हैं, रंग चढ़ाते हैं। वे उलझे हुए प्रश्नों से कतराने के लिए लंबे-चौड़े तथा गोलमोल फ़िक़रों का इस्तेमाल करते हैं, बैंकों के संचालकों की "उत्तरदायित्व की भावना" को जागृत करते हैं, प्रशा के अधिकारियों की "कर्त्तव्यपरायणता" की प्रशंसा करते हैं, "निरीक्षण" तथा "नियमन" के बारे में प्रस्तुत किये गये सरासर हास्यास्पद विधेयकों की छोटी-छोटी ब्योरे की बातों का गूढ़

---

* रुडोल्फ़ हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', मास्को, १९१२, पृ० ३३८–३३९।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्ययन करते हैं और ऐसे सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ करते हैं, जिनका एक उदाहरण प्रोफ़ेसर लिएफ़मैन द्वारा निर्धारित निम्नलिखित "वैज्ञानिक" परिभाषा है: "...**वाणिज्य एक ऐसा व्यवसाय है, जिसका उद्देश्य है माल एकत्रित करना, उसकी गोदाम भराई करना और उसे उपलब्ध बनाना**"* (मोटे अक्षरों का प्रयोग प्रोफ़ेसर ने स्वयं किया है)... इससे यह निष्कर्ष निकलेगा कि वाणिज्य का अस्तित्व आदिम मनुष्य के ज़माने में भी था, जिसे विनिमय का तनिक भी ज्ञान नहीं था, और समाजवाद के अंतर्गत भी उसका अस्तित्व रहेगा!

परंतु वित्तीय अल्पतंत्र के भयानक प्रभुत्व से संबंधित भयानक तथ्य इतने ज्वलंत हैं कि सभी पूंजीवादी देशों में, अमरीका, फ़्रांस तथा जर्मनी में ऐसा साहित्य पैदा हो गया है, जो बुर्जुआ दृष्टिकोण से लिखा गया है, पर जिसमें फिर भी इस अल्पतंत्र का काफ़ी सच्चा चित्र तथा उसकी आलोचना–जो बेशक दक़ियानूसी है–मिल जाती है।

"होल्डिंग की पद्धति" को, जिसका उल्लेख संक्षेप में हम ऊपर कर चुके हैं, आधारशिला बनाया जाना चाहिए। जर्मन अर्थशास्त्री हेमैन ने, जो शायद इस विषय की ओर ध्यान आकर्षित करानेवाले पहले व्यक्ति थे, इसके सार का वर्णन इस प्रकार किया है:

"कारोबार का अगुआ मुख्य कंपनी" (शब्दशः "मातृ-कंपनी") "पर नियंत्रण रखता है; यह कंपनी अधीन कंपनियों" ("बेटी-कंपनियों") "पर शासन करती है और ये अधीन कंपनियां दूसरी अधीन कंपनियों" ("दौहित्री-कंपनियों") "पर अपना नियंत्रण रखती हैं और यह क्रम इसी प्रकार चलता रहता है। इस प्रकार अपेक्षाकृत थोड़ी पूंजी से उत्पादन के अत्यंत विस्तृत क्षेत्रों पर प्रभुत्व रखना संभव हो जाता है। वास्तव में, यदि ५० प्रतिशत पूंजी का अंशधारी होना किसी कंपनी को अपने नियंत्रण में रखने के लिए सदा काफ़ी होता है, तो कारोबार के अगुआ को 'दौहित्री-कंपनियों' में अस्सी लाख की पूंजी पर नियंत्रण रखने के लिए केवल दस

*रार्बट लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पृ० ४७६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाख की पूंजी ही आवश्यक होगी। और यदि इस 'अंतर्गुंथन' को और बढ़ाया जाये, तो दस लाख की पूंजी से एक करोड़ साठ लाख, तीन करोड़ बीस लाख और इसी प्रकार और अधिक पूंजी पर नियंत्रण रखना संभव है।"*

वास्तव में अनुभव बताता है कि किसी कंपनी के कारोबार का निर्देशन करने के लिए उसके केवल ४० प्रतिशत शेयरों पर अपना स्वामित्व रखना काफ़ी होता है**, क्योंकि कुछ छोटे-छोटे बिखरे हुए शेयर होल्डरों के लिए शेयर होल्डरों की आम बैठकों, आदि में भाग लेना व्यवहारतः असंभव होता है। शेयरों के स्वामित्व का "जनवादीकरण", जिससे बुर्जुआ कुतर्की और अवसरवादी "तथाकथित सामाजिक-जनवादी" "पूंजी के जनवादीकरण", छोटे पैमाने के उत्पादन की भूमिका तथा महत्व के बलवर्द्धन, आदि की आशा करते हैं (या कहते हैं कि आशा करते हैं), वास्तव में वित्तीय अल्पतंत्र की शक्ति को बढ़ाने के अनेक उपायों में से एक है[100]। प्रसंगवश, इसीलिए अधिक उन्नत, अर्थात अधिक पुराने और अधिक "अनुभवी" पूंजीवादी देशों में क़ानून छोटी रक़म के शेयर जारी करने की इजाज़त देता है। जर्मनी में क़ानून एक हज़ार मार्क से कम रक़म के शेयर जारी करने की इजाज़त नहीं देता और जर्मन वित्तीय थैलीशाह ईर्ष्या के साथ इंगलैंड को देखते हैं, जहां एक पौंड (२० मार्क, लगभग १० रूबल) के शेयर जारी करने की क़ानूनन इजाज़त है। सीमेन्स ने, जो जर्मनी के एक सबसे बड़े उद्योगपति तथा "वित्तीय सम्राट" हैं, ७ जून, १६०० को राइख़स्टाग में कहा था कि "एक पौंड का शेयर ब्रिटिश साम्राज्यवाद का आधार है"***।

---

*हान्स गिदेओन हेमैन, 'जर्मनी में लोहे के बड़े उद्योग में सम्मिलित उद्यम', स्टुटगार्ट, १६०४, पृ० २६८–२६६।

**लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पहला संस्करण, पृ० २५८।

***'सामाजिक अर्थशास्त्र की बुनियादें', खंड २, पृ० ११० से शुल्जे-गैवर्निट्ज़ का उद्धरण।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साम्राज्यवाद के बारे में इस व्यापारी की समझ उस कुख्यात लेखक की समझ की अपेक्षा ज्यादा गहरी और ज्यादा "मार्क्सवादी" है, जो रूसी मार्क्सवाद के एक संस्थापक समझे जाते हैं[191] और यह विश्वास करते हैं कि साम्राज्यवाद राष्ट्र विशेष की एक बुरी आदत है...

पर "होल्डिंग की पद्धति" इजारेदारों की शक्ति को बेहद बढ़ाने का ही काम नहीं करती, वह उन्हें इस बात के भी योग्य बनाती है कि वे जनता को धोखा देने के लिए बेखटके तरह-तरह की गंदी और चोट्टेपने की तिकड़में कर सकें, क्योंकि "मातृ-कंपनी" के संचालकों पर औपचारिक रूप से, क़ानूनी तौर से "बेटी-कंपनी" की कोई ज़िम्मेदारी नहीं होती, जिसे "स्वतंत्र" समझा जाता है और जिसके माध्यम से कोई भी धोखाधड़ी की जा सकती है। यहां हम मई, १९१४ की *Die Bank* पत्रिका से लिया गया एक उदाहरण दे रहे हैं:

"कास्सेल की 'स्प्रिंग स्टील कंपनी' कुछ वर्ष पहले जर्मनी का एक अत्यंत लाभप्रद उद्यम समझी जाती थी। बुरी संचालन व्यवस्था के कारण उसके लाभांश १५ प्रतिशत से गिरते-गिरते कुछ भी नहीं रह गये। जैसा कि मालूम हुआ, इस कंपनी के बोर्ड ने शेयर होल्डरों से परामर्श किये बिना ही अपनी एक 'बेटी-कंपनी' 'हासिया' को, जिसके पास केवल चंद लाख मार्क की प्राधिकृत पूंजी थी, साठ लाख मार्क का ऋण दे दिया था। इस ऋण का उल्लेख, जो 'मातृ-कंपनी' की शेयरपूंजी के लगभग तिगुने के बराबर था, उसके पक्के चिट्ठे में कहीं नहीं किया गया था। इस बात का उल्लेख न करना बिलकुल क़ानूनी था और उसे पूरे दो वर्ष तक छिपाये रखा जा सकता था, क्योंकि इससे कंपनी-क़ानून का कोई उल्लंघन नहीं होता था। निरीक्षण मंडल के अध्यक्ष, जिन्होंने उत्तरदायी प्रधान की हैसियत से झूठे पक्के चिट्ठे पर हस्ताक्षर किये थे, उस समय कास्सेल के व्यापार मंडल के अध्यक्ष थे और अभी तक हैं। शेयर होल्डरों को 'हासिया' को ऋण दिये जाने की बात का पता बहुत बाद में जाकर उस समय लगा, जब यह सिद्ध हो चुका था कि यह एक भूल थी..." (लेखक को यह शब्द उद्धरण-चिह्नों के बीच लिखना चाहिए था)... "और जब 'स्प्रिंग स्टील'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के शेयरों का भाव लगभग १०० प्रतिशत गिर चुका था, क्योंकि जो लोग इस बात को जानते थे, वे अपने शेयर निकाल रहे थे...

"...**पक्के चिट्ठे में हाथ की सफ़ाई दिखाने के इस लाक्षणिक उदाहरण से**, जो ज्वाइंट स्टाक कंपनियों में एक **आम बात** है, यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके संचालक मंडल निजी व्यापारियों की अपेक्षा ज़्यादा बेधड़क होकर जोखिम के सौदों में हाथ डालने को क्यों तैयार रहते हैं। पक्का चिट्ठा तैयार करने की आधुनिक तकनीकों के कारण न केवल साधारण शेयर होल्डरों से संदिग्ध सौदों को छिपाना ही संभव हो जाता है, बल्कि इन सौदों से सबसे गहरा संबंध रखनेवाले लोग समय रहते अपने शेयर बेंचकर असफल सट्टेबाज़ी के दुष्परिणामों से साफ़ बच भी जाते हैं, जबकि निजी व्यापारी जो कुछ भी करता है, उसमें अपने आपको जोखिम में डालता है...

"बहुतेरी ज्वाइंट स्टाक कंपनियों के पक्के चिट्ठे हमें मध्य युग की उन उपरिलिखित पांडुलिपियों की याद दिलाते हैं, जिनमें ऊपर दिखाई देनेवाले लेख को मिटाने पर ही उसके नीचे एक दूसरा लेख दिखाई देता था, जिससे उस अभिलेख के वास्तविक अर्थ का पता चलता था" (ये पांडुलिपियां चर्मपत्र पर लिखे गये ऐसे अभिलेख होते थे, जिनमें मूल लेख को मिटाकर उसके ऊपर दूसरा लेख लिख दिया जाता था)।

"पक्के चिट्ठों को ऐसा बना देने का कि कोई उनका मतलब ही न निकाल सके, सबसे सीधा-सादा और इसलिए सबसे आम तरीक़ा यह है कि 'बेटी-कंपनियां' क़ायम करके—या ऐसी कंपनियों को सम्मिलित करके—एक ही उद्यम को कई हिस्सों में बांट दिया जाये। विविध—क़ानूनी तथा ग़ैर क़ानूनी—उद्देश्यों के लिए इस पद्धति की उपयोगिता इतनी स्पष्ट है कि वर्तमान समय में बड़ी कंपनियों में शायद ही कोई ऐसी होगी, जो इस पद्धति को इस्तेमाल न करती हो।"*

---

*L. Eschwege, *Tochtergesellschaften*, *Die Bank*, 1914, 1, S. 545 (लुडविग एश्वेगे, 'बेटी-कंपनियां', 'बैंक', १९१४, अंक १, पृ० ५४५—सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस तरीक़े को अधिक से अधिक बड़े पैमाने पर काम में लानेवाली एक विशाल इजारेदार कंपनी के उदाहरणस्वरूप लेखक प्रख्यात 'जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी'(A. E. G.) का उल्लेख करते हैं (जिसकी चर्चा हम आगे चलकर फिर करेंगे)। १९१२ में यह हिसाब लगाया गया था कि दूसरी १७५–२०० कंपनियों में इस कंपनी के शेयर थे, उसका उन पर स्वभावतः प्रभुत्व था और इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग १,५०,००,००,००० मार्क की पूंजी पर उसका नियंत्रण था*।

नियंत्रण, पक्के चिट्ठों के प्रकाशन, उनके लिए एक निश्चित ढांचा तैयार करने, वही-खातों की खुली जांच, आदि के सारे नियम, जिनके बारे में नेकनीयत प्रोफ़ेसर तथा अधिकारी–अर्थात वे लोग, जो पूंजीवाद की रक्षा करने तथा उसे आकर्षक रूप देने की सदाशयता से ओतप्रोत हैं–सर्वसाधारण के सम्मुख भाषण देते हैं, व्यर्थ सिद्ध होते हैं, क्योंकि निजी स्वामित्व पवित्र है और किसी को भी शेयर ख़रीदने, बेचने, बदलने या गिरवी रखने, आदि से रोका नहीं जा सकता।

बड़े-बड़े रूसी बैंकों में यह "होल्डिंग की पद्धति" किस हद तक विकसित हो चुकी है, इसका अनुमान ए० अगाड द्वारा दिये गये आंकड़ों से लगाया जा सकता है, जो पंद्रह वर्ष तक रूसी-चीनी बैंक के एक पदाधिकारी थे और जिन्होंने मई, १९१४ में एक पुस्तक प्रकाशित की थी, जिसका नाम 'बड़े बैंक और विश्व मंडी'** पूर्णतः उपयुक्त नहीं था। लेखक ने

---

*Kurt Heinig, *Der Weg des Elektrotrusts, Neue Zeit*, 1912, 30 Jahrg., 2, S. 484 (कुर्ट हेईनिग, 'बिजली ट्रस्ट का मार्ग', 'नया ज़माना', १९१२, वर्ष ३०, अंक २, पृ० ४८४–सं०)।

** E. Agahd, *Großbanken und Weltmarkt. Die wirtschaftliche und politische Bedeutung der Großbanken im Weltmarkt unter Berücksichtigung ihres Einflusses auf Rußlands Volkswirtschaft und die deutsch-russischen Beziehungen*, Berlin, 1914 (ए० अगाड, 'बड़े बैंक और विश्व मंडी। विश्व मंडी में बड़े बैंकों का आर्थिक तथा राजनीतिक महत्व, रूस की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा जर्मन-रूसी संबंधों पर उनके प्रभाव के प्रसंग में', बर्लिन, १९१४–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े-बड़े रूसी बैंकों को दो मुख्य वर्गों में विभाजित किया है: (क) वे बैंक, जो "होल्डिंग की पद्धति" के अंतर्गत आते हैं और (ख) "स्वाधीन" बैंक – परंतु यहां बिना किसी आधार के "स्वाधीनता" का अर्थ **विदेशी** बैंकों से स्वाधीन होना लगाया गया है। लेखक ने पहले वर्ग के बैंकों को तीन उप-वर्गों में विभाजित किया है: (१) जर्मन होल्डिंग; (२) ब्रिटिश होल्डिंग और (३) फ़्रांसीसी होल्डिंग; यह विभाजन उन्होंने उल्लिखित देश विशेष के बड़े विदेशी बैंकों के "होल्डिंग" तथा उनके प्रभुत्व को दृष्टिगत रखते हुए किया था। लेखक ने बैंकों की पूंजी को "उत्पादक ढंग से" (औद्योगिक तथा वाणिज्यिक कारोबारों में) लगी हुई पूंजी तथा "सट्टेबाज़ी के ढंग से" (स्टाक एक्सचेंज तथा वित्तीय कारोबार में) लगी हुई पूंजी में विभाजित किया है। उन्होंने अपने टुटपुंजिया सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण यह मान लिया है कि पूंजीवाद के अंतर्गत पहले ढंग से लगायी गयी पूंजी को दूसरे ढंग से लगायी गयी पूंजी से अलग करना और दूसरे ढंग का उन्मूलन कर देना संभव है।

उन्होंने जो आंकड़े दिये हैं, वे इस प्रकार हैं (देखें तालिका पृ० २६३ पर)। इन आंकड़ों के अनुसार बड़े बैंकों के पास "चालू" पूंजी के रूप में लगभग चार अरब रूबल की जो रक़म थी, उसका **तीन-चौथाई से अधिक भाग**, अर्थात तीन अरब से अधिक, ऐसे बैंकों के हाथों में था, जो वास्तव में विदेशी बैंकों की केवल "बेटी-कंपनियां" थे और वह भी मुख्यतः पेरिस के बैंकों (प्रख्यात त्रिगुट: Union Parisienne, Paris et Pays-Bas तथा Société Générale) की और बर्लिन के बैंकों (विशेषत: Deutsche Bank और Disconto-Gesellschaft) की। रूस के सबसे बड़े बैंकों में से दो, याने 'रूसी' ('वैदेशिक व्यापार का रूसी बैंक') और 'इंटरनेशनल' ('सेंट पीटर्सबर्ग इंटरनेशनल कमर्शियल बैंक') ने "तीन-चौथाई जर्मन पूंजी के सहारे" १६०६ और १६१२ के बीच अपनी पूंजी ४,४०,००,००० रूबल से बढ़ाकर ६,८०,००,००० रूबल और अपनी संरक्षित निधि १,५०,००,००० रूबल से बढ़ाकर ३,६०,००,००० रूबल कर ली। इनमें से पहला बैंक बर्लिन के Deutsche Bank "कंसर्न" का अंग है और दूसरा बर्लिन के Disconto-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैंकों की परिसंपत्ति
(अक्तूबर – नवंबर, १९१३ की रिपोर्टों के अनुसार)
(लाख रूबलों में)

रूसी बैंकों के वर्ग	लगी हुई पूंजी		
	उत्पादक ढंग से	सट्टेबाज़ी के ढंग से	कुल
(क) (१) चार बैंक: साइबेरियाई कमर्शियल बैंक, रूसी बैंक, इंटरनेशनल बैंक और डिस्काउंट बैंक	४,१३७	८,५९१	१२,७२८
(क) (२) दो बैंक: कमर्शियल एंड इंडस्ट्रियल और रूसी-ब्रिटिश	२,३९३	१,६९१	४,०८४
(क) (३) पांच बैंक: रूसी-एशियाई, सेंट पीटर्सबर्ग प्राइवेट, अज़ोव-दोन, यूनियन मास्को, रूसी-फ़्रांसीसी कमर्शियल. . .	७,११८	६,६१२	१३,७३०
(११ बैंक) कुल . . . (क)=	१३,६४८	१६,८९४	३०,५४२
(ख) आठ बैंक: मास्को मर्चेंट, वोल्गा-कामा, युंकर एंड कंपनी, सेंट पीटर्सबर्ग कमर्शियल (भूतपूर्व वैवेलबर्ग), मास्को बैंक (भूतपूर्व रियाबुशीन्स्की), मास्को डिस्काउंट, मास्को कमर्शियल, मास्को प्राइवेट	५,०४२	३,९११	८,९५३
(१९ बैंक) कुल	१८,६९०	२०,८०५	३९,४९५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Gesellschaft) का। हमारे सुयोग्य अगाड महोदय इस बात पर बहुत नाराज़ हैं कि अधिकतर शेयर बर्लिन के बैंकों के हाथ में हैं और इस कारण रूसी शेयर-मालिक लाचार हैं। स्वाभाविक बात है कि जो देश पूंजी का निर्यात करता है, वह मलाई निकाल लेता है: उदाहरण के लिए, जब बर्लिन का Deutsche Bank साइबेरियाई कमर्शियल बैंक के शेयर बर्लिन के स्टाक एक्सचेंज में लाया, तो पूरे साल भर तक उन्हें अपनी जेब में रखा और उसके बाद उन्हें १०० के स्थान पर १९३ के भाव बेचा, अर्थात उनके अंकित मूल्य के लगभग दुगुने भाव पर, और इस प्रकार लगभग ६०,००,००० रूबल का मुनाफ़ा कमाया, जिसे हिल्फ़र्डिंग ने "प्रवर्तक का मुनाफ़ा" कहा है।

लेखक ने सेंट पीटर्सबर्ग के मुख्य बैंकों की कुल "क्षमता" ८,२३,५०,००,००० रूबल, लगभग सवा आठ अरब रूबल आंकी है और उनमें विदेशी बैंकों के "होल्डिंगों" का, बल्कि कहना चाहिए, उन पर उनके प्रभुत्व का उन्होंने इस प्रकार अनुमान लगाया है: फ़्रांसीसी बैंक – ५५ प्रतिशत; आंग्ल – १० प्रतिशत; जर्मन – ३५ प्रतिशत। लेखक ने हिसाब लगाया है कि ८,२३,५०,००,००० रूबल की इस कुल सक्रिय पूंजी में से ३,६८,७०,००,००० रूबल, अर्थात ४० प्रतिशत से अधिक, 'प्रोदूगोल' तथा 'प्रोदामेत' नामक दो सिंडिकेटों के और तेल, धातु तथा सीमेंट के उद्योगों के सिंडिकेटों के हिस्से में हैं। इस प्रकार पूंजीवादी इजारेदारियों के निर्माण के कारण रूस में भी बैंक पूंजी तथा औद्योगिक पूंजी के संलयन की दिशा में बहुत बड़ी प्रगति हुई है।

थोड़े-से लोगों के हाथों में संकेंद्रित और वास्तव में इजारेदारी का उपभोग करनेवाली वित्त पूंजी कंपनियां खोलकर, शेयर जारी करके और राजकीय ऋणों, आदि द्वारा बेशुमार मुनाफ़ा कमाती है, जो लगातार बढ़ता ही जाता है। वह वित्तीय अल्पतंत्र के प्रभुत्व को और मज़बूत बनाती है और इजारेदारों के फ़ायदे के लिए पूरे समाज से ख़िराज वसूल करती है। हम यहां पर अमरीकी ट्रस्टों के "कारोबारी" तरीक़ों के असंख्य उदाहरणों में से एक दे रहे हैं, जिसे हिल्फ़र्डिंग ने उद्धृत किया है: १८८७ में हैवमेयर ने पंद्रह छोटी-छोटी कंपनियों को मिलाकर, जिनकी कुल पूंजी ६५,००,०००

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डालर थी, शकर ट्रस्ट की स्थापना की। अमरीकियों की शब्दावली में इस पूंजी में उचित मात्रा में "पानी मिलाकर" ट्रस्ट की पूंजी को ५,००,००,००० डालर घोषित किया गया। इस प्रकार "अति पूंजीकरण" ने इज़ारेदारी मुनाफ़ों को उसी प्रकार ध्यान में रख लिया था, जिस प्रकार यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन खनिज लोहे की यथासंभव अधिकतम खदानों की ख़रीद में भावी इजारेदारी मुनाफ़ों को ध्यान में रखता है। शकर ट्रस्ट ने सचमुच इजारेदारी क़ीमतें निश्चित कीं, जिसके फलस्वरूप उसे इतना मुनाफ़ा हुआ कि वह "पानी मिलाकर" **सात गुनी** की गयी पूंजी पर १० प्रतिशत, अर्थात **स्थापना के समय लगायी गयी वास्तविक पूंजी पर लगभग** ७० प्रतिशत लाभांश दे सका! १९०९ में शकर ट्रस्ट की पूंजी ९,००,००,००० डालर थी। बाईस वर्ष में उसने अपनी पूंजी दस गुनी से अधिक वढ़ा ली थी।

फ़्रांस में "वित्तीय अल्पतंत्र" के प्रभुत्व ने जो रूप धारण किया, वह इससे थोड़ा ही भिन्न था (लीज़िस द्वारा लिखित 'फ़्रांस में वित्तीय अल्पतंत्र के ख़िलाफ़', इस विख्यात पुस्तक का पांचवां संस्करण १९०८ में प्रकाशित हुआ था)। सिक्यूरिटियां जारी करने के मामले में वहां के चार सबसे शक्तिशाली बैंकों की आपेक्षिक नहीं, बल्कि "पूर्ण इजारेदारी" है। वास्तव में यह "बड़े बैंकों का ट्रस्ट" है। और इजारेदारी के कारण वांड जारी करने से इजारेदाराना मुनाफ़े सुनिश्चित हो जाते हैं। आम तौर से ऋण लेनेवाले देश को ऋण की रक़म का ९० प्रतिशत से अधिक नहीं मिलता, शेष १० प्रतिशत बैंकों तथा अन्य दलालों के पास चला जाता है। ४०,००,००,००० फ़्रांक के रूसी-चीनी ऋण से बैंकों को जो मुनाफ़ा हुआ, वह ८ प्रतिशत था; ८०,००,००,००० फ़्रांक के रूसी (१९०४) ऋण से १० प्रतिशत मुनाफ़ा हुआ और ६,२५,००,००० फ़्रांक के मोरक्कोवाले (१९०४) ऋण से १८.७५ प्रतिशत मुनाफ़ा हुआ। पूंजीवाद, जिसने अपना विकास बहुत थोड़ी-सी सूदख़ोर पूंजी से आरंभ किया था, अपने विकास का अंत विपुल सूदख़ोर पूंजी के साथ कर रहा है। लीज़िस ने कहा है: "फ़्रांसीसी यूरोप के सूदख़ोर हैं"। पूंजीवाद के इस रूपांतरण के कारण आर्थिक जीवन की सभी परिस्थितियों में गंभीर परिवर्तन हो रहे हैं। आवादी में कोई कमी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बढ़ती न होने और उद्योग, वाणिज्य तथा जहाज़रानी में गतिरोध की दशा में "देश" सूदख़ोरी से धनी बन सकता है। "पचास आदमी, जिनके पास ८०,००,००० फ़्रांक की पूंजी हो, चार बैंकों में जमा २,००,००,००,००० फ़्रांक पर नियंत्रण रख सकते हैं।" "होल्डिंग" की पद्धति का भी, जिससे हम परिचित हो चुके हैं, यही परिणाम होता है: उदाहरण के लिए, Société Générale, जो सबसे बड़े बैंकों में से एक है, अपनी "बेटी-कंपनी"—'मिस्री शकर कारख़ाने'—के लिए ६४,००० बांड जारी करती है। ये बांड १५० प्रतिशत पर जारी किये जाते हैं, अर्थात हर फ़्रांक पीछे बैंक को ५० सेंतीम का लाभ होता है। बाद में मालूम हुआ कि नयी कंपनी के लाभांश झूठे हैं और "पब्लिक" को ६ से १० करोड़ फ़्रांक तक का नुक़सान हुआ। "Société Générale के एक संचालक 'शकर कारख़ानों' के संचालक मंडल के सदस्य थे।" लेखक का यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्य होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि "फ़्रांसीसी जनतंत्र एक वित्तीय राजतंत्र है"; "वह वित्तीय अल्पतंत्र के पूर्ण प्रभुत्व का द्योतक है; अख़बारों और सरकार पर उसका ही प्रभुत्व है"*।

सिक्यूरिटियां जारी करने से, जो वित्त पूंजी के मुख्य कामों में से एक है, जिस असाधारण रूप से ऊंची दर पर मुनाफ़ा मिलता है, उसका वित्तीय अल्पतंत्र के विकास तथा उसे सुदृढ़ बनाने में बहुत बड़ा हाथ होता है। जर्मन पत्रिका *Die Bank* लिखती है: "देश में इस प्रकार का एक भी कारोबार नहीं है, जिसमें उसके लगभग बराबर भी मुनाफ़ा मिलता हो, जितना कि विदेशी ऋणों के जारी करने की दलाली से मिलता है"**।

"बैंक के किसी दूसरे कारोबार से उतना मुनाफ़ा नहीं मिलता, जितना कि सिक्यूरिटियां जारी करने से मिलता है।" 'जर्मन अर्थशास्त्री' के

---

* Lysis, *Contre l'oligarchie financière en France*, 5 éd., Paris, 1908, pp. 11, 12, 26, 39, 40, 48 (लीज़िस, 'फ़्रांस में वित्तीय अल्पतंत्र के ख़िलाफ़', पांचवां संस्करण, पेरिस, १९०८, पृ० ११, १२, २६, ३९, ४०, ४८—सं०)।

** *Die Bank*, १९१३, अंक ७, पृ० ६३०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुसार औद्योगिक उद्यमों के शेयर जारी करने से औसत वार्षिक लाभ इस प्रकार हुआ :

	प्रतिशत		प्रतिशत
१८९५	३८.६	१८९८	६७.७
१८९६	३६.१	१८९९	६६.९
१८९७	६६.७	१९००	५५.२

"१८९१ से १९०० तक के दस वर्षों में जर्मन औद्योगिक शेयर जारी करके एक अरब मार्क से अधिक का मुनाफ़ा 'कमाया' गया।"*

औद्योगिक तेज़ी के ज़माने में वित्त पूंजी का मुनाफ़ा बेशुमार होता है, परंतु औद्योगिक मंदी के ज़माने में छोटे-छोटे तथा कमज़ोर उद्यम ठप हो जाते हैं, बड़े बैंक उनकी मिट्टी के मोल ख़रीद में या उनके "पुनर्निर्माण" तथा "पुनःसंगठन" के लिए लाभप्रद योजनाओं में "भाग लेते हैं"। उन उद्यमों का "पुनर्निर्माण" करने में, जो घाटे पर चलते रहे हैं, "शेयर पूंजी को गिरा दिया जाता है, अर्थात मुनाफ़ा कम पूंजी पर बांटा जाता है और आगे चलकर भी उसका हिसाब इस प्रकार घटायी गयी पूंजी के आधार पर ही लगाया जाता है। या यदि आमदनी कुछ भी नहीं रह जाती, तो नयी पूंजी खींची जाती है, जो भविष्य में पुरानी और कम लाभप्रद पूंजी के साथ मिलकर काफ़ी मुनाफ़ा दिला सकती है।" आगे चलकर हिल्फ़-डिंग लिखते हैं: "बैंकों के लिए इन तमाम पुनःसंगठनों तथा पुनर्निर्माणों का दोहरा महत्व होता है: पहला तो यह कि ये सौदे लाभप्रद होते हैं और

---

*स्टील्लिख़, 'मुद्रा तथा बैंक व्यवसाय', पृ० १४३; W. Sombart, *Die deutsche Volkswirtschaft im 19. Jahrhundert*, 2. Aufl., 1909, S. 526, Anlage 8 (वेर्नेर सोम्बार्ट, 'उन्नीसवीं शताब्दी में जर्मन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था', दूसरा संस्करण, १९०९, पृ० ५२६, परिशिष्ट ८ –सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरा यह कि उनसे संकट में फंसी हुई कंपनियों पर अपना नियंत्रण स्थापित करने का मौक़ा मिल जाता है।"*

एक उदाहरण देखिये। डार्टमंड की 'यूनियन' माइनिंग कंपनी की स्थापना १८७२ में हुई थी। लगभग ४,००,००,००० मार्क की शेयर पूंजी जारी की गयी थी और पहले वर्ष १२ प्रतिशत का लाभांश देने के बाद स्टाक एक्सचेंज में शेयरों की क़ीमत बढ़कर १७० प्रतिशत हो गयी। वित्त पूंजी ने मलाई निकाल ली और उसने कोई २,८०,००,००० मार्क की तुच्छ रक़म कमायी। इस कंपनी को खड़ा करने में मुख्य हाथ उस बहुत बड़े जर्मन बैंक Disconto-Gesellschaft का था, जिसने इतनी सफलतापूर्वक ३०,००,००,००० मार्क की पूंजी हस्तगत कर ली थी। बाद में 'यूनियन' माइनिंग कंपनी के लाभांश घटते-घटते कुछ नहीं रह गये। शेयर-मालिकों को पूंजी "गिरा देने" पर राज़ी होना पड़ा, अर्थात सब कुछ खो देने से बचने के लिए उन्हें उसका कुछ भाग खो देने पर राज़ी होना पड़ा। "पुनर्निर्माणों" के एक पूरे क्रम द्वारा तीस वर्षों में 'यूनियन' कंपनी के खातों से ७,३०,००,००० मार्क की रक़म काट दी गयी। "इस समय कंपनी के मूल शेयर-मालिकों के पास अपने शेयरों के अंकित मूल्य का केवल ५ प्रतिशत भाग है"**, परंतु बैंकों ने हर "पुनर्निर्माण" से कुछ न कुछ "मुनाफ़ा कमाया"।

तेज़ी से बढ़ते हुए बड़े-बड़े शहरों के आस-पास की ज़मीन का सट्टा वित्त पूंजी के लिए विशेष रूप से लाभप्रद होता है। यहां पर बैंकों की इजारेदारी भूमि-लगान की इजारेदारी और परिवहन के साधनों की इजारेदारी में घुल-मिल जाती है, क्योंकि ज़मीन की क़ीमत में वृद्धि और उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर मुनाफ़े पर बेचने की संभावना, आदि मुख्यतः इस पर निर्भर होती हैं कि शहर के केंद्रीय भाग के साथ परिवहन

---

*हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', पृ० १७२।

**स्टीव्लिख़, 'मुद्रा तथा बैंक व्यवसाय', पृ० १३८ और लिएफ़मैन, 'होल्डिंग तथा फ़ाइनेंस कंपनियां। आधुनिक पूंजीवाद तथा सिक्यूरिटियों की भूमिका का एक अनुसंधान', पृ० ५१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के साधन अच्छे हों; और परिवहन के इन साधनों पर बड़ी-बड़ी कंपनियों का क़ब्ज़ा होता है, जिनका संबंध होल्डिंग की पद्धति और संचालक मंडलों में पदों के वितरण के ज़रिए उन बैंकों के साथ होता है, जिन्हें इस कारोबार में दिलचस्पी होती है। इसका नतीजा वह होता है, जिसे जर्मन लेखक एश्वेगे ने, जिनके लेख *Die Bank* में प्रकाशित होते रहते हैं और जिन्होंने भूसंपत्ति के कारोबार तथा गिरवी, आदि का विशेष रूप से अध्ययन किया है, "दलदल" कहा है: उपनगरों में स्थित ज़मीनों में ज़ोरों का सट्टा चलता है; इमारती कारोबार बैठ जाते हैं, जैसे बर्लिन की 'बोसवाऊ तथा क्नाउएर' नामक कंपनी का कारोबार बैठ गया था, जिसने "मज़बूत और ठोस" 'जर्मन बैंक' (Deutsche Bank) की सहायता से १०,००,००,००० मार्क की मोटी रक़म बटोरी थी – ज़ाहिर है, 'जर्मन बैंक' "होल्डिंग" की पद्धति के अनुसार, अर्थात गुप्त रूप से, पर्दे के पीछे से काम कर रहा था और "केवल" १,२०,००,००० मार्क का घाटा उठाकर वह उस कारोबार में से निकल गया; और फिर छोटे-छोटे मिल्कियों तथा मज़दूरों की तबाही आती है, जिन्हें इन फ़र्ज़ी इमारती कंपनियों से कुछ भी नहीं मिलता; इमारती ज़मीन के टेंडर और इमारतें बनाने के लाइसेंस जारी करने पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए बर्लिन की "ईमानदार" पुलिस तथा प्रशासन के साथ जालसाज़ी के सौदे होते हैं, आदि, आदि*।

"अमरीकी नैतिकता", जिसकी यूरोप के प्रोफ़ेसर तथा नेकनीयत बुर्जुआ लोग इतने पाखंडपूर्ण ढंग से निंदा करते हैं, वित्त पूंजी के युग में हर देश के हर बड़े शहर की नैतिकता बन गयी है।

१९१४ के आरंभ में बर्लिन में एक "परिवहन ट्रस्ट" बनाने की, अर्थात बर्लिन की तीन परिवहन कंपनियों के बीच – नगर की बिजली रेलवे, ट्राम और बस कंपनियों के बीच – "हितों का ऐक्य" स्थापित करने की चर्चा

---

* *Die Bank*, १९१३, पृ० ९५२; L. Eschwege, *Der Sumpf*, *Die Bank*, 1912, 1, S. 223 (लुडविग एश्वेगे, 'दलदल', 'बैंक', १९१२, अंक १, पृ० २२३ और आगे के पृष्ठ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी। *Die Bank* ने लिखा: "हमें मालूम था कि इस प्रकार की योजना की बात सोची जा रही है, क्योंकि इस बात का पता चल गया कि वस कंपनी के अधिकांश शेयर बाक़ी दोनों परिवहन कंपनियों ने ख़रीद लिये हैं... जो लोग इस उद्देश्य को लेकर चल रहे हैं, उनकी इस बात पर हम पूरी तरह विश्वास करने को तैयार हैं कि परिवहन सेवाओं को एक में मिलाकर वे बचत करेंगे, आगे चलकर जिसके कुछ भाग से पब्लिक को लाभ पहुंचेगा। परंतु इस हक़ीक़त के कारण सवाल में कुछ पेचीदगी पैदा हो गयी है कि जो परिवहन ट्रस्ट बनाया जा रहा है, उसके पीछे बैंकों का हाथ है और यदि वे चाहें, तो परिवहन के इन साधनों को, जिन पर उन्होंने अपनी इजारेदारी क़ायम कर ली है, अपने भूसंपत्ति-व्यापार के हितों के अधीन कर सकते हैं। यदि केवल इस बात को याद किया जाये कि जिस बड़े बैंक ने नगर की बिजली रेलवे कंपनी के निर्माण को प्रोत्साहित किया था, उसके हित कंपनी के निर्माण के समय उसमें पहले से ही निहित थे, तो विश्वास हो जायेगा कि हमारा यह अनुमान कितना सही है। कहने का मतलब यह है कि इस परिवहन उद्यम के हित ज़मीन के टुकड़ों के व्यापार के हितों के साथ गुंथे हुए थे। बात यह है कि इस रेलवे की पूर्वी लाइन जिस ज़मीन से होकर गुज़रनेवाली थी, उसे इस बैंक ने लाइन का बिछाया जाना तय हो जाने के बाद बेच दिया और इस तरह अपने लिए और इस सौदे में शरीक कई दूसरे हिस्सेदारों के लिए बेशुमार मुनाफ़ा कमाया..."*

राजनीतिक व्यवस्था का रूप और "ब्योरे" की दूसरी सारी बातें कुछ भी हों, पर जब एक बार कोई इजारेदारी बन जाती है और अरबों की रक़म पर उसका क़ब्ज़ा हो जाता है, तो वह अनिवार्य रूप से सार्वजनिक जीवन के हर क्षेत्र में प्रविष्ट हो जाती है। जर्मनी के आर्थिक साहित्य में हम अकसर प्रशा की नौकरशाही की ईमानदारी की भूरि-भूरि प्रशंसा और फ़्रांसीसी पनामा घोटालेबाज़ी[192] तथा अमरीका के राजनीतिक भ्रष्टाचार

---

* *Verkehrstrust, Die Bank*, 1914, 1, S. 89 ('परिवहन ट्रस्ट', 'बैंक', १९१४, अंक १, पृ० ८९–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की ओर संकेत पाते हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि जर्मनी के बैंक व्यवसाय से संबंधित बुर्जुआ साहित्य को भी निरंतर शुद्ध बैंक व्यवसाय के क्षेत्र से बहुत बाहर की बातों का, जैसे बैंकों में नौकरी करनेवाले सरकारी अफ़सरों की संख्या निरंतर बढ़ते जाने के प्रसंग में "बैंकों के आकर्षण" का उल्लेख इन शब्दों में करना पड़ता है: "आप उस सरकारी अफ़सर की ईमानदारी के बारे में क्या कहेंगे, जिसके मन में हमेशा यही कामना रहती है कि उसे बेहरेनस्ट्रासे में" (बर्लिन की वह सड़क, जिस पर 'जर्मन बैंक' का दफ़्तर है) "एक अच्छी-सी नौकरी मिल जाये?"* १९०९ में *Die Bank* के प्रकाशक अल्फ़्रेड लैंसबर्ग ने 'बैज़ंतियावाद का आर्थिक महत्व' शीर्षक एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने लगे हाथों विल्हेल्म द्वितीय के फ़िलिस्तीन के दौरे का और "इस दौरे के तात्कालिक परिणाम, अर्थात बग़दाद रेलवे के निर्माण का, 'जर्मन उद्यमशीलता की उस महान' घातक 'उपज' का उल्लेख किया था, जो हमारी तमाम राजनीतिक ग़लतियों की अपेक्षा 'घेरेबंदी' के लिए ज़्यादा ज़िम्मेवार है"** (घेरेबंदी से मतलब जर्मनी को सब से अलग कर देने और उसके चारों ओर जर्मन विरोधी साम्राज्यवादी सहबंध का घेरा डाल देने की एडवर्ड सप्तम की नीति से है)। १९११ में इसी पत्रिका के लेखक एश्वेगे ने, जिनका उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं, एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था 'थैलीशाही तथा नौकरशाही', जिसमें उन्होंने, मिसाल के लिए, फ़ोल्कर नामक एक जर्मन अफ़सर के क़िस्से का भंडाफोड़ किया था। वह कार्टेल आयोग का एक उत्साही सदस्य था, जिसके बारे में कुछ समय बाद पता चला कि उसने सबसे बड़े कार्टेल, याने स्टील सिंडिकेट, में बहुत ऊंचे वेतन पर एक नौकरी हासिल कर ली। ऐसे ही दूसरे उदाहरणों के कारण, जो कदापि संयोग की बात नहीं थे, इस बुर्जुआ लेखक को यह स्वीकार करने पर मजबूर होना पड़ा कि "आर्थिक जीवन के कई क्षेत्रों में जर्मन संविधान में जिस आर्थिक स्वतंत्रता की गारंटी दी गयी है, वह महज़ एक

---

* *Der Zug zur Bank*, *Die Bank*, 1909, 1, S. 79 ('बैंक का आकर्षण', 'बैंक', १९०९, अंक १, पृ० ७९ – सं०)।

** वही, १९०९, अंक १, पृ० ३०१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निरर्थक फ़िक़रा बनकर रह गयी है" और थैलीशाही के वर्तमान प्रभुत्व के तहत "व्यापकतम राजनीतिक स्वतंत्रता भी हमें स्वतंत्रताविहीन लोगों के राष्ट्र में परिवर्तित हो जाने से नहीं बचा सकती"*।

जहां तक रूस का सवाल है, हम अपने आपको केवल एक उदाहरण तक ही सीमित रखेंगे: कुछ वर्ष पहले सभी अख़बारों में यह सूचना छपी कि सरकारी ख़ज़ाने के उधार विभाग के संचालक दवीदोव ने अपने पद से इस्तीफ़ा देकर एक बड़े बैंक में नौकरी कर ली है, जहां क़रार के अनुसार उन्हें कई वर्ष के दौरान वेतन के रूप में कुल दस लाख रूबल से अधिक रक़म मिलेगी। उधार विभाग एक ऐसी संस्था है, जिसका काम "देश की सभी उधार देनेवाली संस्थाओं के काम का समन्वय करना" है और जो सेंट पीटर्सबर्ग तथा मास्को के बैंकों को ८० करोड़ से १ अरब रूबल तक के अनुदान देती है**।

पूंजीवाद की आम तौर से यह विशेषता है कि उसमें पूंजी के स्वामित्व को उत्पादन में पूंजी लगाने से अलग कर दिया जाता है, मुद्रा-पूंजी को औद्योगिक या उत्पादनशील पूंजी से अलग कर दिया जाता है और मुद्रा-पूंजी से प्राप्त होनेवाली आय पर ही पूर्णतः जीवित रहनेवाले सूदख़ोरों को व्यवसायियों तथा उन तमाम लोगों से अलग कर दिया जाता है, जिनका पूंजी की व्यवस्था में प्रत्यक्ष हाथ होता है। साम्राज्यवाद, अर्थात वित्त पूंजी का प्रभुत्व, पूंजीवाद की वह चरम अवस्था है, जहां पहुंचकर यह अलगाव बहुत व्यापक रूप धारण कर लेता है। पूंजी के अन्य सभी रूपों पर वित्त पूंजी की प्रभुता का अर्थ सूदख़ोरों और वित्तीय अल्पतंत्र की प्रधानता होता है, उसका मतलब यह होता है कि वित्तीय दृष्टि से "शक्तिशाली" गिने-चुने राज्य अन्य सभी से अलग हो जाते हैं। यह प्रक्रिया किस पैमाने पर चल रही है, इसका अंदाज़ा emissions, अर्थात हर प्रकार की सिक्यूरिटियों के जारी किये जाने से संबंधित आंकड़ों से लगाया जा सकता है।

---

*वही, १९११, अंक २, पृ० ८२५; १९१३, अंक २, पृ० ९६२।

**ए० अगाड, 'बड़े बैंक और विश्व मंडी। विश्व मंडी में बड़े बैंकों का आर्थिक तथा राजनीतिक महत्व, रूस की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था तथा जर्मन-रूसी संबंधों पर उनके प्रभाव के प्रसंग में', पृ० २०२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान की बुलेटिन'* में अल्फ़्रेड नेमार्क ने सारी दुनिया में जारी किये गये बांडों के बारे में अत्यंत विशद, पूर्ण तथा तुलनात्मक आंकड़े प्रकाशित किये हैं, जिन्हें बाद में आंशिक रूप में आर्थिक साहित्य में बार-बार उद्धृत किया गया है। उन्होंने चार दशकों के आंकड़ों का जो योग दिया है, वह इस प्रकार है:

प्रति दशक प्रचलित बांडों की कुल रक़म
(अरब फ़्रांकों में)

१८७१–१८८०	७६.१
१८८१–१८९०	६४.५
१८९१–१९००	१००.४
१९०१–१९१०	१९७.८

उन्नीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में सारी दुनिया में जारी किये गये बांडों की कुल रक़म विशेष रूप से फ़्रांसीसी-प्रशियाई युद्ध से संबंधित ऋणों के कारण और उस युद्ध के बाद जर्मनी में नयी कंपनियां खड़ी करने की लहर के कारण बहुत बढ़ गयी थी। कुल मिलाकर देखा जाये, तो उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम तीन दशकों में यह वृद्धि अपेक्षाकृत इतनी तेज़ नहीं थी और केवल बीसवीं शताब्दी के प्रथम दस वर्षों में लगभग १०० प्रतिशत की विशाल वृद्धि देखने में आती है। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी का आरंभ केवल इजारेदारियों (कार्टेलों, सिंडिकेटों, ट्रस्टों) के विकास की दृष्टि से ही नहीं, जिसका उल्लेख हम ऊपर कर चुके, हैं बल्कि वित्त पूंजी की वृद्धि की दृष्टि से भी एक युगांतरकारी मोड़ का द्योतक है।

---

* *Bulletin de l'institut international de statistique*, t. XIX, livr. II, La Haye, 1912 ('अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान की बुलेटिन', खंड १९, भाग २, हेग, १९१२–सं०)।– छोटे राज्यों के संबंध में दूसरे कालम में जो आंकड़े दिये गये हैं, उनका हिसाब १९०२ के आंकड़ों को २० प्रतिशत बढ़ाकर लगाया गया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेमार्क ने अनुमान लगाया है कि १९१० में सारी दुनिया में प्रचलित सिक्यूरिटियों का मूल्य कुल मिलाकर लगभग ८१५ अरब फ़्रांक था। इस रक़म में से ऐसी रक़मों को, जिनके बारे में यह शंका है कि उनका हिसाब शायद दो बार लगा लिया गया हो, घटाकर वह यह रक़म ५७५–६०० अरब निर्धारित करते हैं; इसका विभाजन विभिन्न देशों के बीच इस प्रकार था (हम ६०० अरब की रक़म को लेंगे):

१९१० में प्रचलित सिक्यूरिटियों की रक़म
(अरब फ़्रांकों में)

इंगलैंड	१४२	४७९	हालैंड	१२.५
सं० रा० अमरीका	१३२		बेल्जियम	७.५
फ़्रांस	११०		स्पेन	७.५
जर्मनी	९५		स्विटज़रलैंड	६.२५
रूस	३१		डेनमार्क	३.७५
आस्ट्रिया-हंगरी	२४		स्वीडन, नार्वे, रूमानिया, आदि	२.५
इटली	१४			
जापान	१२		कुल	६००

इन आंकड़ों से फ़ौरन उन चार सबसे धनी पूंजीवादी देशों का चित्र हमारे सामने उभरकर आ जाता है, जिनमें से हर एक के पास लगभग १०० से १५० अरब फ़्रांक तक की रक़म की सिक्यूरिटियां हैं। इन चार देशों में से दो, इंगलैंड तथा फ़्रांस, सबसे पुराने पूंजीवादी देश हैं और, जैसा कि हम आगे चलकर देखेंगे, उनके पास सबसे अधिक उपनिवेश हैं। बाक़ी दो, संयुक्त राज्य अमरीका तथा जर्मनी, विकास की द्रुत गति की दृष्टि से तथा उद्योगों में पूंजीवादी इजारेदारियों के विस्तार की दृष्टि से, प्रमुख पूंजीवादी देश हैं। इन चारों देशों के पास कुल मिलाकर ४७९ अरब फ़्रांक हैं, अर्थात संसार की कुल वित्त पूंजी का लगभग ८० प्रतिशत। लगभग तमाम बाक़ी दुनिया किसी न किसी रूप में इन अंतर्राष्ट्रीय साहूकार देशों की, विश्व वित्त पूंजी के इन चार "स्तभों" की, कमोबेश क़र्ज़दार और असामी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वित्त पूंजी के अवलंबों तथा संबंधों के इस अंतर्राष्ट्रीय जाल का निर्माण करने में पूंजी के निर्यात की जो भूमिका है, उसकी जांच करना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

४. पूंजी का निर्यात

पुराने पूंजीवाद के ज़माने में, जब खुली होड़ का पूरा बोलबाला था, **माल** का निर्यात उसकी लाक्षणिकता थी। पूंजीवाद की नवीनतम अवस्था में, जबकि इजारेदारियों का बोलबाला है, **पूंजी** का निर्यात उसकी लाक्षणिकता है।

पूंजीवाद माल-उत्पादन के विकास की उच्चतम मंज़िल है, जहां पहुंचकर श्रम-शक्ति स्वयं एक माल बन जाती है। अंतर्देशीय विनिमय और विशेषतः अंतर्राष्ट्रीय विनिमय की वृद्धि पूंजीवाद की अपनी अलग लाक्षणिक विशेषता है। अलग-अलग उद्यमों का, उद्योगों की अलग-अलग शाखाओं का तथा अलग-अलग देशों का असमान तथा रुक-रुककर झटकों के साथ विकास पूंजीवादी व्यवस्था में अनिवार्य है। इंगलैंड दूसरे देशों की अपेक्षा सबसे पहले पूंजीवादी देश बना और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक खुले व्यापार का मार्ग अपनाकर वह दावा करने लगा कि वह "सारी दुनिया का कारख़ाना" है, सभी देशों को तैयार माल सप्लाई करनेवाला है, जिन्हें उसके बदले में उसे कच्चे माल की सप्लाई करते रहना पड़ता था। परंतु उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में इस इजारेदारी की जड़ें खोखली हो चुकी थीं, क्योंकि कई दूसरे देश अपने आपको "संरक्षणात्मक" महसूलों द्वारा सुरक्षित करके स्वतंत्र पूंजीवादी राज्य बन गये थे। बीसवीं शताब्दी में प्रवेश करते ही हम एक नये ढंग की इजारेदारी का निर्माण होते देखते हैं: पहले, पूंजीवादी ढंग से विकसित सभी देशों में पूंजीपतियों के इजारेदार संघ हैं; दूसरे, गिने-चुने अत्यंत धनी देशों की इजारेदाराना स्थिति, जिनमें पूंजी संचयन अत्यंत विशाल रूप धारण कर चुका है। उन्नत देशों में "पूंजी का" ज़बर्दस्त "अतिरेक" पैदा हो गया है।

यह मानी हुई बात है कि यदि पूंजीवाद कृषि का विकास कर सकता, जो आज हर जगह उद्योग से बेहद पिछड़ी हुई है, यदि वह जनसाधारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठा सकता, जिन्हें आज भी आश्चर्यजनक तकनीकी उन्नति के बावजूद हर जगह भर-पेट भोजन नहीं मिलता और जो दरिद्रता का शिकार हैं, तो पूंजी के अतिरेक का कोई सवाल ही न पैदा होता। पूंजीवाद के टुटपुंजिया आलोचक बहुधा यह "दलील" पेश करते हैं। परंतु यदि पूंजीवाद यह सब कुछ करता, तो वह पूंजीवाद न होता, क्योंकि असमान विकास और जनसाधारण के जीवन का अर्द्धभुखमरी का स्तर इस उत्पादन-प्रणाली की आधारभूत तथा अनिवार्य शर्तें तथा पूर्वावस्थाएं हैं। जब तक पूंजीवाद रहेगा, तब तक पूंजी का अतिरेक किसी देश विशेष के जनसाधारण के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए नहीं इस्तेमाल किया जायेगा, क्योंकि उसका मतलब होगा पूंजीपतियों के मुनाफ़े में कमी, बल्कि उसका इस्तेमाल पिछड़े हुए देशों में पूंजी का निर्यात करके मुनाफ़े बढ़ाने के लिए किया जायेगा। इन पिछड़े हुए देशों में मुनाफ़े आम तौर से ऊंचे होते हैं, क्योंकि वहां पूंजी का अभाव रहता है, ज़मीन की क़ीमत अपेक्षाकृत कम होती है, मज़दूरी बहुत कम होती है, कच्चा माल सस्ता होता है। पूंजी के निर्यात की संभावना इस बात से उत्पन्न होती है कि अनेक पिछड़े हुए देश विश्वव्यापी पूंजीवादी चक्र में खिंचकर आ चुके हैं, वहां मुख्य रेल-लाइनें या तो बन चुकी हैं या बनायी जा रही हैं, औद्योगिक विकास के लिए प्राथमिक परिस्थितियां उत्पन्न कर दी गयी हैं, आदि। पूंजी के निर्यात की आवश्यकता इस बात से उत्पन्न होती है कि कुछ गिने-चुने देशों में पूंजीवाद "अति परिपक्व हो चुका है" और (कृषि की पिछड़ी हुई अवस्था तथा जनसाधारण की दरिद्रता के कारण) पूंजी को "लाभप्रद" ढंग से लगाने के लिए क्षेत्र नहीं मिलता।

नीचे हम तीन प्रमुख देशों द्वारा विदेशों में लगायी गयी पूंजी की रक़म के संबंध में मोटे-मोटे आंकड़े दे रहे हैं*:

---

* Hobson, *Imperialism*, London, 1902, p. 58 (हाबसन, 'साम्राज्यवाद', लंदन, १९०२, पृ० ५८–सं०); रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विदेशों में लगायी गयी पूंजी
(अरब फ़्रांकों में)

वर्ष	इंगलैंड	फ़्रांस	जर्मनी
१८६२	३.६	–	–
१८७२	१५	१०(१८६९)	–
१८८२	२२	१५(१८८०)	?
१८९३	४२	२०(१८९०)	?
१९०२	६२	२७–३७	१२.५
१९१४	७५–१००	६०	४४

इस तालिका से पता चलता है कि बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ही जाकर पूंजी के निर्यात ने व्यापक रूप धारण किया। युद्ध से पहले विदेशों में

संकेंद्रण', पृ० ३९५, ४०४; P. Arndt, *Weltwirtschaftliches Archiv*, Bd.7, 1916, S. 35 (प० अर्नड्ट, 'विश्व अर्थव्यवस्था का पुरालेख' पत्रिका में, खंड ७, १९१६, पृ० ३५–सं०); नेमार्क, 'बुलेटिन' में; हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', पृ० ४९२; Lloyd George, ४ मई, १९१५ को हाउस आफ़ कामंस में भाषण, *Daily Telegraph*, ५ मई, १९१५; बेर्नहार्ड हार्म्स, 'विश्व अर्थव्यवस्था की समस्याएं', येना, १९१२, पृ० २३५ तथा आगे के पृष्ठ; Dr. Siegmund Schilder, *Entwicklungstendenzen der Weltwirtschaft*, Berlin, 1912, Bd. 1, S. 150 (डा० ज़िग्मुंड शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', बर्लिन, १९१२, खंड १, पृ० १५०–सं०); जार्ज पैश, 'उपनिवेशों, आदि में ग्रेट ब्रिटेन के पूंजी निवेश,' *Journal of the Royal Statistical Society*, खंड ७४, १९१०–१९११, पृ० १६७ तथा आगे के पृष्ठ; Georges Diouritch, *L'Expansion des banques allemandes à l'étranger, ses rapports avec le développement économique de l'Allemagne*, Paris. 1909, p. 84 (जार्ज दिऊरिच, 'विदेशों में जर्मन बैंकों का विस्तार, जर्मनी के आर्थिक विकास से उसका संबंध', पेरिस, १९०९, पृ० ८४–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन मुख्य देशों द्वारा लगायी गयी पूंजी १७५–२०० अरब फ़्रांक थी। यदि ५ प्रतिशत की मामूली दर से भी हिसाब लगाया जाये, तो इस रक़म से होनेवाली आय प्रति वर्ष ८ से १० अरब फ़्रांक तक रही होगी। कितना ठोस आधार है संसार के अधिकतर देशों तथा राष्ट्रों के साम्राज्यवादी उत्पीड़न तथा शोषण के लिए, गिने-चुने धनवान राज्यों की पूंजीवादी परोपजीविता के लिए!

विदेशों में लगायी गयी यह पूंजी विभिन्न देशों में किस प्रकार बंटी हुई है? वह कहां लगायी गयी है? इस प्रश्न का उत्तर केवल मोटे तौर से ही दिया जा सकता है, पर वह आधुनिक साम्राज्यवाद के कुछ आम संबंधों तथा रिश्तों पर प्रकाश डालने के लिए काफ़ी है:

दुनिया के विभिन्न भागों में
विदेशी पूंजी का मोटे तौर से वितरण
(१९१० के लगभग)
(अरब फ़्रांकों में)

	इंगलैंड	फ़्रांस	जर्मनी	कुल योग
यूरोप	४	२३	१८	४५
अमरीका	३७	४	१०	५१
एशिया, अफ़्रीका, आस्ट्रेलिया	२९	८	७	४४
कुल योग	७०	३५	३५	१४०

ब्रिटिश पूंजी विनियोग के मुख्य क्षेत्र उसके उपनिवेश हैं, जो एशिया, आदि की तो बात ही क्या, अमरीका में भी बहुत बड़े-बड़े हैं (जैसे कनाडा)। इस मामले में पूंजी के विपुल निर्यात का बहुत गहरा संबंध विस्तृत उपनिवेशों के साथ है। साम्राज्यवाद के लिए इनके महत्त्व का उल्लेख हम आगे चलकर करेंगे। फ़्रांस के मामले में परिस्थिति इससे भिन्न है। फ़्रांस से जितनी पूंजी का निर्यात किया गया है, वह मुख्यतः यूरोप में,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबसे बढ़कर रूस में (कम से कम दस अरब फ़्रांक) लगी हुई है। यह मुख्यत: ऋण-पूंजी, सरकारी ऋणों में लगायी गयी पूंजी है, वह औद्योगिक कारोबार में लगी हुई पूंजी नहीं है। ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्यवाद से भिन्न, फ़्रांसीसी साम्राज्यवाद को हम सूदख़ोर साम्राज्यवाद कह सकते हैं। जर्मनी में एक तीसरे प्रकार का साम्राज्यवाद है: उसके उपनिवेश बहुत थोड़े हैं और विदेशों में लगी हुई जर्मन पूंजी यूरोप तथा अमरीका के बीच बहुत संतुलित ढंग से बंटी हुई है।

पूंजी निर्यात उन देशों में पूंजीवादी विकास को प्रभावित करता है, उसकी गति को बहुत तेज़ कर देता है, जहां निर्यातित पूंजी जाती है। इस तरह पूंजी निर्यात से पूंजी निर्यातकारी देशों का विकास किसी हद तक रुक सकता है। लेकिन वैसा केवल सारी दुनिया में पूंजीवाद के आगे विकास के फैलाव तथा गहनता से ही हो सकता है।

जो देश पूंजी का निर्यात करते हैं, वे लगभग हमेशा ही कुछ ऐसी "सुविधाएं" प्राप्त कर लेने में सफल हो जाते हैं, जिनके स्वरूप से वित्त पूंजी तथा इजारेदारी के युग की विशिष्टता पर प्रकाश पड़ता है। उदाहरण के लिए, बर्लिन की *Die Bank* पत्रिका के अक्तूबर, १९१३ के अंक में निम्नलिखित बात छपी थी:

"इधर कुछ दिनों से अंतर्राष्ट्रीय पूंजी बाज़ार में एक ऐसा प्रहसन खेला जा रहा है, जो एरिस्टोफ़ेनीज़ जैसे किसी नाटककार की लेखनी को शोभा देता। स्पेन से लेकर बाल्कन राज्यों तक, रूस से लेकर अर्जेंटाइन, ब्राज़ील तथा चीन तक बहुत-से राज्य बड़े मुद्रा-बाज़ार में खुलेआम या चोरी-छुपे क़र्ज़ मांगते हैं, कभी-कभी तो वे क़र्ज़ के लिए धरना देकर बैठ जाते हैं। इस समय मुद्रा-बाज़ार की हालत बहुत अच्छी नहीं है और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य भी बहुत आशाजनक नहीं है। परंतु एक भी मुद्रा-बाज़ार ऐसा नहीं है, जो विदेशों को ऋण देने से इनकार कर सके, क्योंकि वह डरता है कि कहीं उसका पड़ोसी उससे आगे न निकल जाये, ऋण देने पर राज़ी न हो जाये और इस प्रकार ऋण लेनेवाले से उसके बदले में कोई काम न करवा ले। इन अंतर्राष्ट्रीय सौदेबाज़ियों में ऋण देनेवाला लगभग हमेशा ही कोई न कोई अतिरिक्त सुविधा प्राप्त कर लेता है: किसी वाणिज्यिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समझौते में अपनी सुविधा की कोई शर्त, कोयला भरने का कोई स्टेशन, कोई बंदरगाह बनाने का ठेका, कोई बड़ा-सा कंसेशन, या तोपों का आर्डर।"*

वित्त पूंजी ने इजारेदारियों के युग को जन्म दिया है और इजारेदारियां हर इजारेदारी के उसूल लागू करती हैं: खुले बाज़ार में होड़ के बजाय मुनाफ़े के सौदों के लिए "संबंधों" का फ़ायदा उठाया जाने लगता है। सबसे ज्यादा आम बात यह है: ऋण के साथ एक शर्त यह लगा दी जाती है कि जो ऋण दिया गया है, उसका एक भाग ऋण देनेवाले देश से चीज़ें ख़रीदने पर, विशेष रूप से युद्ध सामग्री या जहाज़, आदि ख़रीदने पर ख़र्च किया जायेगा। पिछले दो दशकों में (१८९०–१९१०) फ़्रांस ने यह तरीक़ा बहुत बार अपनाया है। विदेशों को पूंजी का निर्यात करना माल-निर्यात को प्रोत्साहन देने का साधन बन जाता है। इस प्रसंग में विशेष रूप से बड़े-बड़े उद्यमों के बीच होनेवाले सौदे ऐसा रूप धारण कर लेते हैं, जिसके बारे में शिल्डर** ने "बहुत नरम शब्दों" में कहा है कि वह "लगभग भ्रष्टाचार ही होता है"। जर्मनी में क्रुप्प, फ़्रांस में श्नाइडर, इंगलैंड में आर्मस्ट्रांग ऐसी फ़र्में हैं, जिनके संबंध शक्तिशाली बैंकों तथा सरकार के साथ बहुत गहरे हैं और जिनकी ऋण का बंदोबस्त करते समय आसानी से "उपेक्षा" नहीं की जा सकती।

रूस को ऋण देते समय फ़्रांस ने उसे "दबाकर" १६ सितंबर, १९०५ का वाणिज्यिक समझौता करवाया, जिसमें उसने १९१७ तक के लिए कुछ रिआयतों की शर्त लगायी। १९ अगस्त, १९११ को जब फ़्रांस और जापान के बीच वाणिज्यिक समझौता हुआ, उस समय भी उसने यही किया। आस्ट्रिया तथा सर्बिया के बीच सात महीने की अवधि को छोड़कर १९०६ से १९११ तक महसूलों का जो युद्ध चलता रहा, उसका कारण आंशिक रूप से सर्बिया को युद्ध सामग्री देने के सिलसिले में आस्ट्रिया तथा फ़्रांस की पारस्परिक होड़ थी। जनवरी, १९१२ में पाल देशानेल ने चैंबर आफ़

---

* *Die Bank*, १९१३, अंक २, पृ० १०२४–१०२५।

** शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', पृ० ३४६, ३५०, ३७१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डिपुटीज़ में कहा कि १९०८ से १९११ तक फ़्रांसीसी कंपनियों ने सर्बिया को ४,५०,००,००० फ़्रांक की युद्ध सामग्री दी थी।

सैन-पाउलू (ब्राज़ील) में आस्ट्रिया-हंगरी के कौंसुल की एक रिपोर्ट में कहा गया है: "ब्राज़ील की रेलों का निर्माण मुख्यत: फ़्रांस, बेल्जियम, ब्रिटेन तथा जर्मनी की पूंजी से हो रहा है। इन रेलों के निर्माण के संबंध में जो वित्तीय सौदा हुआ है, उसमें संबद्ध देशों ने यह शर्त लगायी है कि रेलों के लिए आवश्यक सामान का आर्डर उन्हें ही दिया जायेगा।"

हम कह सकते हैं कि इस प्रकार वित्त पूंजी शब्दश: अपना जाल संसार के सभी देशों में फैलाती है। इसमें उपनिवेशों में स्थापित किये जानेवाले बैंकों तथा उनकी शाखाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। जर्मन साम्राज्यवादी "पुराने" उपनिवेशवाले देशों को बड़ी ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं, जो इस संबंध में अपने लिए पूरा प्रबंध करने में विशेष रूप से "सफल" हुए हैं। १९०४ में इंगलैंड के ५० औपनिवेशिक बैंक थे, जिनकी २,२७९ शाखाएं थीं (१९१० में इन बैंकों की संख्या ७२ और उनकी शाखाओं की संख्या ५,४४९ थी); फ़्रांस के २० बैंक थे, जिनकी १३६ शाखाएं थीं, हालैंड के १६ बैंक थे, जिनकी ६८ शाखाएं थीं और जर्मनी के "केवल" १३ बैंक थे, जिनकी ७० शाखाएं थीं।* दूसरी तरफ़, अमरीकी पूंजीपति इंगलैंड तथा जर्मनी से जलते हैं: १९१५ में उन्होंने यह शिकायत की थी कि "दक्षिणी अमरीका में ५ जर्मन बैंकों की ४० शाखाएं और ५ ब्रिटिश बैंकों की ७० शाखाएं हैं... इंगलैंड और जर्मनी ने पिछले पचीस वर्षों में अर्जेंटाइन, ब्राज़ील तथा उरुग्वे में लगभग चार अरब डालर की पूंजी लगायी है और फलस्वरूप वे इन तीन देशों के कुल व्यापार के ४६ प्रतिशत भाग पर क़ब्ज़ा जमाये हुए हैं।"**

---

*रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण', चौथा संस्करण, पृ० ३७५; दिऊरिच, 'विदेशों में जर्मन बैंकों का विस्तार, जर्मनी के आर्थिक विकास से उसका संबंध', पृ० २८३।

** *The Annals of the American Academy of Political and Social Science*, vol. LIX, May 1915, p. 301 (अमरीकी राजनी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजी का निर्यात करनेवाले देशों ने अपने बीच दुनिया का बंटवारा, लाक्षणिक अर्थ में, कर रखा है। परंतु वित्त पूंजी ने तो दुनिया का **वास्तविक** बंटवारा भी कर दिया है।

५. पूंजीपतियों के संघों के बीच दुनिया का बंटवारा

पूंजीपतियों के इजारेदार संघ, कार्टेल, सिंडिकेट तथा ट्रस्ट सबसे पहले अपने देश के बाज़ार को आपस में बांट लेते हैं, उस देश के उद्योगों को कमोबेश पूरी तरह अपने क़ब्ज़े में कर लेते हैं। परंतु पूंजीवाद के अंतर्गत देश का बाज़ार अनिवार्य रूप से विदेशी मंडी के साथ संबद्ध होता है। पूंजीवाद ने बहुत पहले विश्व मंडी तैयार कर दी थी। जैसे-जैसे पूंजी का निर्यात बढ़ता गया और बड़े-बड़े इजारेदार संघों के वैदेशिक तथा औपनिवेशिक संबंध और "प्रभाव-क्षेत्र" हर तरह से बढ़ते गये, वैसे-वैसे हालात "स्वाभाविक रूप से" इन संघों के बीच अंतर्राष्ट्रीय समझौते की दिशा में और अंतर्राष्ट्रीय कार्टेलों के निर्माण की दिशा में अग्रसर होते गये।

यह पूंजी तथा उत्पादन के विश्वव्यापी संकेंद्रण की नयी मंज़िल है, जो पहले की तमाम मंज़िलों से कहीं ज़्यादा ऊंची है। आइये, हम देखें कि यह अति इजारेदारी किस प्रकार विकसित होती है।

बिजली उद्योग नवीनतम तकनीकी सफलताओं का, उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ के पूंजीवाद का सबसे लाक्षणिक उदाहरण है। यह उद्योग दो सबसे उन्नत नये पूंजीवादी देशों में, संयुक्त राज्य अमरीका तथा जर्मनी में सबसे अधिक विकसित हुआ है। जर्मनी में

तिशास्त्र तथा समाजशास्त्र अकादमी का इतिवृत्त, खंड ५९, मई, १९१५, पृ० ३०१–सं०)। इसी खंड में पृष्ठ ३३१ पर हम पढ़ते हैं कि प्रख्यात सांख्यिकीविद Paish (पैश) ने *Statist* ('सांख्यिकीविद') नामक वित्तीय पत्रिका के पिछले अंक में लिखा कि इंगलैंड, जर्मनी, फ़्रांस, बेल्जियम तथा हालैंड ने ४० अरब डालर, अर्थात २०० अरब फ़्रांक की पूंजी का निर्यात किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९०० के संकट ने इस उद्योग के संकेंद्रण को विशेष रूप से प्रबल प्रोत्साहन दिया। संकट के दौरान बैंकों ने, जिनका उस समय तक उद्योगों के साथ काफ़ी संलयन हो चुका था, अपेक्षाकृत छोटी कंपनियों की तबाही तथा बड़ी कंपनियों में उनके विलयन की प्रक्रिया को बहुत तेज़ तथा गहरा बना दिया। जीडेल्स ने लिखा है: "बैंकों ने उन कंपनियों को, जिन्हें पूंजी की सबसे अधिक आवश्यकता थी, सहारा देने से इनकार कर दिया, इस तरह पहले तो उन कंपनियों की तीव्र प्रगति करायी और फिर उनको बुरी तरह नीचे लुढ़का दिया, जिनका बैंकों के साथ काफ़ी घनिष्ठ संबंध नहीं था"*।

फलस्वरूप, १९०० के बाद संकेंद्रण बड़ी तीव्र गति से बढ़ा। १९०० तक बिजली उद्योग में आठ या सात "ग्रुप" थे। हर एक में कई-कई कंपनियां थीं (कुल मिलाकर २८ कंपनियां थीं) और हर एक के पीछे २ से लेकर ११ बैंकों तक का हाथ था। १९०८ और १९१२ के बीच ये सारे ग्रुप आपस में मिलकर दो या एक रह गये। नीचे दिये हुए ख़ाके से इस प्रक्रिया का पता चलता है। (देखें ख़ाका पृ० २८४ पर)।

प्रख्यात A. E. G. (जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी) के क़ब्ज़े में, जो इसी प्रकार वढ़कर इतनी बड़ी हुई है, १७५ से २०० तक कंपनियां ("होल्डिंग" की पद्धति द्वारा) और कुल मिलाकर लगभग १.५ अरब मार्क की पूंजी है। दस से ज़्यादा देशों में इसकी अपनी ३४ विदेशी एजेंसियां हैं, जिनमें से १२ ज्वाइंट स्टाक कंपनियां हैं। १९०४ में ही जर्मनी के बिजली उद्योग द्वारा विदेशों में लगायी गयी पूंजी २३,३०,००,००० मार्क कूती जाती थी। उसमें से ६,२०,००,००० मार्क की पूंजी रूस में लगी हुई थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि A.E.G. एक विराट "सम्मिलित" उद्यम है—अकेले उसकी उन कंपनियों की संख्या, जो कारख़ानों में माल तैयार करती हैं, १६ से कम नहीं है—जो बिजली के केवल और इंसुलेटरों से लेकर मोटरें और वायुयान तक अत्यंत विविध प्रकार की चीज़ें तैयार करता है।

---

*जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', पृ० २३२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

बिजली उद्योग में ग्रुप

१९०० से पहले :	फ़ेल्टेन एंड गिलौम	लाहमेयेर	यूनियन A.E.G.	सीमेन्स एंड हाल्स्के	शुकर्ट एंड कं०	बर्गमैन	कुम्मर
	फ़ेल्टेन एंड लाहमेयेर		A.E.G. (जनरल इले० कं०)	सीमेन्स एंड हाल्स्के-शुकर्ट		बर्गमैन	१९०० में लुढ़क गयी
१९१२ तक :	A.E.G (जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी)			सीमेंस एंड हाल्स्के-शुकर्ट			

(१९०८ से इन दोनों के बीच गहरा "सहयोग" है)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	'जनरल इलेक्ट्रिक कं०' (General Electric Co)	
अमरीका	थाम्पसन-हाउस्टन कंपनी यूरोप में अपनी एक फ़र्म स्थापित करती है	एडीसन कंपनी यूरोप में 'फ़्रांसीसी एडीसन कंपनी' स्थापित करती है, जो अपने पेटेंट जर्मन फ़र्म को बेच देती है
जर्मनी	'यूनियन इलेक्ट्रिक कंपनी'	'जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी' (A.E.G.)
	'जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी' (A.E.G.)	

परंतु यूरोप में संकेंद्रण अमरीका में संकेंद्रण-प्रक्रिया का ही एक अभिन्न अंग था। यह संकेंद्रण इस प्रकार हुआ:

इस प्रकार विजली उद्योग की दो "शक्तियों" का निर्माण हुआ। हेईनिग ने अपने लेख 'बिजली ट्रस्ट का मार्ग' में लिखा था कि "संसार में कोई बिजली कंपनियां ऐसी नहीं हैं, जो इनसे पूर्णतः स्वतंत्र हों"। निम्नलिखित आंकड़ों से इन दोनों "ट्रस्टों" के उद्यमों के माल-परिचलन तथा उनके आकार का अंदाज़ा लग सकता है, हालांकि यह अंदाज़ा अधूरा ही होगा:

	वर्ष	माल-परिचलन (लाख मार्कों में)	कर्मचारियों की संख्या	शुद्ध मुनाफ़ा (लाख मार्कों में)
अमरीका: 'जनरल इलेक्ट्रिक कं०' (G.E.C.)	१६०७	२,५२०	२८,०००	३५४
	१६१०	२,६८०	३२,०००	४५६
जर्मनी: 'जनरल इलेक्ट्रिक कं०' (A.E.G.)	१६०७	२,१६०	३०,७००	१४५
	१६११	३,६२०	६०,८००	२१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और फिर १९०७ में जर्मन तथा अमरीकी ट्रस्टों ने आपस में एक समझौता किया, जिसके द्वारा उन्होंने दुनिया को अपने बीच बांट लिया। उनके बीच होड़ समाप्त हो गयी। अमरीकी 'जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी' (G.E.C.) को संयुक्त राज्य अमरीका तथा कनाडा "मिले"। जर्मन 'जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी' (A .E. G.) को जर्मनी, आस्ट्रिया, रूस, हालैंड, डेनमार्क, स्विट्ज़रलैंड, तुर्की तथा बाल्कन देश "मिले"। इस संबंध में ख़ास, स्वभावतः गुप्त समझौते हुए कि उद्योग की नयी शाखाओं में तथा उन "नये" देशों में, जिनका बंटवारा अभी तक बाक़ायदा नहीं हुआ था, "बेटी-कंपनियां" स्थापित करके घुसा जाये। इन दोनों ट्रस्टों के बीच आविष्कारों तथा प्रयोगों का आदान-प्रदान करने का भी समझौता हुआ*।

इस तथ्यतः अकेले, विश्वव्यापी ट्रस्ट के साथ होड़ करने की कठिनाई स्वतःस्पष्ट है, जिसके क़ब्ज़े में कई अरब की पूंजी है और दुनिया के कोने-कोने में जिसकी "शाखाएं", एजेंसियां, प्रतिनिधि, संबंध, आदि हैं। परंतु दो शक्तिशाली ट्रस्टों के बीच दुनिया के बंटवारे का अर्थ यह नहीं होता कि यदि असमान विकास, युद्ध, दिवाले, आदि के फलस्वरूप शक्तियों का पारस्परिक संबंध बदल जाये, तो **पुनर्विभाजन** हो ही नहीं सकता।

इस प्रकार के पुनर्विभाजन की कोशिशों का, पुनर्विभाजन के लिए संघर्ष का एक ज्ञानवर्द्धक उदाहरण तेल उद्योग में मिलता है।

जीडेल्स ने १९०५ में लिखा था: "दुनिया का तेल का बाज़ार अब भी दो बहुत बड़े वित्तीय ग्रुपों के बीच बंटा हुआ है – राकफ़ेलर का अमरीकी 'तेल ट्रस्ट' (Standard Oil Company) और राथशिल्ड तथा नोबेल, जो बाकू के रूसी तेल क्षेत्रों के मालिक हैं। इन दोनों ग्रुपों का आपस में गहरा संबंध है, परंतु पिछले कई वर्षों से उनकी इजारेदारी के लिए पांच

---

*रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण'; दिऊरिच, 'विदेशों में जर्मन बैंकों का विस्तार, जर्मनी के आर्थिक विकास से उसका संबंध', पृ० २३९; कुर्ट हेईनिग, 'बिजली ट्रस्ट का मार्ग'।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शत्रुओं के कारण ख़तरा पैदा हो गया है"*: (१) अमरीकी तेल क्षेत्रों में तेल का समाप्त हो जाना; (२) बाकू की मांताशेव नामक फ़र्म की होड़; (३) आस्ट्रिया के तेल क्षेत्र; (४) रूमानिया के तेल क्षेत्र; (५) समुद्र-पार के तेल क्षेत्र, विशेष रूप से डच उपनिवेशों में (सैमुएल तथा शेल की अत्यंत धनवान कंपनियां, जिनका संबंध आंग्ल पूंजी से भी है)। इन ग्रुपों में से अंतिम तीन ग्रुपों का संबंध बड़े-बड़े जर्मन बैंकों के साथ है, जिनमें सबसे प्रमुख स्थान विशाल Deutsche Bank का है। इन बैंकों ने "अपना" आधार बनाने के उद्देश्य से स्वतंत्र रूप से तथा व्यवस्थित ढंग से, उदाहरण के लिए, रूमानिया के तेल उद्योग का विकास किया। १९०७ में रूमानिया के तेल उद्योग में जो विदेशी पूंजी लगी हुई थी, वह अनुमानतः १८,५०,००,००० फ़्रांक की थी, जिसमें से ७,४०,००,००० जर्मन पूंजी थी।**

संघर्ष आरंभ हो गया, जिसे आर्थिक साहित्य में "दुनिया के बंटवारे" के लिए संघर्ष कहा जाता है। एक तरफ़ तो राकफ़ेलर के 'तेल ट्रस्ट' ने सब कुछ हथियाने की इच्छा से ख़ुद हालैंड में एक "बेटी-कंपनी" खड़ी की और अपने मुख्य शत्रु – आंग्ल-डच 'शेल' ट्रस्ट – पर प्रहार करने के उद्देश्य से डच इंडीज़ में तेल क्षेत्र ख़रीद लिये। दूसरी ओर, Deutsche Bank तथा जर्मनी के दूसरे बैंक रूमानिया को "अपने पास" "बनाये रखने" और उसे राकफ़ेलर के ख़िलाफ़ रूस के साथ मिला देने के फेर में थे। राकफ़ेलर के पास कहीं अधिक पूंजी और तेल के परिवहन तथा वितरण की बहुत अच्छी व्यवस्था थी। इस संघर्ष का अंत होना था और १९०७ में हुआ भी, जिसमें Deutsche Bank की क़रारी हार हुई। उसके सामने दो ही रास्ते रह गये: या तो तेल उद्योग में अपने हितों को ख़त्म कर दे और करोड़ों का घाटा उठाये या फिर घुटने टेक दे। उसने घुटने टेक

---

*जीडेल्स, 'उद्योगों के साथ जर्मनी के बड़े बैंकों के संबंध, विशेष रूप से धातु उद्योग के प्रसंग में', पृ० १९२–१९३।

**दिऊरिच, 'विदेशों में जर्मन बैंकों का विस्तार, जर्मनी के आर्थिक विकास से उसका संबंध', पृ० २४५–२४६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देना ही बेहतर समझा और 'तेल ट्रस्ट' के साथ एक ऐसा समझौता कर लिया, जो उसके लिए बहुत नुक़सानदेह था। Deutsche Bank इस पर राज़ी हो गया कि वह "कोई ऐसी कोशिश नहीं करेगा, जिससे अमरीकी हितों को हानि पहुंचे"। परंतु समझौते में इसकी गुंजाइश रखी गयी थी कि यदि जर्मनी तेल की राजकीय इजारेदारी क़ायम कर ले, तो यह समझौता रद्द हो जायेगा।

इसके बाद "तेल का प्रहसन" आरंभ हुआ। जर्मनी के एक वित्तीय सम्राट, फ़ॉन ग्विनेर ने, जो Deutsche Bank के एक संचालक भी थे, अपने प्राइवेट सेक्रेटरी स्टाउस की मार्फ़त तेल की राजकीय इजारेदारी के लिए एक मुहिम शुरू की। विशाल जर्मन बैंक के विराट संगठन तथा उसके समस्त व्यापक "संपर्क" इस काम में जुटा दिये गये। अख़बार अमरीकी ट्रस्ट के "जूए" के ख़िलाफ़ "देशभक्तिपूर्ण" क्रोध से उबल पड़े और १५ मार्च, १९११ को राइख़स्टाग ने लगभग सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकार किया, जिसमें सरकार से तेल की इजारेदारी स्थापित करने का विधेयक पेश करने का अनुरोध किया गया। सरकार ने इस "लोकप्रिय" विचार को तुरंत स्वीकार कर लिया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि Deutsche Bank की चाल, जो अपने अमरीकी साझेदार को धोखा देने और राजकीय इजारेदारी द्वारा अपने कारोबार को चमकाने की आशा लगाये बैठा था, सफल हो गयी। जर्मनी के तेल सम्राट बेशुमार मुनाफ़े के स्वप्न देखने लगे, जो रूस के शकर के कारख़ानेदारों के मुनाफ़े से कम नहीं होनेवाला था... परंतु पहले तो बड़े-बड़े जर्मन बैंक लूट के माल के बंटवारे के सवाल पर आपस में लड़ पड़े और Disconto-Gesellschaft बैंक ने Deutsche Bank के लोलुपतापूर्ण उद्देश्यों की क़लई खोल दी; दूसरे, राकफ़ेलर के साथ टक्कर की संभावना से सरकार भयभीत हो उठी, क्योंकि इसमें बहुत संदेह था कि जर्मनी को दूसरे स्रोतों से तेल मिल सकेगा (रूमानिया का उत्पादन बहुत थोड़ा था); तीसरे, ठीक उसी समय जर्मनी में युद्ध की तैयारियों के लिए एक अरब मार्क के १९१३ के अनुदान को स्वीकार किया गया। तेल की इजारेदारी की योजना स्थगित कर दी गयी। इस टक्कर में फ़िलहाल राकफ़ेलर के 'तेल ट्रस्ट' की विजय हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बर्लिन की पत्रिका *Die Bank* ने इस प्रसंग में लिखा कि बिजली की इजारेदारी स्थापित करके और पानी से सस्ती बिजली बनाकर ही जर्मनी 'तेल ट्रस्ट' के ख़िलाफ़ लड़ सकता है। इसके साथ ही पत्रिका ने यह भी लिखा: "परंतु बिजली की इजारेदारी तब स्थापित होगी, जब उत्पादकों को उसकी आवश्यकता होगी, अर्थात उस समय, जब बिजली उद्योग का अगला महान संकट दरवाज़े पर खड़ा होगा और जब वे विशालकाय महंगे बिजलीघर मुनाफ़े पर नहीं चलाये जा सकेंगे, जो इस समय बिजली की प्राइवेट 'कंसर्नों' द्वारा हर जगह खड़े किये जा रहे हैं और जिनके लिए ये कंसर्नें शहरों, राज्यों, आदि से आंशिक इजारेदारी भी प्राप्त करने लगी हैं। उस समय जल-ऊर्जा का उपयोग करना पड़ेगा। पर उससे राज्य के ख़र्च पर सस्ती बिजली पैदा करना असंभव होगा; इसे भी 'राज्य द्वारा नियंत्रित निजी इजारेदारी' के हाथ में सौंप देना पड़ेगा, क्योंकि निजी उद्योगों ने बहुत-से सौदे कर रखे हैं और अपने लिए भारी मुआवज़े की शर्त लगा रखी है... पोटाश की इजारेदारी के मामले में यही हुआ था, तेल की इजारेदारी के मामले में भी यही बात है, बिजली की इजारेदारी के मामले में भी यही होगा। समय आ गया है कि एक सुंदर उसूल की चकाचौंध से अंधे हो जानेवाले हमारे राजकीय समाजवादी आख़िरकार इस बात को समझ लें कि जर्मनी में इजारेदारियों ने न तो कभी ऐसा उद्देश्य अपनाया और न ऐसे नतीजे की ओर ही बढ़े कि उपभोक्ताओं को फ़ायदा पहुंचे या व्यवसायियों के मुनाफ़े का एक हिस्सा ही सही राज्य को प्राप्त हो। उन्होंने प्रायः दिवालियेपन के निकट पहुंचे निजी उद्योगों को राज्य की क़ीमत पर महज़ सेहत बख़्शने का काम किया।"*

बुर्जुआ जर्मन अर्थशास्त्रियों को ऐसी महत्वपूर्ण स्वीकारोक्तियों पर मजबूर होना पड़ता है। यहां हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि वित्त पूंजी के युग में निजी तथा राजकीय इजारेदारियां किस प्रकार एक दूसरे में गुंथी हुई हैं, किस प्रकार वे दोनों ही दुनिया के बंटवारे के लिए सबसे बड़े

---

* *Die Bank*, १९१२, अंक २, पृ० ६२९, १०३६; १९१३, अंक १, पृ० ३८८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इजारेदारों के बीच होनेवाले साम्राज्यवादी संघर्ष की अलग-अलग कड़ियां हैं।

व्यापारिक जहाज़रानी के क्षेत्र में संकेंद्रण की विराट संवृद्धि ने भी दुनिया के बंटवारे की ओर ही पहुंचाया। जर्मनी में दो शक्तिशाली कंपनियां सबसे आगे आ गयी हैं: Hamburg—Amerika, और Norddeutscher Lloyd, जिनमें से प्रत्येक के पास (शेयरों तथा बांडों के रूप में) २० करोड़ मार्क की पूंजी और १८ करोड़ ५० लाख से १८ करोड़ ६० लाख मार्क तक की क़ीमत के जहाज़ हैं। दूसरी ओर, अमरीका में १ जनवरी; १६०३ को 'इंटरनेशनल मर्कैंटाइल मैरीन कंपनी' की स्थापना हुई, जिसे मार्गन का ट्रस्ट कहा जाता है; यह कंपनी नौ अमरीकी तथा अंग्रेज़ी जहाज़ी कंपनियों को मिलाकर बनायी गयी थी और उसके पास १२ करोड़ डालर (४८ करोड़ मार्क) की पूंजी थी। १६०३ में ही जर्मनी की विराट कंपनियों और इस अमरीकी-आंग्ल ट्रस्ट के बीच मुनाफ़े के बंटवारे के सिलसिले में दुनिया का बंटवारा कर लेने का समझौता हो गया था। जर्मन कंपनियों ने आंग्ल-अमरीकी यातायात के क्षेत्र में होड़ न करने का आश्वासन दिया। यह बात साफ़-साफ़ तय कर दी गयी कि कौन-कौन-से बंदरगाह किस-किस के "हिस्से में आयेंगे", एक संयुक्त नियंत्रण समिति की स्थापना कर दी गयी, इत्यादि। यह समझौता बीस वर्ष के लिए हुआ था और इसमें एक समझदारी की शर्त यह भी थी कि युद्ध छिड़ जाने पर यह समझौता रद्द हो जायेगा*।

इंटरनेशनल रेल कार्टेल के निर्माण की कहानी भी अत्यंत शिक्षाप्रद है। इंगलैंड, बेल्जियम तथा जर्मनी के रेल के कारख़ानों के मालिकों की तरफ़ से एक कार्टेल बनाने की पहली कोशिश १८८४ में ही, एक भयंकर औद्योगिक मंदी के ज़माने में की गयी थी। इन कारख़ानेवालों ने आपस में समझौता किया कि वे एक दूसरे के घरेलू बाज़ारों में होड़ नहीं करेंगे और विदेशों को निम्नलिखित अनुपात से आपस में बांट लेंगे: इंगलैंड – ६६ प्रतिशत, जर्मनी – २७ प्रतिशत, बेल्जियम – ७ प्रतिशत। हिन्दुस्तान पूरी तरह इंगलैंड के लिए अलग छोड़ दिया गया था। इन सबने मिलकर

---

*रीसेर, 'जर्मनी के बड़े बैंक और जर्मनी की अर्थव्यवस्था के सामान्य विकास के संबंध में उनका संकेंद्रण', पृ० १२५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उस एक आंग्ल कंपनी के ख़िलाफ़ जंग छेड़ दी, जो कार्टेल में शामिल नहीं हुई थी और उस लड़ाई का ख़र्च कुल बिक्री का कुछ प्रतिशत तय कर दिया गया था। परंतु १८८६ में, जब दो आंग्ल कंपनियां उससे अलग हो गयीं, तो वह कार्टेल ढह गया। यह चारित्रिक बात है कि बाद में आनेवाले तेज़ी के ज़मानों में भी कोई समझौता नहीं हो पाया।

१६०४ के आरंभ में जर्मनी का इस्पात सिंडिकेट बनाया गया। नवंबर, १६०४ में इंटरनेशनल रेल कार्टेल दुबारा खड़ा किया गया और बंटवारा इस अनुपात से हुआ: इंगलैंड – ५३.५ प्रतिशत, जर्मनी – २८.८३ प्रतिशत, बेल्जियम – १७.६७ प्रतिशत। बाद में फ़्रांस भी उसमें शामिल हो गया और उसे पहले, दूसरे तथा तीसरे वर्षों में उपरोक्त १०० प्रतिशत के बाहर क्रमश: ४.८ प्रतिशत, ५.८ प्रतिशत तथा ६.४ प्रतिशत का हिस्सा मिला, अर्थात कुल १०४.८ प्रतिशत में से, इत्यादि। १६०५ में संयुक्त राज्य अमरीका का 'इस्पात कार्पोरेशन' इस कार्टेल में शामिल हुआ; फिर आस्ट्रिया तथा स्पेन शामिल हुए। १६१० में फ़ोगेलस्टीन ने लिखा: "इस समय दुनिया का बंटवारा पूरा हो चुका है और बड़े-बड़े उपभोक्ता, मुख्यत: राजकीय रेलें – क्योंकि दुनिया का बंटवारा उनके हितों को ध्यान में रखे बिना ही कर दिया गया है – अब कवि की तरह बृहस्पति-लोक में रह सकते हैं"*।

हम इंटरनेशनल जस्त सिंडिकेट का भी उल्लेख करेंगे, जिसकी स्थापना १६०६ में हुई थी और जिसने बहुत सही-सही हिसाब लगाकर उत्पादन को कारख़ानों के पांच ग्रुपों में बांट दिया था: जर्मन, बेल्जियाई, फ़्रांसीसी, स्पेनी तथा आंग्ल; इसी तरह इंटरनेशनल डायनामाइट ट्रस्ट भी, जिसके बारे में लिएफ़मैन ने कहा है कि यह "विस्फोटकों के सभी जर्मन कारख़ानेदारों का बिलकुल आधुनिक घनिष्ठ गंठजोड़ है, जिन्होंने इसी तरह से संगठित फ़्रांसीसी तथा अमरीकी डायनामाइट कारख़ानेदारों के साथ मिलकर एक तरह से दुनिया को आपस में बांट लिया है"**।

---

* फ़ोगेलस्टीन, 'इंगलैंड तथा अमरीका के लोहा और कपड़ा उद्योग के संगठनात्मक रूप', पृ० १००।

** लिएफ़मैन, 'कार्टेल तथा ट्रस्ट और राष्ट्रीय आर्थिक संगठन का आगे विकास', दूसरा संस्करण, पृ० १६१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिएफ़मैन ने हिसाब लगाया है कि १८९७ में कुल मिलाकर लगभग चालीस ऐसे अंतर्राष्ट्रीय कार्टेल थे, जिनमें जर्मनी का हिस्सा था, जबकि १९१० में उनकी संख्या सौ के लगभग थी।

कुछ बुर्जुआ लेखकों ने (उनमें अब कार्ल काउत्स्की भी शामिल हो गये, जिन्होंने, उदाहरण के लिए, १९०९ की अपनी मार्क्सवादी स्थिति को बिलकुल तिलांजलि दे दी है) यह मत प्रकट किया है कि चूंकि अंतर्राष्ट्रीय कार्टेल पूंजी के अंतर्राष्ट्रीयकरण की सबसे ज्वलंत अभिव्यक्ति हैं, इसलिए उनसे पूंजीवाद के अंतर्गत राष्ट्रों के बीच शांति की आशा उत्पन्न होती है। सिद्धांत की दृष्टि से यह मत बिलकुल बेतुका है और व्यवहार की दृष्टि से कुतर्क और बदतरीन क़िस्म के अवसरवाद की बेईमानी से भरी पैरोकारी है। अंतर्राष्ट्रीय कार्टेलों से पता चलता है कि पूंजीवादी इजारेदारियां किस हद तक विकसित हो चुकी हैं और विभिन्न पूंजीवादी संघों के बीच संघर्ष का **उद्देश्य क्या है**। यह आख़िरवाली बात सबसे महत्वपूर्ण है; केवल उसी से व्यक्त होता है कि जो कुछ हो रहा है, उसका ऐतिहासिक-आर्थिक तात्पर्य क्या है; क्योंकि संघर्ष के **रूप** बदलते हुए अपेक्षाकृत विशिष्ट तथा अस्थायी कारणों के अनुसार निरंतर परिवर्तित हो सकते हैं और होते हैं, परंतु जब तक वर्गों का अस्तित्व है, तब तक इस संघर्ष का **सारतत्व**, उसका वर्गीय **अंतर्य** हरगिज़ **नहीं** बदल **सकता**। स्वाभाविक रूप से यह बात, उदाहरण के लिए, जर्मन बुर्जुआ वर्ग के–जिसके पक्ष में काउत्स्की अपने सैद्धांतिक तर्कों की दृष्टि से चले गये हैं (इस पर हम आगे चलकर विचार करेंगे)–हित में है कि वर्तमान आर्थिक संघर्ष (दुनिया के बंटवारे) के **सारतत्व** को छिपाया जाये और संघर्ष के कभी इस और कभी उस **रूप** पर जोर दिया जाये। काउत्स्की भी यही ग़लती करते हैं। ज़ाहिर है, हमारे ध्यान में अकेला जर्मन बुर्जुआ वर्ग ही नहीं, बल्कि सारे संसार का बुर्जुआ वर्ग है। पूंजीपति दुनिया का बंटवारा अपनी किसी विशेष द्वेष-भावना के कारण नहीं, बल्कि इसलिए करते हैं कि संकेंद्रण जिस हद तक पहुंच चुका है, वह उन्हें मुनाफ़ा कमाने के लिए यह रास्ता अपनाने पर मजबूर कर देता है। साथ ही वे इसका बंटवारा "पूंजी के अनुपात से", "शक्ति के अनुपात से" करते हैं, क्योंकि माल-उत्पादन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और पूंजीवाद के अंतर्गत बंटवारे का कोई दूसरा तरीक़ा हो ही नहीं सकता। परंतु शक्ति का कम या ज्यादा होना आर्थिक तथा राजनीतिक विकास पर निर्भर होता है। जो कुछ हो रहा है, उसे समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम इस बात को जानें कि शक्ति में परिवर्तन होने से कौन-से प्रश्न तय होते हैं। यह गौण प्रश्न है कि ये परिवर्तन "शुद्धत:" आर्थिक या ग़ैर आर्थिक हैं (उदाहरण के लिए, सैनिक), क्योंकि इससे पूंजीवाद के नवीनतम युग से संबंधित मूलभूत विचारों में ज़रा भी अंतर नहीं पड़ता। पूंजीपतियों के संघों के बीच संघर्ष तथा सौदों के **सारतत्व** के स्थान पर संघर्ष तथा सौदों के रूप (आज शांतिपूर्ण, कल अशांतिपूर्ण और परसों] फिर अशांतिपूर्ण) का प्रश्न रखना एक कुतर्की की भूमिका तक में उतर आने जैसा है।

नवीनतम पूंजीवाद का युग हमें बताता है कि पूंजीवादी संघों के बीच कुछ ऐसे संबंध पैदा हो जाते हैं, जो दुनिया के आर्थिक बंटवारे **पर आधारित** होते हैं और इनके साथ-साथ तथा इन्हीं के सिलसिले में राजनीतिक संघों के बीच, राज्यों के बीच कुछ ऐसे संबंध पैदा होते हैं, जिनका आधार दुनिया का क्षेत्रीय बंटवारा, उपनिवेशों के लिए संघर्ष, "आर्थिक क्षेत्र के लिए संघर्ष" होता है।

६. महान शक्तियों के बीच दुनिया का बंटवारा

"यूरोपीय उपनिवेशों के क्षेत्रीय विकास" के बारे में अपनी पुस्तक में भूगोलवेत्ता अलेक्सान्द्र सुपान* ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में इस विकास का संक्षिप्त सार इस प्रकार दिया है:

---

* A. Supan, *Die territoriale Entwicklung der europäischen Kolonien*, 1906, S. 254 (अलेक्सान्द्र सुपान, 'यूरोपीय उपनिवेशों का क्षेत्रीय विकास', १९०६, पृ० २५४–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यूरोपीय औपनिवेशिक ताक़तों के आधिपत्य के इलाक़ों का प्रतिशत अनुपात (संयुक्त राज्य अमरीका सहित)

	१८७६	१९००	कमी या बढ़ती
अफ़्रीका में	१०.८	९०.४	+७९.६
पोलिनेशिया में . .	५६.८	९८.९	+४२.१
एशिया में	५१.५	५६.६	+ ५.१
आस्ट्रेलिया में . . .	१००.०	१००.०	—
अमरीका में . . .	२७.५	२७.२	—०.३

अंत में वह लिखते हैं: "इसलिए इस काल की लाक्षणिक विशेषता अफ़्रीका तथा पोलिनेशिया का बंटवारा है"। चूंकि एशिया और अमरीका में कोई ऐसे इलाक़े नहीं हैं, जो ख़ाली हों—अर्थात जिन पर किसी न किसी राज्य का क़ब्ज़ा न हो—इसलिए सुपान के निष्कर्ष में कुछ और जोड़कर यह कहना आवश्यक है कि इस विचाराधीन काल की लाक्षणिक विशेषता अंतिम रूप से भूमंडल का बंटवारा है, अंतिम रूप से इस माने में नहीं कि अब उसका **पुनर्विभाजन** असंभव है—इसके विपरीत पुनर्विभाजन संभव तथा अनिवार्य हैं—बल्कि इस माने में कि पूंजीवादी देशों की औपनिवेशिक नीति ने हमारी इस पृथ्वी पर अनधिकृत प्रदेशों पर आधिपत्य जमाने का काम **पूरा कर लिया है**। पहली बार दुनिया पूरी तरह बंट गयी है और इसलिए भविष्य में उसके पुनर्विभाजन **ही** संभव हैं, अर्थात अब यह नहीं हो सकता कि कोई ऐसा इलाक़ा, जिसका कोई मालिक न हो, किसी "मालिक" के क़ब्ज़े में आ जाये, बल्कि अब तो केवल यह हो सकता है कि इलाक़े एक "मालिक" के हाथ से दूसरे के हाथ में चले जायें।

अतः हम विश्व औपनिवेशिक नीति के एक अनोखे युग से गुज़र रहे हैं, जिसका घनिष्ठतम संबंध "पूंजीवाद के विकास की नवीनतम मंज़िल" के साथ, वित्त पूंजी के साथ है। इस कारण सबसे पहले यह आवश्यक है कि तथ्यों पर अधिक विस्तारपूर्वक विचार किया जाये, ताकि इस बात का पता यथासंभव सही-सही लगाया जा सके कि यह युग किस बात में पहले के युगों से भिन्न है और वर्तमान स्थिति क्या है। सबसे पहले तो इस प्रसंग में तथ्यों से संबंधित दो प्रश्न उठते हैं: क्या औपनिवेशिक नीति का उग्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप धारण करना, उपनिवेशों के लिए संघर्ष का तेज़ होना वित्त पूंजी के इस युग में ही देखने में आता है? और इस लिहाज़ से इस समय दुनिया किस ढंग से बंटी हुई है?

उपनिवेशन के इतिहास के बारे में अपनी पुस्तक में अमरीकी लेखक मारिस* ने उन्नीसवीं शताब्दी के विभिन्न कालों में ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस तथा जर्मनी के औपनिवेशिक प्रदेशों से संबंधित तथ्य-सामग्री को सारूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने जो नतीजे निकाले हैं, उनका संक्षिप्त सार इस प्रकार है:

उपनिवेशों का आकार

वर्ष	ग्रेट ब्रिटेन		फ़्रांस		जर्मनी	
	क्षेत्रफल (लाख वर्ग मील)	आबादी (लाख)	क्षेत्रफल (लाख वर्ग मील)	आबादी (लाख)	क्षेत्रफल (लाख वर्ग मील)	आबादी (लाख)
१८१५–१८३०	?	१,२६४	०.२	५	–	–
१८६०	२५	१,४५१	२.०	३४	–	–
१८८०	७७	२,६७९	७.०	७५	–	–
१८९९	९३	३,०९०	३७.०	५६४	१०	१४७

ग्रेट ब्रिटेन के लिए औपनिवेशिक क़ब्ज़ेदारियों के अत्यधिक विस्तार का काल १८६० से १८८० तक था और उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम बीस वर्षों में भी यह विस्तार बहुत काफ़ी हुआ। फ़्रांस और जर्मनी के लिए

* Henry C. Morris, *The History of Colonization*, New York, 1900, vol. II, pp. 88; I, 419; II, 304 (हेनरी के० मारिस, 'उपनिवेशन का इतिहास', न्यूयार्क, १९००, खंड २, पृ० ८८; १, पृ० ४१९; २, पृ० ३०४–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह काल ठीक इन्हीं बीस वर्षों के भीतर आता है। हम पहले देख चुके हैं कि इजारेदारी से पहले के पूंजीवाद का विकास, अर्थात उस पूंजीवाद का विकास, जिसमें खुली होड़ का बोलबाला था, उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें तथा आठवें दशक में अपनी चोटी पर पहुंच गया था। अब हम देखते हैं कि औपनिवेशिक क़ब्ज़ेदारियों में अत्यधिक "तेजी" **ठीक इसी काल के बाद** आरंभ होती है और दुनिया के क्षेत्रीय विभाजन का संघर्ष असाधारण रूप से तीव्र हो जाता है। इसलिए इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि इजारेदार पूंजीवाद की मंज़िल में, वित्त पूंजी में पूंजीवाद के संक्रमण का **संबंध** दुनिया के बंटवारे के संघर्ष के तीव्र होने के साथ है।

साम्राज्यवाद के बारे में अपनी रचना में हाबसन ने १८८४ से १६०० तक की मुद्दत को मुख्य यूरोपीय राज्यों के तीव्र "विस्तार" का युग ठहराया है। उनके अनुमान के अनुसार ग्रेट ब्रिटेन ने इन वर्षों के दौरान ३७ लाख वर्ग मील के इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया, जिसकी आबादी ५ करोड़ ७० लाख थी; फ़्रांस ने ३६ लाख वर्ग मील के इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया, जिसकी आबादी ३ करोड़ ६५ लाख थी; जर्मनी ने १० लाख वर्ग मील के इलाक़े पर क़ब्ज़ा किया, जिसकी आबादी १ करोड़ ४७ लाख थी; बेल्जियम ने ६ लाख वर्ग मील पर क़ब्ज़ा किया, जिसकी आबादी ३ करोड़ थी, पुर्तगाल ने ८ लाख वर्ग मील पर क़ब्ज़ा किया, जिसकी आबादी ६० लाख थी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में और विशेष रूप से १८८० के बाद से सभी पूंजीवादी देशों का उपनिवेशों के पीछे पड़े रहना कूटनीति तथा विदेश नीति के इतिहास की एक सर्वविदित बात है।

ग्रेट ब्रिटेन में खुली होड़ की सबसे ज़्यादा फलती-फूलती मुद्दत के दौरान, अर्थात १८४०–१८६० के बीच वहां के प्रमुख बुर्जुआ राजनीतिज्ञ औपनिवेशिक नीति **के विरुद्ध** थे और उनका यह मत था कि उपनिवेशों की मुक्ति तथा ग्रेट ब्रिटेन से उनका पूरी तरह अलग हो जाना अनिवार्य तथा लाभदायक है। माक्स बियर ने "आधुनिकतम ब्रिटिश साम्राज्यवाद"* के बारे में एक लेख में, जो १८६८ में प्रकाशित हुआ था, यह बताया है

* *Die Neue Zeit*, वर्ष १६, खंड १, १८६८, पृ० ३०२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि १८५२ में डिज़रैली ने, जो ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिनका झुकाव आम तौर से साम्राज्यवाद की ओर था, घोषणा की थी कि "उपनिवेश हमारी गरदन में चक्की के पाटों की तरह बंधे हुए हैं"। परंतु उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में ब्रिटेन के तत्कालीन सूरमा सेसील रोड्स तथा जोज़ेफ चैम्बरलेन थे, जो खुलेआम साम्राज्यवाद का प्रचार करते थे और बेहयाई के साथ साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण करते थे।

इस बात पर ध्यान देना भी दिलचस्पी से ख़ाली नहीं है कि ब्रिटेन के इन प्रमुख बुर्जुआ राजनीतिज्ञों के लिए नवीनतम साम्राज्यवाद के शुद्ध, कहना चाहिए, आर्थिक और राजनीतिक-सामाजिक आधारों का संबंध स्पष्ट हो चुका था। चैम्बरलेन साम्राज्यवाद का "सच्ची, बुद्धिमत्तापूर्ण तथा मितव्ययिता की नीति" के रूप में प्रचार करते थे और विशेष रूप से जर्मनी, बेल्जियम तथा अमरीका की होड़ की ओर संकेत करते थे, जिसका मुक़ाबला ग्रेट ब्रिटेन को विश्व मंडी में करना पड़ रहा था। पूंजी-पति कार्टेल, सिंडिकेट तथा ट्रस्ट बनाते गये और कहते रहे कि इजारे-दारियों में ही मुक्ति है। बुर्जुआ वर्ग के राजनीतिक नेताओं ने भी इसी बात को दोहराया कि इजारेदारियों में ही नजात है और वे दुनिया के उन हिस्सों पर जल्दी-जल्दी क़ब्ज़ा करने लगे, जिनका बंटवारा अभी तक नहीं हुआ था। सेसील रोड्स के गहरे मित्र, पत्रकार स्टेड से हमें मालूम होता है कि १८९५ में रोड्स ने साम्राज्यवाद के बारे में अपने विचार उनसे इन शब्दों में व्यक्त किये थे: "कल मैं लंदन के ईस्ट एंड" (मज़-दूरों की बस्ती) "में था और बेरोज़गारों की एक सभा में गया। मैंने उनके रोषपूर्ण भाषण सुने, जो केवल 'रोटी, रोटी!' की पुकार थे, और घर लौटते समय मैं रास्ते भर इस दृश्य पर विचार करता रहा और साम्राज्यवाद के महत्व के बारे में मेरा विश्वास पहले से भी अधिक दृढ़ हो गया... मेरा चिरपोषित विचार है इस सामाजिक समस्या का हल, अर्थात यह कि यूनाइटेड किंगडम के ४ करोड़ निवासियों को रक्तपातपूर्ण गृहयुद्ध से बचाने के लिए हम लोगों, औपनिवेशिक राजनीतिज्ञों को यहां की बेशी आबादी को बसाने के लिए और यहां के कारख़ानों तथा खानों की पैदावार की खपत के वास्ते नयी मंडियां महैया करने के लिए नये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इलाक़े हासिल करने होंगे। जैसा कि मैंने हमेशा कहा है, साम्राज्य दाल-रोटी का सवाल है। यदि आप गृहयुद्ध से बचना चाहते हैं, तो आपको साम्राज्यवादी बनना पड़ेगा।"*

यह बात १८६५ में करोड़पति, वित्तीय सम्राट सेसील रोड्स ने कही थी, जो आंग्ल-बोएर युद्ध के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी थे। यह सही है कि उन्होंने साम्राज्यवाद की बहुत ही भोंडे और बेहया ढंग से हिमायत की है, परंतु सारत: वह मास्लोव, ज्यूदेकुम, पोत्रेसोव, डेविड, रूसी मार्क्सवाद के संस्थापक तथा अन्य सज्जनों के "सिद्धांत" से भिन्न नहीं है। सेसील रोड्स कुछ ज्यादा ईमानदार सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी थे...

दुनिया का क्षेत्रीय विभाजन जिस ढंग से हुआ है और इस संबंध में पिछले कुछ दशकों में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका यथासंभव सही-सही चित्र प्रस्तुत करने के लिए हम उस तथ्य-सामग्री का उपयोग करेंगे, जो सुपान ने दुनिया की सभी ताक़तों के औपनिवेशिक प्रदेशों के बारे में अपनी उस पुस्तक में दी है, जिसका उद्धरण ऊपर दिया जा चुका है। सुपान ने १८७६ और १६०० के वर्षों को लिया है। हम १८७६—बहुत सटीक ढंग से चयनित वर्ष, इसलिए कि ठीक इसी वर्ष को पश्चिम यूरोपीय पूंजीवाद के विकास की प्राक्-इजारेदारी मंज़िल के मुख्यत: समापन का वर्ष माना जा सकता है—और १६१४ के वर्षों को लेंगे और १६१४ के लिए सुपान के आंकड़ों के बजाय हूबनर की 'भौगोलिक तथा सांख्यिकीय तालिकाएं' में दिये गये ज़्यादा हाल के आंकड़ों को उद्धृत करेंगे। सुपान ने केवल उपनिवेशों के आंकड़े दिये हैं; दुनिया के बंटवारे का अधिक पूर्ण चित्र प्रस्तुत करने के लिए हम इसे उपयोगी समझते हैं कि ग़ैर औपनिवेशिक तथा अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों के बारे में भी संक्षिप्त आंकड़े जोड़ दें; अर्द्ध-औपनिवेशिक देशों की श्रेणी में हम फ़ारस, चीन तथा तुर्की को रखते हैं; इनमें से पहला देश लगभग पूरी तरह उपनिवेश बन चुका है, दूसरा तथा तीसरा देश उपनिवेश बनते जा रहे हैं।

इस प्रकार हमें निम्नलिखित संक्षिप्त विवरण मिलता है:

---

* *Die Neue Zeit*, वर्ष १६, खंड १, १८६८, पृ० ३०४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महान शक्तियों के औपनिवेशिक प्रदेश
(लाख वर्ग किलोमीटरों में और लाख निवासियों में)

	उपनिवेश				मालिक देश		कुल योग	
	१८७६		१९१४		१९१४		१९१४	
	क्षेत्रफल	आबादी	क्षेत्रफल	आबादी	क्षेत्रफल	आबादी	क्षेत्रफल	आबादी
ग्रेट ब्रिटेन	२२५	२,५१९	३३५	३,९३५	३	४६५	३३८	४,४००
रूस	१७०	१५९	१७४	३३२	५४	१,३६२	२२८	१,६९४
फ़्रांस	९	६०	१०६	५५५	५	३९६	१११	९५१
जर्मनी	—	—	२९	१२३	५	६४९	३४	७७२
सं० रा० अमरीका	—	—	३	९७	९४	९७०	९७	१,०६७
जापान	—	—	३	१९२	४	५३०	७	७२२
६ महान शक्तियों का कुल योग	४०४	२,७३८	६५०	५,२३४	१६५	४,३७२	८१५	९,६०६
दूसरी शक्तियों (बेल्जियम, हालैंड, आदि) के उपनिवेश							९९	४५३
अर्द्ध-औपनिवेशिक देश (फ़ारस, चीन, तुर्की)							१४५	३,६१२
दूसरे देश							२८०	२,८९९
सारी दुनिया का कुल योग							१,३३९	१६,५७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन आंकड़ों से हम स्पष्ट देखते हैं कि उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दियों के संगम पर दुनिया का बंटवारा कितनी "पूरी तरह" हो चुका था। १८७६ के बाद औपनिवेशिक प्रदेशों के विस्तार में अत्यधिक वृद्धि हुई: पचास प्रतिशत से अधिक; छः सबसे महान शक्तियों के उपनिवेशों का क्षेत्रफल ४ करोड़ वर्ग किलोमीटर से बढ़कर ६ करोड़ ५० लाख वर्ग किलोमीटर हो गया; यह २ करोड़ ५० लाख वर्ग किलोमीटर की वृद्धि है, अर्थात उपनिवेशों पर आधिपत्य रखनेवाले देशों के क्षेत्रफल (१ करोड़ ६५ लाख वर्ग किलोमीटर) से पचास प्रतिशत अधिक। १८७६ में तीन शक्तियां ऐसी थीं, जिनके पास कोई उपनिवेश नहीं थे और चौथी, फ़्रांस के पास नहीं के बराबर थे। १९१४ तक इन चार शक्तियों ने १ करोड़ ४१ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल के, अर्थात यूरोप के कुल क्षेत्रफल से लगभग पचास प्रतिशत अधिक, उपनिवेशों पर क़ब्ज़ा कर लिया था, जिनकी आबादी लगभग १० करोड़ थी। औपनिवेशिक प्रदेशों में वृद्धि की रफ़्तार में बहुत अधिक असमानता है। उदाहरण के लिए, यदि हम फ़्रांस, जर्मनी तथा जापान की तुलना करें, जिनमें क्षेत्रफल तथा आबादी की दृष्टि से बहुत ज्यादा अंतर नहीं हैं, तो हम देखेंगे कि जर्मनी तथा जापान ने मिलकर कुल जितने औपनिवेशिक प्रदेश पर क़ब्ज़ा किया है, उससे लगभग तिगुने इलाक़े पर फ़्रांस ने अपना आधिपत्य स्थापित किया है। जिस काल पर हम इस समय विचार कर रहे हैं, उसके आरंभ में शायद वित्त पूंजी की मात्रा की दृष्टि से भी फ़्रांस उससे कई गुना अधिक धनवान था, जितना कि जर्मनी और जापान मिलकर थे। शुद्धतः आर्थिक परिस्थितियों के अतिरिक्त और उनके आधार पर भौगोलिक तथा अन्य परिस्थितियां भी औपनिवेशिक प्रदेशों के आकार पर प्रभाव डालती हैं। बड़े पैमाने के उद्योगों, विनिमय तथा वित्त पूंजी के दवाव के कारण पिछले कुछ दशकों में दुनिया को समान स्तर पर ले आने, विभिन्न देशों की आर्थिक तथा रहन-सहन की परिस्थितियों को समान स्तर पर ले आने की प्रक्रिया चाहे जितनी भी प्रवल क्यों न रही हो, अव भी काफ़ी अंतर वाक़ी है और जिन छः ताक़तों का उल्लेख किया गया है, उनमें हम एक तरफ़ तो देखते हैं कि नवजात पूंजीवादी देश (अमरीका, जर्मनी तथा जापान) हैं,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिनकी प्रगति असाधारण तीव्र गति से हुई है, और दूसरी तरफ़, ऐसे देश हैं (फ़्रांस और ग्रेट ब्रिटेन), जिनका पूंजीवादी विकास पुराना है, पर जिनकी प्रगति इधर कुछ समय से उपरोक्त देशों की तुलना में बहुत धीमी रही है। तीसरी तरफ़, हम एक ऐसा देश देखते हैं (रूस), जो आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक पिछड़ा हुआ है, जहां आधुनिक पूंजीवादी साम्राज्यवाद, कहना चाहिए, प्राक्-पूंजीवादी संबंधों के एक बहुत ही घने जाल में उलझा हुआ है।

महान शक्तियों की औपनिवेशिक क़ब्ज़ेदारियों के साथ ही हमने छोटे राज्यों के छोटे उपनिवेशों को रखा है, जो एक तरह से उपनिवेशों के संभव और संभाव्य "पुनर्विभाजन" का आगामी लक्ष्य बनेंगे। इनमें से अधिकांश छोटे राज्य अपने उपनिवेशों को केवल इसलिए बरक़रार रख पाते हैं कि महान शक्तियों के बीच हितों की टक्कर, संघर्ष, आदि हैं, जिनके कारण वे लूट के माल के बंटवारे के बारे में आपस में किसी समझौते पर नहीं पहुंच पातीं। जहां तक "अर्द्ध-औपनिवेशिक" राज्यों का सवाल है, वे उन संक्रमणकालीन रूपों का उदाहरण हैं, जो प्रकृति तथा समाज के सभी क्षेत्रों में पाये जाते हैं। सभी आर्थिक तथा सभी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में वित्त पूंजी इतनी बड़ी, कहा जा सकता है कि इतनी निर्णायक शक्ति है कि वह उन राज्यों को भी, जो पूर्णतम राजनीतिक स्वतंत्रता का उपभोग करते हैं, अपने अधीन कर लेने की क्षमता रखती है और अधीन कर लेती है। हम शीघ्र ही इसके उदाहरण देखेंगे। ज़ाहिर है, वित्त पूंजी ऐसी पराधीनता को सबसे अधिक "सुविधाजनक" पाती है और उसी से सबसे अधिक मुनाफ़ा बटोर सकती है, जिसमें अधीन किये गये देशों तथा राष्ट्रों की राजनीतिक स्वतंत्रता नष्ट हो जाये। इस प्रसंग में अर्द्ध-औपनिवेशिक देश "मध्यवर्ती अवस्था" का लाक्षणिक उदाहरण हैं। यह स्वाभाविक ही है कि इन अर्द्धपराधीन देशों के लिए संघर्ष वित्त पूंजी के युग में, जबकि बाक़ी सारी दुनिया का बंटवारा हो चुका है, विशेष रूप से तीव्र हो जाये।

औपनिवेशिक नीति तथा साम्राज्यवाद का अस्तित्व पूंजीवाद की इस नवीनतम मंज़िल से पहले, यहां तक कि पूंजीवाद से भी पहले से था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोम, जिसकी स्थापना दासता की बुनियाद पर हुई थी, औपनिवेशिक नीति का अनुसरण करता था तथा साम्राज्यवादी मार्ग पर चलता था। परंतु साम्राज्यवाद के बारे में वे "आम" तर्क-वितर्क, जिनमें विभिन्न सामाजिक-आर्थिक विरचनाओं के मूलभूत अंतर को भुला या पार्श्वभूमि में धकेल दिया जाता है, खोखली घिसी-पिटी बातों अथवा "वृहत्तर रोम की वृहत्तर ब्रिटेन से" तुलना जैसी डींग में अनिवार्यतः परिणत हो जाते हैं*। पूंजीवाद की **पूर्ववर्ती** अवस्थाओं की पूंजीवादी औपनिवेशिक नीति भी वित्त पूंजी की औपनिवेशिक नीति से मूलतः भिन्न है।

नवीनतम पूंजीवाद की मुख्य विशेषता है बड़े-बड़े मालिकों के इजारेदाराना संघों का प्रभुत्व। ये इजारेदारियां तभी सबसे अधिक दृढ़ होती हैं, जब कोई एक समूह कच्चे माल के **समस्त** स्रोतों पर क़ब्ज़ा कर लेता है और हम देख चुके हैं कि अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवादी संघ इस बात के लिए किस प्रकार अपना पूरा ज़ोर लगा देते हैं कि उनके प्रतिद्वंद्वियों के लिए उनके साथ होड़ करना असंभव हो जाये, कि उदाहरणार्थ वे खनिज लोहे के खदान-क्षेत्र, तेल-स्रोत, आदि ख़रीद लें। केवल औपनिवेशिक क़ब्ज़ादारियां ही इजारेदारियों को अपने प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध संघर्ष की हर सूरत में—ऐसी सूरत तक में, जब प्रतिपक्षी किसी राजकीय इजारेदारी के क़ानून द्वारा अपना बचाव करना चाहे—सफलता की पूर्ण गारंटी देती हैं। पूंजीवाद जितना ही विकसित होता है, कच्चे माल की कमी जितनी ही तीव्रता के साथ अनुभव होने लगती है, होड़ तथा सारी दुनिया में कच्चे माल के स्रोतों की खोज जितना ही उग्र रूप धारण करती जाती है, उपनिवेशों को हथियाने का संघर्ष उतना ही ज़्यादा प्रचंड होने लगता है।

---

*C. P. Lucas, *Greater Rome and Greater Britain*, Oxford, 1912 (चार्ल्स प्रेस्टवुड लूकस, 'वृहत्तर रोम तथा वृहत्तर ब्रिटेन', आक्सफ़ोर्ड, १९१२—सं०)। या Earl of Cromer, *Ancient and modern Imperialism*, London, 1910 (अर्ल क्रोमर, 'प्राचीन तथा आधुनिक साम्राज्यवाद', लंदन, १९१०—सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिल्डर लिखते हैं: "यद्यपि संभव है कि कुछ लोगों को इस बात में विरोधाभास दिखाई दे, पर यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि कमोबेश निकट भविष्य में ही शहरी तथा औद्योगिक आबादी की वृद्धि में खाने-पीने की चीज़ों की कमी के कारण उतनी रुकावट नहीं पड़ेगी, जितनी उद्योगों के लिए कच्चे माल की कमी के कारण"। उदाहरण के लिए, लकड़ी, जिसकी क़ीमत लगातार बढ़ती जा रही है, चमड़े और कपड़ा उद्योग के लिए आवश्यक कच्चे माल की कमी बढ़ती जा रही है। "उद्योगपति-संघ पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था में कृषि तथा उद्योगों के बीच एक संतुलन स्थापित करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं; इसके उदाहरण-स्वरूप हम कई सबसे महत्वपूर्ण औद्योगिक राज्यों के सूत कातनेवालों के संगठनों के अंतर्राष्ट्रीय संघ का, जिसकी स्थापना १९०४ में हुई थी, और फ़्लैक्स कातनेवालों के संगठनों के यूरोपीय संघ का उल्लेख कर सकते हैं, जिसकी स्थापना उसी नमूने पर १९१० में हुई थी।"*

बेशक, बुर्जुआ सुधारवादी और उनमें भी ख़ास तौर से आजकल के काउत्स्कीवादी इस प्रकार के तथ्यों के महत्व को कम करने की कोशिश करते हुए यह दलील देते हैं कि "महंगी और ख़तरनाक" औपनिवेशिक नीति के बिना ही खुले बाज़ार में कच्चा माल प्राप्त करना "संभव होगा" और कृषि की अवस्थाओं में आम तौर से "महज़" सुधार करके कच्चे माल की उपलब्ध मात्रा को बहुत ज़्यादा बढ़ा लेना "संभव होगा"। परंतु इस प्रकार की दलीलें साम्राज्यवाद की सफ़ाई, उस पर मुलम्मा चढ़ाने की कोशिश बन जाती हैं, क्योंकि उनमें नवीनतम पूंजीवाद की मुख्य विशेषता—इजारेदारियों—की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। खुले बाज़ार दिन-ब-दिन अधिकाधिक अतीत की चीज़ बनते जा रहे हैं, इजारेदार सिंडिकेट तथा ट्रस्ट उन्हें दिन-ब-दिन अधिक संकुचित करते जा रहे हैं और

* शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', पृ० ३८–४२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषि की अवस्थाओं में "महज़" सुधार करने का अर्थ होता है जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाना, मज़दूरी बढ़ाना और मुनाफ़े में कमी करना। ऐसे ट्रस्ट सुधारवादियों की कल्पना के अतिरिक्त और कहां होंगे, जो उपनिवेशों पर विजय प्राप्त करने के बजाय जनसाधारण की दशा की चिंता कर सकते हों?

वित्त पूंजी की केवल कच्चे माल के खोजे जा चुके स्रोतों में ही नहीं, बल्कि संभाव्य स्रोतों में भी दिलचस्पी होती है, क्योंकि आधुनिक तकनीकी विकास की रफ़्तार बहुत तेज़ है और यह संभव है कि अगर नयी प्रणालियां उपलब्ध कर ली जायें (और उसके लिए कोई बड़ा बैंक इंजीनियरों, कृषि विशेषज्ञों, आदि का एक विशेष अन्वेषक दल संगठित कर सकता है), अगर बड़े परिमाण में पूंजी लगायी जाये, तो जो ज़मीन आज बेकार पड़ी है, कल उसे उपजाऊ बना लिया जाये। यह बात खनिज भंडारों की खोज, कच्चे माल के परिष्करण तथा उपयोग के नये तरीक़ों, आदि पर भी लागू होती है। यही कारण है कि वित्त पूंजी अनिवार्य रूप से अपने आर्थिक क्षेत्र को ही नहीं, बल्कि अपने आम क्षेत्र को भी विस्तृत करने की कोशिश करती है। जिस प्रकार अपने "संभाव्य" (वर्तमान नहीं) मुनाफ़ों को और इजारेदारी के भावी परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए ट्रस्ट अपनी संपत्ति का उसके दुगने या तिगुने मूल्य पर पूंजीकरण करते हैं, उसी प्रकार वित्त पूंजी कच्चे माल के संभाव्य स्रोतों को दृष्टिगत रखते हुए और अविभाजित इलाक़ों के अंतिम टुकड़ों के लिए या पहले ही विभाजित इलाक़ों के पुनर्विभाजन के लिए भीषण संघर्ष में पीछे रह जाने से डरते हुए आम तौर से किसी भी तरह की, कहीं भी, किसी भी उपाय से अधिकतम संभव ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेने की कोशिश करती है।

ब्रिटिश पूंजीपति **अपने** उपनिवेश, मिस्र में कपास की खेती को विस्तृत करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं; १९०४ में वहां कुल २३,००,००० हेक्टर भूमि पर खेती होती थी, जिसमें से ६,००,००० हेक्टर पर, अर्थात चौथाई से अधिक भूमि पर कपास की खेती होती थी; **अपने** उपनिवेश, तुर्किस्तान में रूसी भी यही कर रहे हैं, क्योंकि इस प्रकार वे ज़्यादा आसानी से अपने विदेशी प्रतिद्वंद्वियों को परास्त कर सकेंगे, कच्चे माल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के स्रोतों पर इजारेदारी क़ायम कर सकेंगे और अधिक किफ़ायती तथा अधिक मुनाफ़ादेह कपड़ा उद्योग का एक ऐसा ट्रस्ट क़ायम कर सकेंगे, जिसका उत्पादन "सम्मिलित" होगा और जिसमें कपास के उत्पादन तथा उससे माल तैयार करने की **सभी** प्रक्रियाएं मालिकों के एक ही गुट के हाथों में संकेंद्रित होंगी।

पूंजी के निर्यात के हित समान रूप से उपनिवेश हथियाने की प्रेरणा देते हैं, क्योंकि उपनिवेशों के बाज़ार में होड़ को दूर करने, अपने लिए माल की सप्लाई को निश्चित बनाने, आवश्यक "संबंध" मज़बूत करने, आदि के लिए इजारेदाराना तरीक़ों को इस्तेमाल करना ज्यादा आसान होता है (और कभी-कभी तो केवल इन्हीं तरीक़ों को इस्तेमाल किया जा सकता है)।

ग़ैर आर्थिक ऊपरी ढांचा, जो वित्त पूंजी की नींव पर संवर्द्धित होता है, वित्त पूंजी की राजनीति, उसकी विचारधारा औपनिवेशिक विजय की चेष्टा को प्रोत्साहन देते हैं। जैसा कि हिल्फ़र्डिंग ने बिलकुल सही कहा है: "वित्त पूंजी स्वतंत्रता नहीं, प्रभुत्व चाहती है"। एक बुर्जुआ फ़्रांसीसी लेखक ने मानो सेसील रोड्स के ऊपर उद्धृत किये गये विचारों को * विकसित करते हुए तथा उन्हें अनुपूरित करते हुए लिखा है कि आधुनिक औपनिवेशिक नीति के आर्थिक कारणों के साथ सामाजिक कारण भी जोड़ दिये जाने चाहिए: "जीवन की बढ़ती हुई जटिलताओं और उन कठिनाइयों के कारण, जिनका बोझ केवल आम मज़दूरों पर ही नहीं, बल्कि मध्यम वर्गों पर भी पड़ता है, पुरानी सभ्यतावाले सभी देशों में 'अधीरता, झुंझलाहट तथा घृणा' बढ़ती जा रही हैं 'और ये भावनाएं सार्वजनिक शांति के लिए ख़तरा बनती जा रही हैं; निश्चित वर्गीय लीक से टूटकर अलग होनेवाली शक्ति को विदेशों में किसी काम पर लगा दिया जाना चाहिए, ताकि अपने देश में विस्फोट न होने पाये'"**।

---

*देखें प्रस्तुत खंड, पृ० २९७–२९८।–सं०

** Wahl, *La France aux colonies* (वाल, 'उपनिवेशों में फ़्रांस' –सं०), Henry Russier द्वारा *Le Partage de l' Océanie*, Paris, 1905,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चूंकि हम पूंजीवादी साम्राज्यवाद के युग की औपनिवेशिक नीति की चर्चा कर रहे हैं, इसलिए यह बता दिया जाना चाहिए कि वित्त पूंजी और तदनुरूप ही विदेश नीति, जो दुनिया के आर्थिक तथा राजनीतिक बंटवारे के लिए महान शक्तियों का संघर्ष मात्र बनकर रह जाती है, राज्यों की पराधीनता के अनेक **सक्रमणकालीन** रूपों को जन्म देती हैं। देशों के दोनों मुख्य ग्रुप ही– उपनिवेशों के मालिक और उपनिवेश ही–इस युग की लाक्षणिकताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि पराधीन देशों के वे विविध रूप भी इन लाक्षणिकताओं के द्योतक हैं, जो कहने को तो राजनीतिक रूप में स्वतंत्र हैं, पर वास्तव में वित्तीय तथा कूटनीतिक पराधीनता के जाल में फंसे हुए हैं। हम पराधीनता के एक रूप का–अर्द्ध-उपनिवेशों का–उल्लेख कर चुके हैं। एक दूसरा रूप, उदाहरण के लिए, अर्जेंटाइन है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद से संबंधित अपनी रचना में शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ ने लिखा है: "दक्षिणी अमरीका और विशेष रूप से अर्जेंटाइन वित्तीय दृष्टि से लंदन पर इतना आश्रित है कि उसे लगभग एक आंग्ल वाणिज्यिक उपनिवेश ही कहा जाना चाहिए"*। ब्यूनस-एयर्स में आस्ट्रिया-हंगरी के कौंसुल की १९०९ की रिपोर्ट को आधार बनाकर शिल्डर ने यह अनुमान लगाया है कि अर्जेंटाइन में ब्रिटेन की ८७५ करोड़ फ़्रांक की पूंजी लगी

---

p. 165 में उद्धृत (आंरी रूसिये, 'ओशियाना का विभाजन', पेरिस, १९०५, पृ० १६५–सं०')।

* Schulze-Gaevernitz, *Britischer Imperialismus und englischer Freihandel zu Beginn des 20-ten Jahrhunderts*, Leipzig, 1906, S. 318 (शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा आंग्ल स्वतंत्र व्यापार', लाइपजिग, १९०६, पृ० ३१८–सं०)। Sartorius v. Waltershausen, *Das volkswirtschaftliche System der Kapitalanlage im Auslande*, Berlin, 1907, S. 46 (सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्संहाउज़ेन, 'विदेशों में पूंजी लगाने की राष्ट्रीय आर्थिक पद्धति', बर्लिन, १९०७, पृ० ४६–सं०) में यही बात कही गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुई है। यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि इसके फलस्वरूप अर्जेंटाइन के वुर्जुआ वर्ग के साथ, उन क्षेत्रों के साथ, जिनका उस देश के पूरे आर्थिक तथा राजनीतिक जीवन पर नियंत्रण है, ब्रिटेन की वित्त पूंजी (और उसकी वफ़ादार "मित्र" कूटनीति) कितने दृढ़ संबंध स्थापित कर लेती है।

राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ वित्तीय तथा कूटनीतिक पराश्रितता का इससे कुछ ही भिन्न रूप पुर्तगाल के उदाहरण में देखने को मिलता है। पुर्तगाल एक स्वतंत्र प्रभुसत्तासंपन्न राज्य है, पर वास्तव में दो सौ वर्ष से अधिक मुद्दत से, स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध (१७०१–१७१४)[103] के बाद से वह ब्रिटेन का संरक्षित राज्य रहा है। ब्रिटेन ने अपने प्रतिद्वंद्वियों, स्पेन तथा फ़ांस के विरुद्ध लड़ाई में स्वयं अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए पुर्तगाल तथा उसके उपनिवेशों की रक्षा की। इसके बदले ब्रिटेन को वाणिज्यिक विशेषाधिकार प्राप्त हुए, पुर्तगाल तथा पुर्तगाली उपनिवेशों में माल और विशेष रूप से पूंजी के निर्यात में दूसरों की अपेक्षा अधिक सुविधाजनक शर्तें प्राप्त हुईं, पुर्तगाल के बंदरगाहों तथा द्वीपों, उसकी तार की लाइनों के उपयोग का अधिकार, आदि मिले*। बड़े तथा छोटे राज्यों के बीच इस प्रकार के संबंध हमेशा से क़ायम रहे हैं, परंतु पूंजीवादी साम्राज्यवाद के युग में वे एक आम पद्धति का रूप धारण कर लेते हैं, वे "दुनिया के विभाजन" के संबंधों के कुल योग का एक अंग बन जाते हैं, वे विश्व की वित्त पूंजी के कारोबार की श्रृंखला की कड़ियां बन जाते हैं।

दुनिया के बंटवारे के प्रश्न का विवेचन पूरा करने के लिए हम निम्नलिखित बात का उल्लेख और करेंगे। यह प्रश्न उन्नीसवीं शताब्दी के बिलकुल अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में एकदम खुले तथा निश्चित रूप से स्पेनी-अमरीकी युद्ध के बाद केवल अमरीकी साहित्य और आंग्ल-

---

*शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', खंड १, पृ० १६०–१६१।

20*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोएर युद्ध के बाद अंग्रेज़ी साहित्य में ही नहीं उठाया गया था। "बड़ी ईर्ष्या के साथ" "ब्रिटिश साम्राज्यवाद" को देखनेवाले केवल जर्मन साहित्य ने ही इस तथ्य का अपना सुव्यवस्थित मूल्यांकन नहीं प्रस्तुत किया है, बल्कि यह प्रश्न फ़्रांसीसी बुर्जुआ साहित्य में भी बुर्जुआ दृष्टिकोण से यथासंभव व्यापकतम तथा सुनिश्चित शब्दों में उठाया गया है। हम द्रियो नामक इतिहासकार के शब्दों को उद्धृत करेंगे, जिन्होंने 'उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याएं' नामक अपनी रचना के "महान शक्तियां और दुनिया के बंटवारे" के बारे में अध्याय में लिखा है: "पिछले कुछ वर्षों में चीन को छोड़कर भूमंडल के पूरे ख़ाली इलाक़े पर यूरोप तथा उत्तरी अमरीका की शक्तियों ने क़ब्ज़ा कर लिया है। इस सवाल को लेकर अनेक झगड़े तथा प्रभाव-क्षेत्रों के हेर-फेर हो चुके हैं, जो निकट भविष्य में इससे भी भयंकर उथल-पुथल की पूर्वघोषणा करते हैं, क्योंकि जल्दी करना आवश्यक है: जिन राष्ट्रों ने अभी तक अपने लिए बंदोवस्त नहीं किया है, उनके लिए इस बात का ख़तरा है कि उन्हें अपना हिस्सा कभी भी न मिले और वे भूमंडल के उस प्रचंड शोषण में कभी भी भाग न ले पायें, जो अगली" (अर्थात बीसवीं) "शताब्दी की एक मूलभूत विशेषता होगा। यही कारण है कि इधर कुछ समय से यूरोप तथा अमरीका अपने उपनिवेश विस्तार के, 'साम्राज्यवाद' के, जो उन्नीसवीं शताब्दी के अंत की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है, बुख़ार का शिकार हैं।" आगे चलकर इस लेखक ने लिखा: "दुनिया के इस बंटवारे में, भूमंडल के ख़ज़ानों तथा बड़े बाज़ारों की इस बेतहाशा खोज में इस उन्नीसवीं शताब्दी में स्थापित साम्राज्यों की आपेक्षिक ताक़त उस स्थान से बिलकुल मेल नहीं खाती, जो उनकी स्थापना करनेवाले राष्ट्रों ने यूरोप में हस्तगत किया है। यूरोप की प्रभुत्वशाली ताक़तें, उसकी नियति का फ़ैसला करनेवाली ताक़तें पूरी दुनिया में समान रूप से नहीं छायी हुई हैं। और चूंकि औपनिवेशिक बल, उस संपदा पर क़ब्ज़ा जमाने की आशा, जिसे अभी तक आंका नहीं गया है, यूरोपीय ताक़तों की आपेक्षिक शक्ति पर स्पष्टतः अपना असर डालेगी, इसलिए उपनिवेशों का प्रश्न—यदि आप चाहें, तो उसे 'साम्राज्यवाद' कह सकते हैं—जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयं यूरोप की राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन कर चुका है, उनमें अधिकाधिक परिवर्तन करता जायेगा।"*

७. साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की एक विशेष अवस्था

ऊपर साम्राज्यवाद के विषय में जो कुछ कहा जा चुका है, उसे अब हमें साररूप में प्रस्तुत करने की, उसे एक जगह समेटने की कोशिश करनी चाहिए। साम्राज्यवाद का उदय आम तौर से पूरे पूंजीवाद की मूलभूत लाक्षणिकताओं के विकास तथा सीधे अनुक्रम की एक कड़ी के रूप में हुआ। परंतु पूंजीवाद अपने विकास की एक निश्चित तथा अत्यंत ऊंची मंज़िल में पहुंचकर ही पूंजीवादी साम्राज्यवाद का रूप धारण कर सका, ऐसी मंज़िल में पहुंचकर, जब उसकी चंद मूलभूत लाक्षणिकताएं अपने प्रतिपक्षों में परिवर्तित होने लगीं, जब एक उच्चतर सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में पूंजीवाद के संक्रमण के युग की रूपरेखा बन और हर जगह उजागर हो चुकी थी। आर्थिक दृष्टि से इस प्रक्रिया की मुख्य बात यह है कि पूंजीवादी इजारेदारी ने खुली पूंजीवादी होड़ का स्थान ले लिया। खुली होड़ पूंजीवाद और आम तौर पर माल-उत्पादन की मूलभूत लाक्षणिकता है; इजारेदारी खुली होड़ का बिलकुल प्रतिपक्ष है, परंतु हम अपनी आंखों से देख चुके हैं कि खुली होड़ इजारेदारी में रूपांतरित होती जा रही है, वह बड़े उद्योगों को जन्म दे रही है और छोटे उद्योगों को बाहर ढकेले दे रही है, बड़े पैमाने के उद्योगों के स्थान पर और भी बड़े पैमाने के उद्योग स्थापित कर रही है और उसने उत्पादन तथा पूंजी के संकेंद्रण को इस हद तक पहुंचा दिया है कि उसमें से इजारेदारी का – कार्टेलों, सिंडिकेटों तथा ट्रस्टों का – जन्म हुआ है और हो रहा है और

---

* J.-E. Driault, *Problèmes politiques et sociaux*, Paris, 1900, p. 299 (ज० एडुअर्ड द्रियो, 'राजनीतिक तथा सामाजिक समस्याएं', पेरिस, १९००, पृ० २९९ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इनमें उसने लगभग एक-आध दर्जन ऐसे बैंकों की पूंजी को मिला दिया है, जो अरबों का हेर-फेर करते रहते हैं। इसके साथ ही इजारेदारियां, जो खुली होड़ से पैदा हुई हैं, इस खुली होड़ को ख़त्म नहीं करतीं, बल्कि उसके ऊपर और उसके साथ क़ायम रहती हैं और इस प्रकार अनेक बहुत तीव्र तथा गहरे विग्रहों, संघर्षों तथा झगड़ों को जन्म देती हैं। पूंजीवाद का एक उच्चतर व्यवस्था में संक्रमण इजारेदारी है।

यदि साम्राज्यवाद की यथासंभव संक्षिप्ततम परिभाषा करनी हो, तो हम कहेंगे कि पूंजीवाद की इजारेदाराना अवस्था साम्राज्यवाद है। इस प्रकार की परिभाषा में सबसे महत्वपूर्ण बातों का समावेश हो जायेगा, क्योंकि एक ओर, वित्त पूंजी उद्योगपतियों के इजारेदार संघों की पूंजी के साथ मिली हुई थोड़े-से बहुत बड़े-बड़े इजारेदार बैंकों की बैंक पूंजी है और दूसरी ओर, दुनिया का विभाजन किसी भी पूंजीवादी ताक़त द्वारा अनधिकृत प्रदेशों में निर्बाध रूप में प्रसारित औपनिवेशिक नीति से दुनिया के पूर्णतः बंटे हुए इलाक़े पर इजारेदाराना स्वामित्व की औपनिवेशिक नीति में संक्रमण है।

परंतु बहुत संक्षिप्त परिभाषाएं यद्यपि सुविधाजनक तो होती हैं, क्योंकि वे मुख्य बातों को अपने अंदर समेट लेती हैं, फिर भी वे अपर्याप्त होती हैं, क्योंकि जिस व्यापार की परिभाषा करनी होती है, उसकी बहुत महत्वपूर्ण विशेषताओं को विशेष रूप से निगमित करना पड़ता है। इसलिए यह भूले बिना कि आम तौर से सभी परिभाषाओं के साथ कुछ शर्तें होती हैं तथा उनका महत्व आपेक्षिक होता है और किसी भी परिभाषा में कभी भी किसी परिघटना के पूर्ण विकास-क्रम की सभी कड़ियों को नहीं समेटा जा सकता, हमें साम्राज्यवाद की ऐसी परिभाषा देनी चाहिए, जिसमें उसकी निम्नलिखित पांच बुनियादी विशेषताएं आ जायें: (१) उत्पादन तथा पूंजी का संकेंद्रण विकसित होकर इतनी ऊंची अवस्था में पहुंच गया है कि उसने इजारेदारियों को जन्म दिया है, जिनकी आर्थिक जीवन में एक निर्णायक भूमिका है; (२) बैंक पूंजी और औद्योगिक पूंजी मिलकर एक हो गयी हैं और इस "वित्त पूंजी" के आधार पर वित्तीय अल्पतंत्र की सृष्टि हुई है; (३) माल-निर्यात से भिन्न पूंजी के निर्यात ने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असाधारण महत्व धारण कर लिया है; (४) अंतर्राष्ट्रीय इजारेदार पूंजीवादी संघों का निर्माण हुआ है, जिन्होंने दुनिया को आपस में बांट लिया है और (५) सबसे बड़ी पूंजीवादी ताक़तों के बीच पूरी दुनिया का क्षेत्रीय बंटवारा पूरा हो गया है। साम्राज्यवाद पूंजीवाद के विकास की वह अवस्था है, जिसमें पहुंचकर इजारेदारियों तथा वित्त पूंजी का प्रभुत्व दृढ़ रूप से स्थापित हो चुका है, जिसमें पूंजी का निर्यात अत्यधिक महत्व ग्रहण कर चुका है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ट्रस्टों के बीच दुनिया का बंटवारा आरंभ हो गया है, जिसमें सबसे बड़ी पूंजीवादी ताक़तों के बीच पृथ्वी के समस्त क्षेत्रों का बंटवारा पूरा हो चुका है।

हम आगे चलकर देखेंगे कि साम्राज्यवाद की भिन्न रूप से परिभाषा की जा सकती है और की जानी चाहिए, यदि केवल मूलभूत शुद्धतः आर्थिक अवधारणाओं को ही नहीं (जिन तक ऊपरवाली परिभाषा सीमित है), बल्कि पूरे पूंजीवाद के प्रसंग में पूंजीवाद की इस अवस्था विशेष के ऐतिहासिक स्थान को भी या मजदूर आंदोलन की दो मुख्य धाराओं के साथ साम्राज्यवाद के संबंध को भी ध्यान में रखा जाये। इस समय ध्यान देने की बात यह है कि ऊपर निर्देशित अर्थ में साम्राज्यवाद निस्संदेह पूंजीवाद के विकास की एक विशेष अवस्था का द्योतक है। पाठकों को साम्राज्यवाद के बारे में सर्वाधिक साधार विचार ग्रहण करने में समर्थ बनाने के लिए हमने जान-बूझकर उन बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों के यथासंभव ज़्यादा से ज़्यादा उद्धरण देने की कोशिश की है, जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की इस नवीनतम अवस्था के संबंध में विशेष रूप से अकाट्य तथ्यों को स्वीकार करने पर बाध्य हैं। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए हमने विस्तारपूर्वक ऐसे आंकड़े उद्धृत किये हैं, जिनसे पाठकों को यह पता चल सके कि बैंक पूंजी, आदि किस हद तक बढ़ गयी है, ठीक किस बात में मात्रा का गुण में रूपांतरण, विकसित पूंजीवाद का साम्राज्यवाद में संक्रमण अभिव्यक्त होता है। बेशक यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि प्रकृति तथा समाज की सभी सीमा-रेखाएं रस्मी और परिवर्तनीय होती हैं और, उदाहरण के लिए, इस बात पर बहस करना बिलकुल बेतुकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात होगी कि साम्राज्यवाद "निश्चित रूप से" किस वर्ष या किस दशाब्दी में जाकर स्थापित हुआ।

परंतु साम्राज्यवाद की परिभाषा करने में हमें बहस में पड़ना ही होगा, ख़ासकर जिसे दूसरा इंटरनेशनल कहा जाता है, उसके युग के, अर्थात १८८६ से १९१४ तक के पचीस वर्षों के युग के मुख्य मार्क्सवादी सिद्धांतकार कार्ल काउत्स्की के साथ। साम्राज्यवाद की हमारी परिभाषा में व्यक्त किये गये बुनियादी विचारों पर काउत्स्की ने १९१५ में, यही नहीं नवंबर, १९१४ में ही ज़बर्दस्त हमला किया था, जिसमें उन्होंने कहा कि साम्राज्यवाद को अर्थव्यवस्था की कोई "मंज़िल" या अवस्था नहीं, बल्कि एक नीति समझा जाना चाहिए, एक निश्चित नीति, जिसे वित्त पूंजी "तरजीह देती है"। उन्होंने कहा कि "वर्तमान पूंजीवाद" और साम्राज्यवाद को "एक ही चीज़" नहीं समझना चाहिए, कि यदि साम्राज्यवाद का अर्थ "वर्तमान पूंजीवाद की सभी परिघटनाएं"– कार्टेल, संरक्षणवाद, वित्तपतियों का प्रभुत्व तथा औपनिवेशिक नीति – समझा गया, तो यह प्रश्न कि साम्राज्यवाद पूंजीवाद के लिए आवश्यक है या नहीं "एकदम निरर्थक पुनरुक्ति" बन जायेगा, क्योंकि उस दशा में तो "साम्राज्यवाद स्वाभाविक रूप से पूंजीवाद की एक बुनियादी आवश्यकता है", आदि, आदि। काउत्स्की के विचारों को प्रस्तुत करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि साम्राज्यवाद की उनकी परिभाषा को उद्धृत कर दिया जाये, जो उन विचारों के सारतत्व के सर्वथा प्रतिकूल है, जिन्हें हमने प्रतिपादित किया है (क्योंकि जर्मन मार्क्सवादियों के ख़ेमे से, जो पिछले कई वर्षों से इसी प्रकार के विचारों का समर्थन करते आये हैं, उठायी जानेवाली आपत्तियों के बारे में काउत्स्की बहुत समय से यह जानते हैं कि वे मार्क्सवाद की एक निश्चित धारा की ओर से उठायी जानेवाली आपत्तियां हैं)।

काउत्स्की की परिभाषा इस प्रकार है:

"साम्राज्यवाद अतिविकसित औद्योगिक पूंजीवाद की उपज है। वह हर औद्योगिक पूंजीवादी राष्ट्र की इस चेष्टा में निहित है कि वह अधिक से अधिक विस्तृत **कृषि**" (शब्द पर ज़ोर काउत्स्की का) "प्रदेशों पर इस बात की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपना नियंत्रण स्थापित कर ले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या संयोजित कर ले कि उन प्रदेशों में कौन-सी जातियां आबाद हैं"*।

यह परिभाषा बिलकुल दो कौड़ी की है, क्योंकि उसमें एकतरफ़ा, याने मनमाने ढंग से केवल जातियों के प्रश्न को अलग छांट लिया गया है (हालांकि यह प्रश्न अपने आप में और साम्राज्यवाद के प्रसंग में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है), इसमें इस प्रश्न का संबंध मनमाने तथा ग़लत ढंग से केवल उन देशों की औद्योगिक पूंजी के साथ जोड़ा गया है, जो दूसरे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं, और उतने ही मनमाने तथा ग़लत ढंग से कृषि प्रदेशों पर क़ब्ज़ा करने के प्रश्न को सबसे आगे लाकर रख दिया गया है।

समामेलनों की चेष्टा साम्राज्यवाद है—काउत्स्की की परिभाषा के **राजनीतिक** भाग का तात्पर्य यही है। यह बात सही है, पर बहुत अधूरी है, क्योंकि राजनीतिक दृष्टि से साम्राज्यवाद आम तौर से हिंसा तथा प्रतिक्रियावाद की दिशा में एक प्रयास होता है। परंतु इस समय तो हमें इस सवाल के **आर्थिक** पहलू में दिलचस्पी है, जिसे **अपनी** परिभाषा में काउत्स्की ने **स्वयं** शामिल कर दिया है। काउत्स्की की परिभाषा की ग़लतियों को अंधा भी देख सकता है। साम्राज्यवाद की लाक्षणिक विशेषता औद्योगिक **नहीं**, **बल्कि** वित्त पूंजी है। यह कोई संयोग की बात नहीं है कि फ़्रांस में पिछली शताब्दी के नवें दशक के बाद से समामेलनकारी (औपनिवेशिक) नीति में जो अत्यधिक उग्रता आयी, उसका कारण ठीक यही था कि **वित्त** पूंजी का विकास असाधारण तीव्र गति के साथ हुआ था और औद्योगिक पूंजी कमज़ोर हुई थी। साम्राज्यवाद की लाक्षणिक विशेषता यही है कि वह **न केवल** कृषि प्रदेशों को, बल्कि अत्यंत उद्योगीकृत प्रदेशों को भी समामेलित करने की कोशिश करता है (बेल्जियम के लिए जर्मनी की भूख; लोरेन की बाबत फ़्रांस की भूख), क्योंकि (१) दुनिया का बंटवारा हो चुकने के कारण **पुनर्विभाजन** की बात सोचनेवालों को **हर प्रकार के** इलाक़े की तरफ़ हाथ बढ़ाने पर मजबूर होना पड़ता है और (२) अपना नेतृत्व स्थापित करने की, अर्थात नये इलाक़ों पर विजय प्राप्त

---

* *Die Neue Zeit*, १९१४, २ (खंड ३२), पृ० ९०९, ११ सितंबर, १९१४; तुलना करें १९१५, २, पृ० १०७ तथा आगे के पृष्ठ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने की कोशिश में अनेक महान शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता साम्राज्यवाद की एक बुनियादी विशेषता है, जिसका उद्देश्य स्वयं अपने इलाक़े में वृद्धि करने की अपेक्षा अपने प्रतिद्वंद्वी को कमज़ोर करना और उसके प्राधान्य की जड़ें खोखली करना ज़्यादा होता है (ब्रिटेन के विरुद्ध कार्रवाइयों के अड्डे के रूप में बेल्जियम का जर्मनी के वास्ते विशेष महत्व, जर्मनी के विरुद्ध कार्रवाइयों के अड्डे के रूप में बग़दाद का ब्रिटेन के लिए विशेष महत्व, आदि)।

काउत्स्की विशेष रूप से और बार-बार अंग्रेज़ों का हवाला देते हैं, जिन्होंने उनके कथनानुसार "साम्राज्यवाद" शब्द को ठीक वही शुद्ध राजनीतिक अर्थ प्रदान किया है, जो वह, याने काउत्स्की समझते हैं। यदि हम अंग्रेज़ हावसन की रचना 'साम्राज्यवाद' को लें, जो १६०२ में प्रकाशित हुई थी, तो उसमें हम पढ़ते हैं:

"नया साम्राज्यवाद पुराने साम्राज्यवाद से भिन्न है, पहले तो इस दृष्टि से कि उसने एक ही बढ़ते हुए साम्राज्य की महत्वाकांक्षा के स्थान पर प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यों के सिद्धांत तथा व्यवहार को स्थापित किया है, जिनमें से प्रत्येक साम्राज्य राजनीतिक विस्तार तथा वाणिज्यिक लाभ की एक जैसी लालसा द्वारा प्रेरित होता है; दूसरे, इस दृष्टि से कि वित्तीय अथवा निवेशी हितों ने वाणिज्यिक हितों की तुलना में प्रधानता प्राप्त कर ली है।"*

हम देखते हैं कि काउत्स्की ने आम तौर से अंग्रेज़ों का जो हवाला दिया है, वह बिलकुल ग़लत है (अगर उनका अभिप्राय बाज़ारू अंग्रेज़ साम्राज्यवादियों या साम्राज्यवाद के खुले समर्थकों से था, तो बात दूसरी है)। हम देखते हैं कि काउत्स्की दावा तो यह करते हैं कि वे पहले की ही तरह मार्क्सवाद के समर्थक हैं, पर वास्तव में वे **सामाजिक-उदारतावादी** हावसन से भी एक क़दम पीछे हट गये हैं, जिन्होंने आधुनिक साम्राज्यवाद की "इतिहास की दृष्टि से ठोस" (काउत्स्की की परिभाषा ऐतिहासिक ठोसपन का उपहास है!) दो विशेषताओं पर ज़्यादा सही ढंग से विचार

* Hobson, *Imperialism*, London, 1902, p.324 (हावसन, 'साम्राज्यवाद', लंदन, १६०२, पृ० ३२४–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया है: (१) **अनेक** साम्राज्यवादों के बीच होड़ और (२) व्यापारी की तुलना में वित्तपति की प्रधानता। यदि सवाल मुख्यत: औद्योगिक देशों द्वारा कृषिप्रधान देशों को समामेलित करने का होता, तो व्यापारी की भूमिका सबसे प्रमुख हो जाती।

काउत्स्की की परिभाषा केवल ग़लत और अमार्क्सवादी ही नहीं है। वह एक ऐसी पूरी विचार-पद्धति के आधार का काम करती है, जो आद्यो-पांत मार्क्सवादी सिद्धांत तथा मार्क्सवादी व्यवहार से संबंध-विच्छेद की द्योतक है। इसका उल्लेख हम आगे चलकर करेंगे। काउत्स्की ने शब्दों के बारे में जो यह बहस छेड़ी है कि पूंजीवाद की नवीनतम मंज़िल को साम्राज्यवाद कहा जाना चाहिए या वित्त पूंजी की मंजिल को, वह बिलकुल महत्वहीन है। जो जी में आये, कह लीजिये, उससे कोई अंतर नहीं पड़ता। सार की बात यह है कि काउत्स्की साम्राज्यवाद की राजनीति को उसकी अर्थनीति से अलग कर लेते हैं, वे समामेलनों को एक ऐसी नीति बताते हैं, जिसे वित्त पूंजी मानो "तरजीह देती है", और उसके मुक़ाबले एक दूसरी बुर्जुआ नीति लाकर खड़ी कर देते हैं, जिसके बारे में उनका कहना यह है कि वह इसी वित्त पूंजी के आधार पर संभव हो सकती है। तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्थतंत्र की इजारेदारियां राजनीति के ग़ैर इजारेदारी, अहिंसात्मक तथा ग़ैर समामेलनकारी तरीक़ों के साथ मेल खा सकती हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि दुनिया का क्षेत्रीय विभाजन, जो ठीक वित्त पूंजी के युग में ही पूरा किया गया था और जो सबसे बड़े पूंजीवादी राज्यों के बीच प्रतिद्वंद्विता के वर्तमान विशिष्ट रूपों का आधार है, ग़ैर साम्राज्यवादी नीति के साथ मेल खा सकता है। इसका परिणाम है पूंजीवाद की नवीनतम मंज़िल के गूढ़तम अंतर्विरोधों की गहराई की क़लई खोलने के बजाय उन्हें अनदेखा कर देना तथा उनकी तीव्रता को कम कर देना, इसका परिणाम है मार्क्सवाद के बजाय बुर्जुआ सुधारवाद।

काउत्स्की साम्राज्यवाद तथा समामेलनों की नीति के जर्मन पैरवीकार कूनोव के साथ बहस में उलझ जाते हैं, जो बहुत ही भोंडे ढंग से तथा बेहयाई के साथ तर्क करते हैं कि वर्तमान पूंजीवाद ही साम्राज्यवाद है;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूंजीवाद का विकास अनिवार्य तथा प्रगतिशील है; इसलिए साम्राज्यवाद प्रगतिशील है; इसलिए हमें उसके आगे नाक रगड़ना चाहिए और उसका गुणगान करना चाहिए! यह कुछ-कुछ वैसा ही चित्र है, जैसा कि १८९४–१८९५ में नरोदवादियों ने रूसी मार्क्सवादियों का खींचा था। उन्होंने तर्क किया: यदि मार्क्सवादियों का यह विश्वास है कि पूंजीवाद रूस में अनिवार्य और प्रगतिशील है, तो उन्हें एक शराबख़ाना खोल लेना चाहिए और पूंजीवाद को फैलाना शुरू कर देना चाहिए। कूनोव को काउत्स्की का उत्तर इस प्रकार है: साम्राज्यवाद आजकल का पूंजीवाद नहीं है, वह आजकल के पूंजीवाद की नीति का केवल एक रूप है। हम इस नीति के ख़िलाफ़, साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़, समामेलनों, आदि के ख़िलाफ़ लड़ सकते हैं और हमें लड़ना चाहिए।

यह उत्तर देखने में बिलकुल उचित प्रतीत होता है, परंतु यह दरअसल साम्राज्यवाद के साथ सुलह-मसालहत की ज़्यादा गूढ़ तथा ज़्यादा छिपी हुई (और इसलिए ज़्यादा ख़तरनाक) पैरवी है, क्योंकि ट्रस्टों तथा बैंकों की नीति के ख़िलाफ़ ऐसी "लड़ाई", जिससे ट्रस्टों तथा बैंकों की अर्थनीति के आधार पर कोई प्रभाव न पड़ता हो, बुर्जुआ सुधारवाद तथा शांतिवाद के अलावा, सदिच्छाओं की उदारतापूर्ण तथा निष्कपट अभिव्यक्ति के अलावा और कुछ नहीं है। मौजूदा अंतर्विरोधों की गहराई को उजागर करने के बजाय उनसे कतराना, उनमें से सबसे महत्वपूर्ण को भूल जाना – यह है काउत्स्की का सिद्धांत, जिसमें और मार्क्सवाद में कोई समानता नहीं है। स्वाभाविक रूप से इस प्रकार का "सिद्धांत" केवल कूनोव जैसे लोगों के साथ एकता के विचार की पैरवी करने का काम दे सकता है!

काउत्स्की लिखते हैं: "शुद्धत: आर्थिक दृष्टि से यह असंभव नहीं है कि पूंजीवाद एक और मंज़िल से होकर गुज़रे, विदेश नीति के क्षेत्र में कार्टेलों की नीति के प्रसार की मंज़िल से, अति साम्राज्यवाद की मंज़िल से"*, अर्थात महासाम्राज्यवाद की मंज़िल से गुज़रे, जिसमें सारी दुनिया

* *Die Neue Zeit*, १९१४, २ (खंड ३२), पृ० ९२१, ११ सितंबर, १९१४। तुलना करें १९१५, २, पृ० १०७ तथा आगे के पृष्ठ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के साम्राज्यवादों के बीच संघर्ष न होकर उनका एक संघ वन जायेगा, वह एक ऐसी मंज़िल होगी, जिसमें पूंजीवाद के अंतर्गत युद्ध वंद हो जायेंगे, वह "अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एकवद्ध वित्त पूंजी द्वारा दुनिया के संयुक्त शोषण"* की मंज़िल होगी।

हमें इस "अति साम्राज्यवाद के सिद्धांत" पर आगे चलकर विचार करना होगा, ताकि विस्तारपूर्वक यह वताया जा सके कि वह किस प्रकार निश्चित रूप से तथा पूर्णतः मार्क्सवाद से कट जाता है। इस समय, प्रस्तुत कृति की आम योजना के अनुसार हम इस प्रश्न से संबंधित सही-सही आर्थिक तथ्य-सामग्री की छानबीन करेंगे। "शुद्धतः आर्थिक दृष्टिकोण से" क्या "अति साम्राज्यवाद" संभव है या वह अति बकवास है?

यदि शुद्धतः आर्थिक दृष्टिकोण से अभिप्राय "शुद्ध" विविक्ति है, तो इस संबंध में जो कुछ भी कहा जा सकता है, वह केवल निम्नलिखित प्रस्थापना तक ही सीमित रह जाता है: विकास इजारेदारियों की ओर बढ़ रहा है और फलतः एक ही विश्वव्यापी इजारेदारी की ओर, अर्थात एक ही सार्वभौमिक ट्रस्ट की ओर बढ़ रहा है। यह निर्विवाद है, परंतु साथ ही उतना ही पूर्णतः निरर्थक भी है, जितना कि यह कहना कि "विकास" प्रयोगशालाओं में खाद्य-सामग्री के उत्पादन की दिशा में "बढ़ रहा है"। इस दृष्टि से अति साम्राज्यवाद का "सिद्धांत" "अति कृषि के सिद्धांत" से कम बेतुका नहीं है।

परंतु यदि हम इतिहास की दृष्टि से एक निश्चित युग के रूप में, वित्त पूंजी के युग की "शुद्धतः आर्थिक" परिस्थितियों पर विचार करें, जो बीसवीं शताब्दी के आरंभ में शुरू हुआ था, तो "अति साम्राज्यवाद" की निर्जीव विविक्तियों का (जो केवल एक अत्यंत प्रतिक्रियावादी उद्देश्य को पूरा करती हैं: मौजूदा विग्रहों की गहराई की तरफ़ से ध्यान हटाना) सबसे अच्छा उत्तर यही दिया जा सकता है कि उनकी तुलना वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था की ठोस आर्थिक वास्तविकताओं के साथ कर ली जाये। अति साम्राज्यवाद के वारे में काउत्स्की की सर्वथा निरर्थक वातें और चीज़ों

---

* *Die Neue Zeit*, १९१५, १, पृ० १४४, ३० अप्रैल, १९१५।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के अतिरिक्त उस बहुत ही ग़लत विचार को प्रोत्साहन देती हैं, जिससे केवल साम्राज्यवाद के पक्षधरों को बल मिलता है, अर्थात इस विचार को कि वित्त पूंजी का प्रभुत्व विश्व अर्थव्यवस्था में निहित असमानता तथा अंतर्विरोधों को **कम करता है**, जबकि वास्तव में वह उन्हें **बढ़ा देता है**।

रीखर्ड काल्वेर ने अपनी 'विश्व अर्थव्यवस्था की भूमिका' नामक छोटी-सी पुस्तक * में उस मुख्य, शुद्धतः आर्थिक तथ्य-सामग्री का सारांश प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है, जिससे हमें उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दियों के संगम पर विश्व अर्थव्यवस्था के आंतरिक संबंधों का ठोस चित्र प्राप्त हो सकता है। उन्होंने दुनिया को पांच "मुख्य आर्थिक क्षेत्रों" में विभाजित किया है: (१) मध्य यूरोप (रूस तथा ग्रेट ब्रिटेन को छोड़कर सारा यूरोप); (२) ब्रिटेन; (३) रूस; (४) पूर्वी एशिया; (५) अमरीका; उन्होंने उपनिवेशों को उन राज्यों के "क्षेत्रों" में शामिल किया है, जिनका उन पर आधिपत्य है, और कुछ देशों को, जिन्हें क्षेत्रों के हिसाब से बांटा नहीं गया है, जैसे एशिया में फ़ारस, अफ़गानिस्तान तथा अरब को, अफ़्रीका में मोरक्को तथा अबीसीनिया, आदि को, उन्होंने "छोड़ दिया है"।

इन प्रदेशों के बारे में उन्होंने जो आर्थिक तथ्य-सामग्री उद्धृत की है, उसका सारांश यह है: (देखें तालिका पृ० ३१९)।

हम देखते हैं कि तीन क्षेत्र ऐसे हैं, जहां पूंजीवाद बहुत विकसित है (परिवहन, व्यापार तथा उद्योग के विकास का उच्च स्तर): मध्य यूरोपीय, ब्रिटिश तथा अमरीकी क्षेत्र। इन्हीं में वे तीन राज्य हैं, जिनका दुनिया पर प्रभुत्व क़ायम है: जर्मनी, ब्रिटेन तथा संयुक्त राज्य अमरीका। इन देशों के बीच साम्राज्यवादी प्रतिद्वंद्विता तथा संघर्ष ने अत्यंत उग्र रूप धारण कर लिया है, क्योंकि जर्मनी का क्षेत्रफल बहुत ही नगण्य और उसके उपनिवेशों की संख्या बहुत थोड़ी है; "मध्य यूरोप" की रचना अभी तक भविष्य की बात है, भीषण संघर्ष के बीच उसका जन्म हो रहा है।

---

* R. Calwer, *Einführung in die Weltwirtschaft*, Berlin, 1906 (रीखर्ड काल्वेर, 'विश्व अर्थव्यवस्था की भूमिका', बर्लिन, १९०६ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुनिया के मुख्य आर्थिक क्षेत्र	क्षेत्रफल	आबादी	परिवहन		व्यापार	उद्योग		
	लाख वर्ग किलोमीटरों में	लाखों में	रेलें (हजार किलोमीटरों में)	व्यापारिक बेड़ा (लाख टनों में)	आयात और निर्यात (अरब मार्कों में)	कोयला-उत्पादन (लाख टनों में)	कच्चे लोहे का उत्पादन (लाख टनों में)	सूती उद्योग में तकुओं की संख्या (लाखों में)
१) मध्य यूरोप . . .	२७६ (२३६)*	३,८८० (१,४६०)*	२०४	८०	४१	२,५१०	१५०	२६०
२) ब्रिटेन	२८९ (२८६)*	३,९८० (३,५५०)*	१४०	११०	२५	२,४९०	९०	५१०
३) रूस	२२०	१,३१०	६३	१०	३	१६०	३०	७०
४) पूर्वी एशिया . . .	१२०	३,८९०	८	१०	२	८०	०.२	२०
५) अमरीका	३००	१,४८०	३७९	६०	१४	२,४५०	१४०	१९०

* कोष्ठकों के अंदरवाले आंकड़े उपनिवेशों के क्षेत्रफल तथा उनकी जनसंख्या के सूचक हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस समय पूरे यूरोप की लाक्षणिक विशेषता राजनीतिक विच्छिन्नता है। दूसरी ओर, ब्रिटिश तथा अमरीकी क्षेत्रों में राजनीतिक संकेंद्रण बहुत विकसित है, परंतु पहले के अतिविस्तृत उपनिवेशों तथा दूसरे के नगण्य उपनिवेशों के बीच बहुत बड़ा अंतर है। उपनिवेशों में पूंजीवाद का विकास अभी आरंभ ही हो रहा है। दक्षिणी अमरीका के लिए संघर्ष अधिकाधिक उग्र रूप धारण करता जा रहा है।

दो क्षेत्र – रूस और पूर्वी एशिया – ऐसे हैं, जहां पूंजीवाद का विकास बहुत कम हुआ है। रूस में आबादी बहुत कम घनी है और पूर्वी एशिया में बहुत ही अधिक घनी है; रूस में राजनीतिक संकेंद्रण का स्तर बहुत ऊंचा है और पूर्वी एशिया में है ही नहीं। चीन का विभाजन अभी आरंभ ही हो रहा है और उसके लिए जापान, संयुक्त राज्य अमरीका, आदि का पारस्परिक संघर्ष निरंतर उग्रतर रूप धारण करता जा रहा है।

इस वास्तविकता – आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों की अत्यधिक विषमता, विभिन्न देशों के विकास की रफ़्तार में अत्यधिक अंतर, आदि और साम्राज्यवादी राज्यों के बीच भीषण संघर्ष – की तुलना "शांतिपूर्ण" अति साम्राज्यवाद के बारे में काउत्स्की की मूर्खतापूर्ण कपोल-कल्पना के साथ कीजिये। क्या यह एक भयभीत कूपमंडूक की कठोर वास्तविकता से छिपने की प्रतिक्रियावादी कोशिश नहीं है? जिन अंतर्राष्ट्रीय कार्टेलों को काउत्स्की "अति साम्राज्यवाद" के अंकुर समझते हैं (उसी प्रकार जैसे हम प्रयोगशाला में गोलियों के निर्माण को अति कृषि का अंकुर कह "सकते" हैं), क्या वे दुनिया के विभाजन **तथा पुनर्विभाजन** का, शांतिपूर्ण विभाजन से अशांतिपूर्ण विभाजन में और अशांतिपूर्ण विभाजन से फिर शांतिपूर्ण विभाजन में संक्रमण का उदाहरण नहीं हैं? क्या अमरीकी तथा दूसरी वित्त पूंजी, जिसने, उदाहरण के लिए, अंतर्राष्ट्रीय रेल सिंडिकेट में या अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक जहाज़रानी ट्रस्ट में जर्मनी को भी शरीक करके सारी दुनिया को शांतिपूर्वक बांट लिया था, इस समय शक्तियों के एक नये संतुलन के आधार पर, जिसे सर्वथा अशांतिपूर्ण तरीक़ों से बदला जा रहा है, दुनिया का **पुनर्विभाजन** करने में व्यस्त नहीं है?

वित्त पूंजी तथा ट्रस्ट विश्व अर्थव्यवस्था के विभिन्न भागों के विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की गति के अंतर को कम नहीं करते, बल्कि बढ़ा देते हैं। एक बार शक्तियों का संतुलन बदल जाने पर **पूंजीवाद के अंतर्गत** इन अंतर्विरोधों को हल करने के लिए **बल-प्रयोग** के अतिरिक्त और क्या उपाय हो सकता है? रेल संबंधी आंकड़ों* में विश्व अर्थव्यवस्था में पूंजीवाद तथा वित्त पूंजी के विकास की अलग-अलग रफ़्तारों के बारे में बहुत ही सही-सही तथ्य-सामग्री मिलती है। साम्राज्यवादी विकास के अंतिम दशकों में रेलों की कुल लंबाई में इस प्रकार परिवर्तन हुए:

रेलें
(हजार किलोमीटरों में)

	१८९०		१९१३		बढ़ती	
यूरोप	२२४		३४६		+१२२	
सं० रा० अमरीका	२६८		४११		+१४३	
सब उपनिवेश	८२	१२५	२१०	३४७	+१२८	+२२२
एशिया और अमरीका के स्वाधीन और अर्द्धस्वाधीन राज्य	४३		१३७		+ ९४	
कुल	६१७		१,१०४			

इस प्रकार हम देखते हैं कि रेलों का विकास अधिक तीव्र गति से उपनिवेशों और एशिया तथा अमरीका के स्वाधीन (तथा अर्द्धस्वाधीन) राज्यों में हुआ है। जैसा कि हम जानते हैं, यहां चार या पांच सबसे बड़े पूंजीवादी राज्यों की वित्त पूंजी का एकच्छत्र प्रभुत्व है। उपनिवेशों में

* *Stat. Jahrbuch für das Deutsche Reich*, 1915; *Archiv für Eisenbahnwesen*, 1892 (जर्मन साम्राज्य की सांख्यिकीय वार्षिकी, १९१५; रेलमार्ग पुरालेख, १८९२ – सं०)। १८९० में विभिन्न देशों के उपनिवेशों में रेलों के वितरण से संबंधित ब्योरे की बातों का मोटा अनुमान ही लगाना पड़ा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और एशिया तथा अमरीका के अन्य देशों में दो लाख किलोमीटर लंबी नयी रेल-लाइनें ४० अरब मार्क से अधिक पूंजी की द्योतक हैं, जो विशेषतः लाभप्रद शर्तों पर और इस बात की विशेष गारंटी हासिल कर लेने के बाद लगायी गयी है कि उस पर अच्छा मुनाफ़ा होगा और इस्पात के कारख़ानों को लाभप्रद आर्डर दिये जायेंगे, आदि, आदि।

पूंजीवाद का विकास सबसे अधिक तेज़ी के साथ उपनिवेशों में तथा समुद्र-पार के देशों में हो रहा है। समुद्र-पार के देशों में नयी साम्राज्यवादी ताक़तें उभर रही हैं (जापान)। विश्व साम्राज्यवाद के अंदर संघर्ष उग्रतर होता जा रहा है। वित्त पूंजी उपनिवेशों तथा समुद्र-पार के देशों के सबसे अधिक लाभप्रद उद्यमों से जो ख़िराज वसूल करती है, वह बढ़ता जा रहा है। इस "लूट के माल" के बंटवारे में एक असाधारण रूप से बड़ा हिस्सा उन देशों को मिलता है, जो उत्पादक शक्तियों के विकास की गति की दृष्टि से हमेशा सबसे आगे नहीं होते। सबसे बड़े देशों में, उनके उपनिवेशों सहित, रेलवे लाइनों की कुल लंबाई इस प्रकार थी :

	हज़ार किलोमीटरों में		
	१८९०	१९१३	बढ़ती
सं० रा० अमरीका	२६८	४१३	+१४५
ब्रिटिश साम्राज्य	१०७	२०८	+१०१
रूस	३२	७८	+ ४६
जर्मनी	४३	६८	+ २५
फ़्रांस	४१	६३	+ २२
पांच शक्तियों का कुल योग	४९१	८३०	+३३९

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस समय कुल जितनी रेलवे लाइनें हैं, उनका लगभग ८० प्रतिशत पांच सबसे महान शक्तियों के हाथों में केंद्रित है। परंतु इन रेलों के **स्वामित्व** का संकेंद्रण, वित्त पूंजी का संकेंद्रण इससे भी कहीं ज्यादा है, क्योंकि, उदाहरण के लिए, अंग्रेज़ तथा फ़्रांसीसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करोड़पतियों के पास अमरीकी, रूसी तथा अन्य रेलों के बहुत बड़ी-बड़ी रक़मों के शेयर तथा बांड हैं।

अपने उपनिवेशों की बदौलत ब्रिटेन ने "अपनी" रेलों की लंबाई में १,००,००० किलोमीटर की वृद्धि कर ली है, अर्थात जर्मनी की तुलना में चार गुनी। फिर भी यह बात सर्वविदित है कि जर्मनी में उत्पादक शक्तियों का विकास, विशेष रूप से कोयले तथा लोहे के उद्योगों का विकास इस अवधि में – फ़्रांस तथा रूस की बात तो जाने दीजिये – ब्रिटेन की तुलना में भी बहुत ही ज्यादा तीव्र गति से हुआ है। १८९२ में कच्चे लोहे का उत्पादन जर्मनी में ४९,००,००० टन और ब्रिटेन में ६८,००,००० टन था; १९१२ में जर्मनी का उत्पादन १,७६,००,००० टन हो गया और ब्रिटेन का ९०,००,००० टन। इस प्रकार इस मामले में जर्मनी की श्रेष्ठता ब्रिटेन के मुक़ाबले में कहीं अधिक थी! * सवाल यह है कि एक ओर तो उत्पादक शक्तियों के विकास तथा पूंजी के संचयन और दूसरी ओर, उपनिवेशों तथा वित्त पूंजी के लिए "प्रभाव-क्षेत्रों" के विभाजन के बीच जो विषमता थी, उसे दूर करने का **पूंजीवाद के अंतर्गत युद्ध** के अतिरिक्त और क्या उपाय हो सकता था?

८. पूंजीवाद की परजीविता तथा ह्रास

हमें अब साम्राज्यवाद के एक दूसरे बहुत ही महत्वपूर्ण पहलू पर विचार करना है, जिसको आम तौर से इस विषय से संबंधित मूल्यांकनों में अपर्याप्त महत्व दिया जाता है। मार्क्सवादी हिल्फ़र्डिंग की एक कमज़ोरी यह है कि यहां वह ग़ैर मार्क्सवादी हाबसन की तुलना में एक क़दम पीछे चले

---

*तुलना करें Edgar Crammond, *The Economic Relations of the British and German Empires, Journal of the Royal Statistical Society*, 1914, July, pp. 777 ss. (एडगर क्रैम्मोंड, 'ब्रिटिश तथा जर्मन साम्राज्यों के आर्थिक संबंध', शाही सांख्यिकीय सोसायटी की पत्रिका, १९१४, जुलाई, पृ० ७७७ तथा आगे के पृष्ठ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये हैं। हमारा संकेत साम्राज्यवाद की परजीविता की ओर है, जो उसकी एक लाक्षणिकता है।

जैसा कि हम देख चुके हैं, साम्राज्यवाद की सबसे गहरी आर्थिक नींव इजारेदारी है। यह पूंजीवादी इजारेदारी है, अर्थात ऐसी इजारेदारी, जो पूंजीवाद से उत्पन्न हुई है और पूंजीवाद, माल-उत्पादन तथा होड़ के सामान्य परिवेश में रहती है और उस सामान्य परिवेश के साथ उसका स्थायी तथा अमिट विरोध रहता है। फिर भी हर इजारेदारी की तरह यह भी अनिवार्य रूप से गतिरोध तथा ह्रास की प्रवृत्ति को जन्म देती है। चूंकि, अस्थायी रूप से ही सही, इजारेदाराना क़ीमतें स्थापित हो जाती हैं, इसलिए कुछ हद तक तकनीकी उन्नति की और फलस्वरूप हर उन्नति की प्रेरक शक्ति ख़त्म हो जाती है और फलतः तकनीकी उन्नति की रफ़्तार को जान-बूझकर धीमा कर देने की **आर्थिक** संभावना उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए, अमरीका में ओवेन्स नामक किसी व्यक्ति ने एक ऐसी मशीन का आविष्कार किया, जिससे बोतलों के उत्पादन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया। जर्मनी के बोतलें बनानेवाले कार्टेल ने ओवेन्स का पेटेंट ख़रीद लिया, परंतु उसे ताक़ पर रख दिया, उसका इस्तेमाल नहीं किया। इसमें कोई संदेह नहीं कि पूंजीवाद के अंतर्गत इजारेदारी विश्व मंडी से होड़ को कभी भी पूरी तरह और बहुत दीर्घकाल के लिए ख़त्म नहीं कर सकती (और प्रसंगवश बता दें कि अति साम्राज्यवाद के सिद्धांत के इतना बेतुका होने का यह भी एक कारण है)। निस्संदेह तकनीकी सुधारों का उपयोग करने से उत्पादन की लागत में कमी और मुनाफ़े में वृद्धि की संभावना परिवर्तन की दिशा में क्रियाशील रहती है। परंतु गतिरोध तथा ह्रास की **प्रवृत्ति**, जो इजारेदारी की लाक्षणिकता है, अपना काम करती रहती है और उद्योगों की कुछ शाखाओं में, कुछ देशों में, कुछ समय के लिए उसका पलड़ा भारी हो जाता है।

अत्यंत विस्तृत, समृद्ध या सुस्थित उपनिवेशों पर इजारेदाराना स्वामित्व भी उसी दिशा में क्रियाशील रहता है।

इसके अतिरिक्त साम्राज्यवाद का अर्थ है कुछ थोड़े-से देशों में मुद्रा-पूंजी का विपुल संचयन, जैसा कि हम देख चुके हैं, यह संचयन सिक्यूरि-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टियों के रूप में १००–१५० अरब फ़्रांक तक होता है। इसलिए किराया-जीवियों के एक वर्ग की, बल्कि कहना चाहिए, एक सामाजिक स्तर की, अर्थात ऐसे लोगों की असाधारण रूप से वृद्धि होती है, जो "कूपन काटकर" अपनी जीविका कमाते हैं, जो किसी भी उद्यम में कोई हिस्सा नहीं लेते हैं, जिनका पेशा ही हरामख़ोरी होता है। पूंजी का निर्यात, जो साम्राज्य-वाद का एक सबसे बुनियादी आर्थिक आधार है, किरायाजीवियों को उत्पादन-व्यवस्था से और भी पूरी तरह अलग कर देता है और पूरे देश पर, जो समुद्र-पार के कई देशों तथा उपनिवेशों के श्रम का शोषण करके जीवित रहता है, परजीविता की मुहर लगा देता है।

हावसन लिखते हैं: "१८९३ में विदेशों में जो ब्रिटिश पूंजी लगी हुई थी, वह यूनाइटेड किंगडम की कुल संपदा के लगभग १५ प्रतिशत के बराबर थी"*। हम पाठकों को याद दिलायेंगे कि १९१५ तक यह पूंजी लगभग ढाई गुनी बढ़ गयी थी। आगे चलकर हावसन कहते हैं: "आक्रामक साम्राज्यवाद, जो टैक्स अदा करनेवालों को इतना महंगा पड़ता है और कारख़ानेदारों तथा व्यापारियों के लिए इतने कम महत्व का है,... पूंजी-पतियों के लिए, जो अपनी पूंजी लगाने के लिए स्थान की तलाश करते रहते हैं"... (अंग्रेज़ी में यह अवधारणा एक शब्द "इन्वेस्टर", याने "पूंजी-निवेशी", किरायाजीवी द्वारा व्यक्त होती है), "बहुत मुनाफ़े का स्रोत है... ग्रेट ब्रिटेन को अपने पूरे विदेश तथा औपनिवेशिक व्यापार से, आयात तथा निर्यात से, कमीशन के रूप में प्रति वर्ष जो आय होती है, उसके बारे में सांख्यिकीविद गिफ़ेन ने यह अनुमान लगाया है कि १८९९ में वह ८०,००,००,००० पौंड के कुल लेन-देन पर २.५ प्रतिशत के हिसाब से १,८०,००,००० पौंड (लगभग १७,००,००,००० रूबल) थी।" चाहे यह रक़म कितनी भी बड़ी क्यों न हो, उससे ग्रेट ब्रिटेन के आक्रामक साम्राज्य-वाद की व्याख्या नहीं हो सकती। उसकी व्याख्या तो "लगायी गयी" पूंजी से होनेवाली ९–१० करोड़ पौंड की आय से, किरायाजीवियों की आय से ही, हो सकती है।

---

*हावसन, 'साम्राज्यवाद', पृ० ५९, ६२।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरायाजीवियों की आय संसार के सबसे बड़े "व्यापारी" देश के विदेश व्यापार से होनेवाली कुल आय से **पांच** गुनी अधिक है! यह है साम्राज्यवाद तथा साम्राज्यवाद के परजीवी स्वभाव का निचोड़।

यही कारण है कि साम्राज्यवाद विषयक आर्थिक साहित्य में "किरायाजीवी राज्य" (Rentnerstaat) या सूदख़ोर राज्य शब्दों का प्रयोग आम तौर पर होने लगा है। दुनिया मुट्ठी भर सूदख़ोर राज्यों तथा अत्यधिक बहुसंख्यक ऋणी राज्यों में बंट गयी है। शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ लिखते हैं: "विदेशी पूंजी-निवेशों की सूची में सबसे पहला स्थान उस पूंजी का है, जो राजनीतिक दृष्टि से आश्रित अथवा मित्र देशों में लगायी जाती है: ग्रेट ब्रिटेन मिस्र, जापान, चीन तथा दक्षिणी अमरीका को ऋण देता है। उसकी नौसेना आवश्यकता पड़ने पर क़ुर्क़-अमीन का काम करती है। ग्रेट ब्रिटेन की राजनीतिक ताक़त उसे अपने क़र्ज़दारों के रोष से सुरक्षित रखती है।"* सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्सहाउज़ेन ने अपनी पुस्तक 'विदेशों में पूंजी लगाने की राष्ट्रीय आर्थिक पद्धति' में एक "सूदख़ोर राज्य" की सबसे अच्छी मिसाल के रूप में हालैंड का उल्लेख किया है और यह बताया है कि ग्रेट ब्रिटेन तथा फ़्रांस भी अब वैसे ही बनते जा रहे हैं**। शिल्डर का यह मत है कि पांच औद्योगिक राज्य "निश्चित रूप से ऋण देनेवाले देश" बन गये हैं: ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस, जर्मनी, बेल्जियम तथा स्विट्ज़रलैंड। उन्होंने इस सूची में हालैंड को केवल इसलिए शामिल नहीं किया है कि वह "औद्योगिक दृष्टि से बहुत कम विकसित" है***। संयुक्त राज्य अमरीका का ऋण केवल अमरीकी देशों पर है।

शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ लिखते हैं: "ग्रेट ब्रिटेन धीरे-धीरे औद्योगिक राज्य से साहूकार राज्य बनता जा रहा है। औद्योगिक उत्पादन तथा औद्योगिक

---

* शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा आंग्ल स्वतंत्र व्यापार', पृ० ३२० तथा आगे के पृष्ठ।

** सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्सहाउज़ेन, 'विदेशों में पूंजी लगाने की राष्ट्रीय आर्थिक पद्धति', बर्लिन, १९०७, खंड ४।

*** शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', पृ० ३९३।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्यात की कुल मात्रा में वृद्धि के बावजूद सूद तथा लाभांशों से, सिक्यूरिटियों के जारी करने, कमीशनों तथा सट्टेबाज़ी से होनेवाली आय का सापेक्ष महत्व पूरी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में बढ़ता जा रहा है। मेरी राय में यही बात है, जो साम्राज्यवाद की उन्नति का आर्थिक आधार है। क़र्ज़दार के साथ क़र्ज़ देनेवाले का संबंध ख़रीदार के साथ माल बेचनेवाले के संबंध की अपेक्षा अधिक दृढ़ होता है।"* जर्मनी के बारे में अल्फ़्रेड लैंसबर्ग ने, जो बर्लिन की *Die Bank* नामक पत्रिका के प्रकाशक थे, १९११ में 'जर्मनी – एक किरायाजीवी राज्य' शीर्षक अपने लेख में लिखा: "फ़्रांस में किरायाजीवी बनने की जो लालसा पायी जाती है, उस पर जर्मनीवाले हंसने को तैयार रहते हैं। परंतु लोग इस बात को भूल जाते हैं कि जहां तक बुर्जुआ वर्ग का सवाल है, जर्मनी में भी परिस्थिति अधिकाधिक फ़्रांस जैसी ही होती जा रही है।"**

किरायाजीवी राज्य परजीवी, ह्रासोन्मुख पूंजीवाद का राज्य है और इस बात का प्रभाव संबंधित देशों की सभी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों पर आम तौर से और मज़दूर आंदोलन की दो मूलभूत धाराओं पर ख़ास तौर से पड़े बिना नहीं रह सकता। इस बात को यथासंभव स्पष्टतम रूप में व्यक्त करने के लिए हम हाबसन का उद्धरण देंगे, जो सबसे "विश्वसनीय" गवाह हैं, क्योंकि उन पर "मार्क्सवादी लकीर-पिटाई" की ओर झुकाव रखने की शंका नहीं की जा सकती; दूसरी ओर, वह अंग्रेज़ हैं और उस देश की परिस्थिति से भली भांति परिचित हैं, जो उपनिवेशों के मामले में, वित्त पूंजी के मामले में तथा साम्राज्यवादी अनुभव के मामले में सबसे समृद्ध है।

हाबसन के दिमाग़ में आंग्ल-बोएर युद्ध की याद ताज़ा थी और वह साम्राज्यवाद तथा "वित्तपतियों" के हितों के पारस्परिक संबंध, ठेकों, संभरणों, आदि से उनके बढ़ते हुए मुनाफ़ों का उल्लेख करते हैं और लिखते

---

* शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा आंग्ल स्वतंत्र व्यापार', पृ० १२२।

** *Die Bank*, १९११, १, पृ० १०–११।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हैं: "यद्यपि इस निश्चित रूप से परजीवी नीति के संचालक पूंजीपति हैं, परंतु यही उद्देश्य मज़दूरों के कुछ विशेष स्तरों को भी पसंद आते हैं। कई शहरों में उद्योग की सबसे महत्वपूर्ण शाखाएं सरकारी आर्डरों पर निर्भर करती हैं; धातुकर्म तथा जहाज़-निर्माण केंद्रों का साम्राज्यवाद काफ़ी बड़ी हद तक उसी बात पर निर्भर करता है।" इस लेखक की राय में पुराने साम्राज्य दो कारणों से कमज़ोर हुए हैं: (१) "आर्थिक परजीविता" और (२) अधीनस्थ जातियों से भरती लोगों से सेनाओं का निर्माण। "पहला है उस आर्थिक परजीविता का लक्षण, जिसके कारण प्रभुत्वशाली राज्य ने अपने प्रांतों, उपनिवेशों तथा अधीन देशों का अपने शासक वर्ग को धनवान बनाने के लिए तथा अपने निम्नतर वर्गों को रिश्वत देने के लिए उपयोग किया है, ताकि वे ख़ामोश बैठ रहें"। इसके साथ हम इतना और कहेंगे कि इस प्रकार की रिश्वत देने की आर्थिक संभावना के लिए, भले ही उसका कोई भी रूप हो, बहुत ऊंचे इजारेदाराना मुनाफ़ों की आवश्यकता होती है।

दूसरे कारण के बारे में हावसन लिखते हैं: "ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस तथा अन्य साम्राज्यवादी राष्ट्र आगा-पीछा सोचे बिना जिस बेफ़िक्री के साथ इस ख़तरनाक मार्ग पर क़दम रख रहे हैं, वह साम्राज्यवाद के अंधेपन का एक सबसे अद्भुत लक्षण है। ग्रेट ब्रिटेन सबसे आगे निकल गया है। जिन लड़ाइयों द्वारा हमने अपना हिन्दुस्तानी साम्राज्य जीता है, उसमें अधिकतर वहीं के निवासी लड़े थे; हिन्दुस्तान में, जैसा कि अभी हाल में मिस्र में भी हुआ है, बड़ी-बड़ी स्थायी सेनाएं ब्रिटिश कमांडरों के अधीन कर दी गयी हैं; अफ़्रीकी राज्यों को जीतने के सिलसिले में, दक्षिणी भाग को छोड़कर, जितनी भी लड़ाइयां हुई हैं, प्रायः उन सभी में हमारी तरफ़ से वहां के निवासी ही लड़े हैं।"

चीन के विभाजन की संभावना का आर्थिक दृष्टि से मूल्यांकन करते हुए हावसन लिखते हैं: "उस दशा में यह संभव है कि पश्चिमी यूरोप के अधिकांश भाग की सूरत-शक्ल और विशेषताएं वही हो जायें, जो हम इस समय भी इंगलैंड के दक्षिणी भाग के कुछ हिस्सों में, रिव्येरा में और इटली तथा स्विट्ज़रलैंड के धनिकों के रिहायशी इलाक़ों में या उन हिस्सों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में देखते हैं, जहां सैर के लिए आनेवालों की भरमार रहती है, याने धनवान अभिजात वर्गीय लोगों के छोटे-छोटे समूह, जो दूर पूर्व से लाभांश और पेंशनें वसूल करेंगे, उनमें से कुछ बड़ा समूह पेशेवर सेवकों तथा व्यापारियों का होगा और एक बहुत बड़ा समूह ज़ाती नौकर-चाकरों और परिवहन-उद्योग में तथा अंतिम रूप से परिष्कृत माल बनानेवाले उद्योग में जुटे मज़दूरों का होगा। सभी बुनियादी उद्योगों का लोप हो चुका होगा, मुख्य खाद्य-सामग्री तथा अर्द्धतैयार माल एशिया तथा अफ़्रीका से ख़िराज के रूप में आया करेगा।" "यों, हमारे सामने पश्चिमी राज्यों के अधिक व्यापक गंठजोड़ से, महान शक्तियों के उस यूरोपीय संघ से यही संभावना उजागर होती है; यह संघ न केवल विश्व सभ्यता के ध्येय को आगे नहीं बढ़ायेगा, बल्कि पश्चिमी परजीविता के उस प्रचंड संकट का सूचक बन सकता है, जब उन्नत औद्योगिक राष्ट्रों के एक समूह के उच्च वर्ग एशिया तथा अफ़्रीका से भारी ख़िराज वसूल करेंगे, जिसकी सहायता से वे उन बहुसंख्यक पालतू बनाये गये कर्मचारियों और नौकरों का भरण-पोषण करेंगे, जो खेती और उद्योग की सार्वजनिक उपजों के उत्पादन में नहीं, बल्कि निजी सेवाओं या नये वित्तीय अभिजात वर्ग के नियंत्रण में छोटे-मोटे औद्योगिक काम में लग गये होंगे। जो लोग इस सिद्धांत" (इसे संभावना कहना अधिक उचित होगा) "को विचार करने के अयोग्य कहकर टाल देने को तैयार हैं, वे आज के दक्षिणी इंगलैंड के उन ज़िलों की आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों की छानबीन करें, जो वैसी हालत में पहुंच चुके हैं; वे ऐसी पद्धति के बहुत विस्तृत रूप से फैल जाने पर विचार करें, जो वित्तपतियों, 'पूंजी-निवेशियों' के ऐसे ही समूहों और उनके राजनीतिक तथा व्यापारिक-औद्योगिक कर्मचारियों का चीन पर आर्थिक नियंत्रण स्थापित हो जाने से संभव हो सकती है, जो मुनाफ़े के संसार में अब तक ज्ञात सबसे बड़े निहित भंडार को धीरे-धीरे ख़ाली करते रहेंगे, ताकि उसका उपभोग यूरोप में कर सकें। परिस्थिति इतनी ज़्यादा जटिल है, विश्व शक्तियों की पारस्परिक क्रिया इतनी अधिक अज्ञेय है कि भविष्य के बारे में इस या दूसरी किसी कल्पना के संभव होने के बारे में निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता; परंतु आज पश्चिमी यूरोप के साम्राज्य-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाद को जो प्रभाव शासित करते हैं, वे इसी दिशा में जा रहे हैं और यदि उनका मुक़ाबला नहीं किया जायेगा या उनकी दिशा को मोड़ा नहीं जायेगा, तो वे इसी परिणति की ओर बढ़ते रहेंगे।"*

लेखक का कहना बिलकुल ठीक है: **यदि** साम्राज्यवाद की शक्तियों का मुक़ाबला नहीं किया गया होता, तो वे ठीक उसी लक्ष्य की ओर बढ़तीं, जिसका लेखक ने वर्णन किया है। वर्तमान, साम्राज्यवादी परिस्थिति में "संयुक्त राज्य यूरोप" के महत्व का मूल्यांकन सही-सही किया गया है। परंतु, उन्हें इतना और कह देना चाहिए था कि अवसरवादी, जो इस समय अस्थायी तौर से अधिकांश देशों में विजयी हो गये हैं, मज़दूर आंदोलन **के भीतर भी** सुव्यवस्थित तथा अडिग रूप से इसी दिशा में "काम कर रहे हैं"। साम्राज्यवाद, जिसका अर्थ दुनिया का बंटवारा और चीन के अतिरिक्त अन्य देशों का भी शोषण है, जिसका अर्थ इने-गिने बहुत धनवान देशों के लिए बहुत ऊंचे इजारेदाराना मुनाफ़े हैं, सर्वहारा वर्ग के उच्चतर स्तरों को रिश्वत खिलाने की आर्थिक संभावना उत्पन्न करता है और इस प्रकार अवसरवाद का पोषण करता है, उसे एक निश्चित रूप देता है और मज़बूत बनाता है। परंतु हमें उन शक्तियों को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए, जो आम तौर से साम्राज्यवाद का और ख़ास तौर से अवसरवाद का प्रतिकार करती हैं, जिन्हें स्वभावतः सामाजिक-उदारतावादी हावसन नहीं देख पाते।

जर्मन अवसरवादी गेरहार्ड हिल्डेब्रांड ने, जिन्हें कभी साम्राज्यवाद का समर्थन करने के कारण पार्टी से निकाल दिया गया था और जो आज जर्मनी की तथाकथित "सामाजिक-जनवादी" पार्टी के नेता बन सकते हैं, अफ़्रीका के नीग्रो लोगों के ख़िलाफ़, "महान इस्लामी आंदोलन" के ख़िलाफ़, "शक्तिशाली सेना तथा नौसेना" बनाये रखने के लिए, "चीनी-जापानी गंठजोड़" के ख़िलाफ़ और इसी तरह अन्य लक्ष्यों की पूर्ति के लिए "संयुक्त" कार्रवाई के उद्देश्य से "पश्चिमी यूरोप के संयुक्त राज्य" (रूस

---

*हावसन, 'साम्राज्यवाद', पृ० १०३, २०५, १४४, ३३५, ३८६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को छोड़कर) का प्रचार करके* हाबसन की बात की बड़े अच्छे ढंग से अनुपूर्ति कर दी है।

शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ की पुस्तक में "ब्रिटिश साम्राज्यवाद" का जो विवरण मिलता है, उससे भी इन्हीं परजीवी प्रवृत्तियों का पता चलता है। १८६५ और १८६८ के बीच ग्रेट ब्रिटेन की राष्ट्रीय आय लगभग दुगुनी हो गयी और उसी काल में "विदेशों से" होनेवाली आय नौगुनी। अगर साम्राज्य-वाद का "गुण" इस बात में है कि वह "नीग्रो को श्रम की आदतें सिखा देता है" (ज़ाहिर है, बल-प्रयोग के बिना नहीं...), तो साम्राज्यवाद की "ख़तरनाक बात" यह है कि "यूरोप शारीरिक श्रम का–पहले कृषि तथा खानों के काम का और फिर उद्योगों के ज़्यादा मोटे काम का–बोझ काली जातियों के कंधों पर डालकर स्वयं कियायाजीवी बनकर संतुष्ट हो जायेगा और इस प्रकार, शायद, काली और लाल जातियों की आर्थिक मुक्ति के लिए और बाद में उनकी राजनीतिक मुक्ति के लिए रास्ता साफ़ करेगा"।

इंगलैंड में भूमि के निरंतर बढ़ते हुए भाग पर खेती बंद करके उसे खेल-कूद के लिए, अमीरों के मनोरंजन के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है। स्काटलैंड के बारे में, जो शिकार तथा दूसरी क्रीड़ाओं के लिए सबसे ठाठदार स्थान है, कहा जाता है कि "वह अपने अतीत और श्री कारनेगी" (अमरीकी अरबपति) "के बल पर जीवित है"। इंगलैंड अकेले घुड़दौड़ और लोमड़ियों के शिकार पर प्रति वर्ष १,४०,००,००० पौंड (लगभग १३,००,००,००० रूबल) ख़र्च करता है। इंगलैंड में इस समय किराया-जीवियों की संख्या लगभग दस लाख है। कुल जनसंख्या में उत्पादनात्मक रोज़गार में लगी हुई जनसंख्या का प्रतिशत अनुपात घटता जा रहा है:

---

* Gerhard Hildebrand, *Die Erschütterung der Industrie-herrschaft und des Industriesozialismus*, 1910, S. 229 (गेरहार्ड हिल्डेब्रांड, 'औद्योगिक प्रभुत्व तथा औद्योगिक समाजवाद का तहस-नहस', १६१०, पृ० २२६ तथा आगे के पृष्ठ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

	ब्रिटेन की जनसंख्या	बुनियादी उद्योगों में मज़दूरों की संख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत अनुपात
	(लाखों में)		
१८५१	१७९	४१	२३
१९०१	३२५	४९	१५

फिर अंग्रेज़ मज़दूर वर्ग का उल्लेख करते समय "बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद" के बुर्जुआ विवेचक को मज़दूरों के **"उच्चतर स्तर"** और **"ख़ास सर्वहारा के निम्नतर स्तर"** के बीच बाक़ायदा अंतर करने पर मजबूर होना पड़ता है। सहकारी संस्थाओं, ट्रेड-यूनियनों, खेल-कूद के क्लबों तथा अनेक धार्मिक संप्रदायों के अधिकांश सदस्य इसी उच्चतर स्तर के लोग हैं। निर्वाचन-व्यवस्था इसी स्तर के अनुकूल बनायी गयी है, जो ग्रेट ब्रिटेन में "अभी तक **इतनी काफ़ी सीमित है कि ख़ास सर्वहारा का निम्नतर स्तर इसमें शामिल नहीं हो सकता**"!! अंग्रेज़ मज़दूर वर्ग की हालत को आकर्षक रूप में पेश करने के लिए आम तौर से केवल इसी उच्चतर स्तर का उल्लेख किया जाता है, जो सर्वहारा वर्ग की **अल्पसंख्या** है: उदाहरण के लिए, "बेरोज़गारी की समस्या मुख्यतः लंदन की और सर्वहारा के निम्न स्तर की समस्या है, **जिसको राजनीतिज्ञ बहुत कम महत्व देते हैं...**"*। कहना चाहिए था: जिसको बुर्जुआ राजनीतिज्ञ और "समाज-वादी" अवसरवादी बहुत कम महत्व देते हैं।

जिन बातों का हम उल्लेख कर रहे हैं, उनसे संबंधित साम्राज्यवाद की एक ख़ास विशेषता यह है कि साम्राज्यवादी देशों से उत्प्रवास घटता जा रहा है और उनमें अधिक पिछड़े हुए देशों से, जहां कम मज़दूरी

---

*शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़, 'बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद तथा आंग्ल स्वतंत्र व्यापार', पृ० ३०१।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलती है, आप्रवास बढ़ता जा रहा है। जैसा कि हाबसन ने बताया है, ग्रेट ब्रिटेन से उत्प्रवास १८८४ से घटता जा रहा है। उस वर्ष उत्प्रवासियों की संख्या २,४२,००० थी, जबकि १९०० में यह संख्या घटकर १,६९,००० रह गयी। जर्मनी से उत्प्रवास १८८१ और १८९० के बीच अपने उच्चतम शिखर पर पहुंचा, इन वर्षों में उत्प्रवासियों की कुल संख्या १४,५३,००० थी। इसके बाद के दो दशकों में यह संख्या घटकर ५,४४,००० और ३,४१,००० रह गयी। दूसरी ओर, आस्ट्रिया, इटली, रूस तथा अन्य देशों से जर्मनी आनेवाले मज़दूरों की संख्या में वृद्धि हुई। १९०७ की जनगणना के अनुसार जर्मनी में १३,४२,२९४ विदेशी थे, जिनमें से ४,४०,८०० औद्योगिक मजदूर तथा २,५७,३२९ खेत-मजदूर थे*। फ़्रांस में खनिज-उद्योग में जितने मजदूर काम करते हैं, वे "अधिकांशत:" विदेशी हैं: पोलैंडवासी, इटलीवासी तथा स्पेनी**। संयुक्त राज्य अमरीका में पूर्वी तथा दक्षिणी यूरोप के आप्रवासी ऐसे व्यवसायों में काम करते हैं, जिनमें पारिश्रमिक बहुत ही कम मिलता है, जबकि ओवरसियरों तथा अच्छा वेतन पानेवाले कर्मचारियों में सबसे अधिक अनुपात अमरीकी कर्मचारियों का है***। साम्राज्यवाद में मज़दूरों के बीच भी विशेषाधिकारप्राप्त हिस्से पैदा कर देने और उन्हें सर्वहारा वर्ग के व्यापक समुदाय से अलग कर देने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

इस बात पर ध्यान देना ज़रूरी है कि ग्रेट ब्रिटेन में मज़दूरों के अंदर फूट डालने, उनके बीच अवसरवाद को मज़बूत बनाने और मज़दूर आंदोलन में अस्थायी रूप से ह्रास पैदा कर देने की साम्राज्यवाद की प्रवृत्ति उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ से बहुत पहले ही प्रकट हो गयी थी। कारण कि साम्राज्यवाद की दो महत्वपूर्ण लाक्षणिक विशेषताएं

---

* *Statistic des Deutschen Reichs*, Bd. 211 (जर्मन राज्य के आंकड़े, खंड २११ – सं०)।

** Henger, *Die Kapitalsanlage der Franzosen*, Stuttgart, 1913 (हंगेर, 'फ़्रांसीसी पूंजी-निवेश', स्टुटगार्ट, १९१३ – सं०)।

*** Hourwich, *Immigration and Labour*, New York, 1913 (गूर्विच, 'आप्रवास तथा श्रम', न्यूयार्क, १९१३ – सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रेट ब्रिटेन में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ही दिखाई पड़ने लगी थीं, अर्थात विस्तृत औपनिवेशिक क़ब्ज़ेदारियां और विश्व मंडी में इजारेदाराना स्थिति। मार्क्स तथा एंगेल्स ने मज़दूर आंदोलन में अवसरवाद तथा आंग्ल पूंजीवाद की साम्राज्यवादी विशेषताओं के बीच इस संबंध की व्यवस्थित ढंग से कई दशकों के दौरान खोजबीन की। उदाहरण के लिए, ७ अक्तूबर, १८५८ को एंगेल्स ने मार्क्स को लिखा: "अंग्रेज़ सर्वहारा वर्ग दिन प्रति दिन अधिक बुर्जुआ होता जा रहा है, जिससे नतीजा यह निकलता है कि सभी राष्ट्रों में सबसे अधिक बुर्जुआ यह राष्ट्र स्पष्टतः इस लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है कि आख़िर में चलकर उसके पास बुर्जुआ वर्ग के **साथ ही साथ** एक बुर्जुआ अभिजात वर्ग और एक बुर्जुआ सर्वहारा वर्ग भी हो। ज़ाहिर है, एक ऐसे राष्ट्र के लिए, जो पूरी दुनिया का शोषण करता हो, यह बात किसी हद तक ठीक भी है।" लगभग पच्चीस वर्ष बाद, ११ अगस्त, १८८१ के एक पत्र में एंगेल्स "इंगलैंड की उन बदतरीन क़िस्म की ट्रेड-यूनियनों का" उल्लेख करते हैं, "जो ऐसे लोगों के नेतृत्व को स्वीकार करती हैं, जो बुर्जुआ वर्ग के ख़रीदे हुए या वेतनभोगी हैं"। १२ सितंबर, १८८२ को काउत्स्की के नाम एक पत्र में एंगेल्स ने लिखा: "आपने मुझसे पूछा है कि अंग्रेज़ मज़दूर औपनिवेशिक नीति के बारे में क्या सोचते हैं? तो इसका उत्तर यह है कि बिलकुल वही, जो वे आम तौर से पूरी राजनीति के बारे में सोचते हैं। यहां मज़दूरों की कोई पार्टी नहीं है, यहां केवल कंज़रवेटिव तथा लिबरल-रेडिकल पार्टियां हैं और उपनिवेशों तथा विश्व मंडी पर अपनी इजारेदारी के कारण इंगलैंड जो गुलछर्रे उड़ा रहा है, उसमें मज़दूर भी ख़ुश होकर हिस्सा लेते हैं।"*

---

* *Briefwechsel von Marx und Engels*, Bd. II, S. 290; IV, 433 (मार्क्स और एंगेल्स की चिट्ठी-पत्री, खंड २, पृ० २९०; खंड ४, पृ० ४३३ – सं०)। K. Kautsky, *Sozialismus und Kolonialpolitik*, Berlin, 1907, S.79 (कार्ल काउत्स्की, 'समाजवाद तथा औपनिवेशिक नीति', बर्लिन, १९०७, पृ० ७९ – सं०)। यह पुस्तिका काउत्स्की ने उस अत्यंत सुदूर अतीत में लिखी थी, जब वह मार्क्सवादी ही थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(एंगेल्स ने 'इंगलैंड में मजदूर वर्ग की दशा' नामक अपनी रचना के दूसरे संस्करण की भूमिका में भी, जो १८९२ में प्रकाशित हुई थी, ऐसे ही विचार व्यक्त किये थे।)

इससे कार्य-कारण बिलकुल स्पष्ट हो जाते हैं। कारण ये हैं: (१) इस देश द्वारा पूरे विश्व का शोषण; (२) विश्व मंडी में उसकी इजारेदाराना स्थिति; (३) उपनिवेशों पर उसकी इजारेदारी। कार्य ये हैं: (१) अंग्रेज़ सर्वहारा वर्ग के एक हिस्से का बुर्जुआकरण हो रहा है; (२) सर्वहारा वर्ग का एक हिस्सा ऐसे लोगों का नेतृत्व स्वीकार करता है, जो बुर्जुआ वर्ग के ख़रीदे हुए या वेतनभोगी हैं। बीसवीं शताब्दी के आरंभ-वाले साम्राज्यवाद ने मुट्ठी भर ऐसे राज्यों के बीच दुनिया को पूरी तरह बांट लिया था, जिनमें से प्रत्येक आज "पूरी दुनिया" के उससे कुछ ही छोटे भाग का शोषण करता है (अर्थात उनसे अतिलाभ कमाता है), जितने भाग का शोषण इंगलैंड १८५८ में करता था; इनमें से प्रत्येक राज्य को ट्रस्टों, कार्टेलों, वित्त पूंजी तथा लेनदार-देनदार संबंधों की बदौलत विश्व मंडी में इजारेदाराना स्थिति प्राप्त है; इनमें से प्रत्येक राज्य को एक हद तक औपनिवेशिक इजारेदारी हासिल है (हम देख चुके हैं कि पूरे औपनिवेशिक जगत की कुल ७,५०,००,००० वर्ग किलोमीटर भूमि में से ६,५०,००,००० वर्ग किलोमीटर, अर्थात ८६ प्रतिशत भूमि पर छः ताक़तों का क़ब्ज़ा है; ६,१०,००,००० वर्ग किलोमीटर, अर्थात ८१ प्रतिशत भूमि पर तीन ताक़तों का क़ब्ज़ा है)।

वर्तमान स्थिति की लाक्षणिक विशेषता यह है कि आज ऐसी आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का बोलबाला है, जिनमें अवसरवाद और मज़दूर आंदोलन के आम तथा बुनियादी हितों के बीच मेल न बैठ सकने की प्रवृत्ति का बढ़ना अनिवार्य है: साम्राज्यवाद एक अंकुर से बढ़कर एक प्रभुत्वशाली व्यवस्था बन गया है; अर्थव्यवस्था तथा राजनीति में पूंजीवादी इजारेदारियों को प्रथम स्थान प्राप्त है; दुनिया का बंटवारा पूरा हो चुका है; दूसरी ओर, हम यह देखते हैं कि ग्रेट ब्रिटेन की अविभक्त इजारेदारी के बजाय अब कुछ साम्राज्यवादी ताक़तें उस इजारेदारी में हिस्सा बंटाने के अधिकार के लिए संघर्ष कर रही हैं और यह संघर्ष बीसवीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शताब्दी के आरंभ के पूरे काल की लाक्षणिकता है। अब अवसरवाद कई दशाब्दियों तक एक देश के मज़दूर आंदोलन में पूर्णतः विजयी नहीं रह सकता, जैसा कि वह उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन में था। परंतु कई देशों में वह पक चुका है, बहुत ज़्यादा पक गया है और सड़ गया है और सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के रूप में बुर्जुआ नीति के साथ घुल-मिलकर बिलकुल एक हो गया है*।

९. साम्राज्यवाद की आलोचना

व्यापक अर्थ में साम्राज्यवाद की आलोचना से हमारा अभिप्राय यह है कि समाज के विभिन्न वर्ग अपनी आम विचारधारा के प्रसंग में साम्राज्यवादी नीति की ओर क्या रवैया अपनाते हैं।

एक ओर तो, थोड़े-से लोगों के हाथों में संकेंद्रित वित्त पूंजी के अपार विस्तार और उसके द्वारा संबंधों तथा संपर्कों के असाधारण रूप से विस्तृत तथा घने जाल की रचना के कारण, जो केवल छोटे और मंझोले ही नहीं, बल्कि बहुत ही छोटे पूंजीपतियों और मिल्कियों को भी अपने अधीन कर लेता है; दूसरी ओर, दुनिया के बंटवारे तथा दूसरे देशों पर प्रभुत्व के लिए वित्तपतियों के अन्य राष्ट्रीय-राजकीय ग्रुपों के ख़िलाफ़ चलाये जाने-वाले अधिकाधिक उग्र संघर्ष के कारण सभी संपत्तिवान वर्ग पूरी तरह साम्राज्यवाद के पक्ष में चले जाते हैं। साम्राज्यवाद के उज्ज्वल भविष्य के बारे में "आम" उत्साह, उसका प्रचंड समर्थन तथा उसका हर तरह से अलंकरण – ये हैं इस युग के लक्षण। साम्राज्यवादी विचारधारा मज़दूर वर्ग में भी प्रविष्ट हो जाती है। उसके और दूसरे वर्गों के बीच कोई

---

*रूसी सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद भी, उसका खुला रूप भी, जिसका प्रतिनिधित्व पोत्रेसोव, छेन्केली, मास्लोव, आदि जैसे लोग करते हैं, और उसका छिपा-ढका रूप भी, जिसका प्रतिनिधित्व छेईद्ज़े, स्कोबेलेव, अक्सेलरोद, मार्तोव, आदि जैसे लोग करते हैं, अवसरवाद की रूसी क़िस्म से, अर्थात विसर्जनवाद से निकला था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चीनी दीवार नहीं होती। जर्मनी की आजकल की तथाकथित "सामाजिक-जनवादी" पार्टी के नेताओं को "सामाजिक-साम्राज्यवादी" ठीक ही कहा जाता है, अर्थात कथनी में समाजवादी और करनी में साम्राज्यवादी; परंतु १६०२ में ही हावसन ने इंगलैंड में "फ़ेबियन साम्राज्यवादियों" के अस्तित्व को देख लिया था, जिनका संबंध अवसरवादी "फ़ेबियन सोसायटी" से था।

बुर्जुआ विद्वान तथा पत्रकार आम तौर से कुछ ढके-छिपे ढंग से साम्राज्यवाद की हिमायत करते हैं, वे उसके पूर्ण प्रभुत्व तथा उसकी गहरी जड़ों पर पर्दा डालने की कोशिश करते हैं, वे कुछ ख़ास और गौण ब्योरे को ही सामने लाने की कोशिश करते हैं और "सुधारों" की कुछ सर्वथा हास्यास्पद योजनाओं द्वारा, जैसे ट्रस्टों या बैंकों पर पुलिस की निगरानी, आदि की योजनाओं द्वारा बुनियादी वातों की ओर से ध्यान हटाने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी ऐसे निर्लज्ज तथा खुले साम्राज्यवादी भी सामने आते हैं, जो इस वात को बेधड़क स्वीकार करते हैं कि साम्राज्यवाद की बुनियादी लाक्षणिकताओं में सुधार करने का विचार बिलकुल बेतुका है।

हम एक उदाहरण देंगे। 'विश्व अर्थव्यवस्था का पुरालेख' नामक पत्रिका में जर्मन साम्राज्यवादियों ने उपनिवेशों के अंदर, बेशक उन उपनिवेशों के अंदर ख़ास तौर से, जिन पर जर्मनी का क़ब्ज़ा नहीं है, राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों का सिंहावलोकन करने की कोशिश की है। वे हिन्दुस्तान की अशांति तथा विरोध आंदोलनों का, नटाल (दक्षिणी अफ़्रीका), डच ईस्ट इंडीज़, आदि के आंदोलनों का उल्लेख करते हैं। उनमें से एक ने विभिन्न पराधीन राष्ट्रों तथा नस्लों के, एशिया, अफ़्रीका तथा यूरोप की विदेशी शासन के अधीन जातियों के प्रतिनिधियों के २८–३० जून, १६१० को हुए एक सम्मेलन की अंग्रेज़ी रिपोर्ट पर अपनी टीका में उस सम्मेलन के भाषणों का मूल्यांकन करते हुए लिखा है: "हमसे कहा जाता है कि साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ना चाहिए; कि शासक राज्यों को पराधीन जातियों के स्वतंत्रता के अधिकार को स्वीकार करना चाहिए; कि महान शक्तियों और कमज़ोर राष्ट्रों के बीच जो संधियां हों, उनके परिपालन पर निगरानी रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय होना चाहिए। सम्मेलन

22—990

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस प्रकार की मासूम इच्छाएं व्यक्त करने से आगे नहीं बढ़ता। हम उसमें इस बात की समझ की कहीं झलक भी नहीं पाते कि साम्राज्यवाद का पूंजीवाद के वर्तमान रूप के साथ अटूट संबंध है और इसलिए (!!) साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ खुले संघर्ष के सफल होने की कोई आशा नहीं हो सकती। यदि संघर्ष कदाचित केवल उसके कुछ विशेषत: घृणास्पद अत्याचारों के ख़िलाफ़ विरोध करने तक ही सीमित हो, तो बात और है।"* चूंकि साम्राज्यवाद के आधार में सुधार द्वारा संशोधन की बात एक धोखा, "एक मासूम इच्छा" है, चूंकि उत्पीड़ित राष्ट्रों के बुर्जुआ प्रतिनिधि इससे "और ज़्यादा" आगे नहीं बढ़ते, इसलिए उत्पीड़क राष्ट्र का बुर्जुआ प्रतिनिधि "और ज़्यादा" **पीछे की ओर** "वैज्ञानिक" होने का दावा करने की आड़ में साम्राज्यवाद के तलुए सहलाने की ओर जाता है। सचमुच कमाल का "तर्क" है!

साम्राज्यवाद की आलोचना में बुनियादी सवाल ये हैं कि क्या साम्राज्यवाद के आधार में सुधार द्वारा परिवर्तन संभव है, क्या उसके पैदा किये हुए अंतर्विरोधों को और भी उग्र तथा गहरा बनाने की ओर आगे बढ़ना चाहिए या उन्हें शांत करने की दिशा में पीछे हटना चाहिए। चूंकि हर क्षेत्र में प्रतिक्रियावाद और वित्तीय अल्पतंत्र द्वारा किये जानेवाले उत्पीड़न और खुली होड़ के अंत के फलस्वरूप जातियों के उत्पीड़न में वृद्धि साम्राज्यवाद की राजनीतिक विशेषताएं हैं, इसलिए बीसवीं शताब्दी के आरंभ में लगभग सभी साम्राज्यवादी देशों में साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ टुटपुंजिया-जनवादी विरोध पैदा हुआ। काउत्स्की तथा आम अंतर्राष्ट्रीय काउत्स्कीवादी धारा का मार्क्सवाद को छोड़कर भाग जाना ठीक इसी बात में व्यक्त होता है कि काउत्स्की ने न केवल इस टुटपुंजिया, सुधारवादी, अपने आर्थिक आधार में प्रतिक्रियावादी विरोध का विरोध करने की परवाह नहीं की, न केवल इस विरोध का विरोध करने में असमर्थ रहे, बल्कि उल्टे व्यवहारत: उसमें विलीन हो गये।

---

* *Weltwirtschaftliches Archiv*, Bd. II, S. 193 ('विश्व अर्थव्यवस्था का पुरालेख', खंड २, पृ० १९३–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पेन के विरुद्ध १८९८ में जो साम्राज्यवादी युद्ध चलाया गया था, उस पर संयुक्त राज्य अमरीका में "साम्राज्यवाद-विरोधियों" का, बुर्जुआ जनवाद के बचे-खुचे प्रतिनिधियों का विरोध भड़क उठा, जिन्होंने उस युद्ध को "अपराधपूर्ण" घोषित किया, विदेशी इलाक़ों के समामेलन को संविधान का उल्लंघन ठहराया और फ़िलिपाइन के मूलनिवासियों के नेता अग्वीनाल्दो के साथ जो व्यवहार किया गया था (अमरीकियों ने उनके देश को स्वतंत्र कर देने का उन्हें पहले आश्वासन दिया, लेकिन बाद में वहां अपनी फ़ौजें उतार दीं और उसे समामेलित कर लिया), उसे "अंध-राष्ट्रवादी विश्वासघात" ठहराया और लिन्कन के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा: "जब गोरा आदमी अपने ऊपर शासन करता है, तो यह स्वशासन होता है, लेकिन जब वह अपने ऊपर भी शासन करता है और दूसरों पर भी, तब यह स्वशासन नहीं रह जाता, यह तानाशाही बन जाता है"*। परंतु जब तक यह सारी आलोचना साम्राज्यवाद और ट्रस्टों के और इसलिए साम्राज्यवाद और पूंजीवाद के आधारों के पारस्परिक अटूट संबंध को स्वीकार करने से कतराती रही, जब तक वह बड़े पैमाने के पूंजीवाद और उसके विकास द्वारा पैदा होनेवाली शक्तियों के साथ मिलने से कतराती रही, तब तक वह एक "मासूम इच्छा" ही रही।

हाबसन ने भी साम्राज्यवाद की अपनी आलोचना में मुख्यतः यही रवैया अपनाया है। हाबसन ने "साम्राज्यवाद की अनिवार्यता" की दलील का विरोध करके और जनता की "उपभोग-क्षमता को बढ़ाने" (पूंजीवाद के अंतर्गत!) की आवश्यकता पर ज़ोर देकर काउत्स्की के ही तर्कों को उनसे पहले पेश कर दिया था। हमने ऊपर अनेक बार जिन लेखकों के उद्धरण दिये हैं, जैसे अगाड, लैंसबर्ग, एश्वेगे और फ़्रांसीसी लेखकों में विक्तोर बेरार, जिनकी 'इंगलैंड तथा साम्राज्यवाद' नामक बहुत ही सतही रचना १९०० में प्रकाशित हुई थी, वे साम्राज्यवाद, बैंकों की सर्वशक्तिमत्ता, वित्तीय अल्पतंत्र, आदि की आलोचना में टुटपुंजिया

---

* J. Patouillet, *L'impérialisme américain*, Dijon, 1904, p. 272 (ज० पातुइए, 'अमरीकी साम्राज्यवाद', दिजां, १९०४, पृ० २७२–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दृष्टिकोण अपनाते हैं। ये सभी लेखक, जो मार्क्सवादी होने का कोई दावा नहीं करते, साम्राज्यवाद को खुली होड़ तथा जनवाद के मुक़ाबले पेश करते हैं, बग़दाद रेलवे योजना को झगड़े और युद्ध की बुनियाद कहकर उसकी निंदा करते हैं, शांति की "मासूम इच्छा" व्यक्त करते हैं, आदि। यहां तक कि अंतर्राष्ट्रीय स्टाक और शेयर निर्गमनों के सांख्यिकीविद् अल्फ़्रेड नेमार्क ने भी खरबों फ़्रांक की "अंतर्राष्ट्रीय" सिक्यूरिटियों का हिसाब लगाने के बाद १९१२ में आश्चर्य के साथ कहा था: "क्या इस बात पर विश्वास करना संभव है कि शांति भंग हो सकती है? .. कि इतनी बड़ी-बड़ी राशियों को देखते हुए कोई युद्ध छेड़ने का ख़तरा मोल लेगा?"*

बुर्जुआ अर्थशास्त्रियों का यह भोलापन कोई आश्चर्य की बात नहीं है; बल्कि भोला प्रतीत होना और साम्राज्यवाद के अंतर्गत शांति की बातें "गंभीरतापूर्वक" करना उनके हित में है। १९१४, १९१५ और १९१६ में जब काउत्स्की इसी बुर्जुआ-सुधारवादी दृष्टिकोण को अपना लेते हैं और दावा करते हैं कि शांति के सवाल पर "सभी लोग सहमत हैं" (साम्राज्यवादी, नामधारी समाजवादी और सामाजिक-शांतिवादी), तो उनमें मार्क्सवाद की क्या बात बाक़ी रह जाती है? साम्राज्यवाद के अंतर्विरोधों का विश्लेषण करने तथा उनकी गहराइयों का रहस्योद्‌घाटन करने के बजाय उन्हें टाल जाने, उनसे कतरा जाने की एक सुधारवादी "मासूम इच्छा" के अलावा हम और कुछ नहीं देखते।

काउत्स्की द्वारा साम्राज्यवाद की आर्थिक आलोचना का एक नमूना देखिये। वह १८७२ तथा १९१२ में मिस्र के साथ ब्रिटेन के निर्यात तथा आयात व्यापार के आंकड़ों को लेते हैं। पता यह चलता है कि यह निर्यात तथा आयात व्यापार ब्रिटेन के कुल विदेश व्यापार की तुलना में कम बढ़ा है। इससे काउत्स्की यह निष्कर्ष निकालते हैं कि "हमारे लिए यह मान

---

* *Bulletin de l'institut international de statistique*, T. XIX, livr. II, p. 225 ('अंतर्राष्ट्रीय सांख्यिकी संस्थान की बुलेटिन, खंड १९, भाग २, पृ० २२५–सं०)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेने का कोई कारण नहीं है कि मिस्र पर सैनिक आधिपत्य के बिना केवल आर्थिक तत्वों की क्रिया मात्र के फलस्वरूप उसके साथ ब्रिटेन के व्यापार में कम वृद्धि होती"। "पूंजी की फैलने की प्रवृत्ति को" "साम्राज्यवाद के हिंसात्मक तरीक़ों से नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण जनवाद से सबसे अधिक प्रोत्साहन मिल सकता है।"*

काउत्स्की की यह दलील, जिसे उनके रूसी अनुचर (और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के रूसी संरक्षक) श्री स्पेक्तातोर हर सुर में दोहराते हैं, साम्राज्यवाद की काउत्स्कीवादी आलोचना का आधार है और इसलिए हमें उस पर अधिक विस्तारपूर्वक विचार करना चाहिए। हम सबसे पहले हिल्फ़र्डिंग का एक उद्धरण देंगे, जिनके निष्कर्षों के बारे में काउत्स्की ने कई मौक़ों पर, विशेष रूप से अप्रैल, १९१५ में, यह कहा है कि उन्हें "सभी समाजवादी सिद्धांतकारों ने सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया है"।

हिल्फ़र्डिंग लिखते हैं: "सर्वहारा वर्ग का काम यह नहीं है कि वह अधिक प्रगतिशील पूंजीवादी नीति के मुक़ाबले स्वतंत्र व्यापार तथा राज्य के प्रति विरोध के बीते युग की नीति पेश करे। वित्त पूंजी की आर्थिक नीति के जवाब में, साम्राज्यवाद के जवाब में, सर्वहारा वर्ग को स्वतंत्र व्यापार नहीं, बल्कि समाजवाद ही पेश करना चाहिए। सर्वहारा नीति का लक्ष्य अब खुली होड़ को पुनःस्थापित करने का आदर्श नहीं हो सकता है—जो अब एक प्रतिक्रियावादी आदर्श बन चुका है—बल्कि उसका लक्ष्य होना चाहिए पूंजीवाद के उन्मूलन द्वारा होड़ का पूर्णतः अंत करना।"**

काउत्स्की ने वित्त पूंजी के युग में "शांतिपूर्ण जनवाद", "प्रतिक्रियावादी आदर्श", "केवल आर्थिक तत्वों की क्रिया" का समर्थन करके मार्क्सवाद के साथ अपना नाता तोड़ लिया, क्योंकि वस्तुगत दृष्टि से यह

---

* Kautsky, *Nationalstaat imperialistischer Staat und Staatenbund*, Nürnberg, 1915, SS. 72, 70 (कार्ल काउत्स्की, 'राष्ट्रीय राज्य, साम्राज्यवादी राज्य और राज्यों का संघ', न्यूरेनबर्ग, १९१५, पृ० ७२,७० – सं०)।

** हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', पृ० ५६७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदर्श इजारेदार पूंजीवाद से पीछे की ओर, ग़ैर इजारेदार पूंजीवाद की ओर खींच ले जाता है और यह एक सुधारवादी झांसा है।

सैनिक आधिपत्य के **बिना**, साम्राज्यवाद के बिना तथा वित्त पूंजी के बिना मिस्र के साथ (या किसी दूसरे उपनिवेश अथवा अर्द्ध-उपनिवेश के साथ) व्यापार "ज़्यादा बढ़ा होता"। इसका क्या मतलब है? यदि आम तौर से इजारेदारियों के द्वारा, या वित्त पूंजी के "संबंधों" या जूए (अर्थात इजारेदारी भी) के द्वारा, या उपनिवेशों पर कुछ देशों के इजारेदारी आधिपत्य के कारण खुली होड़ को सीमित न किया गया होता, तो पूंजीवाद का विकास और भी तीव्र गति से होता?

काउत्स्की की दलील का और कोई अर्थ हो ही नहीं सकता और **यह** "अर्थ" निरर्थक है। मान लें कि हां, कि किसी भी प्रकार की इजारेदारी के बिना खुली होड़ ने पूंजीवाद तथा व्यापार को और तीव्र गति से विकसित किया होता, तो क्या यह सच नहीं है कि जितनी तेज़ी से व्यापार तथा पूंजीवाद का विकास होता है, उतना ही उत्पादन तथा पूंजी का संकेंद्रण भी बढ़ता है, जो इजारेदारी को **जन्म देता है**? और इजारेदारियों का जन्म हो **चुका है**—ठीक इसी खुली होड़ **में से**! यदि इजारेदारियां अब प्रगति की रफ़्तार को धीमा करने लगी हैं, तो यह खुली होड़ के पक्ष में कोई दलील नहीं है, जो इजारेदारियों को पैदा कर चुकने के बाद अब असंभव हो गयी है।

हम काउत्स्की की दलील को चाहे जिस तरफ़ से उलट-पलटकर देखें, हम उसमें प्रतिक्रियावाद तथा बुर्जुआ सुधारवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं पायेंगे।

यदि हम इस दलील को सही करके भी स्पेक्तातोर की तरह कहें कि इंगलैंड के साथ ब्रिटिश उपनिवेशों का व्यापार अन्य देशों के साथ उनके व्यापार की तुलना में अब ज़्यादा धीमी रफ़्तार से बढ़ रहा है, तब भी काउत्स्की का बचाव नहीं होता, क्योंकि ग्रेट ब्रिटेन को इजारेदारी **भी**, साम्राज्यवाद **भी** पीट रहा है, अंतर केवल यह है कि वह इजारेदारी और साम्राज्यवाद दूसरे देश के (अमरीका, जर्मनी के) हैं। यह विदित है कि कार्टेलों ने एक नयी तथा अनोखी क़िस्म के संरक्षणात्मक महसूलों को जन्म

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिया है, अर्थात जो माल निर्यात के लिए उपयुक्त होता है, उसे संरक्षण दिया जाता है (एंगेल्स ने 'पूंजी' के तीसरे खंड में इस बात का उल्लेख किया है)। यह भी विदित है कि कार्टेलों तथा वित्त पूंजी की अपनी एक निराली पद्धति होती है—"मिट्टी-मोल माल का निर्यात", जिसे अंग्रेज़ "माल-झोंकाई" कहते हैं: अपने देश में तो कार्टेल बहुत ऊंची इजारेदारी क़ीमतों पर माल बेचता है, लेकिन विदेशों में उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों का पत्ता काटने, स्वयं अपना उत्पादन अधिकतम बढ़ाने, आदि के लिए बहुत ही कम क़ीमतों पर बेचता है। यदि ब्रिटिश उपनिवेशों के साथ जर्मनी का व्यापार ग्रेट ब्रिटेन के व्यापार की अपेक्षा ज़्यादा तेज़ी से बढ़ रहा है, तो इससे केवल यही सिद्ध होता है कि जर्मन साम्राज्यवाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद की तुलना में अधिक तरोताज़ा, अधिक बलवान तथा अधिक सुसंगठित है, वह उससे श्रेष्ठतर है, परंतु इससे स्वतंत्र व्यापार की "श्रेष्ठता" हरगिज़ नहीं सिद्ध होती, क्योंकि यह स्वतंत्र व्यापार की संरक्षण के ख़िलाफ़, औपनिवेशिक निर्भरता के ख़िलाफ़ लड़ाई नहीं है, बल्कि दो प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यवादों की, दो इजारेदारियों की, वित्त पूंजी के दो दलों की लड़ाई है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के मुक़ाबले में जर्मन साम्राज्यवाद की श्रेष्ठता औपनिवेशिक हदबंदियों या संरक्षणात्मक महसूलों की दीवार से अधिक शक्तिशाली है: इस बात को स्वतंत्र व्यापार तथा "शांतिपूर्ण जनवाद" के पक्ष में एक "दलील" के रूप में इस्तेमाल करना बहुत ही घटिया बात है। इसका मतलब है साम्राज्यवाद की मूलभूत विशेषताओं तथा लाक्षणिकताओं को भूल जाना, मार्क्सवाद का स्थान टुटपुंजिया सुधारवाद को दे देना।

यह बात दिलचस्प है कि अल्फ़्रेड लैंसबर्ग जैसे बुर्जुआ अर्थशास्त्री भी, जिनकी साम्राज्यवाद की आलोचना उतनी ही टुटपुंजिया ढंग की है, जितनी काउत्स्की की, व्यापार संबंधी आंकड़ों के अधिक वैज्ञानिक अध्ययन के ज़्यादा निकट पहुंच गये। उन्होंने अललटप्पू किसी एक देश को और केवल एक उपनिवेश को चुनकर उसकी तुलना अन्य देशों के साथ नहीं की; उन्होंने एक साम्राज्यवादी देश के निर्यात व्यापार के बारे में इस प्रकार छानबीन की: (१) उन देशों के साथ उसका व्यापार, जो वित्तीय दृष्टि से उस पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्भर हैं, जो उससे पैसा उधार लेते हैं और (२) उन देशों के साथ उसका व्यापार, जो वित्तीय दृष्टि से स्वतंत्र हैं। उन्हें ये आंकड़े प्राप्त हुए :

जर्मनी का निर्यात व्यापार
(लाख मार्कों में)

		१८८६	१६०८	प्रतिशत वृद्धि
उन देशों को, जो वित्तीय दृष्टि से जर्मनी पर निर्भर हैं:	रूमानिया . . .	४८२	७०८	+ ४७
	पुर्तगाल	१६०	३२८	+ ७३
	अर्जेंटाइन . . .	६०७	१,४७०	+१४३
	ब्राज़ील	४८७	८४५	+ ७३
	चिली	२८३	५२४	+ ८५
	तुर्की	२६६	६४०	+११४
कुल		२,३४८	४,५१५	+ ६२

		१८८६	१६०८	प्रतिशत वृद्धि
उन देशों को, जो वित्तीय दृष्टि से जर्मनी पर निर्भर नहीं हैं:	ग्रेट ब्रिटेन . . .	६,५१८	६,६७४	+ ५३
	फ़्रांस	२,१०२	४,३७६	+१०८
	बेल्जियम . . .	१,३७२	३,२२८	+१३५
	स्विट्ज़रलैंड . .	१,७७४	४,०११	+१२७
	आस्ट्रेलिया . . .	२१२	६४५	+२०५
	डच ईस्ट इंडीज़	८८	४०७	+३६३
कुल		१२,०६६	२२,६४४	+ ८७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लैंसबर्ग ने कोई **निष्कर्ष** नहीं निकाले, इसलिए यह आश्चर्य की बात है कि वह यह नहीं देख पाये कि **यदि** इन आंकड़ों से कुछ सिद्ध होता है, तो यही कि वह **ग़लती पर** हैं, क्योंकि उन देशों की अपेक्षा, जो वित्तीय दृष्टि से स्वतंत्र हैं, उन देशों को, जो वित्तीय दृष्टि से जर्मनी पर निर्भर हैं, निर्यात **ज्यादा तेज़ी से** बढ़ा है, भले ही अंतर बहुत थोड़ा है (हमने "यदि" शब्द पर ज़ोर इसलिए दिया है कि लैंसबर्ग के आंकड़े बहुत अधूरे हैं)।

निर्यातों और ऋणों के पारस्परिक संबंध का पता लगाते हुए लैंसबर्ग लिखते हैं :

"१८९०–१८९१ में जर्मनी के बैंकों की मारफ़त रूमानिया के लिए क़र्ज़ चालू किया गया, जिन्होंने उस क़र्ज़ में से पहले के वर्षों में ही पेशगी रक़म दे रखी थीं। वह क़र्ज़ मुख्यतः जर्मनी में रेलों का सामान ख़रीदने के लिए था। १८९१ में जर्मनी ने रूमानिया को ५,५०,००,००० मार्क का माल निर्यात किया। अगले वर्ष यह रक़म गिरकर ३,९४,००,००० मार्क और कुछ उतार-चढ़ावों के बाद १९०० में २,५४,००,००० मार्क रह गयी। अभी पिछले कुछ वर्षों में जाकर ही दो नये ऋणों की बदौलत यह निर्यात फिर १८९१ के स्तर पर पहुंच पाया है।

"१८८८–१८८९ के ऋणों के बाद पुर्तगाल को जर्मनी से निर्यात किये जानेवाले माल की क़ीमत बढ़ते-बढ़ते (१८९० में) २,११,००,००० हो गयी; फिर उसके बाद के दो वर्षों में वह घटते-घटते १,६२,००,००० और ७४,००,००० रह गयी और १९०३ में जाकर ही फिर अपने पुराने स्तर पर पहुंची।

"अर्जेंटाइन के साथ जर्मनी के व्यापार के आंकड़े और भी सारगर्भित हैं। १८८८ और १८९० में चालू किये गये ऋणों के कारण अर्जेंटाइन के लिए जर्मनी का निर्यात १८८९ में ६,०७,००,००० मार्क तक पहुंच गया। दो वर्ष बाद वह केवल १,८६,००,००० मार्क ही था, अर्थात पिछली राशि की तुलना में तिहाई से भी कम। १९०१ में जाकर ही निर्यात १८८९ के स्तर तक पहुंच तथा उससे बढ़ सका और वह भी बिजली के कारख़ाने बनाने के लिए नक़दी अदायगी और दूसरी उधार-क्रियाओं की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदौलत और राज्य तथा नगरपालिकाओं द्वारा चालू किये गये नये ऋणों की बदौलत।

"१८८९ के ऋण के कारण चिली के लिए निर्यात बढ़कर (१८९२ में) ४,५२,००,००० मार्क तक पहुंच गया और एक वर्ष बाद घटकर फिर २,२५,००,००० मार्क रह गया। १९०६ में जर्मनी के बैंकों ने चिली के लिए फिर नया ऋण चालू किया, जिसके बाद १९०७ में निर्यात बढ़कर ८,४७,००,००० मार्क तक पहुंच गया, लेकिन १९०८ में फिर घटकर ५,२४,००,००० मार्क रह गया।"*

इन तथ्यों से लैंसबर्ग तंगनज़री का यह दिलचस्प निष्कर्ष निकालते हैं कि निर्यात-व्यापार ऋणों के साथ बंधा होने पर कितना अस्थायी और अनियमित होता है, स्वदेशी उद्योगों को "स्वाभाविक ढंग से" तथा "सामंजस्यपूर्वक" विकसित करने के बजाय विदेशों में पूंजी लगाना कितना बुरा होता है, विदेशों के लिए ऋण चालू करने में क्रुप्प द्वारा दी जानेवाली करोड़ों की बख़्शीश कितनी "महंगी" पड़ती है, आदि। परंतु इन तथ्यों से हमें साफ़-साफ़ पता चलता है कि निर्यात में वृद्धि का संबंध वित्त पूंजी की ठीक इन्हीं तिकड़मों से है। उसे बुर्जुआ नैतिकता से नहीं, बल्कि दोहरी कमाई से सरोकार होता है—पहले तो वह ऋण से होनेवाला मुनाफ़ा हड़प कर जाती है, फिर उसी ऋण से वह दूसरे मुनाफ़े हड़प लेती है, जिसे क़र्ज़दार क्रुप्प से माल या स्टील सिंडिकेट से रेलों का सामान, आदि ख़रीदने पर ख़र्च करता है।

हम एक वार फिर कहते हैं कि हम किसी भी प्रकार लैंसबर्ग के आंकड़ों को दोषरहित नहीं समझते, पर हमें उनको इसलिए उद्धृत करना पड़ा कि वे काउत्स्की तथा स्पेक्तातोर के आंकड़ों की अपेक्षा अधिक विज्ञानसंगत हैं और इसलिए कि लैंसबर्ग ने इस समस्या पर विचार करने का सही तरीक़ा दिखाया है। निर्यात, आदि के प्रसंग में वित्त पूंजी के महत्व पर विचार करने के लिए हमें और बातों में से इस बात का पता लगाने में सक्षम होना चाहिए कि विशेषत: तथा शुद्धत: वित्तपतियों की

* *Die Bank*, १९०९, २, पृ० ८१९ तथा आगे के पृष्ठ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिकड़मों के साथ, विशेषतः तथा शुद्धतः कार्टेलों द्वारा माल की बिक्री, आदि के साथ निर्यात का क्या संबंध है। केवल उपनिवेशों की ग़ैर उपनिवेशों के साथ, एक साम्राज्यवाद की दूसरे साम्राज्यवाद के साथ, एक अर्द्ध-उपनिवेश या उपनिवेश (मिस्र) की अन्य सभी देशों के साथ तुलना करने का मतलब इस प्रश्न के असली सार से कतराना और उस पर पर्दा डालना है।

काउत्स्की द्वारा साम्राज्यवाद की सैद्धांतिक आलोचना और मार्क्सवाद में कुछ भी एकसमान नहीं है; वह केवल अवसरवादियों तथा सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के साथ शांति तथा एकता का प्रचार करने की तैयारी मात्र है, ठीक इस कारण कि वह साम्राज्यवाद की सबसे गहरी तथा आधारभूत विसंगतियों से कतराती है तथा उन पर पर्दा डालती है। ये विसंगतियां हैं: इजारेदारियों और उनके साथ ही अस्तित्वमान खुली होड़ की पारस्परिक विसंगति, वित्त पूंजी के विराट "सौदों" (और विराट मुनाफ़ों) तथा खुले बाज़ार में "ईमानदारी के" व्यापार की पारस्परिक विसंगति, एक ओर, कार्टेलों तथा ट्रस्टों और दूसरी ओर, कार्टेलों से बाहर के उद्योगों की पारस्परिक विसंगति, आदि।

काउत्स्की ने "अति साम्राज्यवाद" के जिस कुख्यात सिद्धांत का आविष्कार किया है, वह भी इतना ही प्रतिक्रियावादी है। इस विषय में उन्होंने १९१५ में जो तर्क दिये हैं, उनकी तुलना १९०२ में हाबसन द्वारा दिये गये तर्कों के साथ करके देखिये:

काउत्स्की: "...क्या यह नहीं हो सकता कि वर्तमान साम्राज्यवादी नीति का स्थान एक नयी, अति साम्राज्यवादी नीति ले ले, जो राष्ट्रीय वित्त पूंजियों की पारस्परिक होड़ के बजाय अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एकबद्ध वित्त पूंजी द्वारा दुनिया के संयुक्त शोषण की पद्धति लागू करे? पूंजीवाद की इस नयी अवस्था की कम से कम कल्पना तो की ही जा सकती है। क्या यह अवस्था प्राप्त की जा सकती है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए अभी हमारे पास काफ़ी आधारभूत तथ्य नहीं हैं।"*

हाबसन: "बहुत-से लोगों को लगता है कि कुछ बड़े संघात्मक साम्राज्यों

---

* *Neue Zeit*, ३० अप्रैल, १९१५, पृ० १४४।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में, जिनमें से हर एक के अधीन कुछ असभ्य उपनिवेश और परतंत्र देश हैं, सुदृढ़ बना ईसाई धर्म वर्तमान प्रवृत्तियों की सबसे उचित और साथ ही ऐसी परिणति है, जिससे अंतर-साम्राज्यवाद के निश्चित आधार पर स्थायी शांति की सबसे अधिक आशा की जा सकती है।"

जिस चीज़ को हाबसन ने तेरह वर्ष पहले अंतर-साम्राज्यवाद कहा था, उसी को काउत्स्की ने अति साम्राज्यवाद या महासाम्राज्यवाद कहा। एक नया और अति चतुरतापूर्ण शब्द गढ़ लेने के अतिरिक्त, जिसमें एक उपसर्ग के स्थान पर दूसरा उपसर्ग रख दिया गया है, काउत्स्की ने "वैज्ञानिक" विचारों के क्षेत्र में जो एकमात्र प्रगति की है, वह यह कि हाबसन ने जिस चीज़ का वर्णन अंग्रेज़ पादरियों के शब्दाडंबर के रूप में किया था, उसे उन्होंने मार्क्सवाद कहकर प्रस्तुत किया है। आंग्ल-बोएर युद्ध के बाद इस अत्यंत सम्मानित तवक़े के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह ब्रिटिश मध्यम वर्ग के उन लोगों को तथा उन मज़दूरों को सांत्वना देने की पूरी कोशिश करे, जिनके बहुत-से सगे-संबंधी दक्षिणी अफ़्रीका के रणक्षेत्र में मारे गये थे और जिन्हें और अधिक टैक्स देने पर मजबूर किया जा रहा था, ताकि ब्रिटिश वित्तपतियों के लिए और अधिक मुनाफ़ा सुनिश्चित हो सके। तब इस सिद्धांत से बढ़कर सांत्वना और क्या हो सकती थी कि साम्राज्यवाद इतना बुरा नहीं है, कि वह अंतर-(या अति) साम्राज्यवाद के बहुत निकट है, जिससे स्थायी शांति सुनिश्चित हो सकती है? अंग्रेज़ पादरियों या भावुक काउत्स्की की सदिच्छाएं कुछ भी रही हों, उनके "सिद्धांत" का एकमात्र वस्तुपरक, अर्थात असली सामाजिक मतलब यह है कि वह आम जनता का ध्यान वर्तमान युग के तीव्र विग्रहों तथा उग्र समस्याओं की ओर से हटाकर, उसे भविष्य के कल्पित "अति साम्राज्यवाद" की भ्रममूलक संभावना की ओर लक्षित कर उसे पूंजीवाद के अंतर्गत स्थायी शांति के संभव होने की आशाओं की सांत्वना देने का एक अत्यंत प्रतिक्रियावादी तरीक़ा है। जनता को धोखा देना – काउत्स्की के "मार्क्सवादी" सिद्धांत में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

वास्तव में यदि हम सुविदित तथा अकाट्य तथ्यों की तुलना भर करें, तो हमें विश्वास हो जायेगा कि काउत्स्की जर्मन मज़दूरों के सामने (और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी देशों के मज़दूरों के सामने) जिन संभावनाओं का आकर्षक चित्र प्रस्तुत करना चाहते हैं, वे कितनी झूठी हैं। हिन्दुस्तान, इंडोचीन तथा चीन का उदाहरण ले लीजिये। यह विदित है कि ये तीन औपनिवेशिक तथा अर्द्ध-औपनिवेशिक देश, जिनकी कुल जनसंख्या साठ से सत्तर करोड़ तक है, कई साम्राज्यवादी ताक़तों की – ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस, जापान, संयुक्त राज्य अमरीका, आदि की – वित्त पूंजी के शोषण का शिकार हैं। मान लीजिये कि ये साम्राज्यवादी देश इन एशियाई राज्यों में अपने अधिकृत क्षेत्रों, अपने हितों और अपने "प्रभाव-क्षेत्रों" की रक्षा करने या उन्हें बढ़ाने के उद्देश्य से एक दूसरे के ख़िलाफ़ गंठजोड़ कर लेते हैं; ये गंठजोड़ "अंतर-साम्राज्यवादी" अथवा "अति साम्राज्यवादी" गंठजोड़ होंगे। मान लीजिये कि **सभी** साम्राज्यवादी देश एशिया के इन देशों का "शांतिपूर्वक" बंटवारा कर लेने के लिए आपस में गंठजोड़ कर लेते हैं; यह गंठजोड़ "अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एकबद्ध वित्त पूंजी" का गंठजोड़ होगा। बीसवीं शताब्दी के इतिहास में इस प्रकार के गंठजोड़ों के वास्तविक उदाहरण मिलते हैं, जैसे चीन के प्रति महान शक्तियों का रवैया[194]। हम पूछते हैं कि पूंजीवादी व्यवस्था के बरक़रार रहने की स्थिति में (और काउत्स्की ने ठीक ऐसी ही स्थिति की कल्पना की है) क्या यह "कल्पनीय" है कि इस प्रकार के गंठजोड़ अस्थायी नहीं होंगे, कि वे हर प्रकार के टकरावों, झगड़ों तथा संघर्षों को ख़त्म कर देंगे?

इस प्रश्न को स्पष्ट रूप से पेश कर देना ही इस बात के लिए काफ़ी है कि उसका नहीं के अलावा और कोई उत्तर नहीं हो सकता, क्योंकि पूंजीवाद के अंतर्गत प्रभाव-क्षेत्रों, हितों, उपनिवेशों, आदि के बंटवारे के लिए उसमें भाग लेनेवालों की **ताक़त**, उनकी आम आर्थिक, वित्तीय, सैनिक, आदि ताक़त का लेखा लेने के अतिरिक्त और किसी दूसरे आधार की कल्पना **नहीं** की जा सकती। लेकिन विभाजन में भाग लेनेवालों की ताक़त में समान रूप से परिवर्तन नहीं होता, क्योंकि पूंजीवाद के अंतर्गत विभिन्न उद्यमों, ट्रस्टों, उद्योगों की शाखाओं या देशों का **समान** विकास असंभव है। अब से पचास वर्ष पहले इंगलैंड की उस समय की ताक़त की तुलना में जर्मनी अपनी पूंजीवादी ताक़त की दृष्टि से एक बहुत ही कमज़ोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा नगण्य देश था; रूस की तुलना में जापान की यही हालत थी। क्या यह "कल्पनीय" है कि दस या बीस वर्षों में साम्राज्यवादी ताक़तों की आपेक्षिक शक्ति अपरिवर्तित रहेगी? कदापि नहीं।

इसलिए अंग्रेज़ पादरियों की या जर्मन "मार्क्सवादी" काउत्स्की की छिछोरी तंगनज़र कल्पनाओं में नहीं, बल्कि पूंजीवादी व्यवस्था की वास्तविकताओं में "अंतर-साम्राज्यवादी" अथवा "अति साम्राज्यवादी" गंठजोड़ – उनका रूप चाहे कुछ भी हो, चाहे एक साम्राज्यवादी गंठजोड़ के ख़िलाफ़ दूसरे साम्राज्यवादी गंठजोड़ के रूप में हो या **सभी** साम्राज्यवादी ताक़तों के आम गंठजोड़ के रूप में – अनिवार्यतः युद्धों के बीच में "युद्ध-विराम" से ज़्यादा और कुछ नहीं होते। शांतिपूर्ण गंठजोड़ युद्धों के लिए ज़मीन तैयार करते हैं और स्वयं भी इन्हीं युद्धों में से उत्पन्न होते हैं, एक दूसरे पर प्रभाव डालते हैं और विश्व अर्थव्यवस्था तथा विश्व राजनीति के भीतर साम्राज्यवादी बंधनों तथा संबंधों के **उसी एक** आधार में से संघर्ष के शांतिपूर्ण तथा अशांतिपूर्ण रूपों को वारी-वारी से जन्म देते हैं। परंतु मज़दूरों को शांत करने और उन सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के साथ उनका मेल करा देने के उद्देश्य से, जो भागकर बुर्जुआ वर्ग में जा मिले हैं, बुद्धिमान काउत्स्की एक ही शृंखला की एक कड़ी को दूसरी कड़ी से **अलग कर देते हैं**, चीन को "शांत करने" (बाक्सर विद्रोह[195] की याद कीजिये) के लिए **सभी** ताक़तों के वर्तमान शांतिपूर्ण (और अति साम्राज्यवादी, बल्कि अति-अति साम्राज्यवादी) गंठजोड़ को कल होनेवाले उस अशांतिपूर्ण झगड़े से अलग कर देते हैं, जो शायद परसों तुर्की के बंटवारे के लिए एक दूसरे "शांतिपूर्ण" आम गंठजोड़ के लिए ज़मीन तैयार करेगा, **आदि, आदि**। साम्राज्यवादी शांति की मुद्दतों तथा साम्राज्यवादी युद्धों की मुद्दतों के बीच जो सजीव संबंध है, उसे बताने के बजाय काउत्स्की मज़दूरों के सामने एक निष्प्राण विविक्ति रखते हैं, ताकि उनके निष्प्राण नेताओं से उनका मेल करा दें।

हिल नामक एक अमरीकी लेखक ने 'यूरोप के अंतर्राष्ट्रीय विकास में कूटनीति का इतिहास' नामक अपनी रचना की भूमिका में कूटनीति के आधुनिक इतिहास के निम्नलिखित युग बताये हैं: (१) क्रांति का युग;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२) सांविधानिक आंदोलन का युग; (३) "वाणिज्यिक साम्राज्यवाद" का वर्तमान युग*। एक दूसरे लेखक ने १८७० से ग्रेट ब्रिटेन की "विश्व नीति" के इतिहास को चार युगों में विभाजित किया है: (१) प्रथम एशियाई युग (मध्य एशिया में हिन्दुस्तान की तरफ़ रूस की अग्रगति के ख़िलाफ़ संघर्ष); (२) अफ़्रीकी युग (लगभग १८८५–१९०२): अफ़्रीका के बंटवारे के लिए फ़्रांस के ख़िलाफ़ संघर्ष का युग (१८९८ का "फ़शोदा कांड"[196], जिसमें फ़्रांस के साथ उसका युद्ध होते-होते बचा); (३) दूसरा एशियाई युग (रूस के ख़िलाफ़ जापान के साथ गंठजोड़) और (४) "यूरोपीय" युग, मुख्यतः जर्मन विरोधी**। इटली में कारोबार करनेवाली फ़्रांसीसी वित्त पूंजी किस प्रकार इन देशों के राजनीतिक गंठजोड़ के लिए रास्ता साफ़ कर रही थी और किस प्रकार फ़ारस के सवाल पर जर्मनी तथा ग्रेट ब्रिटेन के बीच और चीनी ऋणों के सवाल पर सभी यूरोपीय पूंजीपतियों के बीच झगड़ा पैदा हो रहा था, आदि, आदि बातों का हवाला देते हुए बैंक "कर्मी" रीसेर ने १९०५ में ही लिखा था कि "हरावल दस्तों की राजनीतिक झड़पें वित्तीय आधार पर होती हैं"। देखिये, यह है साधारण साम्राज्यवादी झगड़ों के अभिन्न प्रसंग में शांतिपूर्ण "अति साम्राज्यवादी" गंठजोड़ों की सजीव वास्तविकता।

काउत्स्की साम्राज्यवाद की सबसे गहरी विसंगतियों पर जो पर्दा डालते हैं, वह अनिवार्य रूप से साम्राज्यवाद पर मुलम्मा चढ़ाने का रूप धारण कर लेता है और उसकी छाप उनके द्वारा साम्राज्यवाद की राजनीतिक विशेषताओं की आलोचना पर भी दिखाई देती है। साम्राज्यवाद वित्त पूंजी तथा इजारेदारियों का युग है, जो हर जगह स्वतंत्रता की चेष्टा को नहीं, बल्कि प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा को जन्म देती हैं।

---

* David Jayne Hill, *A History of the Diplomacy in the international development of Europe*, vol. I, p. X (डेविड जेन हिल, 'यूरोप के अंतर्राष्ट्रीय विकास में कूटनीति का इतिहास', खंड १, पृ० १०–सं०)।

** शिल्डर, 'विश्व अर्थव्यवस्था के विकास की प्रवृत्तियां', पृ० १७८।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन प्रवृत्तियों का परिणाम यह होता है कि हर क्षेत्र में, राजनीतिक व्यवस्था चाहे कुछ भी हो, प्रतिक्रियावाद उत्पन्न होता है और इस क्षेत्र में भी मौजूदा विग्रह अत्यंत उग्र रूप धारण कर लेते हैं। जातियों के उत्पीड़न का भार तथा समामेलनों की चेष्टा, अर्थात जातियों की स्वतंत्रता का हनन (क्योंकि समामेलन का मतलब जातियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के उल्लंघन के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता) ख़ास तौर पर उग्र रूप धारण कर लेते हैं। हिल्फ़र्डिंग ने साम्राज्यवाद तथा जातियों के उत्पीड़न के उग्र होने के पारस्परिक संबंध को ठीक पहचाना है। वह लिखते हैं: "जिन देशों के मार्ग अभी नये-नये खुले हैं, उनमें बाहर से आनेवाली पूंजी विग्रहों को गहरा बना देती है और बाहर से आकर हस्तक्षेप करनेवालों के ख़िलाफ़ उन देशों की जनता के निरंतर बढ़ते हुए प्रतिरोध को जन्म देती है, क्योंकि जनता में राष्ट्रीय चेतना आने लगती है; वह प्रतिरोध आसानी से विदेशी पूंजी के ख़िलाफ़ ख़तरनाक रूप धारण कर सकता है। पुराने सामाजिक संबंधों में पूर्णतः एक क्रांतिकारी परिवर्तन आ जाता है, 'इतिहासेतर राष्ट्रों' का युगों पुराना कृषि-आधारित पार्थक्य नष्ट हो जाता है और वे खिंचकर पूंजीवाद के भंवर में आ जाते हैं। पूंजीवाद स्वयं पराधीनों को उनकी मुक्ति के साधन तथा उपाय प्रदान करता है और वे उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अग्रसर होते हैं, जो किसी समय यूरोपीय राष्ट्रों को सर्वोपरि प्रतीत होता था: आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्वतंत्रता के माध्यम के रूप में एकबद्ध जातीय राज्य की रचना। स्वतंत्रता का यह आंदोलन यूरोपीय पूंजी के लिए उसके शोषण के सबसे बहुमूल्य तथा सबसे आशाप्रद क्षेत्रों में एक ख़तरा बन जाता है और यूरोपीय पूंजी अपने प्रभुत्व को केवल अपने सैन्य-बल में निरंतर वृद्धि करके ही क़ायम रख सकती है।"*

इसके साथ ही यह और कह देना चाहिए कि नये देशों में ही नहीं, बल्कि पुराने देशों में भी साम्राज्यवाद समामेलन की दिशा में, जातियों के उत्पीड़न को बढ़ाने की दिशा में जा रहा है और फलस्वरूप उसके

---

*हिल्फ़र्डिंग, 'वित्त पूंजी', पृ० ४८७।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ख़िलाफ़ प्रतिरोध भी बढ़ रहा है। साम्राज्यवाद द्वारा राजनीतिक प्रतिक्रियावाद को गहन बनाने का विरोध करते हुए काउत्स्की एक ऐसे प्रश्न को बिलकुल अंधकार में छोड़ देते हैं, जो विशेष तात्कालिक महत्व का हो गया है, अर्थात यह प्रश्न कि साम्राज्यवाद के युग में अवसरवादियों के साथ एकता असंभव है। समामेलनों का विरोध करते हुए भी वह अपने विरोध को ऐसे रूप में व्यक्त करते हैं, जो अवसरवादियों के लिए सबसे अधिक स्वीकार्य तथा सबसे कम आपत्तिजनक हो। वह जर्मन पाठकों को संबोधित करते हैं, पर सबसे सामयिक तथा सबसे महत्वपूर्ण बात, उदाहरण के लिए, जर्मनी द्वारा अल्सास-लोरेन के समामेलन पर पर्दा डाल देते हैं। काउत्स्की के इस "वैचारिक विपथन" का मूल्यांकन करने के लिए हम निम्नलिखित उदाहरण लेंगे। मान लीजिये, कोई जापानी अमरीका द्वारा फ़िलिपाइन के समामेलन की निंदा कर रहा है। सवाल यह है: क्या बहुत-से लोग इस बात पर विश्वास करेंगे कि वह केवल इसलिए ऐसा कर रहा है कि उसे समामेलनों से नफ़रत है और इसलिए नहीं कि वह स्वयं फ़िलिपाइन को समामेलित करना चाहता है? क्या हम इस बात को मानने पर मजबूर नहीं होंगे कि वह जापानी समामेलनों के ख़िलाफ़ जो "संघर्ष" कर रहा है, उसे सच्चा और राजनीतिक दृष्टि से ईमानदार तभी समझा जा सकता है, जब वह जापान द्वारा कोरिया के समामेलन के ख़िलाफ़ भी लड़े और यह मांग करे कि कोरिया को जापान से अलग हो जाने की आज़ादी हो?

काउत्स्की द्वारा साम्राज्यवाद का सैद्धांतिक विश्लेषण और साम्राज्यवाद की आर्थिक तथा राजनीतिक आलोचना, दोनों ही की नस-नस में साम्राज्यवाद की आधारभूत विसंगतियों पर पर्दा डालने तथा उन्हें टाल जाने की एक ऐसी भावना और यूरोप के मज़दूर आंदोलन में अवसरवाद के साथ छिन्न-भिन्न होती हुई एकता को हर क़ीमत पर सुरक्षित रखने की एक ऐसी चेष्टा समायी हुई है, जिनका मार्क्सवाद के साथ कभी मेल नहीं बैठ सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०. इतिहास में साम्राज्यवाद का स्थान

हम देख चुके हैं कि अपने आर्थिक सार में साम्राज्यवाद इजारेदार पूंजीवाद है। यह बात स्वयं इतिहास में उसके स्थान को निर्धारित करती है, क्योंकि इजारेदारी, जो खुली होड़ की भूमि पर और खुली होड़ से ही पैदा होती है, पूंजीवादी व्यवस्था से एक उच्चतर सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में संक्रमण की द्योतक है। हमें इजारेदारी के चार मुख्य रूपों को या इजारेदार पूंजीवाद की उन चार मुख्य अभिव्यक्तियों को विशेष रूप से दृष्टिगत रखना चाहिए, जो विचाराधीन युग की लाक्षणिकताएं हैं।

पहली बात, उत्पादन के संकेंद्रण के विकास की एक बहुत ऊंची मंज़िल में जाकर इजारेदारी उत्पन्न हुई। यह है पूंजीपतियों के इजारेदार संघ, कार्टेल, सिंडिकेट तथा ट्रस्ट। हम देख चुके हैं कि वर्तमान आर्थिक जीवन में इनकी भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में इजारेदारियों ने उन्नत देशों में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था और अगर कार्टेलों के संगठन की दिशा में शुरूआती क़दम सबसे पहले ऊंचे संरक्षणात्मक महसूलवाले देशों में (जर्मनी, अमरीका) उठाये गये, तो खुले व्यापार की पद्धतिवाले ग्रेट ब्रिटेन में भी वही मूलभूत तथ्य, अर्थात उत्पादन के संकेंद्रण से इजारेदारी का जन्म, कुछ बाद में देखने में आया।

दूसरी बात, इजारेदारियों ने कच्चे माल के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों पर, विशेष रूप से पूंजीवादी समाज के अंतर्गत बुनियादी और अधिक से अधिक कार्टेलीकृत उद्योग, कोयले तथा लोहे के उद्योगों के कच्चे माल के स्रोतों पर क़ब्ज़ा कर लेने को प्रोत्साहन दिया है। कच्चे माल के सबसे महत्वपूर्ण स्रोतों की इजारेदारी ने बड़ी पूंजी की ताक़त को बेहद बढ़ा दिया है और कार्टेलीकृत तथा ग़ैर कार्टेलीकृत उद्योगों के पारस्परिक विग्रहों को बहुत उग्र रूप दे दिया है।

तीसरी बात, इजारेदारी बैंकों से उत्पन्न हुई है। बैंक बिचवानी करनेवाले छोटे-मोटे उद्यमों से बढ़कर वित्त पूंजी के इजारेदार बन गये हैं। प्रमुखतम पूंजीवादी देशों में से प्रत्येक में तीन से पांच तक सबसे बड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैंकों ने उद्योगों तथा बैंकों की पूंजी के बीच "वैयक्तिक एका" स्थापित कर लिया है और अरबों की रक़म का नियंत्रण अपने हाथ में संकेंद्रित कर लिया है; यह रक़म पूरे के पूरे देश की पूंजी तथा आय का अधिकांश भाग है। इस इजारेदार की सबसे ज्वलंत अभिव्यक्ति वित्तीय अल्पतंत्र है, जो आधुनिक बुर्जुआ समाज की बिना किसी अपवाद के सभी आर्थिक तथा राजनीतिक संस्थाओं पर निर्भरता के संबंधों का एक घना जाल बिछा देता है।

चौथी बात, इजारेदारी औपनिवेशिक नीति से उत्पन्न हुई है। औपनिवेशिक नीति के अनेक "पुराने" उद्देश्यों के साथ वित्त पूंजी ने कच्चे माल के स्रोतों के लिए, पूंजी के निर्यात के लिए, "प्रभाव क्षेत्रों" के लिए, अर्थात लाभप्रद सौदों, कन्सेशनों, इजारेदारी मुनाफ़ों, आदि के क्षेत्रों के लिए, और अंततः आर्थिक दृष्टि से आम उपयोगी इलाक़ों के लिए संघर्ष और जोड़ दिया है। जिस समय अफ़्रीका में यूरोपीय ताक़तों के उपनिवेश, उदाहरण के लिए, वहां के कुल क्षेत्र के लगभग दसवें भाग के बराबर थे, जैसी परिस्थिति १८७६ में थी, उस समय औपनिवेशिक नीति इजारेदारी के तरीक़ों से नहीं, वरन अन्य तरीक़ों से–एक प्रकार से, इलाक़ों को "बेरोकटोक हथिया लेने" के तरीक़ों से–विकसित हो सकती थी। परंतु जब अफ़्रीका के नब्बे प्रतिशत भाग पर (१६०० तक) क़ब्ज़ा कर लिया गया, जब सारी दुनिया का बंटवारा हो गया, तब अनिवार्य रूप से उपनिवेशों पर इजारेदार स्वामित्व के युग का, और फलस्वरूप दुनिया के विभाजन तथा पुनर्विभाजन के लिए विशेष रूप से भीषण संघर्ष के युग का श्रीगणेश हुआ।

यह बात सर्वविदित है कि इजारेदार पूंजीवाद ने पूंजीवाद की विसंगतियों को कितना उग्र बना दिया है। महंगाई तथा कार्टेलों के अत्याचारों का ही उल्लेख कर देना काफ़ी है। विसंगतियों का इस प्रकार उग्र होना इतिहास के उस संक्रमणकालीन युग की सबसे प्रबल प्रेरक शक्ति है, जो विश्वव्यापी वित्त पूंजी की अंतिम विजय के समय से आरंभ हुआ।

इजारेदारियां, अल्पतंत्र, स्वतंत्रता की चेष्टा के बजाय प्रभुत्व की चेष्टा, मुट्ठी भर सबसे धनवान तथा सबसे ताक़तवर राष्ट्रों द्वारा बढ़ती हुई संख्या में छोटे या कमज़ोर राष्ट्रों का शोषण–इन सबने साम्राज्यवाद की उन

23*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाक्षणिक विशेषताओं को जन्म दिया है, जिनके कारण हमें उसको परजीवी अथवा ह्रासोन्मुख पूंजीवाद कहने पर विवश होना पड़ता है। साम्राज्यवाद की एक प्रवृत्ति के रूप में उस "किरायाजीवी राज्य", साहूकार राज्य का निर्माण दिन प्रति दिन ज़्यादा उभरकर सामने आता है, जिसमें बुर्जुआ वर्ग निरंतर बढ़ती हुई मात्रा में पूंजी के निर्यात से होनेवाली आय पर और "कूपन काटकर" जीवित रहता है। यह समझना भूल होगी कि ह्रास की इस प्रवृत्ति का मतलब यह है कि पूंजीवाद का तीव्र गति से विकास असंभव है। ऐसा नहीं होता। साम्राज्यवाद के युग में उद्योगों की कुछ शाखाएं, बुर्जुआ वर्ग के कुछ स्तर और कुछ देश कम या ज़्यादा हद तक इन प्रवृत्तियों में से कभी एक और कभी दूसरी प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। कुल मिलाकर पूंजीवाद का विकास पहले की अपेक्षा बहुत तेज़ी से हो रहा है; परंतु यह विकास न केवल आम तौर से अधिकाधिक असमान होता जा रहा है, बल्कि यह भी हो रहा है कि उसकी असमानता विशेष रूप से उन देशों के ह्रास में व्यक्त होती है, जो पूंजी के मामले में सबसे धनी हैं (इंगलैंड)।

जर्मनी के बड़े बैंकों पर एक पुस्तक लिखनेवाले रीसेर ने जर्मनी के आर्थिक विकास की तीव्र गति के बारे में कहा है: "पिछले दौर (१८४८–१८७०) की प्रगति, जिसे धीमी कहना सर्वथा उपयुक्त नहीं होगा, मौजूदा दौर में (१८७०–१६०५) पूरी जर्मन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की और उसके साथ जर्मनी के बैंकों की प्रगति के वेग की तुलना में उतनी ही धीमी थी, जितनी कि पुराने ज़माने की डाक ले जानेवाली घोड़ा-गाड़ियों की रफ़्तार आजकल की मोटरों की रफ़्तार के मुक़ाबले में धीमी होती थी; आजकल की मोटर इतनी तेज़ी से भागी जा रही है कि उससे न केवल रास्ते के लापरवाह पैदल चलनेवालों के लिए, बल्कि मोटर में बैठे हुए लोगों के लिए भी ख़तरा पैदा हो गया है।" अपनी बारी में यह असाधारण तेज़ी के साथ बढ़ी वित्त पूंजी भी उपनिवेशों के अधिक "शांतिमय" स्वामित्व के लिए ठीक इसी कारण अनिच्छुक नहीं है कि वह इतनी तेज़ी के साथ बढ़ी है। उन उपनिवेशों को उसे अधिक समृद्ध राष्ट्रों से छीनना पड़ेगा, महज़ शांति-मय तरीक़ों से ही नहीं। संयुक्त राज्य अमरीका में पिछले कुछ दशकों के दौरान आर्थिक विकास जर्मनी से भी ज़्यादा तेज़ी से हुआ है और यही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारण है कि आधुनिक अमरीकी पूंजीवाद की परजीवी विशेषताएं विशेष रूप से उभरकर सामने आयी हैं। दूसरी ओर, मिसाल के लिए, जनतांत्रिक अमरीकी बुर्जुआ वर्ग की तुलना जापानी या जर्मन राजतांत्रिक बुर्जुआ वर्ग के साथ करने से पता चलता है कि साम्राज्यवाद के युग में तीव्र से तीव्र राजनीतिक भेद भी बेहद कम हो जाता है—इस कारण नहीं कि इस भेद का आम तौर से कोई महत्व नहीं होता, बल्कि इसलिए कि इन सभी दृष्टांतों में हम एक ऐसे बुर्जुआ वर्ग पर विचार कर रहे हैं, जिसमें परजीविता की निश्चित विशेषताएं पायी जाती हैं।

उद्योग की विभिन्न शाखाओं में से किसी एक शाखा के, अनेक देशों में से किसी एक देश, आदि के पूंजीपति जो बहुत ऊंचा इजारेदारी मुनाफ़ा कमाते हैं, उससे उनके लिए आर्थिक दृष्टि से यह संभव हो जाता है कि वे मज़दूरों के कुछ हिस्सों को, कुछ समय तक तो उनकी काफ़ी बड़ी अल्पसंख्या को, रिश्वत दे सकें और उन्हें अन्य सभी उद्योगों अथवा राष्ट्रों के ख़िलाफ़ किसी एक उद्योग विशेष या राष्ट्र विशेष के बुर्जुआ वर्ग की तरफ़ मिला लें। दुनिया के बंटवारे के लिए साम्राज्यवादी राष्ट्रों के बीच विग्रहों के गहन होने के कारण यह चेष्टा और बढ़ती है। इस प्रकार साम्राज्यवाद तथा अवसरवाद के बीच वह संबंध पैदा होता है, जो सबसे पहले और सबसे स्पष्ट रूप से इंगलैंड में इसलिए प्रकट हुआ कि वहां अन्य देशों की तुलना में साम्राज्यवादी विकास की कुछ विशेषताएं बहुत पहले ही दिखाई देने लगी थीं। कुछ लेखक, उदाहरण के लिए, ल० मार्तोव, (काउत्स्की तथा हुइस्मान्स के ढंग की) "आधिकारिक आशावादिता" का सहारा लेकर साम्राज्यवाद और मज़दूर आंदोलन में पाये जानेवाले अवसरवाद के पारस्परिक संबंध को—जो इस समय एक बहुत ही ज्वलंत तथ्य बन गया है—टाल जाने की कोशिश करते हैं। इस "आशावादिता" का एक नमूना यह है: यदि प्रगतिशील पूंजीवाद के कारण ही अवसरवाद में वृद्धि होती या यदि ऐसा होता कि सबसे अच्छा वेतन पानेवाले मजदूरों का ही झुकाव अवसरवाद की ओर होता, तो पूंजीवाद के विरोधियों की हेतु-सिद्धि की कोई आशा नहीं रह जाती, आदि। हमें इस प्रकार की "आशावादिता" के बारे में किसी भ्रम में नहीं रहना चाहिए। यह अवसर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाद के संबंध में आशावादिता है, यह वह आशावादिता है, जो अवसरवाद को छिपाने का काम करती है। सच तो यह है कि अवसरवाद के विकास की असाधारण तीव्र गति और उसका विशेष रूप से घृणास्पद चरित्र इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि उसकी विजय स्थायी होगी : स्वस्थ शरीर पर किसी घातक फोड़े की तीव्र वृद्धि का परिणाम केवल यही हो सकता है कि वह फोड़ा जल्दी फूटे और शरीर उसकी पीड़ा से मुक्त हो जाये। इस सिलसिले में सबसे ख़तरनाक वे लोग होते हैं, जो इस बात को समझना नहीं चाहते कि साम्राज्यवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई उस समय तक एक ढोंग और निरर्थक बात है, जब तक उसका संबंध अभिन्न रूप से अवसरवाद के ख़िलाफ़ लड़ाई के साथ न हो।

इस पुस्तक में साम्राज्यवाद के आर्थिक सार के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, उससे यही नतीजा निकलता है कि हमें उसकी परिभाषा यह करनी चाहिए कि वह संक्रमण की अवस्था में पूंजीवाद है, या यह कहना अधिक उचित होगा कि वह मरणोन्मुख पूंजीवाद है। इस संबंध में यह ध्यान में रखना वहुत शिक्षाप्रद होगा कि वुर्जुआ अर्थशास्त्री आधुनिक पूंजीवाद का वर्णन करते समय इस प्रकार के चालू फ़िक़रों का इस्तेमाल करते हैं, जैसे "अंतर्गुंथन", "पार्थक्य का अभाव", आदि। "अपने कार्यभार तथा विकास के अनुरूप" बैंक "ऐसे उद्यम हैं, जिनका शुद्धतः निजी आर्थिक चरित्र नहीं होता, वे शुद्धतः निजी आर्थिक नियमन के क्षेत्र से अधिकाधिक बाहर निकलते जा रहे हैं"। वही रीसेर, जिनके शब्दों को हमने अभी उद्धृत किया है, वड़ी गंभीरता के साथ घोषणा करते हैं कि "समाजीकरण" के बारे में मार्क्सवादियों की "भविष्यवाणी" "सही सावित नहीं हुई है"!

तो "अंतर्गुंथन" के फ़िक़रे का क्या अर्थ है? वह केवल उस प्रक्रिया की सबसे ज्वलंत विशेषता को अभिव्यक्त करता है, जो हमारी आंखों के सामने हो रही है। उसका मतलव यह है कि देखनेवाला अलग-अलग पेड़ों को तो गिन लेता है, पर वह जंगल को नहीं देख पाता। इस फ़िक़रे में सतही, संयोगवश तथा अव्यवस्थित ढंग से होनेवाली बातों की हूबहू नक़ल कर दी गयी है। यह शब्द इस बात का रहस्योद्घाटन करता है कि अवलोकन कनेरवाला एक ऐसा व्यक्ति है, जो आधार-सामग्री की विपुलता को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखकर घबरा गया है, पर वह उसके अर्थ तथा महत्व को समझने में सर्वथा असमर्थ है। शेयरों का स्वामित्व और निजी संपत्ति के मालिकों के पारस्परिक संबंध "ऊट-पटांग ढंग से अंतर्गुंथित हो जाते हैं"। परंतु इस अंतर्गुंथन की तह में, स्वयं उसका आधार, उत्पादन के बदलते हुए सामाजिक संबंध हैं। जब कोई बड़ा उद्यम विराट रूप धारण कर लेता है और सुनियोजित ढंग से, विपुल तथ्य-सामग्री की अचूक गणना के आधार पर मूलभूत कच्चे माल के संभरण को संगठित करता है तथा करोड़ों लोगों की जितनी कुल आवश्यकता है, उसका दो-तिहाई या तीन-चौथाई भाग तक ही उन्हें सप्लाई करता है; जब कच्चा माल सुव्यवस्थित तथा संगठित ढंग से उत्पादन के लिए सबसे उपयुक्त स्थानों को, कभी-कभी सैकड़ों या हज़ारों मील दूर भी, भेजा जाता है; जब सामग्री के परिष्करण से लेकर विभिन्न प्रकार के तैयार माल बनाने तक की सारी अनुक्रमिक मंज़िलों का निर्देशन एक ही केंद्र से किया जाता है; जब ये चीज़ें एक ही योजना के अनुसार करोड़ों उपभोक्ताओं के बीच वितरित की जाती हैं (अमरीकी 'तेल ट्रस्ट' द्वारा अमरीका तथा जर्मनी में तेल का वितरण) – तब यह स्पष्ट हो जाता है कि चीज़ें "अंतर्गुंथित" ही नहीं हो गयी हैं, बल्कि उत्पादन का समाजीकरण भी हो गया है; यह स्पष्ट हो जाता है कि निजी आर्थिक संबंध तथा निजी संपत्ति के संबंध एक ऐसा खोल बन गये हैं, जिसके अंदर की सामग्री अब उससे मेल नहीं खाती, एक ऐसा खोल बन गये हैं, जिसके विनाश को कृत्रिम उपायों द्वारा रोकने की कोशिश की गयी, तो अवश्य ही उसका क्षय हो जायेगा; एक ऐसा खोल, जो काफ़ी दीर्घकाल तक क्षय की दशा में रह सकता है (यदि हम हद से हद यह भी मान लें कि अवसरवादी फोड़े का इलाज बहुत लंबा खिंचेगा), परंतु यह खोल अनिवार्य रूप से हटाया जायेगा।

जर्मन साम्राज्यवाद के उत्साही प्रशंसक शुल्ज़े-गैवर्निट्ज़ जोश के साथ कहते हैं:

"अगर अंतिम गणना में जर्मन बैंकों का नेतृत्व एक दर्जन लोगों के हाथ में दे दिया गया है, तो आज भी उनका काम सार्वजनिक हित की दृष्टि से अधिकांश राज्य मंत्रियों के काम की अपेक्षा अधिक महत्व रखता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है" (यहां पर बैंकपतियों, मंत्रियों, उद्योगपतियों तथा किरायाजीवियों के "अंतर्गुंथन" को सुविधानुसार भुला दिया गया है)। "...जिन प्रवृत्तियों का हमने उल्लेख किया है, यदि उनके विकास की परिणति तक उनकी कल्पना की जाये, तो पता चलता है कि राष्ट्र की सारी मुद्रा-पूंजी बैंकों में संयुक्त हो गयी है; बैंकों ने स्वयं मिलकर कार्टेलों का रूप धारण कर लिया है; राष्ट्र की निवेश-पूंजी सिक्यूरिटियों के रूप में ढल गयी है। तब उस मेधावी पुरुष सेंट-सीमोन की भविष्यवाणी पूरी हो जायेगी: 'उत्पादन की वर्तमान अराजकता को, जो इस बात के सर्वथा अनुरूप है कि आर्थिक संबंध बिना किसी समरूप नियमन के विकसित हो रहे हैं, उत्पादन में संगठन के लिए जगह ख़ाली करनी पड़ेगी। तब उत्पादन का निर्देशन उन अलग-अलग उत्पादकों के हाथ में नहीं रह जायेगा, जो एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं और जिन्हें मनुष्य की आर्थिक आवश्यकताओं का कोई ज्ञान नहीं होता; तब यह काम किसी सामाजिक संस्था के हाथ में होगा। एक केंद्रीय प्रबंध समिति, जो सामाजिक अर्थव्यवस्था के विस्तृत क्षेत्र का सर्वेक्षण ज़्यादा ऊंचाई से कर सकेगी, पूरे समाज के हित में अर्थव्यवस्था का नियमन करेगी, उत्पादन के साधनों को उचित हाथों में सौंप देगी और सबसे बढ़कर इस बात का ध्यान रखेगी कि पैदावार तथा खपत के बीच निरंतर सामंजस्य रहे। इस प्रकार की संस्थाएं इस समय भी मौजूद हैं, जिन्होंने आर्थिक श्रम के संगठन को कुछ हद तक अपने काम के एक हिस्से के रूप में अंगीकार कर लिया है: ये संस्थाएं हैं बैंक।' हम सेंट-सीमोन की इस भविष्यवाणी की पूर्ति से अभी कोसों दूर हैं, पर हम उसकी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं; यह मार्क्सवाद है, मार्क्स ने जिस रूप में उसकी कल्पना की थी, उससे भिन्न, पर केवल रूप में ही भिन्न।"*

सचमुच, यह मार्क्स का ज़बर्दस्त "खंडन" है, जो मार्क्स के नपे-तुले वैज्ञानिक विश्लेषण से एक क़दम पीछे हटकर सेंट-सीमोन की अटकलबाज़ी की शरण लेता है, एक मेधावी पुरुष की ही अटकलबाज़ी सही, पर है अटकलबाज़ी ही।

---

* *Grundriß der Sozialökonomik*, पृ० १४६।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिप्पणियां

1 इतिहास में 'युद्ध विषयक थीसिसें' नाम से ज्ञात यह दस्तावेज़ ऐसा पहला दस्तावेज़ था, जिसमें विश्व साम्राज्यवादी युद्ध के संबंध में बोल्शेविक पार्टी और अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादी आंदोलन के रवैये को स्पष्ट किया गया था। लेनिन ने १९१४ के सितंबर के शुरू में ये थीसिसें लिखी थीं। – १५

2 **दूसरा इंटरनेशनल** – समाजवादी पार्टियों का १८८९ में स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संघ। साम्राज्यवादी युग के आगमन के साथ उसमें अवसरवादी तत्वों का पलड़ा अधिकाधिक भारी होने लगा था। जब १९१४ में पहला विश्वयुद्ध शुरू हुआ, तो दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादी नेताओं ने अपने देशों की बुर्जुआ सरकारों की साम्राज्यवादी नीति का खुलेआम समर्थन किया, जिसके फलस्वरूप शीघ्र ही दूसरे इंटरनेशनल का पतन हो गया। – १६

3 ४ अगस्त, १९१४ को राइख़स्टाग में सामाजिक-जनवादी ग्रुप ने कैसर सरकार को ५ अरब मार्क के युद्ध ऋण दिये जाने के प्रस्ताव का बुर्जुआ प्रतिनिधियों के साथ समर्थन किया था और इस तरह विल्हेल्म द्वितीय की साम्राज्यवादी नीति पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगायी थी। जैसा कि बाद में पता चला, राइख़स्टाग की बैठक से पहले सामाजिक-जनवादी ग्रुप में जब इस प्रश्न पर विचार हो रहा था, वामपंथी सामाजिक-जनवादियों ने सरकार को युद्ध ऋण दिये जाने का विरोध किया था,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन बाद में ग्रुप के अवसरवादी बहुमत के सामने उन्हें झुक जाना और ऋणों के पक्ष में मत दे देना पड़ा। – १६

[4] ४ अगस्त, १९१४ को हाउस आफ़ डिपुटीज़ में बेल्जियन समाजवादियों ने युद्ध ऋणों का एकमत से समर्थन किया था। इसके बाद उनके नेता और दूसरे इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के अध्यक्ष एमील वानडरवेल्डे सरकार में शामिल हो गये और न्यायमंत्री बने।

ऐसा ही रुख़ फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के नेताओं ने भी अपनाया। ४ अगस्त को समाजवादियों ने फ़्रांसीसी संसद में युद्ध ऋणों, हड़तालबंदी, सभाओं पर प्रतिबंध, आदि से संबंधित प्रस्तावों का एकमत से समर्थन किया। अगस्त के अंत में समाजवादी जूल गेद तथा मार्सेल सेम्बा और उनके कुछ दिन बाद आल्बेर तोमा भी फ़्रांस की साम्राज्यवादी सरकार में सम्मिलित हो गये। – १६

[5] *Sozialistische Monatshefte* ('समाजवादी मासिक') – बर्लिन से १८९७ से १९३३ तक प्रकाशित जर्मन अवसरवादियों की मुख्य और अंतर्राष्ट्रीय अवसरवाद की एक पत्रिका। – १७

[6] **यमदूत सभा** – क्रांतिकरी आंदोलन के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए ज़ारशाही पुलिस द्वारा संगठित राजतंत्रवादी गिरोह। वे क्रांतिकारियों की हत्या करते थे, प्रगतिशील बुद्धिजीवियों पर हमले करते थे और यहूदियों का क़त्ले-आम संगठित करते थे।

घोर दक्षिणपंथियों और अति कट्टर प्रतिक्रियावादियों को भी यमदूत सभाई कहा जाता था। – १८

[7] **कैडेट** – सांविधानिक-जनवादी पार्टी – रूस में उदारतावादी-राजतंत्रवादी बुर्जुआ वर्ग की प्रमुख पार्टी – के सदस्य। यह पार्टी अक्तूबर, १९०५ में क़ायम की गयी थी। इसमें बुर्जुआ वर्ग, ज़मींदारों और बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि शामिल थे। कैडेट अपने को "जन-स्वतंत्रता की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पार्टी" कहते थे, पर वस्तुतः उन्होंने अपने को सांविधानिक राजतंत्र की मांग तक ही सीमित रखा। पहले विश्वयुद्ध के दौरान (१९१४–१९१८) उन्होंने ज़ारशाही सरकार की आक्रामक विदेश नीति का समर्थन किया। फ़रवरी, १९१७ की बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के दौरान कैडेटों ने राजतंत्र को क़ायम रखने की कोशिश की। बुर्जुआ अस्थायी सरकार में प्रमुख स्थान ग्रहण कर उन्होंने जनता के विरुद्ध प्रतिक्रांतिकारी नीति चलायी। अक्तूबर समाजवादी क्रांति की विजय के बाद कैडेट सोवियत सत्ता के कट्टर दुश्मन बन गये। – १८

8 यहां आशय **समाजवादी-क्रांतिकारी और जन-समाजवादी पार्टियों तथा त्रुदोवीक (श्रमिक दल)** से है।

समाजवादी-क्रांतिकारी – विभिन्न नरोदवादी दलों और मंडलियों के एकीकरण के फलस्वरूप १९०१ के अंत – १९०२ के आरंभ में रूस में स्थापित एक टुटपुंजिया पार्टी के सदस्य। उनके विचार नरोदवाद और संशोधनवाद की अवधारणाओं की सारसंग्रहवादी खिचड़ी थे।

जन-समाजवादी – १९०६ में समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के दक्षिण-पंथी धड़े से अलग होकर बनी टुटपुंजिया श्रमिक जन-समाजवादी पार्टी के सदस्य। वे कैडेट (सांविधानिक-जनवादी) पार्टी के साथ गुट बनाने के पक्ष में थे। लेनिन ने इस पर ज़ोर दिया कि जन-समाजवादी कैडेट पार्टी से बहुत भिन्न नहीं थे, क्योंकि उन्होंने जनतंत्र की स्थापना करने और ज़मींदारों की सारी भूमि भूमिहीन किसानों को दे देने की मांगें त्यागकर भूमि का आंशिक रूप में राष्ट्रीयकरण करने, उसके एवज़ में ज़मींदारों को मुआवज़ा देने और राष्ट्रीयकृत भूमि श्रम की मात्रा के अनुसार किसानों के बीच बांटने का सवाल उठाया।

त्रुदोवीक (श्रमिक दल) – राज्य दूमाओं के टुटपुंजिया जनवादी सदस्यों का ग्रुप। यह नरोदवादी विचारधारा के किसानों तथा बुद्धिजीवियों का ग्रुप था। त्रुदोवीक दल अप्रैल, १९०६ में अस्तित्व में आया था।

राज्य दूमा में त्रुदोवीकों का झुकाव कभी सांविधानिक-जनवादियों की ओर होता था, तो कभी सामाजिक-जनवादियों की ओर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान समाजवादी-क्रांतिकारियों, जन-समाजवादियों तथा त्रुदोवीकों की बहुसंख्या ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी स्थिति अपनायी। – १८

9 **सर्वस्लाववाद** (panslavism) — एक प्रतिक्रियावादी राजनीतिक प्रवृत्ति, जिसका उद्देश्य सभी स्लाव देशों को ज़ारशाही रूस के झंडे तले एकजुट करना था। – १९

10 व्ला० इ० लेनिन ने यह लेख उस काल में रूस में सबसे अधिक पढ़े जानेवाले ग्रानात विश्वकोश के लिए लिखा था। १९१८ में जब यह लेख एक अलग पुस्तिका के रूप में पुनर्मुद्रित हुआ, तो उसकी भूमिका में उन्होंने अपनी याददाश्त के आधार पर लेख का रचनाकाल १९१३ बताया। वास्तव में उन्होंने उसे १९१४ के वसंत में लिखना आरंभ किया था और नवंबर के पूर्वार्ध में पूरा किया। लेख के अंत में परिशिष्ट के तौर पर मार्क्सवाद विषयक पुस्तकों की सूची भी छापी गयी थी। – २०

11 **मेंशेविक** – रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन में टुटपुंजिया अवसरवादी प्रवृत्ति के पक्षधर। १९०३ में रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस में जब पार्टी के केंद्रीय निकायों के चुनाव हुए थे, तो क्रांतिकारी सामाजिक-जनवादियों को, जिनके नेता व्ला० इ० लेनिन थे, बहुमत (रूसी में बोल्शिंस्त्वो) मिला था, जिससे वे "बोल्शेविक" कहलाये जाने लगे, और अवसरवादियों को अल्पमत (मेंशिंस्त्वो), जिससे उनका नाम "मेंशेविक" पड़ा।

१९०५–१९०७ की क्रांति के दौरान मेंशेविकों ने क्रांति में मज़दूर वर्ग की प्रधानता और किसानों के साथ मज़दूर वर्ग की संघबद्धता का विरोध किया और कहा कि उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग के साथ समझौता कर लिया जाना चाहिए और क्रांति का नेतृत्व भी उसे ही सौंप दिया जाना चाहिए। क्रांति की विफलता के बाद शुरू हुए प्रतिक्रियावाद के नंगे नाच के दौर में अधिकांश मेंशेविक विसर्जनवादी बन गये: वे मज़दूर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी को भंग करने की मांग करने लगे, जिसे अब अवैध पार्टी की हैसियत से काम करना पड़ रहा था। फ़रवरी, १६१७ की बुर्जुआ-जनवादी क्रांति की विजय के उपरांत मेंशेविकों ने बुर्जुआ अस्थायी सरकार में सम्मिलित होकर उसकी साम्राज्यवादी नीति का समर्थन और समाजवादी क्रांति की तैयारियों का विरोध किया।

अक्तूबर समाजवादी क्रांति के पश्चात् मेंशेविकों की पार्टी खुलेआम प्रतिक्रांतिकारी पार्टी बन गयी और नवस्थापित सत्ता का तख़्ता उलटने के लिए षड्यंत्रों तथा विद्रोहों के आयोजन व क्रियान्वयन में भाग लेने लगी।–२०

12 **वामपंथी हेगेलवादी अथवा तरुण हेगेलपंथी** जर्मनी में हेगेल के भाववादी दर्शन के वामपक्ष का प्रतिनिधित्व करते थे।

उन्होंने सामाजिक विकास के वस्तुगत नियमों, समाज के विकास में भौतिक उत्पादन की भूमिका तथा समाज में वर्ग संघर्ष की अपरिहार्यता को स्वीकृति नहीं दी। उन्होंने १६वीं सदी के चौथे तथा पांचवें दशकों में जर्मन बुर्जुआ उदारतावाद का प्रतिनिधित्व किया।

अपनी कार्रवाई के शुरू में तरुण हेगेलपंथियों का पक्ष लेकर का० मार्क्स तथा फ़्रे० एंगेल्स बाद में क्रांतिकारी जनवादी बन गये। उन्होंने भाववाद से भौतिकवाद में तथा क्रांतिकारी जनवादिता से कम्युनिज़्म में संक्रमण किया तथा अपनी रचनाओं में तरुण हेगेलपंथियों के दर्शन की उग्र आलोचना की, उसके वर्ग सार को बेनक़ाब किया और उसका वैज्ञानिक दिवालियापन सिद्ध किया।–२१

13 फ़्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, हिन्दी संस्करण, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६७८, पृ० २२२)।–२२

14 *Rheinische Zeitung für Politik, Handel und Gewerbe* ('राइन का राजनीतिक, व्यापारिक और औद्योगिक समाचारपत्र')–१८४२–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१८४३ में कोलोन से प्रकाशित एक दैनिक समाचारपत्र। उसकी संस्थापना प्रशियाई निरंकुशतावाद के विरोधी राइनी बुर्जुआ लोगों ने की थी। उसे कतिपय तरुण हेगेलपंथियों का सहयोग और समर्थन भी प्राप्त था। उसमें एंगेल्स के कई लेख छपे। अप्रैल, १८४२ से कार्ल मार्क्स उसमें काम करने लगे और उसी वर्ष अक्तूबर में वह उसके एक संपादक भी बन गये। उनके संपादन में पत्र क्रांतिकारी-जनवादी रुझानवाला बनने लगा। जनवरी, १८४३ में प्रशियाई सरकार ने उस पर बहुत कड़ा सेंसर लगाने और १ अप्रैल से उसका प्रकाशन बिलकुल ही बंद कर देने का निर्णय किया। मालिकों ने घबड़ाकर पत्र का रवैया कुछ नरम बनाना चाहा, जिससे मार्क्स सहमत न हुए और १७ मार्च को उन्होंने उससे इस्तीफ़ा दे दिया। – २२

15 यहां आशय लेख के साथ प्रकाशित मार्क्सवाद विषयक ग्रंथसूची से है (प्रस्तुत खंड में उसे छोड़ दिया गया है)। – २२

16 यहां अभिप्राय कार्ल मार्क्स के 'मोज़ेल संवाददाता की सफ़ाई' शीर्षक लेख से है। – २२

17 लेनिन का अभिप्राय यहां कार्ल मार्क्स और आर्नोल्ड रूगे के संपादन में पेरिस से जर्मन भाषा में प्रकाशित पत्रिका *Deutsch-Französische Jahrbücher* ('जर्मन-फ़्रांसीसी वार्षिकी') से है। इसका केवल एक अंक (फ़रवरी, १८४४ में) निकल पाया था। उसमें का० मार्क्स और फ़्रे० एंगेल्स की वे रचनाएं प्रकाशित हुई थीं, जिनसे उनके भौतिकवाद तथा कम्युनिज़्म को पूर्णतः अपना लिये जाने का संकेत मिलता था।

मार्क्स और बुर्जुआ आमूलवादी रूगे के बीच सैद्धांतिक मतभेदों के कारण पत्रिका आगे नहीं छप सकी। – २२

18 का० मार्क्स, 'हेगेलीय न्याय-दर्शन की आलोचनात्मक समीक्षा। भूमिका'। – २३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

19 **कम्युनिस्ट लीग** – क्रांतिकारी सर्वहारा का पहला अंतर्राष्ट्रीय संगठन, जिसकी स्थापना १८४७ के जून के आरंभ में लंदन में मार्क्स तथा एंगेल्स के नेतृत्व में हुई।

कम्युनिस्ट लीग ने पुराने, वर्गों के परस्पर विरोध पर आधारित बुर्जुआ समाज के उन्मूलन और वर्गों तथा निजी स्वामित्व से मुक्त नये समाज की स्थापना को अपना लक्ष्य बनाया। उसके निर्देश पर मार्क्स और एंगेल्स ने १८४८ में 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' लिखा। कम्युनिस्ट लीग ने सर्वहारा क्रांतिकारियों के शिक्षा केंद्र और सर्वहारा पार्टी के भ्रूणरूप तथा पहले इंटरनेशनल के पूर्ववर्ती के रूप में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका निभायी। नवंबर, १८५२ में लीग भंग कर दी गयी। – २३

20 यहां आशय फ़्रांस की फ़रवरी, १८४८ की बुर्जुआ क्रांति से है। – २४

21 यहां जर्मनी और आस्ट्रिया में मार्च, १८४८ में शुरू हुई बुर्जुआ क्रांतियों की चर्चा चल रही है। – २४

22 *Neue Rheinische Zeitung* ('नया राइन समाचारपत्र') – कोलोन से कार्ल मार्क्स के संपादन में निकलनेवाला एक दैनिक पत्र। वह १ जून, १८४८ से १९ मई, १८४९ तक ही निकल पाया।

दैनिक के अग्रलेख, जिन्होंने जर्मन तथा यूरोपीय क्रांति के सबसे महत्वपूर्ण सवालों पर पत्र का रुख़ प्रकट किया था, आम तौर पर मार्क्स और एंगेल्स लिखते थे। – २४

23 यहां अभिप्राय पेरिस के उस जन-प्रदर्शन से है, जिसे "पर्वत" नामक टुटपुंजिया पार्टी ने १८४८ की क्रांति द्वारा स्थापित सांविधानिक व्यवस्थाओं का राष्ट्रपति तथा विधान सभा की बहुसंख्या द्वारा उल्लंघन किये जाने के विरोध में आयोजित किया था। यह प्रदर्शन सरकार ने तितर-बितर कर दिया था। – २४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

24 यहां लेनिन का आशय का० मार्क्स और फ़्रे० एंगेल्स के पत्रों के उस संकलन से है, जो सितंबर, १९१३ में स्टुटगार्ट (जर्मनी) में चार खंडों में छपा था। इस संकलन का पूरा नाम था 'फ़्रेडरिक एंगेल्स और कार्ल मार्क्स का पत्र-व्यवहार, १८४४–१८८३'। वह अगस्त बेबेल और एडुअर्ड बर्नस्टीन द्वारा प्रकाशित किया गया।–२४

25 यहां लेनिन का आशय कार्ल मार्क्स के पैंफ़लेट *Herr Vogt* ('श्रीमान फ़ोग्ट') से है, जिसे बोनापार्तीय एजेंट कार्ल फ़ोग्ट के एक कुत्सित पैंफ़लेट '*Allgemeine Zeitung* के ख़िलाफ़ मेरा मुक़दमा' के जवाब में लिखा गया था।–२४

26 **अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ (पहला इंटरनेशनल)**–सर्वहारा का पहला व्यापक अंतर्राष्ट्रीय संगठन (१८६४–१८७६)। कार्ल मार्क्स पहले इंटरनेशनल के संगठनकर्त्ता, नेता और उसकी 'उद्घाटन घोषणा', नियमावली और अन्य कार्यक्रम व कार्यनीति संबंधी दस्तावेज़ों के लेखक थे। पहला इंटरनेशनल विभिन्न देशों के मज़दूरों के आर्थिक व राजनीतिक संघर्ष का मार्ग-दर्शन और उनकी अंतर्राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण करता था। उसने मार्क्सवाद के प्रसार और समाजवाद को मज़दूर आंदोलन से जोड़ने में बहुत बड़ी भूमिका निभायी।–२५

27 यहां आशय 'अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर संघ की उद्घाटन-घोषणा' से है (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड २, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७७, पृ० ९–१८)।–२५

28 **पेरिस कम्यून**–इतिहास में सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना का पहला प्रयोग। पेरिस की सर्वहारा क्रांति के फलस्वरूप क़ायम हुई मज़दूर वर्ग की यह क्रांतिकारी सरकार ७२ दिन, १८ मार्च से २८ मई, १८७१ तक चली।–२५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

29 **बकूनिनवादी** – अराजकतावाद के एक वैचारिक स्तंभ मिख़ाईल बकूनिन के अनुयायी। वे मार्क्सवादी सिद्धांत और मजदूर आंदोलन की कार्यनीति का घोर विरोध करते थे। उनकी मुख्य प्रस्थापना थी सर्वहारा अधिनायकत्व समेत सभी तरह की राज्य-प्रणाली का निषेध। उनके मत में जन-विप्लवों का, जो स्वतःस्फूर्त ढंग से होते हैं, नेतृत्व "असाधारण" व्यक्तियों से बने गुप्त क्रांतिकारी समाज को करना चाहिए। षड्यंत्रों, स्वतःस्फूर्त विप्लवों और आतंकवाद की उनकी कार्यनीति दुस्साहसपूर्ण थी और विप्लव संबंधी मार्क्सवादी शिक्षा की विरोधी थी। – २५

30 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, दूसरे जर्मन संस्करण का परिशिष्ट, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० २७। – २७

31 फ़्रे० एंगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खंडन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८०, पृ० ७६, १००, ६३, ४४। – २८

32 **अज्ञेयवाद** (agnosticism)— एक भाववादी दर्शन है, जिसके अनुसार जगत ज्ञानातीत है और मानव बुद्धि चूंकि सीमित है, अतः वह अनुभूतियों के दायरे के बाहर कुछ भी नहीं जान सकती। अज्ञेयवाद की कई धाराएं हैं, जिनमें से कुछ भौतिक जगत के वस्तुगत अस्तित्व को तो मानती हैं, किंतु उसकी ज्ञेयता की संभावना स्वीकार नहीं करतीं, और कुछ इस आधार पर भौतिक जगत के अस्तित्व को ठुकरा देती हैं कि मनुष्य मानो जान ही नहीं सकता कि उसकी अनुभूतियों के बाहर कोई चीज़ है या नहीं।

समीक्षावाद (criticism)— यह नाम इमानुएल कान्ट ने अपने भाववादी दर्शन को दिया था। उनके मत में दर्शन का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की संज्ञानात्मक योग्यता की समीक्षा करना है। इस "समीक्षा" के फलस्वरूप वह मनुष्य बुद्धि द्वारा वस्तु-तत्वों के संज्ञान की संभावना से इनकार करने लगे।

प्रत्यक्षवाद (positivism)— बुर्जुआ दर्शन तथा समाजशास्त्र की एक बहुप्रचलित धारा। इसके प्रवर्तक फ़्रांसीसी दार्शनिक और समाजशास्त्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रोग्यूस्त कोम्त (१७६८–१८५७) थे। प्रत्यक्षवादी संबंधों और संपर्कों के आंतरिक नियमों की ज्ञेयता की संभावना को नहीं स्वीकारते और वस्तुगत जगत के ज्ञान तथा रूपांतरण के एक साधन के रूप में दर्शन के महत्व को नकारकर उसका कार्य उसे विभिन्न ज्ञान-शाखाओं द्वारा प्राप्त तथ्यों का समाहार और प्रत्यक्ष प्रेक्षण के परिणामों का वाह्य वर्णन करने तक सीमित मानते हैं। अपने को भौतिकवाद और भाववाद से "ऊपर" समझने के बावजूद प्रत्यक्षवाद वास्तव में आत्मपरक भाववाद का ही एक रूप है।–२८

[33] फ़्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० २२३–२२६)।–२८

[34] फ़्रे० एंगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खंडन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८०, पृ० १८३, २०, ४२।–३०

[35] फ़्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० २४६, २१६, २४५)।–३१

[36] फ़्रे० एंगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खंडन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८०, पृ० ४६।–३१

[37] फ़्रे० एंगेल्स, 'लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अंत' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० २३१)।–३२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

38 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ४२३।– ३२

39 का० मार्क्स, 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७७, पृ० २६७, २६८)।– ३३

40 **पुनःस्थापन काल** – फ़्रांस के इतिहास में १८१५ से १८३० तक का वह काल, जिसके दौरान सत्ता १७९२ की फ़्रांसीसी बुर्जुआ क्रांति द्वारा सत्ताच्युत बुर्बों वंश के हाथ में पुनः आ गयी थी।– ३६

41 का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७६, पृ० १३०–१३१, १४२, १४०)।– ३७

42 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० १८, ८८।– ३८

43 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ४५।– ३९

44 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० १९४।– ३९

45 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० १६१।– ४०

46 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ८५३, ८५४, ८५५।– ४४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

47 **चरम उपयोगिता का सिद्धांत** – १९वीं सदी के आठवें दशक में मार्क्स के मूल्य के श्रम-सिद्धांत के मुक़ाबले में प्रतिपादित एक बाज़ारू, बुर्जुआ पक्ष-समर्थक आर्थिक सिद्धांत।

इसके अनुसार मूल्य का स्रोत उपयोगिता है, न कि श्रम, और इससे भी निर्णायक महत्व अंतिम इकाई की उपयोगिता का होता है (उदाहरणार्थ, यदि किसी व्यक्ति के पास रोटी के दस टुकड़े हैं, तो वास्तविक महत्व दसवें टुकड़े की उपयोगिता का होगा)। किसी वस्तु की "चरम उपयोगिता" का स्तर भी उस वस्तु की ज़रूरत, उसकी दुर्लभता, आदि पर निर्भर होता है।

पूंजीवाद के अंतर्गत उजरती श्रम के शोषण पर पर्दा डालने का एक साधन होने के कारण चरम उपयोगिता का सिद्धांत बुर्जुआ अर्थशास्त्र में काफ़ी प्रचलित है।–४५

48 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड ३, अध्याय ४७।–४८

49 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ८३८, ७१९।–४९

50 का० मार्क्स, 'फ़्रांस में वर्ग संघर्ष, १८४८–१८५०' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७६, पृ० ३४३)।–४९

51 का० मार्क्स, 'लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७७, पृ० २३७)।–४९

52 का० मार्क्स, 'फ़्रांस में वर्ग संघर्ष, १८४८–१८५०' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७६, पृ० ३४२)।–४९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

53 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड ३, भाग ६।—४६

54 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड ३, अध्याय ४७।—५०

55 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ५७०, ५७१।—५०

56 का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७५, पृ० ५५३, ५४६।—५२

57 का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७६, पृ० १५१)।—५३

58 फ़्रे० एंगेल्स, 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० २०१)।—५३

59 फ़्रे० एंगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खंडन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८०, पृ० ४४६—४४७।—५४

60 फ़्रे० एंगेल्स, 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० २०३)।—५४

61 फ़्रे० एंगेल्स, 'फ़्रांस और जर्मनी में किसानों का सवाल' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग २, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृ० ३८२)।

Die Neue Zeit ('नया ज़माना')—१८८३ से १९२३ तक स्टुटगार्ट से प्रकाशित जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी की सैद्धांतिक पत्रिका। इसी पत्रिका में मार्क्सवाद के प्रवर्तकों की कुछ रचनाएं सबसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहले छपी थीं। एंगेल्स अपने परामर्शों द्वारा उसके संपादकों की सहायता और प्रायः मार्क्सवाद से उनके विचलनों की आलोचना भी करते थे। एंगेल्स की मृत्यु के बाद पत्रिका में संशोधनवादियों के लेख नियमित रूप से छपने लगे। पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में पत्रिका ने व्यवहारतः सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों का समर्थन करते हुए मध्यमार्गी नीति अपनायी। – ५४

62 देखें कार्ल मार्क्स का फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम ९ अप्रैल, १८६३ का पत्र। – ५५

63 का० मार्क्स, 'दर्शन की दरिद्रता। श्री प्रूदों के 'दरिद्रता का दर्शन' का जवाब'। – ५६

64 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम ५ फ़रवरी, १८५१ का पत्र। – ५६

65 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम १७ दिसंबर, १८५७ का पत्र। – ५६

66 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम ७ अक्तूबर, १८५८ का पत्र। – ५६

67 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम ८ अप्रैल, १८६३ का पत्र। – ५७

68 देखें कार्ल मार्क्स का फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम ९ अप्रैल, १८६३ का पत्र। – ५७

69 **चार्टिज़्म** – इंगलैंड के मज़दूर वर्ग द्वारा १९वीं सदी के चौथे और पांचवें दशकों में छेड़ा गया आंदोलन। यह ब्रिटिश मज़दूर वर्ग के इतिहास में पहला जनव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन था। उसमें भाग लेनेवालों ने 'जनता का चार्टर' प्रकाशित किया (इसी से ये लोग 'चार्टिस्ट' कहलाये गये),

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसमें सार्विक मताधिकार, संसद-सदस्यों के लिए भूमि-अर्हता की समाप्ति, आदि मांगें की गयी थीं और उनके लिए संघर्ष छेड़ा। सारे देश में कई वर्षों तक मीटिंगें, प्रदर्शन, आदि होते रहे, जिनमें लाखों मज़दूरों और कारीगरों ने भाग लिया। आंदोलन कुचल दिया गया। दृढ़ क्रांतिकारी सर्वहारा नेतृत्व और एक निश्चित कार्यक्रम का अभाव चार्टिस्ट आंदोलन की असफलता का मुख्य कारण रहा।

देखें कार्ल मार्क्स का फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम २ अप्रैल, १८६६ का पत्र। – ५७

70 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम १६ नवंबर, १८६६ का पत्र। – ५७

71 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम ११ अगस्त, १८८१ का पत्र। – ५७

72 का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' (का० मार्क्स, फ़्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६७६, पृ० १६७)। – ५७

73 यहां आशय क्रैको गणतंत्र के, जिस पर १८१५ में आस्ट्रिया, प्रशा और रूस ने संयुक्त रूप से नियंत्रण कर लिया था, राष्ट्रीय-मुक्ति जनवादी विद्रोह से है। विद्रोहियों ने एक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की थी, जिसने सामंती बेगारी की समाप्ति की घोषणा की और सारी भूमि बिना मुआवज़ा लिये किसानों को दे देने का वायदा किया। अन्य घोषणाओं में उसने राष्ट्रीय कर्मशालाओं की स्थापना करने, उनमें वेतन बढ़ाने और सभी नागरिकों को समान बनाने की बातें कहीं। किंतु विद्रोह को शीघ्र ही कुचल दिया गया। – ५७

74 का० मार्क्स, 'बुर्जुआ वर्ग तथा प्रतिक्रांतिवाद'। – ५८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

75 देखें कार्ल मार्क्स का फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम १६ अप्रैल, १८६६ का पत्र।–५८

76 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम २७ जनवरी, १८६५ का पत्र।–५८

77 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स का कार्ल मार्क्स के नाम ५ फ़रवरी, १८६५ का पत्र।–५९

78 देखें फ़्रेडरिक एंगेल्स के कार्ल मार्क्स के नाम ११ जून, १८६३, २४ नवंबर, १८६३, ४ सितंबर, १८६४, २७ जनवरी, १८६५, २२ अक्तूबर, १८६७, ६ दिसंबर, १८६७ के पत्र और कार्ल मार्क्स के फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम १२ जून, १८६३, १० दिसंबर, १८६४, ३ फ़रवरी, १८६५, १७ दिसंबर, १८६७ के पत्र।–५९

79 देखें कार्ल मार्क्स का लुडविग कुगेलमन के नाम १२ अप्रैल, १८७१ का पत्र।–५९

80 **समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून** १८७८ में जर्मनी में बिस्मार्क की सरकार द्वारा पास किया गया था। उसका उद्देश्य मज़दूर और समाजवादी आंदोलन का दमन करना था। इस क़ानून ने सामाजिक-जनवादी पार्टी के सभी संगठनों, मज़दूरों के जन-संगठनों और मज़दूर समाचारपत्रों पर पाबंदी लगा दी; समाजवादी साहित्य ज़ब्त कर लिया गया। सामाजिक-जनवादी गिरफ़्तार कर लिये गये तथा उनका निष्कासन किया गया।

समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून बढ़ते मज़दूर आंदोलन के दबाव के कारण १८९० में रद्द कर दिया गया।–६०

81 देखें कार्ल मार्क्स के फ़्रेडरिक एंगेल्स के नाम २३ जुलाई, १८७७, १ अगस्त, १८७७, १० सितंबर, १८७९ के पत्र और फ़्रेडरिक एंगेल्स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कार्ल मार्क्स के नाम २० अगस्त, १८७९, ९ सितंबर, १८७९ के पत्र।–६०

82 **संयुक्त अभिजात परिषद**–मई, १९०६ से अक्तूबर, १९१७ तक क़ायम भूदासस्वामी ज़मींदारों का एक प्रतिक्रियावादी संगठन। उसका मुख्य लक्ष्य एकतंत्रात्मक व्यवस्था, बड़े ज़मींदारों के भूस्वामित्व और अभिजात वर्ग के विशेषाधिकारों की रक्षा करना था। एक अर्द्धसरकारी संगठन जैसे काम करते हुए वह सरकार को भूदासस्वामियों के हितों की रक्षा के लिए क़ानूनी कार्रवाइयां करने को मजबूर करती थी। उसके बहुत-से सदस्य राज्य परिषद के सदस्य और यमदूत सभाई संगठनों के नेता भी थे (देखें टिप्पणी ६)।–६२

83 **दिसंबरवादी**–अभिजात रूसी क्रांतिकारी, जिन्होंने दिसंबर, १८२५ में निरंकुशता तथा भूदास-प्रथा के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह किया था (इससे उनका नाम "दिसंबरवादी" पड़ा था)। ज़ारशाही सेनाओं ने विद्रोह कुचल दिया। उसमें भाग लेनेवालों को या तो मौत की सज़ा दी गयी थी या साइबेरिया में निर्वासित कर दिया गया था।

दिसंबरवादियों की गुप्त सोसायटियों के कार्यक्रमों में मुख्य तक़ाज़े थे भूदास-प्रथा का उन्मूलन करना तथा ज़ारशाही निरंकुशता को सीमित करना। वे जनसाधारण के विद्रोह से डरते थे और उन्होंने इन तक़ाज़ों को सैनिक साज़िश के ज़रिए अमल में लाने की कोशिश की। पहले क्रांतिकारी योद्धाओं के रूप में दिसंबरवादियों का लेनिन ने बहुत ऊंचा मूल्यांकन किया।–६२

84 **राज़्नोचीन्त्सी** (विभिन्न पदों और ओहदों के लोग)–ग़ैर अभिजात श्रेणियों के शिक्षित लोगों–तिजारतियों, पादरियों, शहरी मध्यम तबक़ों और किसानों–को इस नाम से पुकारा जाता था।–६२

85 यह उद्धरण नि० ग० चेर्निशेव्स्की के उपन्यास 'मुखबंध' से लिया गया है।–६२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

86 फ़्रे० एंगेल्स, 'प्रवासी साहित्य'। – ६३

87 **लासालवादी** – जर्मन टुटपुंजिया समाजवादी लासाल के समर्थक और अनुयायी तथा १८६३ में मज़दूर संस्थाओं की लाइपज़िग कांग्रेस में स्थापित किये गये आम जर्मन मज़दूर संघ के सदस्य। लासाल ही इस संघ के पहले अध्यक्ष थे और उन्होंने संघ के कार्यक्रम और उसकी कार्यनीति की रूपरेखा बनायी थी। संघ के राजनीतिक कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वजनिक मताधिकार के लिए संघर्ष तथा उसके आर्थिक कार्यक्रम का उद्देश्य उत्पादन मज़दूर संघों का निर्माण घोषित किया गया, जिन्हें राज्य आर्थिक सहायता देगा। अपनी व्यावहारिक गतिविधियों में लासाल तथा उनके अनुयायी बिस्मार्क की महान शक्तिवाली नीति का समर्थन करते थे। – ६४

88 **राज्य दूमा** – एक प्रतिनिधि संस्था, जिसे ज़ारशाही सरकार को १९०५ की क्रांतिकारी घटनाओं के फलस्वरूप मजबूरन बुलाना पड़ा था। औपचारिक रूप से राज्य दूमा एक विधायिनी संस्था थी, किंतु अमल में इसे कोई वास्तविक अधिकार प्राप्त नहीं थे। इसका चुनाव अप्रत्यक्ष, असमान और असार्विक था। मेहनतकश वर्गों तथा रूस में रहनेवाली ग़ैर रूसी जातियों के मताधिकार को काफ़ी परिसीमित कर दिया गया था और मज़दूरों तथा किसानों के एक बड़े हिस्से को तो मताधिकार प्राप्त ही नहीं था।

पहली दूमा (अप्रैल – जुलाई, १९०६) और दूसरी दूमा (फ़रवरी – जून, १९०७) ज़ारशाही सरकार द्वारा भंग कर दी गयीं। ३ जून, १९०७ के राजकीय उलट-फेर के बाद सरकार ने एक नया चुनाव क़ानून जारी किया, जिसने तीसरी (१९०७–१९१२) और चौथी (१९१२–१९१७) दूमाओं में ज़मींदारों और बड़े पूंजीपतियों के प्रतिक्रियावादी गुट के पूर्ण आधिपत्य की ज़मानत करते हुए मज़दूरों, किसानों तथा शहरी मध्य वर्ग के अधिकारों को और भी कम कर दिया। – ६७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

89 १०(२३) फ़रवरी, १९१५ को चौथी राज्य दूमा के बोल्शेविक सदस्य अ० ये० बदायेव, म० को० मुरानोव, ग० इ० पेत्रोव्स्की, फ़० नि० समोइलोव तथा नि० रो० शागोव और कुछ अन्य सामाजिक-जनवादियों पर ओज़ेर्की में हुई अवैध पार्टी कांग्रेस में भाग लेने के लिए धारा १०२ के तहत मुक़दमा चला था। इस धारा के अनुसार देश की राज्य-प्रणाली को उलटने के लिए संघर्षरत किसी भी संगठन की गतिविधियों में भाग लेना जुर्म था। मुक़दमे में अभियुक्तों के ख़िलाफ़ मुख्य साक्ष्य के तौर पर उनकी तलाशी के दौरान उनसे छीनी गयी लेनिन की कृति 'यूरोपीय युद्ध में क्रांतिकारी सामाजिक-जनवाद के कार्यभार' और 'सोत्सिआल-देमोक्रात' समाचारपत्र में प्रकाशित रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की केंद्रीय समिति का मेनिफ़ेस्टो 'युद्ध और रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन' पेश किये गये थे।

पांचों बोल्शेविक दूमा-सदस्यों को पूर्वी साइबेरिया में चिर निर्वासन की सज़ा मिली। – ६७

90 'देन' ('दिवस') – पीटर्सबर्ग से १९१२ से प्रकाशित एक उदारतावादी बुर्जुआ समाचारपत्र। उसमें मेंशेविक-विसर्जनवादी भी लिखा करते थे। फ़रवरी, १९१७ की क्रांति के बाद पत्र पूरी तरह उनके हाथों में आ गया। २६ अक्तूबर (८ नवंबर), १९१७ को पेत्रोग्राद सोवियत की सैनिक क्रांतिकारी समिति ने उसके प्रकाशन पर पाबंदी लगा दी। – ६८

91 'रेच' ('भाषण') – एक दैनिक, जो १९०६ से १९१७ तक पीटर्सबर्ग से प्रकाशित सांविधानिक-जनवादियों (कैडेटों) का मुखपत्र था। – ६८

92 **विसर्जनवादी** – पहली रूसी क्रांति (१९०५–१९०७) की पराजय के बाद मेंशेविकों (देखें टिप्पणी ११) में प्रचलित प्रवृत्ति। विसर्जनवादियों ने सर्वहारा वर्ग की क्रांतिकारी ग़ैर क़ानूनी पार्टी को ख़त्म करने और इसकी जगह ज़ारशाही के अंतर्गत क़ानूनी रूप से काम करनेवाली अवसरवादी पार्टी के गठन पर बहुत ज़ोर दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनवरी, १९१२ में प्राग में हुए सम्मेलन ने विसर्जनवादियों को पार्टी से निकाल दिया। – ६९

93 'नाशा जार्या' ('हमारा भोर') – जनवरी, १९१० से सितंबर, १९१४ तक पीटर्सबर्ग से प्रकाशित मेंशेविक-विसर्जनवादियों की वैध मासिक पत्रिका। यह रूस में विसर्जनवादी केंद्र था। – ७१

94 'सेवेरनाया राबोचाया गाज़ेता' ('उत्तरी मज़दूर समाचारपत्र') – जनवरी – मई, १९१४ में पीटर्सबर्ग से प्रकाशित एक मेंशेविक-विसर्जनवादी दैनिक। – ७१

95 'सोव्रेमेन्निक' ('समकालीन') – १९११–१९१५ में पीटर्सबर्ग से प्रकाशित एक साहित्यिक और राजनीतिक मासिक। उसमें अधिकांशत: मेंशेविक-विसर्जनवादियों, समाजवादी-क्रांतिकारियों, जन-समाजवादियों तथा वामपंथी उदारतावादियों के लेख छपा करते थे। – ७१

96 संगठन समिति – विसर्जनवादियों के अगस्त, १९१२ के सम्मेलन में स्थापित मेंशेविकों का एक नेतृत्वकारी निकाय। – ७१

97 बुंद ('लिथुआनिया, पोलैंड और रूस का सामान्य यहूदी मज़दूर संघ') की स्थापना १८९७ में वील्नो में यहूदी सामाजिक-जनवादी ग्रुपों की उद्घाटन-कांग्रेस में हुई थी। वह रूस के पश्चिमी प्रदेशों के मुख्यतया अर्द्धसर्वहारा यहूदी कारीगरों का संगठन था। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की पहली कांग्रेस (१८९८) में बुंद "एक स्वायत्त और ख़ास तौर से यहूदी सर्वहारा से संबंध रखनेवाले प्रश्नों के मामले में ही स्वतंत्र संगठन के तौर पर" रू० सा० ज० म० पा० में शामिल हो गया।

रू० सा० ज० म० पा० की दूसरी कांग्रेस (१९०३) में यहूदी सर्वहारा का एकमात्र प्रतिनिधि होने का बुंद का दावा ठुकरा दिये जाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बाद बुंद पार्टी से निकल गया। १९०६ में वह फिर पार्टी में सम्मिलित हो गया।

बुंद रूस के मज़दूर आंदोलन में राष्ट्रवाद और पार्थक्यवाद का वाहक था और उसने सामाजिक-जनवादी आंदोलन के मुख्य प्रश्नों पर अवसरवादी रवैया अपनाया।–७१

98 'सोत्सिआल-देमोक्रात' ('सामाजिक-जनवादी')–फ़रवरी, १९०८ से जनवरी, १९१७ तक प्रकाशित एक अवैध समाचारपत्र, रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का मुखपत्र।–७२

99 'प्राव्दा' ('सत्य')–५ मई, १९१२ से पीटर्सबर्ग से प्रकाशित दैनिक वैध बोल्शेविक समाचारपत्र। वह व्ला० इ० लेनिन द्वारा संस्थापित किया गया था।

'प्राव्दा' ज़ारशाही रूस में मज़दूरों का पहला, बड़े पैमाने पर निकलनेवाला समाचारपत्र था और मज़दूरों द्वारा इकट्ठे किये गये पैसों से प्रकाशित होता था। उसने मज़दूर संवाददाताओं और मज़दूर लेखकों का एक व्यापक समुदाय तैयार किया।

लेनिन, जो तब विदेश में थे, 'प्राव्दा' के साथ प्रायः रोज़ पत्र-व्यवहार करते थे, उसके संपादकमंडल को हिदायतें देते थे और 'प्राव्दा' के गिर्द पार्टी की श्रेष्ठतम साहित्यिक शक्तियों को संगठित करते थे।

ज़ारशाही सरकार ने 'प्राव्दा' को दबाने-कुचलने की हर कोशिश की, अनेक बार उसे बंद किया, परंतु वह दूसरे नाम से फिर से निकलने लगा। ८(२१) जुलाई, १९१४ को, पहले विश्वयुद्ध से पहले सरकार ने उसे फिर बंद कर दिया। 'प्राव्दा' का फिर से प्रकाशन केवल १९१७ की फ़रवरी क्रांति के बाद ही शुरू हुआ। ५ मार्च, १९१७ के बाद से 'प्राव्दा' रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी का मुखपत्र रहा।–७२

100 दूसरे इंटरनेशनल के बारे में टिप्पणी २ देखें।–७५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

101 **अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो** – दूसरे इंटरनेशनल का स्थायी कार्यकारी तथा सूचना निकाय, जिसकी स्थापना १६०० में हुई थी। इसमें इंटरनेशनल के अंतर्गत सभी समाजवादी पार्टियों के प्रतिनिधि शामिल थे। – ७५

102 **'बुंद के विदेश स्थित संगठन की सूचना बुलेटिन'** जेनेवा से छपती थी। जून, १६११ से, जून १६१६ तक इसके कुल ११ अंक निकले। बाद में इसके स्थान पर 'बुंद की विदेश स्थित समिति की बुलेटिन' निकलने लगी। – ७५

103 **स्टुटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस** (दूसरे इंटरनेशनल की सातवीं कांग्रेस) १८ से २४ अगस्त, १६०७ तक हुई। 'सैन्यवाद तथा अंतर्राष्ट्रीय टक्कर' नामक प्रस्ताव में व्ला० इ० लेनिन के सुझाव पर यह प्रस्थापना शामिल हुई: "यदि युद्ध छिड़ जाता है, तो उन्हें" (विभिन्न देशों के मज़दूर वर्गों और उनके संसदीय प्रतिनिधियों को – सं०) "जनसाधारण को उद्वेलित करने और पूंजीवादी वर्ग के प्रभुत्व के पतन की रफ़्तार तेज़ करने के लिए युद्ध द्वारा तीक्ष्ण बननेवाले आर्थिक तथा राजनीतिक संकट का भरसक लाभ उठाना चाहिए"।

यह प्रस्थापना बाद में बैसेल कांग्रेस के प्रस्ताव में भी शामिल हुई।

बैसेल कांग्रेस – बैसेल में २४ और २५ नवंबर, १६१२ को हुई असाधारण अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस। उसने युद्ध के संबंध में एक घोषणापत्र सर्वसम्मति से स्वीकार किया, जिसमें जनता को विश्वयुद्ध के बढ़ते ख़तरे से सचेत किया गया तथा तमाम समाजवादियों का युद्ध के विरुद्ध सक्रियतापूर्वक संघर्ष करने के लिए आह्वान किया गया। – ७५

104 यहां आशय जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी द्वारा साम्राज्यवाद और युद्ध के बारे में समाजवादियों के रवैये के प्रश्न पर २० सितंबर, १६१२ को अपनी चेमनिट्ज़ कांग्रेस में पारित प्रस्ताव से है। उसमें साम्राज्यवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीति की निंदा की गयी थी और शांति-संघर्ष की आवश्यकता पर बल दिया गया था। – ७७

105 '**नाशे स्लोवो**' ('हमारा शब्द') – १६१५ – १६१६ में पेरिस से प्रकाशित एक मेंशेविक समाचारपत्र। इसके एक संपादक लेव त्रोत्स्की थे। – ७८

106 यहां आशय एडुअर्ड डेविड के पैंफ़लेट *Die Sozialdemokratie und Vaterlandsverteidigung* ('सामाजिक-जनवाद तथा पितृभूमि की रक्षा'), बर्लिन, १६१५ से है। – ७८

107 *Die Internationale* ('इंटरनेशनल') – रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग और फ़्रांज़ मेहरिंग द्वारा संस्थापित एक मार्क्सवादी सैद्धांतिक पत्रिका। इसका पहला अंक १६१५ में निकला था।

जर्मनी की नवंबर क्रांति के बाद १६१८ में पत्रिका फिर से निकलने लगी। – ८०

108 **त्रिराष्ट्र समहित संधि अथवा एंटेंट** – जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और इटली के साम्राज्यवादी त्रिराष्ट्र संघ (देखें टिप्पणी १११) का विरोध करने के लिए १६०७ में ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रांस और रूस द्वारा स्थापित साम्राज्य-वादी गठबंधन। पहले विश्वयुद्ध के दौरान (१६१४–१६१८) संयुक्त राज्य अमरीका, जापान, इटली और कुछ अन्य देश इस सैनिक-राज-नीतिक संधि में शामिल हो गये। – ८०

109 **स्त्रूवेवाद या "क़ानूनी मार्क्सवाद"** – गत सदी के अंतिम दशक में रूसी बुर्जुआ उदारतावादी बुद्धिजीवियों के बीच जन्मी एक सामाजिक-राजनीतिक प्रवृत्ति। इसके प्रवक्ताओं – स्त्रूवे, बुल्गाकोव, आदि – ने अपने को मार्क्सवाद का अनुयायी बताकर मार्क्स की शिक्षा से सामंतवादी सामाजिक-आर्थिक विरचना के स्थान पर पूंजीवादी विरचना आने की अवश्यंभाविता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का सिद्धांत तो ग्रहण किया, किंतु मार्क्सवाद की "क्रांतिकारी आत्मा"– पूंजीवाद के अनिवार्य पतन तथा समाजवादी क्रांति के सिद्धांत–को पूर्णतः ठुकरा दिया। आगे चलकर "क़ानूनी मार्क्सवादी" मार्क्सवाद के शत्रु और बुर्जुआ कैडेट पार्टी के कार्यकर्त्ता बन बैठे। स्त्रूवेवाद का लेनिन द्वारा किया गया विवेचन प्रस्तुत खंड के पृष्ठ ६४ में देखें।–८२

110 **'गोलोस'** ('वाणी')–सितंबर, १६१४ से जनवरी, १६१५ तक पेरिस से प्रकाशित एक मेंशेविक दैनिक। उसके प्रकाशन में लेव त्रोत्स्की ने बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी।–८८

111 **त्रिराष्ट्र संघ**–जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और इटली का १८७६–१८८२ में निर्मित गठबंधन, जो मुख्यतया रूस, ग्रेट ब्रिटेन और फ़्रांस के विरुद्ध लक्षित था। विश्व साम्राज्यवादी युद्ध के दौरान इटली त्रिराष्ट्र संघ से निकलकर एंटेंट में शामिल हो गया और १६१५ से अपने भूतपूर्व मित्र राष्ट्रों–जर्मनी और आस्ट्रिया-हंगरी–के विरुद्ध लड़ने लगा, जिसके फलस्वरूप त्रिराष्ट्र संघ भंग हो गया।–६०

112 **'जीज़्न'** ('जीवन')–१६१५–१६१६ में प्रकाशित एक समाजवादी-क्रांतिकारी समाचारपत्र। पहले वह पेरिस से निकलता था, बाद में जेनेवा से निकलने लगा।–६३

113 **ब्लांकीवाद**–फ़्रांसीसी समाजवादी आंदोलन में एक प्रवृत्ति, जिसके जन्मदाता महान क्रांतिकारी और फ़्रांसीसी कल्पनावादी कम्युनिज़्म के एक प्रमुख प्रवक्ता लुई आग्यूस्त ब्लांकी (१८०५–१८८१) थे।

ब्लांकीवादी वर्ग संघर्ष के महत्व से इनकार करते थे, क्रांतिकारी पार्टी के बदले मुट्ठी भर गुप्त षड्यंत्रकारियों की कार्रवाइयों को प्राथमिकता देते और अधिक कारगर मानते थे, विद्रोह की सफलता के लिए तदनुकूल स्थिति का होना अनिवार्य नहीं समझते थे और जनसाधारण के साथ संपर्क बनाये रखने की आवश्यकता की उपेक्षा करते थे।–६४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

114 *The Economist*—१८४३ से लंदन से प्रकाशित एक आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। इसे बड़ औद्योगिक बुर्जुआ लोगों का मुखपत्र माना जाता है।—१००

115 **मुक्त व्यापार आंदोलन**—बुर्जुआ आर्थिक नीति की एक प्रवृत्ति, जिसका तक़ाज़ा है व्यापार की स्वतंत्रता और निजी आर्थिक कार्यकलाप में राजकीय अहस्तक्षेप। इस आंदोलन की शुरूआत १८वीं सदी के अंत में इंगलैंड में हुई थी।—१०६

116 यह उक्ति महान जर्मन कवि जोहान वोल्फ़गांग गेटे की है।—१०६

117 **बुलीगिन दूमा**—एक परामर्शदात्री (न कि विधाननिर्मात्री) राज्य दूमा, जिसकी योजना गृहमंत्री बुलीगिन के नेतृत्व में गठित एक आयोग ने तैयार की थी। ज़ार ने अगस्त, १९०५ में यह दूमा बुलाने की घोषणा की थी। बोल्शेविकों ने बुलीगिन दूमा की योजना का उत्तर सक्रिय बायकाट से दिया—उन्होंने मज़दूरों से उसके चुनावों में भाग न लेने और एकतंत्र के उन्मूलन के लिए संघर्ष करने की अपील की। बुलीगिन दूमा कभी न बुलायी जा सकी—क्रांतिकारी आंदोलन उसे उसके बुलाये जाने से पहले ही बहा ले गया।—१०८

118 **बर्न सम्मेलन** (रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की वैदेशिक शाखाओं की कांफ़्रेंस) १९१५ में १४ से १९ फ़रवरी (२७ फ़रवरी से ४ मार्च) तक बर्न में हुआ था। "पितृभूमि की रक्षा" के नारे के बारे में उसके प्रस्ताव में कहा गया था: "आस्ट्रो-सर्ब युद्ध में राष्ट्रीय मुद्दा गौण है और इससे युद्ध के व्यापक साम्राज्यवादी स्वरूप में कोई अंतर नहीं आता"।—१११

119 **जोरेसवादी**—फ़्रांसीसी समाजवादी आंदोलन के दक्षिणपंथी सुधारवादी धड़े के नेता जान जोरेस के अनुयायी। "आलोचना की स्वतंत्रता"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की मांग की आड़ में वे मार्क्सवाद की बुनियादी प्रस्थापनाओं में संशोधन करते थे और बुर्जुआ वर्ग के साथ सर्वहारा के वर्गीय सहयोग का नारा देते थे। १९०२ में उन्होंने फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी की स्थापना की, जो एक सुधारवादी पार्टी थी। १९०५ में फ़्रांस की गेदवादी समाजवादी पार्टी भी उसमें शामिल हो गयी।

पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में (१९१४–१९१८) जोरेसवादियों ने, जिनकी फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के नेतृत्वमंडल में बहुसंख्या थी, सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रवैया अख़्तियार करते हुए साम्राज्यवादी युद्ध का खुलेआम समर्थन किया। – ११६

120 **गेदवादी प्रवृत्ति** – १९वीं और २०वीं सदियों के संधिकाल में फ़्रांसीसी समाजवादी आंदोलन में पायी जानेवाली एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी प्रवृत्ति, जिसके अगुआ जूल गेद थे। १९०१ में गेद और उनके क्रांतिकारी वर्ग संघर्ष समर्थक अनुयायियों ने फ़्रांस की समाजवादी पार्टी का निर्माण किया, जो आगे चलकर, १९०५ में, सुधारवादी फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी में जा मिली। फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के भीतर गेदवादियों ने मध्य-मार्गी रुख़ अपनाया। पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में उन्होंने सामाजिक-अंधराष्ट्र-वादियों का साथ दिया और गेद तथा मार्सेल सेम्बा फ़्रांस की साम्राज्य-वादी सरकार में भी शामिल हुए। – ११६

121 *Le Socialisme* ('समाजवाद') – फ़्रांसीसी समाजवादी जूल गेद द्वारा १९०७ से १९१४ तक पेरिस से प्रकाशित एक पत्रिका। गेद उसके संपादक भी थे। – ११६

122 **मिलेरांवाद** – सामाजिक-जनवादी आंदोलन में फ़्रांसीसी समाजवादी-सुधार-वादी मिलेरां के नाम से ज्ञात एक अवसरवादी प्रवृत्ति। मिलेरां ने १८९९ में फ़्रांस की प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ सरकार में शामिल होकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फ़्रांसीसी सामाजिक-जनवादी नेताओं के अवसरवाद, उनकी बुर्जुआ वर्ग से सहयोग की नीति, क्रांतिकारी संघर्ष से उनकी विमुखता और मेहनतकश वर्गों के हितों से ग़द्दारी का ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत किया था। मिलेरांवाद को कभी-कभी मंत्रालयवाद भी कहा जाता है।–११६

123 **बर्नस्टीनवाद** – जर्मन तथा अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-जनवादी आंदोलन में १९वीं सदी के अंत में उद्भूत एक मार्क्सवाद विरोधी प्रवृत्ति, जिसके जन्मदाता संशोधनवादी विचारक एडुअर्ड बर्नस्टीन थे।

बर्नस्टीन ने एंगेल्स की मृत्यु (१८९५) के शीघ्र बाद क्रांतिकारी मार्क्सवाद में संशोधन किये जाने की मांग की ('समाजवाद की समस्याएं' शीर्षक लेखमाला तथा 'समाजवाद की पूर्वावश्यकताएं और सामाजिक-जनवाद के कार्य' शीर्षक पुस्तक में) और सामाजिक-जनवादी पार्टी को सामाजिक सुधारों की टुटपुंजिया पार्टी में बदलने की कोशिश की।–११६

124 *Vorwärts* ('आगे बढ़ो') – जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी का १८९१ से १९३३ तक बर्लिन से प्रकाशित दैनिक मुखपत्र।

इस पत्र के माध्यम से एंगेल्स ने सभी तरह के अवसरवाद के विरुद्ध संघर्ष किया था। एंगेल्स की मृत्यु के बाद पत्र पर पार्टी का दक्षिणपंथी धड़ा हावी हो गया और उसमें अवसरवादियों के लेख नियमित रूप से छपने लगे।–११९

125 यहां अभिप्राय अगस्त सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्सहाउज़ेन की पुस्तक *Das Volkswirtschaftliche System der Kapitalanlage im Auslande*, Berlin, 1907 ('विदेशों में पूंजी लगाने की राष्ट्रीय आर्थिक पद्धति', बर्लिन, १९०७) से है।–१२२

126 यहां अभिप्राय १९१३ में बर्लिन से प्रकाशित रूडाफ़्रेर (रीज़लर, कुर्ट) की पुस्तक *Grundzüge der Weltpolitik in der Gegenwart* ('वर्तमान विश्व राजनीति की मुख्य विशेषताएं) से है।–१२२

25*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

127 **ब्रिटिश समाजवादी पार्टी** की स्थापना १९११ में मैंचेस्टर में सामाजिक-जनवादी पार्टी और अन्य समाजवादी ग्रुपों के परस्पर विलयन के फलस्वरूप हुई थी। वह मार्क्सवादी विचारधारा की भावना में आंदोलन करती थी और "अवसरवादी पार्टी नहीं थी और लिबरलों से वस्तुतः स्वतंत्र पार्टी थी" (व्ला० इ० लेनिन)। किंतु सीमित सदस्यसंख्या और जनता से कमज़ोर संबंधों के कारण वह कुछ हद तक फ़िरक़ापरस्त स्वरूप की पार्टी बनकर रह गयी।

पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में पार्टी के भीतर अंतर्राष्ट्रीयतावादियों (गेलेकर, इंकपिन, मैकलिन, राथस्टीन, आदि) और सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों, जिनके नेता हाइन्डमैन थे, के बीच ज़बर्दस्त संघर्ष छिड़ा। स्वयं अंतर्राष्ट्रीयतावादियों के भीतर भी कई ढुलमुल और मध्य-मार्गी तत्व थे। फ़रवरी, १९१६ में पार्टी के कुछ नेताओं ने *The Call* नामक एक पत्र निकालना शुरू किया, जिसने अंतर्राष्ट्रीयतावादियों को एकजुट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अप्रैल, १९१६ में सोलफ़ोर्ड में हुए पार्टी के वार्षिक सम्मेलन ने हाइन्डमैन और उनके साथियों की सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी नीति की भर्त्सना की, जिसके फलस्वरूप वे पार्टी से अलग हो गये।

ब्रिटिश समाजवादी पार्टी ने एकतावादी कम्युनिस्ट ग्रुप के साथ मिलकर ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में मुख्य भूमिका अदा की। १९२० में हुई पहली एकता कांग्रेस में ब्रिटिश समाजवादी पार्टी के अधिसंख्य स्थानीय संगठन कम्युनिस्ट पार्टी में जा मिले। – १२४

128 **लेबर पार्टी** (Labour Party) की स्थापना १९०० में ट्रेड-यूनियनों, समाजवादी संगठनों और ग्रुपों के संयुक्त संगठन के तौर पर हुई थी। उसका उद्देश्य संसद में मज़दूरों के प्रतिनिधि भेजना था। इसलिए तब वह श्रम प्रतिनिधित्व समिति कहलाती थी। १९०६ में उसने अपना नाम बदलकर लेबर पार्टी रख दिया। ट्रेड-यूनियनों के सभी सदस्य पार्टी का शुल्क देने पर पार्टी के सदस्य स्वतः ही मान लिये जाते हैं।

आरंभ में मज़दूर ही इस पार्टी के सदस्य होते थे, किंतु आगे चलकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसमें बहुत-से निम्न बुर्जुआ तत्व भी घुसने लगे, इसलिए लेबर पार्टी अपनी विचारधारा और कार्यनीति के लिहाज़ से अवसरवादी पार्टी है। उसके नेता आरंभ से ही बुर्जुआ वर्ग से सहयोग की नीति पर चलते रहे हैं। पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में उन्होंने सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रवैया अपनाया।

लेबर पार्टी अनेक बार सरकार बना चुकी है और सदा ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नीति ही बरतती रही है। – १२४

129 **फ़ेबियन** – फ़ेबियन सोसायटी के सदस्य। इस ब्रिटिश सुधारवादी संगठन की स्थापना १८८४ में हुई थी। सोसायटी का नाम रोम के सेनापति फ़ेबियन मैक्सिमस (तीसरी सदी ईसा पूर्व) के नाम पर रखा गया था, जिसे "कनक्टेटर" (विलंबकारी) कहा जाता था। यह सेनापति अपनी विलंबकारी कार्यनीति और हानीबाल के विरुद्ध जंग में निर्णायक लड़ाइयों को टाल जाने के लिए प्रसिद्ध था। फ़ेबियन सोसायटी के सदस्य मुख्यतः बुर्जुआ बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधि थे – वैज्ञानिक, लेखक, राजनीतिज्ञ (उदाहरणार्थ, सिडनी और बीट्रिस वेब, बरनार्ड शॉ, रैमज़े मैकडानल्ड, इत्यादि)। फ़ेबियन लोग सर्वहारा के वर्ग संघर्ष और समाजवादी क्रांति की आवश्यकता से इनकार करते थे। उनका मत था कि सुधारों और समाज के क्रमशः रूपांतरण द्वारा पूंजीवाद से समाजवाद में संक्रमण संभव है। व्ला० इ० लेनिन ने फ़ेबियनवाद को "उग्र अवसरवाद की एक प्रवृत्ति" का नाम दिया था। १९०० में फ़ेबियन सोसायटी लेबर पार्टी में शामिल हो गयी। "फ़ेबियन समाजवाद" लेबर विचारधारा का एक स्रोत है।

पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में फ़ेबियनों ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रुख़ अपनाया। – १२४

130 **ब्रिटेन की स्वतंत्र लेबर पार्टी** (Independent Labour Party) — १८९३ में स्थापित एक सुधारवादी संगठन। इसका जन्म हड़ताल आंदोलन में तीव्रता तथा ब्रिटेन के मज़दूर वर्ग की बुर्जुआ पार्टियों से स्वतंत्रता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के लिए आंदोलन में वृद्धि की परिस्थितियों में हुआ। पार्टी के नेता कैर हार्डी थे।

स्वतंत्र लेबर पार्टी ने आरंभ से ही बुर्जुआ-सुधारवादी रवैया अपनाया और संसदीय संघर्ष पद्धति तथा लिबरल पार्टी के साथ संसदीय सौदेबाज़ी पर अधिक ध्यान दिया।

पहले विश्वयुद्ध के शुरू में स्वतंत्र लेबर पार्टी ने युद्ध विरोधी घोषणा-पत्र जारी किया, परंतु बाद में सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी नीति अपना ली।–१२४

131 *The Daily Herald*— १६१२ से लंदन से प्रकाशित ब्रिटिश समाजवादी पार्टी का मुखपत्र। १६२२ में वह लेबर पार्टी का मुखपत्र बन गया।

The Daily Citizen— १६१२ से १६१५ तक लंदन तथा मैंचस्टर से प्रकाशित लेबर पार्टी, फ़ेबियन सोसायटी तथा स्वतंत्र लेबर पार्टी के अवसरवादी गुट का मुखपत्र।–१२४

132 "तेसन्याकी"–बुल्गारियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी के, जो १६०३ से बुल्गारियाई मज़दूर सामाजिक-जनवादी पार्टी कहलाने लगी थी, क्रांतिकारी विचारधारा समर्थक सदस्यों का नाम। १६१४–१६१८ में "तेसन्याकियों" ने साम्राज्यवादी युद्ध के ख़िलाफ़ काम किया। १६१६ में उन्होंने कम्युनिस्ट इंटरनेशनल में सम्मिलित होकर अपनी पृथक् पार्टी–बुल्गारिया की कम्युनिस्ट पार्टी–की स्थापना की।–१२५

133 'नोवो व्रेमे' ('नया ज़माना')–बुल्गारियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी के क्रांतिकारी धड़े ("तेसन्याकी") की सैद्धांतिक पत्रिका। उसका प्रकाशन १८६७ में आरंभ हुआ था।–१२५

134 *Volksrecht* ('जन-अधिकार')–स्विट्ज़रलैंड की सामाजिक-जनवादी पार्टी का ज़ूरिच से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र। वह १८६८ से निकल रहा है।–१२५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

135 *Berner Tagwacht* ('बर्न प्रहरी') – १८९३ से बर्न से प्रकाशित स्विट्ज़रलैंड की सामाजिक-जनवादी पार्टी का समाचारपत्र। १९१८–१९१९ में इसके संपादक राबर्ट ग्रिम थे। पहले विश्वयुद्ध के आरंभ में इसमें कार्ल लीब्कनेख़्त, फ़्रांज़ मेहरिंग और दूसरे वामपंथी सामाजिक-जनवादियों के अनेक लेख छपे, लेकिन १९१७ से यह सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों का समर्थन करने लग गया। – १२५

136 *L'Humanité* ('मानवजाति') – फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी का जान जोरेस द्वारा १९०४ में संस्थापित दैनिक मुखपत्र। पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में समाचारपत्र पार्टी के घोर दक्षिणपंथ के हाथों में रहा तथा सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी स्थिति अपनाये रहा। दिसंबर, १९२० से फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी में फूट पड़ने तथा फ़्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी स्थापित होने के बाद यह पत्र कम्युनिस्ट पार्टी का मुखपत्र बन गया। – १२५

137 **हेरोस्ट्रेटस** – एक यूनानी, जिसने केवल प्रसिद्धि पाने के उद्देश्य से ३५६ ई० पू० में आएथिस स्थित आर्थेमिस के मंदिर में आग लगा दी। –१२६

138 **ब्रसेल्स गुट या "तीन जुलाई" गुट** – एक बोल्शेविक विरोधी गुट, जिसका निर्माण ब्रसेल्स में आयोजित "एकता" सम्मेलन के बाद हुई विसर्जनवादियों, त्रोत्स्कीवादियों, 'व्येर्योद'-पंथियों, प्लेख़ानोववादियों, बुंदवादियों, आदि की एक अलग कांफ़्रेंस में किया गया था।

ब्रसेल्स का "एकता" सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो की कार्यकारिणी द्वारा बुलाया गया था और १६–१८ जुलाई, १९१४ को हुआ था। उसमें रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की केंद्रीय समिति (बोल्शेविकों), संगठन समिति (मेंशेविकों), प्लेख़ानोववादी 'येदींस्त्वो' ('एकता') ग्रुप, 'व्पेर्योद'-पंथियों, बुंद, लाटवियाई सामाजिक-जनवाद, पोलिश सामाजिक-जनवाद, आदि के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचाराधीन प्रश्न रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के एकीकरण से संबंध रखता था। बोल्शेविकों ने एकता के लिए जो शर्तें रखीं, उन्हें मेंशेविकों और दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं ने स्वीकार नहीं किया। काउत्स्की ने अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो की ओर से एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें कहा गया था कि रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन में ऐसे कोई गंभीर मतभेद नहीं हैं, जो एकता की राह में आड़े आ सकें। लेकिन चूंकि प्रस्ताव को स्वीकार करना सम्मेलन के अधिकार-क्षेत्र के बाहर था और सम्मेलन मात्र विचार-विनिमय के निमित्त बुलाया गया था, अतः बोल्शेविकों और लाटवियाई सामाजिक-जनवादियों ने प्रस्ताव पर मतदान में भाग नहीं लिया। फिर भी वह बहुमत से स्वीकार हो ही गया।

बोल्शेविकों ने, जिनका नेतृत्व लेनिन कर रहे थे, ब्रसेल्स सम्मेलन के निर्णयों को मानने से इनकार कर दिया।

दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादी नेताओं द्वारा बोल्शेविक पार्टी को ख़त्म करने की सारी कोशिश नाकाम रही। – १२६

139 यहां आशय कार्ल लीब्कनेख़्त की 'मुख्य शत्रु अपने ही देश में है!' शीर्षक अपील से है, जो ३१ मई, १६१५ को *Berner Tagwacht* में प्रकाशित हुई थी। – १२८

140 *Preußische Jahrbücher* ('प्रशियाई वार्षिकी') – १८५८ से १६५३ तक बर्लिन से प्रकाशित एक कंज़रवेटिव मासिक पत्रिका, जो जर्मन पूंजीपतियों तथा भूस्वामियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी। – १२८

141 मंत्रालयवाद के बारे में टिप्पणी १२२ देखें। – १३७

142 गपोन उस पादरी का नाम था, जिसने ६(२२) जनवरी, १६०५ को ज़ार को अर्ज़ी देने के लिए शिशिर प्रासाद (ज़ार के निवास-स्थान)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जा रहे मजदूरों के जलूस का नेतृत्व किया था। ज़ार के आदेश से जलूस पर गोलियां चलायी गयीं, जिससे १,००० से ज्यादा लोग मारे गये और कोई ५,००० घायल हुए।

९ जनवरी को १९०५ की क्रांति की शुरूआत का दिन माना जाता है। – १३९

143 **अर्थवादी प्रवृत्ति या अर्थवाद** – १९वीं सदी के अंत और २०वीं सदी के आरंभ में रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन में एक अवसरवादी प्रवृत्ति। अर्थवादियों ने मज़दूरों के कार्यभार अधिक मजूरी प्राप्त करने, कामकाज की अवस्थाएं सुधारने, आदि के लिए आर्थिक संघर्ष करने तक सीमित रखा। उनका विचार था कि राजनीतिक संघर्ष उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग का काम होना चाहिए। वे मज़दूर आंदोलन में मज़दूर पार्टी की अग्रणी भूमिका तथा क्रांतिकारी सिद्धांत के महत्व से इनकार करते थे। उनका कहना था कि मज़दूर आंदोलन स्वयंस्फूर्त ही हो सकता है। १९०२ में प्रकाशित 'क्या करें?' शीर्षक पुस्तक में व्ला० इ० लेनिन ने सिद्ध किया कि अर्थवादियों के विचार बेकार तथा हानिकारक हैं। – १४०

144 **'राबोचाया मीस्ल'** ('मज़दूरों का विचार') – अक्तूबर, १८९७ से दिसंबर, १९०२ तक रूसी अर्थवादियों द्वारा प्रकाशित एक समाचारपत्र।

'राबोचेये देलो' ('मज़दूरों का ध्येय') – 'विदेशों में स्थित रूसी सामाजिक-जनवादियों के संघ' द्वारा जेनेवा से १८९९ से १९०२ तक प्रकाशित अनियतकालिक पत्रिका। 'राबोचेये देलो' का संपादकमंडल प्रवासी अर्थवादियों के केंद्र का काम करता रहा। पत्रिका ने मार्क्सवाद की "आलोचना की स्वतंत्रता" के बर्नस्टीनवादी नारे का समर्थन किया तथा रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन की कार्यनीति और संगठनात्मक कार्यभारों के प्रति अवसरवादी रुख़ अपनाया। – १४१

145 यहां लेनिन का आशय एडुअर्ड बर्नस्टीन, ह्यूगो हाअज़े और कार्ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काउत्स्की के नाम से प्रकाशित 'समामेलनों के विरुद्ध' शीर्षक लेख-घोषणापत्र से है। – १४२

146 *The New Statesman* — १९१३ में लंदन में संस्थापित फ़ेबियन सोसायटी की साप्ताहिक पत्रिका। अब लेबर पार्टी के वामपक्ष के विचार व्यक्त किया करती है। – १४४

147 *Labour Leader* — १८९१ से प्रकाशित एक साप्ताहिक; १८९३ से ब्रिटेन की स्वतंत्र लेबर पार्टी का मुखपत्र। – १४५

148 यह पैंफ़लेट लिखने का विचार व्ला० इ० लेनिन को पहले अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन की तैयारी के दिनों में सूझा था। इसे लिखने में ग्रि० ये० ज़िनोव्येव ने उनकी मदद की थी। लेकिन मुख्यत: इसका लेखन और संपादन लेनिन ने ही किया।

लेनिन ने इस पैंफ़लेट को "हमारी पार्टी के प्रस्तावों पर टीका, याने उनकी सुबोध व्याख्या" कहा था। उनकी दृष्टि में चूंकि ज़िम्मरवाल्ड में होनेवाले पहले अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन को क्रांतिकारी आधार पर अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक-जनवादी आंदोलन के सभी वामपंथी तत्वों के एकीकरण के लिए इस्तेमाल करना बहुत ज़रूरी था, अत: उन्होंने भरसक प्रयत्न किया कि पैंफ़लेट सम्मेलन से पहले-पहले छपकर निकल जाये।

उसे रूसी और जर्मन भाषाओं में छापा गया और ज़िम्मरवाल्ड सम्मेलन (१९१५) में बांटा गया। – १५१

149 यहां आशय पहले अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन से है, जो ५–८ सितंबर, १९१५ को ज़िम्मरवाल्ड में हुआ था। उसके आयोजन का प्रस्ताव इतालवी और स्विस समाजवादियों ने रखा था।

सम्मेलन में निम्न ११ देशों के समाजवादियों के ३८ प्रतिनिधियों ने भाग लिया: जर्मनी, फ़्रांस, इटली, रूस, पोलैंड, रूमानिया, बुल्गारिया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वीडन, नार्वे, हालैंड और स्विट्ज़रलैंड। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की केंद्रीय समिति के प्रतिनिधिमंडल के नेता व्ला० इ० लेनिन थे।

सम्मेलन ने 'यूरोप के सर्वहाराओं के नाम' शीर्षक एक मेनीफ़ेस्टो-अपील जारी की, जिसमें लेनिन और वामपंथी सामाजिक-जनवादियों के आग्रह पर क्रांतिकारी मार्क्सवाद की कुछ बुनियादी प्रस्थापनाओं को भी शामिल किया गया। इसके अलावा उसने जर्मन तथा फ़्रांसीसी प्रतिनिधिमंडलों द्वारा प्रस्तावित एक आम घोषणापत्र और युद्धपीड़ितों तथा अपने राजनीतिक कार्यकलाप के लिए सताये जा रहे संघर्षकर्त्ताओं के साथ सहानुभूति का प्रस्ताव अंगीकार किया और अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी आयोग चुना।

सम्मेलन में ज़िम्मरवाल्डी वामपंथी दल का निर्माण हुआ, जिसमें रूसी सामाजिक-जनवादी पार्टी की केंद्रीय समिति, पोलिश तथा लिथुआनियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी के क्षेत्रीय प्रबंधमंडल, लाटवियाई सामाजिक-जनवादी आंदोलन की केंद्रीय समिति, स्वीडिश, नार्वेजियन तथा स्विस वामपंथियों और 'जर्मन अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी' दल के प्रतिनिधि शामिल थे। ज़िम्मरवाल्डी वामपंथी दल ने सम्मेलन में मध्यमार्गी बहुसंख्या का डटकर विरोध किया। सम्मेलन में आख़िर तक सबसे ज़्यादा सुसंगत रवैया बोल्शेविक पार्टी के प्रतिनिधियों ने ही अपनाया। – १५२

150 लेनिन का आशय १८६१ में जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी की एर्फ़ुर्ट कांग्रेस में विल्हेल्म लीब्कनेख़्त के भाषण से है। – १५५

151 यहां अभिप्राय कार्ल क्लाज़ेवित्स द्वारा 'युद्ध के बारे में' नामक अपनी पुस्तक में व्यक्त किये गये विचारों से है। – १६०

152 **चतुर्राष्ट्र संधि** – ब्रिटेन, फ़्रांस, रूस और १६१५ में त्रिराष्ट्र संघ से निकलकर त्रिराष्ट्र समहित संधि (एंटेंट) में शामिल हो जानेवाले इटली का साम्राज्यवादी गठबंधन। – १६१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

153 **ब्रेंतानोवाद** – एक उदारतावादी-बुर्जुआ मत, जो पूंजीवाद के दायरे में कारख़ाना क़ानून बनाये जाने और ट्रेड-यूनियनों में मज़दूरों के संगठन के ज़रिए उनके सवालों के हल किये जाने की संभावना का समर्थन करता है। म्यूनिख़ विश्वविद्यालय के राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफ़ेसर, कैथेडेर-समाजवादी मत के एक मुख्य प्रतिनिधि लूयो ब्रेंतानो के नाम पर इसका नामकरण हुआ है। – १६६

154 यहां आशय **त्रिराष्ट्र समहित संधि (एंटेंट) के सदस्य-देशों के समाजवादियों के सम्मेलन** से है, जो १४ फ़रवरी, १६१५ को लंदन में हुआ था। उसमें ब्रिटेन, फ़्रांस, बेल्जियम और रूस के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी और शांतिवादी ग्रुपों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। – १७८

155 **'नोवोस्ती'** ('समाचार') – अगस्त, १६१४ से मई, १६१५ तक पेरिस से प्रकाशित एक समाजवादी-क्रांतिकारी दैनिक। – १७८

156 **'प्रोलेतार्स्की गोलोस'** ('सर्वहारा की आवाज़') – रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की पीटर्सबर्ग समिति का फ़रवरी, १६१५ से दिसंबर, १६१६ तक गुप्त रूप से छपनेवाला समाचारपत्र। – १८०

157 यहां लेनिन ने विक्टर एडलर के *Hoffnungsschimmer* ('आशा की किरण') शीर्षक लेख को उद्धृत किया है, जो *Arbeiter Zeitung* ('मज़दूरों का समाचारपत्र') के अंक ४५ (१४ फ़रवरी, १६१५) में छपा था। – १८५

158 यहां आशय जर्मनी और आस्ट्रिया के समाजवादियों के उस सम्मेलन से है, जो अप्रैल, १६१५ में वियेना में हुआ था। वह एक तरह से त्रिराष्ट्र समहित संधि के सदस्य-देशों के समाजवादियों के लंदन में हुए सम्मेलन का जवाब था। उसमें स्वीकृत प्रस्ताव में साम्राज्यवादी युद्ध में "पितृभूमि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की रक्षा" के सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी नारे का अनुमोदन किया गया था। – १८६

159 २७ सितंबर, १९१४ को लुगानो (स्विट्ज़रलैंड) में इतालवी और स्विस समाजवादियों का सम्मेलन हुआ था। सारे युद्धकाल में यह समाजवादियों का पहला सम्मेलन था, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय संपर्कों को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया गया था।

कोपेनहैगन सम्मेलन १७–१८ जनवरी, १९१५ को हुआ था और उसमें तटस्थ देशों – स्वीडन, डेनमार्क, नार्वे और हालैंड की समाजवादी पार्टियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उसमें स्वीकृत प्रस्ताव में तटस्थ देशों की संसदों के सामाजिक-जनवादी सदस्यों से अपील की गयी थी कि वे अपनी सरकारों को युद्धरत राष्ट्रों के बीच मध्यस्थता करने तथा यथाशीघ्र शांति पुनर्स्थापित करने के लिए उकसायें। – १८६

160 अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी महिला सम्मेलन २६–२८ मार्च, १९१५ को बर्न में हुआ था। उसका आयोजन 'राबोत्नित्सा' ('श्रमजीवी नारी') पत्रिका के वैदेशिक कार्यालय की पहल पर और क्लारा ज़ेत्किन के सक्रिय सहयोग से हुआ था, जो उस समय अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी महिला ब्यूरो की अध्यक्ष थीं।

सम्मेलन में ब्रिटेन, जर्मनी, हालैंड, फ़्रांस, पोलैंड, रूस और स्विट्ज़रलैंड के महिला संगठनों के २९ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

व्ला० इ० लेनिन ने इस सम्मेलन को अंतर्राष्ट्रीय संपर्कों की पुनर्स्थापना का प्रयास कहा था और उसे एक क्रांतिकारी कार्यक्रम के आधार पर सभी अंतर्राष्ट्रीयतावादी तत्वों के एकजुटीकरण के लिए इस्तेमाल करना चाहा था।

अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी युवक सम्मेलन ४–६ अप्रैल, १९१५ को बर्न में हुआ था और उसमें १० देशों – बुल्गारिया, जर्मनी, हालैंड, डेनमार्क, इटली, नार्वे, पोलैंड, रूस, स्विट्ज़रलैंड तथा स्वीडन – के युवक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। उसकी विषय-सूची में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा था 'युद्ध और समाजवादी युवक संगठनों के कार्य-भार'। सम्मेलन की तैयारी और आयोजन काफ़ी हद तक मध्यमार्गी राबर्ट ग्रिम की देखरेख में हुए थे और इस वजह से उसके काम पर उनकी छाप पड़ना स्वाभाविक ही था।

सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी युवक ब्यूरो चुना और 'युवक इंटरनेशनल' नाम से समाजवादी युवकों की एक पत्रिका निकालने तथा हर वर्ष अंतर्राष्ट्रीय युवक दिवस मनाने का निर्णय किया।—१८६

161 *Lichtstrahlen* ('प्रकाश किरणें')—जर्मनी के वामपंथी सामाजिक-जनवादियों की मासिक पत्रिका, जो बर्लिन से १९१३–१९२१ में अनियमित रूप से निकलती रही।—१८७

162 **'ट्रिब्यून'-पंथी**—हालैंड की सामाजिक-जनवादी पार्टी के वे वामपंथी सदस्य, जो 'ट्रिब्यून' नामक समाचारपत्र निकाला करते थे और पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीयतावादी रवैया अपनाया था। १९१८ में उन्होंने हालैंड की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।—१९०

163 **तीसरे, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल** की स्थापना २–६ मार्च, १९१९ को मास्को में हुई थी। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल (कामिंटर्न) के घोषणापत्र व कार्यक्रम के मुख्य मुद्दे ये थे: पूंजीवादी समाज-व्यवस्था के स्थान पर कम्युनिस्ट समाज-व्यवस्था आने की अपरिहार्यता, बुर्जुआ सरकारों को उलटने के लिए सर्वहारा के क्रांतिकारी संघर्ष की आवश्यकता, बुर्जुआ राज्य का विनाश तथा नये प्रकार के राज्य, सर्वहारा राज्य, सोवियतों के नमूने के राज्य की स्थापना, जो कम्युनिस्ट समाज में संक्रमण सुनिश्चित करेगा।

तीसरे, कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की स्थापना से मज़दूर आंदोलन में अवसरवादी तत्वों को बेनक़ाब करने, विभिन्न देशों के मेहनतकशों के बीच संबंध बढ़ाने और कम्युनिस्ट पार्टियां क़ायम करने व उन्हें मज़बूत बनाने में बहुत बड़ा योग मिला।—१९१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

164 **'श्रम-मुक्ति' दल** – पहला रूसी मार्क्सवादी ग्रुप। गे० वा० प्लेख़ानोव ने १८८३ में जेनेवा में इसकी स्थापना की। 'श्रम-मुक्ति' दल ने रूस में मार्क्सवाद के प्रचार में काफ़ी हाथ वंटाया और नरोदवाद पर गंभीर चोट की।

१८८३ और १८८५ में प्लेख़ानोव ने रूसी सामाजिक-जनवादियों के कार्यक्रम के दो मसविदे वनाये, जिन्हें 'श्रम-मुन्ति' दल ने प्रकाशित किया। यह रूस में सामाजिक-जनवादी पार्टी की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण क़दम था। परंतु 'श्रम-मुक्ति' दल ने उदारतावादी बुर्जुआ वर्ग की भूमिका को वढ़ा-चढ़ाकर और किसान समुदाय की क्रांतिकारिता तथा ज़ारशाही पर विजय पाने के लिए किसानों तथा मज़दूरों के गंठ-जोड़ की भूमिका को घटाकर आंकने जैसी गंभीर ग़लतियां भी कीं।

अगस्त, १९०३ में, रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस में 'श्रम-मुक्ति' दल ने अपने को भंग करने की सूचना दी। – १९३

165 **'ईस्क्रा'** ('चिनगारी') – पहला अखिल रूसी अवैध मार्क्सवादी समाचार-पत्र। लेनिन द्वारा १९०० में विदेश में संस्थापित और वहां से गुप्त रूप में प्रेषित 'ईस्क्रा' ने रूसी सामाजिक-जनवादी आंदोलन को वैचारिक दृष्टि से ऐक्यवद्ध बनाने में और विखरे हुए स्थानीय संगठनों को मिलाकर एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी पार्टी के निर्माण की तैयारियों में बहुत वड़ी भूमिका निभायी।

रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस में (१९०३) वोल्शेविकों (क्रांति में अटल आस्था रखनेवालों) और मेंशेविकों (अवसर-वादियों) में पार्टी के विभाजित हो जाने के वाद 'ईस्क्रा' पर मेंशेविकों का क़ब्ज़ा हो गया (अंक ५२, नवंबर, १९०३ के वाद से) और तब से उसे लेनिनीय पुराने 'ईस्क्रा' से भेद दर्शाने के लिए नव 'ईस्क्रा' कहा जाने लगा। मेंशेविकों ने उसे मार्क्सवाद तथा पार्टी के विरुद्ध संघर्ष का साधन और अवसरवाद के प्रचार का मंच बना दिया। – १९४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

166 'लूच' ('किरण') – सितंबर, १९१२ से जुलाई, १९१३ तक पीटर्सबर्ग से प्रकाशित एक मेंशेविक-विसर्जनवादी वैध दैनिक पत्र।–१९६

167 'मार्क्सवाद तथा विसर्जनवाद। आधुनिक मज़दूर आंदोलन की बुनियादी समस्याएं। लेख-संग्रह। भाग २' जुलाई, १९१४ में पार्टी प्रकाशनगृह 'प्रिबोई' द्वारा छापा गया था। उसमें विसर्जनवाद के विरोध में लेनिन द्वारा लिखे हुए कई लेख भी शामिल किये गये थे।–१९७

168 *Leipziger Volkszeitung* ('लाइपज़िग जन-समाचारपत्र') – १८९४ में संस्थापित यह दैनिक समाचारपत्र शुरू में वामपंथी सामाजिक-जनवादियों का मुखपत्र था; १९१७ से १९२२ तक वह जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी का मुखपत्र था और १९२२–१९३३ में दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादियों का मुखपत्र बन गया।–१९७

169 अगस्त गुट – विसर्जनवादियों, त्रोत्स्कीवादियों और दूसरे अवसरवादियों का एक बोल्शेविक विरोधी गुट, जिसका निर्माण त्रोत्स्की की पहल पर और अगस्त, १९१२ में वियेना में पार्टी विरोधी दलों तथा प्रवृत्तियों के प्रतिनिधियों की कांफ़्रेंस में हुआ था। वियेना कांफ़्रेंस ने सामाजिक-जनवादी कार्यनीति से संबंधित सभी सवालों पर पार्टी विरोधी और विसर्जनवादी निर्णय लिये थे और पार्टी के गुप्त रूप से काम करने का विरोध किया था।

मज़दूरों ने अपनी अलग, मध्यमार्गी पार्टी बनाने की विसर्जनवादियों की कोशिशों का समर्थन नहीं किया। इसलिए पंचमेल तत्वों से बना हुआ बोल्शेविक विरोधी अगस्त गुट कांफ़्रेंस के दिनों में ही टूटने लग गया। साल–डेढ़ साल बाद उसका अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया।–२००

170 *Internationle Korrespondenz* ('अंतर्राष्ट्रीय संवाद') – सितंबर, १९१४ से अक्तूबर, १९१८ तक बर्लिन से प्रकाशित एक जर्मन सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी पत्रिका।–२०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

171 **'सोव्रेमेन्नी मीर'** (**'आधुनिक विश्व'**) – १६०६ से १६१८ तक पीटर्सबर्ग से प्रकाशित एक साहित्यिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक मासिक। उसे गेओर्गी प्लेख़ानोव और दूसरे मेंशेविकों का घनिष्ठ सहयोग प्राप्त था। प्लेख़ानोववादियों के साथ गठबंधन के दौर में और १६१४ के आरंभ में बोल्शेविकों ने भी उसे अपना सहयोग प्रदान किया। पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में वह सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों का प्रवक्ता बन गया। – २०१

172 **'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था'** जनवरी – जून, १६१६ में ज़ूरिच में लिखी गयी थी।

लेनिन पूंजीवाद के विकास में नयी बातें पहले विश्वयुद्ध के आरंभ से बहुत पहले ही लक्षित करने लग गये थे। अपनी कई रचनाओं में उन्होंने साम्राज्यवाद के इस नये युग के कतिपय लक्षणों तथा विशेषताओं का उद्घाटन और विश्लेषण भी किया था, जैसे उत्पादन का संकेंद्रण और इजारेदारियों की संख्या में वृद्धि, पूंजी का निर्यात, नयी मंडियों तथा प्रभाव-क्षेत्रों को हथियाने के लिए संघर्ष, आर्थिक संबंधों का अंतर्राष्ट्रीयकरण, पूंजीवाद की परजीविता तथा ह्रास, श्रम एवं पूंजी के परस्पर विरोधों तथा वर्ग संघर्ष की वृद्धि और समाजवाद की ओर संक्रमण की भौतिक पूर्वावस्थाओं का निर्माण। लूट पर आधारित औपनिवेशिक नीति को बेनक़ाब करने पर, दुनिया के बंटवारे तथा पुनर्विभाजन के लिए छिड़े संघर्ष पर और साम्राज्यवादी, आक्रामक युद्धों की तैयारी पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया था।

फिर जब पहला विश्वयुद्ध छिड़ा, तो लेनिन पूंजीवाद के विकास की इजारेदारी अवस्था का सभी पहलुओं से अध्ययन करने लगे। रूस और अन्य पूंजीवादी देशों के मज़दूर आंदोलन के क्रांतिकारी संघर्ष के हित इसका तक़ाज़ा कर रहे थे। क्रांतिकारी आंदोलन को सही नेतृत्व प्रदान करने और साम्राज्यवादी प्रतिगामी शक्तियों की विचारधारा के विरुद्ध व साम्राज्यवादियों से मेल-सुलह की सुधारवादी नीति के विरुद्ध सफलतापूर्वक लड़ने के लिए बहुत ज़रूरी था कि "बुनियादी आर्थिक प्रश्न को,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थात साम्राज्यवाद के आर्थिक सार के प्रश्न को" समझा जाये, "क्योंकि जब तक इस प्रश्न का अध्ययन नहीं किया जाता, तब तक वर्तमान युद्ध और वर्तमान राजनीति को समझना और उसका ठीक-ठीक मूल्यांकन करना असंभव होगा" (प्रस्तुत खंड, पृ० २०६)।

लेनिन ने साम्राज्यवाद विषयक साहित्य का वस्तुतः गंभीरतापूर्वक अध्ययन संभवतः १९१५ के मध्य से आरंभ किया था, जब वह बर्न में थे। तभी उन्होंने संदर्भ-ग्रंथों की सूची बनाना, पुस्तक का ख़ाका तैयार करना, उद्धरण, टीपें और सारांश लिखना शुरू किया था। 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' के लिए एकत्र सामग्री ('साम्राज्यवाद विषयक नोट्स') का परिमाण पुस्तक के कोई ५० फ़र्मों के बराबर है और उसमें हमें १४८ पुस्तकों के, जिनमें से १०६ जर्मन, २३ फ़ांसीसी तथा १७ अंग्रेज़ी में थीं व २ रूसी में अनूदित थीं, और ४९ पत्र-पत्रिकाओं में, जिनमें से ३४ जर्मन, ७ फ़ांसीसी तथा ८ अंग्रेज़ी में थीं, छपे २३२ लेखों (२०६ जर्मन, १३ फ़ांसीसी और १३ अंग्रेज़ी में) के नोट्स मिलते हैं।

१९१६ के आरंभ में लेनिन ने पेत्रोग्राद के वैध प्रकाशनगृह 'पारूस' के लिए, जिसकी स्थापना दिसंबर, १९१५ में हुई थी, साम्राज्यवाद के बारे में एक पुस्तक लिखने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

फ़रवरी, १९१६ में वह बर्न से ज़ूरिच चले गये और वहां भी साम्राज्यवाद विषयक सामग्री का संग्रह करते रहे और उसे व्यवस्थित रूप देते रहे।

जब पांडुलिपि प्रकाशनगृह को भेज दी गयी, तो वहां काम करनेवाले मेंशेविक तत्वों को पुस्तक में काउत्स्की तथा मार्तोव विषयक कटु आलोचनाएं पसंद न आयीं। उन्होंने ये हिस्से पुस्तक से निकाल दिये और ख़ुद ही कई अन्य संशोधन भी कर डाले, जो न केवल लेनिन की शैली से मेल नहीं खाते थे, बल्कि अर्थ का अनर्थ भी करते थे। उदाहरण के लिए, जहां लेनिन ने (पूंजीवाद का साम्राज्यवाद में) "विकास" लिखा था, वहां उन्होंने "रूपांतरण" कर दिया, ("अति साम्राज्यवाद"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धांत के) "प्रतिक्रियावादी स्वरूप" के स्थान पर "पिछड़ा स्वरूप" रख दिया, इत्यादि।

१९१७ के मध्य में पुस्तक 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की नवीनतम अवस्था (सुबोध रूपरेखा)' के नाम से और लेनिन द्वारा २६ अप्रैल, १९१७ को लिखित भूमिका के साथ प्रकाशित हुई। – २०३

173 यह भूमिका पहली बार अक्तूबर, १९२१ में 'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल' पत्रिका के १८वें अंक में 'साम्राज्यवाद और पूंजीवाद' शीर्षक से छपी थी। लेनिन के जीवनकाल में पुस्तक इन भाषाओं में भी निकली: १९२१ में जर्मन में और १९२३ में फ़्रांसीसी तथा अंग्रेज़ी में अपूर्ण रूप में। – २०७

174 **ब्रेस्त-लितोव्स्क शांति-संधि** सोवियत रूस और जर्मन गुट के देशों (जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, बुल्गारिया तथा तुर्की) के बीच ३ मार्च, १९१८ को ब्रेस्त-लितोव्स्क में संपन्न हुई थी और १५ मार्च को सोवियतों की चौथी असाधारण अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा संपुष्ट की गयी थी। जर्मनी में क्रांति की विजय और राजतंत्रात्मक व्यवस्था के उन्मूलन के बाद १३ नवंबर, १९१८ को अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी ने इस लूटपरक और असमान संधि को रद्द कर डाला। – २०९

175 **वेर्साई शांति-संधि** – एंटेंट राष्ट्रों द्वारा पहले विश्वयुद्ध में हारे हुए जर्मनी पर बलात् थोपी हुई एक साम्राज्यवादी संधि। उस पर २८ जून, १९१९ को वेर्साई (फ़्रांस) में हस्ताक्षर किये गये थे। – २०९

176 **"विलसनवाद"** – वुडरो विलसन के नाम से, जो १९१३–१९२१ में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति थे। अपने राष्ट्रपति काल के पहले वर्ष में विलसन ने कई नये क़ानून (वर्द्धमान आय कर क़ानून, ट्रस्ट विरोधी क़ानून, आदि) बनाकर "नयी स्वतंत्रता" के युग के सूत्रपात की घोषणा की थी, जोकि कोरी लफ़्फ़ाज़ी थी। अमरीकी साम्राज्यवाद की लूटपरक विदेश नीति का असली चेहरा छिपाने के लिए भी विलसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ग्रौर उनके समर्थकों ने "जनवाद" ग्रौर "जन-संश्रय" जैसे पाखंडपूर्ण नारों की ग्राड़ ली।

सोवियत सत्ता की स्थापना के पहले ही दिनों से विलसन ने सोवियत रूस के ख़िलाफ़ ग्रतिक्रमण की साज़िशों को सक्रिय प्रोत्साहन दिया। विश्व के सभी देशों की जनता पर सोवियत सरकार की शांति समर्थक विदेश नीति का जो गहन प्रभाव पड़ रहा था, उसका मुक़ाबला करने के लिए विलसन ने १४ मुद्दों का एक लफ़्फ़ाज़ीभरा "शांति कार्यक्रम" पेश किया, जिसे ग्रमरीका की ग्राक्रामक नीति पर पर्दा डालने का काम करना था। ग्रमरीकी प्रचार ग्रौर यूरोप के बुर्जुग्रा प्रेस ने विलसन को शांतिदूत की झूठी महिमा से मंडित किया। लेकिन देश के बाहर साम्राज्यवादी ग्राक्रामक नीति तथा देश में मज़दूर विरोधी प्रतिक्रियावादी नीति ने ग्रमरीकी राष्ट्रपति ग्रौर "विलसनवादियों" की टुटपुंजिया लफ़्फ़ाज़ी में निहित पाखंड का बहुत जल्दी ही भंडाफोड़ करके रख दिया।—२०९

177 बैसेल घोषणापत्र—युद्ध विषयक वह घोषणापत्र, जो २४–२५ नवंबर, १९११ को बैसेल (स्विट्ज़रलैंड) में हुई दूसरे इंटरनेशनल की ग्रसाधारण कांग्रेस में ग्रंगीकार किया गया था। वह ग्रासन्न साम्राज्यवादी युद्ध के लूटपरक स्वरूप पर ज़ोर देता था ग्रौर सभी देशों के मज़दूरों का शांति के लिए तथा युद्ध के ख़तरे के ख़िलाफ़ डटकर संघर्ष करने के वास्ते ग्राह्वान करता था। उसमें कहा गया था कि यदि युद्ध छिड़ता है, तो समाजवादियों को युद्धजनित ग्रार्थिक ग्रौर राजनीतिक संकट से लाभ उठाकर समाजवादी क्रांति के लिए ग्रपना संघर्ष तीव्रतर बना देना चाहिए। दूसरे इंटरनेशनल के काउत्स्की, वानडरवेल्डे, ग्रादि नेताग्रों ने कांग्रेस में इस युद्ध विरोधी घोषणापत्र का समर्थन किया था। लेकिन विश्व साम्राज्यवादी युद्ध शुरू होते ही उन्होंने उसे भुला दिया ग्रौर वे ग्रपनी साम्राज्यवादी सरकारों की हिमायत करने लगे।—२१०

178 बैसेल घोषणापत्र इस संस्करण में शामिल नहीं किया गया है।—२१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

179 लेनिन का आशय फ़रवरी, १९१९ में बर्न में समाजवादी पार्टियों की कांफ़ेंस द्वारा स्थापित **दूसरे (बर्न) इंटरनेशनल** से है। पश्चिम यूरोपीय समाजवादी पार्टियों के नेताओं को उसकी स्थापना की ज़रूरत इसलिए पड़ी थी कि पहले विश्वयुद्ध के आरंभ के साथ दूसरे इंटरनेशनल का अस्तित्व ख़त्म हो गया था। बर्न इंटरनेशनल वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग का चाकर था। – २११

180 **जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी** – एक मध्यमार्गी पार्टी, जिसकी स्थापना अप्रैल, १९१७ में गोथा में उद्‌घाटन कांग्रेस में हुई थी। रूस की फ़रवरी, १९१७ की बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के प्रभाव से जर्मनी में क्रांतिकारी उभार बढ़ने लगा था और ऐसे में जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के अवसरवादी नेता अपने आम सदस्यों का विश्वास खोते जा रहे थे। स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी की स्थापना जनसामान्य के असंतोष पर लगाम लगाने, क्रांतिकारी संघर्ष की ओर से उसका ध्यान मोड़ने और मज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी न बनने देने के लिए की गयी। मध्यमार्गी लफ़्फ़ाज़ी की आड़ में "स्वतंत्रों" ने सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों के साथ "एकता" का प्रचार किया और वर्ग संघर्ष से मुंह मोड़ा। पार्टी का मेरुदंड काउत्स्कीपंथी संगठन 'श्रम सहयोगमंडल' था।

कुछ समय तक 'स्पार्टकस' दल भी इस पार्टी के अंदर रहकर काम करता रहा, किंतु उसने अपनी संगठनात्मक तथा राजनीतिक स्वतंत्रता ज्यों की त्यों बनाये रखी। 'स्पार्टकस' का उद्देश्य जनसामान्य को मध्यमार्गी नेताओं के प्रभाव से मुक्ति दिलाना था। १९१८ में 'स्पार्टकस संघ' स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी से अलग हो गया। बाद में उसके आधार पर जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।

अक्तूबर, १९२० में हाल्ले कांग्रेस के दौरान स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी में फूट पड़ गयी। उसका काफ़ी बड़ा हिस्सा दिसंबर, १९२० में कम्युनिस्ट पार्टी में जा मिला और दक्षिणपंथी तत्वों ने एक पृथक पार्टी बना ली, हालांकि नाम पुराना ही, याने जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनवादी पार्टी ही रहने दिया। १९२२ में इस पार्टी का अस्तित्व ख़त्म हो गया। – २१२

181 **स्पार्टकसवादी** – जर्मन वामपंथी सामाजिक-जनवादियों के 'स्पार्टकस' नामक उस क्रांतिकारी संगठन के सदस्य, जिसके नेता कार्ल लीब्कनेख़्त, रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग, फ़्रांज़ मेहरिंग, क्लारा ज़ेत्किन, जूलिग्रान मारख़्लेव्स्की, लेग्रोन जोगीख़ेस (तीश्का) और विल्हेल्म पीक थे और जिसकी स्थापना जनवरी, १९१६ में हुई थी। स्पार्टकसवादी क्रांति का प्रचार, युद्ध विरोधी जनव्यापी कार्रवाइयों का आयोजन, हड़तालों का निदेशन और पहले विश्वयुद्ध के साम्राज्यवादी स्वरूप तथा सामाजिक-जनवादी आंदोलन के अवसरवादी नेताओं के विश्वासघात का भंडाफोड़ करते थे। किंतु उन्होंने सिद्धांत तथा नीति के मामले में गंभीर चूकें भी कीं, जैसे ये कि साम्राज्यवादी युग में राष्ट्रीय-मुक्ति युद्धों की संभावना से इनकार किया, साम्राज्यवादी युद्ध को गृहयुद्ध में बदलने के मामले में सुसंगत नीति नहीं अपनायी, मज़दूर वर्ग के अग्रदल के नाते सर्वहारा पार्टी की तथा सर्वहारा के सहयोगी के नाते किसान समुदाय की भूमिका के महत्व को नहीं समझा और अवसरवाद से पूरी तरह किनाराकशी नहीं की।

अप्रैल, १९१७ में स्पार्टकसवादी अपनी संगठनात्मक स्वाधीनता बरक़रार रखते हुए जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी में शामिल हो गये। नवंबर, १९१८ में जब जर्मनी में क्रांति हुई, तो उन्होंने 'स्पार्टकस संघ' बना लिया और १४ दिसंबर, १९१८ को अपना पृथक कार्यक्रम प्रकाशित करके "स्वतंत्रों" से नाता तोड़ लिया। ३० दिसंबर, १९१८ – १ जनवरी, १९१९ को स्पार्टकसवादियों ने जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। – २१२

182 **वेर्साईवाले** – १८७१ के पेरिस कम्यून के घोर शत्रु और अदोल्फ़ थियेर की प्रतिक्रांतिकारी सरकार के समर्थक, जिसने कम्यून की विजय के बाद वेर्साई में अड्डा जमा लिया था। पेरिस कम्यून को कुचलने में वेर्साई-वालों ने अनदेखी-अनसुनी क्रूरता का परिचय दिया था। १८७१ के बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से "वेर्साईवाले" शब्द हैवानियत पर उतर आयी प्रतिक्रांति का पर्याय बन गया है।–२१३

183 **स्पेनी-अमरीकी युद्ध** (१८९८)–स्पेनी उपनिवेशों पर क़ब्ज़ा करने के लिए संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा स्पेन के विरुद्ध छेड़ा गया साम्राज्यवादी युद्ध। उसमें कुछ हारों के बाद स्पेन ने अपने को पूर्णतः पराजित स्वीकार कर लिया और एक शांति-संधि पर हस्ताक्षर किये, जिसके अनुसार प्वेर्टोरीको, फ़िलिपाइन और गुआम संयुक्त राज्य अमरीका के उपनिवेश बन गये। क्यूबा को औपचारिक रूप से स्वतंत्र मान लिया गया, लेकिन उसके संविधान में एक ऐसी धारा जोड़ी गयी, जो संयुक्त राज्य अमरीका को उसके अंदरूनी मामलों में सशस्त्र हस्तक्षेप का अधिकार देती थी। फलस्वरूप अमरीकी इजारेदारियां और सरकार ही क्यूबा की वास्तविक मालिक बन बैठीं।

आंग्ल-बोएर युद्ध (अक्तूबर, १८९९–मई, १९०२)–दो दक्षिण अफ़्रीकी गणराज्यों–ट्रांसवाल और ओरेंज फ़्री स्टेट–के ख़िलाफ़ इंगलैंड द्वारा चलाया गया औपनिवेशिक आक्रमणात्मक युद्ध, जिसके फलस्वरूप ये राज्य अपनी स्वतंत्रता से हाथ धो बैठे और ब्रिटिश उपनिवेश बन गये।–२१४

184 देखें टिप्पणी १०४।–२१४

185 *Die Bank* ('बैंक')–जर्मन धन्नासेठों की १९०८ से १९४३ तक बर्लिन से प्रकाशित एक पत्रिका। 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' को लिखने में लेनिन ने इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री को काफ़ी इस्तेमाल किया है।–२३१

186 १८७३ के पूर्वार्ध में पहले आस्ट्रिया-हंगरी में और फिर जर्मनी तथा दूसरे देशों में **स्टाक एक्सचेंजों में भारी गिरावट** आयी थी। आठवें दशक के आरंभ में उधार पूंजी का विस्तार, ग्रून्दरवाद (जर्मन शब्द Gründer—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सटोरिया"—से) और सट्टेबाज़ी अभूतपूर्व पैमाने पर पहुंच गये थे। सट्टेबाज़ी में तब भी कमी न आयी, जब उद्योग और व्यापार बढ़ते हुए विश्व आर्थिक संकट के असर को स्पष्टतः महसूस करने लग गये थे। ६ मई, १८७३ को वियेना के स्टाक एक्सचेंज में २४ घंटों के भीतर ही शेयरों के दामों में दस करोड़ की गिरावट आ गयी और बेशुमार कंपनियों का दिवाला पिट गया। शीघ्र ही इसकी जर्मनी में भी पुनरावृत्ति हुई।—२४५

187 ग्रून्दर हुल्लड़ जर्मनी में पिछली सदी के आठवें दशक के आरंभ में बहुत बड़े पैमाने पर ज्वाइंट स्टाक कंपनियों की स्थापना की अवधि में हुए थे। ग्रून्दरवाद की वृद्धि के साथ-साथ भूमि तथा सिक्यूरिटियों की सट्टेबाज़ी और मालामाल बन बैठे बुर्जुआ कारोबारियों की जालसाज़ियों की भी बाढ़ आयी।—२४५

188 *Frankfurter Zeitung* ('फ़्रैंकफ़ुर्ट समाचारपत्र')—फ़्रैंकफ़ुर्ट-आॅन-मेन से १८५६ से १९४३ तक प्रकाशित दैनिक, जो बड़े जर्मन सटोरियों का मुखपत्र था।—२४७

189 "संगठित पूंजीवाद का सिद्धांत" एक बुर्जुआ समर्थक और अवैज्ञानिक सिद्धांत है और लेनिन ने 'साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था' में इसकी पूरी क़लई खोली है। यह सिद्धांत साम्राज्यवाद को एक ऐसा विशिष्ट और बदला हुआ पूंजीवाद मानता है, जिसमें मानो प्रतियोगिता, उत्पादन की अराजकता तथा आर्थिक संकटों के लिए कोई स्थान नहीं है और अर्थव्यवस्था का योजनाबद्ध ढंग से विकास होता है। इस सिद्धांत के प्रतिपादक सोम्बार्ट, लिएफ़मैन, आदि इजारेदार पूंजीवाद के विचारधारा-निरूपक थे। आगे चलकर काउत्स्की, हिल्फ़र्डिंग, आदि दूसरे इंटरनेशनल के सिद्धांतकारों ने भी इसे अपना लिया।—२५४

190 "पूंजी के जनवादीकरण" के बुर्जुआ-सुधारवादी सिद्धांत साम्राज्यवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर लीपा-पोती करने और इजारेदारियों के बोलबाले पर पर्दा डालने के लिए प्रतिपादित किये गये थे। छोटे शेयरों की बिक्री जनता का शोषण बढ़ाने तथा उसकी आंख में धूल झोंकने के लिए और बड़े थैलीशाहों को और अमीर बनाने के लिए इस्तेमाल की जाती है। यथार्थ वास्तविकता इन बुर्जुआ समर्थक सिद्धांतों का पूर्ण खंडन करती है कि मज़दूर भी उद्यमों के मालिक (सह-मालिक) बन सकते हैं और पूंजीपतियों तथा मज़दूरों की आय "बराबर" हो सकती है। पूंजीवाद का मतलब ही यह है कि श्रम तथा पूंजी के बीच, जनसामान्य तथा इजारेदारियों के बीच खाई निरंतर बढ़ती जायेगी।–२५८

191 लेनिन का आशय यहां गे० वा० प्लेख़ानोव से है। साम्राज्यवाद के बारे में प्लेख़ानोव ने अपने विचार पहले विश्वयुद्ध के वर्षों में पेत्रोग्राद से प्रकाशित 'युद्ध के बारे में' नामक लेख-संग्रह में व्यक्त किये थे।–२५९

192 **फ़्रांसीसी पनामा**–यह मुहावरा पनामा नहर का निर्माण करनेवाली फ़्रांसीसी कंपनी से रिश्वत लेनेवाले राजनीतिज्ञों, अधिकारियों तथा समाचारपत्रों का फ़्रांस में १८९२–१८९३ में पर्दाफ़ाश होने के बाद प्रचलन में आया था।–२७०

193 **१७०१–१७१४ का स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध** एक ओर से, स्पेन तथा फ़्रांस और दूसरी ओर से, इंगलैंड, हालैंड, आस्ट्रिया, प्रशा और उन जर्मन राज्यों के बीच चला था, जो जर्मन सम्राट के मातहत थे। स्पेन की गद्दी के विभिन्न दावेदारों के बीच संघर्ष से शुरू होकर यह युद्ध शीघ्र ही स्पेन के अधिकार में स्थित इलाक़ों के विभाजन के लिए युद्ध में और सागर तथा उपनिवेशों पर प्रभुत्व के लिए फ़्रांस तथा इंगलैंड के बीच पहली बड़ी टक्कर में परिणत हो गया। युद्ध का अंत स्पेनी साम्राज्य के आंशिक बंटवारे के साथ हुआ। नीदरलैंड तथा इटली के स्पेन-अधिकृत इलाक़े आस्ट्रिया को मिल गये, जिब्राल्टर तथा मेनोर्का द्वीप पर इंगलैंड ने क़ब्ज़ा कर लिया। इस युद्ध के परिणामस्वरूप फ़्रांस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की नौसैनिक तथा औपनिवेशिक शक्ति को गंभीर आघात पहुंचा और उसके अधिकार में स्थित उत्तरी अमरीकी इलाक़ों पर भी इंगलैंड का क़ब्ज़ा हो गया। स्पेनी उत्तराधिकार युद्ध से सबसे अधिक लाभ इंगलैंड को ही हुआ था। – ३०७

[194] यहां व्ला० इ० लेनिन का अभिप्राय १८६६–१६०१ के बाक्सर विद्रोह के दमन के बाद ७ सितंबर, १६०१ को साम्राज्यवादी राज्यों (इंगलैंड, आस्ट्रिया-हंगरी, बेल्जियम, फ़्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, रूस, हालैंड, स्पेन तथा संयुक्त राज्य अमरीका) और चीन द्वारा हस्ताक्षरित "अंतिम क़रार" नामक दस्तावेज़ से है, जिसने विदेशी पूंजी को चीन के शोषण तथा लूट की और भी खुली छूट दे दी थी। – ३४६

[195] बाक्सर (अथवा इ-हो-तुआन) विद्रोह – चीन की जनता का १८६६–१६०१ का साम्राज्यवाद विरोधी विद्रोह, जिसका नेतृत्व 'इ-हो-तुआन' ('न्याय और मेल-जोल के लिए उठाया गया मुक्का') नामक संगठन ने किया था। जर्मन जनरल वाल्डेरसी की कमान में साम्राज्यवादी राष्ट्रों – जर्मनी, जापान, इंगलैंड, संयुक्त राज्य अमरीका और रूस – की संयुक्त ताज़िरी फ़ौजी टुकड़ियों ने इस विद्रोह को निर्ममतापूर्वक कुचल डाला। चीन "अंतिम क़रार" नाम से ज्ञात एक दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करने को मजबूर हुआ, जिसने उसे विदेशी साम्राज्यवाद का अर्द्ध-उपनिवेश बना दिया। – ३५०

[196] "फ़शोदा कांड" – सितंबर, १८६८ में पूर्वी सूडान के एक शहर फ़शोदा में ब्रिटिश और फ़्रांसीसी औपनिवेशिक फ़ौजों की मुठभेड़ से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भीषण संकट आ गया था। इसने सूडान पर प्रभुत्व के लिए ब्रिटेन और फ़्रांस के संघर्ष को प्रतिबिंबित किया और इसका अंत अफ़्रीका के बंटवारे के साथ हुआ। – ३५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाम-निर्देशिका

अ

अक्सेलरोद, पावेल बोरीसोविच (१८५०–१९२८) – रूसी सामाजिक-जनवादी, एक मेंशेविक नेता। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद बुर्जुआ अस्थायी सरकार का साथ दिया। – ७६, ८१, ८२, ८७, ८८, ११५, १७६, १९३, ३३६

अगाड (Agahd), **ए०** – जर्मन अर्थशास्त्री, रूसी-चीनी बैंक के कर्मचारी। – २६१, २६४, २७२, ३३६

अग्वीनाल्दो (Aguinaldo), **एमीलियो** (१८६९–१९६४) – फ़िलिपाइन द्वीप-समूह के एक राजनीतिक नेता। स्पेनी अधिकार के विरुद्ध फ़िलिपाइन की जनता के विद्रोह का नेतृत्व किया। नव स्थापित फ़िलिपाइन जनतंत्र के राष्ट्रपति (१८९९)। अमरीकी आक्रामकों के ख़िलाफ़, जिन्होंने फ़िलिपाइन में स्पेन का स्थान लिया, संघर्ष किया। मार्च, १९०१ में अमरीकियों द्वारा क़ैदी बनाये गये। बाद में फ़िलिपाइन में अमरीकी नीति का अनुगमन किया। – ३३६

अलेक्सिन्स्की, ग्रिगोरी अलेक्सेयेविच (जन्म १८७९) – अपने राजनीतिक जीवन के शुरूआती दौर में सामाजिक-जनवादी। १९०५–१९०७ की क्रांति के दौरान बोल्शेविकों का साथ दिया। क्रांति की पराजय के बाद 'व्पेर्योद' नामक पार्टी विरोधी ग्रुप के एक संगठनकर्त्ता। पहले विश्व-युद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। कई बुर्जुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अख़बारों के लिए लेख लिखे। १९१७ की क्रांति के बाद सोवियत सत्ता के विरुद्ध संघर्ष किया।–१२४, १९९, २००, २०१

आ

आन–देखें जोर्दानिया, नोई निकोलायेविच।

आर्मस्ट्रांग (Armstrong)–एक ब्रिटिश सैन्य-औद्योगिक फ़र्म के संस्थापक तथा मालिक।–१००, २८०

इ

इओर्दान्स्की, निकोलाई इवानोविच (१८७६–१९२८)–रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक, युद्ध का समर्थन किया। १९२१ में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गये, ज़िम्मेदार पदों पर रहे।–६७

ई

ईसप (६ वीं–५ वीं शताब्दी ई० पू०)–प्राचीन ग्रीस का अर्द्धपौराणिक कथाकार, जिसकी भाषा प्रतीकात्मक तथा आलंकारिक थी।–२०५

ए

एंगेल्स (Engels), **फ़्रेडरिक** (१८२०–१८९५)।–२०, २२, २३, २४, २७-३०, ३२, ३३, ३५, ४७, ५३-५६, ५८, ५९, ६०, ६३, ९१, ९२, १४४, १६०, १६५, १६६, १७३, १७६, ३३४, ३३५, ३४३

एडलर (Adler), **विक्टर** (१८५२–१९१८)–आस्ट्रिया की सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक संगठनकर्त्ता और नेता, सुधारवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के वर्षों में मध्यमार्ग का रुख़ अपनाया, "वर्ग शांति" का प्रचार किया और मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी आंदोलन के विरुद्ध संघर्ष किया।–१८५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एडवर्ड सप्तम (Edward VII) (१८४१–१९१०)–१९०१ से १९१० तक ब्रिटिश सम्राट।–२७१

एपीक्यूरस (लगभग ३४१–लगभग २७० ई० पू०)–प्राचीन यूनान का विख्यात भौतिकवादी दार्शनिक; नास्तिक।–२१

एरिस्टोफ़ेनीज़ (Aristophanes) (लगभग ४४६–३८५ ई० पू०)–प्राचीन यूनान के विख्यात हास्य नाटककार।–२७९

एवेलिंग (Aveling), **एल्योनोरा** (१८५५–१८९८)–अंग्रेज़ तथा अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन की एक कार्यकर्त्री। कार्ल मार्क्स की सबसे छोटी बेटी।–२६

एश्वेगे (Eschwege), **लुडविग**–जर्मन अर्थशास्त्री।–२३१, २६०, २६९, २७१, ३३९

ओ

ओवेन्स (Owens), **माइकेल जोजेफ़** (१८५९–१९२३)–एक अमरीकी, जिन्होंने बोतल बनाने की एक मशीन ईजाद की थी। बाद में इसी क्षेत्र में उद्योगपति।–३२४

क

काइयो (Caillaux), **जोजेफ़** (१८६३–१९४४)–फ़्रांसीसी राजनीतिज्ञ, बुर्जुआ आमूलवादी पार्टी के एक नेता। पहले विश्वयुद्ध के समय फ़्रांस तथा जर्मनी के बीच मेल-जोल कराने की कोशिश की, जिसके कारण फ़्रांस के जर्मनी विरोधी अंधराष्ट्रवादी क्षेत्रों ने उनका विरोध किया।–८९

काउत्स्की (Kautsky), **कार्ल** (१८५४–१९३८)–जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी और दूसरे इंटरनेशनल के एक नेता। शुरू-शुरू में मार्क्सवादी थे, पर १९१४ से लेकर मार्क्सवाद के प्रति ग़द्दार तथा अवसरवाद की बदतर और सबसे ख़तरनाक शक्ल–मध्यमार्ग, याने काउत्स्कीवाद–के एक विचारधारा-निरूपक।–७७-८२, ८४-८८, ९०-९४, ९६-११९,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२५, १२६, १२८, १३०, १३१, १३५-१३६, १४१, १४२, १४४, १४५, १४७, १४६, १५०, १६४, १६५, १६६, १७०, १७२, १८४-१८६, १८८, १८६, २००, २११, २१४, २३०, २६२, ३१२-३१७, ३२०, ३३४, ३३८-३४३, ३४६-३५१, ३५३, ३५७

कान्ट (Kant), **इमानुएल** (१७२४–१८०४)–जर्मन दार्शनिक, क्लासिकल जर्मन भाववाद के संस्थापक।– २८

कामेनेव (रोज़ेनफ़ेल्द), लेव बोरीसोविच (१८८३–१९३६)–रूसी सामाजिक-जनवादी। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस के बाद बोल्शेविकों का पक्ष लिया। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादियों के प्रति सौहार्दपूर्ण रुख़ अपनाया। १९१५ में गिरफ़्तार किये गये तथा मुक़दमे के समय साम्राज्यवादी युद्ध में ज़ारशाही सरकार की पराजय के बोल्शेविक नारे से इनकार कर दिया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद कई ज़िम्मेदार पदों पर रहे, पर अकसर पार्टी की लेनिनीय नीति का विरोध किया, जिसके कारण १९३४ में पार्टी से निकाल दिये गये।–६८

कारनेगी (Carnegie), **एंड्र्यू** (१८३५–१९१९)–अमरीकी अरबपति। १८८९ में इस्पात कार्पोरेशन की स्थापना की। १९०१ में अपने उद्यमों को मार्गन इस्पात ट्रस्ट के साथ मिला दिया।– ३३१

काल्वेर (Calwer), **रीख़र्ड** (१८६८–१९२७)–विख्यात जर्मन अर्थशास्त्री, जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी में सुधारवाद और संशोधनवाद के प्रतिनिधि।– ३१८

कुगेलमन (Kugelmann), **लुडविग** (१८३०–१९०२)–जर्मन सामाजिक-जनवादी, कार्ल मार्क्स के एक मित्र। जर्मनी में १८४८–१८४९ की क्रांति में भाग लिया; पहले इंटरनेशनल के सदस्य।– ५९

कुटलर, निकोलाई निकोलायेविच (१८५९–१९२४)–रूस की सांविधानिक-जनवादी (कैडेट) पार्टी के विख्यात कार्यकर्त्ता, कैडेट पार्टी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृषि कार्यक्रम के एक प्रवर्तक; दूसरी तथा तीसरी राज्य दूमा के सदस्य।–६२

कुदाशेव, इ० अ० (जन्म १८५९)–ज़ारशाही राजनयिक। १९११ से १९१६ तक बेल्जियम में रूसी राजदूत। १९१४ में चौथी राज्य दूमा के सामाजिक-जनवादी ग्रुप के नाम एमील वानडरवेल्डे के तार का मसौदा लिखने में भाग लिया। इस तार में ज़ारशाही के विरुद्ध संघर्ष बंद करने तथा जर्मनी के विरुद्ध युद्ध का समर्थन करने की अपील की गयी थी।–१८२

कूनोव (Cunow), **हेनरिक** (१८६२–१९३६)–जर्मन दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादी। शुरू-शुरू में मार्क्सवादियों का पक्ष लिया, लेकिन बाद में संशोधनवादी और मार्क्सवाद को झुठलानेवाले बन गये। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-साम्राज्यवाद के सिद्धांतकार।–८१, ८२, ८४, ८६, ९४, १०९, १४१, ३१५, ३१६

केरेन्स्की, अलेक्सान्द्र फ़्योदोरोविच (१८८१–१९७०)–समाजवादी-क्रांतिकारी, चौथी राज्य दूमा के सदस्य। दूमा में कुछ समय तक त्रुदोवीक दल का पक्ष लिया और उसके अध्यक्ष रहे। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद बुर्जुआ अस्थायी सरकार के प्रधानमंत्री।–१७८

केस्टनर (Kestner), **फ़्रीट्ज़**–जर्मन अर्थशास्त्री।–२२४, २२८-२३०

कोल्चाक, अलेक्सान्द्र वसील्येविच (१८७३–१९२०)–ज़ारशाही नौसेना के ऐडमिरल, राजतंत्रवादी; १९१८–१९१९ में रूसी प्रतिक्रांति के एक प्रधान नेता।–२१२

कोसोव्स्की, व्ला० (१८७०–१९४१)–बुंद के एक नेता, रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद मेंशेविक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के समय जर्मनी समर्थक स्थिति अपनायी। – ७५, १३८

कोस्त्रोव – देखें **जोर्दानिया, नोई निकोलायेविच।**

क्रुप्प (Crupp) – जर्मन साम्राज्यवाद के शस्त्रास्त्र-निर्माताओं का – जर्मनी में सैन्य धातु उद्योग संचालकों का – एक घराना। – २४६, २८०, ३४६

क्रेस्तोवनिकोव, ग्रिगोरी अलेक्सान्द्रोविच (जन्म १८५५) – बड़े रूसी उद्योग-पति और सटोरिया, अक्तूबरवादी। वाणिज्यिक-औद्योगिक बुर्जुआ लोगों की ओर से राज्य परिषद के सदस्य। – ६२

क्रोपोत्किन, प्योत्र अलेक्सेयेविच (१८४२–१९२१) – रूसी क्रांतिकारी, भूगोलशास्त्री और पर्यटक; अराजकतावाद के एक नेता और सिद्धांत-कार, मार्क्सवाद के विरोधी। १८७६ से १९१७ तक विदेशों में रहे। – ६१, १७८

क्लाज़ेवित्स (Clausewitz), **कार्ल** (१७८०–१८३१) – प्रशा के जनरल, बड़े सैनिक सिद्धांतकार। – ९०, ९१, १६०

ग

गरीबाल्दी (Garibaldi), **जुज़ेप्पे** (१८०७–१८८२) – इटली के क्रांतिकारी जनवादियों के एक प्रमुख नेता तथा महान सेनानायक। विदेशी ग़ुलामी के विरुद्ध और देश के एकीकरण के लिए इटली की जनता के संघर्ष का नेतृत्व किया। – ९३

गर्देनिन, यू० – देखें **चेर्नोव, वीक्तोर मिख़ाइलोविच।**

गिज़ो (Guizot), **फ़्रांसुआ पियेर** (१७८७–१८७४) – फ़्रांसीसी इतिहासकार और राजनीतिज्ञ। उनकी और फ़्रांसुआ मिन्ये तथा ओग्युस्तेन त्येरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की रचनाएं वर्ग संघर्ष के दृष्टिकोण से इतिहास का स्पष्टीकरण करने की दिशा में प्रथम प्रयास रहीं। फिर भी वर्ग संघर्ष का विवेचन उन्होंने बुर्जुआ दृष्टिकोण से ही किया।– ३६

गिफ़ेन – देखें **जिफ़ेन, राबर्ट।**

गिलौम (Guillaume), **जेम्स** (१८४४–१९१६)–अराजकतावादी, पत्रकार, मार्क्सवाद के कट्टर शत्रु। पहले इंटरनेशनल के सदस्य बने रहते हुए उसकी कई कांग्रेसों में भाग लिया; बाद में 'समाजवादी जनवादियों का सहबंध' नामक बकूनिनपंथी गुप्त संगठन के एक संस्थापक के रूप में मार्क्स तथा एंगेल्स के विरुद्ध संघर्ष किया। १८७२ में इंटरनेशनल से निकाल दिये गये।– १६५

गुचकोव, अलेक्सान्द्र इवानोविच (१८६२–१९३६)–बड़े रूसी पूंजीपति, बुर्जुआ-ज़मींदारशाही अक्तूबरवादी पार्टी के संगठनकर्त्ता और नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के वर्षों में केंद्रीय सैन्य-औद्योगिक समिति के अध्यक्ष। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद बुर्जुआ अस्थायी सरकार में शरीक हुए। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत सत्ता के विरुद्ध संघर्ष किया।– ६२, ६३

गुरेविच, इमानुएल ल्वोविच (स्मिर्नोव, ए०) (जन्म १८६५)–रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादी; मेंशेविक-विसर्जनवादियों की 'नाशा ज़ार्या' पत्रिका के एक संगठनकर्त्ता और संपादक। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।– ६१

गेद (Guesde), **जूल** (१८४५–१९२२)–फ़्रांसीसी समाजवादी आंदोलन तथा दूसरे इंटरनेशनल के एक संस्थापक और नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के छिड़ने पर सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रुख़ अपनाया और फ़्रांस की बुर्जुआ सरकार के सदस्य बन गये।– ७७, ७८, ११४-११६, १३०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोम्पर्स (Gompers), **सैम्युएल** (१८५०–१६२४)–अमरीकी ट्रेड-यूनियन आंदोलन के कार्यकर्त्ता। अमरीकी मज़दूर संघ के एक संस्थापक तथा १८६५ से लेकर उसके स्थायी अध्यक्ष। पूंजीपतियों के साथ वर्ग सहयोग की हिमायत की और मज़दूर वर्ग के क्रांतिकारी संघर्ष का विरोध किया। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–२११

गोर्टर (Górter), **हेर्मन** (१८६४–१६२७)–डच सामाजिक-जनवादी, पत्रकार। *De Tribune* अख़बार के एक संगठनकर्त्ता। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान अंतर्राष्ट्रीयतावादी, ज़िम्मरवाल्डी वाम-पंथी दल के समर्थक।–१२५, १७०

गोलेय (Golay), **पाल**–स्विस सामाजिक-जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के आरंभ में दूसरे इंटरनेशनल के अवसरवादियों तथा सामा-जिक-अंधराष्ट्रवादियों का विरोध किया। वाद में मध्यमार्गी और शांतिवादी स्थिति अपनायी।–१६६

ग्रिम (Grimm), **रावर्ट** (१८८१–१६५८)–स्विट्ज़रलैंड की सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक नेता; पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान मध्यमार्गी, ज़िम्मरवाल्ड और किएन्थाल सम्मेलनों के अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी आयोग के अध्यक्ष।–१२५

ग्रेयलिख़ (Greulich), **हेर्मन** (१८४२–१६२५)–स्विट्ज़रलैंड की सामा-जिक-जनवादी पार्टी के एक संस्थापक, उसके दक्षिणपंथ के नेता। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, ज़िम्मरवाल्डी वामपंथी दल के विरुद्ध संघर्ष किया।–१२५

ग्विनेर (Gwinner), **आर्थर** (१८५६–१६३१)–बड़े जर्मन वित्तपति, 'जर्मन बैंक' के संचालक।–२८८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

च

चिएर्शकी (Tschierschky), **ज़ीगफ़ीद** (जन्म १८७२)–जर्मन अर्थशास्त्री।–२२५, २४२

चेरेवानिन, न० (**लीप्किन, फ़्योदोर अन्द्रेयेविच**) (१८६८–१९३८)–रूसी सामाजिक-जनवादी; मेंशेविकों के एक नेता; विसर्जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–१७९, १९६

चेर्निशेव्स्की, निकोलाई गव्रीलोविच (१८२८–१८८९)–रूसी क्रांतिकारी जनवादी, वैज्ञानिक, लेखक और साहित्य-समीक्षक; रूसी सामाजिक-जनवाद के एक महान पूर्वगामी।–६२

चेर्नोव, वीक्तोर मिखाइलोविच (**गर्देनिन, यू०**) (१८७६–१९५२)–समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के एक नेता तथा सिद्धांतकार; मार्क्सवाद के विरुद्ध लेख प्रकाशित किये। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–९३

चैम्बरलेन (Chamberlain), **जोज़ेफ़** (१८३६–१९१४)–ब्रिटिश राजनेता। उपनिवेशवादी समामेलन की नीति को सक्रियतापूर्वक चलाया। आंग्ल-बोएर युद्ध (१८९९–१९०२) के एक मुख्य प्रेरक।–२९७

छ

छेईद्ज़े, निकोलाई सेम्योनोविच (१८६४–१९२६)–मेंशेविकों के एक नेता। तीसरी और चौथी राज्य दूमाओं के सदस्य, चौथी दूमा के मेंशेविक ग्रुप के नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के वर्षों में मध्य-मार्गी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के समय राज्य दूमा की अस्थायी समिति के सदस्य, प्रतिरक्षावादी। १९१७ में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मज़दूर तथा सैनिक प्रतिनिधियों की पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष और पहले समायोजन की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष; बुर्जुआ अस्थायी सरकार का सक्रिय समर्थन किया। – ६८, १८०, १८१, १८३, १८४, १९६, २००, २०१, ३३६

छेन्केली, अकाकी इवानोविच (१८७४–१९५९) – रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१७ में फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद ट्रांसकाकेशिया में बुर्जुआ अस्थायी सरकार के प्रतिनिधि। – २०१, ३३६

ज

जिफ़ेन (Giffen), **राबर्ट** (१८३७–१९१०) – अंग्रेज़ अर्थशास्त्री और सांख्यिकीविद, अंग्रेज़ पूंजीवाद के समर्थक। अर्थव्यवस्था, वित्त तथा सांख्यिकी विषयक कई रचनाएं लिखीं। – ८९, ३२५

जीडेल्स (Jeidels), **ओटो** – जर्मन अर्थशास्त्री। – २३२, २३३, २४९, २५१, २५३, २५४, २८३, २८६

जेत्किन (Zetkin), **क्लारा** (१८५७–१९३३) – जर्मन और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन की प्रमुख नेत्री; जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की एक संस्थापिका। – १८९

जेल्याबोव, अन्द्रेई इवानोविच (१८५०–१८८१) – रूसी क्रांतिकारी, नरोदवादी; 'नरोदनाया वोल्या' ('जनता की आज़ादी') पार्टी के एक नेता। उनके नेतृत्व में ज़ार अलेक्सान्द्र द्वितीय की हत्या के कई प्रयत्न किये गये; १ मार्च, १८८१ को ज़ार की हत्या के आयोजन के कारण उनको मौत की सज़ा दी गयी। – ९३

जोरेस (Jaurès), **जान** (१८५९–१९१४) – फ़्रांसीसी और अंतर्राष्ट्रीय समाज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वादी ग्रांदोलन के एक विख्यात नेता। मज़दूर ग्रांदोलन तथा उसके कार्यभार संबंधी उनके दृष्टिकोण सुधारवादी थे, पर उन्होंने शांति के लिए, साम्राज्यवादी उत्पीड़न तथा ग्राक्रामक युद्धों के विरुद्ध ग्रथक रूप से संघर्ष किया, जिसके कारण प्रतिक्रियावादी वुर्जुग्रा लोग उनसे घृणा करते थे। पहले विश्वयुद्ध से ठीक पहले प्रतिक्रियावादियों ने जोरेस की हत्या की।– ११६

ज़ोर्गे (Sorge), **फ़्रेडरिक ग्रडोल्फ़** (१८२८–१९०६)– जर्मन समाजवादी, ग्रंतर्राष्ट्रीय मज़दूर ग्रौर समाजवादी ग्रांदोलन के एक विख्यात कार्यकर्त्ता, मार्क्स ग्रौर एंगेल्स के मित्र ग्रौर सहयोगी।– १४४

जोर्दानिया, नोई निकोलायेविच (**ग्रान, कोस्त्रोव**) (१८७०–१९५३)– सामाजिक-जनवादी, काकेशियाई मेंशेविकों के एक नेता। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के वाद पार्टीगत-मेंशेविकों (रूसी सामाजिक-जनवाद की एक ग्रवसरवादी प्रवृत्ति) का ग्रौपचारिक साथ दिया, पर वास्तव में विसर्जनवादियों का समर्थन किया। १९१४ में त्रोत्स्की की 'वोर्बा' पत्रिका में लेख लिखे। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी।– २००

ज्यूदेकुम (Südekum), **ग्राल्बेर्ट** (१८७१–१९४४)– जर्मन सामाजिक-जनवादियों के एक ग्रवसरवादी नेता, संशोधनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी।– ८५, १०९, ११३, १२६, १२७, १२८, १३८, १३९,१४२, १८३, १८८, १९३, २९८

ट

ट्रोएलस्त्रा (Troelstra), **पीटर येलेस** (१८६०–१९३०) – हालैंड के मज़दूर ग्रांदोलन के कार्यकर्त्ता, ग्रवसरवादी। हालैंड की सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के एक संगठनकर्त्ता ग्रौर नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९१८) के दौरान जर्मनीप्रेमी सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। – १२४, १८६

ड

डिज़रैली (Disraeli), बेंजमिन, लॉर्ड बेकन्सफ़ील्ड (१८०४–१८८१)– अंग्रेज़ राजनीतिज्ञ, कंज़रवेटिव पार्टी के नेता। ब्रिटेन की सरकार में अनेक बार शरीक हुए और प्रधानमंत्री रहे। – २९७

डेविड (David), एडुअर्ड (१८६३–१९३०) – जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के दक्षिणपंथ के एक नेता, संशोधनवादी; अर्थशास्त्री। पहले विश्व-युद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। – ७८, ११७, १३३, १६५, २०१, २९८

त

तोमा (Thomas), आल्बेर (१८७८–१९३२)– फ़्रांसीसी राजनीतिज्ञ, सामाजिक-सुधारवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। फ़्रांस की बुर्जुआ सरकार में शस्त्रास्त्र मंत्री रहे। –२१०

त्येरी (Thierry), ओग्युस्तेन (१७९५–१८५६)– फ़्रांसीसी उदारतावादी इतिहासकार, वर्ग संघर्ष के बुर्जुआ सिद्धांत के निरूपक। – ३६

त्रोत्स्की (ब्रोनस्टीन), लेव दवीदोविच (१८७९–१९४०)– रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान मध्यमार्गी स्थिति अपनायी; युद्ध, शांति और क्रांति के प्रश्नों पर लेनिन और बोल्शेविकों का विरोध किया। १९१७ में बोल्शेविक पार्टी के सदस्य बन गये, लेकिन बोल्शेविक रुख़ नहीं अपनाया तथा लेनिनवाद और पार्टी नीति के विरुद्ध गुप्त तथा खुला संघर्ष किया। अक्तूबर समाज-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वादी क्रांति की विजय के बाद कई ज़िम्मेदार पदों पर रहे, लेकिन रूस में समाजवाद के निर्माण का विरोध किया। १९२७ में पार्टी से निकाल दिये गये, १९२९ में सोवियत विरोधी कार्रवाई के कारण सोवियत संघ से निर्वासित किये गये और १९३२ में सोवियत नागरिकता से वंचित किये गये। – १७०, १९९, २००, २०१

थ

थियेर (Thiers), अदोल्फ़ (१७९७–१८७७) – फ़्रांसीसी राजनेता और इतिहासकार। दूसरे साम्राज्य के पतन के बाद (४ सितंबर, १८७०) प्रतिक्रियावादी सरकार के एक वास्तविक नेता। १७ फ़रवरी, १८७१ को उसके प्रधान बन गये। पेरिस कम्यून के दमन और गृहयुद्ध के एक मुख्य संगठनकर्त्ता। – ३६

द

दवीदोव, ल० फ़० – पीटर्सबर्ग के उधार कार्यालय के संचालक। – २७२

दुमा (Dumas), शार्ल (१८८३–१९१४) – एक फ़्रांसीसी वृत्तकार और पत्रकार, फ़्रांस की समाजवादी पार्टी के सदस्य। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। – ७८

देनीकिन, अन्तोन इवानोविच (१८७२–१९४७) – ज़ारशाही जनरल; अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद श्वेत गार्ड आंदोलन के एक सरग़ना, दक्षिण रूस में सोवियत विरोधी सेनाओं के प्रधान सेनापति। सोवियत सेनाओं द्वारा अपनी फ़ौजों की पराजय (मार्च, १९२०) के बाद विदेश भाग गये। – २१२

देलैज़ी (Delaisi), फ़्रांसीस (जन्म १८७३) – फ़्रांसीसी टुटपुंजिया अर्थशास्त्री, संघाधिपत्यवादी, शांतिवादी। – ८१

देशानेल (Deschanel), पाल (१८५५–१९२२) – फ़्रांसीसी राजनीतिज्ञ,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रकार। १८९९ से १९१९ तक प्रतिनिधि सदन के सदस्य, कई बार उसके अध्यक्ष रहे।–२८०

दोल्गोरूकोव, पावेल द्मीत्रियेविच (१८६६–१९३०)–रूस की सांविधानिक-जनवादी (कैडेट) पार्टी के एक संस्थापक। १९०५ से १९११ तक उसकी केंद्रीय समिति के अध्यक्ष।–६२

द्रियो (Driault), ज० एडुअर्ड–फ़्रांसीसी इतिहासकार।–३०८, ३०९

न

नाखिमसन, मिरोन इसाकोविच (स्पेक्तातोर) (१८८०–१९३८)–रूसी अर्थशास्त्री और पत्रकार, बुंदवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान मध्यमार्गी। विश्व अर्थव्यवस्था विषयक कई रचनाओं के लेखक।–३४१, ३४२, ३४६

निकोलाई द्वितीय (रोमानोव) (१८६८–१९१८)—अंतिम रूसी सम्राट (१८९४–१९१७)।–६१, ६५, ९१

नेनारोकोमोव, ग० प० (जन्म १८७४)–ज़ारशाही अदालती के चेंबर के अभियोक्ता। फ़रवरी, १९१५ में चौथी राज्य दूमा के बोल्शेविक सदस्यों पर ज़ारशाही सत्ता के मुक़दमे में अभियोक्ता।–१८२

नेपोलियन तृतीय (Napoleon III) (बोनापार्त, लुई) (१८०८–१८७३)–१८५२ से १८७० तक फ़्रांस के सम्राट।–९३, १५४, १६५

नेमार्क (Neymarck), अल्फ़्रेड–फ़्रांसीसी अर्थशास्त्री-सांख्यिकीविद।–२७३, २७४, २७७, ३४०

नोस्के (Noske), गुस्ताव (१८६८–१९४६)–जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक अवसरवादी नेता; पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। जर्मनी में क्रांतिकारी आंदोलन के दमन के एक संगठनकर्त्ता। – २१२

प

पान्नेकोएक (Panneckoek) **अन्तोनी** (१८७३–१९६०)– डच सामाजिक-जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान अंतर्राष्ट्रीयतावादी। १९१८ से १९२१ तक डच कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य, चरम वामपंथी, संकीर्णतावादी स्थिति अपनायी। – ८२, १२५, १७०

पुरिश्केविच, व्लादीमिर मित्रोफ़ानोविच (१८७०–१९२०)– बड़े रूसी ज़मींदार, प्रतिक्रियावादी यमदूत सभाई, राजतंत्रवादी, दूमा में यहूदी विरोधी भाषणों के लिए कुख्यात। – ६३, ६५

पेत्रोव्स्की, ग्रिगोरी इवानोविच (१८७८–१९५८)– रूसी क्रांतिकारी मज़दूर आंदोलन के एक पुराने कार्यकर्त्ता, बोल्शेविक। चौथी राज्य दूमा के बोल्शेविक ग्रुप में शामिल हुए। नवंबर, १९१४ में साम्राज्यवादी युद्ध के ख़िलाफ़ लक्षित क्रांतिकारी सरगर्मी के कारण गिरफ़्तार कर लिये गये और साइबेरिया में जलावतन कर दिये गये। बाद में विख्यात सोवियत पार्टी तथा राजकीय कार्यकर्त्ता। – ६८-७२, १८३

पैश (Paish), **जार्ज** (१८६७–१९५७)– अंग्रेज अर्थशास्त्री और सांख्यिकीविद, शांतिवादी। – ८९, १००, २७७, २८२

पोत्रेसोव, अलेक्सान्द्र निकोलायेविच (१८६९–१९३४)– रूसी सामाजिक-जनवादी, एक मेंशेविक नेता। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवाद के सिद्धांतकार। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद विदेश चले गये। –९०, १३८, १७९, १९६, २९८, ३३६

प्रूधों (Proudhon), **पियेर जोज़ेफ़** (१८०९–१८६५)– फ़्रांसीसी पत्रकार,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री ; टुटपुंजिया बुर्जुआ वर्ग के विचारधारा-निरूपक, अराजकतावाद के एक प्रवर्तक। टुटपूंजिया दृष्टिकोण से बड़ी पूंजीवादी संपत्ति की आलोचना करते हुए लघु निजी संपत्ति को शाश्वत बनाने का सपना देखते थे। राज्य को वर्ग मतभेदों का मुख्य स्रोत समझकर शांतिपूर्ण ढंग से "राज्य को मिटाने" की कल्पनावादी योजनाएं प्रस्तुत कीं। राजनीतिक संघर्ष से इनकार करने का प्रचार किया।– २३, २५

प्लेख़ानोव, गेओर्गी वालेन्तीनोविच (१८५६–१९१८)– रूसी और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता, रूस में मार्क्सवाद के प्रथम प्रचारक। रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी की दूसरी कांग्रेस (१९०३) के बाद प्लेख़ानोव ने अवसरवाद के साथ समझौते का रुख़ अपनाया और फिर मेंशेविकों का पक्ष लिया। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद बोल्शेविकों तथा क्रांति का विरोध किया।– ६१, ६६, ७३, ७७-८०, ८४, ८६-८८, ९०-९४, ११४-११७, १२४, १२६, १२७, १३०, १४१, १४९, १५०, १६१, १६५, १६९, १७०, १७२, १८२, १८३, १८५, १९३, १९८-२०१

फ

फ़ॉन वेस्टफ़ालेन, जेनी– देखें **मार्क्स, जेनी**।

फ़ायरबाख़ (Feuerbach), **लुडविग अंड्रेयस** (१८०४–१८७२)– विख्यात जर्मन भौतिकवादी दार्शनिक और नास्तिक, मार्क्सवाद के एक पूर्वगामी। हेगेल के भाववादी दर्शन की आलोचना की तथा दिखाया कि भाववाद तथा धर्म के बीच संबंध है। पर सामाजिक घटनाओं को समझने में भाववादी रहे।– २१, २२, २६, २८, १०६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फ़ोगेलस्टीन (Vogelstein), **थिस्रोडोर**–जर्मन अर्थशास्त्री।–२२२, २२५, २९१

फ़ोग्ट (Vogt), **कार्ल** (१८१७–१८९५)–जर्मन प्रकृतिशास्त्री, बाज़ारू भौतिकवाद के एक प्रमुख प्रतिनिधि।–२९

फ़ोल्कर (Völker)—एक जर्मन सरकारी अफ़सर, जो बाद में जर्मन इस्पात उद्योग के एक ट्रस्ट के प्रमुख बन गये।–२७१

ब

बकूनिन, मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच (१८१४–१८७६)–रूसी क्रांतिकारी, अराजकतावाद के एक सिद्धांतकार। जर्मनी में १८४८–१८४९ की क्रांति में सक्रिय भाग लिया। पहले इंटरनेशनल के सदस्य बने रहते हुए मार्क्स तथा एंगेल्स का विरोध किया और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ में लेने की कोशिश की। १८७२ में विघटन की कार्रवाइयों के कारण इंटरनेशनल से निकाल दिये गये।–२५

बदायेव, अलेक्सेई येगोरोविच (१८८३–१९५१)–रूसी सामाजिक-जनवादी, बोल्शेविक, चौथी राज्य दूमा के सदस्य। १९१४ में दूमा के दूसरे बोल्शेविक सदस्यों के साथ साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया, ज़ारशाही सरकार के लिए युद्ध ऋणों के विरुद्ध वोट दिया। १९१४ के नवंबर में गिरफ़्तार किये गये, उनके ऊपर मुक़दमा चलाया गया और साइबेरिया में जलावतन किये गये। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद पार्टी और राजकीय कार्यकर्त्ता।–१८३

बर्नस्टीन (Bernstein), **एडुअर्ड** (१८५०–१९३२)–जर्मन सामाजिक-जनवादियों और दूसरे इंटरनेशनल के घोर अवसरवादी पक्ष के एक नेता, संशोधनवाद तथा सुधारवाद के सिद्धांतकार।–१४२, २११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बावेर (Bauer), **ओटो** (१८८२–१९३८) – आस्ट्रियाई सामाजिक-जनवाद तथा दूसरे इंटरनेशनल के एक नेता; तथाकथित "आस्ट्रियाई मार्क्सवाद" के सिद्धांतकार, जो मार्क्सवादी लफ़्फ़ाज़ी की आड़ में क्रांतिकारी मार्क्सवाद और सर्वहारा वर्ग के वर्ग संघर्ष को अस्वीकार करते थे। "सांस्कृतिक-राष्ट्रीय स्वायत्तता" के बुर्जुआ-राष्ट्रवादी सिद्धांत के जनकों में एक। १९१८–१९१९ में आस्ट्रियाई बुर्जुआ जनतंत्र के विदेशमंत्री। – १७६, २१०

बावेर (Bauer), **ब्रूनो** (१८०९-१८८१) – जर्मन भाववादी दार्शनिक, एक प्रमुख तरुण हेगेलपंथी। मार्क्स और एंगेल्स ने 'पवित्र परिवार या आलोचनात्मक आलोचना की आलोचना। बावेर मंडली के विरुद्ध' (१८४४) और 'जर्मन विचारधारा' (१८४५-१८४६) में बावेर के भाववादी दृष्टिकोणों की आलोचना की थी। – २१, २२

बियर (Beer), **माक्स** (१८६४–१९४३) – समाजवाद के एक जर्मन इतिहासकार। – २९६

बिसोलाती (Bissolati), **लियोनीदा** (१८५७–१९२०) – इटली की समाजवादी पार्टी के एक संस्थापक, उसके चरम दक्षिण सुधारवादी पक्ष के एक नेता। १९१२ में इटली की समाजवादी पार्टी से निकाल दिये गये और सामाजिक-सुधारवादी पार्टी बनायी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी रुख़ अपनाया और यह मांग की कि इटली एंटेंट की तरफ़ से युद्ध में दाख़िल हो। १९१६–१९१८ में विभाग-रहित मंत्री। – १२४, १७९, १८३

बिस्मार्क (Bismarck), **ओटो एडुअर्ड लेओपोल्ड** (१८१५–१८९८) – प्रशा तथा जर्मनी के एक राजनेता और राजनयज्ञ। बिस्मार्क का मुख्य लक्ष्य "शस्त्रबल और रक्तपात के ज़रिए" छोटे-छोटे बिखरे हुए जर्मन राज्यों का एकीकरण करना और सामंती प्रशा के नायकत्व में संयुक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जर्मन साम्राज्य की स्थापना करना था। जर्मन साम्राज्य के प्रथम चांसलर; १८७१ से १८९० तक जर्मनी की गृह तथा विदेश नीति की बागडोर उनके हाथों में रही। समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून के प्रवर्तक।—५९, ६५, ९३

बुख़नर (Büchner), **फ़्रेडरिक कार्ल क्रिश्चन लुडविग** (१८२४—१८९९)—जर्मन दार्शनिक, बाज़ारू भौतिकवाद के एक मुख्य प्रतिनिधि, सुधारवादी।—२९

बुख़ारिन, निकोलाई इवानोविच (१८८८—१९३८)—पत्रकार और अर्थशास्त्री। १९०६ से रूसी सामाजिक-जनवादी मज़दूर पार्टी के सदस्य। पार्टी के मुख्य पदों पर रहे, लेकिन अकसर लेनिन की नीति का विरोध किया, जिसके कारण १९३७ में पार्टी से निकाले गये।—२५१

बुलीगिन, अलेक्सान्द्र ग्रिगोरियेविच (१८५१-१९१९)—ज़ारशाही मंत्री, १९०५ में एक आयोग के प्रधान, जिसने परामर्शदात्री राज्य दूमा का मसविदा तैयार किया।—१०८

बुशे (Boucher), **एजेन आर्थर** (१८४७—१९३३)—फ़्रांसीसी सैनिक कार्यकर्त्ता, फ़्रांसीसी सैन्यवाद के एक सिद्धांतकार।—१४६

बूर्त्सेव, व्लादीमिर ल्वोविच (१८६२—१९३६)— १९वीं शताब्दी के नौवें दशक से क्रांतिकारी आंदोलन में भाग लेने लगे। नज़रबंदी के वाद देश छोड़कर विदेश भाग गये। समाजवादी-क्रांतिकारियों के समर्थक; १९०५—१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद कैडेटों का समर्थन किया। पहले विश्वयुद्ध (१९१४—१९१८) के वर्षों में अंधराष्ट्रवादी, बोल्शेविकों का विरोध किया।—६१, १७८

बेबेल (Bebel), **अगस्त** (१८४०—१९१३)—जर्मन सामाजिक-जनवाद और दूसरे इंटरनेशनल के एक प्रमुख नेता। कई बार राइख़स्टाग के सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चुने गये। १९वीं शताब्दी के अंत में तथा २०वीं शताब्दी के शुरू में जर्मन सामाजिक-जनवादी आंदोलन में सुधारवाद और संशोधनवाद का सक्रिय विरोध किया, लेकिन अवसरवादियों के साथ खुले संबंध-विच्छेद का समर्थन नहीं किया।–१६६

बेरार (Bérard), **विक्तोर** (१८६४–१९३१)–फ़्रांसीसी अर्थशास्त्री, पत्रकार, भाषाविज्ञ।–३३९

बेलगेर (Belger), **एर्विन** (१८७५–१९१९ तथा १९२२ के बीच)–जर्मन बुर्जुआ राजनीतिक कार्यकर्त्ता और पत्रकार, राजतंत्रवादी व अंधराष्ट्रवादी, जर्मन साम्राज्यवाद के एक समर्थक।–१२२

बोब्रिन्स्की, व्लादीमिर अलेक्सेयेविच (जन्म १८६८)–रूसी प्रतिक्रियावादी राजनीतिक कार्यकर्त्ता, बड़े ज़मींदार और चीनी के कारख़ानेदार, राज्य दूमा के दक्षिणपंथी सदस्य। घोर राष्ट्रवादी, रूस के सरहदी क्षेत्रों की जातियों के बलात् रूसीकरण का समर्थन किया।–६३, ६५

ब्रांटिंग (Branting), **कार्ल याल्मार** (१८६०–१९२५)–स्वीडन की सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेता, दूसरे इंटरनेशनल के नेताओं में से एक, संशोधनवादी और अवसरवादी।–१२५

ब्रैल्सफ़ोर्ड (Brailsford), **हेनरी** (जन्म १८७३)–अंग्रेज़ पत्रकार, शांतिवादी। बाल्कन, आयरलैंड, मिस्र तथा भारत में राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलन का समर्थन किया। स्वतंत्र लेबर पार्टी के सदस्य।– ८९

ब्लैचफ़ोर्ड (Blatchford), **राबर्ट** (१८५१–१९४३)–अंग्रेज़ सामाजिक-सुधारवादी, पत्रकार और लेखक। स्वतंत्र लेबर पार्टी के एक संस्थापक और सिद्धांतकार; सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–१४७-१५०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

म

माकेन्सेन (Mackensen), **ग्रगस्त** (१८४९–१९४५)–जनरल-फ़ील्ड-मार्शल, जर्मन साम्राज्यवादी सैन्यवादियों के एक प्रतिनिधि। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान जर्मन सेनाओं के प्रधान सेनापति।–१८८

माज्जिनी (Mazzini), **जुज़ेप्पे** (१८०५–१८७२)–इटली के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी, बुर्जुआ जनवादी, इटली के राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलन के एक सिद्धांतकार।–२५

मॉनीटर (Monitor)—एक जर्मन सामाजिक-जनवादी और अवसरवादी का छद्मनाम, जिन्होंने अनुदारपंथी पत्रिका *Preußische Jahrbücher* में अप्रैल, १९१५ में एक लेख लिखा। उसमें उन्होंने यह दावा करते हुए सामाजिक-जनवादी पार्टियों के मध्यमार्गी रुख़ की खुली तारीफ़ की कि वह भविष्य में अवसरवादियों तथा बुर्जुआ वर्ग के लिए उपयोगी होगा, क्योंकि वह अवसरवादियों को बुर्जुआ वर्ग से अपनी वर्ग सहयोग की नीति को "वामपंथी" लफ़्फ़ाज़ी के जामे में छिपाने में समर्थ बनायेगा।–१२८, १९१

मारिस (Morris), **हेनरी के०** (जन्म १८६८)–अमरीकी न्यायशास्त्री और इतिहासकार, इतिहास और अर्थव्यवस्था विषयक प्रश्नों पर अनेक कृतियां लिखीं।–२९५

मार्क्स (Marx), **कार्ल** (१८१८–१८८३)।–२०-३७, ३९-४८, ५०-६०, ६३-६५, ७९, ९१-९३, ९५, १०८, १४३, १४४, १५३, १६०, १६५, १६६, १७२, १७६, २१९, २४३, ३३४, ३६०

मार्क्स (फ़ॉन वेस्टफ़ालेन) (*Marx, von Westphalen*), **जेनी** (१८१४–१८८१)–कार्ल मार्क्स की पत्नी।–२२, २६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मार्गन (Morgan), **जान पिएरपौंट** (१८६७–१९४३)–अमरीकी अरबपति, संयुक्त राज्य अमरीका में सबसे बड़े बैंकिंग प्रतिष्ठान के प्रमुख।– २४७, २९०

मार्तोव, ल० (त्सेदेरबाउम, यूली ओसिपोविच) (१८७३–१९२३)–रूसी सामाजिक-जनवादी, एक मेंशेविक नेता। १९०५–१९०७ की क्रांति की पराजय के बाद विसर्जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान अंतर्राष्ट्रीयतावादी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद मेंशेविक-अंतर्राष्ट्रीयतावादियों के ग्रुप का नेतृत्व किया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद सोवियत सत्ता का विरोध किया।– ११५, ११९, २०१, ३३६, ३५७

मास्लोव, प्योत्र पाव्लोविच (१८६७–१९४६)–रूसी सामाजिक-जनवादी, मेंशेविक; कृषि विषयक कई रचनाएं लिखीं, जिनमें मार्क्सवाद का संशोधन करने की कोशिश की। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।– ६१, १७९, २९८, ३३६

मिन्ये (Mignet), **फ़्रांसुआ ओग्यूस्त मारी** (१७९६–१८८४)–फ़्रांसीसी उदारतावादी इतिहासकार।– ३६

मिलेरां (Millerand), **अलेक्सान्द्र एत्येन** (१८५९–१९४३)–फ़्रांसीसी राजनीतिज्ञ। उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में समाजवादियों का पक्ष लिया और फ़्रांसीसी समाजवादी आंदोलन में एक अवसरवादी धारा के अगुआ बने। १८९९ में वाल्देक-रूसो की प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ सरकार में शरीक हो गये। १९०४ में समाजवादी पार्टी से निकाले जाने के बाद दूसरे भूतपूर्व समाजवादियों–ब्रिआं और विविआनी–के साथ 'स्वतंत्र समाजवादियों' का ग्रुप संगठित किया। अनेक बार फ़्रांसीसी सरकार के सदस्य हुए। १९२० से १९२४ तक फ़्रांसीसी गणराज्य के राष्ट्रपति।– ९३, २११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुरानोव, मत्वेई कोन्स्तान्तीनोविच (१८७३–१९५९)—रूसी सामाजिक-जनवादी, बोल्शेविक। चौथी राज्य दूमा में बोल्शेविक ग्रुप के सदस्य। १९१४ के नवंबर में साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध लक्षित क्रांतिकारी सरगर्मी के कारण गिरफ़्तार कर लिये गये और साइबेरिया में जलावतन कर दिये गये।—६९, ७०, ७१, १३७, १८३

मुसोलिनी (Mussolini), **बेनीतो** (१८८३–१९४५)—अपनी राजनीतिक कार्रवाइयां इतालवी समाजवादी पार्टी में शुरू कीं। पहले विश्वयुद्ध के शुरू में खुलेआम साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग का पक्ष लिया, जिसके कारण दिसंबर, १९१४ में पार्टी से निकाल दिया गया। बाद में इटली के फ़ासिस्टों के नेता; १९२२ से १९४३ तक इटली के फ़ासिस्ट तानाशाह, एक मुख्य सैनिक अपराधी।—१८३

मेनशिकोव, मिख़ाईल ओसिपोविच (१८५९–१९१९)—प्रतिक्रियावादी रूसी पत्रकार, यमदूत सभाई 'नोवोये व्रेम्या' ('नया ज़माना') अख़बार के एक संपादक।—६१

मेहरिंग (Mehring), **फ़्रांज़** (१८४६–१९१९)—जर्मनी के मज़दूर आंदोलन के विख्यात कार्यकर्त्ता, जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के वामपंथ के एक नेता और सिद्धांतकार। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।—८०, १०८, ११४

मैकडानल्ड (MacDonald), **जैम्स रैमज़े** (१८६६–१९३७)—अंग्रेज़ राजनीतिज्ञ, ब्रिटेन की स्वतंत्र लेबर पार्टी और लेबर पार्टी के एक संस्थापक और नेता। पार्टी में और दूसरे इंटरनेशनल में घोर अवसरवादी नीति का अनुसरण किया; पूंजीवाद के समाजवाद में शांतिपूर्ण प्रवेश के सिद्धांत का प्रचार किया।—२१०

मोरेल (Morel), **एडमंड डीन** (१८७३–१९२४)—अंग्रेज़ पत्रकार, शांति-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वादी। पहले विश्वयुद्ध से पहले लिवरल पार्टी के वामपंथ का समर्थन किया; पहले विश्वयुद्ध के छिड़ने पर स्वतंत्र लेबर पार्टी में शामिल हो गये। शांतिवादी जनवादी नियंत्रण संघ के एक संस्थापक और नेता। १९१७ में सैन्यवाद विरोधी प्रचार के कारण गिरफ़्तार किये गये।–१४५, १४६

मोलेशौट (Moleschott), **जेकब** (१८२२–१८९३)–डच शरीरक्रियाशास्त्री। बाज़ारू भौतिकवाद के एक मुख्य प्रतिनिधि।–२९

मोस्ट (Most), **जोहान जोज़ेफ़** (१८४६–१९०६)–जर्मन सामाजिक-जनवादी, बाद में अराजकतावादी। १८७८ में समाजवादियों के विरुद्ध असाधारण क़ानून जारी करने के बाद लंदन चले गये, जहां अराजकतावादी समाचारपत्र *Freiheit* ('स्वाधीनता') प्रकाशित करवाया। १८८२ में संयुक्त राज्य अमरीका गये, जहां *Freiheit* का प्रकाशन जारी रखा। बाद में मज़दूर आंदोलन से अलग हुए।–६०

र

रदीश्चेव, अलेक्सान्द्र निकोलायेविच (१७४९–१८०२)–रूसी लेखक, क्रांतिकारी ज्ञान-प्रसारक, 'पीटर्सवर्ग से मास्को की यात्रा' शीर्षक विख्यात पुस्तक के लेखक, जिसमें एकतंत्रवादी व्यवस्था, भूदास-प्रथा तथा रूसी जनसाधारण की कष्टदायक स्थिति दिखायी। ज़ारशाही ने उनको मौत की सज़ा सुनायी, पर इसे बदलकर उन्हें दस वर्ष के लिए साइबेरिया में निर्वासित कर दिया।–६२

राकफ़ेलर (Rockefeller), **जान डैविसन** (१८३९–१९३७)–वित्तपति परिवार के संस्थापक, संयुक्त राज्य अमरीका के विशालतम तेल ट्रस्ट के संचालक।–२४७, २८६-२८८

राकोव्स्की, क्रिस्तिआन गेओर्गियेविच (१८७३–१९४१)–१९वीं सदी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंतिम दशक से लेकर बुल्गारिया, रूमानिया, स्विट्ज़रलैंड और फ़्रांस के सामाजिक-जनवादी आंदोलन में शरीक हुए। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान मध्यमार्गी। १९१७ में बोल्शेविक पार्टी के सदस्य बन गये। बाद में पार्टी विरोधी सरगर्मी के कारण पार्टी से निकाल दिये गये। – १७०

रादेक, कार्ल बेर्नगार्दोविच (१८८५–१९३९)–गैलीशिया, पोलैंड और जर्मनी में सामाजिक-जनवादी आंदोलन में भाग लिया। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान अंतर्राष्ट्रीयतावादी स्थिति अपनायी, पर कभी-कभी मध्यमार्ग का पक्ष लेते थे। १९१७ से बोल्शेविक पार्टी के सदस्य। बाद में पार्टी विरोधी सरगर्मी के कारण पार्टी से निकाल दिये गये। – ८२

रिकार्डो (Ricardo), **डेविड** (१७७२–१८२३)–अंग्रेज अर्थशास्त्री, जिनकी रचनाओं में क्लासिकल बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र अपनी चरम परिणति पर पहुंचा। रिकार्डो ने मूल्य का श्रम-सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार मूल्य माल के उत्पादन पर ख़र्च किये गये श्रम द्वारा निर्धारित होता है और यह श्रम ही मज़दूर के वेतन तथा पूंजीपति के मुनाफ़े का स्रोत है। – ४६

रीसेर (Riesser), **जेकाब** (१८५३–१९३२)–जर्मन अर्थशास्त्री और बैंकिंग-व्यवसाय में एक हस्ती। कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें साम्राज्यवाद तथा वित्त पूंजी का समर्थन किया। – २२३, २२७, २३६, २३८, २४०, २४६, २४९, २५६, २७६, २८१, २८६, २९०, ३५१, ३५६, ३५८

रुबानोविच, इल्या अदोल्फ़ोविच (१८६०–१९२०)–समाजवादी-क्रांतिकारियों के एक नेता, अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के सदस्य। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। – ६१, १७८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूगे (Ruge), **आर्नोल्ड** (१८०२–१८८०)–जर्मन तरुण हेगेलपंथी, बुर्जुआ आमूलवादी।–२३

रूडार्फ़ेर (रीज़लर) (Riezler), **कुर्ट** (१८८२–१९५५)–जर्मन राजनयिक, दार्शनिक, पत्रकार, जर्मन साम्राज्यवादी बुर्जुआ वर्ग के उदारतावादी-राजतंत्रवादी पक्ष के एक प्रतिनिधि।–१२२

रेनर (Renner), **कार्ल** (१८७०–१९५०)– आस्ट्रिया के एक राजनीतिज्ञ, आस्ट्रियाई सामाजिक-जनवाद के दक्षिणपंथ के एक नेता और सिद्धांतकार। तथाकथित "आस्ट्रियाई मार्क्सवाद" के एक विचारधारा-निरूपक और "सांस्कृतिक-राष्ट्रीय स्वायत्तता" के बुर्जुआ-राष्ट्रवादी सिद्धांत के एक संस्थापक। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–१७६

रेपिंगटन (Repington), **चार्ल्स** (१८५८–१९२५)–फ़ौजी अफ़सर और सैनिक पत्रकार, अंग्रेज़ साम्राज्यवादी सैन्यवाद के एक प्रतिनिधि। पहले विश्वयुद्ध की तैयारी तथा उसके घटनाक्रम पर कई पुस्तकें लिखीं।–१४६

रोजेनफ़ेल्द, ले० बो०–देखें **कामेनेव, लेव बोरीसोविच।**

रोडबेर्टस-यागेत्सोव (Rodbertus-Jagetzow), **जोहान कार्ल** (१८०५–१८७५)–जर्मन बाज़ारू अर्थशास्त्री, "राजकीय समाजवाद" के एक सिद्धांतकार। उनका मत था कि श्रम तथा पूंजी के बीच मतभेद प्रशियाई जंकर राज्य द्वारा किये गये सुधारों की मदद से हल किये जा सकते हैं।–४६

रोड्स (Rhodes), **सेसील जान** (१८५३–१९०२)–अंग्रेज़ प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ, जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति को सक्रियतापूर्वक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चलाया और साम्राज्यवादी विस्तार का प्रचार किया।–२६७, २६८, ३०५

रोदिचेव, फ़्योदोर इज़्माइलोविच (१८५३–१९३२)–रूस के ज़ेम्स्त्वो के एक कार्यकर्त्ता, कैडेट पार्टी के एक नेता, इसकी केंद्रीय समिति के सदस्य। राज्य दूमा के सदस्य।–६२

रोपशिन, व० – देखें साविन्कोव, बोरीस वीक्तोरोविच।

रोबेसपियेर (Robespierre), **मैक्सिमिलियन** (१७५८–१७६४)–१८वीं सदी के अंत में हुई महान फ़्रांसीसी बुर्जुआ क्रांति के विख्यात नेता, जैकोविनों के नेता, १७६३–१७६४ में क्रांतिकारी सरकार का नेतृत्व किया।–६३

रोमानोव – देखें निकोलाई द्वितीय।

रोमानोव-वंश – १६१३ से १६१७ तक रूस पर शासन करनेवाला राजवंश।–६३, १५२, १७७

रोलैंड-होल्स्ट (Roland-Holst), **हेनरिएटा** (१८६६–१६५२)–डच वामपंथी समाजवादी और लेखिका। स्त्रियों की यूनियनें संगठित करने के कार्य में भाग लिया। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१६१८) के शुरू में मध्यमार्गी, बाद में अंतर्राष्ट्रीयतावादियों का पक्ष लिया।–१७०

ल

ल० म० – देखें मार्तोव, ल०।

लफ़ार्ग (Lafargue), **लाऊरा** (१८४५–१९११)–फ़्रांस के मजदूर आंदोलन की कार्यकर्त्री, कार्ल मार्क्स की बेटी।–२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लॉन्गे (Longuet), **जेनी** (१८४४–१८८३)–अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन की कार्यकर्त्री, कार्ल मार्क्स की बेटी।–२६

लायड जार्ज (Lloyd George), **डेविड** (१८६३–१९४५)–अंग्रेज़ राजनेता और कूटनीतिज्ञ, लिबरल पार्टी के नेता। १९१६ से १९२२ तक प्रधान-मंत्री।–८९, १००, २७७

लासाल (Lassalle), **फ़र्दीनांद** (१८२५–१८६४)–जर्मन टुटपुंजिया समाजवादी, जर्मन मज़दूर आंदोलन में अवसरवाद के एक रूप–लासालवाद–के संस्थापक। आम जर्मन मज़दूर संघ की स्थापना की, पर उसका अवसरवादी ढंग से पथप्रदर्शन किया।–५८, ५९, १०६

लिएफ़मैन (Liefman), **राबर्ट** (१८७४–१९४१)–जर्मन अर्थशास्त्री, प्रोफ़ेसर; आर्थिक और सामाजिक प्रश्नों पर कई पुस्तकों के लेखक।–२२३, २२५, २३२, २३६, २५४, २५६-२५८, २६८, २९१, २९२

लिन्कन (Lincoln), **अब्राहम** (१८०९–१८६५)–विख्यात अमरीकी राजनेता, संयुक्त राज्य अमरीका की रिपब्लिकन पार्टी के एक नेता। १८६१ से १८६५ तक अमरीकी राष्ट्रपति; दासस्वामियों के एक गुर्गे ने उनकी हत्या कर दी।–३३९

लीज़िस (Lysis), (**लेतिए**) [Letailleur], **यूजेन**)–फ़्रांसीसी अर्थशास्त्री, वित्तीय तथा राजनीतिक प्रश्नों पर कई पुस्तकों के लेखक।–२६५, २६६

लीब्कनेख़्त (Liebknecht), **कार्ल** (१८७१–१९१९)–जर्मन और अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के विख्यात कार्यकर्त्ता, जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के वामपंथ के एक नेता, विल्हेल्म लीब्कनेख़्त के पुत्र। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान इस लूट की लड़ाई में "अपनी" सरकार के समर्थन का डटकर विरोध किया। २ दिसंबर, १९१४ को राइख़स्टाग में युद्ध ऋणों के ख़िलाफ़ वोट देनेवाले एकमात्र सदस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। 'इंटरनेशनल' दल के एक संस्थापक ग्रौर नेता। वाद में इस दल का नाम 'स्पार्टकस' ग्रौर फिर 'स्पार्टकस लीग' रख दिया गया। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी के एक संस्थापक। जनवरी, १९१९ में वर्लिन के मज़दूरों के विद्रोह के एक नेता हुए। विद्रोह के दमन के बाद प्रतिक्रांतिकारियों ने उनकी हत्या कर दी।–१३३, १५२, २०१

लीब्कनेख़्त (Liebknecht), **विल्हेल्म** (१८२६–१९००)–जर्मन ग्रौर ग्रंतर्राष्ट्रीय मज़दूर ग्रांदोलन के विख्यात कार्यकर्त्ता, जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक संस्थापक ग्रौर नेता; पहले ग्रौर दूसरे इंटरनेशनल के सक्रिय कार्यकर्त्ता, राइख़स्टाग के सदस्य।–५९, १५५, १६६

लुक्ज़ेमबुर्ग (Luxemburg), **रोज़ा** (१८७१–१९१९)–ग्रंतर्राष्ट्रीय मज़दूर ग्रांदोलन की प्रमुख कार्यकर्त्री, दूसरे इंटरनेशनल के वामपंथ की एक नेत्री; ग्रवसरवाद का विरोध किया; जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी की एक संस्थापिका। जनवरी, १९१९ में प्रतिक्रांतिकारियों ने उनकी हत्या कर दी। रोज़ा लुक्ज़ेमबुर्ग का लेनिन द्वारा बहुत ऊंचा मूल्यांकन किया गया था, पर लेनिन ने उनकी ग़लतियों की ग्रालोचना भी की ग्रौर उन्हें ठीक स्थिति ग्रपनाने में मदद दी।–८०, १०८, ११४

लूकस (Lucas), **चार्ल्स प्रेस्टवुड** (१८५३–१९३१)–ग्रंग्रेज़ उपनिवेशों में काम करनेवाले कर्मचारी, इतिहासकार; ग्रंग्रेज़ साम्राज्यवाद के समर्थक।–१२१, ३०२

लेंश (Lensch), **पाल** (१८७३–१९२६)–जर्मन सामाजिक-जनवादी, पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के छिड़ने पर सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी।–८४, ९४, ११६, ११७, १६५

लेजियन (Legien), **कार्ल** (१८६१–१९२०)–जर्मन दक्षिणपंथी सामाजिक-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनवादी, जर्मनी की ट्रेड-यूनियनों के एक नेता, संशोधनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–११८, १२८, १३१, १३२, १३५, १३६, १३८, २०१

लेनिन, व्लादीमिर इल्यीच (लेनिन, न०; व्ला० इ०) (१८७०–१६२४)–२१३

लेवी- (Levy), **हेर्मन** (जन्म १८८१)–जर्मन अर्थशास्त्री। वित्त पूंजी विषयक कई पुस्तकों के रचयिता।–२१६, २२०

लेंसबर्ग (Lansburgh), **अल्फ्रेड** (१८७२–१६४०)–जर्मन अर्थशास्त्री।–२३५, २३७, २४२, २७१, ३२७, ३३६, ३४३-३४६

व

वाइयां (Vaillant), **एडुअर्ड मारी** (१८४०–१६१५)–फ़्रांसीसी समाजवादी, दूसरे इंटरनेशनल के एक नेता। १६०१ में फ़्रांस की समाजवादी पार्टी के एक संस्थापक; बाद में सुधारवादी रुख़ अपनाया। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी।–११४-११६, १२५, १८३, १६०

वानडरवेल्डे (Vandervelde), **एमील** (१८६६–१६३८)–बेल्जियम की मज़दूर पार्टी के एक नेता, दूसरे इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के अध्यक्ष, चरम अवसरवाद की स्थिति अपनायी। पहले विश्वयुद्ध (१६१४–१६१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी, बुर्जुआ सरकार में शरीक हुए।–८०, १२६, १२७, १३८, १८१, १८२, १८५, १८६, १६०, २००

विलिख (Willich), **अगस्त** (१८१०–१८७८)–जर्मनी में क्रांतिकारी आंदोलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के भागीदार। कम्युनिस्ट लीग के सदस्य। जर्मनी में १८४८–१८४९ की क्रांति की पराजय के वाद स्विट्ज़रलैंड और वाद में इंगलैंड चले गये। १८५० में कम्युनिस्ट लीग से अलग हुए संकीर्ण-दुःसाहसिक धड़े के एक नेता।– ५८

विल्हेल्म द्वितीय (होहेंज़ोल्लर्न) (Wilhelm II, Hohenzollern) (१८५९–१९४१)– जर्मनी के सम्राट और प्रशा के वादशाह (१८८८–१९१८)।– १७, ६१, २७१

वेब (Webb), **सिडनी** (१८५९–१९४७)– अंग्रेज़ सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, सुधारवादी; फ़ेवियन सोसायटी के एक संस्थापक। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९२४ तथा १९२९–१९३१ में लेवर सरकार में शरीक हुए।– १४४

व्ला० इ० – देखें लेनिन, व्लादीमिर इल्यीच।

श

शापर (Schapper), **कार्ल** (१८१२–१८७०)– जर्मन तथा अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन के एक प्रमुख कार्यकर्त्ता। कम्युनिस्ट लीग की केंद्रीय समिति के सदस्य, जिसमें मार्क्स तथा एंगेल्स के नेतृत्व में चलनेवाली वहुसंख्या का विलिख़ के साथ मिलकर विरोध किया; लीग के संकीर्ण-दुःसाहसिक धड़े के एक नेता बन गये। अपनी ग़लतियां समझकर फिर मार्क्स तथा एंगेल्स का पक्ष लिया और पहले इंटरनेशनल की जनरल कौंसिल में शामिल किये गये।– ५८

शिल्डर (Schilder), **ज़िग्मुंड** (मृत्यु १९३२)– जर्मन अर्थशास्त्री।– २७७, २८०; ३०३, ३०६, ३०७, ३२६, ३५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शीडेमान (Scheidemann), **फ़िलिप** (१८६५–१९३९)–जर्मन सामाजिक-जनवादी आंदोलन के घोर दक्षिणपंथी अवसरवादी पक्ष के एक नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१८–१९२१ में जर्मन मज़दूर आंदोलन के रक्तरंजित दमन के संगठन-कर्त्ताओं में एक।– ११८, १२८, १३८, १३९, १८८, १८९

शुल्त्ज़े (Schultze), **एर्नेस्ट** (१८७४–१९४३)–जर्मन अर्थशास्त्री, जर्मन साम्राज्यवाद के एक समर्थक।– १०२, १०३

शुल्त्ज़े-गैवर्निट्ज़ (Schulze-Gaevernitz), **गेरहार्ड** (१८६४–१९४३)–जर्मन अर्थशास्त्री। अपनी कृतियों में उन्होंने पूंजीवादी समाज में सामाजिक शांति स्थापित करने की संभावना की अभिपुष्टि करने का यत्न किया।– २३५, २३६, २३८, २४६, २४७, २४८, २५४, २५६, २५८, ३०६, ३२६, ३२७, ३३१, ३३२, ३५९

श्त्रोबेल (Ströbel), **हेनरिक** (१८६९–१९४५)–जर्मन सामाजिक-जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के शुरू में सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद और साम्राज्यवादी युद्ध का विरोध किया, बाद में मध्यमार्गी। जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक संस्थापक।– १२८

स

सरटोरियस फ़ॉन वाल्टर्सहाउज़ेन (Sartorius von Waltershausen), **अगस्त** (जन्म १८५२)–जर्मन अर्थशास्त्री। १८८८ से १९१८ तक स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर, विश्व अर्थव्यवस्था और राजनीति पर कई पुस्तकों के लेखक।– १२२, ३०६, ३२६

सालांद्रा (Salandra), **अंतोनियो** (१८५३–१९३१)–इतालवी राजनेता, इटली के बड़े-बड़े ज़मींदारों और औद्योगिक इजारेदारों के "उदार-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तावादी गुट" के घोर दक्षिणपंथ के एक नेता। १९१४ से १९१६ तक इटली के प्रधानमंत्री, एंटेंट के पक्ष में पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) में इटली के सम्मिलन के एक समर्थक।–९३

साविन्कोव, बोरीस वीक्तोरोविच (**रोपशिन, ब०**) (१८७९–१९२५)– समाजवादी-क्रांतिकारी पार्टी के एक प्रधान नेता, उसके "जुझारू संगठन" के एक नेता।–९३

सिंकलेयर (Sinclair), **एप्टन** (१८७८–१९६८)–अमरीकी लेखक, सामाजिक समस्याओं पर उपन्यास के रचयिता; समाजवादी-कल्पनावादी और टुटपुंजिया सुधारवादी; विश्वयुद्ध का विरोध किया।– १४७-१४९

सीमेन्स (Siemens), **गेओर्ग** (१८३९–१९०१)–जर्मनी के एक सबसे बड़े उद्योगपति और वित्तपति।–२२३, २५८, २८४

सुपान (Supan), **अलेक्सान्द्र** (१८४७–१९२०)–जर्मन भूगोलविद, गोथा और ब्रेसलाऊ विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसर।–२९३, २९४, २९८

सेंट-सीमोन (Saint-Simon), **आंरी क्लोद** (१७६०–१८२५)–महान फ़्रांसीसी समाजवादी-कल्पनावादी, पूंजीवादी व्यवस्था की आलोचना की और उसके स्थान पर एक ऐसा समाज बनाने का कार्यक्रम पेश किया, जो संघबद्धता (एसोसियेशन) के उसूलों पर आधारित हो।–३९०

सेम्बा (Sembat), **मार्सेल** (१८६२–१९२२)–फ़्रांसीसी समाजवादी पार्टी के एक सुधारवादी नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१४ से १९१७ तक फ़्रांस की साम्राज्यवादी "राष्ट्रीय रक्षा की सरकार" में लोक निर्माण-कार्य मंत्री रहे।– १२६, १२७, १३८, १८३, १८९

स्कोबेलेव, मत्वेई इवानोविच (१८८५–१९३९)–रूसी सामाजिक-जनवादी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेंशेविक। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान मध्यमार्गी। १९१७ की फ़रवरी बुर्जुआ-जनवादी क्रांति के बाद अस्थायी सरकार में शरीक हुए। बाद में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य हो गये। – ३३६

स्टाइन (Stein), **लोरेंज़** (१८१५–१८९०) – राज्य संबंधी मामलों के जर्मन विशेषज्ञ, बाज़ारू अर्थशास्त्री। – ३२

स्टाउस (Stauß), **एमील गेओर्ग** (जन्म १८७७) – जर्मन वित्तप्रबंधक और बैंकपति। 'जर्मन बैंक' के तेल समाज का संचालन किया। १९१५ से लेकर 'जर्मन बैंक' के संचालकमंडल तथा निरीक्षणमंडल के सदस्य। – २८८

स्टेड (Stead), **विलियम टामस** (१८४९–१९१२) – अंग्रेज़ पत्रकार। – २९७

स्त्रूवे, प्योत्र बेर्नगार्दोविच (१८७०–१९४४) – रूसी बुर्जुआ अर्थशास्त्री और पत्रकार, कैडेट पार्टी के एक नेता। १९वीं सदी के ९वें दशक में "क़ानूनी मार्क्सवाद", याने बर्नस्टीनवाद के रूसी रूप की एक हस्ती। रूसी साम्राज्यवाद के विचारधारा-निरूपक। – ९४

स्पेक्तातोर – देखें नाख़िमसन, मिरोन इसाकोविच।

स्मिथ (Smith), **ऐडम** (१७२३–१७९०) – अंग्रेज़ अर्थशास्त्री, क्लासिकल बुर्जुआ राजनीतिक अर्थशास्त्र के महान प्रतिनिधि। – ४२

स्मिर्नोव, ए० – देखें गुरेविच, इमानुएल ल्वोविच।

ह

हक्सली (Huxly), **टामस हेनरी** (१८२५–१८९५) – अंग्रेज़ प्रकृतिशास्त्री, असंगत भौतिकवादी, अज्ञेयवाद के अनुयायी। – २८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाग्रज़े (Haase), **ह्यूगो** (१८६३–१९१९)–जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान मध्यममार्गी स्थिति ग्रपनायी। १९१७ के ग्रप्रैल में जर्मनी की स्वतंत्र सामाजिक-जनवादी पार्टी के एक संस्थापक।–१२६, १२८, १४२, १८८

हाइने (Heine), **वोल्फ़गांग** (१८६१–१९४४)–जर्मन राजनीतिज्ञ, दक्षिण-पंथी सामाजिक-जनवादी। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के समय सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी।–११७, १८३, १८५, १८८

हाइन्डमैन (Hyndman), **हेनरी मायर्स** (१८४२–१९२१)–ग्रंग्रेज़ समाजवादी, सुधारवादी। १९००–१९१० में ग्रंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के सदस्य। ब्रिटिश समाजवादी पार्टी के एक नेता। पार्टी के सोलफ़ोर्ड में हुए सम्मेलन ने उनके सामाजिक-ग्रंधराष्ट्रवादी रुख़ की भर्त्सना की ग्रौर १९१६ में वह पार्टी से ग्रलग हो गये।–७७, ७८, ८०, ८८, ११४-११७, १४७, २११

हाबसन (Hobson), **जान एटकिन्सन** (१८५८–१९४०)–ग्रंग्रेज़ ग्रर्थशास्त्री, सुधारवादी, शांतिवादी।–२०५, २१२, २१४, २७६, २९६, ३१४, ३२३, ३२५, ३२७, ३२८, ३३०, ३३१, ३३३, ३३७, ३३९, ३४७, ३४८

हार्म्स (Harms), **बेर्नहार्ड** (१८७६–१९३९)–जर्मन ग्रर्थशास्त्री, कैथेडेर-समाजवाद के एक प्रतिनिधि, जर्मन साम्राज्यवाद के एक समर्थक।–१००, २७७

हिंडेनबुर्ग (Hindenburg), **पाल** (१८४७–१९३४)–जर्मन सैनिक ग्रौर राजनीतिक कार्यकर्त्ता, फ़ील्ड-मार्शल, जर्मन साम्राज्यवाद के प्रतिक्रियावादी ग्रौर ग्रंधराष्ट्रवादी तत्वों के एक प्रतिनिधि।–१८८

हिल (Hill), **डेविड जेन** (१८५०–१९३२)–ग्रमरीकी इतिहासकार तथा राजनयिक।–३५०, ३५१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिल्डेब्रांड (Hildebrand), **गेरहार्ड** – जर्मन अर्थशास्त्री और पत्रकार, जर्मनी की सामाजिक-जनवादी पार्टी के सदस्य। १९१२ में अपने अवसरवादी विचारों के कारण पार्टी से निकाल दिये गये। – ३३०, ३३१

हिल्फ़र्डिंग (Hilferding), **रुडोल्फ़** (१८७७–१९४१) – जर्मनी के सामाजिक-जनवाद और दूसरे इंटरनेशनल के एक अवसरवादी नेता; तथाकथित "आस्ट्रियाई मार्क्सवाद" के सिद्धांतकार। १९१० में 'वित्त पूंजी' शीर्षक रचना प्रकाशित की, जिसने इजारेदार पूंजीवाद के अध्ययन में सकारात्मक भूमिका अदा की। फिर भी पुस्तक में गंभीर सैद्धांतिक ग़लतियां और अवसरवादी प्रस्थापनाएं मौजूद हैं। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के वर्षों में मध्यमार्गी, सामाजिक-साम्राज्यवादियों के साथ एकता की नीति चलायी। – २११, २१४, २१८, २५५, २५६, २६४, १६५, २६७, २६८, २७७, ३०५, ३२३, ३४१, ३५२

हुइस्मान्स (Huysmans), **कामिल** (१८७१–१९६८) – बेल्जियम के मज़दूर आंदोलन के एक अनुभवी और पुराने नेता। १९०४ से १९१९ तक दूसरे इंटरनेशनल के अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी ब्यूरो के सचिव, मध्य-मार्गी; अपनी ज़िंदगी के अंतिम वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर आंदोलन की एकता की पुनर्स्थापना का समर्थन किया। – ३५७

हूबनर (Hübner), **ओटो** – *Geographisch-statistische Tabellen aller Länder der Erde* नामक सांख्यिकीय और भूगोल विषयक वार्षिकियों के संकलनकर्त्ता और प्रकाशक। – २९८

हेंडेरसन (Henderson), **आर्थर** (१८६३–१९३५) – अंग्रेज़ राजनीतिज्ञ, लेबर पार्टी तथा ट्रेड-यूनियन कांग्रेस के एक दक्षिणपंथी नेता, सामाजिक-अंधराष्ट्रवादी। १९१५ से १९३१ तक ब्रिटेन के मंत्रिमंडल के अनेक बार सदस्य रहे। – १३७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेईनिग (Heinig), **कुर्ट** (१८८६–१९५६)–जर्मन सामाजिक-जनवादी, अर्थशास्त्री और पत्रकार।–२६१, २८५, २८६

हेगलुंड (Höglund), **कार्ल ज़ेट कोंस्टेंटाइन** (१८८४–१९५६)–स्वीडन के सामाजिक-जनवादी, स्वीडन के सामाजिक-जनवादी और युवक समाजवादी आंदोलनों के वामपंथ के नेता। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान अंतर्राष्ट्रीयतावादी, ज़िम्मरवाल्डी वामपंथी दल के सदस्य। १९१७ से १९२४ तक स्वीडन की कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेता। १९२४ में अवसरवादिता के कारण कम्युनिस्ट पार्टी से निकाल दिये गये।–१२५, १९०

हेगेल (Hegel), **गेओर्ग विल्हेल्म फ़्रेडरिक** (१७७०–१८३१)–महान जर्मन दार्शनिक, वस्तुपरक भाववादी; हेगेल का ऐतिहासिक योगदान यह है कि उन्होंने भाववादी द्वंद्ववाद का, जो आगे चलकर द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का एक सैद्धांतिक स्रोत बना, सर्वांगीण प्रतिपादन किया।–२१, २६-३१, ३९, ८८, ९०

हेमैन (Heymann), **हान्स गिदेओन**–जर्मन अर्थशास्त्री।–२१८, २१९, २५७, २५८

हैनिश (Haenisch), **कोनराड** (१८७६–१९२५)–जर्मन सामाजिक-जनवादी, पत्रकार। पहले विश्वयुद्ध (१९१४–१९१८) के दौरान जर्मन सामाजिक-अंधराष्ट्रवाद के एक विचारधारा-निरूपक।–११६, ११७

हैवमेयर (Havemeyer), **जान** (१८३३–१९२२)–अमरीकी उद्योगपति, शकर के एक शक्तिशाली ट्रस्ट के मालिक, रेलवे और अन्य कंपनियों के हिस्सेदार।–२६५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होलियोक (Holyoake), **जार्ज जेकब**—इंगलैंड में सहकारी आंदोलन के कार्यकर्त्ता, सुधारवादी।—५७

ह्यूम (Hume), **डेविड** (१७११–१७७६)—अंग्रेज दार्शनिक, आत्मपरक भाववादी, अज्ञेयवादी; इतिहासकार और अर्थशास्त्री।—२८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पारिभाषिक शब्द

अंधराष्ट्रवाद (chauvinism)—अपनी राष्ट्रीय विशिष्टता तथा अहंकार का प्रचार करने और अपने राष्ट्र के हितों को दूसरे राष्ट्रों के हितों से ऊपर माननेवाली नीति। अंधराष्ट्रवादी नीति का लक्ष्य है अन्य राष्ट्रों के प्रति वैमनस्य, घृणा और दुर्भाव पैदा करना।

अधिभूतवाद (metaphysics)—चिंतन की वह पद्धति, जो द्वंद्ववाद के विपरीत वस्तुओं तथा यथार्थ की परिघटनाओं को परस्पर संबद्ध न मानकर एक दूसरे से अलग-थलग, अगतिशील तथा अपरिवर्तनशील मानती है और इसी दृष्टिकोण से उनकी जांच करती है।

अवसरवाद (opportunism)—मज़दूर आंदोलन में कुछ व्यक्तियों द्वारा ऐसे सिद्धांत और व्यवहार पर अमल, जो मज़दूर वर्ग के वास्तविक हितों के लिए घातक होते हैं और मज़दूर आंदोलन को बुर्जुआ वर्ग के साथ वर्ग सहयोग करने की राह पर ले जाते हैं।

आधार और ऊपरी ढांचा (basis and superstructure)—दर्शन के क्षेत्र में वे अवधारणाएं, जिनका मार्क्स तथा एंगेल्स ने पहली बार ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत प्रतिपादित करते हुए प्रयोग किया था। वे समाज के आर्थिक और सभी अन्य सामाजिक संबंधों के परस्पर सूत्रों को व्यक्त करती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधार—समाज के उन उत्पादन संबंधों की समष्टि है, जो उसकी उत्पादक शक्तियों के स्तर के अनुरूप होते हैं। दूसरे शब्दों में, आधार समाज का आर्थिक ढांचा है। मिसाल के लिए, पूंजीवादी समाज का आधार वह आर्थिक ढांचा है, जो उजरती मज़दूर और पूंजीपति के परस्पर संबंध पर आधारित है। समाजवादी समाज का आधार है उत्पादन के साधनों पर समस्त जनता का स्वामित्व और शोषणकारी संबंधों का अभाव, क्योंकि इस समाज में पूंजीपतियों का शोषक वर्ग नहीं होता।

आधार के ऊपर तदनुरूप **ऊपरी ढांचा** होता है। क़ानूनी, सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाएं, विचारधाराएं, विज्ञान, कला, आदि—आत्मिक जीवन की जितनी भी अभिव्यक्तियां और प्रक्रियाएं हैं, वे सभी ऊपरी ढांचे की श्रेणी में आती हैं और उनका स्वरूप व सार आधार, याने आर्थिक ढांचे द्वारा निर्धारित होते हैं। ऊपरी ढांचा समाज के जीवन में सक्रिय भूमिका निभाता है और आधार पर कमोबेश प्रभाव भी डाल सकता है।

आमूलवाद (radicalism)—एक ऐसी वैचारिक तथा राजनीतिक प्रवृत्ति, जिसके पक्षधर पूंजीवाद की आलोचना करते हैं और पूंजीवादी प्रणाली के दायरे में रहते हुए ही आमूल परिवर्तन व सुधार किये जाने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

उदारतावाद (liberalism)—एक बुर्जुआ वैचारिक तथा राजनीतिक प्रवृत्ति, जिसके पक्षधर संसदीय प्रणाली, बुर्जुआ स्वतंत्रताओं और पूंजीवादी उद्यम स्वातंत्र्य में विश्वास करते हैं।

जड़सूत्रवाद (dogmatism)—ऐसी चिंतन-पद्धति, जो जड़सूत्रों पर आधारित है, उन्हें वेदवाक्य मानकर और वस्तुस्थिति का ध्यान रखे बिना उनका अंधानुगमन करती है।

द्वंद्ववाद (dialectics)—ज्ञान की वह शाखा, जो हमें प्रकृति, समाज तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिंतन के सर्वाधिक सार्विक नियमों से अवगत कराती है। द्वंद्ववाद के अनुसार समस्त विश्व प्रक्रियाओं की एक समष्टि है और इन प्रक्रियाओं में सभी वस्तुएं परस्पर संबद्ध, निरंतर गतिशील, परिवर्तनशील तथा विकासशील होती हैं। द्वंद्ववाद **अधिभूतवाद** का विलोम है। अधिभूतवाद विश्व को तैयार, चिरंतन, एक दूसरे से असंयुक्त, अपने आप में पूर्ण और अपरिवर्तनशील वस्तुओं की समष्टि मानता है। द्वंद्ववाद का सर्वाधिक पूर्ण तथा सर्वांगीण निरूपण १९वीं शती के आरंभ में जर्मन भाववादी दार्शनिक हेगेल की कृतियों में किया गया था। हेगेल ने ही द्वंद्ववाद के आधारभूत नियमों को सूत्रबद्ध किया। ये हैं विलोमों की एकता तथा संघर्ष का नियम, निषेध के निषेध का नियम और परिमाणात्मक परिवर्तनों से गुणात्मक परिवर्तन में संक्रमण का नियम। मार्क्स और एंगेल्स ने हेगेलीय दर्शन के भाववादी पक्ष को अस्वीकार कर **भौतिकवादी द्वंद्ववाद** का प्रतिपादन किया, जो प्रकृति, सामाजिक जीवन तथा मानव चिंतन में घटनेवाली प्रक्रियाओं के सामान्यीकरण पर आधारित है। लेनिन ने अपनी रचनाओं में भौतिकवादी द्वंद्ववाद का आगे विकास किया।

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद (dialectical materialism)—मार्क्सवाद का दार्शनिक आधार तथा एक संघटक अंग।

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद ही सुसंगत दार्शनिक भौतिकवाद है, जो कहता है कि विश्व भूतद्रव्यमय है, कि प्रकृति के अंतर्निहित नियमों के अनुसार वह (प्रकृति) अस्तित्वमान है तथा विकसित होती है। यह विकास जीवन व चिंतनशील भूतद्रव्य—मानव मस्तिष्क—जैसे उच्चतर रूपों की ओर हो रहा है। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद भूतद्रव्य के प्राथमिक, मूलाधार होने की मान्यता को विकास के द्वंद्वात्मक सिद्धांत के साथ समन्वित करता है। यही द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को पूर्ववर्ती भौतिकवादी विचारधाराओं से भिन्न बनाता है, जो भूतद्रव्य को निष्क्रिय, अपरिवर्तनशील वस्तु मानती थीं या उसमें केवल एक ही प्रकार की गति—यांत्रिक गति—के दर्शन करती थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वंद्वात्मक भौतिकवाद यह मानता है कि विश्व को जाना जा सकता है और विश्व के न जाने जा सकने अथवा सीमित रूप में जाने जा सकने से संबंधित सभी दार्शनिक सिद्धांतों को ठुकराता है। यथार्थ को जानकर मनुष्य उसकी गहराई में ही नहीं पैठ सकता, बल्कि उसे बदल भी सकता है।

भाववाद (idealism)—**भौतिकवाद** की विलोम दार्शनिक धारा। भाववाद आत्मा, विचार, याने भाव, चेतना को प्राथमिक और प्रकृति, भूतद्रव्य, सत्व को द्वितीयक, आत्मा से उद्भूत मानता है। भाववाद के दो मुख्य भेद हैं: आत्मपरक (विषयिनिष्ठ) भाववाद और वस्तुपरक (विषयनिष्ठ) भाववाद।

आत्मपरक भाववाद (subjective idealism) वाह्य जगत के वस्तुपरक (मानव और उसके चेतना से स्वतंत्र) अस्तित्व को नहीं मानता और मानव अनुभूतियों, धारणाओं और वैयक्तिक चेतना को ही एकमात्र यथार्थ बताता है। दूसरी ओर, **वस्तुपरक भाववाद** (objective idealism) की मान्यता है कि सभी अस्तित्वमान वस्तुओं, याने यथार्थ जगत का आधार कोई सर्वव्यापी विचार या परम आत्मा है, जिसका मनुष्य से स्वतंत्र अस्तित्व है।

भूतद्रव्य (भूत) (matter)—दर्शन में भूतद्रव्य एक वहुत ही व्यापक अवधारणा है। उसकी परिधि में वह सब आ जाता है, जिसका जगत में वस्तुपरक (अर्थात मानव चेतना से वाहर और उससे स्वतंत्र रूप से) अस्तित्व है। व्ला० इ० लेनिन ने भूतद्रव्य को यों परिभाषित किया है: "भूतद्रव्य एक दार्शनिक प्रवर्ग है और उस **वस्तुपरक यथार्थता** को इंगित करता है, जिसे मनुष्य अनुभव करता है, जो हमारी इंद्रियों द्वारा अनुकृत, चित्रित तथा प्रतिबिंबित होती है और जिसका उनके विना भी अस्तित्व है"। भूतद्रव्य के अनेक महत्वपूर्ण गुणधर्म हैं, जिनमें से मुख्य है गति (यांत्रिक परिवर्तन ही नहीं, अपितु सामान्यतः हर किसी प्रकार का परिवर्तन)। भूतद्रव्य का अस्तित्व दिक् और काल, दोनों में है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भौतिकवाद (materialism) — दर्शन के क्षेत्र में **भाववाद** की विलोम विज्ञान-सम्मत धारा। भौतिकवाद यह मानकर चलता है कि भूतद्रव्य का अस्तित्व चेतना के बाहर और उससे स्वतंत्र है, कि भूतद्रव्य प्राथमिक है तथा सभी अनुभूतियों व संवेदनों का स्रोत है और चेतना, चिंतन व अनुभूतियां द्वितीयक, याने भूतद्रव्य से उद्‌भूत होती हैं, कि विश्व तथा उसके नियमों को जाना जा सकता है। भौतिकवाद को विकास का बहुत लंबा रास्ता—पुराकालीन पूर्वी देशों, यूनान तथा रोम के भौतिकवाद से मार्क्स तथा एंगेल्स के भौतिकवाद तक—तय करना पड़ा। मार्क्सपूर्व भौतिकवाद में कुछ गंभीर त्रुटियां थीं: वह अधिभूतवादी था और उसे सामाजिक परिघटनाओं पर लागू नहीं किया जाता था। मार्क्स और एंगेल्स ने अपने पूर्ववर्ती युगों के समस्त वैज्ञानिक तथा दार्शनिक चिंतन में उपलब्ध सभी मूल्यवान तत्वों का आलोचनात्मक परिमार्जन करके नये, उच्चतर भौतिकवाद—**द्वंद्वात्मक भौतिकवाद**—का प्रतिपादन किया।

मैनुफ़ेक्चर (manufacture) — औद्योगिक पूंजीवाद के विकास में बड़े पैमाने के मशीनी उद्योगों से पहले का दौर। मैनुफ़ेक्चर के दौर के विशिष्ट लक्षण हैं: शॉपों में पूंजीपतियों की देखरेख में मज़दूरों का जमाव, उत्पादन में हाथ के काम का प्राधान्य और शॉप में श्रम का विस्तृत विभाजन।

विशिष्टतावाद (particularism) — किसी राज्य के कुछ भागों अथवा प्रदेशों में पायी जानेवाली केंद्रीय शासन से अधिकतम स्वतंत्र होने और अपनी स्थानीय विशिष्टताओं, अधिकारों तथा विशेषाधिकारों को अनुल्लंघनीय मानने की प्रवृत्ति।

संशोधनवाद (revisionism) — क्रांतिकारी मज़दूर आंदोलन के अंतर्गत एक अवसरवादी, मार्क्सवाद विरोधी प्रवृत्ति, जिसके अनुयायी वस्तुस्थिति की नयी घटनाओं की रचनात्मक समझ का दावा करते हुए मार्क्सवादी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिद्धांत की व्यवहार द्वारा सिद्ध बुनियादी प्रस्थापनाओं में संशोधन करने पर आग्रह करते हैं।

सामाजिक-आर्थिक विरचना (social and economic formation)—इतिहास के किसी एक ख़ास दौर में उपलब्ध समाज का रूपभेद, जिसका आधार वे उत्पादन संबंध तथा उत्पादक शक्तियां होती हैं, जो उस समाज के सामाजिक, राजनीतिक तथा वैचारिक स्वरूप का निर्धारण करती हैं। हर सामाजिक-आर्थिक विरचना "एक विशिष्ट सामाजिक संघटन है, जिसके पैदा होने, काम करने और उच्चतर रूप में संक्रमण करने, याने दूसरे सामाजिक संघटन में बदलने के अपने विशिष्ट नियम होते हैं" (व्ला० इ० लेनिन)। समाजवाद के युग तक मानव समाज क्रमशः चार सामाजिक-आर्थिक विरचनाओं से गुज़रा है: आदिम सामुदायिक, दासप्रथात्मक, सामंतवादी और पूंजीवादी। मार्क्स और एंगेल्स ने, जिन्होंने सामाजिक-आर्थिक विरचनाओं से संबंधित सिद्धांत का प्रतिपादन किया था, सिद्ध किया कि पूंजीवादी सामाजिक-आर्थिक विरचना का स्थान कम्युनिस्ट सामाजिक-आर्थिक विरचना द्वारा, जिसकी पहली अवस्था समाजवाद है, लिया जाना अवश्यंभावी है।

सारसंग्रहवाद (eclecticism)—तरह-तरह के, कभी-कभी एक दूसरे से सर्वथा विपरीत सिद्धांतों,, दार्शनिक मतों, राजनीतिक मूल्यांकनों, आदि की खिचड़ी।

सुधारवाद (reformism)—मज़दूर आंदोलन के कुछ हल्कों में पायी जानेवाली एक अवसरवादी प्रवृत्ति, जो वर्ग संघर्ष, समाजवादी क्रांति और सर्वहारा अधिनायकत्व की आवश्यकता को नहीं मानती, वर्ग सहयोग का उपदेश देती है और आशा करती है कि सुधारों के ज़रिए पूंजीवाद को "सर्वकल्याणकारी समाज" में परिवर्तित किया जा सकता है। सुधारवाद का आविर्भाव १९वीं सदी के अंत में हुआ था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये:

प्रगति प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.